'एक शानदार कहानी, दुख . . .
भरी और खुशी देने
वाली, जिसमें मज़ाक और
साथ रहने की भावना
है' -सुधीर मिश्रा

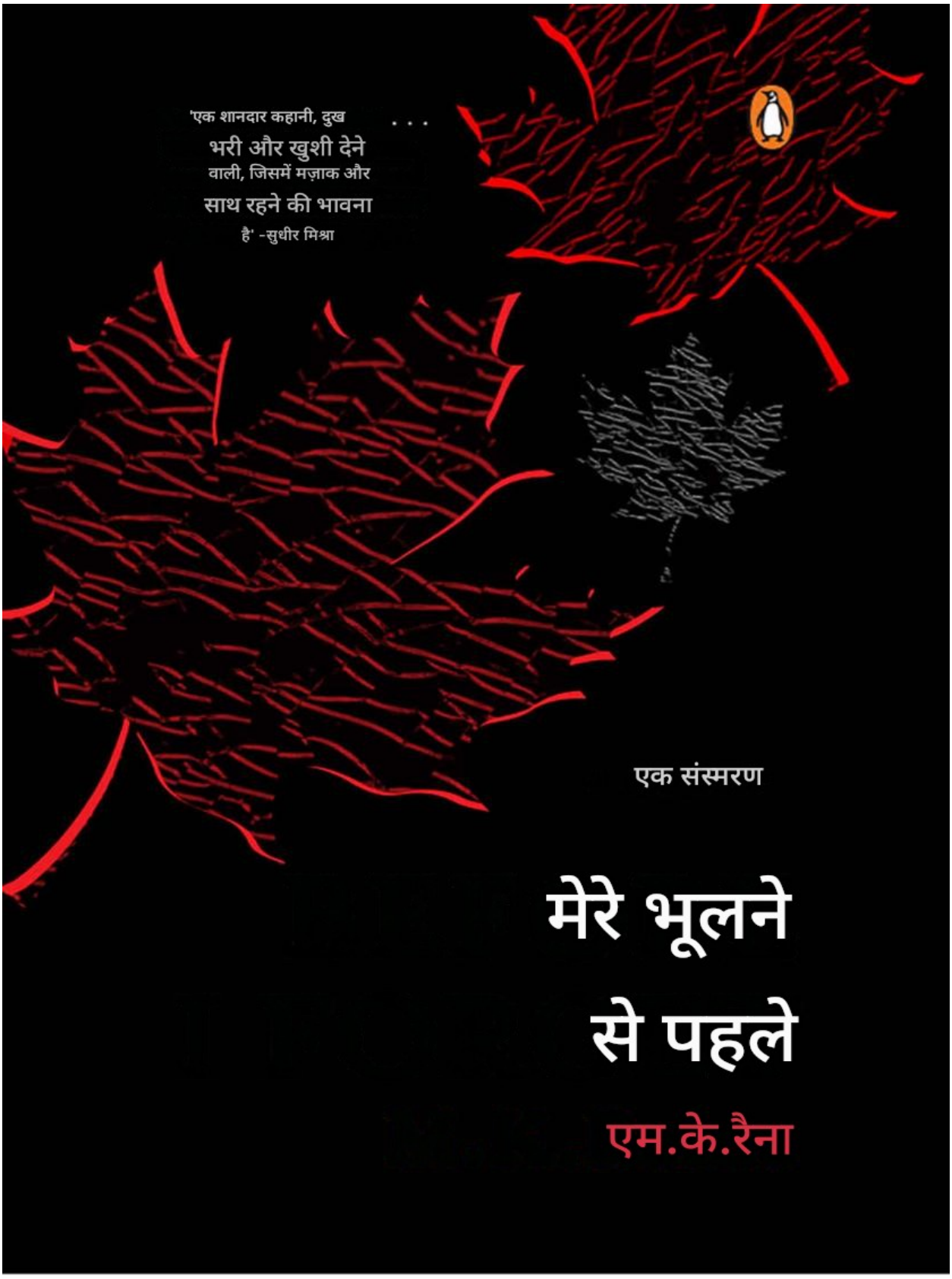

एक संस्मरण

मेरे भूलने से पहले

एम.के.रैना

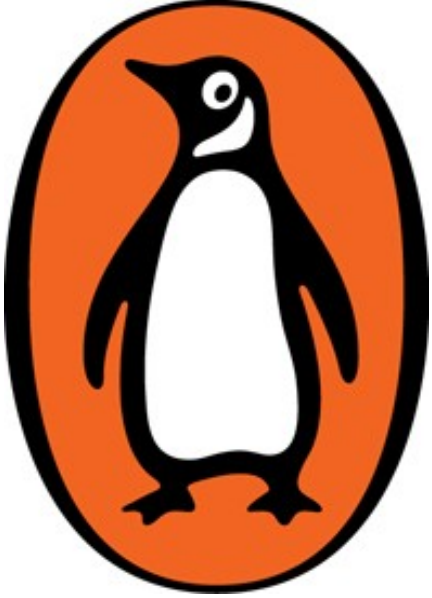

मेरे भूलने से पहले

पुस्तक की अग्रिम प्रशंसा
एक प्रतिभाशाली कलाकार की ईमानदार और उथल-पुथल भरी यात्रा, जो एक
स्वतंत्रता के बाद विकसित हो रहे भारत की पृष्ठभूमि। बहुत बढ़िया, मेरे दोस्त।
'दोस्त'—सईद अख्तर मिर्ज़ा 'एक मानवीय और हृदयस्पर्शी वृत्तांत'
जोश, दूरदृष्टि और वास्तविक जीवन से भरपूर, एम.के. रैना का संस्मरण हमें यही बताता है।
हमारे समय और रंगमंच में एक गतिशील करियर के संघर्षों के बारे में खुलकर बात करते हुए,
सिनेमा, सांस्कृतिक सक्रियता और सामाजिक प्रतिरोध। जन्म से कश्मीरी।
वंश के संदर्भ में, रैना ने इस सिद्धांत को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से दोहराया है: हमें कभी नहीं भूलना चाहिए, लेकिन
'हमेशा क्षमा करो'—अशोक वाजपेयी 'भावुक और वस्तुनिष्ठ। गहरी भावनाओं से ओतप्रोत।
इतिहास के घावों से त्रस्त भूमि के भाग्य पर शोक व्यक्त करना, लेकिन साथ ही लेखक की गहरी संवेदनाओं को भी दर्शाना।
अपनी भूमि और यहाँ के लोगों के प्रति प्रेम। कई कहानियाँ आपस में गुंथी हुई हैं।
इस शानदार वृत्तांत में। कुछ दृश्य दिल दहला देने वाले हैं, लेकिन कुछ आनंददायक भी हैं।
हास्य और सहअस्तित्व की भावना के साथ’—सुधीर मिश्रा
एम.के. रैना
मेरे भूलने से पहले

एक संस्मरण

मेरे प्यारे परिवार के लिए
अंजलि, अनंत, अकिला, अदिति और फ़िलिपो

अंतर्वस्तु

प्रस्तावना

1. बड़े होना
2. मोई-मुकदास (पवित्र अवशेष)
3. शेख अब्दुल्ला की वापसी
4. दिल्ली फुलक्रम
5. 1984— इंदिरा गांधी की हत्या
6. Amritsar
7. 1989: सफदर हाशमी की हत्या
8. सफदर हाशमी मेमोरियल ट्रस्ट-सहमत
9. अनहद गर्जे
10. कश्मीर में आंतरिक कलह का प्रकोप
11. दिल्ली—दुविधा
12. उत्तर-पूर्व में काम करना
13. लौटने की इच्छा पूरी हुई
14. विविध सांस्कृतिक स्थलों की खोज
15. पिताविहीन बच्चे—शिक्षाशास्त्र की खोज
16. बंध पत्थर—कश्मीरियों का जन रंगमंच
17. मुज़फ़्फ़राबाद के लिए बस
18. Final Bhand Experiment

19. बादशाह लीयर
20. कश्मीर में होना या न होना
21. बादशाह पत्थर टूर्स

पेंगुइन का अनुसरण करें कॉपीराइट

प्रस्तावना

हल्के-फुल्के अंदाज़ में, मैं खुद को भारत के समाजवाद की संतान कहता हूँ। अगर ऐसा न होता तो...
भारत जैसे युवा राज्य ने लोगों को जो अवसर प्रदान किए, उनके लिए।
सीमित आर्थिक संसाधनों वाले मैं तो इसके बारे में सपने में भी नहीं सोच सकता था।
मैंने जो कुछ किया, उसके लिए मुझे मुफ्त शिक्षा, छात्रवृत्ति आदि का लाभ मिला।
फेलोशिप, यात्राएं और अन्वेषण के लिए एक सुरक्षित वातावरण। जीवन का अनुभव करें। इन सभी चीजों ने मुझे उन परियोजनाओं में शामिल होने की अनुमति दी जो
उन्होंने सत्ताधारियों से सवाल किए और यहां तक कि उनका सामना भी किया और मुझे पेशकश की
अनुभवी और समर्पित शिक्षकों के मार्गदर्शन में सीखने का अवसर, जिनके
कमजोर और हाशिए पर पड़े लोगों के प्रति करुणा और सहानुभूति ने मार्ग प्रशस्त किया।
मेरे लिए अज्ञात दुनियाओं ने मेरे भीतर प्रतिबद्धता की भावना को गहराई से अंकित कर दिया।
साधारण।
Before I Forget में मेरी यात्राओं की कहानियाँ और अनुभव शामिल हैं।
इस विशाल देश के भूदृश्यों से होकर—बिना पर्याप्त धन और आश्रय के।

या समर्थन। कई अज्ञात शुभचिंतकों ने अपने दरवाजे खोल दिए और समर्थन दिया।
उन्होंने मुझे मेरे विभिन्न प्रयासों में सहयोग दिया और हम मित्र और सहयात्री बन गए।
पुस्तक में एक अंतर्निहित विषयवस्तुगत सूत्र है, जो कहानी के साथ-साथ बदलता रहता है।
भारत का दशकों पुराना नियति से जुड़ा सफर अनिश्चित दिशाओं में आगे बढ़ता रहा।
अपने व्यक्तिगत संघर्षों, हारों, अपमानों और विजयों को साझा करते हुए...
कुछ जानलेवा घटनाओं के साथ-साथ, बहुत संतोष भी मिलता है।
मेरे भीतर यह बात थी कि मैंने उन चीजों में भाग लिया जिन पर मुझे विश्वास था।
नाटक, फिल्म या सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का निर्माण करते समय, इस बात का ध्यान रखना आवश्यक था कि भारत
कई शताब्दियों से एक साथ जीवित है, युगों से लेकर
आदिम जीवनशैली से लेकर अत्यधिक डिजिटल अंतरिक्ष युग तक।
इस प्रकार, मुझे रचना करते समय वर्तमान में आगे बढ़ने की चुनौती का सामना करना पड़ा है।
समकालीन भारतीय सांस्कृतिक अनुभव जो नवोन्मेषी हैं और जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण रखते हैं।
कई साल पहले, मैं थिएटर विभाग में अध्यापन कार्य पर था।
हैदराबाद के केंद्रीय विश्वविद्यालय में। शाम को मैं अपना समय बिताता था।
शिक्षकों के साथ समय बिताने के दौरान, मैं उन्हें कुछ बातें सुनाता था।

रंगमंच या फिल्मों में अपने काम से जुड़े मेरे कुछ अनुभव। एक दिन,
उस समय विभाग के प्रमुख अनंत कृष्णा ने अचानक कहा, 'एम.के.,
आप इन अनेक अनुभवों के बारे में क्यों नहीं लिखते?’ मैंने इस बात को यूं ही टाल दिया।
उनके सुझावों को तो उन्होंने नकार दिया, लेकिन उन्होंने ज़िद की। 'आप जानते हैं, आपने इतना काम किया है,'
इतने अलग-अलग क्षेत्रों में, अलग-अलग भाषाओं और संस्कृतियों में, लेकिन
आपकी समस्या यह है कि आप लिखते नहीं हैं। लोगों को पता होना चाहिए कि लिखना क्या होता है।
कृष्णा ने आगे कहा, 'आप जिन परिस्थितियों में काम कर रहे हैं, उन्हीं में काम करते रहें।' मैं बस...
हंसते-हंसते वह सब कुछ भूल गया।
वर्ष 2000 में, मैं कश्मीर घाटी पहुंचा—मेरी यहाँ की यात्रा की शुरुआत हुई...
मैं गुप्त रूप से एक छिपी हुई जगह पर थिएटर कार्यशाला शिविर का आयोजन कर रहा हूँ।
ज़बरवान पर्वतमाला। यह किसी सुई के छेद से प्रवेश करने जैसा था।
उस दौर में उग्रवाद अपने चरम पर था। कश्मीर अभी भी एक जमे हुए दौर में था।
अशांति। पारंपरिक तरीकों से गांवों में कई वर्षों तक काम करने के बाद
लोक कलाकारों के बीच, एक दिन स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के थिएटर से एक आगंतुक मुझसे मिलने आया।
स्कूल की सदस्य डॉ. जिशा मेनन थीं। वह कुछ समय के लिए कश्मीर के एक गाँव में हमारे साथ रहीं।

कई दिनों तक हमने लोक नाट्य प्रस्तुतियाँ देखीं। अपने खाली समय में, हम
हम आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते थे, और आम तौर पर बहुत कठिन समय के दौरान अपने काम के बारे में बात करते थे।
कई बार, विशेष रूप से उन समस्याओं के बारे में जिनका हमें समय-समय पर सामना करना पड़ा।
अप्रत्याशित कठिनाइयाँ। एक सुबह उसने कहा, 'एम.के., तुम्हें इन्हें साझा करना होगा।'
लोगों को अपने अनुभवों से यह पता होना चाहिए कि संघर्ष में काम करना कैसा होता है।
क्षेत्र।' मैंने कोई जवाब नहीं दिया।
जबकि इस तरह के सुझाव दोस्तों और शुभचिंतकों से आते रहे- शुभचिंतकों, भारत की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति लगातार नए-नए विचित्र मोड़ लेती रही।
खतरनाक उतार-चढ़ाव, चाहे वह मेरे दोस्त सफदर की हत्या हो। हाशमी द्वारा नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन या हिंदू दक्षिणपंथी विचारधारा का उदय और उसका
राजनीति के लिहाज से, देश सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से असामान्य ऐतिहासिक मोड़ ले रहा था। कश्मीर में अपना घर खोना एक छिपे हुए घाव की तरह था।
जिसका उपचार आवश्यक था।
कई वर्षों बाद, कोविड-19 ने मेरे काम और यात्राओं पर विराम लगा दिया। मुझे
मैं जीवन में पहली बार घर में फंसा हुआ था। मुझे नहीं पता था कि क्या करना है, बस
आम जनता की मृत्यु और विनाश की कहानियाँ सुनकर, मैंने शुरुआत की।

घुटन महसूस हो रही थी। एक दिन हताशा में आकर मैंने अपनी कार निकाली और निकल पड़ा।

मैं अपने घरेलू नौकर रवि के दो बच्चों, अभि और कभी के साथ गाड़ी में घूम रहा था।

लगभग डेढ़ घंटे तक नोएडा और ग्रेटर नोएडा में घूमने के बाद मैं घर लौट आया।

बहुत खालीपन महसूस हो रहा है—ठीक वैसे ही जैसे उन सुनसान, वीरान सड़कों पर मैंने सफर किया था।

अगली सुबह, मैंने जो कुछ भी याद था, उसे लिखना शुरू कर दिया— विशेष रूप से

वे घटनाएँ और अनुभव जिन्होंने मुझ पर प्रभाव डाला था और जिन्होंने मुझे भी प्रभावित किया था

इसने मुझे एक व्यक्ति के रूप में आकार दिया। यादों की इस यात्रा ने मुझे वापस उस समय में पहुँचा दिया।

कई दशक पहले के वे स्थान, क्षेत्र और लोग, जिनके साथ मेरा संबंध था

मैंने अपने जीवन के सबसे अच्छे और महत्वपूर्ण पल उनके साथ बिताए थे। मैंने उनकी पीड़ा को साझा किया था और

उन्होंने अपनी खुशियों को साझा किया या कुछ बेहतरीन सांस्कृतिक प्रतिरोधों के निर्माण में सहयोग किया।

घटनाएँ।

मैं अपने दिवंगत माता-पिता, बाबूजी और बाबी को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने अपने सांसारिक जीवन में हमेशा के लिए अपना योगदान दिया।

सादगी ने मुझे बचपन से ही करुणा और देखभाल के मूल्यों को आत्मसात करने में मदद की।

जिसे मैं संरक्षित करने और अभ्यास करने का प्रयास कर रहा हूँ।
एकमात्र अफसोस यह है कि...

जब भी मुझे उनकी याद आती है, तो मुझे उनके बेघर होने पर बहुत दुख होता है।
उनके बुढ़ापे में। यह मेरे मन पर एक गहरा और अमिट निशान छोड़ गया है।
मेरे विद्यालय के दिनों के सभी शिक्षकों को मेरा आदर, विशेषकर दिवंगत शिक्षकों को।
मुझे उच्च कोटि के कवि दीना नाथ नदीम के मूल्यों को आत्मसात करने के लिए धन्यवाद।
कश्मीरी संस्कृति और उसकी विरासत। स्वर्गीय इब्राहिम अलकाज़ी के प्रति मेरी कृतज्ञता।
नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के निर्देशक—मुझे बनाने की कोशिश करते हुए
एक पेशेवर थिएटर कलाकार होने के नाते, उन्होंने मुझे एक ताबीज दिया जिसे मैं बहुत संभाल कर रखता हूँ।
मैं जो भी करता हूँ, उसमें ये आवश्यक है; उनके ये शब्द मुझे हमेशा याद रहते हैं जब उन्होंने ये कहे थे।
मुझसे, ‘जानती हो, रैना, हमारे देश में, अगर तुम कुछ भी हासिल करना चाहती हो,
याद रखें, नेतृत्व स्वयं करें और किसी और का इंतजार न करें। आपको नेतृत्व देने के लिए।
मैं कश्मीर में अपने उन दोस्तों और मार्गदर्शकों को धन्यवाद देना चाहता हूं, जिन्होंने मेरा साथ दिया।
मृत्यु जैसी खामोशी के उन दिनों में, किसने मेरा साथ दिया और मेरी मदद की जब मैं
मैं घाटी में यह देखने के लिए आया था कि क्या मैं इसके लिए उत्प्रेरकों में से एक बन सकता हूँ।
उन साझा सांस्कृतिक स्थलों को पुनः प्राप्त करना जो लगभग दब गए थे

उग्रवाद के जूते। सलीम बेग के मार्गदर्शन के लिए हार्दिक धन्यवाद।
Nigat Shafi, Shafi Pandit, Nayeem Akther, Naseem Shafai, Rehman Rahi,
अमीन कामिल और कई अन्य।
मंज़ूर अहमद मीर, हकीम जावेद और अरशद को मेरा हार्दिक धन्यवाद।
मुस्ताक, जिन्होंने मेरे काम की शुरुआत से ही मेरा साथ दिया।
घाटी। कई बार उन्होंने अपनी जान जोखिम में डाली ताकि मैं अपना काम जारी रख सकूँ।
वे बिना किसी तनाव के काम करते थे और अब वे इसे अपने दम पर आगे बढ़ा रहे हैं।
घाटी में सांस्कृतिक स्थलों का पुनरुद्धार।
Before I Forget का निर्माण इसके समर्थन के बिना संभव नहीं हो पाता।
अकिंगम के भंड पथेर समुदाय के उस्ताद। मार्गदर्शन और
मैंने स्वर्गीय अली मोहम्मद भगत, गुलाम से जो शिक्षण पाठ प्राप्त किए, उनमें ये भी शामिल हैं।
Rasool Bhagat, late Ghulam Ahmed Bhagat, Ghulam Mohad Bhagat,
गुलाम रसूल भगत (जूनियर) और गुल मोहम्मद भगत। इसके अलावा, शानदार थिएटर कलाकार, उन्होंने मुझे समझने के लिए मेरी आँखें खोल दीं।
घाटी की बहुस्तरीय ऋषि (सूफी) परंपराएं, जहां बौद्ध धर्म का पालन होता है,
शैव और इस्लामी विचारधाराओं के संगम ने एक अद्वितीय पवित्र सिद्धांत को जन्म दिया है।

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] (Ram Rehman [illegible] [illegible]) [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]...

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

Ram Rehman, Parthiv Shah, Rajendra Arora, Shabnam Hashmi and Madan

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] SAHMAT [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मेरा काम।
मैं कनिष्क गुप्ता का आभारी हूं, जिन्होंने सबसे पहले इसे पढ़ा।
पुस्तक का पूरा मसौदा तैयार करें और अपनी उत्साहवर्धक टिप्पणियाँ दें।
मुझे पेंगुइन नामक प्रकाशक मिल गए।
मैं पेंगुइन रैंडम हाउस की पूरी टीम का आभारी हूं और
विशेषकर प्रेमंका गोस्वामी, रिया मुखर्जी, गुंजन अहलावत और को यश दैव। उनके विचारों और टिप्पणियों ने मुझे बहुत बल दिया। किताब। उनके साथ काम करना एक सुखद अनुभव रहा और इससे मुझे यह विश्वास हो गया कि
उनकी कुशल प्रतिभा के मार्गदर्शन में पुस्तक का मुद्रण और प्रकाशन हो रहा है। बहुत-बहुत धन्यवाद।
आप सभी।
मैं एलिसिया राइट को भी बहुत कठिन समय से गुजरने के लिए धन्यवाद देना चाहूंगा।
पुस्तक के संस्करण को पढ़ना और उसे समझने की कोशिश करना।
और अंत में, मैं अपने परिवार और अपनी जीवनसाथी डॉ. अंजली के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।
रैना, अनंत रैना, अकिला, अदिति और फिलिप्पो, जिनके उत्साह के बिना,
उत्साह और लगन के बावजूद मैं इस पुस्तक को कभी पूरा नहीं कर सका। विशेष धन्यवाद।
अंजलि और अनंत मेरे ड्राफ्ट और मेरी अंग्रेजी को ठीक कर रहे थे।

1

बड़े होते हुए

जिस मोहल्ले में मेरा जन्म हुआ था, उसका नाम शीतल नाथ साथू था, जहाँ 200-
शीतल नाथ नाम का एक साल पुराना मंदिर खड़ा था। यह बहुत ही साधारण मंदिर था।
कश्मीरी पंडितों की मिश्रित आबादी वाला श्रमिक वर्ग का इलाका और मुसलमान। पंडित लोग अधिकतर शिक्षित थे और डॉक्टर, शिक्षक आदि थे।
इंजीनियर, क्लर्क और अदालती कर्मचारी। मुसलमान तांगवाला थे। दर्जी, दूधवाले, छोटे ठेकेदार और दिहाड़ी मजदूर। इनमें से कई लोग
उस इलाके के पंडित और मुस्लिम दोनों ही बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे थे।
यह एक ऐसा इलाका था जहां कई लोग मुश्किल से अपना पेट भर पाते थे। आर्थिक दृष्टि से देखा जाए तो, वे फिर भी अपनी कम कमाई पर ही गुजारा कर लेते थे।
वहाँ एक विद्यालय था, हिंदू हाई स्कूल, जो सभी बच्चों के लिए खुला था।

मोहल्ले में पढ़ने के लिए। यह स्कूल, जिसमें एक बड़ा खेल का मैदान भी था, स्थित था।
शीतल नाथ मंदिर परिसर में। दरअसल, स्कूल की इमारत,
परिसर में स्थित खेल का मैदान, मंदिर और अन्य सभी इमारतें उसी व्यक्ति की थीं।
शीतल नाथ सभा।
मंदिर परिसर में स्थित एक इमारत में एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति का कार्यालय था।
उर्दू दैनिक समाचार पत्र, मार्तंड, जिसका नाम मार्तंड मंदिर के नाम पर रखा गया है, जो अपनी प्रसिद्धि के लिए जाना जाता है।
शीतलनाथ से लगभग अस्सी किलोमीटर दूर स्थित यह स्थान अपनी पत्थर की वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है।
टेम्पल मार्तंड कश्मीरी पंडितों की आवाज थे।
विद्यालय का खेल का मैदान कश्मीरी पंडित आंदोलन का केंद्र भी था।
राजनीति। मेरे बचपन के दिनों में, 1950 के दशक से लेकर आगे तक, मैंने सब कुछ देखा।
उस युग के प्रमुख पंडित नेताओं में शिव नारायण फोतेदार 1, शाम शामिल थे।
लाल सर्राफ 2 3 और गोपी किशन। समुदाय में होने वाली आम गपशप। बात यह थी कि ये नेता आपस में उन मुद्दों पर शायद ही कभी सहमत होते थे जिनका सामना करना पड़ता था।
समुदाय। स्कूल का अंततः पुनर्निर्माण किया गया। पहले वाली इमारत में
एक नियमित थिएटर हॉल जहाँ 1950 से 1958 तक नाटकों का मंचन किया जाता था। ये नाटक अधिकतर सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित होते थे या हिंदू धर्म से संबंधित विषयों पर आधारित होते थे।

पौराणिक कथाएँ। बचपन में, मैं इन सभी नाटकों को देखने जाता था और उन्हें बड़े चाव से देखता था।
जिज्ञासा। इन प्रदर्शनों ने छाया का उपयोग करके कई विशेष प्रभाव उत्पन्न किए।
थिएटर, जो कि शानदार गुणवत्ता का था।
मुझे विशेष रूप से एक नाटक याद है, जो पाकिस्तान के साथ 1947-48 के युद्ध पर आधारित था।
कश्मीर के भारत में विलय के तुरंत बाद, सशस्त्र हमलावरों की एक बड़ी सेना ने वहाँ घुसपैठ की।
मुज़फ़्फ़राबाद में प्रवेश किया, जो उस समय पाकिस्तान समर्थित कश्मीर का हिस्सा था।
सेना ने बारामूला पर कब्जा कर लिया था और वे श्रीनगर हवाई अड्डे पर पहुंचने ही वाले थे।
इस युद्ध ने कश्मीर को दो भागों में बांट दिया—एक भाग पर पाकिस्तान का कब्जा है और
दूसरा भारत के साथ है। प्रदर्शन का चरम क्षण तब आया जब... लुटेरे घाटी में घुस गए, उन्होंने लूटपाट की, हत्याएं कीं और महिलाओं का अपमान किया।
फिर एक विमान प्रकट होता और दुश्मन की सीमाओं पर बमबारी करता। सभी लोग
दर्शक सांस रोककर इन दृश्यों के समाप्त होने का इंतजार करते थे।
बंद करना।
मैं इन दृश्यों से रोमांचित और मंत्रमुग्ध हो गया था। मैं ये नाटक ज़रूर देखता था।
लगभग हर दिन, मैं अपनी माँ या दादी से पैसे माँगता था।
टिकटों के लिए। कभी-कभी तो मैं गेटकीपर से अंदर जाने देने की गुहार भी लगाता था।

वह कभी-कभी मेरी बात मान लेता था, लेकिन केवल तभी जब बाकी लोग दर्शक अपनी-अपनी सीटों पर बैठ चुके थे।
मुझे एक और नाटक याद है, अक्का नंदुन, जो कश्मीरी लोक कथा पर आधारित था।
एक दृश्य में, महारानी माँ को अपने इकलौते बेटे को मारना पड़ता है, जिसे उन्हें सौंप दिया गया था।
उसे एक ऋषि ने वरदान के रूप में इस शर्त पर दिया था कि वह बच्चे को वापस लौटा देगी।
तेरह वर्ष। जब ऋषि पुत्र को ले जाने लौटते हैं, तो रानी
वह उसे सौंपने से इनकार कर देती है और ऋषि उसे गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी देते हैं।
अंततः, जब रानी नरम पड़ जाती है और अपने तेरह वर्षीय बेटे को वापस लौटा देती है...
ऋषि उसे आदेश देता है कि वह उसे मार डाले, उसके सभी अंगों को काट दे और उसके शरीर के अंगों को पका दे।
वह अपने बच्चे को खोने के दुख और पीड़ा से गुजरते हुए ऐसा करती है।
रानी द्वारा बेटे की हत्या और उसे पकाकर खाना बनाना इस घटनाक्रम का चरमोत्कर्ष था।
कहानी। मैं लोगों को महारानी माँ की दुर्दशा पर रोते हुए देखा करता था।
जब वह इस दृश्य का प्रदर्शन कर रही थी, तब हत्या, शरीर के टुकड़े करना और पकाना छाया नाट्यकला की तकनीकों का उपयोग करके दिखाया गया। मेरा मुंह खुला का खुला रह जाता था।
इन दृश्यों के दौरान यह खुला हुआ था। मुझे ऐसा लगा जैसे कोई अजीब जादू हो रहा हो।
मेरी आंखों के सामने।
तब ऋषि ने महारानी को पका हुआ शव परोसने का आदेश दिया।

उसने अपने बेटे के अंश अपनी छह बेटियों, राजा, ऋषि और स्वयं को दे दिए।
अंत में, वह रानी से अपने बेटे के लिए एक और थाली लगाने का अनुरोध करता है, जिसे वह स्वीकार कर लेती है।
वे आंसू बहाते हुए, विलाप करते हुए और दर्द में कराहते हुए ऐसा करते हैं। भोजन शुरू करने से पहले,
ऋषि रानी से अपने पुत्र को पुकारने के लिए कहते हैं। जब रानी पुकारती है, तो उसका पुत्र प्रवेश करता है।
कमरे से बाहर निकलता है और अपनी थाली लेकर खाने बैठ जाता है। कहानी की सीख यह थी कि
सारा संसार माया है।
इस तरह के रंगमंच ने मुझे बहुत आकर्षित किया और मैं इसके बारे में बहुत उत्सुक था।
मोमबत्ती की रोशनी में छाया दृश्यों को बनाने के लिए इस्तेमाल की गई तकनीक। एक दिन,
जब थिएटर में कोई नहीं था, तो मेरे कुछ दोस्तों और मैंने चुपचाप मैंने पिछले दरवाजे से बैकस्टेज एरिया में प्रवेश किया। यह एक अलग ही दुनिया में प्रवेश करने जैसा था।
रहस्यमयी गुफा। वहाँ जानवरों के मुखौटे, मुकुट, पेड़, पोशाकें और बहुत कुछ था।
चित्रित दृश्य। दूसरे कमरे में, हमें मानव अंग और एक खोपड़ी मिली, सभी
रुई से बने हुए। जब हमने उन्हें छुआ, तो हमें वास्तविकता का पता चला।
हम जिस नाटकीय जादू का अनुभव कर रहे थे। इस तरह का रंगमंच शायद यह बात अब पुरानी लग सकती है, लेकिन इन प्रदर्शनों का उद्देश्य और इरादा आज भी वही है।
अब भी यह मेरे मन को झकझोर देता है।

यह विडंबना ही है कि लगभग तीन दशक बाद, वर्ष 1992 में, जब मैं मोती लाल केम्मु द्वारा लिखित एक समकालीन कश्मीरी नाटक का हिंदी में निर्देशन करना।
नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा की रिपर्टरी कंपनी के अभिनेताओं द्वारा अभिनीत यह नया नाटक
इसमें भी वही क्रम था जो ऐस नंदुन में था, जिसमें महारानी माँ ने अपनी हत्या कर दी थी।
ऋषि के अधीन इकलौता पुत्र। केम्मु ने इस लोक परंपरा को अपने अंतर्गत समाहित कर लिया था।
नाटक में वर्णित कहानी को आतंकवाद की वर्तमान वास्तविकता के विपरीत प्रस्तुत किया गया है।
कश्मीर में, नाटक के भीतर नाटक की युक्ति का उपयोग करते हुए और एक परस्पर संवाद का निर्माण करते हुए
मिथक और वास्तविकता का संगम। यहाँ नुंडा का पुत्र गोलियों से मारा जाता है।
आतंकवादी। मुझे अपने बचपन के उस अनुभव की याद आ गई जब मैंने यह खोज की थी।
शीतल नाथ थिएटर के पर्दे के रहस्य, जहाँ नंदा की हत्या छाया रंगमंच की तकनीक का उपयोग करके की गई थी। अक्का को मेरी श्रद्धांजलि।
नंदुन, मैंने इसी शैडो तकनीक का इस्तेमाल करके यह सीक्वेंस पूरा किया, लेकिन
अधिक गहराई से और अधिक परिष्कृत उपकरणों का उपयोग करते हुए। शीतल नाथ मोहल्ला और उसके मंदिर परिसर तक ही सीमित नहीं थे।
केवल पड़ोसी समुदाय। यह कश्मीरी पंडितों का गढ़ था।
स्थानीय राजनीति, एक अल्पसंख्यक की पहचान की राजनीति जहाँ, समय-समय पर, आह्वान होते हैं

आंदोलन, जुलूस और धरने के लिए दिए जाते थे। बचपन में, ये गतिविधियाँ
पहले बहुत मज़ा आता था। उस समय मुझे इन सब बातों की ज़्यादा समझ नहीं आती थी।
सामुदायिक नेता इस बारे में उपदेश दे रहे थे। वर्षों बाद, हमें बताया गया कि
कई राष्ट्रीय नेता और प्रतिष्ठित राज्य नेता वहां आए थे और उन्होंने समुदाय को संबोधित किया, जिनमें महात्मा गांधी के नाम भी शामिल थे।
जवाहरलाल नेहरू और शेख अब्दुल्ला। मुझे बताया गया था कि इनमें से अधिकांश
भाषण भारत और कश्मीर को शासन से मुक्ति दिलाने के बारे में थे।
क्रमशः ब्रिटिश और महाराजा।
इस मंदिर परिसर में शुरू होने वाला कोई भी पंडित आंदोलन अंततः समाप्त हो जाएगा।
श्रीनगर शहर की मुख्य सड़कों से जुलूस के रूप में गुजरते हुए।
हालांकि, इसे अक्सर असहमति जताने वाले वर्ग के विरोध का सामना करना पड़ता था।
कुछ चौराहों पर पंडितों की मौजूदगी के कारण अक्सर बड़ी झड़पें हो जाती थीं। मुझे याद है।
जन्माष्टमी शोभा यात्रा के दौरान घटी ऐसी ही एक घटना।
सामान्यतः शोभा यात्रा शीतल नाथ मैदान से शुरू होती है और पंडित महिलाएं और पुरुष शहर की मुख्य सड़कों से होकर गुजरेंगे।
छोटे लड़के-लड़कियों को ले जा रहे मुख्य रथ पर फूलों की पंखुड़ियाँ बरसाएँ।
भगवान कृष्ण, राधा और गोपियों के वेश में।

उस साल, मैंने छोटे भगवान कृष्ण का रूप धारण किया था। मुझे आज भी याद है।

दृश्य। जुलूस के हब्बा के पास छोटा बाजार पहुंचने के क्षण से ही दृश्य बदल गया।

झेलम नदी के किनारे स्थित कदल में चारों ओर से पत्थरों की बारिश हो रही थी।

ये निर्देश जुलूस और रथ को लक्षित करके दिए गए थे, जिन पर सजे- धजे लोग सवार थे।

बच्चों। जब रथ पर पत्थर पड़ने लगे तो पुलिस ने लाठीचार्ज का आदेश दिया।

पत्थरबाजों पर हमला करो। मेरे पिता ने मुझे बचाया। वे कहीं से प्रकट हुए, मुझे रथ से उठाया और संकरी गलियों से तेज़ी से निकल गए जब तक कि...

हम सुरक्षित घर पहुंच गए।

प्राथमिक स्कूल

बचपन में मैंने लाल डेड प्राइमरी स्कूल में पढ़ाई की, जो एक संस्था है जिसका संचालन

हिंदू एजुकेशन ट्रस्ट। इस ट्रस्ट के स्कूलों और कॉलेजों की एक श्रृंखला थी।

श्रीनगर शहर। यह कश्मीरी पंडितों द्वारा स्थापित एक अल्पसंख्यक ट्रस्ट था।

मेरे घर से लगभग दो किलोमीटर दूर एक पुरानी इमारत में स्थित है, जिसका स्वामित्व

कोई धनी व्यक्ति। यहाँ शिक्षक अधिकतर पंडित समुदाय से थे।

लेकिन छात्र सभी समुदायों से आए थे। हालाँकि इमारत

यह किसी अमीर आदमी की संपत्ति थी, यह कोई अमीरों का स्कूल नहीं था। सभी बच्चे वहाँ से आते थे।
साधारण परिवार। पूरे सप्ताह नियमित कक्षाएं चलती थीं, और शनिवार का दिन सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए निर्धारित था, जहाँ बच्चे सीखेंगे
कश्मीरी लोकगीत गाते हैं और हमारे हिंदी निर्देशकों द्वारा लिखित और निर्देशित छोटे नाटक प्रस्तुत करते हैं।
और उर्दू शिक्षक।
मुझे याद है कि मेरे उर्दू और संस्कृत के शिक्षक बहुत सख्त थे।
वे हमेशा हमें रटने की विधि से पढ़ाना चाहते थे, जो मेरे लिए बहुत कठिन था।
इन शिक्षकों द्वारा अक्सर बहुत ही क्रूर तरीकों से सजा दी जाती थी; वे बेंत का इस्तेमाल करते थे या
कभी-कभी हम अपनी उंगलियों के बीच एक पेंसिल रखते थे और अपने हाथों को दबाते थे।
हम दर्द से चीख रहे थे। वे भयानक सजाएँ थीं, इसलिए इन्हें सीखना भाषाएँ मेरे लिए बहुत कठिन थीं।
मेरे शिक्षक मुझे कुछ शब्दों के बीच का अंतर नहीं समझा सके। वर्णमाला के अक्षर। कश्मीरी में, हमारे पास 'भा' या 'भा' के लिए कोई अक्षर नहीं हैं।
‘घा’। कश्मीरी इन ध्वनियों का उच्चारण ‘बा’ और ‘गा’ करते हैं; ‘ह’ की ध्वनि,
वह आकांक्षा गायब है। अधिकतर समय मैं इन परीक्षाओं में असफल हो जाता हूँ।
भाषाएँ। अंततः, मेरी उर्दू भाषा में रुचि समाप्त हो गई। यह उबाऊ हो गई।

और मेरे लिए यह बहुत कष्टदायक था। मैंने संस्कृत भी छोड़ दी। यह मेरे लिए असंभव सा लग रहा था।
अपने ग्रेड सुधारने के लिए। लेकिन अंततः, किस्मत ने मेरा साथ दिया। उर्दू पुस्तकें
यह नस्तालीक लिपि के अलावा देवनागरी लिपि में भी उपलब्ध हो गई। और मैं
मुझे जल्द ही उर्दू में बाकी सभी छात्रों से ज़्यादा अंक मिल गए, जबकि बाकी सभी छात्र नस्तालीक़ लिपि में निपुण थे। स्कूल में सभी लोग हैरान थे। मैंने दिया
मैंने संस्कृत का अध्ययन इसलिए किया क्योंकि गर्भनालों को याद करना असंभव था।
यह सोचकर मुझे दुख होता है कि अगर इन शिक्षकों ने मुझमें थोड़ा सा भी प्रेम भाव पैदा किया होता तो क्या होता।
भाषाओं की बात करें तो, मैं शायद उर्दू और संस्कृत दोनों बहुत आसानी से सीख सकता था।
ठीक है। आज, रंगमंच और फिल्म के क्षेत्र में एक पेशेवर होने के नाते, मुझे अपने भीतर यह कमी दिखाई देती है।
मेरी कुछ क्षमताएं हैं; मैं उर्दू और संस्कृत ग्रंथों को उनके मूल रूप में पढ़ने में असमर्थ हूं।
ज्ञान का यह विशाल सागर मेरे लिए उपलब्ध नहीं है, और अनुवाद भी नहीं।
हमेशा आपको मूल ध्वनि और बनावट प्रदान करते हैं।
हमारे कठोर शिक्षकों द्वारा हमें दी गई इन सजाओं के बावजूद,
हम हंसमुख बच्चे थे। कुछ अच्छे शिक्षक हमारे जैसे थे।
हमारे दादा-दादी हमेशा हमें और अधिक सीखने के लिए प्रोत्साहित करते थे।
वार्षिक आधिकारिक विद्यालय निरीक्षण के समय के आसपास, चूंकि हमारा विद्यालय

हम झेलम नदी के किनारे पर थे, जिसे स्थानीय रूप से वेथ के नाम से जाना जाता है।
हमें स्कूल के फर्नीचर को पानी में साफ करने का निर्देश दिया गया था। हम उन्हें पानी पर तैराते थे।
नदी कुछ दूरी तक किसी बेड़ा की तरह बहती रही, प्रवाह के साथ आगे बढ़ती रही।
झेलम (इसका प्राचीन नाम वितास्ता है) पवित्र जल के रूप में उत्पन्न होती है।
कश्मीर के दक्षिण में स्थित वेरीनाग का झरना पहाड़ियों की तलहटी में स्थित है।
पीर पंजाल पर्वत श्रृंखला। यह घाटी में नीचे की ओर बहती हुई घुमावदार राह बनाती है।
उपजाऊ खेतों और कई कस्बों से गुजरते हुए यह श्रीनगर में प्रवेश करती है।
श्रीनगर की स्थापना अशोक महान ने की थी और यह कई राजधानियों की राजधानी रह चुका है।
राजवंश। इस नदी के किनारे मंदिरों, मस्जिदों से भरे पड़े हैं, जियारत, आश्रम और खानखाने, साथ ही हिंदू और मुस्लिम दोनों के घर।
पहले इस शहर में नदी के दोनों किनारों को जोड़ने वाले सात पुल थे।
बढ़ती जनसंख्या और शहर के विस्तार के कारण, दो
और भी पुल बनाए गए। इन पुलों का नाम शासकों, कवियों और अन्य लोगों के नाम पर रखा गया।
सेनापतियों। झेलम या वेथ नदी शहर की जीवनरेखा थी (और आज भी है)।
कई राजवंशों के उत्थान और पतन का साक्षी रहा है।
अब स्कूल की बात करें तो, निरीक्षण के लिए हमें अपना प्रदर्शन करना था।

आने वाले सरकारी अधिकारियों को प्रभावित करने का यह सबसे अच्छा तरीका है।
8 अगस्त 1953 को अचानक स्कूल बंद हो गया और सभी बच्चे
हमें घर वापस जाने के लिए कहा गया। और हमें स्कूल वापस न लौटने के लिए कहा गया।
बच्चे पहले तो इससे बहुत खुश हुए। जब मैं स्कूल से घर के लिए रवाना हुई।
हर दिन, मैं उन गलियों से होकर मुख्य सड़क तक जाता था जो उसे जोड़ती थी।
हब्बा कदल पुल तक। उस मुख्य सड़क से, मैं आगे और आगे जाऊंगा।
मेरे घर तक पहुँचने के लिए कई गलियाँ थीं। उस दिन उन गलियों से गुजरते हुए, मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई।
हर तरफ अजीब सी खामोशी छाई हुई थी। लोग जल्दी-जल्दी भाग रहे थे, एक-दूसरे से बात नहीं कर रहे थे।
जब मैं वहाँ पहुँचा तो मुख्य सड़क पर शायद ही कोई चल रहा था। लगभग
पुल पर हर बीस फीट की दूरी पर तैनात कुछ सैन्यकर्मियों के अलावा सब कुछ खाली था।
उनकी बंदूकों पर संगीनें लगी हुई थीं। मैंने एक साइकिल सवार को सड़क पार करने की कोशिश करते देखा।
पुल। उसे शहर के नियमों के अनुसार पैदल न चलने के कारण पकड़ा गया और एक थप्पड़ मारा गया।
वहां कर्फ्यू लगा हुआ था। यह देखकर मैं इतनी डर गई कि रोने लगी। कहीं से किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझे पार कराने में मदद की।
पुल के दूसरी ओर, उसने मुझे एक दूसरे व्यक्ति को सौंप दिया और बताया

उसने मुझे मेरे मोहल्ले तक पहुँचाने में मदद करने के लिए कहा। इस व्यक्ति ने मुझसे बात किए बिना ही,
उसने मेरा हाथ पकड़ा और आगे बढ़ती रही। जब हम दूसरी लेन में मुड़े, तो हमने देखा
बड़ी संख्या में युवक चारों दिशाओं में भागते हुए पत्थर फेंक रहे थे।
मुख्य सड़क की ओर जहाँ सैनिक सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात थे। दृश्य था...
इतना डरावना था कि मैं फिर से रोने लगी, लेकिन उस अजनबी ने मुझे आश्वस्त किया कि मैं ठीक हो जाऊंगी।
सुरक्षित। हम चलते रहे जब तक कि अगली लेन में प्रवेश नहीं कर गए। वहाँ उसने मुझे सौंप दिया।
एक तीसरा व्यक्ति। मुझे याद है कि इनमें से कोई भी एक-दूसरे को जानता हुआ प्रतीत नहीं हुआ।
अन्य। और न ही मैं उनमें से किसी को जानता था।
अंततः, इस तीसरे व्यक्ति ने मुझे मेरे मोहल्ले तक पहुँचाया।
मैं उस समय दूसरी कक्षा में पढ़ता था।
उस समय मुझे इस सब के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। अब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मुझे लगता है कि...
मेरा मानना है कि यह प्रधानमंत्री की बर्खास्तगी और गिरफ्तारी ही रही होगी।
जम्मू और कश्मीर, शेख मोहम्मद अब्दुल्ला, 8 अगस्त 1953 को।
यह कार्य सदर-ए-रियासत द्वारा किया गया था, जो राज्य का संवैधानिक प्रमुख है।
जम्मू और कश्मीर। अब्दुल्ला को ग्यारह साल तक जेल में रखा गया।
उसके और बाईस अन्य लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया, जिसमें उन पर एक कथित रूप से एक विरोधी पक्ष का समर्थन करने के लिए राज्य के खिलाफ साजिश रचने का आरोप लगाया गया था।

स्वतंत्र कश्मीर। इसे कश्मीर षड्यंत्र केस कहा गया। 4
यह आंदोलन कुछ समय तक चलता रहा और हमें कई बार छुट्टियां लेनी पड़ीं।
स्कूल। पत्थरबाजी, और लोग सुरक्षाकर्मियों के साथ झड़प और हाथापाई कर रहे थे।
बल मेरे बचपन का अभिन्न अंग थे। धीरे-धीरे मैंने यह सीख लिया कि इन व्यवधानों के दौरान और शटडाउन के दौरान आपूर्ति को बनाए रखने के लिए, उनसे निपटने के लिए।
आवश्यक वस्तुओं की कतारें लगी हुई हैं। कश्मीरी लोगों का यह उत्साह देखने लायक है।
सदियों पुराना। यह दशकों से उनकी सेवा करता आ रहा है। जैतून-हरे रंग की शक्ति।
वर्दी और इसका अर्थ हर बच्चे को बहुत कम उम्र से ही स्पष्ट हो जाता है।
Kashmiri child.
जब मैंने मिडिल स्कूल में दाखिला लिया, तो मैंने अपना अधिकांश समय हॉकी खेलने में बिताया।
लेकिन मुझे अक्सर चोट लग जाती थी और मेरे पैरों पर जगह-जगह नीले निशान पड़ जाते थे। इससे मेरी चिंता बढ़ जाती थी।
मेरी दादी, बेनजागरी। वह मेरे पिताजी से मुझे रोकने के लिए बार-बार कहती रहती थीं।
हॉकी खेलना। आखिरकार, मेरे पिता ने मुझे चालाकी से शाम की कक्षाओं में दाखिला दिला दिया।
एक संगीत विद्यालय, प्रेम संगीत निकेतन, गंधर्व से संबद्ध
नई दिल्ली में महाविद्या मंदिर। इस आदर्श विद्यालय के प्रमुख बहुत ही प्रतिभाशाली थे।
बहुमुखी संगीतकार, जगन्नाथ शिवपुरी। इस समय तक मैं किसी न किसी रूप में

बाथरूम में गाने वाली एक गायिका जिसकी आवाज बहुत तेज है।
इस संगीत विद्यालय में एक छात्र के रूप में, मैंने शास्त्रीय हिंदुस्तानी गायन सीखा।
पांचवीं कक्षा से लेकर दसवीं कक्षा तक, पूरे पांच वर्षों तक।
विनय चंद्र नियमित रूप से व्यावहारिक और सैद्धांतिक कक्षाएं लेते थे। हर साल, वे
मुद्गल दिल्ली से परीक्षक के रूप में आकर हमारे प्रैक्टिकल का संचालन करते थे।
परीक्षा. मैंने संगीत मध्यमा उत्तीर्ण की और बड़ा ख्याल का अभ्यास कर रहा था
ध्रुपद के कुछ अंशों के साथ-साथ सैद्धांतिक कक्षाएं भी होंगी। जब मैं संगीत सीखने के उन दिनों को याद करता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि उनमें से अधिकांश
मेरा प्रशिक्षण सरल और सतही था, जिसका उद्देश्य केवल पूरा करना था।
पाठ्यक्रम में मेरी प्रगति नहीं हो रही थी, और मैं धीरे-धीरे अरुचि और ऊब महसूस करने लगा था।
उस उम्र में संगीत के साथ। मुझे लगा कि मेरे शिक्षक ज्यादा मदद नहीं कर रहे थे। मेरी आवाज़
मेरा मन भी टूटने लगा था, और मेरी रुचि और भी तेजी से कम होने लगी थी। और जब मैं
मैंने स्कूल में विज्ञान विषय चुना था, इसलिए संगीत सीखने का समय ही नहीं मिला। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि इस अनुभव से जो बात मेरे मन में रह गई, वह यह है कि
पांच वर्षों तक संगीत सीखने का अनुभव रागों का ज्ञान था। तालों और रागों को पहचानने की क्षमता।
सौभाग्यवश, संगीत विद्यालय के ये पाँच वर्ष व्यर्थ नहीं गए।

मुझे यह बात कई वर्षों बाद तब समझ आई जब मैं नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में गया।
1968 में। प्रेम संगीत निकेतन में जो बात दिलचस्प थी, वह थी संगीत।
शाम को कक्षाओं के बाद होने वाली महफ़िलों में। सर्वश्रेष्ठ संगीतकार
श्रीनगर शहर इन बैठकों में प्रस्तुति देता था। मुझे यह अवसर मिला।
उस दौर के सर्वश्रेष्ठ हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को सुनें, और सर्वश्रेष्ठ
Kashmiri Sufiyana by none other than the doyen of that form, Kalam Janab
तिब्बत बकाल। यह संगीत इतने वर्षों तक मेरे अवचेतन में बसा रहा।
क्योंकि मेरा घर संगीत विद्यालय के बहुत पास था, इसलिए मैं वहीं रहता था।
शाम नौ बजे तक। कई बार ऐसा होता था कि मैं गिर जाता था।
कॉन्सर्ट में सो गया था। जब महफ़िल खत्म हुई, तो कोई शिक्षक मुझे छोड़कर चला गया।
वे साइकिल से घर लौटते थे। मेरी दादी बेंजागरी उनका इंतज़ार करती रहती थीं।
मुझे वह दिखाई दिया और पहली मंजिल की खिड़की से उसे देखा जा सकता था।
सुबह-सुबह वह मेरे माता-पिता को खूब खरी-खोटी सुनाती थी।
मुझे इन ‘बुरी गतिविधियों’ से न रोकने के लिए। मेरे पिता हंसते थे और
उसे शांत करो। उसे विश्वास था कि मुझे अपनी मर्जी से कुछ भी करने की पूरी छूट दी गई थी और

[illegible] [illegible] [illegible] [

हम सीमित साधनों वाला एक संतुष्ट परिवार थे। हम धनी नहीं थे, और यह
कड़ी मेहनत ही थी जिससे परिवारों का गुजारा चलता था।
हर साल स्कूल की वार्षिक परीक्षाओं के बाद, कोई चचेरा भाई या बहन
सहपाठी या तो बोर्ड परीक्षा पास करेंगे या फेल होंगे, यह एक ऐसा अवसर होगा
या तो उत्सव या निराशा। अगर किसी भी सदस्य को कुछ हो जाता है तो...
परिवार के सभी सदस्य एकजुट हुए और एक होकर समस्या का सामना किया।
यही हमारी सबसे बड़ी ताकत थी। यह लगभग बीस लोगों का एक समूह था। वे एक साथ थे, लेकिन फिर भी, हर किसी के पास गोपनीयता का अपना- अपना द्वीप था।
अक्सर, कई मतभेद होते थे, जिन पर तीखी बहस होती थी लेकिन अंततः उनका समाधान हो जाता था।
कबीले के भीतर। यदि किसी को बाहरी पक्ष से संबंधित कोई समस्या हो या
यदि कोई व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से पीड़ित होता, तो पूरा कबीला एकजुट होकर एक साथ परिणामों का सामना करता।
परिवार। मोहल्ले में परस्पर निर्भरता और आत्मनिर्भरता की एक बेहतरीन व्यवस्था थी।
संरक्षण। उदाहरण के लिए, यदि मोहल्ले की किसी लड़की की शादी हो रही हो,
फिर समुदाय के सभी सदस्य मिलकर शादी को सफल बनाने में योगदान देंगे।
बड़ी सफलता। संकट प्रबंधन को इसमें पूरी तरह से समाहित कर लिया गया था।

हमारे पूर्वजों द्वारा स्थापित समुदाय।
शरद ऋतु के महीनों के दौरान, पूरी आबादी ने भंडार करने और
अपने घरों को जलाऊ लकड़ी, सूखी सब्जियां, दालें, केरोसिन और अन्य चीजों से भर लें।
सर्दी के कठोर महीनों को गुजारने के लिए अन्य सामान। हर घर एक रंग-बिरंगी सब्जियों की मालाओं का अद्भुत नजारा, जो लटकी हुई थीं।
खिड़कियाँ, बालकनियाँ और बाहरी दीवारें। सामने के लॉन ढके हुए थे।
ताजा कटी हुई फसल, लाल मिर्च, टमाटर और पूजा के लिए फूल। रंग-बिरंगे कालीनों की तरह ज़मीन पर बिछे हुए थे। यह तब की बात है जब घर थे
शरद ऋतु के महीनों में यहाँ पर्याप्त स्टॉक रहता है, जो कि शादियों का मौसम भी होता है।
शुरू कर दिया।
शादियों के एक ऐसे ही मौसम के दौरान, हमारे घर की ऊपरी अटारी में आग लग गई।
वह घर जहाँ सर्दियों का सारा सामान रखा जाता था। परिवार के सभी सदस्य
वे पड़ोसी की शादी में गए हुए थे। मैं घर पर अकेली थी जब मैंने यह देखा।
ये विशाल लपटें। मैं बस अपनी पूरी ताकत से चीख सकता था और
फिर पास के मार्टंड में मौजूद फोन से दमकलकर्मियों को फोन करने के लिए दौड़ें।
अखबार कार्यालय। फोन पर उनसे बात करने में मुझे कुछ मिनट लग गए।
उन्हें, और जब मैं जल्दी से घर वापस भागा तो मैंने जो देखा वह आज भी मेरे मन में अंकित है।

इतने सालों बाद मन में हलचल मची हुई थी। मोहल्ले के लोग हर जगह बिखरे पड़े थे।
छत पर, बगीचे में और पहले और दूसरे कमरे की खिड़कियों में फर्श। उन्होंने एक श्रृंखला बना ली थी, और सैकड़ों बाल्टियाँ रखी जा रही थीं।
एक हाथ से दूसरे हाथ में स्थानांतरित किया जा रहा था। लाइन के एक छोर पर पानी था।
पास के तालाब से पानी इकट्ठा किया जा रहा है और आगे भेजा जा रहा है।
अटारी तक जाने वाली जंजीर। जब तक मैं कॉल से वापस लौटा, तब तक वे आग को पहले ही बुझा दिया गया था।
हमारे पड़ोसी घनी चाचा एक लंबे डंडे से हमारे मुख्य द्वार की रखवाली करते थे, इसलिए
ताकि कोई भी अज्ञात व्यक्ति अंदर घुसकर कुछ भी चुराने की कोशिश न करे।
उस सारी अफरा-तफरी में घर को घेर लिया गया था। मोहल्ले के युवाओं ने घर को घेर लिया था।
सभी घरों की तलाशी ली और उन पर कड़ी निगरानी रखी। काम पूरा होने के बाद,
घर से सब लोग हंसते हुए नीचे आए, मानो कुछ हुआ ही न हो।
सब लोग मुझे चिढ़ाने लगे और पूछने लगे कि मैं कहाँ गायब हो गया था।
चीखने-चिल्लाने लगी। जब मैंने उन्हें बताया कि मैं आग बुझाने के लिए फोन करने गई थी।
ब्रिगेड के सदस्यों ने फिर हंसते हुए मुझसे पूछा, 'लेकिन क्या वे अभी तक नहीं पहुंचे हैं?'
घनी चाचा ने बीच में आकर मोहल्लेवालों से कहा, 'तुम मूर्ख हो, यह तो...'

उसकी चीख ने मेरी धड़कन रोक दी और हम सबको बचाव के लिए दौड़ा दिया। अगर
अगर उसने चिल्लाकर हम सबको सचेत न किया होता, तो हम बेघर हो गए होते।
अब। याद रखें, हमारे सभी घर लकड़ी के बने हैं, और सभी में पर्याप्त सामान उपलब्ध है।
सर्दियों के महीनों के लिए। हम पूरी तरह से बर्बाद हो जाते, लेकिन क्योंकि
उसकी चीखों से सब सुरक्षित है। इसलिए, आज से सभी मोहल्लेवाले उसके ऋणी हैं।
'हर दिन दो अंडे ताकि उसकी आवाज बुलंद और मजबूत बनी रहे।'
शीतल नाथ मंदिर परिसर के चारों ओर एक बड़ा जलाशय था।
सामने की ओर सेब उगाए जाने वाले सब्जी और फलों के बगीचे थे।
अनार, गाजर और भी बहुत कुछ। जब फल पक जाते थे, तो ये बगीचे
हम बच्चों को इन चीजों का लालच होता था। हम इनमें प्रवेश करने के लिए पूरी योजना बनाते थे।
हम चुपचाप बगीचों में जाते ताकि पकड़े न जाएँ। हम फल चुराते थे।
चौकीदारों की नाक के नीचे से ही।
बच्चों के लिए यह एक तरह का गुरिल्ला युद्ध था। हम सब बहुत गंभीर थे।
और हमने अपने मिशन पर ध्यान केंद्रित किया। सबसे पहले, हमें दूसरे पक्ष से एक नाव हासिल करनी थी।
बैंक की तरफ। हमने बिना बोले हाथ के इशारों से संवाद करना सीख लिया।
अपने मिशन के दौरान एक दूसरे के साथ। अंतिम ऑपरेशन में, बच्चों के एक समूह

एक नाव मिली, और दूसरा चुपचाप नाव में सवार हो गया और उसे चप्पू से चलाकर ले गया।

झील के दूसरे हिस्से में। यहाँ, समूह के बाकी सभी सदस्य आकर शामिल हो गए और आगे बढ़ गए।

बगीचों की ओर। फिर, हमने नाव को बगीचे के किनारे पर लंगर डाल दिया।

और हमने दो लड़कों को जहाज पर ही छोड़ दिया ताकि अगर हम पर हमला हो तो जल्दी से भाग सकें।

पता चला। दो अन्य लड़के पास की झाड़ियों के नीचे छिप गए और निगरानी रखने लगे।

यह देखने के लिए कि क्या मालिक की तरफ से कोई आ रहा है। फिर मुख्य समूह

लगभग पाँच लड़कों ने मुख्य अभियान को आगे बढ़ाया। वे चुपचाप आगे बढ़े।

फलदार पेड़ों की ओर, वे पूरी खामोशी से तेजी से ऊपर चढ़ गए और चलने लगे।

फल नीचे गिर गए, जिन्हें नीचे इंतजार कर रहे लड़कों ने तुरंत उठा लिया।

पेड़ों के बीच। किसी को भी शाखाएँ तोड़ने या शोर मचाने की अनुमति नहीं थी।

पूर्ण मौन समन्वय के साथ, हमने फल चुराए और जल्दी से वापस भाग गए।

नाव। यहाँ प्रतीक्षारत चालक दल नाव को पानी में धकेलने के लिए तैयार थे।

एक बार जब मुख्य समूह सभी चुराए गए फलों के साथ नाव में सवार हो गया, तो कुछ ही समय के भीतर

कुछ ही मिनटों में पूरा समूह पानी के बीचोंबीच इकट्ठा हो गया और हंसने लगा।

और इस साहसिक यात्रा के फल का आनंद ले रहे हैं।

सर्दियों के दौरान, जब तापमान शून्य से नीचे गिर जाता था, तो तालाब

अगर तापमान -7 या -8 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता, तो जमा हुआ पानी

वह इतना ठोस हो गया था कि उस पर चला जा सकता था और उस पर खेला भी जा सकता था। कठोर परिस्थितियों में

सर्दियों के दौरान, यह तालाब असली क्रिकेट खेलने के लिए स्टेडियम में बदल जाता था।

मैच। चूंकि सर्दियों की छुट्टियों के लिए स्कूल बंद थे, इसलिए खेलने के लिए दिन में हमेशा पर्याप्त समय होता था। जमी हुई ज़मीन पर क्रिकेट का यह साहसिक खेल।

पानी में स्केटिंग करना बर्फ पर स्केटिंग करने जैसा था। यह बहुत रोमांचक और आनंददायक था। कई लोगों के लिए

हममें ‘वीरता’ का एक तत्व था, और हमें दिखावा करना अच्छा लगता था।

किनारे से लोग देख रहे थे। फिर हमारी पसंदीदा लड़कियां थीं, हमारी

काल्पनिक प्रेम। उनके लिए, हम दिखावा करने के लिए कुछ भी करेंगे, लेकिन उससे परे

किसी में भी इन लड़कियों से बात करने का साहस या मौका नहीं था।

यह हमारी कल्पना थी, हमारा मूर्खतापूर्ण, बेवकूफी भरा और बेहद मासूम एकतरफा प्यार था।

— ‘majnugiri’.

जैसे ही शाम ढलती, हम खेलना बंद कर देते। फिर हमारी गपशप शुरू हो जाती।

यह शुरू हो जाता। यह घंटों तक चलता रहता, जमे हुए तालाब के ठीक बीचोंबीच।

कभी-कभी लगभग पचास लड़कों का एक बड़ा समूह बातें कर रहा होता था और

वहाँ हँसते हुए, ऐसे खड़े थे मानो वह ठोस ज़मीन हो। एक दिन, जब सब लोग
बातचीत और मौज-मस्ती में व्यस्त होने के कारण, अचानक एक तेज़ आवाज़ आई जिससे लगा कि कुछ टूट गया है।
बर्फ में। सब लोग चीखते-चिल्लाते हुए जान बचाकर किनारे की ओर भागे।
उस क्षण के सदमे में, मैं हिल भी नहीं सका। मैं बस वहीं पड़ा रहा।
हम डर के मारे एक जगह पर खड़े थे कि अगर यह ठंडी जमी हुई सतह टूट गई तो हम सब गिर जाएंगे।
पानी में। सौभाग्य से, कुछ नहीं हुआ। किनारे से, दूसरे लड़के उसने मुझे देखा और मुझे सावधानी से वापस आने के लिए चिल्लाया, और मैंने वैसा ही किया।
सुबह तक इस घटना की खबर आस-पड़ोस में पहुंच चुकी थी और मैंने देखा
वही घनी चाचा मेरे घर में आकर मेरे पिता को यह सब बताने लगे और मेरी दादी। घनी चाचा नाराज थे और उन्होंने मेरे पिता को चेतावनी दी।
दादी ने कहा, 'तुम्हारा यह बच्चा एक दिन सारे बच्चों को डुबो देगा।'
मोहल्ले। भगवान के लिए, इसे कुछ अक्ल सिखाओ।’ मेरी दादी ने कहना शुरू किया...
वे मुझ पर चिल्लाए, और मेरे पिता बहुत गुस्से में और परेशान थे, लेकिन मेरी माँ
सुरक्षात्मक। मुझे चिंता थी कि यह कहानी मेरे सबसे बड़े चाचा तक पहुँच जाएगी, जो
कुल के सदस्यों के बीच उनका बहुत सम्मान था। भगवान जाने।
वह मुझे किस तरह की सजा देता।

तो, हमारे शीतकालीन आइस क्रिकेट खेल समाप्त हो गए, साथ ही हमारे तथाकथित खेल भी।
एकतरफा प्रेम प्रसंग और मजनूगिरी।
गगुर (चूहा)

इस घटना के लगभग दो सप्ताह बाद, हम सूखे मैदान में फुटबॉल खेल रहे थे।
शीतल नाथ मैदान में ठंड का मौसम था। मैंने सामने की ओर एक छात्र को देखा।
जमे हुए तालाब के किनारे को वह सावधानीपूर्वक, कदम-दर-कदम पार करने की कोशिश कर रहा था।
उसके कंधे पर स्कूल का थैला था। यह लड़का काफी साहसी था और कभी नहीं
वह किसी की बात नहीं सुनता था। सच कहूँ तो, वह काफी अहंकारी और सनकी था। हम
उसे ‘गगुर’ उपनाम से पुकारा जाता था, जिसका अर्थ चूहा होता है। उसे पार करते हुए देखकर
हिचकिचाते कदमों से मैंने उसे चिल्लाकर चेतावनी दी कि वह सीमा पार न करे।
जोखिम भरा; जमी हुई सतह नाजुक थी और किसी भी समय टूट सकती थी, और वह
बर्फीले पानी में वह जम जाता। उसने चिल्लाकर जवाब दिया, 'मैं कायर नहीं हूँ।'
'बिल्कुल तुम्हारी और तुम्हारे दोस्तों की तरह!' वह झील के ऊपर चलता रहा, हर एक कदम आगे बढ़ाते हुए।
ध्यान से कदम रखें।
हम उसे देखते रहे और उसके पैरों की खरोंच की आवाज़ सुनते रहे।

बर्फ। जैसे ही वह तालाब के केंद्र में पहुँचा, पानी की जमी हुई सतह।
अचानक टूटकर बिखर गया। चूहा ठंडे पानी में जा गिरा, और
अब केवल उसका सिर ही दिखाई दे रहा था। उसकी बाहें जमी हुई सतह को पकड़ने की कोशिश कर रही थीं।
सतह पर, लेकिन ऐसा करने की कोशिश में बर्फ टूटती रही, और वह संघर्ष करता रहा।
जीवन। तालाब की बर्फ एक तेज धार वाले रेजर की तरह थी, जिसके किनारे उसके शरीर को काट रहे थे।
पेट। हम बच्चे चिल्लाने लगे और उससे कहने लगे कि वह अपना स्कूल बैग आगे रख दे।
उसने अपनी छाती को ढाल की तरह इस्तेमाल किया और उससे बर्फ तोड़ने की कोशिश की। जब तक वह किसी सूखी जगह पर नहीं पहुँच गया। तालाब के बीचोंबीच ज़मीन के एक टुकड़े पर, हम लगातार निर्देश चिल्लाते रहे।
उसे प्रोत्साहित करते हुए, उसका मनोबल ऊंचा बनाए रखने के लिए भी। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा, और
जैसे ही हमारी चीखें मोहल्ले तक पहुंचीं, तालाब के चारों ओर भीड़ जमा हो गई।
उसे प्रोत्साहन भरे शब्द चिल्लाकर सुनाते हुए।
अचानक दृश्य बदल गया। कुछ आदमी लकड़ी के बड़े-बड़े लट्ठे उठाकर लाए और
विशाल पेड़ की शाखाओं पर, जबकि बिजली विभाग के अन्य लोग थे उनके चारों ओर एक मोटी रस्सी बांधकर, एक तैरता हुआ उपकरण बनाया जा सकता है जो काफी लंबा हो।
सूखी ज़मीन तक पहुँचने के लिए। आदमियों ने तालाब की जमी हुई सतह को तोड़ दिया।

उन्होंने खुद शून्य से नीचे के तापमान वाले पानी में उतरकर अपनी जान गंवाई। यह एक अद्भुत अनुभव था।
एक छोटे लड़के की जान बचाने की तकनीक। एक समय ऐसा आया जब लड़का थक गया और ठंडे पानी के कारण आगे नहीं बढ़ सका। उसकी उंगलियाँ उसका चेहरा लाल हो गया था और वह लगभग जम सी गई थी, लेकिन प्रोत्साहन भरे शब्दों ने उसे प्रभावित किया।
वहाँ मौजूद लोग उसे सूखी ज़मीन की ओर धकेलते हुए प्रतीत हुए। वहाँ पहुँचकर,
उन्हें उस यंत्र पर बिठाया गया, जिसे फिर किसी की मदद से खींचा गया।
रस्सियों को वापस किनारे पर ले जाओ। चूहा लगभग जम गया था, अर्धचेतन अवस्था में था, और
उसके शरीर के कुछ हिस्से पूरी तरह से गुलाबी हो गए थे।
मैंने देखा कि वही घनी चाचा चूहे को घेरने वाली भीड़ में घुस गए।
घनी चाचा ने चूहे को नंगा कर दिया और उसे ऊनी कंबल में लपेट दिया।
और उसने उसके मुंह में खूब सारी ब्रांडी ठूंस दी। फिर उसने उसे अपने कंधे पर उठा लिया।
और पास की एक मस्जिद की ओर दौड़ने लगे। वहाँ उन्होंने उसे एक कमरे में डाल दिया।
मस्जिद के हमाम में कुछ घंटों के लिए गर्म पानी डाला गया। जिन लोगों ने बचाव कार्य किया,
वह पहले ही अपना काम फिर से शुरू करने के लिए निकल चुका था, और अब केवल मोहल्ले की भीड़ ही रैट के बाहर आने का इंतजार कर रही थी।
मस्जिद अभी भी जीवित है।

*

मेरे स्कूल के प्रधानाचार्य दीनानाथ नदीम थे, जो एक दिग्गज हस्ती थे।
कश्मीरी साहित्य। वे एक कवि और सामाजिक कार्यकर्ता थे जिन्हें आमंत्रित किया गया था।
प्रगतिशील लेखक संघ के सदस्य के रूप में चीन की यात्रा करने के लिए। 1947 में,
आजादी के बाद, एक 'नया कश्मीर' बनाने की इच्छा जागृत हुई।
(नया कश्मीर)। उस समय नेतृत्व को यह महसूस हुआ कि कला और साहित्य अन्य पहलुओं के साथ-साथ इसे भी बहुत अधिक महत्व दिया जाना आवश्यक था।
विकास। एक प्रगतिशील सांस्कृतिक विकास की ओर यह यात्रा।
यह आंदोलन 1941 में ही शुरू हो चुका था। कुछ बुद्धिजीवी, लेखक, कवि
और कलाकारों ने पहले ही एक सामाजिक-सांस्कृतिक संरक्षक बनाने का प्रयास किया था।
प्रगतिशील लेखक संघ की राज्य इकाई। सुव्यवस्थित करने के लिए इसके संचालन के दौरान, एसोसिएशन के निम्नलिखित विंग थे: प्रगतिशील
लेखक संघ, प्रगतिशील चित्रकार संघ और
प्रगतिशील कलाकार संघ। आज के संदर्भ में, ऐसा लगता है
यह जानकर आश्चर्य होता है कि कश्मीर में एक बहुत मजबूत प्रगतिशील सांस्कृतिक आंदोलन था जहाँ चित्रकार, कवि, लेखक, नाटककार और छात्र थे।
इसका एक हिस्सा। यह आंदोलन एक व्यापक वामपंथी राजनीतिक विचारधारा से प्रेरित था।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के मार्गदर्शन में। प्रगतिशील भारत की सभी क्षेत्रीय भाषाओं में संघों का गठन किया गया, विशेष रूप से,
प्रदर्शन कला के क्षेत्र में, भारतीय पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन के रूप में
(आईपीटीए) और लेखकों के संघ, जिन्हें प्रगतिशील लेखक संघ के नाम से जाना जाता है
(पीडब्ल्यूए)। इस आंदोलन ने सांस्कृतिक जगत के बहुत से लोगों को प्रेरित किया।
भारत के समुदाय का। इस आंदोलन का केंद्रीय विचार बहुत ही महत्वपूर्ण था।
समाजवादी मूल्यों को बढ़ावा देने के साथ-साथ इसने संगीत जगत की कई बड़ी हस्तियों को आकर्षित किया।
भारत भर में चित्रकला, रंगमंच और साहित्य के क्षेत्र में काम करने वाले कुछ नाम हैं, जैसे मुंशी।
प्रेमचंद बलराज शानी, काफ़ी आज़मी, सलिल चौधरी, शंभू मित्रा, एम.एफ.
हुसैन, ज़ोहरा सेगल, दीना पाठक और कई अन्य। यह अखिल भारतीय फिल्म है।
इस आंदोलन का प्रभाव कश्मीरी भाषा की कविता, रंगमंच और अन्य विधाओं पर भी पड़ा।
सांस्कृतिक क्षेत्र, जो नया कश्मीर की अवधारणा में योगदान करते हैं, एजेंडा के अंतर्गत आते हैं।
प्रधानमंत्री शेख मोहम्मद अब्दुल्ला के नेतृत्व में नई राज्य सरकार बनी।
मंत्री।
हालांकि, भारत सरकार ने जल्द ही कश्मीर राज्य को अपने अधीन कर लिया।

सरकार ने शेख मोहम्मद अब्दुल्ला को ग्यारह साल की लंबी सजा सुनाई।
वर्षों बाद, 5 बख्शी गुलाम मोहम्मद ने उनकी जगह ली, और उन्होंने जल्द ही एक नई शुरुआत की।
कश्मीर के पहले महोत्सव, जिसे 'जश-ए-' कहा जाता है, के साथ एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।
कश्मीर में 1956 में आयोजित इस उत्सव को सभी वर्गों द्वारा मनाया जाना था।
कश्मीरी लोग, जिनमें लोक नर्तक, लोक नाट्य कलाकार शामिल हैं, नाविक, पुलिस, कृषि विभाग के अधिकारी, स्कूल और कॉलेज।
हमारे स्कूल ने दीनानाथ द्वारा लिखित एक संगीतमय ओपेरा, नेकी बड़ी का मंचन किया।
नदीम। यह बच्चों का एक संगीत नाटक था जिसमें अधिकांश पात्र नादिम थे।
जंगल के पक्षी और जानवर। इसमें दो अनाथ बच्चों की कहानी दिखाई गई है जिन्हें उनके घर से निकाल दिया गया था।
अपने चाचाओं द्वारा अपने घरों से निकाले गए ये भाई-बहन, एक
घने जंगलों में मित्रवत पशु जगत के बीच आश्रय और सुरक्षा पाएं। जंगल के सभी निवासियों से, जो उन्हें अपना लेते हैं। यह नाटक एक बन गया
landmark production at the Jashn-e-Kashmir festival.
अंतिम प्रस्तुति के लिए, हमें कई वीवीआईपी के सामने अभिनय करना था। तब हमें एहसास हुआ कि...
आयोजकों ने बताया कि महोत्सव के मुख्य स्थल पर खुले मंच पर कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।
हजूरी बाग के मैदान में विशेष रूप से बनाए गए इस स्मारक में हम बच्चे दिखाई नहीं दे रहे थे।

दूर से। मंच की ऊंचाई बढ़ाने के लिए मेजें लाई गईं ताकि
विशाल दर्शक दीर्घा में हम छोटे बाल कलाकार दिखाई दे रहे थे। आज, ठीक उसी स्थान पर,
बख्शी स्टेडियम, श्रीनगर इंडोर स्टेडियम और टैगोर हॉल में खड़े रहें। बाद में,
नेकी बादी ओपेरा के गीत कश्मीरी लोकगीतों में प्रसिद्ध हो गए। भाषा। ओपेरा का संगीत जगन्नाथ शिवपुरी ने तैयार किया था।
मेरे संगीत विद्यालय के गुरु। आज भी, कई समकालीन कश्मीरी गायक नेकी बादी की कविताओं को उनके मूल स्रोत को जाने बिना गाओ।
दीनानाथ नदीम
कश्मीर में एक बहुमुखी कवि होने के अलावा, उन्होंने कई क्षेत्रों में नए रुझान लाए।
कश्मीरी भाषा में अभिव्यक्ति के रूप।

*

मेरा स्कूल हिंदू एजुकेशनल ट्रस्ट द्वारा संचालित था। ट्रस्टी यह संगठन शहर के केंद्र में कई स्कूल चलाता था, जिनमें से कुछ लड़कियों के लिए थे।
बस इतना ही। यह कोई अमीर ट्रस्ट नहीं था। हमारी मासिक फीस कभी भी स्कूल की तरह ज्यादा नहीं थी।
यह कामकाजी वर्ग के बच्चों की जरूरतों को पूरा करता था और सभी के लिए किफायती था।
हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के मेहनतकश लोग। इसमें कुछ बहुत ही खास बातें थीं।
उत्कृष्ट शिक्षक, जिनमें से कुछ लेखक और बुद्धिजीवी थे।

इन विशेषताओं के संयोजन ने स्कूल को अन्य स्कूलों पर अतिरिक्त बढ़त प्रदान की।
कश्मीर में शिक्षा की गुणवत्ता के संदर्भ में स्कूलों की स्थिति अलग-अलग है। उदाहरण के लिए, इसके अलावा
विभिन्न विषयों की नियमित कक्षाओं के अलावा, हमारे पास शौक से संबंधित कक्षाएं भी थीं।
कृषि, वैज्ञानिक नवाचार, रचनात्मक लेखन, नाटक, स्वच्छता और
और भी। ये सभी गतिविधियाँ स्कूल के समय के बाद आयोजित की गईं। इस स्कूल का एक प्रतिद्वंदी स्कूल था, इस्लामिया हाई स्कूल। जब भी कोई विवाद होता था,
राज्य स्तरीय समारोह हो या प्रतियोगिता, दोनों सभी श्रेणियों में प्रतिस्पर्धा करेंगे।
और सभी ट्रॉफियां और पुरस्कार उठा लें। पुरस्कार समारोह के बाद...
श्रीनगर के रेजिडेंसी रोड स्थित पोलो मैदान में दोनों स्कूलों के छात्र पढ़ते हैं।
वे अपने-अपने स्कूल बैंड के साथ ढोल की थाप पर लोक धुनें बजाते हुए शहर की सड़कों पर मार्च करते थे।
ढोल और बांसुरी बजाते हुए, जनता के सामने अपनी ट्रॉफियां प्रदर्शित करते हुए। वर्दी जो
हमने जो कपड़े पहने थे, वे विशेष रूप से धुले हुए और स्टार्च से कसे हुए थे, और औपचारिक थे।
दोनों कक्षाओं के भाग लेने वाले छात्रों ने विभिन्न रंगों की पगड़ी पहनी हुई थी।
दोनों स्कूलों के प्रशिक्षण प्रशिक्षक अच्छे दोस्त निकले।
सभी छात्रों के लिए यह एक आश्चर्य की बात थी क्योंकि हमें लगा था कि वे
वे कट्टर प्रतिद्वंद्वी भी थे।

लोगों के बीच सौहार्द के लिए हमेशा से ही बहुत गुंजाइश थी।
जिससे सांप्रदायिक दृष्टिकोण अप्रासंगिक हो गए। यहां तक कि वे लोग भी जिनके पास शायद थे
उनमें अपने पूर्वाग्रहों को खुलकर प्रदर्शित करने की झिझक थी।
इसके लिए कोई गुंजाइश नहीं थी।
या इसके लिए सामाजिक स्वीकृति। फिर भी, इसके मजबूत तत्व मौजूद थे।
प्रत्येक समुदाय में धार्मिकता, जो एक निश्चित स्तर को दर्शाती थी
संकीर्णता और रूढ़िवादिता का रवैया। हालाँकि, स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए,
कोई सख्त प्रतिबंध नहीं थे।
यह पूरा इलाका हमारा था, चाहे वह शंकरचार्य पहाड़ी हो,
हरि पर्वत, ज़बरवान या महादेव की चोटियाँ। मैं एक समूह का हिस्सा था।
बच्चे जो पहाड़ियों पर चढ़ते, जंगलों में घूमते और जंगली भोजन खाते थे
जामुन (चानुच) और जंगली अंगूर (कव-दाच)। कभी-कभार कोई चीज़ भी मिल जाती थी।
घने जंगल के बीच सेब या खुबानी का पेड़, और जंगली बंदरों के एक समूह की तरह,
हम पलक झपकते ही उन पेड़ों पर चढ़ जाते। आमतौर पर, हम अपनी यात्रा शुरू करते।
शंकरचार्य पहाड़ी से शुरू करें और सीधे शिखर तक चढ़ें, जहाँ दसवां-
शताब्दी पत्थर से बना शिव मंदिर घाटी को भव्यता से देखता हुआ खड़ा था।
कश्मीर। यहाँ से हम परी महल नामक एक स्मारक की ओर बढ़ेंगे।

इसका निर्माण शाहजहाँ के पुत्र मुगल राजकुमार दारा शिकोह ने करवाया था।

मेरे बचपन में, यह एक सुनसान, उपेक्षित जगह थी, एक स्मारक जो सभी से छिपा हुआ था।

कई प्रकार की जंगली झाड़ियाँ और छोटे पेड़-पौधे। इस स्थान से झील का नज़ारा बहुत ही सुंदर था।

बेहद खूबसूरत। अंत में, हम चश्मे शाही पहुँचेंगे, ठंडी शराब पिएंगे,

झरने का साफ पानी पिएं, बगीचों में कुछ देर आराम करें और फिर सैर करें।

घर वापस। हमारे पास घर जाने के लिए बस का किराया देने के लिए कभी पर्याप्त पैसे नहीं होते थे। हम हमेशा

घर सुरक्षित पहुंचने के लिए झील के किनारे बने बुलेवार्ड मार्ग पर पैदल यात्रा की।

मेरे दोस्तों का समूह ऐसे दिनों को हमारे साहसिक दिन कहता था। हम

छुट्टियों में इन साहसिक मार्गों पर अपनी सैर और ट्रेकिंग दोहराएं।

हमें पूरा एक दिन मिला। तब जीवन खुशहाल, तनावमुक्त और चिंतामुक्त था।

साल में एक बार, हमारा स्कूल ज़बरवान या किसी अन्य स्थान पर पैदल यात्रा का आयोजन करता था।

महादेव पर्वत। डल झील के सामने खड़े होकर उन्हें देखा जा सकता था।

ऊँची और भव्य चोटियाँ खड़ी हैं। आज के समय में, मैं इसे हाइकिंग इवेंट नहीं कहूँगा।

लेकिन यह एक कठिन यात्रा थी। हमें अपने कंबल, मग, प्लेट आदि साथ ले जाने पड़े।

सूखे मेवे या चना, और हमारी भोजन और आश्रय संबंधी आवश्यकताएँ। चढ़ाई

ज़बरवान काफी कठिन था, यह देखते हुए कि हम तो सिर्फ स्कूली बच्चे थे।

चोटी तक जाते हुए, हमें रास्ते में बकरवाल, यानी चरवाहे मिलेंगे।

मवेशियों के साथ उनके पारंपरिक घर। वे इन ऊंचे पहाड़ों पर रहते थे।

शरद ऋतु के अंत तक कई महीनों तक, वे अपनी भेड़ों, बकरियों और गायों को चरने के लिए छोड़ देते थे।

इन पहाड़ों के घास के मैदान। जैसे ही शरद ऋतु समाप्त हुई और ठंड बढ़ने लगी।

हवा में प्रवेश करते ही, बकरवाल अपने वापस लौटने का सफर शुरू कर देते।

पर्वतीय दर्रों को पार करते हुए, वे महीनों तक पैदल चलते रहे जब तक कि वे भारत के मैदानी इलाकों में नहीं पहुंच गए।

जहां वे अपने जानवरों का पालन-पोषण जारी रखेंगे। तथ्य यह है कि वे पैदल चले।

भारत के विभिन्न स्थानों से साल भर पहाड़ों तक और फिर

मैदानों में वापस लौटना मुझे बहुत आकर्षित करता था। उनकी हलचल से मन मोह जाता था।

मेरे लिए प्राचीन कारवां की छवियां, मध्य एशिया से आए आक्रमणकारियों की छवियां, उनके

सैनिक इन चरवाहों की तरह दूर-दराज की भूमि को जीतने के लिए चल रहे हैं। वे भी

उन्होंने भी इसी तरह के मार्गों और दर्रों से होकर इसी तरह की यात्राएं की होंगी।

इन बकरवालों की अपनी अनूठी लोक संगीत शैली, हस्तशिल्प और पहनावा है।

घाटी में रहने वाले लोगों से बहुत अलग। इसलिए, वे बनाते हैं जनजातीय लोगों की एक अलग श्रेणी। ज़बरवान के इन पहाड़ों में लंबी पैदल यात्रा।
और महादेव ने हम बच्चों को इन लोगों से बातचीत करने का अवसर दिया।
कभी-कभी तो वे अपना खाना भी साझा करते हैं और उनके कठिन जीवन की झलक भी देखते हैं।
वे ऊबड़-खाबड़ पहाड़।

कश्मीर में आपका स्वागत है

एक दिन अचानक श्रीनगर शहर में एक घोषणा गूंज उठी।
उनका कहना था कि झेलम नदी के किनारे की सफाई करनी होगी। बड़ी संख्या में लोगों ने यह बात कही।
सरकारी अधिकारियों ने श्रीनगर की उस आबादी पर धावा बोल दिया जो वहां रहती थी।
नदी के किनारे और उस पर रहने वाले लोगों के समुदाय पर बड़ी-बड़ी नावों में नदी की यात्रा करते हैं, जिन्हें डोंगा या बाहच कहा जाता है। सभी डोंगा और
लोगों के साथ-साथ बाहाचेस को भी खाली करना पड़ा ताकि वे लगभग अदृश्य। इसका मतलब था या तो नावों को धारा के विपरीत दिशा में खींचना या उन्हें बहने देना।
नदी के किनारे-किनारे सातवें पुल के पार जाओ और नगरपालिका क्षेत्र से बाहर निकल जाओ।
शहर की सीमाएँ। नदी के दोनों किनारों को 'सजाना' था।
एक बहुत बड़े आयोजन के लिए— सोवियत संघ के शीर्ष नेताओं निकिता की आधिकारिक यात्रा
ख्रुश्चेव और निकोलाई बुल्गानिन। यह यात्रा उस समय हो रही थी जब सत्ता चरम पर थी।
शीत युद्ध के दौरान और कश्मीर के एक प्रमुख केंद्र होने की पृष्ठभूमि में
संयुक्त राष्ट्र में चर्चा के विषय।
यह आयोजन संभवतः सोवियत नेताओं को प्रभावित करने के लिए किया गया था।
कश्मीर के मुद्दे पर उनका समर्थन हासिल करना। संपूर्ण राज्य तंत्र

इस यात्रा को यादगार बनाने के लिए हमने पूरी मेहनत शुरू कर दी।
यह एक ऐतिहासिक यात्रा होनी ही थी।

जिसका राजनीतिक प्रभाव होगा और जिसकी गूंज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुनाई देगी।

सरकार ने इस आयोजन को बड़ी सफलता दिलाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी। लेकिन

इसमें हजारों लोगों का विस्थापन शामिल था और ऐसा लग रहा था मानो सेना

नागरिक प्रशासन ने मिलकर शहर और उसके नियंत्रण को अपने हाथ में ले लिया था।

जनसंख्या। मेरे लिए बचपन में यह एक बड़ा अनुभव था। मैंने यह सब देखा।

नदी के किनारे स्थित मेरे स्कूल भवन से ही गतिविधियाँ हो रही हैं।

खारयार के पास झेलम नदी, जो पहले पुल और दूसरे पुल के बीच स्थित थी—

क्रमशः अमीरा कदल और हब्बा कदल।

लगभग एक सप्ताह के भीतर, पहले पुल, अमीरा कदल से नदी का किनारा,

सातवें पुल, सफा कदल तक का पूरा इलाका मरम्मत के दौर से गुजर चुका था। इमारतों

नदी के किनारे स्थित सभी स्थान रंगीन शॉल और क्रेओल वस्त्रों से सजे हुए थे।

और झंडियाँ। नदी के उस पार, विभिन्न प्रकार के सैकड़ों स्वागत मेहराब बने हुए हैं।

चमकीले वस्त्रों और डिज़ाइनों से सजे रंग-बिरंगे कपड़े नदी के उस पार रस्सियों पर लटके हुए थे। संगीत, नारों की गूंज, पारंपरिक गायन और पुलिस की आवाजें सुनाई दे रही थीं।

स्कूल बैंड ने मेरे लिए इस कार्यक्रम को एक अनूठा और अद्भुत महत्व दिया।

वह स्कूली बच्चा जिसने इसमें भाग लिया और इस रंगारंग जुलूस का साक्षी बना।
श्रीनगर के सभी स्कूलों के बच्चे, चाहे वे निजी हों या सरकारी, झेलम नदी के किनारे कतार में खड़े लोग, आकर्षक और रंगीन वर्दी पहने हुए थे।
और पारंपरिक पगड़ी, भारतीय तिरंगे और लाल झंडे दोनों को लहराते हुए।
उनके हाथों में सोवियत ध्वज था। आम जनता, जिनमें पुरुष और महिलाएं दोनों शामिल थे।
महिलाओं ने अपने पारंपरिक फिरन या सलवार-कमीज पहन रखे थे और वे खड़ी थीं।
मोहल्ले के घाटों पर पारंपरिक गीत 'वानवुन' गाकर सोवियत संघ का स्वागत किया जा रहा है।
नेता। स्थानीय पुलिस बैंड के अधिकांश सदस्य अपनी विशेष औपचारिक वर्दी में।
सातों पुलों के मार्ग पर स्थित महत्वपूर्ण स्थानों पर सैनिक तैनात थे।
अतिथि गणमान्य व्यक्तियों के सम्मान में अपनी मार्चिंग धुन बजाते हुए। लगभग
श्रीनगर की पूरी आबादी, युवा और वृद्ध, दोनों ओर कतारों में खड़ी थी।
नदी। इसने पूरे शहर में अभूतपूर्व उत्सव का माहौल बना दिया। अंत में, जब सोवियत मेहमान सातवें मार्ग से नदी के रास्ते ऊपर आए
पुल के ऊपर, उनकी लंबी, रंगीन, भारी सजावट वाली नाव को लगभग 100 लोगों द्वारा खींचा जा रहा था।
सफेद वर्दी और कड़क लाल पगड़ी पहने नाविक, जो एक

शाही हंस धारा के विपरीत दिशा में बह रहा था। वर्षों बाद, जब मैं उस घटना को याद कर रहा था...
नाव की हलचल देखकर मुझे शेक्सपियर के नाटक का एक दृश्य याद आ गया।
एंथोनी और क्लियोपेट्रा, जिसमें क्लियोपेट्रा एक विशाल, पूरी तरह से सजे हुए रथ पर यात्रा करती है।
सीज़र से मिलने के लिए शाही नाव में सवार हुए। वहां की जनता ने मेहमानों का स्वागत किया।
भांडों के सैकड़ों स्वर्णै और ढोल की आवाज़ों के साथ
कश्मीर। हजारों स्कूली बच्चों ने भारतीय और सोवियत झंडे लहराए और
उन्होंने एकता और 'हिंदी-रूसी भाई-भाई' के नारे लगाए, जिससे एक ऐसा माहौल मानो भारत स्वर्ग के द्वार में प्रवेश कर रहा हो।
इस तरह के शो में, बड़ी संख्या में लोग नारे लगाते हैं
हवा में गूंजती हुई यह आवाज, स्कूल जाने वाले बच्चे के लिए एक दुर्लभ और रंगीन घटना थी।
कई वर्षों बाद मुझे इसके भूराजनीतिक आयाम समझ में आए।
सरकार द्वारा प्रायोजित एक विशाल आयोजन। यह नया कश्मीर परियोजना का हिस्सा था।
जम्मू और कश्मीर के प्रधानमंत्री बख्शी गुलाम मोहम्मद द्वारा शुरू की गई इस पहल में, जिन्होंने राज्य के पहले प्रधानमंत्री के खिलाफ विद्रोह किया था,
शेख मोहम्मद अब्दुल्ला। मूल रूप से शेख अब्दुल्ला ही थे। जम्मू के लोगों के विकास और परिवर्तन के लिए दस्तावेज़ तैयार किया गया।
और कश्मीर को 'नया कश्मीर' नाम दिया, लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था।

उसके लिए स्टोर। शेख के बाद बख्शी ने नए प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली।

अब्दुल्लाह को पद से हटाकर जेल में डाल दिया गया। विडंबना यह है कि कई दशकों बाद,

शेख अब्दुल्ला राज्य प्रमुख के रूप में वापस लौटे लेकिन कार्यकाल के दौरान उनका निधन हो गया।

कार्यालय। उनके शरीर को भारतीय तिरंगे में लपेटकर अंतिम संस्कार के लिए ले जाया गया।

आराम।

दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के साथ ही मेरे आरामदेह और चिंतामुक्त स्कूली दिन समाप्त हो गए।

और मैंने कॉलेज में दाखिला ले लिया। स्कूल में मुझे सब जानते थे, और मैं सबको जानता था।

मेरा नाम स्कूल के सम्मान बोर्ड पर अंकित था, लेकिन मैं उससे कहीं अधिक एक छात्र था।

मैंने अकादमिक पढ़ाई की तुलना में संस्कृति और पाठ्येतर गतिविधियों में अधिक रुचि दिखाई। मैं सभी विषयों में उत्तीर्ण हुआ।

मैं परीक्षाएँ तो देता हूँ, लेकिन कभी भी उत्कृष्ट परिणाम नहीं प्राप्त किए। मैं खुद को मानता हूँ।

मैं एक औसत छात्र था जिसे गणित से सबसे ज्यादा डर लगता था। मैं गणित में सिर्फ पास हो पाता था।

मैंने ज्यामिति और त्रिकोणमिति में अच्छा प्रदर्शन किया।
मैंने कक्षा दस की परीक्षा उत्तीर्ण की।

उच्च द्वितीय श्रेणी के अंकों के साथ। इसी अवधि के दौरान, मुझे एक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जश्न-ए- में भाग लेने के लिए राज्य सरकार द्वारा प्रदान किया गया स्वर्ण-लेपित पदक।

[illegible]

[illegible]

1990 [illegible]

[illegible]

[illegible]

critic), Akhtar Mohiuddin (short story writer), Ali Mohamad Lone (playwright), Rehman Rahi (eminent poet) and Dinanath Nadim (legendry

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(playwright), Ghulam Rasool Santosh (painter), Triloki Kaul (painter),

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Birju Maharaj or Mohammad Rafi.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Bombay film star—like Shammi Kapoor, Sharmila Tagore, Nanda, Shashi

[illegible]

घर पहुंचने के लिए लंबा रास्ता इसलिए चुना ताकि सड़क पर भौंकते कुत्तों से बचा जा सके।
देर रात को बड़ा।
संक्षेप में कहें तो, कश्मीर में बचपन सरल सांस्कृतिक अवसरों से भरपूर था।
जिसने मुझे बचपन से ही गहरी छाप छोड़ी है, और जिसने
इतने वर्षों बाद भी यह बात मेरे मन में बसी रही।
आज जब मैं कश्मीर में घूमता हूँ और स्कूली बच्चों से बातचीत करता हूँ,
या फिर कॉलेज और विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ, मुझे एहसास होता है कि वे क्या खो रहे हैं।
मुझे उनकी आँखों में केवल क्रोध, अविश्वास और भय दिखाई देता है। उनसे बातचीत करने पर उन्हें यह एहसास होता है कि उन्हें केवल यही बताया गया है
आधा सच, पूरा सच नहीं। उनमें से बहुत से लोग मुझसे सवाल पूछते रहते हैं।
जो मुझे आशा की एक किरण लगती है। मुझे आश्चर्य हुआ जब सेंटर फॉर में एक लड़की ने मुझसे कहा...
कश्मीर विश्वविद्यालय में कश्मीरी अध्ययन विभाग ने मुझसे एक प्रश्न पूछा।
उनके लिए परिचयात्मक व्याख्यान: '1990 में क्या हुआ था? क्या हुआ था?'
इसका कारण यह है कि कश्मीरी पंडित, जो कश्मीरी जीवन का अभिन्न अंग थे,
क्या उन्होंने अपने पूर्वजों की यह जगह छोड़ दी?’ एक पल के लिए मैं घबरा गया और कुछ नहीं कर पाया।
मुझे पता था कि इस युवा दिमाग को कैसे जवाब देना है। मुझे इस बात का एहसास था कि मैं

असत्य को सत्य के साथ नहीं मिलाना चाहिए। उसने अपना प्रश्न इस प्रकार रखा था:
पूरी ईमानदारी से, और मुझे सच बोलना ही था। जब मैंने अपनी प्रत्यक्षदर्शी गवाही दी
1990 के दशक के घटनाक्रमों के संबंध में, मैंने घटनाओं की व्याख्या बिल्कुल नहीं की। मैंने केवल रिपोर्ट दी।
मैंने जो कुछ सहा था। अपनी कहानी सुनाते हुए मैंने निर्दोषों की ओर देखा।
मेरे सामने के चेहरों को देखकर मुझे एहसास हुआ कि इन युवा विश्वविद्यालय के छात्रों के पास
उन्होंने कभी कश्मीरी पंडितों को देखा तक नहीं था। जब तक वे बड़े हुए, कश्मीरी
पंडित पहले ही राज्य छोड़कर जा चुके थे। मेरा व्याख्यान उनके लिए पहला अनुभव था।
एक कश्मीरी पंडित से मुलाकात और बातचीत।
बहुत देर तक सन्नाटा छाया रहा। मैंने कहा, 'हाँ, जब वे भाग गए थे...'
घाटी में बहुत हिंसा हुई थी।’ मुझसे पूछने वाली लड़की ने कहा। प्रश्न में कहा गया था, 'हम अपने पूर्वजों के पापों के कारण भोग रहे हैं।'
इस पर कमरे में मौजूद अधिकांश छात्र उसकी ओर देखने लगे। मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।
मैंने उसके बयान पर गौर किया, लेकिन इस सवाल पर विचार किया कि उन्हें यह बात कौन बताएगा।
सच क्या है? क्या कश्मीरी होने के नाते हम सब एक साथ आकर अपने सच साझा कर सकते हैं?

कॉलेज के दिन

मैंने श्रीनगर के श्री प्रताप कॉलेज में दाखिला लिया, जिसे लोकप्रिय रूप से एसपी कॉलेज के नाम से जाना जाता है।

यह एक ऐसा महाविद्यालय था जिसमें कई अलग-अलग इमारतें थीं, जिनमें से प्रत्येक एक विशेष कार्य के लिए समर्पित थी।

संकाय। यहाँ, मेरे जीवन में पहली बार, कोई मुझ पर नज़र नहीं रखेगा।

या अगर मैंने कुछ गलत किया तो मुझे पकड़ लेना। मैं यहाँ अकेला था, मेरे साथ कोई नहीं था।

कक्षाओं में उपस्थित रहने पर जोर दिया जाता था। कॉलेज में खेलों की एक मजबूत परंपरा थी।

हॉकी, क्रिकेट और फुटबॉल में हमारी कॉलेज टीमें सभी स्पर्धाओं में मजबूत थीं।

राज्य द्वारा पूरे वर्ष आयोजित किए जाने वाले टूर्नामेंट। हम छात्रों के लिए

कोई वर्दी नहीं थी; कोई भी कुछ भी पहन सकता था। वहाँ कोई नहीं था जो...

जब हमारे द्वारा चुने गए कार्यों की बात आती थी तो हमसे सवाल किए जाते थे। शैली और फैशन हमारे लिए महत्वपूर्ण थे।

छात्रों के लिए अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करना सबसे महत्वपूर्ण होता है।

मेरा कॉलेज मेरे घर से मुश्किल से एक मील दूर था; यह व्यावहारिक रूप से

मेरे पड़ोस में। कॉलेज में दाखिला लेने से पहले भी, बचपन में हम...

हम अक्सर दोपहर बाद अपने मोहल्ले से कैंपस में खेलने या खेलने के लिए आते हैं।

अंतर-महाविद्यालय या अंतर-विश्वविद्यालय राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता देखें या

हॉकी और फुटबॉल में राज्य स्तरीय प्रतियोगिताएं। सभी प्रमुख टूर्नामेंट थे।

यह कार्यक्रम यहीं आयोजित किया गया था, और शहर के आम लोग भी इसे देखने आए थे।

मैच। फुटबॉल हमेशा से कश्मीरियों का पसंदीदा खेल रहा है। टेनिस

क्रिकेट और क्रिकेट धनी छात्रों द्वारा खेले जाने वाले विशिष्ट खेल थे।

अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों से।

कॉलेज के पहले साल में, मैं लगभग इसके मुक्त वातावरण में खो गया था।

मैं कॉलेज में किसी टीम या संगठन का सदस्य नहीं था। मैं यूं ही भटकता रहता था, स्कूल से बंक मारता था।

कैंपस के पास के सिनेमा हॉलों में फिल्में देखने के लिए मैं महीनों तक अपनी वनस्पति विज्ञान की कक्षाओं में नहीं गया, लेकिन मेरा एक बहुत ही आज्ञाकारी दोस्त था जो

मैंने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई थी—जिम्मेदार शिक्षकों को कभी पता ही नहीं चला कि मैं उपस्थित था।

अनुपस्थित। हमारे कॉलेज के पास शहर में तीन सिनेमा हॉल थे, और यह

मेरे दोस्तों के समूह को फिल्म के उद्घाटन के दिन फिल्म देखना बहुत पसंद था।

और, विशेष रूप से, उस दिन का पहला शो। मुझे याद है कि मैं देख रहा था

the first opening shows of Dharamputra, Jis Desh Mein Ganga Behti hai,

Ramayana, Junglee, Jab Jab Phool Khile and many others. It was a matter

हमारे लिए यह प्रतिष्ठा की बात है कि हम कॉलेज में अपने बाकी दोस्तों को दिखा सकें कि हम

शहर में फिल्म की रिलीज के पहले दिन ही उसकी पहली स्क्रीनिंग देखी थी।

रंगमंच।

कॉलेज के दिनों में हमारे दोस्तों का गिरोह टिकटों की हेराफेरी करने के लिए कुख्यात था।

क्योंकि हमारे पास सीमित धनराशि होती थी, इसलिए हमें जो कुछ भी खरीदना पड़ता था, वह हमें खुद ही खरीदना पड़ता था।

हम सभी के पास जो सामर्थ्य थी, वह हमेशा थर्ड क्लास टिकट ही होती थी। अगर हमारे पास नहीं होता तो

हमारे सभी दोस्तों के लिए पर्याप्त पैसे थे, हमने किसी तरह टिकट पाने के लिए संघर्ष किया।

अधिक टिकट पाने के लिए काउंटर पर जाएं। यह लड़ाई सचमुच एक रोमांच थी।

कभी भी अनुशासित कतार नहीं होती, बल्कि अनियंत्रित भीड़ और कुछ अन्य लोगों द्वारा पैदा की गई अराजकता ही होती है।

कालाबाजारी करने वाले। हमारे लिए, टिकट काउंटर तक पहुंचने के लिए हमने जो सिद्धांत लागू किया, वह यह था कि हम टिकट काउंटर तक पहुंच सकें।

हमारा सिद्धांत था 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'। जब हमें कुछ टिकट मिल जाते, तो हम उन्हें बेच देते।

कोई ऐसा व्यक्ति जो उन्हें पाने के लिए बेताब था लेकिन संघर्ष करके उन्हें हासिल नहीं कर सका।

काउंटर। एक बार जब हमने इन टिकटों को बेचकर कुछ अतिरिक्त पैसे कमा लिए।

काले रंग के कपड़े पहनकर, हम फिर से टिकट काउंटर तक पहुँचने के लिए संघर्ष करते हुए और टिकट खरीदने जाते।

टिकट इसलिए खरीदे गए ताकि पूरा समूह टिकट खरीद सके और एक साथ फिल्म देख सके।

मुझे वो समय याद है जब मुझे एक सुपरहिट फिल्म देखने के लिए टिकट नहीं मिल रहे थे।
देव आनंद, दिलीप कुमार और जिप्पी बंदर अभिनीत फिल्म 'इंसानियत'। मैं
इस फिल्म को देखने के लिए मैं इतना उत्सुक था कि मैंने भारतीय समाचारों का इंतजार किया।
डॉक्यूमेंट्री दिखाई जाने लगी। थिएटर में अफरा-तफरी मची हुई थी।
मैं वहाँ जाकर बस गया। मैं 'बॉक्स क्लास' इलाके में चला गया जहाँ शहर के अभिजात वर्ग के लोग रहते थे।
हमने फिल्में देखीं। वहां का माहौल शांत था क्योंकि लॉबी में कोई नहीं था।
मैं वहीं खड़ा रहा और एक छोटे से छेद से स्क्रीन पर झाँक कर देखता रहा...
पूरी फिल्म इसी तरह से।
हमारे कॉलेज के बगल में और उसकी चारदीवारी के पार प्रसिद्ध महिलाओं का कॉलेज। दीवार के उस पार काल्पनिक प्रेम कहानियाँ पनपती थीं, और
वे दिग्गज थे। अधिकतर समय तो लोग उनका नाम भी नहीं जानते थे। उस लड़की के बारे में, जिसके प्रति कथित तौर पर आकर्षण था, लेकिन जिसे उसने कभी देखा भी नहीं था।
यह सब कल्पना मात्र थी, जो दूसरी तरफ से सुनाई देने वाली आवाज़ों पर आधारित थी।
दीवार। यह हास्य एक दिन और आगे बढ़ा जब मेरे कुछ दोस्तों ने... वे नियमित रूप से दीवार के पास मिलते थे और तरह-तरह की आवाजें और टिप्पणियाँ करते थे।
सामने से लड़कियाँ आ रही थीं। अजीब बात यह थी कि हमें लड़कियों की तरफ से भी प्रतिक्रियाएँ सुनाई दे रही थीं। हम

इसके बाद हमारी तरफ से सस्ते फिल्मी गाने गाए गए और लड़कियों ने भी ऐसा ही किया।
दूसरी ओर से किसी अन्य गीत की उपयुक्त पंक्तियों के साथ उत्तर दिया गया। इस गायन
विभाजन दीवार के पार चल रही बातचीत एक खेल में तब्दील हो गई और एक घंटे तक जारी रही।
कम से कम।
कुछ समय बाद, खेल आगे बढ़ा जब हमारे गिरोह के एक सदस्य ने
इस नए संबंध में अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए हमने एक नया उपकरण विकसित किया है।
एक दिन उसने कागज का हवाई जहाज बनाया, उस पर 'कैप्टन बशीर' लिखा, मानो वह
उसका नाम लिया और उसे दीवार के पार फेंक दिया। हमारा समूह कुछ देर इंतजार करता रहा।
प्रतिक्रिया तो मिली, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। अगले दिन, और भी कागज़ के हवाई जहाज़ बनाए गए।
दीवार के पार बनाया और उड़ाया गया। लगभग पंद्रह मिनट बाद, वहाँ एक हवाई जहाज दिखाई दिया जिस पर 'एयर होस्टेस शमीम' लिखा हुआ था। हमारी तरफ सन्नाटा पसरा रहा था। हम बस विमान को घूरते रहे। यह कौन था?
शमीम? किसी को नहीं पता था। किसी ने कहा, 'यह नकली नाम हो सकता है,' लेकिन नहीं।
हमें यह मानना अच्छा लगता था कि यह एक असली नाम है और हम कागज के हवाई जहाज भेजते रहते थे।
दीवार के उस पार बड़ी संख्या में लोग थे। जल्द ही यह हमारे लिए एक नियमित खेल बन गया, और
यह कई हफ्तों तक चलता रहा। यह वायु सेना के हवाई युद्धों जैसा था, इस तरह का भार ढोना।

सीमा दीवार के पार नाम और संदेश। इस खेल का मज़ा।
यह सिलसिला लगभग एक महीने तक चलता रहा। यह हमेशा दोपहर के समय होता था, जब यह सब...
प्यार की लड़ाई नाम से जानी जाने वाली डॉग फाइट शुरू हुई, और बड़ी संख्या में कागज के हवाई जहाज ले जाए गए।
प्यार भरे संदेश, वादे और मुलाकातों की संभावना के संदेश चारों ओर फैल जाते थे।
दोनों दिशाओं में।
एक दिन, प्यार का यह प्यारा और मासूम खेल अचानक रुक गया।
न तो दूसरी तरफ से कोई विमान आया और न ही आदान-प्रदान हुआ।
गाने गाए गए। हमने इंतजार किया, लेकिन कुछ नहीं हुआ। हमने कई विमान खो दिए।
क्योंकि वे कभी वापस नहीं लौटे। हम पूरी तरह से खो गए थे और कुछ कर नहीं पा रहे थे।
समझ नहीं आ रहा था कि अचानक सन्नाटे का कारण क्या हो सकता है।
किसी ने भेजा नहीं था।
किसी भी बुरे या अश्लील संदेश पर प्रतिक्रिया दें। अंततः, कुछ दिनों बाद, हमारे समूह ने हार मान ली।
दिलचस्पी खत्म हो गई और लड़के अपने-अपने रास्ते चले गए। एक अजीब तरह का युद्धविराम हो गया था।
लागू हो जाना।
कुछ सप्ताहों के अंतराल के बाद, महिला महाविद्यालय का वार्षिक दिवस मनाया गया।
वह समारोह, जिसमें मुख्यमंत्री मुख्य अतिथि थे। जब
कार्यक्रम पूरे जोश में चल रहा था और हमें लाउडस्पीकरों पर संगीत सुनाई दे रहा था।

हमारी एक सीनियर छात्रा ने दीवार के ऊपर से लड़कियों के कमरे में एक बड़ा पटाखा फेंक दिया।
कॉलेज के समारोह स्थल पर पटाखा गिरा तो ज़ोरदार धमाका हुआ।
ऐसा लग रहा था जैसे कोई बम फट गया हो। महिलाओं के कमरे में अफरा- तफरी मच गई थी।
कॉलेज। अचानक हमने देखा कि पुलिस वाले चारदीवारी के ऊपर दिखाई दिए।
दोषियों की तलाश जारी थी। तब तक सभी लड़के गायब हो चुके थे।
ज़मीन पर। हममें से कुछ लोग पास के वनस्पति उद्यान से देख रहे थे।
हरी झाड़ियों के बीच से गुजरते हुए, हमने जो देखा वह अजीब और चिंताजनक था।
हमारे कॉलेज के प्रधानाचार्य दीवार के शीर्ष पर चढ़ गए, और तलाश करने लगे...
पटाखा फोड़ने वाले अपराधी। हम सब चुपचाप तितर-बितर हो गए और चले गए।
घर।
अगले दिन, हमारे समूह को प्रधानाचार्य के कार्यालय में बुलाया गया।
जब हमें एहसास हुआ कि उन्होंने किसी तरह हम पर निशाना साध लिया है, तो हम मर ही जाना चाहते थे।
हमारा समूह। जब हम अपने प्रधानाचार्य के कार्यालय में दाखिल हुए, तो हमने मेज पर देखा
हमारे सारे कागज़ के हवाई जहाज एक बड़े ढेर में पड़े थे। हमें समझ नहीं आ रहा था कि उन्हें कहाँ ढूंढें।
उन कागजों पर हमारे नाम थे। प्रधानाचार्य की निगाहें हम सभी पर टिकी हुई थीं।

हमें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। प्रधानाचार्य ने कुछ कागज़ के हवाई जहाज़ उठाए और

जोर से पढ़ें, ‘कैप्टन बशीर, एयर होस्टेस शमीम, फ्लाइट पायलट रैना, एयर

होस्टेस...’ उसने कम से कम दस और विमानों से ये शब्द पढ़े। उसने हमें दिए

उसने हमें जमकर फटकारा। वह हमारे माता-पिता को बुलाना चाहता था, लेकिन इसका मतलब हम सबका अंत होता। हम शर्मिंदा होकर दया की भीख मांगने लगे और

क्षमा। अचानक उसके चेहरे पर मुस्कान फैल गई। उसने कहा, 'तुम्हें चाहिए...'

कम से कम मुझे प्रधानाचार्य के रूप में कुछ सम्मान तो दीजिए। आपको पता है, मुझे सामना करना पड़ा।

मुख्यमंत्री जी!’ हमने तुरंत और भी अधिक गहन माफी मांगी और

हमने वादा किया था कि हम उसे कभी भी हमारे सामने ऐसी शर्मिंदगी का सामना नहीं करने देंगे।

फिर से हमारी ओर से। उन्होंने हमसे एक वचन पत्र पर हस्ताक्षर करवाए और चेतावनी दी कि यदि कोई भी

अगर हमने वही अपराध दोबारा किया, तो वह हमें अदालत में पेश होने से रोक देगा।

हमारी अंतिम परीक्षाएं।

कक्षाओं के अलावा कॉलेज में हमेशा कुछ न कुछ होता रहता था। मैंने भी इसमें भाग लिया।

कई अंतर-राज्यीय और अंतर-विश्वविद्यालयीय फुटबॉल टूर्नामेंटों के साथ-साथ

हजारों प्रशंसक। जैसे-जैसे खेल में रोमांच बढ़ता जाता, लोग हूटिंग करते और

अपनी पसंदीदा टीमों के लिए जोर-जोर से चिल्लाते हुए। जबलपुर विश्वविद्यालय की टीम में प्रतिभाशाली खिलाड़ी थे।

एक अफ्रीकी खिलाड़ी जिसने कश्मीर में जल्द ही सभी दर्शकों का दिल जीत लिया।
हमारे विश्वविद्यालय से हमारे हीरो, शानदार स्कोरर फारूक थे, और सभी
सबकी निगाहें उसी पर टिकी रहती थीं। जब वह गोल करता था, तो पूरी भीड़ उस पर मोहित हो जाती थी।
जैसे ही जश्न शुरू हुआ, कई लोग उसे गले लगाने और उसके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करने के लिए मैदान में दौड़ पड़े।
कुछ समय तक अफरा-तफरी मची रही जब तक कि दर्शकों को बाहर निकलने के लिए मजबूर नहीं किया गया।
मैदान ताकि मैच फिर से शुरू हो सके। जब हमारे एसपी कॉलेज ने खेला, तो
पूरा छात्र समुदाय मैदान को चारों ओर से घेर लेगा।
हमारी टीम का समर्थन करें। आज का दिन ऐसा होगा जब कॉलेज को हर हाल में जीतना होगा।
लागत। नुकसान हम सभी के लिए एक बड़ी आपदा माना जाता था, और हम कई दिनों तक परेशान रहा।
अंतरराज्यीय टूर्नामेंट में कट्टर प्रतिद्वंद्वी राज्य पुलिस थी।
विभाग। उनकी टीम में कुछ बेहतरीन खिलाड़ी थे क्योंकि
पुलिस के उच्च अधिकारियों ने सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं की तलाश की और उन्हें भर्ती करने के लिए उन्हें विशेष अवसर प्रदान किए। रोजगार। जब भी पुलिस टीम हमारे कॉलेज के खिलाफ खेलती थी, तब ऐसा होता था।
हम छात्रों के लिए यह एक भारत-पाकिस्तान युद्ध जैसा था। हम सभी में यही धारणा थी कि...
छात्रों के मन में यह धारणा बैठ गई थी कि पुलिस हमारी दुश्मन है। और इसके पीछे एक कारण था।

ये। कॉलेज में रोमियो जैसे कुछ लड़के थे जो फैशन बनाते थे।

वे हर तरह के मशहूर सितारों की नकल करते थे। वे उन्हीं की तरह कपड़े पहनते थे और लड़कियों के पीछे-पीछे चलते हुए उन्हें प्रभावित करने की कोशिश करते थे। सुबह के समय, कोई भी देख सकता था

मैंने उनमें से सैकड़ों को लड़कियों का पीछा करते देखा। यह व्यवहार सामाजिक रूप से स्वीकार्य नहीं था।

यह स्वीकार्य नहीं था, इसलिए पुलिस को कार्रवाई करनी पड़ी। वे इन लोगों को पकड़ लेंगे और

उन्हें मारा जाता था। अगर लड़के विरोध करते तो उन्हें पुलिस स्टेशन ले जाया जाता और उनकी

अभिभावकों को अपने बच्चों से आमने-सामने बात करने के लिए बुलाया गया। यह मामला हिरासत में भेजे जाने में बदल सकता है।

कुछ दिनों के लिए लड़के।

हमारे कॉलेज और शहर के लड़कों के बीच प्रतिद्वंद्विता की परंपरा

पुलिस पीढ़ियों से प्रतिष्ठित रही है। इसलिए, ऐसा होना ही था।

इस परंपरा को कायम रखना और आगे बढ़ाना प्रत्येक कॉलेज के छात्र का कर्तव्य है।

उन शांतिपूर्ण दिनों को याद करते हुए, उस ऊर्जा और सौहार्द का अनुभव होता था।

कश्मीर के समुदायों के बीच का अंतर बहुत अधिक था। फुटबॉल की कल्पना कीजिए या

सेना की टीमों के बीच मैचों, भोजन और आपूर्ति से युक्त हॉकी आयोजन।

विभागीय टीमें, राज्य पुलिस टीमें, खलासा ब्लूज़ टीम; या राष्ट्रीय

कई हिस्सों से कॉलेज और विश्वविद्यालय की टीमों की भागीदारी वाले टूर्नामेंट।

भारत की सभी टीमें खेल भावना के साथ एक-दूसरे के खिलाफ खेल रही थीं और उन्हें दर्शक देख रहे थे।
एसपी कॉलेज के फुटबॉल मैदान में हजारों आम लोग मौजूद थे। श्रीनगर। आज यह सचमुच एक सपने जैसा लगता है। दशकों से, वे विशाल खेल आयोजन अतीत की बात हो गए हैं और इतिहास के पन्नों में गुम हो गए हैं।

Kashmir Kala Kendra

मैंने प्राथमिक विद्यालय से लेकर उच्च विद्यालय तक स्कूली नाटकों में अभिनय किया था।
मैं स्कूल में पढ़ता था और एक तरह से जाना-माना और भरोसेमंद बाल कलाकार था। जब भी
शौकिया थिएटर को एक बाल कलाकार की ज़रूरत थी, और ज़ाहिर है, मुझे ही चुना गया।
मेरे पिता की अनुमति से। वे आश्चर्यचकित थे लेकिन मेरे काम से काफी प्रभावित भी हुए।
मैं कई तरह की गतिविधियों में हिस्सा लेता था, इसलिए मुझ पर ज्यादा पाबंदियां नहीं थीं।
उन दिनों श्रीनगर शहर में दर्जनों थिएटर संगठन थे, जिनमें से प्रत्येक
इसके अपने कार्यालय और पूर्वाभ्यास स्थल थे जहाँ नाटकों का पूर्वाभ्यास किया जाता था।
इनमें से अधिकांश थिएटर समूह क्राल खुद नामक स्थान के पास स्थित थे।
हब्बा कदल के पास, मेरे घर के नजदीक। ये शौकिया नाट्य समूह थे।

ये गर्मियों के महीनों में बहुत सक्रिय रहते थे और कड़ाके की सर्दियों में बंद हो जाते थे। मुझे कई ऐसे मौके याद हैं जब लोग इन्हें देखते थे।

वे फुटपाथ से या पास की संकरी गलियों में खड़े होकर पूर्वाभ्यास करते थे।

इन नाटकों में लोगों ने खूब मनोरंजन किया और एक दर्शक के आने से पहले ही उन्होंने इसका भरपूर आनंद उठाया।

प्रदर्शन सार्वजनिक हो गया। हर शाम ताक-झांक करने वाले दर्शकों का यह नजारा।

क्राल खुद क्षेत्र में यह आम बात थी।

इन समूहों के लिए सबसे बड़ी समस्या महिला अभिनेत्रियों को ढूंढना थी।

महिलाएं कार्रवाई करने के लिए उत्सुक थीं, लेकिन मजबूत रूढ़िवादिता और अजीब वर्जनाओं के कारण ऐसा नहीं हो पाया।

नैतिकता के निर्धारित सिद्धांतों के कारण उनके लिए इसमें भाग लेना कठिन हो गया था।

रंगमंच। हालाँकि, बहुत धीरे-धीरे और चुपचाप, रंगमंच से जुड़े लोगों ने इसका विरोध किया।

पाखंड खत्म हुआ और महिला अभिनेत्रियां शौकिया प्रस्तुतियों में दिखाई देने लगीं।

मेरे युवा अभिनेता के दिनों में सबसे महत्वपूर्ण समूह काला था।

केंद्र। इस समूह में वरिष्ठ और अनुभवी अभिनेता, चित्रकार, गायक आदि शामिल थे।

प्रसारक और लेखक सदस्य थे। मुझे एक कुशल व्यक्ति के रूप में प्रशिक्षित किया गया।

इस समूह के सभी सदस्य शौकिया कलाकार थे। यह एक परिवार की तरह था जिसमें बड़ी संख्या में लोग थे।

चाचाओं और शिक्षकों की सलाह पर। कला केंद्र के एक प्रमुख शिक्षक की सलाह पर यह निर्णय लिया गया था।
प्रतिभाशाली व्यक्तियों में चित्रकार, अनुभवी अभिनेता और कुशल सेट डिजाइनर सूरज टिकू भी शामिल हैं।
मेरे पिता ने मुझे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में दाखिला लेने दिया। तब तक टिक्कू
भारत सरकार के गीत एवं नाटक विभाग में शामिल हुए।
मैंने नई दिल्ली स्थित सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में सेट डिजाइनर के रूप में काम किया।
उन्होंने राष्ट्रीय नाट्यशाला का कई बार दौरा किया था। शायद वह उन्होंने एक अभिनेता के रूप में मेरी प्रगति को पहचाना। उन्हें यह भी पता था कि हमारे राज्य की सांस्कृतिक
अकादमी में उन युवाओं के लिए छात्रवृत्तियां थीं जो नाटक के क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहते थे।
राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त संस्थानों में संगीत या नृत्य का प्रशिक्षण।
मेरे वरिष्ठ की अनुमति और शुभकामनाओं से, मुझे राष्ट्रीय स्तर पर शामिल होने के लिए चुना गया।
जम्मू और कश्मीर राज्य द्वारा समर्थित नाट्य विद्यालय।
मैं हमेशा कहता हूं कि मैं भारतीय समाजवाद की उपज हूं क्योंकि अगर ऐसा होता तो
भारत के विभिन्न हिस्सों में कला संस्थानों को राज्य का समर्थन नहीं मिला है।
अगर प्रशिक्षण दिया जाता, तो कई युवाओं के लिए यह संभव नहीं होता।
कला, चित्रकला, मूर्तिकला, रंगमंच, नृत्य और संगीत के प्रति अपने जुनून को आगे बढ़ाने के लिए।

वे अपने-अपने क्षेत्रों में अपनी जगह नहीं बना पाते। हममें से घाटी के किसी भी व्यक्ति में खुद का गुजारा करने की क्षमता नहीं थी।

आर्थिक रूप से। भारत एक गरीब देश था, लेकिन युवाओं की अनगिनत कहानियाँ सुनने को मिलती थीं।

राज्य सरकारों से अनुदान या छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले लोग और

इंजीनियर, डॉक्टर और कलाकार बनना। शायद यही एकमात्र रास्ता था।

जम्मू और कश्मीर राज्य की मानव पूंजी का विकास करना, इसके अंतर्गत आता है।

नया कश्मीर परियोजना। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह पहला राज्य था

भारत संघ एक ही झटके में किसानों को भूमि देगा और जहाँ शिक्षा

प्राथमिक विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की शिक्षा पूरी तरह से निःशुल्क कर दी गई थी।

____

1. शिव नारायण फोतेदार (1904-1976) ने अपना जीवन अपने समुदाय के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया।

कश्मीरी पंडित समुदाय शिक्षा और विधवा कल्याण के क्षेत्र में।

वे हिंदू शिक्षा सोसायटी के अध्यक्ष थे और उन्होंने सत्रह संस्थानों की स्थापना की।

घाटी के स्कूलों में। महाराजा हरि सिंह ने उन्हें सदस्य के रूप में मनोनीत किया।

Praja Parishad in 1935. President of Sanatan Dharam Yuvak Sabha. Joined

उन्होंने 1947 में राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और उसके शासी मंडल के सदस्य बन गए।

परिषद के सदस्य के रूप में, बाद में उन्हें संसद सदस्य के रूप में नामित किया गया। 1957 में, वे थे

जम्मू और कश्मीर विधान परिषद के अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित।

2. शाम लाल सराफ (1904-1983) एक गांधीवादी और स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने कश्मीरी पंडित समुदाय के कल्याण, विशेष रूप से समानता के लिए काम किया।

महिलाओं के अधिकारों की समर्थक थीं। कश्मीर छोड़ो आंदोलन की प्रमुख हस्तियों में से एक थीं।

महाराजा हरि सिंह के खिलाफ आंदोलन में शामिल रहे। शेख के साथ मिलकर काम किया।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान मुहम्मद अब्दुल्ला एक बहुत ही प्रभावशाली व्यक्ति बन गए।

1947 से 1957 तक प्रधानमंत्री के कार्यकाल में महत्वपूर्ण कैबिनेट मंत्री।

शेख मोहम्मद अब्दुल्ला के शासनकाल में। फिर प्रधानमंत्री बख्शी के अधीन।

गुलाम मोहम्मद 1953 से 1962 तक कैबिनेट मंत्री रहे।
3. गोपी किशन (1903-1984) एक योगी, रहस्यवादी, महान समाज सुधारक और एक
लेखक। उन्होंने अपने संगठन 'सुधार समिति' के माध्यम से अथक परिश्रम किया।
कश्मीर में अपने समुदाय के वंचित लोगों के कल्याण के लिए। उन्होंने योग का मार्ग चुना और जल्द ही कुंडलिनी योग के शिक्षक बन गए।
मोक्ष। उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक उनकी आत्मकथा कुंडलिनी है: विकासवादी ऊर्जा मानव। अन्य प्रसिद्ध कृतियों में शामिल हैं: खोज
योग। उच्चतर योग ज्ञान प्राप्त करने के बाद, उन्होंने कई पश्चिमी देशों की यात्रा की।
वे देश जो योग के आध्यात्मिक मार्ग पर प्रवचन देते हैं।
4. पी.एन.के. बामज़ई, कश्मीर का सांस्कृतिक और राजनीतिक इतिहास, खंड 3,
एम.डी. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1994; डेविड देवदास, द स्टोरी ऑफ कश्मीर, 2019; संदीप बामज़ई, कश्मीरियत की आग, रूपा, नई दिल्ली। 2006.
5. पी.के. बामज़ई, कश्मीर की संस्कृति और राजनीतिक इतिहास, एम.डी. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1994।

2

मोई-मुकदास (पवित्र अवशेष)

यह चालाई कलां के सबसे कठोर सर्दियों के महीनों में से एक था (भयंकर ठंड)।
घाटी में (महीनों तक) जब सभी शिक्षण संस्थान बंद रहे
सर्दियों की छुट्टियां। 27 दिसंबर 1963 की सुबह, मैं अपना खाता खोलने गया।
मेरे पिता का क्लिनिक हब्बा कदल में था। मेरे पिता एक दंत चिकित्सक थे, और उस दौरान
सर्दियों की छुट्टियों में, मैंने प्लास्टर ऑफ-लाइन बनाने जैसे कई छोटे-मोटे कामों में उनकी मदद की।
मैं अपने मरीजों के लिए पेरिस डेंचर मॉडल बनाता था। मुझे यह काम करना बहुत पसंद था क्योंकि इससे मुझे बहुत खुशी मिलती थी।
एक सटीक मॉडल बनाने में कुछ कौशल की आवश्यकता थी। मुझे सहायता करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।
मेरे पिता ने मुझसे कहा था कि मेरे दंत चिकित्सा करने की संभावना है।
मैं अपने पेशे के आधार पर किसी मेडिकल कॉलेज में दाखिला लेना चाहता हूँ।
उस दिन, जब मैं क्लिनिक के मुख्य शटर खोलने ही वाला था, तभी
उस जगह पर एक अजीब तरह का तनाव छाया हुआ था। मैंने कुछ देखा।
दुकानदारों ने अपनी दुकानें नहीं खोली थीं, मानो वे किसी संकेत की प्रतीक्षा कर रहे हों।
मुस्लिम पुरुषों के छोटे-छोटे समूहों ने ‘नारा-ए’ जैसे नारे लगाने शुरू कर दिए थे।

तकबीर अल्लाह हू अकबर [अल्लाह सबसे महान है]। एक आदमी ने काला झंडा लहराया।
एक लंबे डंडे पर झंडा लगा हुआ था। समूह सड़क के चौराहे पर तैनात हो गया।
लोगों को उनके घरों में वापस भेजना। ऐसा लगता था कि किसी को भी वास्तव में पता नहीं था।
क्या हुआ था या क्या चल रहा था।
मैंने अब्दुल गनी को देखा, जो मेरे लिए चाचा समान थे, और उनसे पूछा कि आखिर क्या हुआ था।
तनाव चरम पर था। उसने अपनी तीव्र आँखों से मेरी ओर देखा और मुझे घूरने लगा।
उसने अपनी दुकान खोली और मुझे चुप रहने को कहा। मेरे पिता आए और मुझसे कहा कि...
क्लिनिक बंद करो। मैंने जल्दी से ऐसा किया। सड़क पर सब कुछ तनावपूर्ण था—लोग
वे फुसफुसाते हुए बातें कर रहे थे और अपनी दुकानों के शटर बंद कर रहे थे। फिर वे बैठ गए।
उनकी दुकानों के सामने। मेरे पिता ने मुझे घर जाने को कहा, और बताया कि वह
वह जल्द ही मेरा अनुसरण करेगा।
जैसे ही मैं घर की ओर चलने लगा, एक हट्टा-कट्टा आदमी तांगे पर सवार होकर तेजी से मेरे पास से गुजरा।
घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी। एक चौराहे पर रुककर वह चिल्लाया, 'होशियार,
खबरदार [सावधान रहो, चौकस रहो]!’ उसने आदेशों की घोषणा की कि क्या करना है
ऐसा करना ही था। उन्होंने कहा कि पूरी तरह से बंद, पूर्ण हड़ताल करनी होगी।

घाटी। इस आदेश का उल्लंघन करने वाले किसी भी व्यक्ति के साथ सख्ती से निपटा जाएगा।
उस दिन से सत्ता में आई 'एक्शन कमेटी'। 'होशियार,
‘खबरदार!’ उसने फिर चिल्लाकर कहा और आगे बढ़ गया।
कुछ ही मिनटों में स्थिति बदल गई। लोगों के छोटे-छोटे समूह निकलने लगे।
इस्लामी नारे लगाते हुए लोग सड़क पर मार्च कर रहे थे। जैसे-जैसे भीड़ बढ़ती गई, वैसे-वैसे लोगों की संख्या भी बढ़ती गई।
इस गति के चलते, कई और छोटे जुलूस निकले, जो एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर बढ़ते हुए आगे बढ़े।
एक दिशा से दूसरी दिशा में। कुछ ही घंटों में यह एक बड़े जुलूस में तब्दील हो गया जिसका नेतृत्व कर रहा था।
अज्ञात लोग। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि सभी स्वयंसेवकों के आदेशों की प्रतीक्षा कर रहे थे।
जो इन्हीं जुलूसों से निकले थे। पूरे दिन भर,
श्रीनगर के अधिकांश इलाकों में माहौल तनावपूर्ण बना रहा। लोगों के बीच सड़कों पर चर्चाएँ हो रही थीं, सभी क्रोधित और उत्तेजित थे।
आगे और आंदोलन की योजना बना रहे हैं। नमाज़ के समय शहर की सभी मस्जिदें
लोग खचाखच भरे हुए थे और सभाओं में भी बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।
लोग सड़कों, गलियों और रास्तों पर जमा होकर नमाज अदा करने लगे।
जिस इलाके में हम रहते थे, वहाँ लगभग एक दर्जन मस्जिदें थीं, और सभी खचाखच भरी रहती थीं।
क्षमता। नमाज़ समाप्त होने के बाद, धार्मिक उपदेश और पाठ हुए।
दुरूदखानी (कुरान का पाठ) शुरू हुआ।

यह सब समाप्त होने के बाद, लोग एक बार फिर ऐतिहासिक लाल की ओर चल पड़े।
चौक पर भारी भीड़ थी। मेरे पिता ने मुझे घर जाने को कहा। रास्ते में, मैं
विभिन्न दिशाओं से अधिकाधिक जुलूस एक साथ आते हुए दिखाई दिए, सभी
रेजिडेंसी रोड के पास लाल चौक और प्रताप पार्क की ओर बढ़ते हुए। घर पहुँचते ही मुझे प्रताप के नारों की ही आवाजें सुनाई देने लगीं।
पार्क में अफरा-तफरी मच गई, मानो कोई टकराव हो रहा हो। थोड़ी देर बाद...
आकाश में काले धुएं का एक विशाल स्तंभ उठने लगा। और जैसे-जैसे शाम ढलती गई,
नीचे उतरने पर, दूर की आग की नारंगी चमक दिखाई देती थी। जलकर काला हो गया।
कागज हवा में उड़ने लगे, मानो पैराशूट के झुंड हों। इनमें से कुछ जले हुए कागज हमारे बगीचे में गिरे, जिससे परिवार के लिए तनावपूर्ण क्षण पैदा हो गए।
घर लौट रहे एक अजनबी ने हमें बताया कि रीगल और अमरीश सिनेमा प्रदर्शनकारी भीड़ ने हॉल में आग लगा दी थी।
किसी ने सूचना दी कि जम्मू और जम्मू के प्रधानमंत्री के भाई कश्मीर ने रेजिडेंसी रोड पर भीड़ को नियंत्रित करने के लिए मोर्चा संभाला था। इसी वजह से...
घर की स्थिति चिंताजनक है, वास्तव में डरावनी है।
सांप्रदायिक दंगे की संभावना दिख रही थी। अल्पसंख्यक
ऐसी स्थिति को लेकर चिंतित हूं जहां कुछ तत्वों का दुरुपयोग करके स्थिति को पलटा जा सकता है

उनके खिलाफ भीड़ जमा हो गई थी। रेडियो पर घोषणा हुई कि... पैगंबर मुहम्मद की पवित्र वस्तु हजरतबल से चोरी हो गई थी।
यह एक बड़ा सदमा था। मेरे मन में काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। घर। रेडियो बंद था और मेरी दादी आसमान की ओर देख रही थीं।
जले हुए काले कागज के टुकड़ों से घिरी हुई, उसने कहा, 'जो हुआ है वह अच्छा नहीं है।'
कुछ भयानक होने वाला है।’ भीड़ की दूर से आती आवाजें
आवाजें अभी भी सुनाई दे रही थीं, और किसी को नहीं पता था कि आगे क्या होने वाला है।
अगले दिन, तरह-तरह की अफवाहें फैल गईं—कि पवित्र अवशेष खो गया था
यह पहले ही पाकिस्तान पहुँच चुका था; कि किसी स्थानीय राजनेता ने इसे चुरा लिया था।
वर्तमान जम्मू और कश्मीर सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए; और यह कि
यह घाटी में सांप्रदायिक दंगा भड़काने की साजिश थी, जिसके बाद यह पूरे भारत में फैल गया और उपमहाद्वीप में अराजकता की स्थिति पैदा कर दी।
कुछ लोगों का कहना था कि उस अवशेष को किसी प्रभावशाली व्यक्ति ने अपने साथ ले लिया था।
इसे अपने निधन से पहले किसी बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति को दिखाने का इरादा था।
उनके लिए आशीर्वाद के रूप में। तरह-तरह की अफवाहें फैल गईं, और किसी के पास कोई जवाब नहीं था।
इन सबको किसने लगाया था, इसका सुराग मिल गया।
स्थिति और बिगड़ गई और कुछ क्षेत्रों में कर्फ्यू लगा दिया गया।

श्रीनगर के कुछ हिस्सों में बंद जारी रहा। बंद कई दिनों तक चला और दैनिक
सुविधाओं की कमी होने लगी। लोग अपने रोजमर्रा के उपयोग की वस्तुओं का भंडारण करने लगे।
जरूरतें। नागरिक प्रशासन पूरी तरह से ध्वस्त हो गया था, और लोगों को
प्रशासन को अपने हाथों में ले लिया है। हर सुबह, युवा
एक्शन कमेटी के स्वयंसेवक खुली तांगों पर सवार होकर विभिन्न चौराहों पर रुकते हुए 'होशियार, खबरदार' के नारे लगाते और घोषणा करते हुए घूमते रहे।
चीनी, नमक, चावल और तेल जैसी प्रत्येक वस्तु की दरें निर्धारित थीं। ये दरें बाध्यकारी थीं।
प्रत्येक नागरिक और प्रत्येक दुकानदार पर। जो कोई भी इसका पालन नहीं करेगा
इन आदेशों को कार्रवाई समिति की सजा का सामना करना पड़ेगा।
जो जन प्रतिक्रिया के कारण अचानक अस्तित्व में आया था। इस संस्था का गठन किया गया था।
प्रसिद्ध धार्मिक हस्तियों द्वारा संचालित और नेतृत्व किए जाने वाले। इस प्रकार के
दिन भर में कई बार घोषणाएँ होती थीं। कभी-कभी वे
आम जनता को इस तरह व्यवहार करने के निर्देश दिए गए थे।
वे आपस में भाईचारे का भाव रखते थे। अगर किसी को किसी चीज की जरूरत होती, तो इलाके के लोग उनकी मदद के लिए मौजूद रहते थे। उन्हें उस परिस्थिति में आगे बढ़कर उस व्यक्ति के साथ सहयोग और समर्थन करना था।
लोगों को सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने के स्पष्ट निर्देश दिए गए थे।

और अन्य धर्मों के लोगों के साथ भाईचारा। कश्मीर एक चमकता सितारा बन गया।
दुःख की इन घड़ी में सांप्रदायिक सद्भाव का एक उदाहरण।
कुछ ही दिनों के भीतर, ग्रामीण इलाकों के किसान नीचे उतर आए।
श्रीनगर शहर में शोक व्यक्त करने के लिए घाटी के सभी हिस्सों से हजारों लोग आए।
पवित्र अवशेष की चोरी। सभी सड़कें और गलियाँ आम लोगों से भरी हुई थीं।
ग्रामीण लोग। श्रीनगर शहर का परिदृश्य बदल गया।
शहर की सभी मुख्य सड़कों पर सामुदायिक रसोईघर आयोजित किए गए हैं।
सुसराओं द्वारा संचालित और विभिन्न स्थानीय निकायों द्वारा समर्थित, ये रसोईघर एक का हिस्सा थे।
कश्मीर की एक पुरानी परंपरा जो कश्मीरी भाईचारे को सामने लाती है।
अधिकांशतः, सुसरा पीले चावल उपलब्ध कराते हैं, जो सभी के लिए शुभ अनाज माना जाता है।
कश्मीरी लोग, और उनके साथ, सर्दियों में लोगों के लिए गर्म पानी।
प्रतिदिन लाखों लोग योजनाबद्ध जुलूसों में एक छोर से दूसरे छोर तक मार्च करते थे।
शहर के एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक, साथ ही साथ अन्य हिस्सों में भी जुलूस निकाले जा रहे थे।
घाटी के। इन जुलूसों में काले झंडे और हरे झंडे दोनों ही लहराए गए।
शोक, अपवित्रता और क्रोध के प्रतीक। सामान्य इस्लामी नारों के अलावा,
हिंदू, मुस्लिम और सिख एकता के नारे लगेंगे।

उस रात, मस्जिदों ने हजारों लोगों के लिए कुरान की आयतें पढ़ीं।
ग्रामीण इलाकों से आए लोग शहर में डेरा डाले हुए थे। ये लोग रात में मस्जिदों में शरण लेते थे, क्योंकि सर्दी का मौसम था और शहर में काफी ठंड थी।
कुछ दिन पहले बर्फबारी हुई थी।
उन दिनों मैं शहर में बेफिक्र होकर घूमता था और उन हजारों लोगों को देखता था।
गाँव के लोग लगभग पूरे शहर में बसे हुए थे। दृश्य कुछ इस तरह के थे।
रूसी वृत्तचित्रों में बोल्शेविक काल को दर्शाया गया है।
क्रांति के दौरान किसान लोग यह देखने के लिए मॉस्को शहर में उमड़ पड़े कि क्या हो रहा है।
ज़ारों के शासन के बाद आए बदलाव को उन्होंने स्वयं ही स्वीकार किया।
दबी आवाज़ में इस बात पर अटकलें लगाई जा रही थीं कि घटनाएँ अचानक किस तरह का मोड़ ले सकती हैं।
अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा भड़काने की अफवाहें थीं।
ढाका में सांप्रदायिक दंगे और हत्याएं हुईं, जो उस समय पूर्वी पाकिस्तान का हिस्सा था।
कश्मीर में घटित घटनाओं पर प्रतिक्रिया। हालाँकि, इस खबर के बावजूद भी
कश्मीर पहुंचने पर जनता की ओर से कोई प्रतिकूल प्रतिक्रिया नहीं मिली।
कश्मीरी पंडित समुदाय ने इस पवित्र अवशेष के खोने पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की।
मुसलमानों के समर्थन में एक जुलूस का आयोजन करके। यह मार्च शुरू हुआ।

शीतल नाथ मैदान में स्थित मेरे मोहल्ले से, जो कश्मीरी आंदोलन का केंद्र है।
पंडितों की राजनीति। हममें से कुछ युवा किशोरों को नेतृत्व करने का दायित्व सौंपा गया था।
जुलूस निकालना और नारे लगाना। मुझे यह करना बहुत अच्छा लगता था। कुछ हज़ार लोग थे।
पंडितों ने हमारे साथ एकजुटता दिखाने के लिए इस महत्वपूर्ण जुलूस में भाग लिया।
कश्मीरी मुस्लिम भाइयों। यह जुलूस कुछ काले लोगों के साथ धीरे- धीरे आगे बढ़ रहा था।
झंडे और सबसे आगे एक अकेला केसरिया झंडा। जब हम अंदर दाखिल हुए वहाँ मुस्लिम बस्तियों को देखकर हैरानी हुई, यहाँ तक कि अविश्वास भी हुआ। हम चिल्ला रहे थे।
slogans like ‘Marenge ek saath, jiyenge ek saath [We will die together, we
साथ रहेंगे]'; 'मोये-मुकद्दस पाक को वापस करो ऐ ज़ालिमों
[हे उत्पीड़कों, पवित्र आत्माओं की हमारे पास वापसी हो]’; और ‘हिंदू मुसलमान खड़ा हो जाओ,
जिंदाबाद, जिंदाबाद [हिंदू और मुसलमानों का संघ अमर रहे]। जैसे ही हम हब्बा कदल पहुँचे, हमने देखा कि वहाँ एक सामुदायिक रसोईघर था।
सड़क किनारे पहले से ही लोग इकट्ठा हो गए थे। वहाँ मुस्लिम स्वयंसेवक चले गए।
हमें देखकर, वे गर्म पानी और पीले चावल लेकर हमें खिलाने आए।
बुजुर्गों ने हमें आशीर्वाद दिया। मुझे याद है कुछ नम आंखों वाले पुरुषों ने हमें गले लगाया था।

थोड़ी देर के विराम के बाद, जुलूस शहर के केंद्र की ओर बढ़ा, जहाँ लोगों की प्रतिक्रिया से हमें बहुत प्रोत्साहन मिला। लोग दूर-दूर से आए थे।
हमारी शोभायात्रा देखने के लिए मस्जिदों के लोग सड़क के किनारे कतार में खड़े हो गए थे। एक समय ऐसा आया जब...
जैसे ही हमने नारे लगाने शुरू किए, सड़क किनारे खड़े सभी लोग भी हमारे साथ शामिल हो गए।
शाह हमदान दरगाह के पास खानका-ए-मौला पहुंचने पर मैंने देखा महिलाएं अपनी खिड़कियों से हमें देख रही थीं और प्रार्थना में अपने हाथ ऊपर उठाए हुए थीं।
सर्वशक्तिमान ईश्वर। यह स्पष्ट था कि इस जुलूस ने दोनों को आपस में जोड़ दिया था।
दर्द को आपस में बांटने से समुदाय और करीब आ जाते हैं। थोड़ा आगे जाकर, एक
हमारे उत्पाद को देखकर एक बुजुर्ग मुस्लिम सज्जन बहुत भावुक और उत्साहित हो गए।
जुलूस के दौरान वह चिल्लाया 'नारा-ए-तकबीर!' हमारा पूरा जुलूस जवाब में उसने कहा, 'अल्लाह-हु-अकबर!' बेचारा आदमी अपने कानों पर विश्वास नहीं कर सका और
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दूं, लेकिन वह कुछ देर तक हमारे साथ चलता रहा।
नवीड कदल के पास, जहाँ उन्होंने हमें छोड़ दिया था।
हम आगे बढ़े और मीरवाइज इलाके में प्रवेश किया। पंडित लोग इसे इसी नाम से पुकारते थे।
यह इलाका पाकिस्तान का है, लेकिन मुझे नहीं पता क्यों। पंडितों के लिए इस इलाके में प्रवेश करना ऐसा था जैसे...
निराधार संदेहों के कारण शत्रु क्षेत्र में प्रवेश करना

वर्षों से गठित। इस बार हमारे जुलूस में कोई भय नहीं था। यहाँ फिर से, हम
लोगों ने उन्हें रोककर गर्म पानी दिया क्योंकि हवा में ठंडक थी।
बहुत कड़वाहट पैदा हो गई। समाज के हर वर्ग से हजारों मुसलमानों ने हमें देखा।
वे मौन थे, लेकिन उनकी आँखों में एक संदेश स्पष्ट था: 'हम सराहना करते हैं और'
मैं आपके इस भाव का सम्मान करता हूँ।
देर शाम जब मैं घर पहुंचा तो मैंने अपनी दादी को देखा, जो
वह दिन भर मेरे बारे में चिंतित थी। उसके चारों बेटे और उनके परिवार भी चिंतित थे।
मेरे अलावा बाकी सब घर पहुंच गए। जब मैं घर में दाखिल हुआ तो सब मेरा इंतजार कर रहे थे।
मुझे। काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा, और मैंने उसका भार महसूस किया। अंत में, मेरा
दादी ने मुझसे पूछा, 'तुमने दिन भर क्या किया?' जब मैंने कहानी सुनाना शुरू किया...
मेरी कहानी सुनते-सुनते उसने मुझे बीच में ही रोक दिया और मेरी माँ से मुझे कुछ खाना देने को कहा क्योंकि मैं
मुझे भूख और थकान महसूस हो रही होगी। अपना खाना खत्म करने के बाद, मैंने अपने प्रियजनों को शुभ रात्रि कहा।
मेरी दादी ने मुझे आशीर्वाद दिया।
हम कश्मीरी बच्चे हमेशा सर्दियों के महीनों में पढ़ाई करते थे और फिर
हमने वसंत ऋतु के आसपास अपनी बाहरी परीक्षा दी। मुझे आशीर्वाद देने से पहले, मेरी दादी ने मुझसे पूछा था, 'तुम अपनी पढ़ाई कब शुरू करने वाले हो?'

आगामी परीक्षा के लिए? इन जुलूसों ने आपको परेशान कर दिया है।
दिनचर्या। अब आपको गंभीरता से काम लेना चाहिए क्योंकि अब सिर्फ तीन महीने बचे हैं।
'तुम्हारी अंतिम परीक्षा।' वह मुझे सुबह चार बजे दरवाजे पर जोर से पीटकर जगाती थी।
उसने अपनी छड़ी को भूतल पर स्थित अपने कमरे की छत के सहारे टिका दिया।
मेरा बेडरूम ठीक ऊपर था। मुझे भी फर्श पर ज़ोर से पैर पटककर जवाब देना पड़ा।
इस बात की पुष्टि करते हुए कि मैं पढ़ाई करने के लिए उठा था। जागने के तुरंत बाद, मैंने
मैं उसके और मेरे लिए चाय बनाती थी। मैं उसके लिए चाय का कप लेकर नीचे आती थी।
और तभी उसे तसल्ली होगी कि मैं सचमुच उठ गया हूँ। उसके बाद, मुझे...
जल्दी करो और पारंपरिक दूधवाले से शुद्ध दूध ले आओ। दादी को अल्सर था।
जिससे उसे बहुत तेज दर्द होता था, और डॉक्टर ने उसे दवा लेने की सलाह दी थी।
इसके लिए ढेर सारा ठंडा दूध। और मैंने, एक अच्छे पोते के रूप में, यह जिम्मेदारी संभाली।
उसके लिए दूध लाने के लिए सुबह बहुत जल्दी उठने के बाद। यह उसके बाद हुआ था।
इन सब बातों के चलते मैं आखिरकार शाम करीब पांच बजे अंधेरे में आराम से बैठ जाता था।
अध्ययन के लिए सर्दियों के महीने उपयुक्त होते हैं।
उस दिन जब मैंने उससे विदा ली, तो उसने कहा, 'कल से तुम...'

अपनी पढ़ाई गंभीरता से शुरू करो, और अगर तुम मेरी बात मानोगे, तो मैं

'मैं तुम्हें फिल्म देखने के लिए पाँच रुपये दूंगा।' यह प्रस्ताव मेरे द्वारा दिया गया था।

दादी के लिए लंबे समय तक। लेकिन उनके पैसे का इस्तेमाल अंग्रेजी देखने के लिए किया जाना था।

सिर्फ फिल्में। उस रात मैंने उससे कहा, 'ठीक है, मैं कल से पढ़ाई करूंगा।'

उसे शुभ रात्रि कहते हुए, मैंने उससे कहा कि वह मुझे अपनी छड़ी से जगाए।

सुबह। वह मुड़ी, मुझे देर तक देखा और मुस्कुराई। मैं चला गया।
पूरी रात वहीं।

पास की मस्जिद में कुरान का पाठ चल रहा था।

अगली सुबह तड़के, मैंने अपनी दादी की छड़ी की आवाज सुनी।

भूतल। मैं उठा, चाय बनाई और उससे पूछा कि क्या वह कुछ खाना चाहेगी।

उसका है। नींद में ही वह बिस्तर के दूसरी तरफ मुड़ गई और बुदबुदाई,

‘अब मैं चाय का क्या करूँगी?’ इसलिए मैं उसके लिए दूध लेने चली गई, और जब मैं

वापस आकर मैंने अपनी पढ़ाई शुरू की। लगभग सात बजे, जब अभी भी बहुत अंधेरा था।

क्योंकि सर्दी का मौसम था, अचानक मैंने अपने पिता को चिल्लाते हुए सुना, 'बिजली गिर गई!' वह फिर चिल्लाए, 'वह चली गई!' परिवार के सदस्य अब सतर्क हो गए थे,

हम सब उसके बिस्तर के पास थे। जी हां, मेरी दादी बेंजागरी हमें हमेशा के लिए छोड़कर चली गई थीं।

उस रात बर्फ गिरी थी। बर्फ की एक पतली सफेद परत ने पूरे इलाके को ढक रखा था।

भूदृश्य। कबीले के मुखिया के रूप में, बेंजागरी को एक भव्य भवन दिया जाना था।
अंत्येष्टि, लेकिन हड़तालों के कारण यह सवाल उठा कि कैसे की जाए।
क्या उनके अंतिम संस्कार के लिए कफ़न और अन्य सामान की व्यवस्था की जा सकती है?
दुकानें और बाजार बंद थे। हमें जरूरत का सामान कौन देगा? अंतिम संस्कार? मुझे और मेरे चचेरे भाई को सभी रिश्तेदारों को सूचित करने के लिए भेजा गया था।
शहर के दूरदराज के इलाकों में रहने वाले लोगों को उनकी मृत्यु के बारे में पता चला। हमें पैदल चलना पड़ा।
घंटों तक, एक के बाद एक इलाके का दौरा करके संदेश पहुंचाते रहे। जब हम
दोपहर में लौटने पर, मेरी दादी को नहला दिया गया था और
अब वह अपनी अंतिम यात्रा के लिए पूरी तरह तैयार थीं। उनके चारों बेटों ने उन्हें अपने कंधों पर उठाया।
उनके कंधे। उनके पीछे उनके पोते-पोतियां और कई सामुदायिक सदस्य थे।
सदस्य और कुछ रिश्तेदार। कश्मीरी पंडित घरों में एक कहावत प्रचलित है।
जन्म से लेकर मृत्यु तक हमारे जीवन में मुसलमानों की भागीदारी रही है।
हमारे लिए सदियों से चली आ रही परंपरा। लेकिन मुस्लिम आबादी शोक में डूबी हुई थी।
अब कई सप्ताह हो गए हैं। फिर भी, विदाई देने के लिए कुछ मुस्लिम पड़ोसी भी मौजूद थे।
उसे अंतिम विदाई देने के लिए।
जैसे ही हम मुख्य सड़क की ओर बढ़े जहाँ लोग इकट्ठा थे

पवित्र अवशेष के गायब होने के विरोध में हजारों लोग आंदोलन में शामिल हुए, सभी
हमारे जुलूस के लिए रास्ता देते हुए, वे सड़क के दोनों ओर चुपचाप खड़े हो गए, मानो
दिवंगत आत्मा के प्रति सम्मान का प्रतीक। मैंने तो किसी को यह कहते हुए भी सुना, 'या अल्लाह,
रहम कर [अल्लाह, रहम करो]। दाह संस्कार के बाद, देर दोपहर में, परिवार के सदस्य एक साथ बैठकर सादा भोजन कर रहे थे। कश्मीरी पंडित
हमारे घरों में, एक रिवाज के तौर पर, रसोई की आग को बुझाया नहीं जाता; उसे जलते रहने दिया जाता है।
साधारण भोजन तैयार किया जाता है और सब मिलकर खाते हैं। भोजन के दौरान, मैं चुपचाप
मैंने अपने पिता से पूछा, ‘वह सारी अंत्येष्टि सामग्री कैसे व्यवस्थित की गई?’
मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, 'यह एक पुरानी प्रथा है जब कोई इसे छोड़कर चला जाता है।'
दुनिया में, हर तरह की मदद स्वाभाविक रूप से मिलती है। सभी दुकानें कुछ समय के लिए खुल गईं, और वे सभी हमारे दुख में शामिल होना चाहती थीं और एक अच्छा काम करना चाहती थीं।
हमारे दुख में हम सब शामिल हैं।
कश्मीर में दोनों समुदायों के बीच परस्पर निर्भरता के बावजूद उनके बीच के मतभेद एक ऐसा जुड़ाव सूत्र रहे हैं जो कभी टूटा नहीं।
कश्मीर की लोककथाएं उनके बीच संघर्ष की कहानियों से भरी पड़ी हैं।
कुछ वास्तविक और कुछ काल्पनिक। प्रत्येक समुदाय की व्याख्या

ऐतिहासिक घटनाएँ अपने-अपने दृष्टिकोण पर आधारित होती हैं, और प्रत्येक का अपना अलग महत्व होता है।
उसी घटना का वर्णन। और फिर भी कश्मीर में जीवन चलता रहता है, जैसे धारा बहती है।
झेलम नदी के किनारे स्थित मंदिर। यह सच है कि झेलम नदी के किनारे स्थित मंदिर
दशकों से मौन रहे हैं, लेकिन वे अब भी कायम हैं, बिना किसी सहायता के भी।
उपासक।
पवित्र अवशेषों को लेकर चल रही मुहिम एक तरह के जन विद्रोह में तब्दील हो गई थी,
कार्य समिति के नेतृत्व में निर्देशित। इसके प्रभाव की गूंज सुनाई देती है।
इस विद्रोह का असर दुनिया के अन्य देशों में भी महसूस किया जा सकता था। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, यह
यह एक ज्वलंत मुद्दा था जिसे बेहद सावधानीपूर्वक संभालने की आवश्यकता थी। इस विवाद को शांत करने के लिए
विद्रोह के दौरान, भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने एक भाषण दिया।
ऑल इंडिया रेडियो ने कश्मीर के लोगों से शांति और सद्भाव बनाए रखने की अपील की।
उन्होंने वादा किया कि पवित्र अवशेष जल्द से जल्द हर कीमत पर मिल जाएगा और यह कि
दोषियों को उचित दंड दिया जाएगा। उसने लाल बहादुर को भेजा।
शास्त्री ने कश्मीर का दौरा किया और कुछ प्रमुख सिविल सेवकों को उनकी सहायता के लिए नियुक्त किया।
उन्हें इस मिशन में शामिल किया गया है।

इस दौरान कायम सांप्रदायिक सद्भाव ने पूरे विश्व के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया।
विश्व। कश्मीर एक बार फिर शांति और भाईचारे का प्रतीक बन गया। विभाजन के बाद, जम्मू से कई हिंदू प्रतिनिधिमंडलों ने कश्मीर का दौरा किया।
अपने मुस्लिम भाइयों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए। और इसके बावजूद
हर तरफ क्रोध और पीड़ा थी, कश्मीरियों ने एक बार फिर इस सिद्धांत को कायम रखा कि
सांप्रदायिक सद्भाव, एक ऐसी बात जिसे महात्मा गांधी ने अपने शासनकाल के दौरान नोट किया था।
भारत के विभाजन के समय सांप्रदायिक नरसंहार हुआ था।
शास्त्री एक सरल, ईमानदार और नेक आत्मा थे, जिन्हें ऊनी कपड़ा उधार लेना पड़ा था।
कश्मीर की भीषण सर्दी के लिए नेहरू से एक ओवरकोट मंगवाया गया।
उनकी टीम ने कड़ी मेहनत की और जल्द ही घाटी के कोने-कोने में यह खबर फैल गई कि पवित्र अवशेष
बरामद कर लिया गया था। चारों ओर खुशी और राहत का माहौल था। घाटी में जश्न मनाया गया। अवशेष की अंतिम पहचान यह थी कि... सैयद मीरक शाह काशानी की जिम्मेदारी, जो एक बहुत पुराने आध्यात्मिक व्यक्ति थे।
कश्मीरी आबादी में उनका बहुत सम्मान था। पहचान पत्र
यह आयोजन 14 फरवरी 1964 को, शहीदों की शहादत की वर्षगांठ पर किया गया था।
इस्लाम के चौथे खलीफा, हजरत अली।
हालांकि, आज तक किसी को नहीं पता कि वह अवशेष किसने लिया और कैसे लिया।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

3

शेख अब्दुल्ला की वापसी

यह 8 अप्रैल 1964 का दिन था। किसी बड़ी घटना को लेकर माहौल में हलचल थी, लेकिन

मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि वह क्या था। मैंने तो बस शहर की सड़कों की सफाई होते हुए देखी थी।

वे मेहराबदार दरवाजों से सजे हुए थे। उनमें से अधिकांश पर लिखा हुआ था।

‘शेर-ए-कश्मीर में आपका स्वागत है’। लोगों के छोटे-छोटे समूहों ने छोटे जुलूस निकाले।

शहर में लोग ‘शेर-ए-कश्मीर जिंदाबाद’ के नारे लगा रहे थे।

कश्मीर का शेर]', 'नारा-ए-तकबीर अल्लाहु अकबर' [अल्लाह का नारा है

greatest]’, ‘Nara-e-Risala, Ya Muhammed Rasoolillah’, ‘Yeh mulq hamara

hai [This nation is ours]’, ‘Iska Faisla Hum Kareinge [We will decide about

this]’ and ‘Sher-e-Kashmir ka Kya Irshaad, Hindu Muslim Sikh Ittehad

कश्मीर के शेर का आदेश क्या है? हिंदुओं में एकता।

मुसलमानों और सिखों]’। जल्द ही यह घोषणा की गई कि शेख मोहम्मद अब्दुल्लाह ग्यारह साल बाद जेल से रिहा हुआ था। पहुँचने पर जम्मू में, जम्मू के नागरिकों द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया।
जिला। अब वह सड़क मार्ग से श्रीनगर जा रहा था, और पूरा शहर कश्मीर के शेर का इतने वर्षों बाद वापस स्वागत करने के लिए सभी इंतजार कर रहे थे।
कारावास। शेख अब्दुल्ला को कोडाइकनाल जेल से रिहा कर दिया गया था।
दक्षिण भारत, जहां वह कई वर्षों तक कैद रहा था।
यह उत्सव और खुशी का दिन था। क़सी गुंड से मार्ग
श्रीनगर के केंद्र में रंग-बिरंगे झंडे और कागज़ के लट्ठों से उत्सव जैसा माहौल था।
हर तरफ झंडे लगे हुए थे। हजारों कश्मीरी सड़क के दोनों ओर खड़े थे।
अपने नेता का स्वागत करने के लिए लोग घंटों सड़क पर चलते रहे। समय बीतता गया और लोग
अधीर। कभी-कभार एक घोषणा में बताया गया कि शेख साहब
किसी भी क्षण आ सकता है। बीच-बीच में हलचल मच जाती थी मानो वह आ गया हो।
पहुँच तो गए, लेकिन जल्द ही जनता को पता चल गया कि यह झूठी चेतावनी थी और
जोर से हंस पड़ा।
अचानक मैंने देखा कि एक खुली जीप पूरी रफ्तार से सड़क पर आ रही है, और
उस जीप में एक लंबा आदमी खड़ा था जिसने डबल-ब्रेस्टेड सूट और टाई पहन रखी थी।

और एक फर की टोपी। इससे पहले कि मैं इस लंबे आदमी को अच्छी तरह देख पाता, जीप
वह मेरे पास से तेज़ी से गुजरा, और इससे पहले कि मैं समझ पाता कि वह कौन था, वह गायब हो गया।
उसके पीछे मनुष्यों की एक नदी बह रही थी। मनुष्यों की वह धारा इतनी लंबी थी कि
कई घंटों तक मैं सड़क पार नहीं कर सका। यह जुलूस लगभग रुका ही नहीं।
तीन घंटे तक पानी बहता रहा और रुकने की कोई संभावना नहीं दिख रही थी।
गति धीमी हो रही है। भागते हुए लोगों की यह नदी अभी भी मेरे मन में अंकित है।
जैसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उस क्षण का एक वृत्तचित्र क्लिप जब गांधी जी
उन्होंने ग्रामीण बिहार का दौरा किया—यह शेख अब्दुल्ला की लोकप्रियता का प्रमाण है।
लोग।
जब जुलूस शहर के केंद्र में पहुंचा, तो शेख साहब ने एक जोशीला भाषण दिया।
कश्मीर और कश्मीरी लोगों के आत्मनिर्णय के बारे में भाषण।
इस कार्यक्रम के दौरान, घाटी भर के विभिन्न स्थानों पर व्याख्यानों की एक श्रृंखला आयोजित की गई थी।
शेख साहब ने कश्मीर राज्य के कई जिलों का दौरा किया और भाषण दिए।
भाषण के बाद। उनके भाषणों का सार यह था कि कश्मीरियों का भाग्य इसका फैसला कश्मीरी खुद करेंगे, कोई और नहीं।
कुछ महीनों तक राज्य में उनकी उपस्थिति ने राजनीतिक परिदृश्य को ध्रुवीकृत कर दिया।

भारत समर्थक प्रधानमंत्री बख्शी के बीच घाटी में माहौल
गुलाम मोहम्मद और वह। यह इस तथ्य के बावजूद था कि बख्शी उनमें से एक थे।
अब्दुल्ला के साथी, जिन्होंने उनके खिलाफ राजनीतिक संघर्षों के दौरान
कश्मीर के महाराजा और कश्मीर छोड़ो आंदोलन के दौरान। हालाँकि, अब जम्मू और जम्मू के विलय के मुद्दे पर उनके बीच मतभेद पैदा हो गए थे।
कश्मीर भारत का हिस्सा है।
हर सप्ताह शेख अब्दुल्ला उत्तेजक भाषण देते थे।
केंद्र सरकार के खिलाफ उनके और राज्य के प्रति अन्याय करने के आरोप में।
इन नियमित भाषणों के माध्यम से उन्होंने सभी वर्गों के लोगों से पुनः संपर्क स्थापित किया।
राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में। उन्होंने राज्य के एक हिस्से से दूसरे हिस्से की यात्रा की।
जनता को प्रेरित करना और अपनी लोकप्रियता बढ़ाना।
इसके कुछ महीनों बाद, गणतंत्र दिवस, 26 जनवरी 1958 को, यह
अब कश्मीर की राजनीति पर अपनी पकड़ दिखाने की बारी बख्शी की थी। उनकी पार्टी
भारत के गणतंत्र की स्थापना का जश्न मनाने के लिए लोगों का एक जुलूस आयोजित किया गया।
जिस समय जुलूस श्रीनगर शहर के उत्तरी भाग से निकला,
दक्षिण की ओर। यह सिलसिला चार घंटे तक जारी रहा, जिसमें लगभग समान संख्या में लोग शामिल थे।
अब्दुल्लाह के जुलूसों की तरह ही लोग अपनी पार्टी के झंडे लिए हुए थे।

राष्ट्रीय सम्मेलन। उस दिन बर्फ गिर रही थी, लेकिन जुलूस बहुत बड़ा था।
शेख अब्दुल्ला के पहले जुलूस का एक प्रकार का खंडन। यहाँ नारे हैं
were ‘Azad Hindustan Zindabad ’ and ‘Khald-e-Kashmir Zindabad ’. Since
शक्ति प्रदर्शन बेहद प्रभावशाली था, सड़कों पर चर्चाएँ चल रही थीं।
लोगों के बीच इस बात को लेकर बहस चल रही थी कि किसका जुलूस बड़ा था और किसके पास अधिक सामान था।
कश्मीरी जनता के बीच समर्थन।
मैंने दोनों जुलूसों को बदेयार (पास में) में एक ही स्थान से देखा था।
प्रसिद्ध गणपथ्यार मंदिर) की यादें मेरे मन में ताजा हो जाती हैं।
जब भी मैं उस जगह पर होता हूँ। अब, मेरे लिए, अंतर यह है कि जुलूसों में यह बात बहुत स्पष्ट थी। शेख अब्दुल्ला के जुलूस में,
जनता की भावनात्मक स्थिति ऊर्जा और उत्साह से भरी हुई थी। कल्पना कीजिए
जनता अपने नेता की एक झलक पाने के लिए खुशी से उसके पीछे दौड़ रही थी।
बख्शी के जुलूस में लोग बिना किसी ऊर्जा के बस चलते जा रहे थे और उन्होंने बहुत कम उत्साह दिखाया।

4

दिल्ली फुलक्रम

कई साल पहले, 2000 के शुरुआती वर्षों में, फिल्म और टेलीविजन संस्थान, पुणे,
दशकों पहले बंद किए गए अभिनय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को उन्होंने पुनः आरंभ किया।
वह पाठ्यक्रम की अवधारणा तैयार करने के लिए गठित समिति के सदस्य थे।
जया बच्चन, शबाना आज़मी, नसीरुद्दीन शाह और कई लोगों के साथ रंगमंच और सिनेमा जगत के अन्य जाने-माने नाम। अभिनय
यह कोर्स कई साल पहले बंद कर दिया गया था जब गिरीश कर्णार्ड इसके संचालक थे।
फिल्म संस्थान के निदेशक। विचार-विमर्श दो या तीन घंटे तक चला। दिन भर चलने वाली बैठकें बदलती परिस्थितियों को देखते हुए, अब आवश्यक पाठ्यक्रमों के प्रकार पर केंद्रित थीं।
सिनेमा की प्रकृति। समिति ने कुछ अभूतपूर्व कार्य किए।
इस पद का नेतृत्व करने के लिए आवश्यक संकाय सदस्यों के संदर्भ में सिफारिशें।

नया प्रशिक्षण पाठ्यक्रम। कई नाम सामने आए, लेकिन किसी ने भी संतुष्ट नहीं किया।

सभी सदस्यों की उम्मीदें। अचानक शबाना ने मुझसे पूछा, 'क्यों?'

क्या आप अभिनय कार्यक्रम के प्रमुख के रूप में यह पदभार ग्रहण नहीं करेंगे?’

उन्होंने हंसते हुए समिति को जवाब दिया, 'नहीं धन्यवाद। मैंने अपने जीवन में कभी ऐसा नहीं किया है।'

मैंने एक काम किया है, और मैं उस काम के लिए सही व्यक्ति नहीं हूं।’ शबाना ने जोर देकर कहा,

अब आप नौकरी पा सकते हैं और इस पाठ्यक्रम को अपनी इच्छानुसार आकार दे सकते हैं।

मेरा विजन है, और पुणे काम करने के लिए एक अच्छी जगह है।’ मैं फिर हँसा और बोला

शबाना ने कहा, ‘जानती हो, मैं कश्मीरी हूँ। मैं पेड़ों तक ही समझौता कर सकती हूँ।’

कश्मीर के बागों और चिनार के पेड़ों को छोड़कर दिल्ली के स्मारकों का भ्रमण करें।

कश्मीर के बाद दिल्ली भारत का सबसे अच्छा शहर है। मुझे यह शहर बहुत पसंद है और मैंने यहीं अपना घर बसा लिया है।

1967 में जब मैं एक युवा लड़के के रूप में नेशनल यूनिवर्सिटी में पढ़ने आया था, तब से यह मेरा घर है।

नाटक विद्यालय। हालाँकि, अपना स्थायी घर का पता खोने का दर्द अभी भी बना हुआ है।

श्रीनगर के शीतल नाथ साथू में जो कुछ होता है, वह मुझे अक्सर परेशान करता है। जब आप आते हैं

किसी छोटे से स्थान से दिल्ली जैसे बड़े महानगर में जाने पर आप कुछ समय के लिए रास्ता भटक जाते हैं।

दिल्ली में मैं किसी को नहीं जानता था। मैं यहाँ एक छोटे से टिन के बक्से, कुछ जोड़ी कपड़ों और एक पलंग के साथ आया था। मुझे देश के कॉलेज में दाखिला मिल गया।
यह एक प्रमुख नाट्य विद्यालय था जहाँ भारतीय रंगमंच के दिग्गज ई. अल्काज़ी ने शिक्षा प्राप्त की थी।
सत्ता की बागडोर संभालना।
शुरुआत में, मैं कुछ महीनों तक अपने एक रिश्तेदार के साथ रहा।
आर.के.पुरम के सरकारी क्वार्टर में रहने के बाद, मैंने रेलवे में एक कमरा साझा किया।
बंगाली बाजार में स्थित क्वार्टर, फिर कस्तूरबा गांधी मार्ग पर, जिसे पहले जाना जाता था
कर्ज़न रोड के नाम से जानी जाने वाली एक दुकान। पास ही में, केरल के श्री नायर नाम के एक व्यक्ति दक्षिण भारतीय भोजनालय चलाते थे।
इसे नायर मेस के नाम से जाना जाता था। इसमें कुछ कमरे थे और शानदार दक्षिण भारतीय खाना मिलता था।
संसद के कई सदस्य वहां खाना खाने आते थे। यहां तक कि महान लोग भी।
संगीतकार सुब्बुलक्ष्मी, दक्षिण भारतीय संगीत जगत की कई अन्य जानी-मानी हस्तियों के साथ
वहां की संस्कृति का अनुभव किया, वहां का दौरा किया और भोजन किया।
ड्रामा स्कूल से पास होने के बाद, मैं लोधी कॉलोनी में रहा। निज़ामुद्दीन ईस्ट और डिफेंस कॉलोनी में। ढाई दशकों के बाद दिल्ली में, मैंने और मेरी पत्नी अंजली ने दिल्ली के बाहर नोएडा में एक छोटा सा घर बनाया।
क्योंकि दिल्ली में रहने का खर्च बहुत अधिक था, इसलिए मैं वहां रहना बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

आसमान छू रही है। लेकिन घर पर हम कहते हैं कि हम दिल्ली में रहते हैं और बस नोएडा में सोते हैं।
दिल्ली में रहने के इन पांच दशकों में मुझे कई तरह के प्रस्ताव मिले हैं।
दिल्ली के बाहर भी पद हो सकते थे, लेकिन शुरू से ही मैंने तय कर लिया था कि मैं
मैं जीवन भर फ्रीलांसर ही रहूंगा। दिल्ली शहर मेरे जीवन का केंद्र रहा है।
मेरी तराजू और दोनों पलड़े लगातार ऊपर-नीचे खिसकते जा रहे हैं। नीचे। फिर भी, मेरा संतुलन काफी अच्छी तरह से बना हुआ है। महाभारत काल से लेकर आज तक, दिल्ली शहर का एक महत्वपूर्ण इतिहास रहा है।
एक लंबी और ऐतिहासिक गाथा से बचकर, इतिहास रचते हुए, और फिर पूरी तरह से नष्ट हो जाने के बाद,
तोड़फोड़ और लूटपाट के बाद फिर से प्रकट होना, लेकिन बार-बार उभरना।
यह भूभाग नौ शहरों और उनके राजवंशों का घर रहा है।
सौदा, मीर, दर्द, ग़ालिब मोमिन, ज़फ़र ज़ौक़ जैसे महान कवियों की वंश परंपरा
और भी बहुत से लोगों ने सदियों से अपने शब्दों से अपनी छाप छोड़ी है।
पीड़ा और इस महान शहर के प्रति उनका प्रेम। इसमें कुछ काव्यात्मकता समाहित है और
रहस्यमय, और मुझे उस एहसास को महसूस करना अच्छा लगता है जब मैं इधर-उधर घूमता हुआ आगे बढ़ता हूँ।
दिल्ली की गलियों और उप-गलियों में हर रोज।
रवींद्र भवन की तीसरी मंजिल पर छोटा सा राष्ट्रीय विद्यालय स्थित था।

नाटक, जहां भारत के कई हिस्सों से छात्र रंगमंच का अध्ययन करने आते थे।
हममें से अधिकांश लोग छोटे-छोटे स्थानों और कम ज्ञात संस्कृतियों से आए हैं।
शुरुआत में, कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। मानो किसी को विशाल सागर में फेंक दिया गया हो।
विश्व संस्कृतियाँ, जैसे ग्रीक, संस्कृत, एशियाई और आधुनिक भारतीय नाटक।
वे सब इतने दूर थे कि उन्हें समझना असंभव था। अक्सर छात्र वापस भाग जाना चाहते थे।
उनके परिचित क्षेत्र। चूंकि हममें से अधिकांश छात्र साहित्य या पृष्ठभूमि से नहीं थे।
कला पृष्ठभूमि वाले लोगों के लिए, जो पढ़ाया जा रहा था उसे समझना कठिन था।
पुस्तकालय का हमारे लिए कोई महत्व नहीं था। हमें यह भी नहीं पता था कि कौन सी किताबें पढ़नी हैं या कैसे पढ़नी हैं।
इसे जारी करवाने के लिए।
एक दिन छात्रों को नीचे आकर इकट्ठा होने के लिए कहा गया।
रवींद्र भवन के लॉन। फिर हमें वास्तविक शारीरिक श्रम करने का आदेश दिया गया।
श्रम। हमें मिट्टी से भरी बड़ी-बड़ी टोकरियाँ उठाकर एक निश्चित स्थान पर डालनी पड़ती थी।
फिर एक जगह ढूंढकर, ईंटों से भरी टोकरियाँ अपने सिर पर उठाकर ले जानी पड़ती थीं। यह सिलसिला दो दिनों तक चलता रहा।
कुछ हफ्तों बाद हम सभी नए छात्र बहुत नाराज हो गए। हमने चुपचाप विरोध करना शुरू कर दिया।
सवाल उठाओ। हम लगभग इस जबरन शारीरिक श्रम के खिलाफ विरोध प्रदर्शन शुरू करने ही वाले थे।

और शिकायत करते थे कि हम अभिनेता और निर्देशक बनने के लिए स्कूल आए थे।

थिएटर में काम करते समय, हमें यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि हमारे निर्देशक, अल्काज़ी, काम कर रहे थे।

हमारे साथ-साथ, और उनका वरिष्ठ छात्र ईंटों से भरी बड़ी-बड़ी टोकरियाँ अपने कंधों पर उठाए हुए था।

सिर। इसने हमारे छोटे शहर के अहंकार को चूर-चूर कर दिया। हमें विश्वास नहीं हो रहा था कि सिर

हमारे संस्थान का एक कर्मचारी हम जैसे छात्रों के साथ शारीरिक श्रम कर रहा था।

श्रम की गरिमा पर यह हमारा पहला पाठ था। समय बीतने के साथ-साथ, यह सब बदल गया।

शारीरिक श्रम से एक ओपन-एयर थिएटर का निर्माण हुआ, जिसे अब मेघदूत थिएटर के नाम से जाना जाता है।

जल्द ही हमें पता चला कि स्कूल के पास परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त धनराशि नहीं थी।

यह एक परियोजना थी, लेकिन हमारे श्रम और अल्काज़ी की दूरदृष्टि के कारण अब इसमें एक अच्छा खुला ढांचा था।

हवाई प्रदर्शन स्थल। मंच के केंद्र में एक विशाल बबूल का पेड़ खड़ा था।

मेघदूत को एक विशिष्ट व्यक्तित्व और चरित्र प्रदान करना। हमने सीखा कि

स्टूडियो थिएटर के लकड़ी के फर्श को अपने हाथों से पॉलिश करने से पहले

प्रदर्शन करना। प्रदर्शन का यह स्थान हमारा पवित्र स्थान था और था

इसे हमारे मंदिर की तरह माना जाता है।

मेघदूत थिएटर वह स्थान रहा है जहाँ समकालीन भारतीय संगीत का एक बड़ा हिस्सा विकसित हुआ है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Om Shivpuri, Uttara Baokar, Surekha Sikri, Manohar Singh Pankaj Kapoor,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भरत के नाट्यशास्त्र के तत्व मौजूदा लोक और पारंपरिक परंपराओं में मौजूद हैं।
भारत की प्रदर्शन कलाओं का केंद्र। नाट्य विद्यालय एक खुला संस्थान था जहाँ सभी लोग भाग ले सकते थे।
विभिन्न प्रकार के प्रदर्शनों, सिद्धांतों और प्रथाओं का अध्ययन किया गया और उन्हें सराहा गया।
शिवराम कारंत, के.वी. जैसी शख्सियतें। सुब्बन्ना, कोवलम नारायण
पन्निकर, गिरिराज किशोर, मास्टर फ़िदा हुसैन, बाला सरस्वती- महान
भारतीय प्रदर्शन कला के गुरुओं ने हममें नींव रखी।
भारत की अनेक बहुल परंपराओं को समझना और उनका विश्लेषण करना। सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण करना और छात्रों में आधुनिक भारतीय संस्कृति के निर्माण की इच्छा को जागृत करना।
रंगमंच अपने अनेक क्षेत्रों में मौजूद है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने अपना केंद्र खोला।
भारतीय विकास को आगे बढ़ाने में आने वाली चुनौतियों पर नजर रखते हुए
रंगमंच उनका पेशेवर प्रयास है।
यहां मेरी मुलाकात कुछ बेहतरीन पश्चिमी थिएटर शिक्षकों और निर्देशकों से भी हुई।
जिन्होंने छात्रों के साथ काम करके उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान किया।
पश्चिमी थिएटर के विभिन्न रूप और प्रक्रियाएँ। कार्ल वेबर, फ्रिट्ज बेनेविट्ज़, रिचर्ड सेचनर, हेरोल्ड क्लुरमैन, जेरोम जैसे निर्देशक और लेखक।
लॉरेंस, एलन स्टीवर्ट, जॉन आर्डेन और उनकी पत्नी शोज़ो सातो और जोन

मुझे लिटिलवुड नाम याद हैं। वे यूरोप से आए थे।
अमेरिका, सोवियत संघ, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन और जापान। एक बार नाटक से बाहर निकल जाने पर।
स्कूल और फ्रीलांसर के रूप में जीवन ने एक अभिनेता के रूप में मेरे लिए कई क्षेत्रों के द्वार खोल दिए।
निर्देशक तो थे, लेकिन मुझे अपने लिए अवसर खुद बनाने पड़े और अपना काम खुद खड़ा करना पड़ा।
उत्तरजीविता के लिए।
मैंने साढ़े तीन साल के प्रशिक्षण के बाद 1971 में ड्रामा स्कूल छोड़ दिया।
यह महान विचारों और परिवर्तन का एक जोशीला दौर था, वियतनाम युद्ध का काल।
युद्ध और बांग्लादेश मुक्ति संघर्ष। पर्याप्त खुलापन था
अपने सामाजिक और राजनीतिक विचारों को व्यक्त करना। रंगमंच में, इससे बचना लगभग असंभव था।
शहर में हो रहे अनगिनत विरोध प्रदर्शनों में भाग लिया। मैंने भी उनमें हिस्सा लिया।
इन विरोध प्रदर्शनों में कई जाने-माने कवियों, चित्रकारों, संगीतकारों और
थिएटर से जुड़े लोग।
फ्रीलांसर के तौर पर मैंने सबसे पहले जो काम किया, वह था पुरानी दिल्ली के पहाड़गंज जाना।
बाजार से मैंने एक मिलिट्री बैकपैक और एक सेकंड हैंड स्लीपिंग बैग खरीदा।
एक हिप्पी। वो दिन हिप्पियों, युद्ध-विरोधी कार्यकर्ताओं और शांतिवादियों के थे।
आंदोलन, युद्ध-विरोधी रॉक और पॉप संगीत, और कविता—युद्ध-विरोधी के वर्ष

स्थापित विचारधाराएँ, पेरिस में छात्र क्रांति और वियतनाम विरोधी आंदोलन
अमेरिका और दुनिया के अन्य हिस्सों में युद्ध प्रदर्शन हुए। चारों ओर साम्राज्यवाद-विरोधी माहौल और दुनिया को बदलने की इच्छा
क्रम। एलन गिन्सबर्ग की कविताओं और पथप्रदर्शक जैसी कई रचनाएँ।
फ्रांत्ज़ फैनन, बर्टोल्ड ब्रेख्त, मेयरहोल्ड, पॉल नेरुदा, पॉल द्वारा लिखित पुस्तकें
फ्रेइरे, जोन बिएड, हेनर मुलर और जॉर्ज जैक्सन ने हम युवाओं को बहुत कुछ सिखाया।
यह नए आदर्शवाद का दौर था जो हर युवा को कुछ नया करने के लिए प्रेरित कर रहा था।
परिवर्तन।
औपनिवेशिक काल के बाद के विमर्शों ने परिवर्तन की इस तीव्र इच्छा को और भी प्रबल कर दिया।
असंख्य बुद्धिजीवियों, लेखकों, कवियों की रचनाओं में निहित है, दक्षिण एशिया के कई क्षेत्रों के नाटककार और चित्रकार। उनमें से कुछ
were Faiz Ahmed Faiz, Makdoom, Subhash Mukhopadhyay, Nazarul, Muktibodh, Sahir Ludhianvi, Sarveshar Dayal Saxena, Raghuvir Sahai,
Srikant Verma, M.F. Hussain, K.G. Subramanyan, S. Swaminathan, Salil
चौधरी, वनराज भाटिया, मोहन उप्रेती और पचानंद पाठक।
जब पाकिस्तानी सेना द्वारा पूर्वी पाकिस्तान में बंगालियों का नरसंहार किया गया

ऐसा होने पर, हमने लोगों के समर्थन में कई नुक्कड़ प्रदर्शन किए।
बांग्लादेश। हमारे साथ बाउल गायकों का एक समूह था। जब अमेरिका ने धमकी दी
अपने पाँचवें बेड़े को बंगाल की खाड़ी में लाने के लिए, हमने संक्षिप्त अभ्यास किया।
फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ की कविता पर आधारित तात्कालिक नुक्कड़ नाटक। बहावलपुर हाउस स्थित अमेरिकी पुस्तकालय भवन में। इस दौरान प्रदर्शनों के दौरान, कई अजनबियों से मुलाकात हुई जो एक उद्देश्य के लिए एकजुट होने आए थे।
सामान्य कारण।
नुक्कड़ नाटक से विरोध प्रदर्शन का एक अनूठा रूप सामने आया। उन्होंने श्याम कामथ नाम के एक व्यक्ति को सिर से पैर तक पट्टी बांधी और उनके साथ खड़े रहे।
अमेरिकी दूतावास का प्रवेश द्वार; शांता गांधी, राजीव सेठी, बाउल समुदाय
और मैंने गाना गाया। अमेरिकी दूतावास के कर्मचारियों को नहीं पता था कि पट्टी बंधे इस आदमी को क्या हो रहा है।
वह उनके दरवाजे पर खड़ा था। कुछ लोगों का मानना था कि वह एक घायल बांग्लादेशी था।
कुछ ही देर में पुलिस की एक बड़ी टुकड़ी मौके पर पहुंची, लेकिन यह देखकर वे आश्चर्यचकित रह गए कि
जो कुछ हो रहा था वह कोई बड़ा विरोध प्रदर्शन नहीं था। पुलिस ने हमसे अनुरोध किया।
पट्टी बंधे हुए व्यक्ति को दूतावास परिसर से बाहर ले जाना।
उन दिनों हम विदेशी परिसरों के अंदर ये विरोध प्रदर्शन कर सकते थे।

आज अगर हम दूतावासों में जाने की हिम्मत भी करें तो हमें तुरंत गोली मार दी जाएगी।
अमेरिकी दूतावास में प्रवेश करना तो दूर, विरोध करना भी संभव नहीं था। जब बांग्लादेश को अंततः
मुक्त होने के बाद, मध्य दिल्ली से युवाओं का एक विशाल जुलूस ऊपर की ओर बढ़ा।
ग्रेटर कैलाश में नव स्थापित बांग्लादेश दूतावास को
नए मैदान के लॉन में गाते-नाचते हुए इस अवसर का जश्न मनाएं।
वे घंटों तक दूतावास में मौजूद रहे। उनके साथ नए बांग्लादेशी राजनयिक भी शामिल हो गए।
इन घटनाओं के कुछ वर्षों के भीतर, हमने घोषणा देखी...
भारत में आपातकाल की स्थिति, जिसने इसके सभी मौलिक अधिकारों को निलंबित कर दिया था
नागरिकों। यहां तक कि मुझ जैसे व्यक्ति ने भी, जिसने अभी-अभी अपना करियर शुरू किया है, इसके प्रभावों को महसूस किया। आपातकाल। जल्द ही मैं अवांछित व्यक्ति बन गया। मेरे नाटक, बर्टोल्ट ब्रेख्त के 'चॉक सर्कल' पर प्रतिबंध लगा दिया गया। मुझे मुख्य महानगर अधिकारी से एक पत्र मिला।
पार्षद राधा रमन, जो अब मुख्यमंत्री की तरह व्यवहार कर रहे थे, मुझसे पूछ रहे थे कि...
उनसे उनके कार्यालय में मिलें। सौभाग्य से, पत्र राष्ट्रीय कार्यालय को पहुंचा दिया गया था।
स्कूल ऑफ ड्रामा का पता, जिसे मैं बहुत पहले छोड़ चुका था। मुझे समझ नहीं आया।
पत्र का महत्व बताते हुए उन्होंने इसे कवि और पत्रकार को दिखाया।
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना। उन्होंने इसका छिपा हुआ अर्थ समझ लिया था। उन्होंने कहा, ‘तो,

'हो सकता है कि आपके लिए कुछ समय के लिए चुपचाप दिल्ली छोड़ देना बेहतर हो।' तो मैंने ऐसा ही किया।
बिल्कुल यही। कभी-कभी मुझे लगता है कि मुझे विरोध करने का श्राप मिला है, भले ही मैं न करूं।
मैं ऐसा करना चाहता हूं, लेकिन मेरे आसपास की परिस्थितियां मुझे विरोध प्रदर्शनों में शामिल होने के लिए मजबूर करती हैं।
क्योंकि मैं अकेला था और मुझे किसी का सहारा नहीं था, इसलिए मुझे यह सुनिश्चित करना पड़ा कि मैं अपनी कमाई खुद करूँ।
बिना किसी समस्या के जीवन जीना और फिर भी विरोध की भावना को जीवित रखना।
मैं और मेरा काम। 1972 में अल्पकालिक रंगमंच का संचालन करने का विचार मेरा ही था।
उन लोगों के लिए पाठ्यक्रम जो दीर्घकालिक कार्यक्रमों में शामिल नहीं हो सके।
दिल्ली के एक प्रमुख थिएटर समूह, यात्री के सहयोग से और
अनुभवी थिएटर निर्देशक जॉय माइकल के नेतृत्व में मैंने दो महीने तक थिएटर का संचालन किया।
कार्यशालाओं के माध्यम से, मैंने रंगमंच में एक अभिनेता के रूप में अपनी पहचान बनाई।
निर्देशक और शिक्षक।
यहीं से मेरी लंबी, कठिन और उतार-चढ़ाव भरी यात्रा शुरू हुई। इसने मुझे वहाँ पहुँचाया जहाँ से...
देश के विभिन्न हिस्सों में स्थानीय थिएटर कलाकारों के साथ काम करने के लिए, आमतौर पर
मैं एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाता रहता था, नए पौधे लगाता रहता था।
दक्षिण एशियाई रंगमंच के बीज—दिल्ली से लेकर पंजाब, मध्य प्रदेश तक,

Haryana, Jammu and Kashmir, Ladakh, Kolkata, Manipur, Kerala, Andhra

[illegible]

[illegible]

Bhanu Bharati, Prassana and Ranjeet Kapur all freelancers joined in this

[illegible]

मूल रचनात्मक और सौंदर्यपरक विचार, जो इसके कारण साकार हुआ व्यक्तिगत रचनात्मक रंगमंच कलाकारों के स्वतंत्र प्रयासों से इसका अपहरण कर लिया गया और यह महज एक आधिकारिक तौर पर धन चूसने वाला अभ्यास बन गया।
मेरे दोस्तों और मैंने मिलकर प्रयोग नाम से एक थिएटर ग्रुप बनाया और हमारा पहला नाटक
यह बादल सिरकार का जुलूस था, जिसका प्रदर्शन तुर्कमान गेट पर किया गया था। यहाँ,
आपातकाल के दौरान, भारी पुलिस बल के दबाव में घरों को ध्वस्त कर दिया गया था।
उत्पीड़न। हमने इस नाटक का प्रदर्शन पीड़ितों को श्रद्धांजलि के रूप में किया।
विध्वंस। उस दिन से प्रयोग प्रमुखों में से एक बन गया।
दिल्ली में प्रायोगिक थिएटर संगठन। हमने पूरे देश की यात्रा की।
देश भर में विभिन्न प्रकार के नाटकों का प्रदर्शन करते हुए। आज तक, हम अपने देश से बाहर के नाटकों का प्रदर्शन जारी रखे हुए हैं।
मजबूत सामाजिक-राजनीतिक विषयों पर आधारित बॉक्स ऑफिस प्रस्तुतियाँ।
हाल के कार्यों में महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित वृत्तचित्र नाटक शामिल थे।
उनकी 150 वीं जयंती के उपलक्ष्य में। प्रयोग ने कभी भी कोई स्वीकार नहीं किया है।
आधिकारिक या अनौपचारिक स्रोतों से अनुदान। हम इस सिद्धांत में विश्वास करते हैं कि
‘कमाओ और खर्च करो’—अर्थात, हम अपने पेशेवर काम से व्यक्तिगत रूप से कमाते हैं।

और फिर प्रयोग पर अपनी कमाई खर्च करके नए नाट्य प्रदर्शनों का निर्माण करेंगे।
इस प्रकार, इन सभी वर्षों में दिल्ली मेरे लिए केंद्र बिंदु रहा है, प्रयोग के साथ और
कई अन्य संगठन उस तरह के काम के लिए उत्प्रेरक का काम कर रहे थे जो मैं करना चाहता था।
आगे बढ़ने के लिए। जब प्रयोग का उत्पादन नहीं हो रहा था, तब मैं विभिन्न प्रकार के प्रस्ताव स्वीकार करता था।
मुझे ऐसे असाइनमेंट मिले जिनके चलते मैं देश के विभिन्न स्थानों और यहां तक कि अन्य स्थानों पर भी गया।
दक्षिण एशियाई देशों में काम करने का अनुभव। उपमहाद्वीप की कई भाषाओं में काम करने का अनुभव।
मानवता को उसके सभी रंगों और स्वरूपों में सीखने और आत्मसात करने का यह एक आनंददायक अनुभव रहा है, और इसने मुझे हर तरह की व्यक्तिगत चुनौतियों से पार पाने में मदद की है।
और सामाजिक उथल-पुथल।
दिल्ली एक नए हिंदी नाट्य आंदोलन का केंद्र बन गया, जो एक अवंत-गार्डे आंदोलन था।
नाटक लेखन और शैलियों के मामले में यह क्रांतिकारी और पथप्रदर्शक है।
प्रस्तुति। इसके साथ ही, 1970 के दशक का नया समानांतर सिनेमा।
उन्होंने भारतीय फिल्म जगत में एक नई ऊर्जा का संचार किया।
मुझे दिवंगत अवतार ने कास्ट किया था।
कौल को उनकी फिल्म 27 डाउन में मुख्य भूमिका निभाने के लिए चुना गया। यहीं से मेरी उत्सुकता शुरू हुई।
एक अभिनेता और एक सशक्त व्यक्ति के रूप में समानांतर सिनेमा आंदोलन में भागीदारी
इस नए और नवोन्मेषी सिनेमा आंदोलन का समर्थक। यह आंदोलन

movement, like Mani Kaul, Avtar Kaul, Kumar Shahani, Buddhadev

Bhattacharya, T.S. Ranga, Mrinal Sen, Govind Nihalani, Romesh Sharma,

दुर्भाग्यवश, हिंदी समानांतर सिनेमा को सफलता नहीं मिली।
हालाँकि,
मलयालम और कन्नड़ में समानांतर सिनेमा आंदोलन जारी रहा, और कुछ हद तक बंगाली भी।
मैंने फिल्म और थिएटर के क्षेत्र में अपना सफर जारी रखा। दिल्ली मेरा आधार बना रहा।
मैं यहाँ से विभिन्न गंतव्यों के लिए रवाना होता हूँ, चाहे वह फिल्मों के लिए हो या मेरे दिल के करीब किसी सामाजिक आंदोलन के लिए। दिल्ली ने मुझे कई सामाजिक और
राजनीतिक विचार। इसने मुझे विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के साथ बातचीत करने के अवसर दिए।
विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न पदों पर कार्य करने का अवसर मिला। इससे मुझे कई अनुभव प्राप्त हुए, जो मेरे लिए बहुत उपयोगी साबित हुए।
ऐतिहासिक प्रतिध्वनियाँ। एक दिन मुझे नादिरा ज़हीर बब्बर ने आमंत्रित किया, जो अब एक
वरिष्ठ थिएटर निर्देशक और नाटककार, और एक मित्र और सहपाठी एनएसडी में एक संगीतमय संध्या का आयोजन किया गया, जहाँ प्रसिद्ध अनिल बिस्वास ने फैज़ अहमद के गीत गाए।
फ़ैज़। इस कार्यक्रम का संचालन नादिरा के पिता सज्जाद ज़हीर ने किया, जो कि फ़ैज़ थे।
प्यार से बने भाई के नाम से जाने जाने वाले, प्रसिद्ध कम्युनिस्ट बुद्धिजीवी और संस्थापक
प्रगतिशील लेखक संघ का। यह एक दुर्लभ शाम थी क्योंकि इसने इसमें केवल फ़ैज़ की संगीतबद्ध कविताओं को सुनना ही शामिल नहीं था, बल्कि इसमें और भी बहुत कुछ शामिल था।
विशेष तत्व। फैज़ और सज्जाद ज़हीर को एक साथ जेल में बंद किया गया था।

लाहौर में वर्षों तक, और सज्जाद जहीर ने उन कहानियों और घटनाओं का वर्णन किया जो
जिसने फैज़ को प्रत्येक कविता लिखने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया, जिसे प्रदर्शित किया गया था।
प्रत्येक व्यक्ति के जन्म की परिस्थितियों और संदर्भों को समझाया। सज्जाद
जहीर का वर्णन स्वयं में काव्यात्मक और प्रेरणादायक था। सज्जाद जहीर के निधन पर दिल्ली में एक शोक सभा आयोजित की गई थी।
जहां उनकी पत्नी, रजिया सज्जाद जहीर, एक प्रसिद्ध उर्दू लघुकथा लेखिका थीं।
उसने स्वयं सज्जाद जहीर द्वारा उसे लिखे गए पत्र को जोर से पढ़ा।
लाहौर की जेल, जहाँ उन्हें फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ के साथ कई वर्षों तक कैद रखा गया था।
कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों के रूप में उनका भूमिगत कार्य।
पाकिस्तान। दरअसल, सज्जाद को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने भेजा था।
ज़ाहिद ने पाकिस्तान में एक भूमिगत कार्यकर्ता के रूप में कम्युनिस्ट विचारधारा की स्थापना में योगदान दिया।
पाकिस्तान की पार्टी। अंततः, जब दोनों को गिरफ्तार किया गया और उन पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया।
रावलपिंडी षड्यंत्र के नाम से जाने जाने वाले घटनाक्रम में पाकिस्तान राज्य के खिलाफ कार्रवाई की गई थी।
मामला। मेरी याददाश्त के अनुसार, पत्र कुछ इस तरह था:

प्रिय रजिया,

मेरी कोठरी उन कैदियों की कोठरियों के बगल में है जिन्हें नियमित रूप से फांसी दी जाती है।

दिन-रात रोने और प्रार्थना करने की आवाज़ें सुनाई देती रहती हैं। अपनी कोठरी की खिड़की से मैं देख सकता हूँ...

फांसी का फंदा। मेरी कोठरी में न कलम है, न कागज, केवल कुरान है। शरीफ जानबूझकर उसे पढ़ता रहता था।

मुझे कम्युनिस्ट होना अच्छी बात लगती है, लेकिन उम्मीद है कि मेरी इच्छाशक्ति कभी न कभी हार मान लेगी और शायद मैं

कुरान के पन्ने खोलो। लेकिन उन्हें यह तथ्य नहीं पता कि जिस कोठरी में मैं हूँ, वह उसी की कोठरी थी।

भगत सिंह, जो मुस्कुराते हुए फांसी पर चढ़े। उनकी याद ही मेरी ताकत है।

मेरा प्यार,

सज्जाद जहीर

इस तरह की सभाएँ और महफ़िलें तथा प्रदर्शन, विरोध प्रदर्शन और व्याख्यान

दिल्ली के कई प्रेरणादायक लोगों के अनुभव इन वर्षों में मेरे लिए भोजन का स्रोत रहे हैं।

वे हमेशा से मेरी ताकत रहे हैं और आज भी हैं, जो मुझे मेरी यात्रा पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

दिल्ली दुनिया के उन शहरों में से एक है जहां अतीत और वर्तमान साथ-साथ मौजूद हैं।

सामंजस्य में। और फिर भी शहर फैलता है, बढ़ता है और नए को समायोजित करता है।

लोग और नए विचार आते रहते हैं। कई सदियाँ एक साथ जीवित रहती हैं।

दिल्ली एक दूसरे के बगल में बसी है, और फिर भी यह शहर लगातार बदलता और नई इमारतें बनाता रहता है।

भविष्य। यह संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी, उर्दू, हिंदी, पंजाबी और अन्य भाषाओं का स्थान है।

सिंधी—और अब बिहारी, पहाड़ी और बांग्ला। यह वास्तव में एक समन्वित, आधुनिक भाषा है।

और एक आशाजनक बहुधार्मिक और बहुभाषी शहर। इसमें कई दर्दनाक पहलू भी हैं।

आश्चर्य और चुनौतियाँ; इसमें अंधेरे और परस्पर विरोधी क्षेत्र भी हैं।

हर समय कुछ न कुछ उबलता रहता है। इसलिए दिल्ली मेरे लिए रोमांच की जगह है, जिसे मैं

मैं दिल्ली को छोड़ नहीं सकता और इसके बिना जी नहीं सकता— दिल्ली ने ही मुझे वो बनाया है जो मैं आज हूँ।

5

1984— इंदिरा गांधी की हत्या

अंजलि और मैं नई दिल्ली के डिफेंस कॉलोनी नामक इलाके में रुके थे।
हमारी शादी हुई। हमारा बेटा अनंत 1982 में पैदा हुआ, और हमारी बेटी अदिति का जन्म हुआ।
1983.
फ्रीलांसिंग के चलते मुझे अक्सर महीनों तक घर से दूर रहना पड़ता था, और मैं
उन दिनों मुझे अपने परिवार और घर की बहुत याद आती थी। हमारे दो प्यारे
घर लौटने पर बच्चे मुझे कई कहानियां और घटनाएं सुनाते थे।
ये लंबे अंतराल। उनके साथ समय बिताना मजेदार था क्योंकि उनके पास मुझे बताने के लिए बहुत कुछ था।
और मुझे उन्हें बहुत कुछ समझाना था। हमारी पारिवारिक दिनचर्या लगातार बदलती रहती थी।
एक्शन से भरपूर कार्यक्रम।
सुबह-सुबह अनंत और अदिति मेरे साथ टहलने आते थे।

पास में ही एक पार्क था जिसमें कई सिल्वर ओक के पेड़ थे। मैं उन्हें वह पार्क दिखाता था।
वहाँ मोर, तोते, कबूतर और गौरैया हैं। अप्रैल और मई के दौरान, मैं
हम उन्हें वहाँ शहतूत के पेड़ों पर चढ़कर फल इकट्ठा करने में मदद करेंगे।
वह उसे घर लाता, साफ करता और तृप्तिपूर्वक खाता।
अंजली, जो एक चिकित्सक हैं, को काम के सिलसिले में अस्पताल जाना पड़ा, लेकिन
वे शाम के सत्रों में पश्चिमी लघु कथाओं को पढ़ने के लिए समय पर लौट आते थे।
बच्चों के लिए कहानियाँ। शाम ढलते ही कहानी सुनाने की मेरी बारी होती थी।
मैंने उन्हें तब तक कहानियां सुनाईं जब तक वे सो नहीं गए। मेरी कहानियां भारतीय कहानियों से ली गई थीं।
लोक कथाएँ और पौराणिक कथाएँ। जब मेरी लघु कथाओं का भंडार समाप्त हो जाता था, तो मैं
अब संस्कृत नाटक की कहानियों या उन कहानियों की ओर बढ़ते हैं जो मुझे याद थीं।
कथा सरित सागर, प्राचीन कथाओं का सागर, जैसे कि कहानियाँ अरेबियन नाइट्स। उनमें सबसे ज्यादा लोकप्रिय कहानी थी...
भीम और हिडिम्बा का पुत्र घटोत्कच, भास के एक नाटक से मध्यमव्यायोग, महाभारत के एक प्रसंग पर आधारित है।
बालक घटोत्कच और शक्तिशाली भीम के बीच हुए संघर्ष की मेरी कहानी सुनकर बच्चे रोमांचित हो गए, घटोत्कच को यह नहीं पता था कि भीम कौन है।
उसके पिता। मुझे याद नहीं कि मैंने वह कहानी कितनी बार दोहराई है।

उनकी मांग पर।
अंग्रेजी में बच्चों के साहित्य से मेरा परिचय मेरी पत्नी के माध्यम से हुआ।
उसने अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़ाई की थी, जबकि मैंने एक अन्य अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़ाई की थी।
मैं स्थानीय भाषा के स्कूल में पढ़ता था। मुझे थोड़ी-बहुत अंग्रेजी, थोड़ी-बहुत हिंदी और थोड़ी-बहुत अन्य भाषाओं का ज्ञान था।
उर्दू और काफी हद तक बोली जाने वाली कश्मीरी।
हम हर सप्ताहांत बच्चों को लोधी में तैराकी सिखाने ले जाते थे।
होटल का स्विमिंग पूल। यह एक छोटा सा पूल था, लेकिन हमारे घर के बहुत करीब था।
पूल के पास, सबसे बड़ा आकर्षण मूंगफली के साथ फिंगर चिप्स ऑर्डर करना था।
क्योंकि होटल में हम बस इतना ही खर्च कर सकते थे। उन्हें बाहर निकालने के लिए
पूल बनाना एक बड़ा काम था; उन्हें पानी से उतना ही प्यार था जितना बत्तख के बच्चों को।
जब अंजलि ने बाल रोग में स्नातकोत्तर की डिग्री पूरी करने के बाद रजिस्ट्रार का पदभार ग्रहण किया,
उसने काम करना शुरू कर दिया। शुरुआत में उसने सरकारी नौकरियों के लिए आवेदन किया।
अस्पतालों। कई बार अस्वीकृति के बाद, चयन समिति के अध्यक्ष ने समिति ने बड़े प्यार से उससे कहा, 'जानती हो, अंजली, तुम्हारे स्वर्ण पदकों के साथ,
आपके प्रमाणपत्रों और व्यक्तित्व को देखते हुए, आपको निजी प्रैक्टिस करनी चाहिए।

यह आपके लिए सबसे अच्छा होगा।
बस यही बात थी। उसे सीधे मुंह पर कह दिया गया था कि वहां उसका कोई चांस नहीं है, इसलिए उसने
उन्होंने अपना निजी क्लिनिक शुरू करने का फैसला किया और एक ऐसे क्लिनिक की तलाश की जहाँ वे
शुरुआत कर सकती थी। आखिरकार, उसे डिफेंस बिल्डिंग के डी ब्लॉक में एक मेडिकल चैंबर मिल गया।
डॉ. महाजन नामक चिकित्सक की कॉलोनी में 31 अक्टूबर 1984 को सुबह करीब ग्यारह बजे, अंजली और मैं उसका सामान रखने के लिए गए। क्लिनिक। जब हम वहाँ पहुँचे, तो वहाँ मौजूद वरिष्ठ डॉक्टरों ने हमें बहुत ही
ठंडा स्वागत। हम उनमें से किसी को नहीं जानते थे। कुछ मिनट बाद, एक डॉक्टर आया।
वह अंदर आया और चुपचाप कहा कि प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को गोली मार दी गई है।
उन्हें सफदरजंग अस्पताल ले जाया गया था, लेकिन किसी को नहीं पता था कि उनकी क्या हालत है।
स्थिति ऐसी थी। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। हम क्लिनिक में रुके रहे।
कुछ देर बाद, सब लोग चले गए। हम सुनसान सड़कों से होते हुए घर वापस आए। सड़कों पर बहुत कम वाहन थे।
अंजलि का डॉक्टर के रूप में निजी प्रैक्टिस का पहला दिन। जैसे-जैसे दिन आगे बढ़ा, कुछ अजीबोगरीब घटनाएँ घटने लगीं। छोटे-छोटे समूहों में
मेरे इलाके डिफेंस कॉलोनी में विभिन्न स्थानों पर लोग जमा हो गए थे और
कोटला और लाजपत नगर जैसे आस-पास के स्थानों पर रहने वाले लोग उत्तेजित होकर बातें कर रहे थे।

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

अपने घरों तक पहुँच गए। मेरा पूरा पड़ोस टेलीविजन से चिपका हुआ था।
विभिन्न घोषणाओं और समाचार बुलेटिनों को सुनना। देर रात दोपहर में यह घोषणा की गई कि भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी
उसकी मौत हो गई, उसे उसके ही सिख सुरक्षा गार्डों ने गोली मार दी थी।
मुझे इस खबर पर कैसे प्रतिक्रिया देनी है या क्या करना चाहिए, यह समझ नहीं आ रहा था।
घर पर बैठे-बैठे मुझे दूर से आती हुई आवाजें और नारे सुनाई दिए।
एम्स के निर्देश पर। कुछ पड़ोसियों ने कहा कि इंदिरा गांधी के शव को रखा जा रहा था।
उसे उसके घर ले जाया गया था, और इसीलिए इतना शोर हो रहा था।
शाम ढलने लगी और शोर बढ़ता ही गया। मेरी पत्नी और मैंने एक दोस्त के घर रात के खाने पर जाने का प्लान बनाया था। वह डिफेंस बिल्डिंग के एक दूसरे ब्लॉक में था।
यह कॉलोनी मुख्य सड़क के किनारे, कोटला मुबारकपुर और सेवा नगर के सामने स्थित है।
क्षेत्र। जैसे ही हम सेवा मार्ग पर डिफेंस कॉलोनी के मुख्य चौराहे पर पहुँचे।
नगर की तरफ का नजारा बिल्कुल अलग था। हमने वहां लाठियों और डंडों से लैस भीड़ देखी।
और जलते हुए टायर। एक काला-पीला टैक्स और एक ऑटो रिक्शा भी मौजूद थे।
आग लग गई। भीड़ सिखों की तलाश में हर वाहन की जाँच कर रही थी। यह एक
चेतावनी का फोन आया। हमने अपनी कार रिवर्स की और जल्दी से घर पहुंचे। मैंने तुरंत गाड़ी निकाली।

मैंने अपनी साइकिल ली और पास के टैक्सी स्टैंड पर गया, जो ज्यादातर सिखों द्वारा चलाए जाते थे। मैंने पूछा

उन्हें अपनी टैक्सियाँ कॉलोनी की गलियों में ले जाने के लिए कहा गया ताकि दंगाइयों को

वे अपने वाहनों को नहीं जलाएंगे। तब तक अंधेरा हो चुका था और मौसम बदल गया था।

यह स्पष्ट था कि भीड़ सिखों, उनके घरों और हर उस चीज़ को जला रही थी जो

हो सकता है कि यह उनका हो।

जैसे-जैसे रात बढ़ती गई, हमारे ब्लॉक में दहशत फैलती गई।
सुरक्षा गार्ड

उन्हें सतर्क कर दिया गया और रात भर निगरानी रखने के लिए एक छोटी समिति का गठन किया गया।

जिस किराए के मकान में मैं रहती थी, वह एक सिख सज्जन का था।
मैंने शुरुआत की।

घर की चिंता करते हुए, मैं छत पर गया और शहर के नज़ारे को देखने लगा।

जो मैंने देखा उससे मेरी चिंता और भी बढ़ गई। रात के अंधेरे में, एक संतरा

आसमान रंगों से भर गया था, और जैसे ही मैंने अपना सिर घुमाया, मुझे एक ऐसा दिल्ली दिखाई दिया जो...

चारों दिशाओं में आग लग रही थी। इससे मुझे अपनी नानी की याद आ गई, जो

उसने मुझे रावलपिंडी में पकड़े जाने के दौरान इसी तरह की एक घटना के बारे में बताया था।

विभाजन के दौरान। जब मैं अपनी छत पर खड़ा था, तो मेरी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई।

यह सोचकर ही मुझे बहुत दुख होता था कि वे उन जगहों पर लोगों को मार रहे थे जहाँ मैं देख सकता था।

नारंगी रंग की लपटें।

जब इंदिरा गांधी का पार्थिव शरीर उनके आधिकारिक आवास पर रखा था, तब चारों ओर दंगे हो रहे थे।

शहर के चारों ओर। इंदिरा गांधी से हुई मुलाकात की एक झलक मेरे मन में कौंध गई।

मुझे प्रधानमंत्री कार्यालय से चाय पर आमंत्रित होने का निमंत्रण मिला था।

मैं अपनी पत्नी के साथ उसके साथ था। मुझे काफी आश्चर्य हुआ क्योंकि मुझे कोई जानकारी नहीं थी।

किसी भी राजनीतिक व्यक्ति से संबंध होने पर यह निमंत्रण क्यों? मेरी पत्नी भी?

मुझे जिज्ञासा हुई। मैंने सोचा कि यह उन समारोहों में से एक होगा जहाँ कला समुदाय से जुड़े सैकड़ों लोगों को एक साथ मिलकर अपने विचार साझा करने के लिए आमंत्रित किया जाता होगा।

प्रधानमंत्री के साथ एक कप चाय।

अंजलि ने मुझसे पूछा, ‘क्या तुम जा रहे हो?’ मैंने कहा, ‘क्या तुम पागल हो? मैं नहीं जा रहा।’

कला जगत के लोगों की भारी भीड़ के साथ एक चाय पार्टी में। क्योंकि मैं

मैंने सुना है कि आमतौर पर इन पार्टियों में बड़ी संख्या में कलाकार शामिल होते हैं।

निमंत्रण मिलने के बाद, वीवीआईपी से कुछ सेकंड के लिए मिलने के लिए लंबी कतार लग जाती है।

या उस व्यक्ति के साथ तस्वीर खिंचवाने के लिए, कुछ लोग कुछ मामूली चीज़ों की मांग करते हैं।

एहसान। यह सब कलाकारों की एक हास्यप्रद परेड की तरह दिखेगा, जिन्हें अंततः एक अवसर मिला है।

चाय और नाश्ता लेकर चले जाओ। किसी गंभीर समस्या की कोई संभावना नहीं है।

संवाद।’ इसलिए, हम दोनों ने निमंत्रण को अनदेखा करने का फैसला किया। लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ,
अगले दिन प्रधानमंत्री कार्यालय से एक फोन आया जिसमें पूछा गया निमंत्रण स्वीकार करने की पुष्टि के लिए। मुझे नहीं पता था कि क्या करना है।
तो मैंने कहा, हाँ, हम वहाँ होंगे।
1 सफदरजंग रोड पर हुई बैठक के दिन, मेरी पत्नी और मैंने अपना सब कुछ खो दिया।
हम मुश्किल से समय पर पहुँच पाए। हम ठीक उसी समय पहुँचे जब इंदिरा गांधी ने अपना भाषण दिया।
प्रवेश द्वार। मुझे अभी भी याद है कि जिस सुरक्षा गार्ड ने हमें अंदर जाने दिया, वह उनमें से एक था।
सिख अंगरक्षकों में से एक, जिसकी तस्वीर मैंने बाद में अखबार में देखी, वह उन्हीं में से एक थी।
हत्यारों। मुझे लगा था कि यह एक बड़ी सभा होगी, लेकिन बैठक का स्वरूप बदल गया।
यह लोगों का एक छोटा समूह प्रतीत होता था। इसमें मुर्शील-उल-हसन और
उनकी पत्नी ज़ोया हसन, दोनों अकादमिक विद्वान थे। वहाँ ब्रुता और
वसुंधरा, उनकी पत्नी, दोनों ही जाने-माने चित्रकार थे; पत्रकार शमीम
अहमद; गार्गी कॉलेज के प्रधानाचार्य, और हम दोनों। जब हम बैठे थे
श्रीमती गांधी के साथ बैठक में मुझे आश्चर्य हुआ कि हमें क्यों आमंत्रित किया गया था। बैठक सुचारू रूप से चली।
यह सिलसिला कई घंटों तक चलता रहा, और कई बार तो हम मेहमानों ने प्रधानमंत्री को भी बताया।

हमें उससे विदा लेनी पड़ी। लेकिन उसने जवाब दिया, 'नहीं, मुझे नहीं है।'
आज शाम को मेरी अपॉइंटमेंट है।’ इसलिए हमने चाय और पकौड़े खाए। शिष्टाचारवश।
और, सच कहूँ तो, थोड़ी घबराहट के कारण, मैंने केवल दो छोटे पकौड़े ही उठाए।
श्रीमती गांधी ने मुझे रंगे हाथों पकड़ लिया और पूछा, 'तुम सिर्फ दो ही क्यों ले जा रहे हो?'
पकोड़े? ये तो वाकई बहुत स्वादिष्ट हैं। कुछ और खा लीजिए। मुझे याद है कि हमने शिक्षा, स्वास्थ्य, कला, राजनीति आदि विषयों पर बात की थी।
पंजाब संकट, भिंडरांवाले और उसकी आतंकी राजनीति। मुशीर-उल-हसन ने पूछा।
मैंने उससे पूछा, ‘पंजाब में हालात कैसे हैं?’ उसने कहा, ‘हम किससे बात करें?’
तो? वहां आप राजनेताओं के एक समूह से बात करते हैं और फिर दूसरे समूह से।
ऐसा प्रतीत होता है। 'उसने कश्मीर का भी जिक्र किया, शेख अब्दुल्ला के बारे में बात करते हुए और
हरि पर्वत के पवित्र क्षेत्र के सुंदर घास के मैदानों को परिवर्तित करने का उनका निर्णय
श्रीनगर में एक आवासीय कॉलोनी को, जिसने सड़कों पर अतिक्रमण कर लिया था, में बदल दिया गया।
कश्मीरी पंडितों और मुसलमानों दोनों के पवित्र स्थल, जहाँ वे हुआ करते थे
विशाल चिनार के पेड़ों के नीचे पूजा और ध्यान करें। यह एक शानदार स्थल है।
संस्कृति बदल गई थी... यह जानकर मुझे बहुत आश्चर्य और खुशी हुई।

उसे स्थिति की सटीक जानकारी थी।

हमने उसके साथ लगभग ढाई घंटे बिताए। आज भी मुझे यह बात समझ नहीं आती।

उस बैठक का उद्देश्य समझ गई। वह ज्यादातर समय हमारी बात सुनती रही।

और वे और बात करना चाहते थे। लेकिन किस उद्देश्य से? हमें नहीं पता था। अंततः,

जब हम जाने के लिए उठे, तो उसने अचानक मुझसे पूछा, 'मैंने सुना है कि आपके पास...'

मैंने कबीर पर एक नाटक किया है। आप क्यों नहीं आकर हमारे लॉन में उसका प्रदर्शन करते?

मैं इसे देखना चाहूंगा। आप बस मेरे कार्यालय में फोन कर दीजिए, बाकी का काम वे कर देंगे।

मैंने कभी भी उनके घर पर प्रस्तुति देने का इरादा नहीं किया था, इसलिए मैंने कभी उनके कार्यालय में फोन नहीं किया।

*

उनकी हत्या वाले दिन रात भर दंगों का शोर जारी रहा।

और मुझे नींद नहीं आई। अगली सुबह मैं बहुत जल्दी उठ गया और सोने चला गया।

रात भर क्या हुआ, यह जानने के लिए मैं पैदल चला। मैं एक दोस्त के घर गया।

डिफेंस कॉलोनी में एक और ब्लॉक। हम उसकी कार में बैठकर एक चक्कर लगाने निकले।

दक्षिण दिल्ली। हम डिफेंस कॉलोनी से आर.के. पुरम तक गाड़ी से गए, और फिर

आश्रम, लाजपत नगर, निजामुद्दीन, भोगल और अन्य क्षेत्रों के आसपास। हम
मैंने जली हुई बसें, झुलसी हुई कारें और टैक्सियाँ, कई ऑटो रिक्शा और ट्रक देखे।
टायर। जो हिंसा हुई थी वह बहुत स्पष्ट थी और भयावह थी।
खामोशी उस भयावह घटना की कहानी बयां कर रही थी जो घटित हुई थी।
हमें नहीं पता था कि क्या हुआ था।
दिन में भी यही सिलसिला जारी रहा। कहीं भी पुलिस नहीं थी, बस कुछ लोग सड़कों पर टहल रहे थे। घर लौटने के बाद, मुझे इसके बारे में पता चला।
सिखों के खिलाफ हिंसा के बारे में चिंतित दोस्तों ने फोन करके बात की।
उन पर हमले। मैंने देखा कि मेरे इलाके में सिख घरों पर लगी नामपट्टियाँ
निवासियों द्वारा मोहल्ले को हटा दिया गया था या तोड़ दिया गया था क्योंकि
भीड़ सिख घरों की पहचान करके उन पर हमला करने की कोशिश कर रही थी।
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं। दोपहर के आसपास मुझे जया का फोन आया।
जेटली, जो बाद में कुछ वर्षों के लिए जनता पार्टी के राजनीतिक नेता के रूप में उभरे।
डाल पार्टी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उस दोपहर अपने थिएटर समूह के सदस्यों को इकट्ठा कर सकता हूँ।
शांतिपूर्ण मार्च के लिए। मैंने प्रत्येक सदस्य को फोन किया, और वे सभी आने के लिए सहमत हो गए।
दोपहर करीब दो बजे हम सब मूलचंद अस्पताल में मिले।
जॉर्ज फर्नांडीस और चंद्र शेखर जैसे समाजवादी नेता।

वे हमारे आने का इंतजार कर रहे थे। वहां लगभग 150 लोग मौजूद थे, जो मार्च के लिए तैयार थे।
Eminent people like Swami Agnivesh, Lolly Ramdas, Ravi Nair, Madhu
दंडवते, सुमंतो बनर्जी, जया जेटली, दिनेश मोहन, चंद्रा
शेखर, जॉर्ज फर्नांडीस और चिमन भाई पटेल इस समूह का हिस्सा थे।
जुलूस।
यह मार्च लाजपत नगर, भोगल और आश्रम से होकर गुजरा।
विभाजन-पूर्व संस्था 'सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी' के कार्यालय में तैयार किया गया।
वह संगठन जिसने 1947 में सांप्रदायिक हिंसा के खिलाफ काम किया था।
जब यह छोटा जुलूस लाजपत नगर की भीतरी गलियों में पहुंचा, तो लाठी और त्रिशूल लिए लगभग बीस युवकों का एक समूह हमारे सामने आ खड़ा हुआ।
वे चाहते थे कि हम वापस चले जाएं, लेकिन हमने उनकी मौखिक धमकियों के बावजूद अपना रुख नहीं बदला।
वे बहुत बड़ा समूह नहीं थे, लेकिन विरोधी समूह तो और भी छोटा था।
चूंकि हमने उन्हें किसी भी तरह से उकसाए बिना वहां डटे रहे, इसलिए वे पीछे हट गए।
और हम आगे बढ़ गए। जब हम इरोस के बगल में स्थित जांगपुरा एक्सटेंशन पहुंचे।
सिनेमाघर के पास एक बड़ा टैक्सी स्टैंड था, जहां कुछ सिख ड्राइवर एक साथ huddled होकर बैठे थे।
जब उन्होंने एक छोटा जुलूस देखा, तो वे पीछे हटने लगे।
वे डर के मारे बगल वाली लेन में चले गए, लेकिन हमने उन्हें रोककर अपनी सुरक्षा का आश्वासन दिया।

समर्थन। एक बहुत लंबा और सुंदर टैक्सी ड्राइवर फूट-फूटकर रोने लगा, 'मेरे पास है
पूरी रात बहुत डरा हुआ था।’ मुझे याद नहीं आ रहा कि मैंने कभी किसी सिख को इतनी डरी हुई आँखों के साथ देखा हो। बचपन से ही हमें यह सिखाया गया था कि
सिख बहुत साहसी लोग थे। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि एक समुदाय
जो मुख्यधारा के भारत का इतना अभिन्न अंग था, उसे ऐसा महसूस कराया गया था कि
हाशिए पर, असहाय और अकेले।
भोगल पार करने के बाद हमारा जुलूस आश्रम की ओर बढ़ा।
वहाँ का माहौल बहुत ही भयावह था। वहाँ कुछ सख्त दिखने वाले आदमी खड़े थे।
सड़क के किनारे खड़े लोग हमें घृणा भरी निगाहों से देख रहे थे और हमसे बात करने से इनकार कर रहे थे। हमने सुना
इकट्ठे हुए गुंडों ने आदेश दिया, 'चलते रहो। यहाँ मत रुको।'
आगे बढ़ो। अगली बार तुम वोट मांगने हमारे पास आओगे।’ हममें से कोई भी ऐसा नहीं चाहता था।
उनसे बहस करो क्योंकि माहौल तनावपूर्ण था, और इसके परिणाम गंभीर हो सकते थे।
हालात बेहद खराब हो सकते थे। जब तक हम लाजपत भवन पहुंचे, हम सभी को लगा कि...
शांति मार्च से उस शहर में कोई खास फर्क नहीं पड़ा जो अब भी नफरत से भरा हुआ था।
सिखों। हमें कुछ और रचनात्मक करने की जरूरत थी।
दिल्ली के विभिन्न हिस्सों से खबरें आने लगीं कि सिख अपना घर-बार छोड़कर जा रहे हैं।

वे अपने घरों को छोड़कर गुरुद्वारों में जा रहे हैं या स्कूलों में शिविर लगा रहे हैं।
कॉलेज की इमारतों में बड़े पैमाने पर लूटपाट हुई थी। उनके घरों में भी लूटपाट हुई थी और
अन्य संपत्तियों के बारे में। सबसे चौंकाने वाली कहानियां क्रूर हत्याओं की थीं।
सिखों को जिंदा जला दिया गया था, उनके हाथ तार से बांध दिए गए थे और एक टायर गिरा दिया गया था।
उनके गले में रस्सी बांधकर, उन पर पेट्रोल डालकर आग लगा दी। यह खबर
मैं पूरी तरह से हिल गया। मुझे पेट में अजीब सी बेचैनी महसूस हुई।
ये दिल्ली के नागरिकों द्वारा किए जा रहे बर्बर कृत्य थे। अपने ही लोग। मैंने नादिर शाह और तैमूर की कहानियाँ पढ़ी थीं। दिल्ली पर आक्रमण, नागरिकों की हत्या और लूटपाट, लेकिन ये सब यह मध्ययुगीन काल नहीं था। यहाँ हत्यारे और मारे गए दोनों एक ही वर्ग के थे।
देश, उसी शहर से। 1857 में, जब ब्रिटिश सेना ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया।
भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों से ब्रिटिश सरकार ने हत्या का आदेश दिया था।
शहर के हर भारतीय पुरुष के बारे में। 1984 में, भारतीय ही भारतीयों को मार रहे थे।
अगली सुबह, चिंतित नागरिकों की एक छोटी सी बैठक बुलाई गई।
लाजपत भवन ने एक संचालन समिति का गठन किया। मैं उसमें एक सदस्य के रूप में शामिल हुआ।

समिति के सदस्य। बैठक में उपस्थित लोग समाज के विभिन्न क्षेत्रों से थे, सभी सिखों की दुर्दशा के प्रति अपनी चिंता के कारण वहां मौजूद थे।
मुख्य समूह में सामाजिक कार्यकर्ता, नौकरशाह, पत्रकार आदि शामिल थे।
फोटोग्राफर, कॉलेज प्रोफेसर, फिल्म निर्माता, छात्र और आम लोग हम लोग। हम एक-दूसरे को मुश्किल से जानते थे और हमने कभी साथ काम नहीं किया था, लेकिन
वहाँ मौजूद सभी लोगों का एक साझा उद्देश्य था—सिख समुदाय की मदद करना।
दिल्ली ने संकट के समय में उनकी मदद की। बालक के नेतृत्व में सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी ने उनकी सहायता की।
राम का कार्यालय लाजपत भवन में था और उसके पास एक बड़ा परिसर था।
लॉन, एक बड़ा हॉल और कुछ कमरे। बालक राम बहुत दयालु थे और उन्होंने पेशकश की।
लाजपत भवन की पूरी जगह हमारे संचालन के लिए, एक आउटरीच कार्यक्रम के रूप में उपयोग की जाएगी।
यमुना पार के क्षेत्रों और अन्य स्थानों में स्थित शिविरों में सिखों के लिए कार्यक्रम
पश्चिमी दिल्ली।
जिम्मेदारियों को दो समूहों में विभाजित किया गया था: एक समूह को यह पता लगाने का काम सौंपा गया था कि
लोगों की भोजन, वस्त्र और आवास संबंधी आवश्यकताओं के बारे में; और
इस पूरी त्रासदी पर रिपोर्ट तैयार करने के लिए एक और व्यक्ति को नियुक्त किया गया। रवि नायर, जो मेरा एक पुराना मित्र है, उन्होंने इसका एक नाम सुझाया: नागरिक एकता मंच।

जिस दिन सिख आबादी पर हमला हुआ, उस दिन कोई भी अधिकारी नजर नहीं आया।
शहर में। इंदिरा गांधी का अंतिम संस्कार तीसरे दिन होना था।
उनकी हत्या के कारण अधिकारी और नौकरशाही इस काम में व्यस्त थे।
अंतिम संस्कार और दुनिया भर से आने वाले विशिष्ट अतिथियों के लिए व्यवस्थाएं की जा रही हैं।
नवंबर के वो दिन अवास्तविक से थे; दिल्ली की सड़कें
सुनसान, सुरक्षाकर्मियों का कोई नामोनिशान नहीं। हत्या और लूटपाट की खबरें।
यमुना नदी के उस पार स्थित विभिन्न उपनिवेशों से ऑल इंडिया रेडियो के सदस्य आए थे।
साथ ही साथ अंतिम संस्कार की तैयारियों के बारे में टिप्पणी का प्रसारण किया गया।
नागरिकों की मदद करने के लिए कोई नेता नहीं था, और विपक्ष लगभग निष्क्रिय था।
अदृश्य। हम किसी से, किसी भी जाने-पहचाने चेहरे से संपर्क करना चाहते थे, ताकि उनसे मदद मांग सकें।
पूर्वी दिल्ली के कल्याणपुरी और चाल्ला गांव इलाकों तक पहुंचने के लिए सुरक्षा व्यवस्था की गई है।
पिछले दिनों उन क्षेत्रों में हुई हिंसा को लेकर चिंतित।
रात में। किसी ने सूचना दी कि विपक्षी नेताओं का एक समूह बैठक कर रहा था।
पृथ्वीराज रोड के पास एक सांसद का बंगला था। हम तुरंत वहाँ पहुँचे और बैठक में घुस गए। वहाँ मौजूद नेता थे...
अचानक पकड़े जाने पर वे स्पष्ट रूप से असंतुष्ट दिखे।
बैठक में अन्य लोगों के अलावा चंद्र शेखर, चिमन भी उपस्थित थे।

भाई पटेल, मधु दंडवते और जॉर्ज फर्नांडीस। हमने उनसे पूछा था कल्याणपुरी और चिल्ला गाँव में सैन्य टुकड़ियाँ पहुँचाने में मदद करें। चंद्र
शेखर की तत्काल प्रतिक्रिया थी, 'नहीं, हम पर आरोप नहीं लगना चाहिए।'
प्रधानमंत्री के अंतिम संस्कार में बाधा डालने के लिए।’ मैंने कहा, ‘ओह! मुझे खेद है कि हम
'मैंने आपकी बैठक में बाधा डाली है।' यह बात एक छोटे से टकराव में बदल गई।
नेता और हम। जैसे ही हम निकलने वाले थे, मधु दंडवते अचानक आ गए। वह उठा, मेज से अपनी छोटी नोटबुक उठाई और बोला, 'रुको! मैं
मैं तुम्हारे साथ आ रहा हूँ।
उन्हें अपनी एक कार में बिठाकर हम सीधे 1 सफदरजंग रोड की ओर चल पड़े।
इंदिरा गांधी का आधिकारिक निवास, वही स्थान जहाँ वह थीं
हत्या कर दी गई। सुरक्षाकर्मियों ने एक खाली घर की रखवाली की। हम
हम द्वार पर ही रुक गए, यह नहीं जानते थे कि किससे मिलने के लिए कहें। हमें आश्चर्य हुआ,
आंतरिक सुरक्षा मंत्री अरुण नेहरू नेहरू टोपी पहने नजर आए। हाथ में हाथ डाले, तीन मूर्ति भवन की ओर अंतिम संस्कार यात्रा के लिए जा रहे हैं।
इंदिरा गांधी का कार्यक्रम जल्द ही शुरू होने वाला था। जब उन्होंने हमें देखा, तो वे रुक गए।
मधु दंडवते को देखकर उन्होंने पूछा कि हम वहां क्यों थे। इससे पहले

Dandavate could answer, Nandita Haksar replied, ‘I am Nandita Haksar. We

यह ज्ञात है कि कल्याणपुरी और चाल्ला में हत्याएं और लूटपाट हुई हैं।

'गांव, हम चाहते हैं कि आप उस क्षेत्र में कुछ सैन्य बल भेजें।' अरुण नेहरू ने कहा।

वह तुरंत आदेश भेजकर अंतिम संस्कार के लिए रवाना हो जाता।

नंदिता ने पलटकर जवाब दिया, 'हम आपकी बात पर विश्वास कर रहे हैं!' एक घंटे के भीतर

हमने रेडियो पर सुना कि सेना को उन दोनों तक पहुंचने का आदेश दिया गया था।

क्षेत्र।

जैसे-जैसे सर्दी का मौसम नजदीक आया और ठंड बढ़ने लगी, एक अपील की गई...

दिल्ली के लोगों से विस्थापित सिखों के लिए कपड़े, कंबल और भोजन दान करने का आग्रह किया जाता है।

जनसंख्या। लाजपत भवन को पूर्ण विकसित सामाजिक सेवा केंद्र में परिवर्तित कर दिया गया।

केंद्र। हमारी अपील पर दिल्ली के लोगों को आगे आते देखना उत्साहजनक था। शुरुआत में दान बहुत कम मात्रा में आ रहा था, लेकिन जल्द ही

मात्रा तेजी से बढ़ती गई। लाजपत भवन हर तरह की सामग्री से भर गया था।

क्योंकि दान बड़ी मात्रा में प्राप्त हुआ, इसलिए सभी वस्तुओं को रखने के लिए एक बड़ा भंडार बनाया गया।

माल। नागरिक एकता मंच कई क्षेत्रों में सक्रिय था, इसलिए

अंततः विभिन्न जिम्मेदारियों को संभालने के लिए कई समूह बनाए गए:

भोजन और वस्त्र, परिवहन, चिकित्सा सहायता, दस्तावेज़ीकरण, प्रेस और
उदाहरण के लिए, प्रचार। एक बड़ा नोटिस बोर्ड लगाया गया था जिसमें लेखों की सूची दी गई थी।
आवश्यक था, साथ ही उन लोगों के संपर्क टेलीफोन नंबर भी आवश्यक थे जो इस कार्य को संभाल रहे थे।
नीचे दिए गए दान। उस समय मोबाइल फोन नहीं थे, इसलिए केवल आवासीय संचालन समिति के सदस्यों की संख्या उपलब्ध कराई जा सकती थी।
हमने एक बैठक खोली।
नकद दान की भारी मात्रा से निपटने के लिए एक आपातकालीन बैंक खाता खोला गया।
में।
स्वयंसेवकों का एक बड़ा समूह सुबह-सुबह विभिन्न स्थानों पर फैल जाता था।
शहर भर में शिविरों में भाग लेने के बाद शाम को लाजपत भवन लौट आते हैं।
समीक्षा सत्र। प्रत्येक समूह किए गए कार्य की रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा।
उन्होंने क्या देखा था और प्रत्येक शिविर में क्या आवश्यक था।
तैयारियाँ
अगले दिन की योजना इन चर्चाओं के आधार पर बनाई जाएगी।
सभी लोग रात के लिए चले गए।
जैसे-जैसे काम आगे बढ़ा, नई-नई समस्याएं सामने आने लगीं जिनके तत्काल समाधान की आवश्यकता थी।
प्रबंधन। एक तात्कालिक, पूर्णतः कार्यात्मक संगठन स्वाभाविक रूप से उभर कर सामने आया।
और नागरिक एकता मंच चौबीसों घंटे काम करने लगा।

शहर के लोग भी मदद के लिए आगे आए। यह विश्वास करना मुश्किल था कि वही लोग
वह शहर जो कुछ समय पहले तक अपने ही नागरिकों पर अत्याचार कर रहा था, अब
हिंसा से प्रभावित लोगों की मदद करने में अत्यधिक करुणा दिखाना।
हिंसा के बारे में सामने आई कहानियों से उंगलियां उठाई गईं पूर्वी दिल्ली और पश्चिमी दिल्ली में हुई हिंसा में कांग्रेस (आई) की भूमिका के लिए।
शाम की बैठकों में से एक में, स्वयंसेवकों में से एक, एक युवा शोधकर्ता
एक विद्वान ने पूर्वी दिल्ली के चाल्ला गांव से एक घटना का जिक्र किया, जहां कथित तौर पर एक
सिख निवासियों की सूची राशन की दुकानों से प्राप्त की गई थी। जैसे-जैसे हमारा कार्यभार बढ़ा, मुझे परिवहन का प्रभार सौंप दिया गया। इसका मतलब यह था कि
यह सुनिश्चित करना मेरा काम था कि आपूर्ति हर दिन शिविरों तक पहुंचे।
सुबह समय पर। हमारे पास वाहनों की कमी हो रही थी।
परिचालन जारी रहा, लेकिन कमी को दूर करने के लिए एक नया समाधान सामने आया। कई
कार्यालय जाने वाले लोगों ने हमें काम के घंटों के दौरान अपने वाहन उपलब्ध कराए। हम
अपनी कारें ले जाएं, दिन में उनका उपयोग करें और शाम 5.30 बजे तक उन्हें वापस कर दें।
व्यवस्था थोड़ी जटिल थी क्योंकि हमें लाइसेंस प्राप्त ड्राइवरों की आवश्यकता थी, और

दुर्भाग्य से मैं उनमें से एक नहीं था। कई लोगों ने अपनी सेवाएं देने की पेशकश भी की।
ड्राइवर अपनी कारों के साथ आते थे, और सप्ताहांत में कई कार मालिक खुद ड्राइव करके जाते थे।
खुद।
बहुत से लोग हमारे कार्यालय में यह जांचने आए कि क्या हम वास्तव में अपना काम कर रहे हैं।
हमने जो काम करने का दावा किया था। हम समझ सकते थे कि ऐसा क्यों था। कई कारण थे।
झूठे वादों पर चंदा इकट्ठा करने वाले लोगों की कहानियाँ। हमने प्रोत्साहित किया
लोगों को आकर काम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया ताकि वे इसकी विशालता को देख सकें।
स्वयं के लिए इस त्रासदी के बारे में।
परिवहन का प्रभार मेरे पास होने के कारण मैं बेस कैंप में ही फंस गया था। हालाँकि, मैं
मैं स्वयं शिविरों का दौरा करके स्थिति की वास्तविकता को देखना चाहता था।
तो, एक दिन मैं राहत सामग्री ले जा रही एक वैन में सवार हो गया। फ़र्श बाज़ार कैंप पूर्वी दिल्ली के एक सुदूर इलाके में स्थित है।
यह नवनिर्मित पुलिस आवासीय क्वार्टर में स्थित था। यह बिल्कुल इस थाने के प्रभारी पुलिस अधिकारी द्वारा अनुमति देना बुद्धिमत्तापूर्ण था।
भागते हुए सिखों ने खाली पुलिस क्वार्टर में शरण ली। यह दयालुतापूर्ण कार्य
पुलिस अधिकारी ने अपने जवानों को असहाय महिलाओं और बच्चों की सहायता करने का निर्देश दिया था।

और बुजुर्ग लोग भी आश्रय के लिए उमड़ पड़े।

मुझे घोर आश्चर्य हुआ जब मैं अपने खुले टेम्पो में शिविर में पहुँचा।

खाने-पीने की चीजें, तौलिए और साबुन लेकर सिख शरणार्थियों की भीड़ दौड़ पड़ी।

खुली गाड़ी के पीछे जाकर उन्होंने कुछ ही पलों में उसमें से सब कुछ लूट लिया।

कुछ मिनटों तक वे आपस में लड़ते रहे, एक-दूसरे को खींचते-धक्का देते रहे और एक-दूसरे को गालियां देते रहे।

एक और, और देखते ही देखते सारी हलचल खत्म हो गई।

एक पल के लिए मैं बहुत परेशान और क्रोधित हुआ, लेकिन मैंने एक शब्द भी नहीं कहा। मुझे एहसास हुआ कि इन लोगों के पास कुछ भी नहीं था, और शायद कई दिनों से उनके पास कुछ भी नहीं था।

खाना खाया हो या स्नान किया हो। सिखों के शांतिप्रिय और बहादुर समुदाय ने ऐसा किया है।

इस हालत को देखकर मैं बहुत परेशान हो गया। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सका। मैं यहाँ आया।

मुझे पता था कि इस तरह की घटना पहले भी हो चुकी है। मैं अकेला खड़ा था,

आगे क्या करना है, यह जानते हुए। एक बुजुर्ग सरदारजी, जिन्होंने पूरी घटना देखी थी।

उस एपिसोड में, वह मेरी तरफ देख रहा था। उसने आगे आकर इसके लिए माफी मांगी।

दूसरों के अभद्र व्यवहार के बारे में, और बहुत ही गरिमापूर्ण तरीके से कहा गया

मुझसे कहा गया, 'कृपया इस त्रासदी को समझने की कोशिश करें। आप जितने भी सिखों को देख रहे हैं, वे सभी...'

वे गरीब थे लेकिन बिस्तर बनाने जैसे छोटे-मोटे काम करके अपना गुजारा करते थे।

(मंजा), बढ़ईगिरी और घर रंगना। हम शिक्षित नहीं हैं। इसलिए, बेटा, कोशिश करो।
समझने के लिए। हमें अपनी महिलाओं, बच्चों और
हमारी महिलाओं का सम्मान। हम रास्ता भटक गए हैं।' उन्होंने मुझे एक बनाने की सलाह दी।
भंडारगृह, जिसे व्यवस्थित करने में उनके कुछ दोस्त मदद करेंगे ताकि वहाँ
शिविर में उचित व्यवस्था थी। वहाँ पहले से ही एक लालाजी मौजूद थे।
उन्होंने शिविर में रहने वाले लोगों को स्वयं ही पूरी और सब्जी का साधारण भोजन कराया।
यह एक ऐसे व्यक्ति की ओर से एक महान स्वैच्छिक कार्य था जिसका कोई स्वार्थ नहीं था।
सिख समुदाय के साथ मिलकर काम करें।
गुरुद्वारों में सेवा का सिद्धांत प्राचीन काल से ही एक महान परंपरा रही है।
अपने गुरुओं के बारे में। गुरुद्वारे में आने वाले हर व्यक्ति को भोजन कराया जाता है; प्रत्येक व्यक्ति ऐसा करता है
सेवा विभिन्न रूपों में सामुदायिक सेवा करती है। इस शिविर में, उसी सिद्धांत को लागू किया गया, और दो दिनों के भीतर हमारी सभी आपूर्तियाँ पहुँच गईं।
लाई गई वस्तुओं को एक कमरे में रखा जाता था और शिविर के जिम्मेदार सदस्य उन्हें वहां रखते थे।
उन्हें जरूरतमंदों में बांट दें। शुरुआती गुस्सा, बेबसी और इस भावना के बाद
नुकसान को अस्थायी रूप से नियंत्रित कर लिया गया था। लेकिन मनोवैज्ञानिक आघात अभी भी बना हुआ था।

इस नरसंहार ने उन्हें अंदर से खोखला कर दिया था। दूसरों पर से उनका विश्वास और भरोसा पूरी तरह से खत्म हो गया था।
उनसे होने वाली हर बातचीत में यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी।
उन्हें यथासंभव और आसानी से जीवित रहने में मदद करने के लिए आवश्यक चीजें उपलब्ध कराना।
लेकिन उनके गहरे मनोवैज्ञानिक घावों को भरना आसान नहीं था।
नफरत और अपमान
अपने ही देशवासियों के हाथों मिली हार ने उन्हें स्तब्ध कर दिया था। बहुत सतर्क रहना पड़ता था।
दंगों के बारे में उनसे कोई भी बातचीत करते समय सावधान रहें।
एक दिन ऐसा हुआ कि मेरी पत्नी अंजली, जो एक बाल रोग विशेषज्ञ हैं, एक डॉक्टर के रूप में गईं।
चिकित्सा दल के कुछ सदस्य कुछ शिविरों में गए। बीबीसी के कुछ क्रू सदस्य भी मौजूद थे।
डॉक्टर भी शिविरों का दौरा कर रहे थे। वहीं दूसरी ओर, डॉक्टरों ने मरीजों की जांच और इलाज किया।
मरीजों के बारे में, बीबीसी क्रू के एंकर ने अंजली से पूछा कि किस तरह के
जिन बीमारियों का वह मुख्यतः इलाज कर रही थी। जैसे ही वह जवाब देने वाली थी, एक युवक सिख ने कहा।
एक आदमी अचानक कहीं से आकर उस पर झपटा और चिल्लाते हुए बोला, 'तुम झूठ बोल रही हो। नहीं।'
यहां दवाइयां दी जा रही हैं।' उन्होंने कैमरे के सामने उस पर आरोप लगाया कि वह ऐसा नहीं कर रही है।
दवाइयों की आपूर्ति करने के बाद उन्होंने हिंसा के विषय पर बात करना शुरू कर दिया।
हो चुका था। ‘शिविर में आने वाले सभी लोग

‘सरकारी एजेंट हैं, और कोई मदद नहीं दी जा रही है,’ उसने चिल्लाकर कहा। यह युवक
उस व्यक्ति के अचानक गुस्से से डॉक्टरों की पूरी टीम परेशान हो गई, और वे चाहते थे कि...
उन्होंने अपना काम बंद कर दिया। उन्हें इस प्रतिकूल वातावरण में काम करना पसंद नहीं था।
माहौल। इन चिकित्सा स्वयंसेवकों को मनाने में काफी मशक्कत करनी पड़ी।
दिल्ली के विभिन्न अस्पताल अपना काम जारी रखेंगे।
जैसे-जैसे काम बढ़ता गया, हमें बड़ी संख्या में स्वयंसेवकों का सहयोग प्राप्त होने लगा।
उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेवाएं दीं। कुछ ड्राइवर के रूप में काम करते थे; कुछ अन्य कामों में व्यस्त थे।
बेस कैंप में, दानदाताओं से सभी प्रकार की वस्तुएँ एकत्र की जा रही थीं; और उनमें से कुछ थीं
अगले दिन शिविरों में वितरण के लिए आवश्यक वस्तुओं के पार्सल तैयार करना।
नागरिक एकता मंच अब संग्रह केंद्र में बदल चुका था।
वास्तविक परिस्थितियों के बारे में जानकारी का वितरण और प्रसार
शिविरों के बारे में। हमने उन पत्रकारों को नियमित रूप से जानकारी देना शुरू किया जो जानकारी चाहते थे।
इस त्रासदी के बारे में और अधिक कहानियाँ उन लोगों से प्राप्त करने के लिए जो वास्तव में इसके शिकार थे।
शिविरों में काम करना। जब भी मुझे समय मिलता, मैं शिविरों में जाया करता था।
बेस कैंप में मेरे काम से।

एक शाम, एक ब्रीफिंग के दौरान, हमें पता चला कि लोगों ने कपड़े दान किए थे।

शिविरों में रहने वाले लोग इसे पहनने में सहज महसूस नहीं करते थे। सिख महिलाएं

मुझे कुर्ते और सलवार चाहिए थे, पतलून नहीं। उस दिन मैंने एक बहुत बुजुर्ग व्यक्ति को देखा था।

फ़र्श बाज़ार शिविर में एक सिख ने अपना सिर बच्चे के अंडरवियर से ढका हुआ है।

एक उचित पगड़ी के बजाय। मैंने उस बूढ़े आदमी से टूटी-फूटी पंजाबी में पूछा, 'ऐ पाजी,

ay ki hai, pug nahi hai. Ye ki paa leya tuse?’ Whatever had he covered his head with? The old man in his helplessness replied, ‘Kaka ki kariye. Ejeet

haigena. Pug nahin hai par sar to dhakna haina? It was a matter of honour

उसने अपना सिर ढकने के लिए जो कुछ भी मिला, उसका इस्तेमाल किया।

मैंने उसका दर्द समझा। भारत में कई समुदायों में, पगड़ी

यह किसी व्यक्ति के सम्मान और आदर का प्रतीक है। यहाँ इस बूढ़े व्यक्ति का यही अर्थ था।

कि उनका मान-सम्मान दोनों ही छिन गया था। उन्हें बैठे हुए देखना।

जिस कोने में एक बच्चे के सिर पर उसकी अंडरवियर थी, उसे देखकर मुझे बहुत बुरा लगा।

मुझे कश्मीर में रहने वाले अपने सभी बड़े चाचा याद आ गए जो अपने सिर पर सुंदर पगड़ी पहनते थे।

सिर। मैं इस बूढ़े आदमी की पीड़ा समझ गया। शाम की बैठक में, मैं

सभी को कहानी सुनाई गई, और तत्काल अपील जारी करने का निर्णय लिया गया।

पगड़ी, कुर्ती, सलवार, दुपट्टा और ताम्बी। एक प्रथा के रूप में, इसका आकर्षण था।

कृपया नोटिस बोर्ड पर हमारे कुछ टेलीफोन नंबरों के साथ इसे लगा दें, ताकि यदि किसी को आवश्यकता हो तो वह हमसे संपर्क कर सके।

क्या आप हमसे संपर्क करना चाहते हैं या किसी प्रकार की जानकारी चाहते हैं?

दो दिन बाद, देर रात मुझे किसी का फोन आया, जिसने कहा कि...

पक्के पंजाबी लहजे में, 'सर, क्या आप रैना साहब हैं? मैं एक ट्रक लेकर आया हूँ।'

पगड़ी, कुर्ते, सलवार और दुपट्टे। मेरे साहब ने मुझे आपका टेलीफोन नंबर दिया है।

मेरा नंबर है, और मुझे आपको रिपोर्ट करना है।’ मैंने उससे पूछा, ‘तुम अपने साथ कहाँ हो?’

ट्रक?’ वह अखिल भारतीय आयुर्वेद विज्ञान संस्थान के पास, मुख्य मार्ग पर था।

सड़क पर। मैंने उससे वहीं मेरा इंतजार करने को कहा, और मैं उससे बीस मिनट में मिलूंगा।

उसे बेस कैंप तक ले जाने में कुछ मिनट लगेंगे। चूंकि मेरा घर रक्षा क्षेत्र में था।

मैं एम्स से कुछ ही दूरी पर स्थित कॉलोनी में उनसे मिलने के लिए दौड़ा। मैंने उनसे पूछा कि...

मेरी कार का पीछा करते हुए लाजपत भवन तक आओ। वहाँ पहुँचकर मैंने उससे पूछा कि क्या उसने कुछ खाया था।

रात का खाना। उसने कहा, 'सर, आपको मेरे बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। मैं जा रहा हूँ।'

जब तक आपको मेरी और मेरे ट्रक की ज़रूरत होगी, मैं आपके साथ रहूंगा। आपको चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

मेरे खाने, रहने या ईंधन के बारे में। मैं ये सब खुद ही संभाल लूंगा।’ मैंने उससे पूछा कि कौन

उसे किसने भेजा था और वह पंजाब के किस हिस्से से आया था? उसने उत्तर दिया कि
उनके साहब ने उन्हें अपना नाम या ठिकाना न बताने के लिए कहा था। वह
वे हमारे लिए काम करने के लिए यहां आए थे, और यही महत्वपूर्ण था। एक पल के लिए मुझे उसकी बात समझ नहीं आई, और बस
मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। मैंने ट्रक को देखा। यह एक बड़ा ट्रक था जिसमें हमारी सारी ज़रूरत का सामान था। इतना बड़ा ट्रक देखकर मुझे बहुत राहत मिली।
हमने शिविरों के लिए जिस सामान की मांग की थी, उसकी मात्रा। ट्रक चालक
उन्होंने कई हफ्तों तक हमारे साथ काम किया और शिविरों में तरह-तरह की चीजें पहुँचाईं।
पूरे शहर में। यह ट्रक बहुत काम आया, लेकिन आज तक मुझे नहीं पता कि यह किसने चलाया।
उसे किसने भेजा था? जब भी मुझे उसकी याद आती है, मैं खुद से पूछता हूँ, 'क्या यही ईश्वर की सेवा है?'
सिख धर्म का सार क्या है? क्या इसी को गुप्त दान कहते हैं? नवंबर की ठंड पड़नी शुरू हो गई थी। अब हमें कंबल और रजाइयों की जरूरत थी।
शिविरों के लिए। हमने फिर से अपने बोर्ड पर नोटिस लगा दिए। हमने गणना कर ली थी।
प्रत्येक शिविर में ठीक उतने ही कंबलों की आवश्यकता होगी। अब तक
प्रत्येक शिविर में स्वयंसेवकों ने वरिष्ठ सलाहकारों के साथ मिलकर आयोजन किया था।
हालात इतने सुचारु थे कि निवासियों के बीच कोई कलह नहीं थी।
हमने दंगों के शुरुआती दिनों में यही देखा था।

हमारे सामने एक बहुत ही गंभीर समस्या थी—कम से कम एक कंबल कैसे सुनिश्चित किया जाए?
प्रत्येक शिविर के प्रत्येक कैदी के लिए? हम कम संख्या में कंबल ले जा सकते हैं या
रज़ाई को कुछ लोगों में बाँट दें और बाकी के आने का इंतज़ार करें, लेकिन यह कदम
इससे शिविरवासियों के बीच अशांति और क्रोध उत्पन्न होगा, और इससे यह स्थिति उत्पन्न हो सकती है।
समुदाय और स्वयंसेवकों के बीच हिंसा और अविश्वास के कारण नागरिक एकता मंच। हमने 100 कंबल एकत्र किए थे, लेकिन यह पर्याप्त नहीं था।
कम से कम एक शिविर में बांटने के लिए पर्याप्त मात्रा में होने के कारण, हमने उन्हें अपने अड्डे पर रख दिया।
लाजपत भवन में डेरा डाले हुए हम और कंबल मिलने की प्रतीक्षा कर रहे थे और प्रार्थना कर रहे थे।
आना।
एक सुबह, एक बड़ी वैन आई जिसमें बहुत सारी खूबसूरत दिखने वाली महिलाएं थीं।
आयातित कंबल। इसके साथ एक बहुत ही प्रभावशाली, कुलीन दिखने वाली महिला भी आई थी जो
मुझसे मिलीं और अपना परिचय देते हुए बताया कि वह किसी यूरोपीय देश की वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी हैं।
दूतावास। वह इन कंबलों को दान करना चाहती थी लेकिन इन्हें देने के लिए तैयार नहीं थी।
उनके साथ बिना इस बात की पुख्ता गारंटी के कि कंबल
वास्तव में जरूरतमंदों को वितरित किया गया। उसने मुझसे यहाँ तक कह दिया, 'क्या

यह आश्वासन है कि आप लोग इन बेहतरीन कंबलों को अपने लिए नहीं ले जाएंगे।
निजी इस्तेमाल के लिए? आखिर ये आयातित कंबल हैं।’ मैंने अपने गुस्से पर काबू पाया।
और मैंने जवाब दिया, 'आप हमारे साथ आ सकती हैं और इन्हें खुद बांट सकती हैं।' वह ऐसा नहीं करना चाहती थी। आखिरकार मैंने उससे कहा कि उसे हम पर भरोसा करना होगा, लेकिन वह
वह इसे भी स्वीकार नहीं करती थी। अंततः, हमने उसे बताया कि हम इसे स्वीकार नहीं कर सकते।
उसका योगदान और उसे अपना सामान वापस ले जाना होगा क्योंकि हम मुझे कुछ और ज़रूरी काम निपटाने थे। वह सारे कंबल लेकर चली गई, और हमारा
हताशा और भी बढ़ गई।
हमें 800 कंबलों की आवश्यकता थी और हमारे पास केवल 400 थे। कुल मिलाकर, हमें 1200 कंबलों की आवश्यकता थी।
फ़र्श बाज़ार शिविर के लिए कंबल। उन दिनों, निराशा और
बेबसी हमारी साथी बन गई थी। हैरानी की बात है कि उसी दिन, बस यूरोपीय महिला के जाने के लगभग एक घंटे बाद, एक बुजुर्ग व्यक्ति अंदर आया।
मैंने अपने कार्यालय में जाकर उनसे पूछा कि वे कैसे मदद कर सकते हैं। अपनी घोर निराशा में मैंने उनसे कहा,
‘क्या आप हमें 800 कंबल दे सकते हैं?’ उस सज्जन ने पूछा, ‘मुझे 800 कंबल कहाँ से मिलेंगे?’
‘कंबल?’ ‘दिल्ली के खादी भंडार में मिल जाएंगे,’ मैंने जवाब दिया।
आश्चर्य की बात है, उन्होंने कहा कि उनके बगल में खड़ा उनका सहायक ऐसा करेगा।

हमारे साथ खादी भंडार की दुकान पर आइए और 800 कंबलों का भुगतान कीजिए।

शिविरों में बांटने के लिए आवश्यक था। मैं लगभग जम ही गया। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि क्या हुआ।

उन्होंने कहा था। मैंने उन्हें बैठने के लिए कहा, जिसे उन्होंने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया, लेकिन पूछताछ की।

इसके अलावा हमें और क्या चाहिए, इस बारे में मैंने उन्हें अपनी मुख्य समस्या समझाई।

परिवहन के मामले में, क्योंकि हम उधार के वाहनों का उपयोग कर रहे थे। उसने तुरंत

उन्होंने हमें दो एम्बेसडर टैक्सियाँ दीं। हमें बस वाउचर पर हस्ताक्षर करने थे।

दिन के अंत में, बाकी सब कुछ वह संभाल लेगा। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था।

यह साधारण दिखने वाला सज्जन अभी-अभी हमारे छोटे से कार्यालय में आया और

उन्होंने मिनटों में हमारी सारी समस्याओं का समाधान कर दिया। उनके जाने के दौरान मैंने उन्हें धन्यवाद दिया।

उन्होंने बस इतना ही कहा, ‘आप सब अच्छा काम कर रहे हैं। इसे जारी रखिए। आप जरूर सफल होंगे।’

भविष्य में पुरस्कृत किया जाएगा।' उन्होंने कहा कि विभाजन के बाद वह शरणार्थी बन गए थे और

उस समय उनके पास कुछ भी नहीं था। लेकिन ईश्वर की कृपा और उनकी अपनी शक्ति से

दृढ़ संकल्प से उसने अपने लिए पर्याप्त धन अर्जित कर लिया था। उसे ऐसा महसूस हुआ और

उसने शरणार्थी शिविर में रहने का दर्द समझा। फिर वह चला गया। वह नहीं गया।

मैंने उसका नाम या उसका व्यवसाय नहीं बताया, लेकिन मैंने उसे एक बहुत ही आलीशान गाड़ी में जाते हुए देखा।
कार।
मेरे मित्र, अभिनेता और प्रसिद्ध चित्रकार मनजीत बावा, जो संयोगवश...
एक सिख ने अपने बाल बहुत पहले कटवा लिए थे। वह उन दिनों अक्सर मिलने आता था।
संकट इसलिए पैदा हुआ क्योंकि उनकी पहचान सिख के रूप में नहीं हो सकी और इसलिए वे स्वतंत्र रूप से घूम सकते थे।
शहर। उन्होंने मुझसे कार्यालय में मुलाकात की और पूछा कि किन-किन चीजों की जरूरत है।
फ़र्श बाज़ार शिविर में कंबलों की आपूर्ति की समस्या के कारण समस्या हल हो जाने के बाद, अब हम बाकी लोगों के लिए कंबल इकट्ठा करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे।
शिविर। मनजीत बावा यह संदेश लेकर आए कि अजीत कौर, जो कि... प्रसिद्ध पंजाबी कहानीकार और उनकी बेटी अर्पणा, जो एक प्रख्यात लेखिका हैं।
चित्रकार ने रज़ाई खरीदी थी और वे दो टेम्पो भरकर उन्हें ला रहे थे।
शिविरों में वितरित करें। लेकिन फिर वही समस्या, जो यूरोपीय लोगों के साथ थी।
महिला अचानक सामने आ गई। बावा ने कहा कि कौरों को यकीन नहीं था कि ये योगदान सही हैं।
वे अपने लक्षित लोगों तक पहुंच जाएंगे। यह पता लगाना मुश्किल था।
कौन नकली था और कौन असली। कई समूह हर जगह उभर कर सामने आ गए थे।
दिल्ली में, सभी सिखों के लिए काम करने का दावा करते हैं।

अजीत और अर्पणा कौर रजाइयों से भरे दो टेम्पो लेकर पहुंचे। इतने सारे लोगों को देखकर बहुत राहत मिली। अजीत कौर, अपने विशिष्ट बेबाक अंदाज में,
मुझसे पूछा गया, ‘राइना, तुम्हें कैसे यकीन है कि ये रजाइयाँ सही जगह पहुँचेंगी?’
'लोग?' ये सवाल सुनकर मुझे दुख और निराशा हुई, लेकिन
फिर भी, मानव स्वभाव को देखते हुए, वह किसी न किसी प्रकार की मांग कर रही थी।
मेरी ओर से ज़मानत, जो उचित थी। एक पल के लिए मेरे पास कोई जवाब नहीं था।
लेकिन मुझे रज़ाई की ये दो लय चाहिए थीं। मैंने उसे सुझाव दिया कि वह और उसकी
बेटी टेम्पो के साथ किसी एक शिविर में जाए और उसकी देखरेख करे। वितरण स्वयं। उसने मुझे जवाब दिया, 'यह मत सोचो कि मुझे तुम्हारे पर शक है।'
ईमानदारी।’ मेरा तुरंत जवाब था, ‘नहीं, यह सिर्फ मेरे बारे में नहीं है, बल्कि
हमारे समूह के बारे में भी। हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहे हैं, और कृपया मुझ पर विश्वास करें, यह संभव है।
आपके लिए भी इन शिविरों की स्थिति देखना अच्छा रहेगा। आप एक
आप एक लेखक हैं, और कौन जानता है कि आपकी कलम से क्या निकलेगा। मुझे लगता है कि आपको इसकी आवश्यकता है।
'आओ और अपनी आँखों से इस त्रासदी की भयावहता को देखो।' अंत में, उसने कहा।
वे सहमत हो गए और हमारे एक स्वयंसेवक के साथ, दो रज़ाई गाड़ियों के पीछे-पीछे हमारे बेस कैंप से निकल पड़े। मुझे राहत मिली कि रज़ाई आखिरकार पहुँच गए।
शिविर पहुंचने जा रहे हैं।

मैं नियमित आपूर्ति सामग्री लेकर एक जीप में फिर से फरश बाजार शिविर गया।
जैसे ही सामान उतारा जा रहा था, एक युवती, जो लगभग प्यासी थी, उसके मुंह से झाग निकल रहा था, वह मेरी ओर दौड़ती हुई आई और मदद की गुहार लगाने लगी।
पहले तो मुझे उसकी बात समझ नहीं आई, क्योंकि वह एक अलग भाषा बोल रही थी।
पंजाबी की वह बोली जो मेरे लिए जानी-पहचानी बोली से अलग थी।
उसका एक रिश्तेदार।
उसने बताया कि उसने सुना था कि दूसरे शिविर में किसी ने उसे देख लिया था।
बच्चे थे, और वह चाहती थी कि मैं उन्हें बचाने और यहाँ लाने में उसकी मदद करूँ।
मैंने उससे पूछा कि उसे कैसे पता चला कि उसके बच्चे दूसरे शिविर में हैं।
उसने बताया कि उस शिविर से एक व्यक्ति आया था और उसने उसे जानकारी दी थी।
मैंने उसके एक रिश्तेदार से कहा कि वह मेरे साथ जीप में चले और उसके बच्चों को ले आए।
वहां से। वह लगभग एक सप्ताह से अपने बच्चों से अलग थी।
दंगों के शुरू होने के बाद से ही वह बहुत कमजोर थी, शायद उसने कुछ खाया भी नहीं था।
कुछ दिनों तक वह बेचैनी में बेहोश हो गई। उसे होश में लाने के बाद, मैंने अपनी जीप उसे दे दी।
मैंने उसके रिश्तेदार से कहा कि वह जाकर उसके बच्चों को वापस ले आए। मैं उसके साथ रुका।
हम उस महिला के लिए कुछ खाना लाए, लेकिन उसने तब तक खाने से इनकार कर दिया जब तक उसे कुछ और न मिल जाए।

उसके बच्चों से मिलो। वह मुझे बार-बार ‘वीरा [भाई]’ कहकर बुला रही थी।

जब हम इंतजार कर रहे थे, उसने मुझे उस दिन की कहानी सुनाई जब उसके कबीले पर हमला हुआ था।

और कैसे इस विशाल परिवार के सभी सदस्यों को अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा।

अपनी जान बचाने के लिए। अफरा-तफरी में, वह अपने बच्चों को नहीं ढूंढ पाई और यहाँ आ पहुँच गई।

वह अपनी बिरादरी की अन्य सदस्यों के साथ इस शिविर में है।

हमने जीप के लौटने का काफी देर तक इंतजार किया, और

मेरे मन में भय घर करने लगा। मान लीजिए उसके बच्चे नहीं मिले, तो क्या होगा?

क्या ये बेचारी औरत चलेगी? मैं लगभग दो हफ्तों से बेसब्री से इंतज़ार कर रही हूँ।

घंटों बाद, आखिरकार मुझे दूर से एक जीप की परछाई दिखाई दी जो मेरी ओर आ रही थी।

शिविर में। वह भूखी शेरनी की तरह नई उम्मीद के साथ उठी और श्लोकों का पाठ करने लगी।

गुरबानी से मेरी निगाहें जीप पर टिकी थीं। जैसे ही वाहन हमारे करीब आया, मैं

मैंने चिंता से उसकी कविता सुनी। लेकिन मुझे यह भी उम्मीद थी कि यह जीप

दरअसल, वह अपने बच्चों को वापस ला रही थी और यह युवती उनसे फिर से मिल जाएगी। अंत में, हमने कुछ युवाओं को जीप से उतरते देखा। कई

युवा लड़के, वयस्क और कुछ अधेड़ उम्र के पुरुष, कुल मिलाकर लगभग अठारह लोग।

छोटी जीप से एक लड़की बाहर निकली। उस युवती ने अपने तीन बच्चों को पहचान लिया।

बच्चे जीप की ओर दौड़े और उन्हें बड़े हर्षोल्लास से गले लगा लिया। पुनर्मिलन
यह किसी उत्सव जैसा लग रहा था, हालांकि वास्तविकता में वे किसी और ही जगह पहुँच गए थे।
शरणार्थी शिविर। कौन जानता था कि उन्हें कितने समय तक या कितने और कष्ट सहने पड़ेंगे।
पीड़ित?
अपनी खुशी में वे मुझे भूल गए। मैंने उन्हें कुछ मिनटों तक देखा और
फिर वे बेस कैंप की ओर वापस चले गए।
एक और दिन मुझे शाम लाल कॉलेज के कैंप में जाने का मौका मिला। पूर्वी दिल्ली। शिविर की हालत बहुत गंदी थी, और मेरे पास कुछ सामान था।
यूनेस्को के विशेषज्ञ हमें सामूहिक स्वच्छता विधियों के बारे में सलाह देंगे और
स्वच्छता संबंधी मुद्दे। कॉलेज के लॉन में चलते हुए, मैंने
एक पेड़ के नीचे बेबी नाम की एक महिला दिखी, जो पहले प्रभारी हुआ करती थी।
नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में वेशभूषा पहने, अपने परिवार के साथ बैठी हुई।
शिविर में शरणार्थी। यह हमेशा मुस्कुराने वाली युवती हमेशा से ही एक
एनएसडी में उनके साथ काम करना बेहद सुखद अनुभव था। यहाँ उन्हें एक खुले आश्रय में डाल दिया गया था,
मुझे नहीं पता था कि वह वहाँ कितने समय तक रहेगी। इससे पहले कि मैं उससे पूछ पाती कि वह कैसी है,
वहाँ उतरते ही मैंने अपने एक और दोस्त बेदी को देखा, जो नेशनल से था।

स्कूल ऑफ ड्रामा प्रशासन। मुझे यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि उसने अपने लंबे बाल कटवा लिए थे।

अपनी जान बचाने के लिए बेदी ने अपने बालों का इस्तेमाल किया।
बेदी ने बताया कि भीड़ उसके घर पर आ गई थी।

उसे जान से मारने के इरादे से, लेकिन उससे पहले, घबराहट और डर में, उसने अपने बाल काट लिए थे।

उसी ने उसकी जान बचाई थी। मैं कुछ कह नहीं सका और कुछ देर तक चुप रहा।

समय। मैं बस इतना ही कह सकता था कि अगर उन्हें किसी चीज की जरूरत हो तो वे मांग लें, लेकिन

उन्होंने कुछ नहीं मांगा।

उस रात, घर पर, बेदी का चेहरा मेरे सामने प्रकट हुआ, उसका मैला- कुचैला चेहरा

कटे हुए बाल मौत के मुखौटे की तरह मुझे घूर रहे थे। मुझे नींद नहीं आ रही थी। क्या?

क्या उसे 31 अक्टूबर की उस भयानक रात से गुज़रना पड़ा होगा? कितने

सिखों ने शायद निराशा में अपने बाल कटवाए होंगे? इसका क्या अर्थ था?

फोन की घंटी बजी, और जैसे ही मैंने फोन उठाया, यमुना पार के इलाके से मेरे एक थिएटर मित्र ने मुझे बताया कि भग सिंह की हत्या कर दी गई है, उन्हें जिंदा जला दिया गया है। मैं गया

सुन्न। भाग सिंह एक बढ़ई थे, जो दिल्ली दूरदर्शन में काम करते थे।

सेट और कला निर्देशन विभाग—एक मेहनती, दृढ़ निश्चयी, आत्मविश्वासी

सरदार को अपने काम और अपनी मजदूरी के अलावा किसी और चीज की परवाह नहीं थी।

उन्होंने हमारे नाटकों के लिए सेट बनाए और कई थिएटर समूहों के लिए यह सेवा प्रदान की।
न्यूनतम पारिश्रमिक। अपने सहज स्वभाव के कारण, वह कंपनी के लिए एक बहुमूल्य संपत्ति थे।
दिल्ली में शौकिया नाट्य आंदोलन। सभी नाट्य कलाकार उन्हें पसंद करते थे और
वे उस पर निर्भर थे। भले ही वे उसे भुगतान न कर सकें, वह उन्हें ऐसा करने नहीं देता था।
नीचे।
उसकी मौत उसके अति आत्मविश्वास और भरोसे की वजह से हुई, जो उसके पास था।
वर्षों की कड़ी मेहनत से अर्जित किया गया। शायद उनका मानना था कि
उसे कुछ नहीं होगा, इसलिए जब गुंडे उसकी गली में आए, तो उसने
वह निडर होकर बाहर आया और हमलावरों को डांटने लगा। लेकिन उन्होंने उसे पकड़ लिया और पीटा।
उसके हाथों को धातु के तार से पीछे की ओर बांध दिया, उसके गले में एक टायर डाल दिया।
उसके शरीर पर पेट्रोल डालकर उसे जिंदा जला दिया। मैंने फोन गिरा दिया।
फोन करने वाले से एक शब्द भी कहे बिना।
गुंडों ने दिल्ली के द्वार पर मौत का नाच खेला था।
दंडमुक्ति।
मेरे मित्र मदन गोपाल सिंह, जो अब एक प्रसिद्ध सूफी गायक, भाषाविद् और
फिल्म विद्वान, दिल्ली विश्वविद्यालय क्षेत्र में स्थित अपने बरसाती फ्लैट में फंसे हुए थे।

उसके दोस्त बस इतना ही कर सकते थे कि हर घंटे उसे फोन करके उसका हालचाल पूछते रहें।

वे उसकी मदद कैसे कर सकते हैं। एक दिन, जब मैं उससे फोन पर बात कर रहा था,

उसने मुझसे मानसरोवर गार्डन में रहने वाले अपने माता-पिता के बारे में पता लगाने को कहा।

पश्चिमी दिल्ली में। मैं इस इलाके से अनजान था, इसलिए उन्होंने मुझे पता दिया और

घर जाने का रास्ता। अगली सुबह, मैंने कुछ बसें लीं और

आखिरकार वे अपने घर पहुँच गए। उनके पिता, श्री हरभजन सिंह, एक

प्रख्यात पंजाबी कवि और पंजाबी साहित्य के विद्वान, जिनके मार्गदर्शन में कई रचनाएँ प्रकाशित हुईं।

पंजाबी विद्वानों ने अपनी डॉक्टरेट की थीसिस पूरी कर ली थी। उस पर कोई नामपट्टिका नहीं लगी थी।

नवनिर्मित घर का मुख्य द्वार, शायद स्पष्ट कारणों से हटा दिया गया था।

कारण। घर के आसपास ज्यादा पड़ोसी नहीं थे क्योंकि यह एक नई आवासीय कॉलोनी थी। मैं मदन के माता-पिता से मिला। उनकी शारीरिक मुद्रा सख्त थी।

लेकिन सौभाग्य से वे सुरक्षित थे। लगभग एक घंटे बाद, मैं घर से निकला और फोन किया।

मदन को यह बताने के लिए कि उसके माता-पिता ठीक हैं। मैंने उससे पूछा कि वह कब आ सकता है।

वह अपना इलाका छोड़ना चाहता था, लेकिन उसे यकीन नहीं था। वहाँ का माहौल बहुत तनावपूर्ण था, और बाहर निकलना मुश्किल था।

सुरक्षित रहना संभव नहीं लग रहा था। वह पीछे रहना चाहता था। दो- तीन के बाद

कुछ दिनों बाद, मनजीत बावा अपनी जीप में मदन के फ्लैट पर गए, उसे ले आए और

उन्हें लाजपत भवन के बेस कैंप में लाया गया।
मुझे उस दिन मदन का चेहरा याद है। उस पर एक अलग ही भाव छाया हुआ था।
मैं इस पर काबू पा चुका हूँ। मैं उसके चेहरे और आँखों में जो भाव देख पाया, उसका वर्णन नहीं कर सकता। जब हम
हम साथ बैठे रहे, हमने मुश्किल से ही बात की। अगली दो रातें उन्होंने हमारे घर पर बिताईं।
डिफेंस कॉलोनी। उसने बस रात में पढ़ने के लिए एक किताब मांगी। उसने एक किताब उठाई।
एक किताब पढ़ी, लेकिन पूरी रात नींद नहीं आई। हमने बस सतही बातों पर ही चर्चा की।
उसके चेहरे के भाव ने मुझे परेशान कर दिया। मुझे नहीं पता था कि वह क्या सोच रहा था।
सोच। उन दंगों के दिनों से, मदन का चेहरा और उसकी आँखों में जो भाव थे।
आंखें हमेशा के लिए बदल गईं। यह वह चेहरा नहीं है जिसे मैं 31 अक्टूबर 1984 से पहले जानता था।
हालांकि वह एक गर्मजोशी और स्नेहपूर्ण मित्र बने हुए हैं।
मदन और मेरी मुलाकात मेरे कुछ नाटकों के मंचन के दौरान हुई थी।
मंडी हाउस। हम थिएटर की गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त बातचीत करते थे।
दिल्ली में. मणि कौल की फिल्म 'सतह से उठता आदमी' की शूटिंग के दौरान
मुक्तिबोध की रचनाओं पर आधारित होने के कारण, हम एक-दूसरे के करीब आ गए। वह फिल्म से जुड़ गए थे।
कुछ दिनों के लिए भोपाल स्थित यूनिट में रहने के दौरान मैं तुरंत ही उस यूनिट का हिस्सा बन गया।

शूटिंग के लंबे दिन के बाद, मणि अपना तानपुरा निकालता और तानपुरा बजाना शुरू कर देता।
ध्रुपद रियाज़। अपने विशिष्ट अंदाज़ में, वह सभी को इसका पालन करने के लिए मना लेते थे।
उनकी तात्कालिक प्रस्तुतियाँ। उन्हीं दिनों से मदन के साथ मेरी दोस्ती गहरी होती चली गई।
एक गहरे बंधन में तब्दील हो गए।
1984 के मदन को याद करते हुए, अब ऐसा लगता है कि वह तैरकर पार आ गया है।
अनेक महासागरों और अनेक संस्कृतियों से गुज़रने के कारण, संभवतः यह परिवर्तन उनमें आया।
1984 के वे अनुभव जब सिखों को उनके द्वारा किए गए अपराधों के लिए निशाना बनाया गया था
प्रतिबद्ध नहीं।
जैसे-जैसे दिन बीतते गए, शिविरों में नई-नई समस्याएं उभरने लगीं।
इन शिविरों में रहने वाले लोग साधारण सिख थे, जिनमें से कई बेहद गरीब थे।
वे पंजाब और अन्य जगहों पर रहने वाले अपने रिश्तेदारों से संपर्क करना चाहते थे।
दूर-दराज के स्थानों तक। वे चाहते थे कि कम से कम एक संदेश उनके प्रियजनों तक पहुँच जाए।
यह कहना कि वे जीवित थे, सांप्रदायिक हिंसा की भयावहता से बच गए थे।
और अब वे शरणार्थी शिविरों में थे।
शाम को हुई हमारी समीक्षा में, इन संदेशों को भेजने की समस्या पर चर्चा हुई।

इस पर चर्चा हुई। हमें एहसास हुआ कि उनके परिवारों और रिश्तेदारों के पास कोई जानकारी नहीं होगी।

इस बात का कोई सुराग नहीं मिला कि दिल्ली में रहने वाले उनके रिश्तेदार जीवित हैं या मृत। दुर्भाग्य से, किसी ने भी इसकी पुष्टि नहीं की।

शिविरों में रहने वाले लोग गुरमुखी में लिख सकते थे। लोगों को एक संदेश भेजा गया।

जो लोग गुरुमुखी लिपि में पंजाबी लिख सकते हैं, उनके लिए दिल्ली आने का समय है।

कैदियों की मदद के लिए आगे बढ़े। कुछ दिनों बाद पत्र लिखना शुरू हुआ।

जब शहर का वातावरण थोड़ा ठंडा हो गया था।

जल्द ही बड़ी संख्या में युवा छात्र, लड़कियां और लड़के और कई वयस्क,

हम अपने बेस कैंप पर पहुँच गए, पोस्टकार्ड लिखने के लिए कैंपों में जाने के लिए तैयार थे।

दंगों के पीड़ितों द्वारा लिखवाए गए पत्र। शिविरों में आम माहौल।

बदलाव आया। इस गतिविधि से कई तरह से मदद मिली। सबसे पहले, पीड़ितों ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

अपनी कहानियाँ सुनाते समय उनका दर्द। कहानियों ने रोंगटे खड़े कर दिए।

श्रोता। दोनों तरफ आंसू भरी आंखें थीं। यह एक तरह से बदल गया।

पीड़ितों के लिए भावनात्मक मुक्ति, इस त्रासदी की गहराई और भयावहता का अब एहसास हो रहा है

उनके द्वारा पूरी तरह से। पत्र लेखन का अभ्यास एक महाकाव्य की तरह था।

यह घटना असंख्य प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा घटित और वर्णित की गई थी। यह एक हिंसक घटना थी।

बहुसंख्यक वर्ग द्वारा किए गए दमन के इस रक्तपातपूर्ण कृत्य ने मुझे इसकी याद दिला दी।
ग्रीक त्रासदी, द ट्रोजन वुमन। इसने मुझे मेरी दादी की याद दिला दी, जो
उसने मुझे विभाजन के दिनों के लोगों की कहानियाँ सुनाई थीं जब वह
मैंने रावलपिंडी में हुए दंगों को देखा।
हालांकि हिंसा लगभग एक सप्ताह तक जारी रही, लेकिन धीरे-धीरे शहर में शांति बहाल हो गई।
हालात धीरे-धीरे सामान्य होने लगे। परिवहन वाहन चलने लगे। सड़कों पर यातायात शुरू हो गया और लोग काम पर लौट आए। शिविर जारी रहे।
काम तो चल रहा था, लेकिन सरकार शिविरों को बंद करने के संकेत दे रही थी। वे चाहते थे कि सिख अपने घरों को लौट जाएं, लेकिन उन्हें इस बात का एहसास नहीं था।
उन्हें ऐसा करने में सुरक्षित महसूस नहीं हुआ। उन्हें वापस भेजने का विचार एक
सरकार द्वारा राजनीतिक रूप से अपनी प्रतिष्ठा बचाने का बेतुका प्रयास।
हमने शिविरों में अपना काम हमेशा की तरह जारी रखा। अफवाहें फैलने लगीं कि एक
बड़ी संख्या में सिख दिल्ली में पलटवार करेंगे और हमला करेंगे।
बंदूकें और तलवारें। एक रात मैं काफी देर से घर लौटा। मेरे पड़ोसी ड्यूटी पर थे।
उस रात उन्होंने मुझे हमारे ब्लॉक के मुख्य द्वार पर रोक लिया।
पहले तो उन्होंने मुझसे पूछताछ की।
मुझे यह बताने के लिए कि मैं वहाँ क्यों था। जब आखिरकार उन्हें यह समझ आया कि मैं केवल रहता हूँ

चौकी से चार घर दूर, एक किराएदार के रूप में, उन्होंने मुझे बस्ती में रहने दिया।
लोगों द्वारा अपने घरों की रखवाली करने के इस नए घटनाक्रम से मैं आश्चर्यचकित था।
जब मैंने उनसे पूछा कि यह सब क्या है, तो उन्होंने मुझे एक ही कहानी सुनाई।
सिखों के आने और हिंदुओं की हत्या करके उन पर हुए हमलों का बदला लेने के बारे में।
शहर में। मैंने उनकी अज्ञानता और उनके द्वारा फैलाई जा रही गलत सूचनाओं पर हँसा।
मैंने उनसे कहा कि देश की पूरी सिख आबादी इसमें शामिल है।
सदमा और शोक। 'क्या आप लोगों को पता है कि क्या हुआ है?'
'उनसे?' मैंने पूछा। सन्नाटा छा गया, क्योंकि वे सब कुछ मान चुके थे।
अफवाहें तो सुनी थीं, लेकिन कभी खुद आकर देखने की हिम्मत नहीं की थी।
सिख समुदाय की दुर्दशा। यह सच था कि मेरे इलाके में रहने वाले सिखों की स्थिति
यह भी सच था कि कई लोगों ने अपने पड़ोसियों द्वारा बस्ती को बचाया था।
लोग आपस में फुसफुसा रहे थे कि वे इसके हकदार थे क्योंकि वे हत्या कर रहे थे।
पंजाब में हिंदुओं की संख्या और इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था। विदाई लेते समय
मैंने उनसे हल्के-फुल्के अंदाज़ में कहा, 'कृपया घर जाइए और आराम कीजिए। कोई भी यहाँ नहीं है।'
हम पर हमला करने आ रहे हैं। और अंत में, इन प्रेरित हमलों पर विश्वास न करें।

और झूठी रिपोर्टें।'

सुबह जब अंजली और मैं निकलने ही वाले थे, तभी मेरे बेटे अनंत ने...

अब लगभग दो साल का हो चुका वह मेरे अलविदा कहने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देता था। वह एक कोने में बैठा रहता था।

चुपचाप। हमारे घर में एक घरेलू सहायिका थी, नाना, जो बच्चों की देखभाल करती थी।

दिन के दौरान। जब मैंने उससे पूछा कि वह मुझसे बात क्यों नहीं कर रहा है, तो उसने जवाब दिया।

उनका जवाब सीधा था: 'मैं आप दोनों को नहीं देख रहा हूँ। और मैं आप दोनों से बात नहीं कर रहा हूँ।'

यह छोटा बच्चा अपने माता-पिता को बहुत याद कर रहा था, और इन दिनों हम उसके साथ मुश्किल से ही समय बिता पा रहे थे। अंजली उसे देखने के लिए चिकित्सा शिविरों में जाती थी।

वहां मरीज थे, और मैं या तो बेस कैंप जाता था या शरणार्थी शिविरों में।

अपराधबोध महसूस करते हुए, अंजू और मैंने नाना से इस समस्या पर चर्चा की। अंत में यह निर्णय लिया गया।

मैं अनंत को अपने साथ बेस कैंप ले जाऊँगा जबकि अदिति घर पर ही रह सकती है।

नाना की देखभाल। अंजू बाद में चिकित्सा कार्य के लिए शिविरों में जाएगी।

इस तरह नन्हा अनंत रैना बेस कैंप में सबसे कम उम्र का स्वयंसेवक बन गया।

वह अपना दिन अपने कई चाचा-चाचियों के बीच बिताता था। वह सभी के साथ घूमता था।

लाजपत भवन के लॉन में, जहां आपूर्ति और कपड़े रखे गए थे।

शिविरों के लिए पैकेजों में सामान छांटने और पैक करने का काम अनंत को बहुत पसंद था।

स्वयंसेवकों के बीच, जो उसे बहुत लाड़-प्यार करते थे, वह उनके साथ खेलता था।
जब वे भोजन और अन्य सामान बनाने का काम कर रहे थे, तब कभी-कभी वह लॉन पर पड़े सामान के ढेर पर लेट जाता; कभी-कभी वह एक कपड़ा उठा लेता और
इसे किसी ऐसी आंटी को दे दो जो उसे चुंबन या गले लगाकर आशीर्वाद दे दे।
अनंत की तनावपूर्ण शारीरिक मुद्रा यहाँ बदल गई। वह सहज हो गया और उसमें आत्मविश्वास आ गया।
और शिविर में लोगों के साथ अपने दिन का आनंद ले रहा था। कई बार, मैं ऐसा करता था।
मुझे वो किसी अनजान महिला या पुरुष की गोद में मिला। किसी समय दोपहर के भोजन के बाद, मैं उसे अक्सर ढेर पर सोते हुए देखता था।
कपड़े। अंजू और मैं अपने बच्चों की उपेक्षा करने के अपराधबोध से मुक्त हो गए।
अदिति और अंजू जल्दी घर लौट आईं ताकि वे उसके साथ रह सकें और उसकी देखभाल कर सकें।
सो गया।
शिविर में काम करने के इन सभी दिनों के दौरान, किसी समय मेरे दोस्त,
जम्मू और कश्मीर कैडर के सिविल सेवक स्वर्गीय अशोक जेटली जिन्होंने कश्मीर में विभिन्न वरिष्ठ पदों पर कार्य किया था, जैसे कि मुख्यमंत्री
जम्मू और कश्मीर के राज्यपाल के सचिव और सलाहकार के रूप में कार्य करने के दौरान
राज्य में आतंकवाद के चरम पर होने के दौरान, उन्होंने मुझसे इस त्रासदी पर एक नाटक बनाने के लिए कहा।

मैंने उसे जवाब दिया कि मैंने इसमें कोई नाटक प्रदर्शन नहीं देखा।
यह एक त्रासदी थी। मैंने इसे अपने देश के लिए शर्म की बात समझा।
और सच कहूँ तो, मुझे बेहतर महसूस हुआ।
पीड़ितों की सेवा और सहायता करना, न कि इसे एक नाटकीय आयोजन बनाना।
उनकी दुर्दशा। यह सब करने का यह उचित समय नहीं था, क्योंकि त्रासदी में इतना डूबे होने के कारण निष्पक्ष रहना संभव नहीं था। नाटक किए जा सकते थे।
ऐसा बाद में तब होता है जब व्यक्ति में कुछ वस्तुनिष्ठता आ जाती है।
समय बीतने के साथ-साथ, इंदिरा शासन के बाद कई महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाएँ घटीं।
गांधी युग। उनके बेटे राजीव गांधी, भारत के प्रधानमंत्री के रूप में,
पंजाब में कई राजनीतिक कैदियों को रिहा किया गया, जिन्हें जेल में बंद किया गया था।
भिंडरांवाले की छाया में ऑपरेशन ब्लू स्टार के बाद का युग
एक घटना। पंजाबी राजनीतिक आकांक्षाएं बीच में फंस गई थीं।
कई गुट थे। कोई हल नहीं निकला। एक दिन मुझे एक नागरिक का फोन आया।
एकता मंच की स्वयंसेवक ने मुझे दशमेश कॉलोनी में आने के लिए कहा, जो कि इसके बगल में स्थित है।
दक्षिण दिल्ली की पम्पोश कॉलोनी में एक सिख सज्जन के घर में, उन्होंने हमारे साथ काम किया। इस बैठक का उद्देश्य संत लोंगोवाल से मिलना था।
सिख संत नेता, जिन्हें बरनाला के साथ जेल से रिहा किया गया था।

वे दिल्ली में उन लोगों का शुक्रिया अदा करने आए थे जिन्होंने उनकी मदद की और उनका ख्याल रखा।
दंगों के दौरान सिखों की संख्या। अधिकांश नागरिक एकता मंच समिति
सदस्य बैठक के लिए समय पर पहुँच गए थे। ड्राइंग रूम में
लोगों से खचाखच भरा हुआ था। संत लोंगोवाल आंखें बंद करके बैठे थे, मानो किसी
ध्यानमग्न अवस्था में वे काफी प्रभावशाली दिख रहे थे। बुद्ध की कमल मुद्रा में वे बेहद आकर्षक लग रहे थे।
बरनाला उनके बगल में बैठी थीं। मुझे कुछ समिति सदस्यों ने बताया कि मैं
उन्हें धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत करना होगा।
जब बैठक शुरू हुई, तो घर के मालिक, एक सिख और पूर्व वायु सेना के अधिकारी ने बैठक में भाग लिया।
पुलिस अधिकारी ने संतजी और बरनाला का स्वागत किया। उन्होंने हमारे काम के बारे में बात की।
शिविर में हुए दंगों के दौरान। इसके बाद बरनाला ने हमें संबोधित किया। उन्होंने बात की।
सिखों पर वर्षों से हो रहे अन्याय और वर्तमान स्थिति के बारे में
पंजाब की स्थिति। इस पूरे समय संत लोंगोवाल बुद्ध की मुद्रा में बैठे रहे।
आंखें बंद किए हुए। अंत में, बरनाला ने उससे कुछ शब्द बोलने को कहा।
संत लोंगोवाल ने अपनी आँखें खोलीं, चारों ओर नज़र दौड़ाई और... वहाँ मौजूद लोगों ने बात की। उन्होंने हम सभी को बचाने और मदद करने के लिए धन्यवाद दिया।
सिखों की मदद के लिए उस समय दुनिया में कोई भी मौजूद नहीं था।

उन्होंने सदियों से उनकी कौम पर हुए अन्याय का विस्तारपूर्वक वर्णन किया, और

सिखों के घावों को भरने के लिए न्याय की आवश्यकता थी। उन्होंने फिर से अपनी आँखें बंद कर लीं और ध्यान में लीन हो गए। अब वोट देने की मेरी बारी थी।

धन्यवाद। मैंने इससे पहले कभी ऐसा कुछ नहीं किया था और काफी घबराया हुआ था।

संत लोंगोवाल को सीधे संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, 'संत जी, मुझे लगता है कि आपको ऐसा नहीं करना चाहिए।'

किसी भी बात के लिए हमें धन्यवाद मत दीजिए। दिल्लीवासियों ने जो किया वह इसके अलावा कुछ नहीं था।

हम अपने भाइयों और बहनों के लिए क्या करते। हमने जो किया वही सही है।

जब कोई दूसरा नागरिक खतरे में हो और उसे मदद की जरूरत हो, तो प्रत्येक नागरिक से यही अपेक्षा की जाती है कि वह ऐसा करे।

समर्थन और सुरक्षा। यही वह परंपरा है जो हमने अपनी स्वतंत्रता से सीखी है।

यह एक ऐसा आंदोलन था, जिसमें सभी धर्मों के लोगों ने इस देश की मुक्ति के लिए मिलकर संघर्ष किया।

इसलिए, यह हमारा कर्तव्य था, और हमने ऐसा करने के बारे में नहीं सोचा था ताकि कोई

वे आकर हमें धन्यवाद देते थे मानो हम उनसे अलग हों। यह, हम और

उनका कोई महत्व नहीं है, हम तो सिर्फ अपने लिए काम कर रहे थे।

इसलिए, मैं आपसे विनम्रतापूर्वक निवेदन करता हूँ और आपको याद दिलाता हूँ कि अब जबकि आप

जेल से बाहर आकर और पंजाब के दुखद परिदृश्य के टुकड़ों को समेटते हुए, आप

आप पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। ईश्वर के लिए, सिखों के साथ राजनीति न करें।

आस्था। आजकल जब आप उग्रवादियों के भोग समारोहों में जाते हैं, तो यह

इससे पूरी समस्या को एक खतरनाक सांप्रदायिक रंग मिल जाता है, और फिर यह

हम जैसे लोगों के लिए धर्म और जाति से परे जाकर काम करना मुश्किल हो जाता है। भगवान न करे।

अगर यह आग दोबारा भड़की, तो मैं आपको बता दूं, हम जैसे लोग सबसे पहले शिकार होंगे।

और एक नए नरसंहार के लिए रास्ता साफ हो जाएगा। तो, संतजी, साथ

मैं हाथ जोड़कर आपसे विनती करता हूं कि आप हम सबके लिए अपने मार्ग पर सावधानीपूर्वक चलें।

संतजी ने अपनी आँखें खोलीं और मेरी तरफ देखा, लेकिन एक शब्द भी नहीं बोला, और

बैठक समाप्त हो गई। जाने से पहले, बरनाला ने मुझे समझाने की कोशिश की।

उनके भोग समारोह में शामिल होने का उद्देश्य था, लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा।

मैंने उससे ऐसा इसलिए किया क्योंकि मैं इस मामले में उससे सहमत नहीं था।

हमने विस्थापितों की मदद करने के लिए लगभग तीन महीने तक काम जारी रखा।

हालात सामान्य होने तक दिल्ली के सिखों के साथ रहे। अंततः नागरिक एकता छोड़ने से पहले।

मंच, मुझे एहसास हुआ कि हमारे समूह में ऐसे लोग थे जो अलग-अलग विचार रखते थे।

राजनीतिक विश्वास। जल्द ही ये मतभेद सामने आने लगे, और अक्सर हमारे

चर्चाओं के दौरान मुझे मतभेद स्पष्ट रूप से उभरते हुए दिखाई दिए। एक बात जो मुझे स्वीकार करनी होगी वह यह है कि सभी सदस्यों ने ईमानदारी से काम किया और

राजनीतिक मतभेदों के बावजूद उनमें करुणा झलकती है।

पीछे मुड़कर देखने पर मुझे लगता है कि मैं राजनीतिक रूप से अनुभवहीन था और शुरुआत में ऐसा कर सकता था।

इस बड़े समूह की राजनीतिक रूपरेखा को नहीं देख पा रहे हैं। एक दिन, जब

चर्चा बहुत तनावपूर्ण हो गई थी, मैं इसे और सहन नहीं कर सका। मैंने समूह से कहा,

मुझे नहीं लगता कि जनता हमारे काम के लिए इतनी उदारता से दान देती।

या अगर उन्हें पता होता कि हमारे पास इतने सारे राजनीतिक

हमारे बीच मतभेद थे। हमने सहायता और समर्थन प्रदान करने के लिए अपना तत्काल कार्य किया।

इस मेहनत को राजनीतिक संगठन में बदलना बेईमानी भरा फैसला होगा।'

नागरिक एकता मंच धीरे-धीरे समाप्त हो गया। हमने बहुत सी संपत्ति दान कर दी।

बची हुई वस्तुएं हमने गुजरात में हुए दंगों के पीड़ितों को दीं। इनमें से अधिकांश वस्तुएं

समूह के सदस्य दोस्त बने रहे और कभी-कभार मिलते रहे। कुछ समय बाद, हम

हम सभी अपने-अपने निजी और पेशेवर कामों में व्यस्त हो गए और आगे बढ़ गए।

मेरे लिए, इस अनुभव ने मुझे और जीवन के प्रति मेरे दृष्टिकोण को बदल दिया।

मैंने अपने पूरे जीवन में कभी इस तरह का सांप्रदायिक दंगा नहीं देखा।

सिख दंगों के बाद

1976 में, आपातकाल के दौरान, मैंने एक नाटक पर काम किया, जो बर्टोल्ट की रचना का रूपांतरण था।

ब्रेख्त का कोकेशियाई चाक सर्कल, नवस्थापित पंजाब ड्रामा के साथ

यह देश का पहला राजकीय रिपर्टरी था। हमने इसका मसौदा तैयार किया था।

पंजाब राज्य के लिए महत्वाकांक्षी नाट्य परियोजनाओं का एक लिखित घोषणापत्र।

यह पहल उन अन्य राज्यों के लिए एक आदर्श बन सकती है जो अपनी स्वयं की व्यवस्था स्थापित करने के इच्छुक हैं।

अपनी स्थानीय भाषाओं में नाट्य परियोजनाओं के लिए प्रदर्शनकारी कंपनियां।

एक बार जब यह नाटक प्रदर्शित हो गया, तो इसने अपनी गति पकड़ ली और

यह बेहद सफल रहा। हमने पूरे पंजाब और कई अन्य हिस्सों का दौरा किया।

भारत। इस नाटक का संगीत बहुत प्रभावशाली था, जो हिट हुआ और आज भी लोकप्रिय है।

इसलिए यह पीढ़ियों तक चलता है। संगीत रचना का विकास गहन विचार-विमर्श के बाद किया गया था।

लोक संगीत और अन्य अनुष्ठानिक परंपराओं के अनुसंधान और प्रलेखन में

मैंने पंजाब के आंतरिक इलाकों की शूटिंग की। मैंने अभिनेताओं और अन्य तकनीकी कर्मचारियों के चयन में मदद की।

लोगों। हमें पंजाब के ग्रामीण इलाकों से सर्वश्रेष्ठ और सबसे होनहार युवा प्रतिभाओं को चुनकर मुख्य नाट्य मंडली का गठन करना था। पंजाब राज्य नाटक
रेपर्टरी का पराई कुख (कोकेशियाई चाक सर्कल) का पहला मंचन।
यह पंजाबी रंगमंच के इतिहास में एक मील का पत्थर बन गया। हजारों लोग
मैंने इस युवा समूह के प्रदर्शन देखे और लोगों को नाटक बहुत पसंद आया।
हमें विभिन्न संगठनों से नियमित रूप से निमंत्रण प्राप्त होते रहे, जिनमें हमें आमंत्रित किया जाता था।
प्रदर्शन करना। मुझे याद है कि कोलकाता में मैंने एक मैदान में प्रदर्शन किया था।
बैसाखी के अवसर पर कोलकाता की पूरी पंजाबी आबादी उपस्थित थी। विशाल मैदान था, और प्रदर्शन बहुत बड़ी सफलता थी।
लेकिन यह इंदिरा गांधी के आपातकाल का भी दौर था। युवा होने के नाते और
मैंने अभी-अभी अपना करियर शुरू किया था, इसलिए मुझे अंदरूनी बातों या उनके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी।
राजनीतिक साजिशें चल रही थीं। मैं सफलता में इतना डूबा हुआ था कि...
मेरे पराई कुख प्रोडक्शन के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं थी और मुझे उन चीजों के बारे में कोई अंदाजा नहीं था जो
राजनीतिक तौर पर पर्दे के पीछे क्या हो रहा है?
दुर्भाग्यवश, खचाखच भरे दर्शकों के सामने छब्बीस प्रदर्शनों के बाद,
पंजाब सरकार ने नाटक पर प्रतिबंध लगा दिया, जबकि इसका निर्माण स्वयं सरकार ने ही किया था।

मुझे 'पर्सोना नॉन ग्राटा' घोषित कर दिया गया था। मुझे इसका मतलब नहीं पता था, लेकिन मैं
मुझे यह जानने की बहुत उत्सुकता थी और मैं सरकार के साथ इस मामले पर बहस करना चाहता था।
पंजाब। मेरे कुछ सलाहकारों ने मुझे समझाया कि चूंकि उस समय आपातकाल था, इसलिए स्थिति ऐसी थी।
भारत में, और चूंकि लोगों के पास कोई मौलिक अधिकार नहीं थे, इसलिए इससे कोई लाभ नहीं होता।
मेरे लिए ऐसा करना अच्छा था। मुझे अभी भी यह सब समझ नहीं आया था, इसलिए मैंने बस पकड़ ली।
उसी रात चंडीगढ़ पहुंचे और पंजाब के प्रधान सचिव से मुलाकात की।
मैंने सुबह उनके कार्यालय में सरकारी अधिकारी से मुलाकात की।
मैंने उनके सामने अपना विरोध जताया।
मैंने उसे यह भी बताया कि दिल्ली में एक चुटकुला चल रहा है कि पंजाब सरकार ने जर्मन नाटककार के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया था।
बर्टोल्ट ब्रेख्त। अधिकारी मुस्कुराया लेकिन ज्यादा कुछ नहीं बोला। फिर उसने मुझसे पूछा,
आप चंडीगढ़ कब पहुंचे?
मैंने जवाब दिया, 'आज सुबह।'
उसने आगे पूछा, ‘क्या तुम कहीं और गए थे, या मेरे अलावा किसी और जगह गए थे?’
कार्यालय?'
मैंने जवाब दिया, 'नहीं, मैंने ऐसा नहीं किया।'
फिर उन्होंने सीधे मेरी तरफ देखा और कहा, 'जानते हो, तुम मेरे बेटे जैसे हो।'

और मैं आपको सलाह देना चाहूंगा कि आप पंजाब में कहीं न जाएं, अन्यथा मुझे
आपको गिरफ्तार करने के लिए। दिल्ली वापस जाने के लिए बस लें। आप अवांछित व्यक्ति हैं, जो
इसका मतलब है कि मुझे तुम्हें गिरफ्तार करने का आदेश मिला है।' मैं चुप रहा जबकि वह बोलता रहा, 'मैंने तुम्हारा नाटक देखा है और मुझे बहुत अच्छा लगा।'
यह एक महत्वपूर्ण नाट्य प्रस्तुति है। लेकिन दुर्भाग्य से, आपका अपना भला-
थिएटर के कुछ जाने-माने दोस्तों ने ईर्ष्या और नीचता के कारण शिकायत की है।
अपने नाटक के बारे में मुख्यमंत्री को बताएं।'
उन्होंने अपने ऑफिस की मेज का एक दराज खोला और मुझे हस्तलिखित दिखाया
नाटक की पटकथा में गंदी भाषा और अपशब्दों का भरमार था। मैं इसे सहन नहीं कर सका।
मेरी आंखों पर विश्वास करो। मैंने कहा, 'लेकिन नाटक में ऐसे कोई शब्द नहीं हैं।'
उन्होंने जवाब दिया, 'मुझे पता है, दरअसल मैंने आपके संस्कृति मामलों के निदेशक को इसे फेंकने के लिए कहा था।'
इन कुत्तों को कुछ बिस्कुट खिला दो, इससे पहले कि वे इस प्रोजेक्ट को नुकसान पहुंचाएं। आज तो मेरे भी।
मुख्यमंत्री को मुझ पर भरोसा नहीं है। इसलिए, बेटे, मेरी सलाह तुम्हें यही है कि तुम चुपचाप रहो।
किसी को पता चले बिना दिल्ली के लिए रवाना हो जाओ।
मैं दंग रह गया। मैंने उनसे पूछा, 'क्या आप मुझे बता सकते हैं कि ये लोग कौन हैं?'

उन्होंने कहा, ‘आप उन्हें जानते हैं। उनमें से कुछ आपके वरिष्ठ हैं, और कुछ अन्य भी।’
वे थिएटर जगत की जानी-मानी हस्तियाँ हैं। आप बहुत युवा हैं, और आप ऐसा नहीं करते।
पंजाब में रंगमंच की सांस्कृतिक राजनीति को समझें। सावधान रहें और ऐसा न करें।
चंडीगढ़ में इधर-उधर घूमो।
इससे मुझे एहसास हुआ कि आपातकाल की स्थिति ने लोगों को भी रोक दिया था।
मेरी तरह, जिन्होंने अभी-अभी अपना करियर शुरू किया है। नाटक पर प्रतिबंध लगने से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला।
कई लोगों और मेरे मार्गदर्शकों और शिक्षकों से सहानुभूति मिली। अल्काज़ी,
नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के निदेशक बहुत ही समझदार थे। हम मिले।
मैंने उन्हें उनके कार्यालय में बुलाया और सब कुछ समझाया।
उन्होंने खुद ही गाड़ी चलाने की पेशकश भी की।
मैंने श्रीमती गांधी के सामने अपना मामला रखा और कहा कि वह उनसे सभी चीज़ें हटाने के लिए कहेंगे।
खेल पर और मुझ पर प्रतिबंध। ऐसा कभी नहीं हुआ क्योंकि... आपातकाल की स्थिति और भी सख्त और गंभीर हो गई।
कई वर्षों बाद, नई दिल्ली में इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के लॉन में
दिल्ली में किसी ने मुझे मेरे नाम से पुकारा और कहा, 'अरे रैना साहब, क्या आपको मैं याद नहीं हूं?'
मैंने उत्तर दिया, 'बेशक, महोदय, मुझे आप याद हैं।'
उन्होंने कहा, 'नहीं, आपको इसकी ज़रूरत नहीं है। याद है कई दशक पहले, आप मुझसे मिले थे।'

जब आप चंडीगढ़ में पंजाब सरकार के सचिवालय में मेरे कार्यालय में हों
उन्होंने एक नाटक किया था जिस पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। मैंने कहा, 'हां, मुझे वह बैठक याद है।'
वह हँसा और बोला, 'वही अधिकारी जिसने तुम्हें पंजाब से निकलने की सलाह दी थी।'
तुम्हारे गिरफ्तार होने से पहले मैं ही वह व्यक्ति था।'
मैंने हैरानी से कहा, 'नहीं! क्या आप ही थे, महोदय?' वह हंसते हुए चले गए।
एन.एन. वोहरा एक उत्कृष्ट नौकरशाह और इंसान थे। उन्होंने हाल ही में पद छोड़ दिया था।
जम्मू और कश्मीर के राज्यपाल के रूप में उनका पद। उस राज्य के राज्यपाल के रूप में, उन्होंने
वह बहुत लोकप्रिय हो गया था और लोगों से बहुत सम्मान अर्जित कर चुका था।
राज्य।
लगभग एक साल बाद, एक दिन फिल्म निर्माता सईद मिर्जा दिल्ली आए।
और उन्होंने घोषणा की कि वे ब्लू स्टार के बाद के पंजाब पर एक वृत्तचित्र बना रहे हैं।
और मुझे समर्थन की आवश्यकता थी। पंजाब और यहाँ के लोगों के साथ अपने प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर।
और उस संस्कृति से मेरी परिचितता के कारण, मैं स्वयंसेवक के रूप में उनकी इकाई में शामिल हो गया।
मदन गोपाल सिंह। फिल्मिंग यूनिट में लगभग दस लोग शामिल थे। कैमरामैन, साउंड रिकॉर्डिस्ट और अन्य तकनीशियनों सहित। सुरेश जिंदल,

who had produced films like Basu Bhattacharya’s Rajnigandha and Satyajit

Ray’s Shatranj Ke Khiladi, was the producer of this film.

जून 1985 में, हम दस सदस्यीय फिल्म टीम के रूप में अंदर की यात्रा पर निकल पड़े।

किराए की बस में पंजाब की यात्रा। यह एक सीमित बजट वाली परियोजना थी, जिसका मतलब था कि हमें किराए की बस में यात्रा करनी थी।

हमने गुरुद्वारों के पास ही भोजन करने का समय निकाला, जहाँ हम भोजन कर सकते थे।

हमने अपना दोपहर का भोजन किया। चाय के लिए हम कुछ सड़क किनारे की दुकानों पर रुकते थे।

शूटिंग के दौरान हमने कई रातें गुरुद्वारों में या फिर सड़क किनारे भी बिताईं।

एकमात्र राहत और विलासिता की बात यह थी कि हमारे पास एक वातानुकूलित बस थी जिसमें हम थे।

जून के बेहद गर्म महीने में आराम कर पाए। हमने पूरे पंजाब में गाड़ी चलाई।

गांव-गांव घूमकर, लोगों से तरह-तरह के विषयों पर बात करते हुए,

कृषि से लेकर आतंकवाद तक। एक समय ऐसा भी आया जब यूनिट ने मुझे साक्षात्कारकर्ता बनाने का फैसला किया। शाम को मदन, सुरेश, सईद और मैं बहुत बातचीत करते थे।

पंजाब में आतंकवाद को लेकर गरमागरम बहसें हुईं, जिनका अंत बिल्कुल अलग-अलग रुख के साथ हुआ।

और भिंडरांवाले की पूजा। कभी-कभी ये चर्चाएँ विकृत रूप ले लेती थीं।

जिसके चलते हमारे बीच तीखी बहस हुई, लेकिन अगली सुबह, अच्छे माहौल में सब कुछ ठीक हो गया।

पेशेवरों के लिए, सब कुछ सामान्य हो जाएगा।

फिल्म यूनिट का पहला पड़ाव पटियाला था। हमें छात्रों के साथ शूटिंग करनी थी।
वे शाम को अपने छात्रावास के भोजन कक्ष में थे। वहाँ हिंदू और सिख छात्र थे।
लगभग अस्सी लोग हमारा इंतजार कर रहे थे, आपस में मजाक कर रहे थे। हमने अपने कैमरे लगा दिए। कैमरे लगाने के बाद, वहाँ एक
अचानक सन्नाटा छा गया। सईद मिर्ज़ा ने आसपास की सामान्य चर्चा शुरू की।
ऑपरेशन ब्लू स्टार के बाद पंजाब की मौजूदा स्थिति के बारे में उन्होंने एक और सवाल उठाया।
इंदिरा गांधी की हत्या के बारे में छात्रों की राय जानने के लिए प्रश्न पूछें।
गांधी जी और दिल्ली में हुए सिख विरोधी दंगे।
फिर से एक लंबा सन्नाटा छा गया, जो पहले वाले से भी लंबा था।
कोई महसूस कर सकता था
सिख छात्रों में तनाव और गुस्सा फैल गया। तभी एक सिख छात्र खड़ा हो गया।
और उन्होंने इस बारे में बात करना शुरू कर दिया कि दिल्ली और अन्य जगहों पर सिखों को किस प्रकार बेरहमी से मारा गया।
उन स्थानों के बारे में, और किस प्रकार सिखों के साथ बहुत लंबे समय से अन्याय होता आ रहा था।
उस समय। उन्होंने उनकी समस्याओं के लिए कांग्रेस पार्टी को दोषी ठहराया। उस समय, कई सिख
लड़के उस लड़के की बात का समर्थन करने लगे, और धीरे-धीरे उनका समर्थन बढ़ता गया।
सभी प्रतिक्रियाएं हम पर केंद्रित हो गईं, हम हिंदू फिल्म निर्माताओं की एक टीम थे जो उनके जले पर नमक छिड़क रहे थे।
घाव।

उसी समय हिंदू छात्रों ने प्रतिक्रिया देना शुरू कर दिया।
उन्होंने शिकायत की।
इंदिरा गांधी की हत्या से पहले सिख लड़कों का उनके प्रति क्या रवैया था, इस बारे में।
उन्होंने उकसावे और उन पर किए गए ताने-बाने पर नाराजगी व्यक्त की।
सिख लड़के हर दिन यही दोहराते थे, 'आज का स्कोर क्या है?' उन्होंने चालाकी से पंजाब में प्रतिदिन मारे जाने वाले हिंदुओं की संख्या का जिक्र किया।
जब दिल्ली से सिख विरोधी दंगों की खबर आई, तो स्थिति पूरी तरह पलट गई।
सिख छात्रों से भी वही सवाल दोहराया गया। 'क्या नतीजा निकला?' आज?’ उन्हें स्कोर के इस खेल पर चर्चा करते देखना अजीब था।
वे न तो एक-दूसरे से नाराज़ थे और न ही एक-दूसरे पर आरोप लगा रहे थे। इस समय वे बड़े ही हास्यपूर्ण ढंग से बात कर रहे थे; यह अजीब और असामान्य लग रहा था।
इससे टीम घबरा गई।
जैसे-जैसे ये युवा अपने विचार व्यक्त करते रहे, बैठक में तनाव बढ़ता गया।
बेबसी। मैंने सोचा कि मुझे हस्तक्षेप करके उन्हें कुछ बातें बतानी चाहिए।
इससे शायद उनकी निराशा दूर करने में मदद मिल सकती है। मैंने इन छात्रों को संबोधित किया।
और कहा, ‘यह सच नहीं है कि दिल्ली के नागरिकों ने सिखों की मदद या बचाव नहीं किया।
दरअसल, दिल्ली के हिंदुओं से भारी मात्रा में स्वयंसेवी सहायता मिली, वो भी नकद के रूप में।
और दयालु। वहाँ बड़ी संख्या में स्वयंसेवी समूह और संगठन थे।

जिसने मृत्यु के नृत्य के दौरान लोगों को बचाने के लिए अथक प्रयास किया।
दिल्ली में।
उसी समय एक सिख छात्र ने उठकर मुझे गले लगाया और मेरे हाथों को चूमा। मैं
आश्चर्यचकित होकर उन्होंने कहा, 'मैंने इस संगठन का नाम और उनके बारे में सुना है।'
काम।' उन्होंने खुलासा किया कि दिल्ली दंगों में वह अपने माता- पिता के साथ फंस गए थे।
उस अनुभव ने उसे पूरी तरह बदल दिया था। उसने कहा, 'मैं एक कट बन गया।
'सुर्द।' उसने अपनी पगड़ी खोली और अपने छोटे बाल दिखाते हुए कहा, उस अनुभव के बाद, मैंने अपने बाल काटना बंद कर दिया, और अब ईश्वर की कृपा से
वाहे गुरु, यह फिर से उग रहा है। मैं अपने सिख होने की पहचान को अपने जीवन में स्थापित करना चाहता हूँ।
अपना देश।
अब भोजन कक्ष में एक अजीब सी खामोशी और शांति छा गई थी। यह बिल्कुल शांत था।
देर रात, चुपचाप, हमने अपने कैमरे पैक किए, और लड़कों ने शुरू किया
वे अपने हॉस्टल के कमरों में वापस जाने लगे। जब मैं कमरे से बाहर निकलने ही वाला था, तभी यह
एक सिख लड़का मेरे पास आया और बोला, 'सर, मैं आपको गले लगाना चाहता हूँ।'
और मैं आप लोगों के प्रयासों के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं।’ उनके शब्दों से मैं भावुक हो गया।

मुझे ऐसा लगा जैसे इस छोटे लड़के से मुझे अपने जीवन का सबसे बड़ा उपहार मिला हो, और मैं
मैंने उसे बहुत कसकर गले लगाया। हम दोनों साथ-साथ चले गए।
अगली सुबह, सईद कुछ कट्टर लोगों का साक्षात्कार लेना चाहता था।
खालिस्तानी। लेकिन उन्हें ढूंढना मुश्किल था। मदन गोपाल सिंह ने अपने माध्यम से
परिवार के संपर्कों ने इस मुश्किल दौर में हमारी बहुत मदद की। हमें मार्गदर्शन मिला।
किसी ऐसे संपर्क से मिलना जो हमें किसी खास स्थान तक मार्गदर्शन कर सके, और यदि
खालिस्तानी ने बात करने पर सहमति जताई, जिससे संभवतः हमें साक्षात्कार मिल सकता है।
तो, निर्धारित समय पर हम उस स्थान पर, एक मोहल्ले में, पहुँच गए।
हम बेहद संकरी गलियों से होते हुए आगे बढ़ रहे थे। वहाँ एक सरदार हमारा इंतज़ार कर रहा था।
वह हमें अपने स्कूटर पर ले गया, और कई संकरे रास्तों से गुजरने के बाद।
टेढ़ी-मेढ़ी गलियों से गुज़रते हुए, हम पुराने शहर में एक साधारण ईंट के घर पर पहुँचे।
पटियाला। यहाँ हमें पचास मिनट और इंतजार करना पड़ा, और फिर भी हमें कोई जगह नहीं मिली।
हमें यकीन नहीं था कि जिस व्यक्ति का हमें साक्षात्कार लेना था वह आएगा या नहीं।
प्रतीक्षा करते-करते हमें पता चला कि यह व्यक्ति शहर में स्वतंत्र रूप से घूम नहीं सकता था क्योंकि वह
पुलिस को उसकी तलाश थी।

लंबे इंतजार के बाद, नारंगी पगड़ी पहने एक युवक सिख घोड़े पर सवार होकर आया।

स्कूटर पर पीछे बैठा एक व्यक्ति। वह जल्दी में था और तनाव में था, और हमसे मिलते ही,

उन्होंने तुरंत हमें आदेश देना शुरू कर दिया। हमने अपना कैमरा पहले ही ठीक कर लिया था।

इसलिए वह उसके सामने बैठ गया। अचानक वह बहुत परेशान हो गया और चिल्लाया, 'मैं नहीं हूँ।'

कैमरे की ओर मुंह करके। मैं लोगों को अपना चेहरा नहीं दिखाऊंगा। मैं केवल दिखाऊंगा

मेरी पीठ कैमरे की ओर थी।' अंततः, मैं ही, उनके साक्षात्कारकर्ता के रूप में, कैमरे के सामने आया।

कैमरा।

जैसे ही मैंने सवाल पूछना शुरू किया, उन्होंने किसी भी तरह के जवाब देने से साफ इनकार कर दिया।

प्रश्न-उत्तर वार्तालाप या कोई भी चर्चा। उसने मुझे अभद्र तरीके से चेतावनी दी।

अरे, मेरी बात सुनो। जब मैं बोल रहा हूँ तो बीच में मत बोलो। तुम हिंदू, तुम

'मेरी बात बेहतर ढंग से सुनो।' उसकी शत्रुता से घबराकर मैं चुप रहा, और सईद

मुझे आगे बढ़ने का इशारा किया गया। लगभग एक घंटे तक मैं चुपचाप बैठा रहा।

जब उनका एकालाप जारी था, तब कैमरा लगा हुआ था। यह पागलपन और विचित्र था। मुझे समझ नहीं आया।

मुझे पता नहीं था कि उसे कैसे जवाब देना है, इसलिए मैंने नहीं दिया, उसने जो कुछ भी कहा, लेकिन मैंने यह भी किया

जब तक उसने अपना एकल प्रदर्शन बंद नहीं किया, तब तक उसे कोई परवाह नहीं थी।

उन्होंने अपने एकालाप में जिन बातों का जिक्र किया, वे तो हम पहले से ही जानते थे।

भिंडरांवाले और उनकी विचारधारा। वे आर्य समाज के लोगों से नाराज थे।

वह उन्हें गद्दार कहता था। इतिहास के प्रति उसकी समझ जटिल थी। कोई

उनके एकालाप में कालानुक्रम या निरंतरता। मज़ेदार बात यह थी कि हमारा

कैमरामैन टेप बदलने के लिए भी अपना कैमरा बंद नहीं कर सका, इसलिए...

कैमरा रिकॉर्डिंग मोड में तब भी रहता था जब वह रिकॉर्डिंग नहीं कर रहा होता था।

हमारे आसपास का माहौल इतना तनावपूर्ण था कि हमारे कैमरामैन ने चुपचाप कैमरा बंद कर दिया, जब तक कि वह आदमी बोलना बंद नहीं कर देता।

अंततः यह एक हास्यपूर्ण अंतराल बन गया जो मुख्य घटनाओं के बीच घटित होता है।

एक नाट्य प्रस्तुति के दृश्य।

अपना एकल प्रदर्शन समाप्त करने के बाद, वह व्यक्ति तुरंत चला गया। हम सभी

हमने एक-दूसरे को देखा। हमें समझ नहीं आ रहा था कि हँसें या रोएँ।

उसने अपने तथाकथित साक्षात्कार की पूरी टेप रिकॉर्ड कर ली थी, हालांकि वीडियो पहले ही मौजूद था।

बंद कर दिया गया—यह संकट और मांगों के बारे में उनकी व्याख्या थी।

उनकी प्रस्तुति खालिस्तानियों के प्रति घृणा और तिरस्कार से भरी हुई थी।

भारत की स्थिति के बारे में तो जानकारी नहीं मिली, लेकिन हां, इससे सोचने के तरीके की एक झलक और कुछ अंदाजा जरूर मिल गया।
उनके एकालाप से खालिस्तानियों के बारे में।
अगले दिन, हमारी बस रोडे के लिए रवाना हुई, रास्ते में भिंडरांवाले गाँव आया।
हम उनके परिवार से मिलना चाहते थे और खुद देखना चाहते थे कि वे किस तरह के हैं।
उनकी परवरिश कैसी रही होगी। वे एक ऐसे व्यक्ति थे जो एक आदर्श बन गए थे।
दुनिया भर के सिखों के लिए, एक ऐसा साहसी व्यक्ति जिसने सशस्त्र युद्ध छेड़ा।
भारत राज्य, और जिनके नौजवानों ने अपने विरोधियों को मार डाला दंडमुक्ति। उनके द्वारा शुरू किया गया आंदोलन एक भयावह स्थिति में परिणत हुआ।
हिंसा, हत्या, लापता होने और त्रासदियों का परिदृश्य।
रोडे की ओर बढ़ते हुए, हम मिट्टी के बने कई गांवों से होकर गुजरे।
ये घर पंजाब के उन अन्य गांवों से बिल्कुल अलग थे जहाँ हम गए थे।
देखा गया, जहाँ उनकी समृद्धि प्रदर्शित थी। यहाँ किसानों के पास
उन्होंने अपनी फसलें काट लीं। सुबह जब हम बस में चढ़े, तो मैंने एक बात नोटिस की।
गाड़ी पर कोई दूसरा ड्राइवर था। मैंने किसी से पूछा, 'हमारा ड्राइवर कहाँ है, वो वाला?'
दिल्ली से हमारे साथ कौन था? हमने दूसरे ड्राइवर का इंतजाम कैसे किया?
रात भर में?’ वह हैरान होकर हँसा, ‘क्या? ड्राइवर तो वही है।’

बस फर्क इतना है कि आज उसने पगड़ी पहनी हुई है।’ मैंने पलटकर कहा, ‘लेकिन वह सिख नहीं था।’

फिर वह हँसा और बोला, 'वह एक घटिया सर्ड है, और अब से यही होगा।'

सिख होना अधिक सुरक्षित है और यही कारण है कि उन्होंने अपनी पगड़ी पहनी है।

इससे पंजाब के अंदरूनी इलाकों में गाड़ी चलाना उसके लिए आसान हो जाएगा।'

हम रोडे पहुंचे, जो चारों ओर से मिट्टी के घरों से घिरा एक छोटा सा गांव था।

धान के खेतों से घिरे, जो ग्रामीण पंजाब की खासियत है। जब हम भिंडरांवाले परिवार के घर पहुँचे, तो एक बड़े समूह ने हमारा स्वागत किया—उनके चाचा, उनके

माँ और उसका भाई, जो बिल्कुल उसी की तरह दिखता था। उन्होंने हमें ठंडा खाना परोसा।

पहले पानी, फिर चाय। इस पूरे समय मैंने भिंडरांवाले की माँ को देखा, जो

वह किसी भी पंजाबी माँ की तरह बहुत मेहमाननवाज, दयालु और स्नेहशील थीं। मैंने नहीं देखा

उसके चेहरे पर क्रोध या तनाव का कोई निशान नहीं था। वह अपनी सामान्य दिनचर्या में व्यस्त थी।

घर के कामों के साथ-साथ हम मेहमानों पर भी नजर रखते हुए यह सुनिश्चित करते थे कि हम ठीक हैं।

ठीक से देखभाल की गई। मैं उनके एक चाचा, उनके दादा, एक किसान से मिला, जो

वह अपनी फसल काटकर लौटा था। उसके शरीर पर एक भूसी चिपकी हुई थी।

शरीर। नेरुदा के शब्दों में, वह 'पृथ्वी' जैसा दिखता था। वह उससे कहीं अधिक था।

वह परिवार के अन्य सदस्यों की तुलना में अधिक बातूनी था। उसने मुझे बताया कि उसके पास

एफए तक की पढ़ाई की (जो कक्षा दस के बाद दो साल तक की जाती है, जिसे इंटरमीडिएट भी कहा जाता है)।

(पुरानी शिक्षा प्रणाली में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने से पहले) 1948 में, लेकिन

जब उसे नौकरी नहीं मिली, तो उसने अपनी जमीन पर काम करने का फैसला किया।

भिंडरांवाले के सगे भाई, जिनसे मैं साक्षात्कार करना चाहता था, ने मना कर दिया।

विनम्रतापूर्वक यह कहते हुए, 'मैं एक स्कूल शिक्षक हूं और ये सभी राजनीतिक मुद्दे हैं।'

जिसके बारे में आपको मेरे बाबा जी (उनके पिता, सरदार जोगिंदर) से बात करनी चाहिए।

सिंह), जो अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में हैं।’ उन्होंने मुझे एक छोटा सा दिखाया

उनके पारिवारिक परिसर में स्थित मिट्टी की झोपड़ी, जो उनके भाई की थी,

भिंडरांवाले। झोपड़ी में ताला लगा हुआ था और उसे खोला नहीं जा सका। जब हम

बातचीत के दौरान, गर्मी की धूल भरी आंधी चली और देखते ही देखते हम चारों ओर से घिर गए।

धूल के एक विशाल बादल के कारण। हमें अपना कैमरा और अन्य उपकरण छिपाना पड़ा।

बस। सईद के निर्देशों के अलावा हम यहां कुछ भी शूट नहीं कर सकते थे।

हमारे कैमरामैन ने गांव, खेतों, लोगों और आसपास के कई दृश्यों की तस्वीरें लीं।

धूल भरी आंधी। जब हम जा रहे थे, तो एक रिश्तेदार ने इस धूल भरी आंधी को इसका कारण बताया।

संतजी की घटना को लेकर तूफान खड़ा हो गया, जो कि भिंडरांवाले हैं। किसी ने भी इसका इस्तेमाल नहीं किया।

जब वे उसके बारे में बात करते थे तो भूतकाल का प्रयोग करते थे।
कभी भी 'वह था' नहीं कहते थे, बल्कि हमेशा भूतकाल का प्रयोग करते थे।

‘वह है’, जिसका अर्थ है कि वह उनके लिए अभी भी जीवित था। और उन्हें विश्वास था कि वह जीवित रहेगा।

हमेशा जीवित रहो।

नाम के इर्द-गिर्द एक मिथक गढ़ने का जानबूझकर प्रयास किया गया था।

भिंडरांवाले एक ऐसे व्यक्ति थे जिनकी मृत्यु कभी नहीं होती थी।
लोग उन्हें हमेशा 'संतजी जेड सूर्य' कहकर पुकारते थे।

धूल भरी आंधी थमने के बाद, हमने भिंडरांवाले परिवार को विदाई दी।

वे अपने एक बेटे द्वारा हत्या किए जाने के बाद भी एक साधारण ग्रामीण जीवन जी रहे थे।

आतंकवाद पर अंतरराष्ट्रीय बहस का हिस्सा बनकर इतिहास रचें।

6

Amritsar

हमारा अगला गंतव्य अमृतसर था, जो सिख धर्म का केंद्र है और

सिख राजनीति। यहाँ हमारा मुख्य काम ऑडियो टेपों का एक सेट प्राप्त करना था।

भिंडरांवाले के भाषण। इन भाषणों के प्रसार पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।

लेकिन उन्हें गुप्त रूप से कैसेट में रिकॉर्ड करके बेचा गया था। एक और महत्वपूर्ण काम था...

अपने पिता सरदार जोगिंदर सिंह से मिलने के लिए, जो स्वर्ण मंदिर में ठहरे हुए थे।

परिसर में रहने के बाद वे सिख राजनीति के प्रमुख किरदारों में से एक के रूप में उभरे।

ब्लू स्टार। एक तरह से, अपने बयानों से उन्होंने चुनौती स्वीकार कर ली थी।

अपने बेटे की विरासत को आगे बढ़ाते हुए। मीडिया में उन्हें प्रमुख व्यक्तियों में से एक के रूप में प्रचारित किया गया था।

सिख नेतृत्व के बीच उनकी छवि में काफी बदलाव आया। उनकी तस्वीरें सभी मीडिया में छपीं।

उन्होंने एक मजबूत, बुद्धिमान और दुर्जेय व्यक्ति होने की छाप छोड़ी।
सिख राजनीति के भिंडरांवाले गुट के नेता।
स्वर्ण मंदिर में, हमें सरदार जोगिंदर सिंह एक मूर्ति के साथ मिले।
कमरे। विभिन्न स्थानों से आए हर तरह के मीडियाकर्मी अलग-अलग विषयों पर बोल रहे हैं।
उनसे बात करने के लिए कई भाषाएँ उपलब्ध थीं। वे सिख धर्म के उभरते सितारे थे।
राजनीति। हमारे एक स्थानीय संपर्क ने उनसे हमारी मुलाकात तय की थी, लेकिन हम
जून की भीषण गर्मी में मुझे घंटों उसके कमरे के बाहर इंतजार करना पड़ा।
किसी तरह हमारे कैमरे को अंदर लाने से पहले ही वे चुपके से अंदर घुसने में कामयाब हो गए।
वहां कई पत्रकार मौजूद थे, जो उनसे तरह-तरह के सवाल पूछ रहे थे। सिंह पंजाबी में पूछे गए सवालों का सीधा जवाब दे रहे थे, लेकिन जिन पत्रकारों को केवल हिंदी या अंग्रेजी आती थी, उन्हें अपने प्रश्न पूछने थे।
सरदारजी खन्ना को, जो जोगिंदर सिंह के कनिष्ठ प्रतीत होते थे और अंग्रेजी में निपुण।
मैंने पत्रकार अजय बोस को देखा था, जो अब एक बहुत वरिष्ठ मीडियाकर्मी हैं, तब
जब वह सिंह का साक्षात्कार ले रहे थे, तब वह संडे या इंडिया टुडे का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। उन्होंने उन्हें निकाल दिया। खन्ना में उनसे अंग्रेजी में एक के बाद एक कई सवाल पूछे गए, जिनका बाद में सरदार जोगिंदर सिंह के लिए पंजाबी में अनुवाद किया गया। सिंह इन सवालों का जवाब दे रहे थे।

खन्ना पंजाबी में लिखते थे, जिसे खन्ना बाद में अंग्रेजी में अनुवाद करते थे।
अजय बोस। यह बातचीत बेहद मजेदार थी और एक समय तो मुझे भी हंसी आ गई।
अजय ने मेरी तरफ देखकर पूछा, 'तुम क्यों हंस रहे हो?' मैंने कहा, 'यह मजेदार है।'
आपने अंग्रेजी में जो पूछा था, उसे श्रीमान ने पंजाबी में तोड़- मरोड़ कर पेश कर दिया।
खन्ना और जोगिंदर सिंह द्वारा दिए गए जवाबों में और भी बदलाव तब आते हैं जब
खन्ना आपको अंग्रेजी में जवाब देते हैं। यह सब बेतुका है क्योंकि न तो आपका
जोगिंदर सिंह तक सवाल नहीं पहुंच रहे हैं, और न ही उनके जवाब सटीक हैं।
आप तक पहुँच रहा है। यह खन्ना का आपके साथ प्रश्न-उत्तर सत्र है, न कि
जोगिंदर सिंह के साथ आपका।’ मुझे नहीं पता अजय ने उसका क्या किया।
साक्षात्कार।
अंततः, जब हमारा कैमरा बाकी यूनिट के साथ कमरे में पहुंचा, तो कॉमेडी जारी रही। जैसे ही जोगिंदर सिंह ने तिपाई और कैमरा देखा, वह उत्साहित हो गया और, किसी भी अन्य अभिनेता की तरह, अपने निशान साहब को व्यवस्थित करने लगा।
उसकी नीली कमरबंद पर लगे बैज, जिस पर उसका कृपाण रखा था, और उसके कंधे को सीधा किया हुआ था।
मेरा हावभाव ऐसा था मानो मैं किसी फिल्म की शूटिंग के लिए तैयार हो रहा हूँ। मेरे पास एक कैसेट टेप रिकॉर्डर था।

हमारे संवाद को रिकॉर्ड करने के लिए कैमरा मेरे साथ था। जैसे ही कैमरा फोकस हुआ,
मैंने उनसे अपना पहला सवाल पूछा, 'तो आप इसे कहाँ ले जाने वाले हैं?'
'भिंडरांवाले की क्या हरकत है?' मैंने यह सवाल अपनी टूटी-फूटी पंजाबी में पूछा।
सौभाग्य से, खन्ना मेरे लिए मध्यस्थ नहीं थे जिनके माध्यम से मैंने उनसे अपना प्रश्न पूछा।
सरदार जोगिंदर सिंह ने काफी देर तक विराम लिया, और गहन चिंतन के बाद उन्होंने
उन्होंने पंजाबी में उत्तर दिया, ‘जे सदा क़ौम हैगा [ये मेरे लोग ही होंगे]।’
फिर वह अचानक एक पल के लिए रुका और मुझसे पूछा, 'क्या आप इस बात से सहमत हैं कि
क्या सिख एक जनजाति हैं?
मैंने जवाब दिया, 'आप जो कहना चाहते हैं कहिए, मुझसे सवाल मत पूछिए।'
He insisted, ‘Tu manda hai ki nai manda, asi alag qaum hai?’ मैंने फिर से जोर देकर कहा कि मेरे जवाब से कोई फर्क नहीं पड़ता और उसे ही कहना चाहिए।
चाहे उसे कुछ भी कहना हो, वह अपने हठधर्मी रवैये से पीछे नहीं हटेगा।
अपने प्रश्न का उत्तर पाने पर जोर देना।
उसने फिर वही सवाल पूछा, इस बार बच्चे की तरह जिद करते हुए।
‘Manda hai ki nai. Bol, manda hai ki nai [Do you agree? Tell me, do you
सहमत होना]?'

मैंने कहा, 'इससे क्या फर्क पड़ता है?'
He repeated, ‘Manda hai ki nai manda, bol, bol [Do you agree or not,
बताओ, बताओ!’
उसकी बचकानी जिद पर मुझे हंसी आ गई और हल्के-फुल्के अंदाज में मैंने कहा, 'नहीं,'
दाजी, नई मंदा [नहीं दाजी, मैं सहमत नहीं हूं]।'
और बस, बात यहीं खत्म हो गई। उसने तुरंत मेरा कैसेट रिकॉर्डर बंद कर दिया और
उन्होंने कहा, ‘त मैं इंटरव्यू नहीं देना चाहता [तो, मैं नहीं देना चाहता]
साक्षात्कार]।'
भिंडरांवाले के पिता के साथ मेरा साक्षात्कार यहीं समाप्त हुआ। एक बड़ा
वहां मौजूद लोगों की संख्या हमारी बातचीत सुनकर हंसी नहीं रोक पा रही थी।
वह कुछ देर तक उदास रहा और किसी से बात नहीं करना चाहता था। इस पूरे घटनाक्रम ने उसे परेशान कर दिया।
यह एक छोटे से हास्य दृश्य की तरह समाप्त हुआ, और सभी लोग आनंद ले रहे थे।
इस बूढ़े आदमी के बचकानेपन का आनंद ले रहा था। अजीब बात यह थी कि वह परेशान नहीं था या
मुझे गुस्सा भी आया लेकिन हमारी बातचीत खत्म करने में मुझे परोक्ष रूप से आनंद मिला।
वह उसके साथ खूब मजे कर रहा था और आनंद ले रहा था, जैसे कोई अपने ही किसी के साथ करता है।
दादाजी या कोई बुजुर्ग व्यक्ति, और वह मुझे ठीक करने की अपनी कोशिशों का आनंद ले रहा था।

अपनी ग्रामीण हास्य-वृत्ति के साथ।
सरदार जोगिंदर सिंह के बारे में मेरी धारणा एक बुजुर्ग, दयालु व्यक्ति की थी।
एक गांव में रहने वाला 'ताऊ' जो गंभीरता से लिया जाना चाहता था।
बहुत ही मासूम और
ईमानदार आदमी, पूरी तरह से ग्रामीण, उसे ज्यादा समझ नहीं थी।
समकालीन राजनीति की जटिलताएं।

Preet Nagar

इसके बाद हमें प्रीत नगर जाना था, जो यहाँ से लगभग पैंतीस किलोमीटर दूर है।
अमृतसर। प्रीत नगर रक्षा पंक्ति की दूसरी सीमा के पार स्थित एक जगह है, बहुत दूर।
वाघा सीमा के निकट और पाकिस्तान के लाहौर के काफी करीब स्थित, प्रीत नगर विभाजन के समय पाकिस्तान के लाहौर का हिस्सा माना जाता था।
लगभग सात दिनों तक पाकिस्तान के अंतर्गत रहा, जिसके बाद वह भारत का हिस्सा बन गया।
यह सरदार गुरबख्श सिंह थे, जो एक कृषि अभियंता थे और जिन्होंने अध्ययन किया था।
कैलिफोर्निया में, जिन्होंने 1935 में एक ऐसी जगह पर प्रीत नगर की स्थापना की जो
अमृतसर (पवित्र नगर) और लाहौर (सांस्कृतिक राजधानी) के बीच (अविभाजित पूर्व-विभाजन पंजाब)। एक अद्वितीय व्यक्ति, उन्होंने एक विशाल भूभाग खरीदा।

बंजर भूमि जहाँ कुछ भी खेती नहीं की जाती थी। वास्तव में, स्थानीय लोगों का मानना था कि यह एक
शापित भूमि जहाँ भूत और जंगली जानवर रहते थे। एक स्वप्न परियोजना को संजोए हुए।
उन्होंने इस भूमि का नाम प्रीत नगर रखा (जिसका शाब्दिक अर्थ है प्रेम नगर)।
यह अभी भी अविभाजित भारत का समय था। सिंह ने कला, संस्कृति का एक गाँव बसाया।
साहित्य और शिल्प। प्रीत नगर जल्द ही प्रीत नगर जैसे लोगों के लिए एक बेहतरीन घर बन गया।
Balraj Sahni, Faiz Ahmed Faiz, Rajinder Singh Bedi, Achala Sachdev,
मदनजीत सिंह और मुल्क राज आनंद। किसी एक लेखक का नाम लेना मुश्किल है।
उस दौर के वे सभी रंगमंच कलाकार या कवि जो यहाँ नहीं रुके या यहाँ नहीं आए।
उन्होंने समकालीन और प्रगतिशील उत्तर कोरिया के निर्माण में अपनी रचनात्मकता का योगदान दिया।
अविभाजित भारत में भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण का केंद्र। यहां पंजाबी पत्रिका 'प्रीत लारी' का विमोचन हुआ। यह पत्रिका यह पत्रिका नए, युवा लेखकों के बीच पसंदीदा पत्रिका बन गई, जो इसमें लिखते थे।
पंजाबी पत्रिका के साथ-साथ कई शिल्प कार्यशालाएँ भी आयोजित की गईं।
इसके शुरू होने से यह जगह उत्तर भारत का एक तरह का शांति निकेतन बन गई है।
रवींद्रनाथ टैगोर ने विश्व भारती के कुलपति को यात्रा के लिए भेजा था।

प्रीत नगर जाकर वहां चल रहे काम की प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करें।
दुर्भाग्यवश, विभाजन के साथ, प्रीत नगर और प्रीत की यह स्वप्न परियोजना अधूरी रह गई।
लारी धीरे-धीरे बिखरने लगी, मानो उसकी आत्मा ही छीन ली गई हो।
मैंने 1976 में, अपने शो के सिलसिले में यात्रा के दौरान इस जगह का दौरा किया था।
पराई कुख। उस समय मेरी मुलाकात सरदार गुरबख्श सिंह से उनके माध्यम से हुई थी।
पोता सुमीत, एक प्यारा और संवेदनशील लघुकथा लेखक था।
अपने पिता, नवतेज सिंह, जो एक प्रख्यात पंजाबी कहानीकार थे, की मदद करने में
प्रीत लारी। पूरा परिवार उमाजी के साथ एक बड़े घर में रहता था।
गुरबख्श सिंह की अविवाहित पुत्री।
जब हम सुबह अपनी यूनिट के साथ प्रीत नगर पहुंचे, तो हमें एक हमारे बीच एक अप्रत्याशित अतिथि - एम.जे. अकबर, संडे के जाने- माने संपादक।
पत्रिका। सईद मिर्ज़ा और सुरेश जिंदल ने हमें बताया था कि वह इसमें शामिल हो सकते हैं।
किसी समय यूनिट में, यह खुलासा करते हुए कि वह किसी न किसी रूप में फिल्म का हिस्सा था,
शायद सह-निर्माता। मदन और मैं उनसे कभी नहीं मिले थे, लेकिन उनसे मिलकर खुशी हुई।
मुझे पता था कि वह हमारे साथ शामिल होगा। मैंने उनकी किताब 'द सीज विद इन' पढ़ी थी और मुझे वह पसंद आई थी।
यह किताब काफी लोकप्रिय हो गई थी और अपने विषय के कारण चर्चा का विषय बन गई थी।

देश के भीतर मौजूद उस दुश्मन से निपटा गया जो देश को टुकड़ों में बांट रहा था।
आंतरिक रूप से।
मैं कई वर्षों बाद प्रीत नगर घूमने गया था। चीजें बदल चुकी थीं।
गुरबख्श सिंह के विशाल परिवार ने अपने कुछ प्रमुख बुद्धिजीवियों को खो दिया था।
आतंकवाद ने इस घर को इस तरह प्रभावित किया था कि इसमें एक अजीब सा अकेलापन छा गया था।
वहाँ शोक संतप्त परिवार आ गया था। सरदार गुरबख्श सिंह का देहांत हो गया था।
मेरे बेटे नवतेज की कैंसर से लंबी लड़ाई के बाद मृत्यु हो गई थी। मेरे दोस्त सुमीत की भी मृत्यु हो गई थी।
खालिस्तानी आतंकवादियों ने उन्हें गोली मार दी थी। अब परिवार के घर में रहते हैं।
सुमीत की मां पावेल, जो सोवियत संघ से लौटे थे, उनके सबसे बड़े बेटे थे।
वहाँ कई वर्षों के अध्ययन के बाद, और उनकी रूसी पत्नी के साथ, सुमीत ने
उन्होंने पूनम से शादी की, जिन्होंने नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी थी।
उनकी हत्या के तुरंत बाद। वह अब चंडीगढ़ में रहती हैं और प्रकाशन का काम करती हैं।
प्रीत लारी, सुमीत के छोटे भाई की मदद से।
जब मैं घर में दाखिल हुआ, तो सुमीत की मां फूट-फूट कर रोने लगीं और मुझसे पूछने लगीं,
‘तुम कहाँ थे? तुमने तो सालों पहले कहा था कि मैं तुम्हारे बेटे जैसा हूँ।’

कोई जवाब नहीं।
प्रीत नगर के चारों ओर फिल्मांकन करने के बाद, हमने आखिरकार सुमीत का साक्षात्कार लिया।
मां। उनका साक्षात्कार बहुत ही मार्मिक और दिल दहला देने वाला था। उन्होंने इसके बारे में बात की।
नागर में वो शानदार दिन थे जब दूर-दूर से लेखक और कलाकार आते थे। और वह वहाँ कई हफ्तों तक रही। वह यहाँ एक युवा दुल्हन के रूप में आई थी और
उन्होंने अविभाजित पंजाब के बौद्धिक जगत में प्रवेश किया, लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने देखा कि
वह सपना चकनाचूर हो गया। पहला झटका विभाजन से लगा, जिसने सारे संबंध तोड़ दिए।
और लाहौर से संपर्क टूट गया। इसका असर प्रीत नगर की गतिविधियों पर पड़ा। तब तो हमारी अपनी राज्य सरकारों या केंद्र सरकार के पास भी यह क्षमता नहीं थी।
इस बहुमूल्य सांस्कृतिक क्षेत्र को समर्थन देने के लिए समय या इच्छाशक्ति होना इसे और आगे बढ़ाता है।
हालात बिगड़ते चले गए। आखिरी झटका आतंकी हमलों से लगा, जिन्होंने सब कुछ छीन लिया।
उनका बेटा और पंजाब के कई अन्य बेटे, कई लेखक, ट्रेड यूनियन नेता,
कवि और पत्रकार। जो भी खालिस्तानियों से सहमत नहीं था, उसे
हटा दिया गया। उन्होंने विलाप करते हुए कहा कि आज पंजाब एक उदास जगह थी—कलात्मक और
बौद्धिक दृष्टि से एक रेगिस्तान। प्रीत नगर ने अपने सपनों के लिए भारी कीमत चुकाई थी।
जिसे अब पुनर्जीवित करना असंभव था। हालाँकि, सुमीत के चाचा, हृदय पाल

सिंह ने स्थिति को संभालने की पूरी कोशिश की थी।
उसे देखकर मुझे सुमीत की याद आ गई, जो मुझे वाघा ले गया था।
उस दिन, जब हम वाघा पहुँचे, तो हम काली सीमा पर चलकर आए थे।
जीटी रोड का डामर गेट तक, जो भारतीय क्षेत्र का अंतिम बिंदु है।
इसके बाद
जिससे पाकिस्तान की भूमि की शुरुआत हुई। इन दोनों फाटकों के बीच कुछ फीट की दूरी थी।
सड़क, जिसे 'नो मैन्स लैंड' कहा जाता था। सुमीत ने लाहौर शहर की ओर इशारा किया।
जहां उसके माता-पिता और दादा-दादी रहते थे। काफी देर रुकने के बाद मैंने कहा
उससे कहा, ‘सुमीत, एक दिन हम इस सीमा को पार करेंगे और तुम्हारी गाड़ी पर सवार होकर आगे बढ़ेंगे।’
हम मोटरसाइकिल से लाहौर शहर गए और वहाँ अच्छा खाना खाने के बाद हमने
मैं फिर से प्रीत नगर आऊंगा।’ कई साल बाद मैं सचमुच उस रास्ते से गुजरा।
सीमा पर, मेरे पंजाबी नाटक बुहे बरियां के कलाकारों के साथ। मैं वहाँ रुका।
निर्जन भूमि से ठीक पहले उसी स्थान पर जाकर मुझे सुमीत की याद आ गई।
उनकी मां का साक्षात्कार लेने के बाद, हमने सुमीत के छोटे भाई से बात की।
जो उस दिन सुमीत की मोटरसाइकिल पर पीछे बैठा था
हत्या। वे अमृतसर जा रहे थे तभी खालिस्तानी आतंकवादियों ने उन पर हमला कर दिया।
उन्होंने उन्हें रोका और सुमीत को गोली मार दी। वे घटनास्थल से लगभग एक मील दूर थे।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

quietly gave me a hug, saying, ‘Jinda rahe puttar. Pher aana. Der na karna

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अमृतसर में घटी घटनाओं के बारे में। साक्षात्कार में हमारी टीम के सदस्य मौजूद थे।
चार लोग—सईद मिर्ज़ा, मदन गोपाल सिंह, सुरेश जिंदल और मैं— एम.जे. के साथ।
अकबर भी इसमें शामिल हो गया।
पंजाबी परिवार ने हमारा पूरे सम्मान और शिष्टाचार के साथ स्वागत किया।
यह एक परिवार था। इसमें तीन सदस्य थे: पति, पत्नी और उनका बेटा।
पति डॉक्टर के रूप में काम करते थे, घर की मालकिन प्रोफेसर थीं।
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय में इतिहास के छात्र थे, और उनका बेटा वहीं पढ़ता था। उसके बाद हम
जब सभी लोग ड्राइंग रूम में बैठ गए, तो महिला को इसका उद्देश्य समझ में आ गया।
हमारी यात्रा के दौरान, हमें ऑपरेशन ब्लू स्टार से पहले के दिन याद आने लगे और फिर
ऑपरेशन के बाद के दिनों में। उनके शब्दों में दर्द का एहसास होता था।
सिखों की भावनाएं इस बात को लेकर आहत हैं कि उन्हें एक व्यक्ति द्वारा किए गए कृत्यों के लिए अलग से निशाना बनाया जा रहा है। कुछ लोग हिंसा और दूसरे देशों के लोगों की हत्या में विश्वास रखते थे।
समुदायों को पहले भारतीय राज्य द्वारा और फिर बहुसंख्यक हिंदू समुदाय द्वारा निशाना बनाया गया।
राष्ट्र। उनके पति भी इसमें शामिल हो गए। उन्होंने कहा कि ऐसी त्रासदी के बाद भी,
खालिस्तानी सिखों और हिंदुओं को विभाजित करने में सफल नहीं हुए थे।

पंजाब के लोग एक-दूसरे के खिलाफ बहुत ही सरल कारण से थे—वे खून के दुश्मन थे।

रिश्ते। सिख गुरुओं के समय से ही, अधिकांश में एक परंपरा रही है।

हिंदू परिवारों में यह धारणा प्रचलित थी कि एक बेटे का पालन-पोषण हमेशा सिख के रूप में किया जाएगा जबकि दूसरे का।

अन्य लोग हिंदू ही रहे। रक्त संबंध होने के अलावा, दोनों एक-दूसरे का सम्मान करते थे।

वे गुरु ग्रंथ साहिब, सिखों के पवित्र ग्रंथ का आदर और पूजा करते थे, और प्रत्येक गुरुद्वारे को पवित्र मानते थे। सभी शुभ अवसरों पर, वे गुरुद्वारों में जाते थे।

समुदाय गुरुद्वारों में, विशेषकर हरमिंदर साहिब में प्रार्थना करते थे।

स्वर्ण मंदिर, सिखों का सर्वोच्च पूजा स्थल।

परिवार ने ब्लू स्टार के हिंसक संचालन की आलोचना की। उन्हें लगा कि

यह पूजा स्थल का अपमान था। उस शाम हुई बातचीत में यह बात सामने आई।

वह इतिहास उन दिनों के उनके वृत्तांतों से भरा हुआ था। एक समय पर, इतिहास

प्रोफेसर अचानक उठे और कमरे से बाहर चले गए। हमें उनकी बात समझ नहीं आई।

उसने अचानक चले जाने का कारण बताया लेकिन अपने पति से बातचीत जारी रखी।

और बेटा। वह थोड़ी देर में केसरिया कपड़े के साथ वापस आई जिस पर कुछ था।

वह उसमें लिपटी हुई थी। उसने कपड़ा खोला तो अंदर गहरे काले रंग की राख का ढेर दिखाई दिया।

जो ऑपरेशन ब्लू स्टार के स्थल से थे। उन्होंने कहा कि वे वही थे।
जले हुए कपड़ों, जूतों और पगड़ियों जैसी वस्तुओं की राख जो दौरान इकट्ठा की गई थी।
ब्लू स्टार ऑपरेशन के बाद। आँखों में बेहद गंभीरता लिए उसने कहा,
मैं एक इतिहासकार हूं, और मैंने उस भयावह सपने के सबूत के तौर पर इसे सुरक्षित रखा है।
और हमारे धर्म के खिलाफ उस आक्रामकता के बारे में।' हम सबने राख की ओर देखा,
मैं अवाक रह गया और परिवार के लोग हमें घूरने लगे। मैंने मदन की ओर देखा, जो दिखाई दे रहा था।
राख देखकर वह बहुत विचलित हो गया। वह स्वयं भी जानलेवा स्थिति से गुजर चुका था।
दिल्ली सिख दंगों के दौरान मुझे जो अनुभव हुआ। मैंने इसके परिणामों के बारे में सोचा।
सिखों पर यह पीड़ा।
बाद में रात में, हम सुरेश जिंदल के कमरे में रात के खाने के लिए इकट्ठा हुए।
इस परिवार से मिलने का नशा अभी भी बाकी था। जब हमने जल्दी से कुछ खाने का मन बना लिया।
पेय पीने के बाद, हमारे बीच इस बात को लेकर तीखी बहस शुरू हो गई कि ऐसा क्यों हुआ।
पंजाब में समस्याएं। इन समस्याओं के कारणों में आम तौर पर आतंकवाद, खालिस्तान शामिल थे।
और भारतीय राज्य। जल्द ही बहस राजनीतिक रूप से गरमा गई, हर कोई अपनी राय देते हुए, कोई भी दूसरे से सहमत नहीं दिख रहा था।
वे थोड़े आक्रामक हो रहे थे। मैंने सईद, सुरेश, अकबर और

मदन।

जैसे-जैसे कमरे में चर्चा तेज होती गई, वैसे-वैसे इसके प्रभावों का भी पता चलता गया।

शराब के बाद, मैंने रात का खाना खाने का फैसला किया, यह सोचकर कि मैं अपने कमरे में जाकर आराम करूँगा क्योंकि मैं थका हुआ था और सच कहूँ तो मुझे उनकी दलीलें पसंद नहीं आ रही थीं। इसलिए, मैंने अपना

मैंने खाना खाया, सबको शुभ रात्रि कहा और अपने कमरे की ओर चल दिया।

रात करीब 2 बजे, मुझे अपने दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक सुनाई दी। मैंने दरवाजा खोला तो देखा कि...

मदन वहाँ बहुत तनाव में खड़ा था। मैंने उससे पूछा कि क्या हुआ था।

वह न केवल परेशान दिख रहा था बल्कि दुखी और बहुत व्याकुल भी था। उसने कहा, 'तुम'

मुझे पता है, अकबर मुझ पर ऐसे चिल्ला रहा है मानो मैं सिखों का प्रतिनिधि हूँ।

राजनीति।'

इससे मुझे बहुत गुस्सा आया। मैंने उससे कहा कि मेरे साथ चलो। 'उसका कमरा कैसा है?'

मैंने उससे पूछा, 'नंबर?' लेकिन मदन ने, अपने स्वभाव के अनुसार, मुझे शांत किया और कहा,

‘लड़ने का कोई फायदा नहीं... हम उससे सुबह मिलेंगे।’ हमने बात वहीं खत्म कर दी।

उस रात के लिए तो हमने वहीं रुक गए, लेकिन हमने फैसला किया कि हम उसे खरी-खोटी सुनाएंगे।

सुबह।

सुबह जब हम अकबर का सामना करने के लिए तैयार थे, तब वह कहीं नहीं था।

देखने लायक था। वह सुबह तड़के ही दिल्ली के लिए रवाना हो गया था। जब हम मिले
अन्य यूनिट सदस्यों के बीच बेचैनी का माहौल था। लेकिन फिर भी, मदन की तारीफ करनी होगी, उन्होंने बहुत ही शांत और सौम्य तरीके से तनाव को कम किया। हमें लगा
पंजाब के बारे में हमारे अच्छे ज्ञान का उपयोग और लाभ उठाया गया। शुरू में,
इससे हम दोनों परेशान हुए और हमें मूर्खता का एहसास हुआ। हमारा मानना था कि यह फिल्म
हम एक नेक उद्देश्य के लिए काम कर रहे थे और हमने स्वयंसेवक के रूप में अपनी सेवाएं देने की पेशकश की थी। अब हम
मुझे इस परियोजना का उद्देश्य नहीं पता था। फिर भी, सईद को एक फिल्म निर्माता के रूप में जानते हुए,
वह ऐसा व्यक्ति नहीं था जो किसी गुप्त राजनीतिक एजेंडे में भाग लेता।
हमें भ्रमित कर दिया।
हमने सुना था कि भिंडरांवाले के भाषणों की ऑडियो कैसेट मौजूद हैं।
और इन्हें पूरे पंजाब में बेचा गया। ऑपरेशन ब्लू स्टार के बाद, इन सभी रिकॉर्ड किए गए उत्पादों को बेचा गया।
कहा जाता था कि टेपों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। वास्तव में, वे भूमिगत हो गए थे।
उन्हें हासिल करने का जिम्मा मदन और मुझ पर छोड़ दिया गया था। इससे विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो सकती थी।
फिल्म के लिए सामग्री। हमने अपनी ही बहादुरी में आकर तय किया कि अगर कोई टेप हो तो...
अगर ये अमृतसर के खुले बाजार में बिक रहे थे, तो हम जरूर जा सकते थे।

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[

उनकी प्रतियां बना लें और उन्हें लौटा दें।’ हमने उन्हें लौटाने का वादा किया, और उसने एक प्रति भेज दी।

एक छोटे लड़के को कैसेट का डिब्बा लाने के लिए कहीं भेजा गया।
जब लड़का चला गया,

उन्होंने संतजी से जुड़े किस्सों से हमारा मनोरंजन किया। उन्होंने हमें बड़े-बड़े गिलास दिए।

पास वाली दुकान से लस्सी। उसने कहा, 'तुम्हें पता है, संतजी ने जो कुछ भी कहा, उसने

अधिकारी अटवाल दरबार साहिब जाते समय गोली मारकर हत्या कर दी गई।

उसने जो वादा किया था, वही किया।’ दुकानदार जोर से हंस पड़ा। वह दिखावा कर रहा था।

संतजी से उनकी निकटता ने हमें चौंका दिया। मैंने उनसे पूछा, 'आप संतजी के इतने करीब कैसे हैं?'

'जब आप हिंदू हों तो क्या होगा?' वह फिर जोर से हँसा। 'मैं हमेशा से ही हिंदू था।'

मैं उनके भाषण रिकॉर्ड करता था। दरअसल, वे मेरे बारे में भी मजाक करते थे। संतजी ने एक बार कहा था।

उन्होंने अपने शिष्यों से कहा कि सभी हिंदू बुरे नहीं होते। इस आदमी को देखो। यह एक

ठीक है हिंदू।’ उन्हें भिंडरांवाले की प्यारी यादें थीं और उनके साथ उनके बहुत अच्छे संबंध थे।

उनके प्रति प्रशंसा।

काफी देर इंतजार के बाद, लड़का एक थैले के साथ लौटा जिसमें एक डिब्बा था।

कैसेट। हमने तुरंत भुगतान कर दिया और टेप लौटाने का वादा किया।

दुकानदार ने मुझे एक लिफाफा दिया जिसमें ऑपरेशन ब्लू स्टार के दिन के गोल्डन टेंपल की कुछ तस्वीरें थीं। उनमें लाशें कतार में लगी हुई दिखाई दे रही थीं।

स्वर्ण मंदिर के खुले प्रांगण में—एक भयावह दृश्य। उन्होंने चेतावनी दी।
हमें इलाके में मुखबिरों और पुलिस से सावधान रहना चाहिए, कहीं वे हमें पकड़ न लें।
हमारे पास प्रतिबंधित सामान था। हम जल्दी से वहां से भागे और इधर-उधर घूमने लगे।
कुछ देर तक और फिर जल्द ही एक ऑटो रिक्शा में बैठ गए।
भिंडरांवाले की कैसेटें
वे एक पॉलिथीन बैग में थे और तस्वीरें मेरी टोपी में छिपी हुई थीं।
हम जल्दी से अपनी बस तक पहुंचना चाहते थे।
हमारा स्कूटर करीब एक किलोमीटर ही चला था कि तभी पंजाब पुलिस के एक अधिकारी ने
उसने हमें रुकने का इशारा किया। हमने गाड़ी रोक दी और हमारा दिल बैठ गया।
डर के मारे। पुलिसकर्मी ड्राइवर के बगल में घुस गया और गाड़ी आगे बढ़ गई।
फिर से शुरू हो गया। मदन और मैंने एक दूसरे को देखा लेकिन कुछ बोल नहीं पाए। फिर
हमने कैसेट वाले बैग को देखा। उस क्षण, मेरे मन में यह भी ख्याल आया कि...
बैग फेंककर चलती गाड़ी से कूद जाना।
पुलिसकर्मी और स्कूटर चालक लगातार एक-दूसरे से बातचीत कर रहे थे।
कुछ और बातें थीं, लेकिन किस बारे में, यह हम समझ नहीं पाए। मदन और मैं बार-बार नज़र घुमाते रहे।
एक-दूसरे को घूरते हुए, तनाव और गर्मी से पसीना बहाते हुए। हर मिनट जो

बीता हुआ दिन पूरा दिन जैसा लगा। हमें बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि हम सही रास्ते पर हैं या नहीं।
सही रास्ता भी नहीं था। मुझे शक था कि हमें सीधे कहीं ले जाया जा रहा है।
पुलिस स्टेशन। तनावपूर्ण सफर लगभग बीस मिनट तक जारी रहा।
मदन की आँखों में भय देखकर मैंने मन ही मन सोचा—अगर हम होते गिरफ्तार हो गई, किसी को पता भी नहीं चलेगा। मैंने खुद को कोसना शुरू कर दिया। मैं ऐसा कैसे कर सकती थी?
क्या कोई स्वयंसेवक के रूप में इतना खतरनाक काम करने की मूर्खता करेगा?
सईद, सुरेश और टीम के अन्य सदस्य इंतजार कर रहे थे।
उन्हें हमारी दुर्दशा का कोई अंदाजा नहीं था। अचानक मुझे अपनी टोपी का एहसास हुआ। हमारे पास
युद्ध के दौरान मारे गए लोगों के शवों की तस्वीरें छिपा दी गईं इसमें ऑपरेशन ब्लू स्टार भी शामिल है। मैं अब चिंता और भय से लगभग बेहोश होने वाली थी।
स्कूटर अचानक रुक गया। मदन ने मुझे हताशा भरी नज़रों से देखा; हम
हम दोनों को यकीन था कि यह हमारा अंत है और हमें गिरफ्तार कर लिया जाएगा।
हमारे हाथों में मौजूद प्रतिबंधित वस्तुएं हमारे अपराध का बहुत ठोस सबूत होंगी।
और मेरी टोपी में लगी तस्वीरें।
लेकिन कुछ अप्रत्याशित घटित हुआ। पुलिसकर्मी गाड़ी से उतरा और बोला
उसने हम सभी को बड़े ही सहज भाव से अलविदा कहा और स्कूटर चालक आगे बढ़ गया।

राजमार्ग। मदन ने मेरी तरफ देखा और हम दोनों ने एक-दूसरे को देखकर मुस्कुरा दिया।
एक शब्द भी बोले बिना, मदन ने ड्राइवर से पंजाबी में पूछा कि कितना समय लगेगा।
ले जा रहे हैं। ड्राइवर ने जवाब दिया, 'हम पहले पहुँच जाते लेकिन'
पुलिसवाले की वजह से मुझे थोड़ा घूमकर जाना पड़ा। कोई मना नहीं कर सकता।
ये पुलिसवाले। ये तो शहर के मालिक हैं।’ कुछ देर बाद हमें हमारी बस दिखाई दी।
राजमार्ग पर खड़ी है।
जब मैंने बस का दरवाजा खोला, तो पूरी यूनिट, जो कि
ठंडी, वातानुकूलित गाड़ी में आराम से सो रहा था, तभी हमारी आवाज से नींद खुल गई।
आगमन। मैंने चिल्लाकर कहा, 'चलो, उठो, तुम सब, हमें सामान मिल गया है।'
हम यही चाहते थे।’ कैसेट के डिब्बे को देखकर सईद बहुत खुश हुआ। मैंने फिर से
चिल्लाकर बोला, ‘हमें थोड़ा ठंडा पानी दो।’ हम दोनों डर के मारे लगभग मर ही गए थे।
'पुलिस द्वारा पकड़े जाने का डर।' सईद ने ड्राइवर को बस चालू करने के लिए चिल्लाकर कहा।
और उसे अगली खाने-पीने की दुकान पर रुकने का निर्देश दिया। 'मैं उन्हें कुछ खिलाना चाहता हूँ।'
'एक बढ़िया, ठंडी कोक,' उसने कहा। मैंने मदन की तरफ देखा, और उसने मुझे मुस्कुरा कर देखा।
और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। बस आगे बढ़ गई।

हमारा अगला पड़ाव जालंधर शहर था, जो आतंकवादियों का नियमित निशाना होता है।
कई सालों से। पंजाब के सभी प्रमुख समाचार पत्रों के अपने-अपने प्रकाशन थे।
मुख्यालय यहीं था। यहीं पर भारत समर्थक, अकाली समर्थक या खालिस्तान समर्थक आंदोलन संचालित होते थे।
नाटकीयता का उपयोग करके गतिविधियों को निर्मित और नियंत्रित किया गया था।
मुख्य समाचार। हमें मालिकों और कुछ पत्रकारों से मिलना पड़ा।
पंजाब केसरी समाचार पत्र समूह।
कई साल पहले, 9 सितंबर 1981 को समूह के संस्थापक, लाला
जगत नारायण की हत्या पंजाब के एक राजमार्ग पर खालिस्तानी आतंकवादियों ने कर दी थी।
लालाजी की हत्या ने पूरे देश में आक्रोश पैदा कर दिया था; यह एक चेतावनी थी कि क्या करना चाहिए।
पंजाब में ऐसा हो रहा था। दिनदहाड़े हुई इस हत्या के बाद, हत्याओं का सिलसिला जारी रहा।
राज्य में हिंदू और सिख दोनों का आमना-सामना होना एक नियमित घटना बन गई। इस बार 12 तारीख को।
मई 1984 में उसी पंजाब केसरी समूह के साथ एक और त्रासदी घटी - स्वर्गीय लाला जगत नारायण के पुत्र रमेश कुमार की हत्या। जिसने अपने पिता की मृत्यु के बाद समाचार पत्र समूह का कार्यभार संभाला था।
जब हम उस गली में दाखिल हुए जहां पंजाब केसरी के कार्यालय स्थित थे,
पंजाब पुलिस के एक दल ने हमारी जाँच की। उन्होंने हमारी पूरी तरह से तलाशी ली।

हमें अंदर जाने देने के लिए कांटेदार तार की बाड़ को नीचे करने से पहले।
कार्यालय भवन के प्रवेश द्वार पर ही एक खाली फिएट कार खड़ी थी।
लेकिन चारों तरफ गोलियों के निशान थे, जैसे चेचक से ठीक हुए किसी व्यक्ति का चेहरा।
कार देखकर मुझे हॉलीवुड फिल्म 'द गॉडफादर' के एक दृश्य की याद आ गई।
जहां धर्मपिता के बेटे सन्नी की कार पर गोलीबारी होने से मौत हो जाती है।
चारों ओर से अंधाधुंध गोलीबारी। कार को देखते ही यह स्पष्ट हो गया कि
उस निर्मम हिंसा की तीव्रता जिसने राज्य की जड़ों तक को खोखला कर दिया था
पंजाब का।
जब हम पहली मंजिल पर पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे, तो एक सिख सिपाही ने हमें देखा।
सुरक्षा गार्ड ने भरी हुई बंदूक हमारी ओर ताने हुए हमें घूरकर देखा।
इस बिंदु से आगे, पंजाब केसरी सुरक्षाकर्मियों ने हममें से प्रत्येक की तलाशी ली। अंततः,
इस कड़ी सुरक्षा जांच को पार करने के बाद हम मुख्य कार्यालय तल में प्रवेश कर गए जहाँ
कई पत्रकार काम कर रहे थे और अपने-अपने काम में लगे हुए थे। मैंने चारों ओर देखा,
और मेरी नजर कुछ युवकों पर पड़ी जिनके पास छोटी पिस्तौलें थीं। उनकी जींस की पिछली जेबें। यह एक अजीब सा माहौल था, जैसे किसी

एक वेस्टर्न काउबॉय फिल्म जिसमें सभी किरदार बंदूकें लेकर घूमते हैं।

हमें एक युवक से मिलने के लिए कहा गया था जो एक मेज के पीछे बैठा था।

केबिन में। हमने अपना परिचय दिया और उन्हें अपने आने का उद्देश्य समझाया।

हम उस परिवार के सदस्यों से बात करना चाहते थे जिन्होंने दो बार इस तरह की पीड़ा झेली थी।

भयानक हत्याएं। शुरू में वह बहुत सतर्क था, लेकिन यह महसूस करते हुए कि हम

परिवार से मिलने का समय मिलने पर उन्होंने हमें कुछ देर इंतजार करने को कहा।

क्योंकि समूह का नया मुखिया आने ही वाला था। आखिरकार हमें समझ आ गया।

कि यह उनके पिता थे। उन्होंने हमारे लिए चाय मंगाई, और जैसे ही उन्होंने अपना दाहिना हाथ उठाया

मेज से हटाकर देखने पर, हमें एक छोटी, सुंदर पिस्तौल दिखाई दी जो उसकी जेब में छिपी हुई थी।

हाथ। यह हम सबके लिए एक झटका था। हमारे चेहरों को देखकर वह मुस्कुराया और बोला,

हम क्या कर सकते थे? मैं हर स्थिति के लिए तैयार था। कौन जानता है, हो सकता है आप फिल्म निर्माता के वेश में हत्यारे निकले हों।

उस स्थिति में, मैं गोली चलाकर तुम्हें मार देता।’ मुझे उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ।

और मैं थोड़ा घबरा गया था। मैंने उनसे अनुरोध किया कि कृपया अपनी बंदूक की नली को घुमा दें।

पिस्तौल दूसरी दिशा में। वह हँसा, अपनी बंदूक उठाई और उसे खोला।

मैंने मैगज़ीन से सारी गोलियां निकाल लीं।

चाय के बाद, हमने न्यूज़ रूम के सामान्य माहौल का जायजा लिया और महसूस किया कि
भय के माहौल में अखबार निकालना आसान नहीं था।
हिंसा और हत्याएं। परिवार ने इसे चलाने के लिए भारी कीमत चुकाई थी।
हम जल्द ही विजय कुमार चोपड़ा के केबिन में दाखिल हुए, जो कि सबसे छोटा बेटा था।
लाला जगत नारायण। वे अब केसरी समूह के प्रमुख हैं और संपादक के रूप में कार्यरत हैं।
अखबार के। कद में छोटा होने के कारण, उसने हमेशा की तरह सफेद धोती-कुर्ता पहन रखा था। उसका
केबिन में चारों तरफ कांच के पार्टीशन थे ताकि उसे लगभग पूरी तरह से स्पष्ट दृश्य दिखाई दे सके।
पूरे फर्श का 360 डिग्री का चक्कर लगाया। उसने भी अपना निजी रिवॉल्वर निकाल लिया।
जब हमने बातचीत शुरू की। यह उसकी कमर के नीचे दबा हुआ था।
उसने अपनी धोती उतारी। उसने उसे मेज पर रख दिया।
मैंने कहा, 'यहाँ बहुत डरावना माहौल है। यहाँ हर कोई हथियार लेकर घूम रहा है।'
काम।’ उन्होंने बड़े ही सहज भाव से उत्तर दिया, ‘विकल्प क्या है? मेरे पिता
हत्या... मेरे भाई ने हत्या की। अगर हमें यह अखबार चलाना है, तो हमें ऐसा करना ही होगा।
तैयार। बस मुड़कर खुद देख लीजिए कि कितनी निगाहें आपको देख रही हैं।
आप। वे सभी हथियारों से लैस हैं—और किसी भी घटना पर नज़र रख रहे हैं।

अप्रिय घटना घटित होती है।' हमने चारों ओर देखा और कम से कम आठ पुरुषों को उनके साथ देखा।

सबकी निगाहें हम पर टिकी हुई थीं।

फिर मैंने उससे पूछा, ‘तुम यह शहर क्यों नहीं छोड़ देते?’ उसने तुरंत जवाब दिया

जवाब दिया, 'और कहाँ जाएँ? वे हमें कहीं भी पकड़ सकते हैं।' क्या इंदिरा

क्या गांधी अपने प्रधानमंत्री आवास में सुरक्षित हैं? हमारे पास बचने का कोई रास्ता नहीं है, और अगर

अगर हम यहां से पलायन करते हैं तो पूरी हिंदू आबादी भी पंजाब छोड़ देगी।

और यही खालिस्तानी चाहते हैं। हमारी जिम्मेदारी हमारी सीमाओं से परे है।

एक अखबार, जिसकी स्थापना विभाजन से पहले हुई थी। हम एक सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं।

हमारे परिवार में इतनी सारी त्रासदियों के बावजूद, हमने एक विधवा का घर बनाया है।

हम आतंकवादियों के हाथों पीड़ित लोगों के कल्याण के लिए दान करते हैं। यह दान हिंदू और सिख दोनों के लिए है। हम हर महीने दान करते हैं।

हम सार्वजनिक शिविर लगाते हैं जहाँ हम नकद और अन्य प्रकार की चीजें वितरित करते हैं।

दयालु। मुझे पता है कि यहाँ रहना, काम करना और गुज़ारा करना मुश्किल है। हर सुबह, सभी

हमारे परिवार के सदस्य हथियार चलाने का प्रशिक्षण लेते हैं। हमारी महिलाएं भी प्रशिक्षण लेती हैं।

मैंने कार्बाइन चलाना सीख लिया है। हम अपने हथियार बिस्तर के बगल में रखकर सोते हैं।

जब मेरे पिता, लाला जगत नारायण की हत्या हुई, तो पूरा पंजाब

सब सदमे में थे। हजारों लोग शोक व्यक्त करने आए। लेकिन एक व्यक्ति ऐसा था जिसे शोक व्यक्त करना चाहिए था।
आने वाले थे लेकिन आए नहीं। मेरे पिता ने उनके लिए चुनाव प्रचार किया था।
चुनाव। एक जनसभा में मेरे पिता ने हिंदुओं से अपील की थी।
उनकी पार्टी को वोट देने के लिए क्योंकि गुरु गोविंद सिंह ने स्वयं यह दायित्व ग्रहण किया था।
हिंदुओं की प्रतिष्ठा बचाने के लिए, हम कम से कम इतना तो कर ही सकते थे कि कुछ कदम उठाएं।
यह व्यक्ति हमारे हिंदू वोटों से चुनाव जीतेगा।
जैसे ही हम केसरी के अच्छी तरह से किलेबंद कार्यालयों से बाहर निकले, मैंने देखा कि
प्रेस भवन के सामने स्थित आवासीय क्षेत्र। इसकी छत पर सुरक्षा के बंकर हैं।
ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मी बैठे थे, उनकी बंदूकें किसी भी आपात स्थिति के लिए तनी हुई थीं। मैंने फिएट कार की ओर देखा। कार के पूरे शरीर पर गोलियों के निशान थे। मुझे लगा कि यह कार यह वर्तमान पंजाब राज्य का प्रतिनिधित्व करता है, जो हीर की पांच नदियों की भूमि है।
सूफियों और गुरुओं के रंझा।
जालंधर से दिल्ली तक की यात्रा में कई घंटे लगे। जब हम पहुँचे दिल्ली में, हमें पुलिस चौकी पर रोक दिया गया। एक पुलिसकर्मी ने हमें सामान उठाने को कहा।
हम बस से नीचे उतर गए ताकि वे हमारी व्यक्तिगत रूप से जाँच कर सकें। बस से उतरने के बाद...
बस से उतरकर हाईवे पर खड़े हुए एक पुलिसकर्मी ने मदन को अलग कर दिया और

उन्होंने कहा, ‘सरदारजी, आप इधर आइए, इन सबसे दूर।’ उनका लहजा था...
वह असभ्य और अपमानजनक था, और लोगों को उनके रूप-रंग के आधार पर परख रहा था।
और क्या उन्होंने पगड़ी पहनी हुई थी? यह मेरे लिए बहुत ज़्यादा था। मैं कर सकता था।
मैं खुद पर काबू नहीं रख सका और मदन के इस अपमान को सहन नहीं कर सका। मैंने एक
पुलिसकर्मी से बहस हो गई। उसके बाद दोनों के बीच जमकर कहा-सुनी हुई।
और पुलिसवाला। मैंने मदन के बगल में खड़े होने पर जोर दिया, और पुलिसवाले ने भी।
टीम के अन्य सदस्यों को भी मना लिया गया। आखिरकार, पुलिस ने हार मान ली और हमें जाने के लिए कहा।
हम अपनी बस में वापस चढ़ते हैं और आगे बढ़ते हैं।
पंद्रह दिन बाद दिल्ली लौटकर हम एक-एक करके बस से उतर गए।
एक दूसरे को अलविदा कहते हुए। घर वापस आकर मैंने पूरी बात पर विचार किया।
मैंने अपने अनुभव से पूछा कि क्या मेरे देश और मेरे लोगों के पास कोई अनुभव है या नहीं।
पंजाब की धरती और वहां के लोगों के बीच वास्तव में क्या हो रहा था, इसके बारे में एक विचार।
जिस फिल्म के लिए मदन और मैंने अपनी जान जोखिम में डाली थी, वह कभी बन ही नहीं पाई।
इसके बारे में कुछ भी पता नहीं चला। फिल्म के लिए शूट किए गए वो सारे दुर्लभ फुटेज कहाँ गए?
जाएं? इस परियोजना को किसने वित्त पोषित किया? किसी ने हमें कुछ नहीं बताया। ऐसा लग रहा था जैसे

पंजाब में हमारा काम बिल्कुल भी नहीं हुआ था। सब कुछ भुला दिया गया था, और

सहायता करने वाले स्वयंसेवकों के रूप में मदन और मैं खुद को इस्तेमाल किया हुआ और मूर्ख महसूस कर रहे थे।

लेकिन एक रचनात्मक व्यक्ति के रूप में, फिल्म के लिए मैंने जो काम किया, उसने मुझे बदल दिया।

मैं एक प्रकार का सांस्कृतिक कार्यकर्ता हूँ। मैं अन्याय से निपटने में लगातार शामिल रहता हूँ और

जनविरोधी परिस्थितियाँ। मेरे रंगमंच और मेरे शिक्षण में हमेशा से ऐसी परिस्थितियाँ रही हैं।

इस अनुभव के कुछ अंश मिले हैं। मुझे एहसास हुआ कि जानबूझकर बचने से

सामाजिक कार्यों में भागीदारी जिनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता था

अपने निजी जीवन में, आप खतरनाक हद तक एक खोल में रहने के करीब आ जाते हैं।

इसके विपरीत, जब आप संघर्षों में शामिल होते हैं या उनमें हिस्सा लेते हैं तो आपके डर कम हो जाते हैं।

लोगों के बारे में। आपकी समझ व्यापक और गहरी होती है। इससे नए द्वार खुलते हैं।

आपके काम और आपकी रचनात्मकता की व्याख्या करने के संदर्भ में ज्ञान का होना आवश्यक है।

समय के साथ परिपक्व होता जाता है और बहुआयामी परतों से भर जाता है।

आपने जो दृष्टिकोण एकत्रित किए हैं।

7

1989—सफदर हाशमी की हत्या

1 जनवरी 1989 को मैं अपनी पत्नी के साथ एक दोस्त के घर दोपहर के भोजन के लिए गया था।
बढ़िया लंच और ब्लडी मैरी के बाद, हम घर के लिए निकल पड़े।
बहुत आराम महसूस हो रहा था, सर्दियों की एक अच्छी नींद के लिए तैयार था। हालाँकि, मेरे थिएटर के एक सदस्य ने...
मेरे दोस्त बंसी कौल मुझसे मिलने आए थे। इसलिए झपकी लेने के बजाय, हमने खूब मस्ती की।
हमारी आम थिएटर की गपशप में।
लगभग आधे घंटे बाद मुझे राहुल वर्मा का फोन आया, जो एक आम आदमी था।
दोस्त ने बताया, ‘सफदर पर उसके नवीनतम स्ट्रीट शो के दौरान हमला हुआ है।’
साहिबाबाद में 'हल्ला बोल' खेलो।' हमले के बारे में उसके पास अधूरी जानकारी थी।
लेकिन उन्होंने कहा कि सफदर बुरी तरह घायल हो गए थे और इरविन अस्पताल में भर्ती थे।
आपातकालीन वार्ड। मैं चौंक गया और मैंने उससे पूछा कि टीम के बाकी सदस्य कहाँ हैं।

और सफदर की पत्नी माला कहाँ थी? उसने जवाब दिया, 'कोई नहीं जानता।' सफदर
बृजेश, जो कि एक सदस्य है, उसे अस्पताल लेकर आया है।
एक थिएटर समूह और एक मेडिकल डॉक्टर।
अंजू, बंसी और मैं तुरंत अंजू के पुराने घर में स्थित इरविन अस्पताल के लिए रवाना हुए।
एम्बेसडर कार। जैसे ही हम आपातकालीन वार्ड में दाखिल हुए, सफदर लेटा हुआ था।
वह स्ट्रेचर पर बेहोश पड़ा था, उसके पूरे शरीर और चेहरे व नाक पर खून लगा हुआ था।
और होंठ। अंजू, एक डॉक्टर होने के नाते, प्रभारी कनिष्ठ डॉक्टर से पूछने लगी।
उनका इलाज। इन डॉक्टरों ने जोर दिया कि हम सफदर को राम मनोहर के पास ले जाएं।
लोहिया अस्पताल में भर्ती कराया गया क्योंकि उन्हें तुरंत कैट स्कैन की आवश्यकता थी और इरविन
अस्पताल में ये सुविधाएं नहीं थीं। सफदर सीपीआई (एम) के सदस्य थे।
और मुझे उम्मीद थी कि उनके साथी पार्टी सदस्य अस्पताल में होंगे। लेकिन उनमें से केवल एक ही था।
उनकी पार्टी के साथी, वेद प्रकाश, जो दिल्ली के एक कॉलेज में संकाय सदस्य हैं।
कॉलेज में था।
मैंने एक जूनियर डॉक्टर से पूछा, 'हम उसे लोहिया अस्पताल कैसे ले जाएं?'
अस्पताल?’ उन्होंने कहा, ‘हम एम्बुलेंस का इंतजाम कर सकते हैं।’ दो जूनियर डॉक्टर हमारे साथ राम मनोहर लोहिया अस्पताल तक चलने के लिए तैयार हो गए।

अस्पताल के डॉक्टर अपने साथ एक एम्बु बैग और एक मास्क लेकर गए थे, ताकि सफदर को जरूरत पड़ने पर उसका इस्तेमाल किया जा सके।
सांस लेने में दिक्क्त।
इस समय दिल्ली सीपीआई (एम) के सदस्य वेद प्रकाश ने हमें सूचित किया।
पार्टी के अधिकांश सदस्य और नेता केरल में थे।
पार्टी कांग्रेस। सफदर का भाई सोहेल भी केरल में था। मेरे विचार
माला और समूह के सदस्यों के पास गए और नरसंहार की स्मृति में मालियाना, जहां बाद में पीड़ितों के शव पानी में तैरते हुए पाए गए।
पानी की नहरों को देखकर मेरे मन में डर की सिहरन दौड़ गई। मुझे उम्मीद थी कि वे सुरक्षित होंगी।
वे जहाँ भी थे। इरविन अस्पताल में विवरणों को सुलझाते समय... सफदर को कैसे स्थानांतरित किया जा सकता है, इस बारे में बात करते हुए हमारी मुलाकात बृजेश से हुई। वह थका हुआ लग रहा था, और उसके चेहरे पर उदासी और निराशा के भाव साफ झलक रहे थे। मैंने उससे पूछा कि क्या हुआ था।
घटना घटी। उसने हमले की अपनी कहानी सुनाई।
उन्होंने कहा, ‘जब गुंडों ने हमला किया, तो हम सब अपनी जान बचाने के लिए भागे।’ झंडापुर,
प्रदर्शन स्थल किसी दंगे के दृश्य जैसा लग रहा था।
पेशेवर गुंडे जो लोहे की छड़ों से हम पर हमला करने की तैयारी करके आए थे।
और लाठियाँ। वे स्पष्ट इरादे से आए थे कि हमारे काम में बाधा डालेंगे।

प्रदर्शन होने वाला है।’ बंसी, या शायद अंजू ने पूछा, ‘बृजेश, यह कैसे हुआ?’
'क्या आप सफदर को यहाँ अस्पताल तक लाने में कामयाब हुए?' उसने कहा कि वह सफदर को उठाकर लाया था।
कुछ मदद से उसे साइकिल रिक्शा में बिठाया और फिर मोहन नगर ले गए।
अस्पताल। उसे थोड़ा समय लगा क्योंकि उसे अपना रास्ता बदलना पड़ा।
उन पर हमला करने वाले गुंडे अभी भी इलाके में घूम रहे थे। सुरक्षा के लिहाज से
इसलिए, मोहन नगर अस्पताल पहुंचने के लिए उसने कई बार अपना रास्ता बदला था।
लेकिन उस अस्पताल से कोई मदद नहीं मिली। आखिरकार उसने किसी तरह एक ऑटो रिक्शा का इंतजाम किया।
सफदर को इरविन अस्पताल ले आओ।
सभी डॉक्टरों ने जोर देकर कहा कि हमें सफदर को राम मनोहर लोहिया अस्पताल में स्थानांतरित करना चाहिए।
अस्पताल में, मैंने माला को देखा, वह बड़े साहस के साथ स्थिति का जायजा ले रही थी और कोशिश कर रही थी।
सफदर की हालत को समझने के लिए। अंत में, बृजेश और मैं, दो अन्य लोगों के साथ।
जूनियर डॉक्टर सफदर को राम मनोहर लोहिया अस्पताल ले गए। माला और
बंसी अंजली के साथ उसकी कार में उनके पीछे-पीछे गया।
राम मनोहर लोहिया अस्पताल के आपातकालीन वार्ड में सफदर का शव था।
उसे एक बेहद गंदे बिस्तर पर लिटाया गया। वह कांपने लगा, अचेतन रूप से करवटें बदलने लगा।

उसके हाथ-पैर बिस्तर पर बिखरे पड़े थे। वह किसी घायल सैनिक की तरह लग रहा था जो गिर गया हो।
अपने पूरे शरीर पर लगी चोटों से जूझने के बाद। साथ में मौजूद जूनियर
इरविन अस्पताल के डॉक्टरों ने हमें लोहिया के कनिष्ठ डॉक्टरों से मिलवाया।
अस्पताल। इन युवा डॉक्टरों ने मदद करने और हर संभव प्रयास करने की पूरी कोशिश की।
यह संभव हो सका। जल्द ही, सफदर को एक पहिएदार स्ट्रेचर पर दूसरे अस्पताल ले जाया गया।
उनके कैट स्कैन के लिए उन्हें आईसीयू में रखा गया है।
इस समय तक, सफदर को जानने वाले लोग बड़ी संख्या में आने लगे थे।
अस्पताल के लॉन में। सफदर की मां, अम्माजी, पहुंचीं। वह सीधे अंदर चली गईं।
मैं सफदर को देखने आईसीयू वार्ड गया। माला आईसीयू के पास ही रुकी रही। फिर मैंने ज्यादातर लोगों को देखा।
समूह के कलाकार पहुंचे और यह देखकर राहत महसूस की कि वे सभी सुरक्षित हैं।
उनमें से हर एक ने घटना का अपना-अपना विवरण दिया।
जैसे-जैसे शाम ढलने लगी, जूनियर डॉक्टरों ने हमें एक डॉक्टर से संपर्क करने के लिए कहा।
एस.पी. अग्रवाल, अस्पताल के सबसे अनुभवी डॉक्टर, सफदर का इलाज करने के लिए नियुक्त किए गए।
इस तरह की चोटें। उन्होंने हमें बताया कि उन्हें सफदर की जांच करनी चाहिए क्योंकि उसे शायद जरूरत हो सकती है।
एक ऑपरेशन था, लेकिन उन्होंने हमें बताया कि वह अपने परिवार में एक शादी के लिए छुट्टी पर थे।

परिवार। उन्होंने समझाया कि डॉ. जैन ही सफदर के लिए एकमात्र उम्मीद हैं और उन्होंने आग्रह किया।

हमने उनसे सफदर की जांच करने के लिए कहा। मैंने हिचकिचाते हुए उनसे उसका प्रमाण पत्र मुझे देने को कहा।

नंबर। ये युवा डॉक्टर मुझे ड्यूटी रूम में ले गए ताकि मैं इसका इस्तेमाल कर सकूँ।

अस्पताल का फोन। मैंने नंबर डायल किया और डॉ. अग्रवाल लाइन पर थे।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं उनसे अपनी बात कैसे रखूँ। मैंने अपना परिचय दिया।

और मैंने उन्हें इस मामले के बारे में बताया। मैंने लगभग उनसे विनती की। मैंने कहा, 'सर, हर कोई

इस अस्पताल में मुझे बताया जा रहा है कि आप ही वो डॉक्टर हैं जो उसकी जान बचा सकते हैं।

जीवन।’ डॉ. अग्रवाल ने उत्तर दिया, ‘देखिए, मैं छुट्टी पर हूँ, और मैं पहले से ही तैयार हूँ।’

परिवार की शादी में शामिल होने के लिए। मुझे बहुत खेद है। मेरे लिए यह बहुत मुश्किल है।

'आने वाला यह समय।' मैंने जोर देकर कहा, 'सर, मैं कोई नहीं हूँ। मेरे पास कोई अधिकार नहीं है। लेकिन,

महोदय, कल आपको पता चल जाएगा कि यह आदमी कौन है। यहाँ के सभी डॉक्टर

आपका अस्पताल मुझसे सिर्फ आपका नाम लेकर बात कर रहा है। मैं आपसे सिर्फ विनती कर सकता हूँ।

'प्लीज़, प्लीज़, मैं आपसे विनती करता हूँ।' उन्होंने मेरी बात बीच में ही काट दी और कहा, 'ठीक है। मैं आ रहा हूँ।' जूनियर डॉक्टर और बंसी, मुझे डॉ. अग्रवाल से विनती करते हुए सुनकर,

चिंतामुक्त।

इस समय तक सफदर का कैट स्कैन पूरा हो चुका था और उसे लाया गया।

निगरानी के लिए वापस आईसीयू में ले जाया गया। किसी को भी अंदर जाने की अनुमति नहीं थी। जब,
अंततः, डॉ. अग्रवाल पहुंचे, वे सीधे आईसीयू वार्ड में गए, और उसके बाद
कुछ देर बाद वह बाहर आया और पूछा, 'मुझे किसने बुलाया था?' मैंने जवाब दिया, 'यह मैं ही था।'
‘आप उनसे किस प्रकार संबंधित हैं?’
मैं उसका दोस्त हूँ।
नहीं। क्या यहाँ उसका कोई रिश्तेदार है?
मेरे बगल में खड़ी माला ने कहा, 'मैं उनकी पत्नी हूं।'
डॉ. एस.पी. अग्रवाल, जो बाद में स्वास्थ्य सेवाओं के महानिदेशक बने।
भारत सरकार में कार्यरत रहे और रेड क्रॉस के महानिदेशक पद से सेवानिवृत्त हुए।
माला और उसके आसपास मौजूद कई दोस्तों को समझाते हुए उसने कहा, 'यह तो बस एक चमत्कार है।'
हम उसे बचा सकते हैं। इस हालत में हम उसकी सर्जरी नहीं कर सकते। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। उसकी खोपड़ी तीन जगह से फट गई है, उसका दिमाग सूजा हुआ है।
और उसके कानों से मस्तिष्क का तरल पदार्थ रिस रहा है। यह बहुत ही कठिन परिस्थिति है।
और इन परिस्थितियों में हम उनका ऑपरेशन नहीं कर सकते। केवल उनके लिए प्रार्थना करें।
उसे।’ सब चुप थे। किसी को समझ नहीं आ रहा था कि क्या प्रतिक्रिया दें। मैंने उसे धन्यवाद दिया।
आ रहे हैं। डॉ. जैन, एक सज्जन व्यक्ति ने कहा, 'काश मैं कुछ कर पाता, बस प्रार्थना कर पाता।'

members of the Jan Natya Manch—Manish, Tyagi, Asif, Manoj, Gulati—all

कुछ ही मिनटों में प्रदर्शन समाप्त हो जाता। उन्होंने इंतजार करने से इनकार कर दिया और
हमसे बहस करने लगा, और यह बहस हिंसक हो गई। अचानक ही,
हमने कुछ लोगों को छड़ों और लाठियों के साथ हमारी ओर आते देखा, और वे
उन्होंने नाटक देख रहे सभी लोगों पर हमला करना शुरू कर दिया। प्रदर्शन कर रहे लोग। इस अफरा-तफरी में, सफदर, जो वहां मौजूद नहीं था।
प्रदर्शन कर रहा था लेकिन भीड़ के साथ खड़ा था, उसने हस्तक्षेप किया।
जुलूस में शामिल लोगों पर हमला करने वाले समूह ने अभिनेताओं और जनता की पिटाई शुरू कर दी।
इस अफरा-तफरी में, जब सफदर उन्हें शांत करने की कोशिश कर ही रहा था, तभी उस पर हमला हो गया।
उसके सिर पर छड़ें और लाठियाँ थीं। जबकि समूह के अन्य सदस्य उसे बचाने के लिए दौड़ पड़े।
उनकी जिंदगी के बीच, सफदर उस जगह जमीन पर गिर पड़ा जहां उसके नाटक 'हल्ला बोल' के कुछ हिस्से काट दिए गए थे।
इन गुंडों ने गोली चलाई। हमलावरों में से एक ने अपनी बंदूक से गोलियां भी चलाईं।
रिवाल्वर से हुए हमले में एक कारखाने के मजदूर राम लाल की मौत हो गई। वह बस एक साधारण व्यक्ति था।
नाटक देख रहा दर्शक।
हम सभी किसी चमत्कार की उम्मीद और प्रतीक्षा कर रहे थे। और भी लोग
वे अब अस्पताल के लॉन में थे, और वे देर रात तक वहीं रहे।
रात में कुछ थिएटर से जुड़े लोगों ने एक सार्वजनिक बैठक करने का फैसला किया।

रवींद्र भवन के लॉन, जहाँ कला, साहित्य की सभी राष्ट्रीय अकादमियाँ स्थित हैं।
और प्रदर्शन कलाएं स्थित हैं।
अगली सुबह 11 बजे, बड़ी संख्या में लोग विरोध प्रदर्शन करने के लिए एकत्र हुए।
हमले के खिलाफ। किसी ने बताया कि हमलावर एक व्यक्ति था।
मुकेश शर्मा नाम का एक छोटा-मोटा राजनीतिक कार्यकर्ता, जिसके बारे में अफवाह थी कि वह
दिल्ली के एक राजनीतिक नेता के बेहद करीबी होने के कारण मुकेश शर्मा को गिरफ्तार कर लिया गया।
लेकिन कुछ समय बाद उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया गया और बाद में उनके खिलाफ सबूतों की कमी के कारण उन्हें पूरी तरह से रिहा कर दिया गया। इस बैठक के बाद यह निर्णय लिया गया कि
अगली कार्रवाई तय करने के लिए शाम 5 बजे फिर से इकट्ठा हों।
2 जनवरी की दोपहर को मैं अस्पताल लौट आया। तब तक
सीपीआई(एम) पार्टी के नेता और कार्यकर्ता अस्पताल आए थे। माला की
सफदर की मां के साथ-साथ मां और पिता का भी वहां मौजूद लोगों की भीड़ ने स्वागत किया।
लोग परिवार के प्रति अपनी एकजुटता व्यक्त कर रहे हैं। अंजू ने मुझे बताया कि
सफदर की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। डॉक्टर होने के नाते, अंजू
उन्हें आईसीयू में सफदर से मिलने की अनुमति दी गई, जिन्हें फिलहाल वेंटिलेटर पर रखा गया था।
कुछ समय बाद, मैं शाम के लिए रवींद्र भवन वापस भागा।
बैठक। इसमें बड़ी संख्या में रंगमंच से जुड़े लोग और कई सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यकर्ता शामिल होंगे।

[illegible]

Alkazi, Manohar Singh, Krishen Khanna, Balwant Gargi, Manjeet Bawa,

Anand Patwardhan, Madan Gopal Singh, Aparna Caur and students from

[illegible]

उनके लोगों पर हमला हुआ। अस्पताल में हम बस इतना ही कर सकते थे कि अपना काम जारी रखें।
हम समूह बनाकर बातें करते हुए इंतजार कर रहे थे। हममें से ज्यादातर लोग सोहेल के आने का इंतजार कर रहे थे।
हाशमी, सफदर के भाई, जो अभी भी सीपीआई (एम) के वार्षिक सम्मेलन में भाग लेने के लिए बाहर थे।
केरल में कांग्रेस के सदस्य। जब वह आखिरकार पहुंचे, तो उन्हें तुरंत आईसीयू वार्ड में भर्ती कराया गया।
जहां पूरा परिवार किसी चमत्कार की उम्मीद में इंतजार कर रहा था। मुझे याद है कि उस दिन जब अंजू सफदर को देखने आईसीयू में गई, तो अम्माजी, उनके
आईसीयू के बाहर लगातार बैठी रहने वाली मां ने उससे पूछा था, 'तुम क्या चाहती हो?'
'सोच रही हो?' अंजू ने जवाब दिया, 'मुझे सफदर पर भरोसा है, और मैं उसका इंतज़ार कर रही हूँ।'
वह चमत्कार कर दिखाओ।’ अम्माजी ने कहा, ‘मैं तुम्हारी आँखों में आशा देख सकती हूँ, और यह
इससे मुझे विश्वास मिलता है।'
सभी लोग—सफदर के परिवार के सभी सदस्य, उनके दोस्त और करीबी— शुभचिंतक गलियारों और अस्पताल के अन्य हिस्सों में इस उम्मीद में इंतजार कर रहे थे कि शायद उन्हें कुछ अच्छा देखने को मिल जाए।
उस चमत्कार के बारे में। कई लोग चुपचाप इस वास्तविकता को स्वीकार करने के लिए संघर्ष कर रहे थे।
क्या हुआ था?
कुछ समय बाद सोहेल अस्पताल से बाहर आया और हम सभी से मिला।
अब अंधेरा हो चुका था और उसने मुझे घर जाने को कहा क्योंकि मैं पूरी रात वहीं था।

दिन। उन्होंने मुझे सुबह जल्दी वापस आने के लिए कहा। बड़ी अनिच्छा से।
मैं जाने के लिए तैयार हो गया, लेकिन मेरे पैर हिलने से इनकार कर रहे थे। थोड़ी देर बाद, हालांकि, मनीष
मिनोचा (अभिनेता और जन नाट्य मंच के संस्थापक सदस्य) और मैंने फैसला किया
घर जाकर अगली सुबह जल्दी लौटने के लिए। मैंने मनीष को शेख के घर छोड़ दिया।
सराय। डिफेंस कॉलोनी स्थित अपने फ्लैट में घुसते ही फोन की घंटी बजी। काव्या का फोन था।
कुमार, जो मेरे थिएटर ग्रुप प्रयोग का एक अभिनेता है। उसने कहा, 'जल्दी वापस आ जाओ।'
‘सफदर का देहांत हो गया है।’ मुझ पर सन्नाटा छा गया। अंजू समझ गई।
उस फोन कॉल का क्या मतलब था। मैंने मनीष को फोन किया। 'हमने सफदर को खो दिया है। मैं...'
मैं तुम्हें लेने आ रहा हूँ।’ हम दोनों दौड़कर अस्पताल वापस चले गए।
सफदर की मौत की खबर जंगल की आग की तरह फैल गई। पार्टी के लोग, थिएटर से प्रेस रिपोर्टर और अन्य लोगों की भारी भीड़ अब वहां मौजूद थी।
अस्पताल। केरल से कई सीपीआई(एम) नेता आए थे। उनमें से अधिकांश उत्तेजित और क्रोधित। कुछ लोग बहुत भावुक थे और नारे लगा रहे थे, जैसे कि...
कॉमरेड सफदर हाशमी, आप पर शांति हो, आप पर शांति हो, कॉमरेड सफदर हाशमी।
amar rahey [Red salute to comrade Safdar Hashmi, long live comrade

सफदर हाशमी]। उनकी आवाज में जोश था और आंखों में आंसू थे;
वे अपनी भावनाओं और अपनी बेबसी पर काबू नहीं रख सके।
माला ने हमें बताया कि सफदर ने कुछ समय पहले कहा था कि अगर कभी कुछ हुआ भी तो
उसके साथ जो कुछ हुआ, उसके अंगों का दान किया जाना चाहिए। सफदर की इस इच्छा का सम्मान करना ही था—उसका परिवार इस पर अडिग था। हैरानी की बात यह है कि अस्पताल ने
उन्होंने इसे हतोत्साहित किया, और प्रभारी लोगों का व्यवहार मूर्खतापूर्ण था।
तर्क बेतुके और अर्थहीन थे—जैसे, 'आप ऐसा क्यों करना चाहते हैं?'
क्या उसके शरीर को विकृत कर दें?’ इस तरह बहुत समय बर्बाद हो गया। अंततः, उसका
भाई सोहेल ने एम्स अधिकारियों से संपर्क किया, लेकिन केवल उनकी आंखें ही ठीक हो सकीं।
समय के रूप में दान दिया।
यह सब घटित होते हुए मैंने परिवार के साहस को देखा और
उन्होंने जिस तरह से व्यवहार किया। माला धैर्य की एक खान के समान थी;
अम्माजी शांत, अपने विचारों में लीन, हर पल को अपनी भाव-भंगिमाओं से भर रही थीं।
अत्यंत गरिमा; माला के माता-पिता शोक मना रहे थे, लेकिन चुपचाप देख रहे थे और
सब कुछ सहजता से ग्रहण करते हुए। सोहेल ने स्थिति को अपने नियंत्रण में ले लिया।
मैं लगातार माला से उसकी सहमति और मार्गदर्शन के लिए परामर्श करता रहता था। तभी मुझे यह बात समझ में आई।
मैंने देखा कि ये क्रांतिकारी परिवार किस चीज से बने हैं।

सफदर का अंतिम संस्कार अगली सुबह था। उनके शव को लाया गया।
नई दिल्ली के रफी मार्ग स्थित उपराष्ट्रपति भवन में स्थित पार्टी कार्यालय में, वह अपने लबादे में लिपटे हुए थे।
पार्टी के लिए खतरे की घंटी। अब यह पार्टी का मामला बन गया था।
एक-एक करके, पार्टी के सदस्य
मजदूर सफदर के शव के सामने खड़े हुए और अपनी पारंपरिक मुट्ठी बांधकर सलामी दी।
मैंने मुट्ठी का इशारा किया। मैं कमरे के एक कोने में खड़ा होकर इन रीति-रिवाजों को देख रहा था।
अम्माजी सफदर के शव के पास माला के बगल में खड़ी थीं। प्रत्येक पार्टी साथी
वे उनके सामने खड़े होकर अपनी संवेदना व्यक्त करेंगे। एक युवती वह अम्माजी और माला के पीछे खड़ी थी, लगातार अपने आंसू पोंछ रही थी। उसकी नज़र
मैं भावुक हो गई और मैं जानना चाहती थी कि वह कौन थी। किसी ने मेरे कान में फुसफुसाया,
‘यह शबनम है, सफदर की छोटी बहन।’ सफदर की भी एक बहन थी।
मेरी चाची अमेरिका से उनसे मिलने आई थीं। मैं उस समय एक अलग ही दुनिया में खो गया था।
अचानक मुझे एहसास हुआ कि मैंने एक बहुत ही प्यारे दोस्त को खो दिया है। मेरी आँखें
पानी से भीगी हुई थी, लेकिन सोहेल ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा, 'आँसू मत बहाओ। अम्माजी सामने हैं।'
'तुम्हारे बारे में।' मुझे उस पल की गंभीरता का एहसास हुआ और मैं चुपचाप बाहर निकल गया।
कमरे के बाहर, उपराष्ट्रपति भवन के लॉन में एक तंबू के नीचे, विभिन्न देशों के लोग मौजूद थे।

[illegible] (XX) XX [illegible] [illegible] XXX XXX [illegible] XX XX [illegible] XX XXXX X XXXX XXX

[illegible] [illegible] [illegible] XXX XX XXX [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] XX [illegible] XXX, [illegible], [illegible] [illegible], XXXX, XXX, [illegible] XXX [illegible] XXX

XXX XXXX [illegible] [illegible] XXXX XX XXX XXX, [illegible] XX [illegible] XXXX XXX

XXXX XX XXX [illegible] XX [illegible] XXXX [illegible] [illegible] XXXX XXX

XXXX: XXX [illegible] [illegible], XX.XX. XXXX XX XX [illegible] XXXX

[illegible] (XX) XX [illegible] XXXX XX [illegible] XXXX XX [illegible] XXXX XXXX [illegible] [illegible] XX [illegible] [illegible]

XXX XXX [illegible]

XXXX-XXXX XXXX [illegible] XX, XX XXXX XX XX [illegible] XX XX [illegible] XX XX [illegible] XXXX XX XXXX

XX-XXX [illegible] XX XXXX [illegible] XXX XX [illegible] XX [illegible] XXX XXXX XX XXXX [illegible] XXX

XX XX XXXX XX XX [illegible] XXXX XXXX XXXX XX X XXX, XXXX [illegible] XXXX XX X XXX XX XXXX XXXX XXX [illegible] XX X XXXX

[illegible] XX [illegible] [illegible]

XXXXX [illegible] XXXX XXXX XX XXXX, [illegible] [illegible], XX XX XXX XXXX XX, XX XXXX

[illegible] (XX) XX [illegible] XXXX XX XXXX XX XXXX XXXX [illegible]

XXX [illegible] [illegible] XXXX XXX, XX XX XXXX XX XXX-XXX [illegible] XXXX XXXX

XXX XXX XXX XXX XXXX XX XXX XXXX XX XXX XXX XXXX [illegible] XXXX XXX XXX XXX

[illegible] XX [illegible] XXXX XX [illegible] [illegible] XXX XX XXXX XXXX

commented, ‘Arre, yeh kya kar raha hai? Bahut ho gaya [What is he doing?
यह बहुत ज्यादा है]।'
अंततः, दोपहर लगभग 1 बजे, सफदर का शव, पार्टी के लाल रंग के कपड़ों में लिपटा हुआ, मिला।
जिस तंबू में लोग श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे थे, वहां से एक झंडा प्रकट हुआ।
उन्होंने जोर-जोर से नारे लगाए, ‘कॉमरेड सफदर हाशमी को लाल सलाम’।
कॉमरेड सफदर हाशमी को] और ‘कॉमरेड सफदर अमर रहे’
कॉमरेड सफदर]’। यह कहानी एक बेहद भावुक चरमोत्कर्ष तक पहुँच गई।
उपराष्ट्रपति आवास के लॉन के आसपास। सबसे पहले, उनके दोस्त और उनके समूह के कलाकार।
सभी प्रकट हुए, सभी ने अपने सिर के ऊपर ऊँची मालाएँ उठा रखी थीं। इसके बाद आए...
लाल झंडे लिए हुए शववाहक धीरे-धीरे औपचारिक रूप से आगे बढ़ रहे हैं।
फिर, बहुत धीरे-धीरे, सफदर के शरीर को एक सजी हुई गाड़ी पर रखा गया।
फूलों के साथ, उनकी अंतिम यात्रा शुरू हुई। किसी समय, किसी ने दल के एक सदस्य ने मुझे गाड़ी पर चढ़ने के लिए कहा, और मैंने वैसा ही किया।
कैरिज में सोहेल हाशमी, माला हाशमी, प्रकाश करात, महासचिव बैठे थे।
सीपीआई (एम) के भीष्म साहनी, जो प्रख्यात हिंदी लेखक और सफदर के शिक्षक थे, और मैं। मुझे लगता है कि मैं ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो सीपीआई (एम) से नहीं था और जिसे इस पद के लिए चुना गया था।
सफदर के शव को ले जा रही गाड़ी पर।

जैसे-जैसे अंतिम संस्कार जुलूस आगे बढ़ा, भावनाएं उग्र होती गईं और किसी ने भी आज्ञा का पालन नहीं किया।
पुलिस के निर्देशों का पालन नहीं किया गया। किसी ने भी पुलिस द्वारा निर्धारित स्वीकृत मार्ग का अनुसरण नहीं किया।
हमें अनुसरण करने के लिए कहा गया। अंतिम संस्कार जुलूस उपराष्ट्रपति भवन से होते हुए आगे बढ़ा।
कनॉट प्लेस, बाराखंबा रोड, मंडी हाउस, आईटीओ, दिल्ली होते हुए गेट, दरियागंज, कश्मीरी गेट और अंत में निगमबोध घाट।
अंतिम संस्कार का जुलूस लगभग दो किलोमीटर लंबा था; सामान्यतः इतना लंबा जुलूस
जुलूस केवल दिवंगत राष्ट्रीय नेताओं के अंत्येष्टि समारोहों में ही देखने को मिलता था।
इस यात्रा के दौरान, मुझे डिब्बे में होने पर काफी अपराधबोध महसूस हुआ क्योंकि मेरे अधिकांश साथी
दोस्त और थिएटर से जुड़े लोग पैदल चल रहे थे।
श्मशान घाट पहुँचकर राजेंद्र शर्मा ने फिर से शुरू किया... सफदर के बलिदान के बारे में लगातार बोलते हुए एक और व्याख्यान देना और
भारतीय सरकार के खिलाफ बोलना। जब बहुत लंबा समय बीतने लगा, तो मैंने देखा
पार्टी के दिग्गज नेता हरकिशन सिंह सुरजीत ने उन्हें अपनी आँखें बंद करने का इशारा किया।
भाषण के बाद अंतिम संस्कार होने दें। राजिंदर शर्मा ने अंत में अपना भाषण समाप्त किया।
उनके भाषण के बाद, लोगों ने सफदर के पार्थिव शरीर पर अंतिम श्रद्धांजलि के रूप में फूल चढ़ाए।
सफदर की इच्छा के अनुरूप उनका अंतिम संस्कार इलेक्ट्रिक श्मशान में किया गया।

बहुत धीरे-धीरे लेकिन हिचकिचाते हुए, लोग उस जगह से दूर चले गए।

मुझे ऐसे लोगों को देखने और उनसे मिलने की याद है जिनका मुझसे कोई लेना-देना नहीं था।

सफदर या उनका काम। मैंने कई नौकरशाहों, उनकी पत्नियों, प्रोफेसरों को देखा,

स्कूल शिक्षक, यूनेस्को के कर्मचारी और अधिकारी। कई लोग जिनके पास

वे अपने निजी काम के लिए देश के विभिन्न हिस्सों से शहर आते हैं।

विरोध प्रदर्शन के प्रतीक के रूप में जुलूस में शामिल हुए थे। जब अधिकांश लोग

जब अंजू चली गई, तो मैंने और अंजू ने श्मशान स्थल की ओर पीछे मुड़कर देखा। हमारे मन में, हम दोनों

सफदर को चुपचाप विदाई दी गई।

बूटा सिंह, घर में विरोध प्रदर्शन

दिल्ली के सांस्कृतिक समुदाय ने घर तक मार्च निकालने का फैसला किया।

मंत्री बूटा सिंह, पटेल चौक के पास। ठीक उसी दिन, 2 जनवरी 1989 को, सफदर का निधन हो गया। यह एक अचानक लिया गया निर्णय था, और हम सब एक साथ जुलूस में शामिल हुए।

इसका उद्देश्य जनता के आक्रोश और सांस्कृतिक विरोध को दर्ज करना था।

समुदाय ने सफदर हाशमी की हत्या पर प्रतिक्रिया दी थी। हमने पुलिस को नहीं बुलाया था।

अनुमति मिल गई थी, और भावनाएं बहुत तीव्र थीं। जब हम पहुंचे

गृह मंत्री के आवास पर, हमारा सामना सशस्त्र बलों की एक मजबूत टुकड़ी से हुआ।
हमने गृह मंत्री से मिलने की मांग की, लेकिन पुलिस ने इनकार कर दिया।
चलिए, उनके निवास के मुख्य द्वार की ओर चलें। एक टकराव
हमारे और पुलिस के बीच तनाव बढ़ने लगा। उन्होंने हमें पीछे धकेलने की कोशिश की।
भीड़ ने नारे लगाए और मामूली झड़प हो गई। हालात बिगड़ गए।
जब पुलिस ने हबीब तनवीर, केशव कोठारी और मनोहर को धक्का दिया सिंह। इससे कलाकार भड़क उठे और स्थिति बिगड़ती हुई प्रतीत होने लगी।
बहुत बुरा। हबीब तनवीर और मनोहर सिंह पुलिस पर चिल्लाने लगे।
हमें गृह मंत्री मनोहर सिंह से मिलने नहीं दिया गया, जिन्हें मैं जानता था।
एक शांत और संयमित व्यक्ति होने के बावजूद, अब वह अपना धैर्य खो बैठा था और चिल्ला रहा था।
सफदर पर हमले के समय पुलिस की अक्षमता के लिए उन्हें दोषी ठहराया जाना चाहिए। उन्होंने ही उकसाया था।
पुलिस को चुनौती देते हुए, उसने उसे गिरफ्तार करने की हिम्मत दिखाई। हबीब भी इसमें शामिल हो गया, और देखते ही देखते सभी हममें से प्रदर्शनकारियों ने चिल्लाना शुरू कर दिया, 'हमें गिरफ्तार करो, हमें गिरफ्तार करो, हमें गिरफ्तार करो।'
हालात बेकाबू होने की कगार पर थे जब एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने अधिकारी ने हस्तक्षेप किया। उन्होंने विनम्रतापूर्वक हमसे उन्हें विरोध पत्र सौंपने का अनुरोध किया।
और उन्होंने वादा किया कि वे इसे गृह मंत्री को भेज देंगे, जो या तो

या तो वह अपने घर में छिपा हुआ था या उसमें हमारा सामना करने की हिम्मत नहीं थी।
सफदर की हत्या को लेकर दो तरह के विरोध प्रदर्शन हो रहे थे—एक दिल्ली के रचनात्मक समुदाय द्वारा आयोजित और दूसरा आयोजन सफदर की पार्टी, सीपीआई (एम)। मैं मुख्य रूप से रचनात्मक कार्यों में शामिल था।
वह अपने समुदाय से बहुत कम जुड़ा हुआ था और सीपीआई (एम) से उसका बहुत कम संबंध था, सिवाय इसके कि वह उनके कुछ कार्यक्रमों में शामिल हो गया था।
विरोध प्रदर्शन। दिल्ली का रचनात्मक समुदाय, यानी वहां के रंगमंच से जुड़े लोग,
संगीतकार, नर्तक, चित्रकार, फोटोग्राफर, फिल्म निर्माता और नागरिक समाज
सदस्यों ने मुलाकात की और एक स्मारक के माध्यम से एक बड़े राष्ट्रीय विरोध प्रदर्शन की योजना बनाई।
बैठक में हमने सुझाव मांगे और संभावनाओं व पैमाने पर विचार किया।
बैठक में यह बात सामने आ सकती है।
4 जनवरी 1989 को सफदर की मृत्यु के कुछ ही दिनों के भीतर,
कई जगहों से स्वतःस्फूर्त सुझाव आए कि नाटक हल्ला बोल
इसका समापन ठीक उसी स्थान पर होना चाहिए जहां सफदर शहीद हुए थे। यह मांग रंगमंच से जुड़े लोगों और सीपीआई (एम) पार्टी के कार्यकर्ताओं की ओर से आई थी।
उनके नेताओं को लोकतांत्रिक अधिकारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को पुनः स्थापित करना चाहिए और
लोगों के प्रदर्शन करने का अधिकार। यह भी आम तौर पर माना जाता था कि

सफदर की हत्या से जनता के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन हुआ था।
इसलिए उस जगह को पुनः प्राप्त करना आवश्यक था। यह एक कठिन निर्णय रहा होगा।
माला को अभिनय करने के लिए राजी करना मुश्किल था, क्योंकि वह नाटक में मुख्य अभिनेत्री थी।
4 जनवरी 1989 की सुबह, वामपंथी दलों के भारी संख्या में लोग और दिल्ली का रचनात्मक समुदाय एक साथ झंडापुर के लिए रवाना हुआ।
रवींद्र भवन, जहाँ कला, नृत्य और रंगमंच की सभी राष्ट्रीय अकादमियाँ स्थित हैं।
साहित्य और साहित्य यहीं स्थित हैं। रवींद्र भवन इन सभी का केंद्र बन गया।
बैठकों और विरोध प्रदर्शनों के दौरान। विरोध प्रदर्शनों ने गहरा अर्थ ग्रहण कर लिया क्योंकि...
इस स्थान की स्थापना भारतीय कला के एक महान व्यक्तित्व के नाम पर की गई थी और
सौंदर्यशास्त्र। जब हम सभी साहिबाबाद के पास बाहरी इलाके में स्थित झंडापुर पहुंचे।
पूर्वी दिल्ली में जहां सफदर पर हमला हुआ था, वहां हजारों औद्योगिक श्रमिक मौजूद थे।
आस-पास के कारखानों से भी लोग लंबी शोभायात्रा में हमारे साथ शामिल हुए।
यह मार्ग औद्योगिक शहर साहिबाबाद के चारों ओर घूमता हुआ अंत में जाकर समाप्त होता था।
झंडापुर चौराहा, वही जगह जहां 'हल्ला बोल' नाटक पर हमला हुआ था।
और सफदर के सिर में गंभीर चोट आई। इस विशाल जुलूस के दौरान... श्रमिकों के रहने के क्वार्टर का उद्देश्य भी उनके मन में पैदा हुए डर को दूर करना था।

उनमें से कुछ गुंडों ने सफदर की हत्या के बाद उन पर हमला किया। कुछ देर बाद जब यह सब शुरू हुआ।
वामपंथी नेताओं द्वारा दिए गए व्याख्यान जिनमें वापसी के महत्व को समझाया गया है
उसी स्थान पर हल्ला बोल का प्रदर्शन करें जहां सफदर ने अपनी जान गंवाई थी, साथ ही साथ
उस दिन दर्शकों में मौजूद मजदूर राम बहादुर के लिए अब समय आ गया था
जिस नाटक का मंचन किया जाना है।
वातावरण में तनाव चरम पर था और सन्नाटा पसरा हुआ था।
नाटक शुरू होने का इंतजार करते हुए दर्शकों में मौजूद हजारों लोग तनाव में थे।
शुरुआत में। दर्शकों और अभिनेताओं के बीच एक अजीब सी भावना दौड़ गई, जिन्होंने ठीक चार दिन पहले उसी स्थान पर अपने साथी को खो दिया था।
वे सभी प्रदर्शन के उद्देश्य से पूरी तरह से प्रेरित प्रतीत हो रहे थे।
रंगमंच की दुनिया में शायद ही कोई दूसरा उदाहरण हो जहाँ एक
यह प्रदर्शन उसी स्थान को पुनः प्राप्त करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था जहाँ एक थिएटर समूह ने प्रदर्शन किया था। इसके निर्देशक, अभिनेता और आयोजक सब गायब हो चुके थे। हल्ला बोल का प्रदर्शन
भारत के रंगमंच के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़, एक नया अध्याय लिखा गया। यह एक
भारतीय विरोध रंगमंच के लिए ऐतिहासिक क्षण।
उस दिन सफदर के बिना 'हल्ला बोल' देखना मुझे अधूरापन महसूस करा रहा था, और मैं

वह प्रदर्शन से दूर चला गया और चुपचाप बैठकर अपने नुकसान पर विचार करने लगा।
मुझे एहसास हुआ कि सफदर के असली हत्यारे वे गुंडे नहीं थे जिन्होंने उसे मारा था।
उस दिन लोहे की छड़ों की बजाय छिपे हुए खलनायकों ने लोकतांत्रिक मूल्यों को महत्व नहीं दिया।
भारतीय राजनीति के शतरंज के खेल में असहमति। ये दुश्मन नहीं हैं
भारतीय इतिहास के हाशिये में उल्लेखित, लेकिन उनके कार्यों ने इसे बदल दिया।
बेशक। आखिरकार, 1984 के सिख विरोधी दंगे पहले ही घटित हो चुके थे।
हिंसा, आपराधिक इरादे और
बहुसंख्यकवाद।
5 जनवरी को भी विरोध प्रदर्शनों ने अपनी गति बनाए रखी और एक और मार्च निकाला गया।
शिवाजी पार्क से गृह मंत्री के आवास तक एक यात्रा का आयोजन किया गया था। मैं उसमें शामिल नहीं हो सका।
मैं इसमें शामिल हुआ, क्योंकि मैं अन्य कलाकारों के साथ राष्ट्रीय विरोध प्रदर्शन आयोजित करने में व्यस्त था। 9 तारीख को
जनवरी में, रवींद्र भवन के लॉन में, हमारी एक लंबी बैठक हुई थी। संगीत नाटक अकादमी। इसमें इब्राहिम अलकाज़ी ने भाग लिया था, जो वह नियमित रूप से उस स्थान पर होने वाली विरोध सभाओं में भाग लेता था। इस सभा में उसने भाग लिया।
एक मुख्य भूमिका के लिए, मैं प्रतिभागियों के बारे में हर छोटी से छोटी जानकारी जानना चाहता था।

और आयोजन स्थल का डिज़ाइन। उनके छात्र होने के नाते, बंसी कौल और मुझे यह कार्य सौंपा गया था।

लॉन पर जगह की व्यवस्था करने के लिए आवश्यक विवरण प्राप्त करने के साथ

रवींद्र भवन। अल्काज़ी ने तो यहाँ तक कह दिया था, 'रैना, तुम्हारी गर्दन चॉपर पर है।'

आपको यह बात याद रखनी चाहिए।’ मैंने जवाब दिया, ‘सर, अब हम वयस्क थिएटर हैं।’

लोगों, कृपया हम पर इसी रूप में भरोसा करें।’ उन्होंने पलटवार करते हुए कहा, ‘हमें एक गरिमापूर्ण रवैया अपनाना होगा।’

और सफदर के लिए एक गंभीर स्मारक।

कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के बाद, हमें इसके क्रियान्वयन के बारे में सोचना पड़ा।

कई कलाकारों ने योगदान दिया, यहां तक कि उन्होंने अपना पैसा भी खर्च किया।

स्मारक समारोह को देखने के लिए। उनमें से कुछ मनजीत बावा, बंसी थे।

Kaul, Ram Rahman, Parthiv Shah, Sashi Kumar, Dadi Pudumjee, Anand

Patwardhan, Sohail Hashmi and Rajendra Prasad (Rajan). Safdar’s death

जिसने हम सबको एक साथ बांध रखा था।

मंडी हाउस के उस गोलचक्कर में, फव्वारे और चाय के कोने के बीच में बैठे हुए,

हममें से कुछ लोगों ने स्मृति सभा के लिए एक बैज डिजाइन करने का निर्णय लिया। आनंद

प्रसिद्ध वृत्तचित्र फिल्म निर्माता पटवर्धन ने ‘स्टॉप द’ (Stop the) वाक्यांश गढ़ा था।

संस्कृति की हत्या।’ इसलिए, अंतिम बैज पर सफदर के साथ यह पंक्ति भी अंकित थी।

तस्वीर काले और सफेद रंग में थी। यही विरोध प्रदर्शन का पहला प्रतीक बन गया। 9 तारीख को

जनवरी में, देश के कई हिस्सों में एक साथ राष्ट्रीय विरोध प्रदर्शन हुए।

देश भर में। दिल्ली में, इसकी शुरुआत शाम लगभग 5.30 बजे मशाल जुलूस के साथ हुई।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय से। यह मामला भगवान दास के माध्यम से आगे बढ़ा।

रवींद्र भवन के प्रांगण तक जाने वाली सड़क। यह एक मौन पदयात्रा थी जिसमें मांग की गई थी।

सफदर हाशमी की हत्या के लिए न्याय।

रवींद्र भवन में, जैसे ही अंधेरा होने लगा, मशालधारियों ने स्थिति का जायजा लिया।

उन्होंने अपनी मशालें एक बड़े घेरे में लगा रखी थीं। सफदर के चित्र वाला एक बड़ा कपड़ा बैनर भी लगा हुआ था।

ऊपर से आती कई मशालों की हल्की रोशनी से जगमगाते पेड़ से लटका हुआ।

नीचे से चमक रहा था। मशाल के घेरे के अंदर का स्थान चार चरणों में विभाजित था।

एक दूसरे से समान दूरी पर। प्रत्येक मंच पर चार अलग-अलग क्षेत्रों के अभिनेता खड़े थे।

theatre groups—Jana Natya Manch, Prayog, Nishant and Parcham—in

काले कैजुअल कपड़े। प्रत्येक समूह ने सफदर को नाटकीय श्रद्धांजलि के रूप में एक गीत गाया।

जिसमें कई वरिष्ठ और प्रख्यात थिएटर कलाकार—ज़ोरा सहगल, ई. अलकाज़ी,

हबीब तनवीर, भीष्म साहनी और मोलोयश्री (माला) हाशमी ने बात की प्रत्येक व्यक्ति ने कुछ मिनट दिए, जिससे घटना के महत्व पर बल मिला। उनके शब्दों ने
वे स्नेहपूर्ण, मार्मिक और भावपूर्ण थे।
मशाल के घेरे के चारों ओर और मंच के बीच में खड़ी भीड़
उन स्थानों ने एक विनम्र, अनूठा वातावरण बनाया। हममें से किसी ने भी पहले कभी ऐसा अनुभव नहीं किया था।
मैंने एक अत्यंत भावपूर्ण स्मृति सभा देखी।
ललिता रामदास, एक सामाजिक कार्यकर्ता और एडमिरल रामदास की पत्नी, जिनसे मैं
1984 में सिख विरोधी दंगों के दौरान जिनके साथ मैंने काम किया था, उन्होंने मुझे एक अंतर्देशीय पत्र भेजा।
केरल की एक महिला ने बताया कि वह स्मारक बैठक में शामिल हुई थी, इससे उन्हें स्पेनिश स्मारक सभाओं की याद आ गई। इस राष्ट्रीय स्मारक के दौरान
बैठक में मंडी के आसपास की कॉलेज रोड का नाम बदलने की मांग रखी गई।
यह घर सफदर हाशमी मार्ग पर स्थित है।
जब बैठक समाप्त हुई, तो कई लोग जो सफदर को जानते थे या नहीं जानते थे,
उन्हें जानने वाले लोग आंखों में आंसू लिए आए और सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया।
या तो उन्हें प्यार से गले लगाकर या उनसे हाथ मिलाकर। शायद यही सही था।
दिल्ली में पहली बार ऐसा हुआ कि लोगों ने इस नुकसान को साझा किया और एकजुट होकर सामने आए।

रंगमंच के सदस्यों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए उन्होंने स्वतः ही ऐसा किया।
जनम समूह में माला और उनके परिवार के अन्य सदस्य भी शामिल थे। उन्होंने अपने बलिदान को जीवित रखने के तरीकों के बारे में बात की। उस माहौल में
स्मृति सभा के बाद की शाम इतनी तनावपूर्ण थी कि कोई भी नहीं चाहता था
कार्यक्रम स्थल छोड़ने के लिए। मेरी मुलाकात कुछ ऐसे लोगों से हुई जो पहली बार कुछ पेशकश कर रहे थे।
सफदर के बलिदान के सार को जीवित रखने के लिए किसी भी प्रकार का समर्थन। मैं एक व्यक्ति से मिला।
कश्मीरी शॉल ओढ़े दाढ़ी वाले एक सज्जन ने चुपचाप पेशकश की सफदर के नाम पर छात्रवृत्ति। मैंने उसका नाम और फोन नंबर ले लिया, और
इन वर्षों में वह एक घनिष्ठ मित्र और एक महान समर्थक बन गए हैं। सफदर हाशमी मेमोरियल ट्रस्ट। उनका नाम अनिल चंद्र था।

भारत का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव

12 जनवरी 1989 को भारत ने अपना बारहवां अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव मनाया।
सिरी फोर्ट सभागार में। उद्घाटन समारोह शाम लगभग 6 बजे शुरू होना था।
इस महोत्सव में कई अंतरराष्ट्रीय फिल्म निर्माताओं को आमंत्रित किया गया था, और उनमें से कुछ
हममें से कुछ लोग कुछ तख्तियां लेकर सिरी फोर्ट के लॉन क्षेत्र में चुपके से घुस गए थे।

मौजूदा शासन और सफदर द्वारा मुद्रित विरोध के कुछ हज़ार पर्चे

हमारे बैग में छिपे हुए दोस्त। हमारे पास मुख्य समारोह में प्रवेश करने के लिए कोई निमंत्रण पत्र नहीं थे।

सभागार में भव्य समारोह का आयोजन किया गया था, जहां विभिन्न देशों के फिल्म निर्माताओं के लिए कार्यक्रम आयोजित किए गए थे।

भारत और विदेश में। फिर भी, हम कलाकारों के अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने कार्यक्रम स्थल के अंदर विरोध प्रदर्शन करना चाहते थे ताकि उन्हें वास्तविक स्थिति से अवगत कराया जा सके।

भारत में कला के मामलों पर चर्चा हुई। चूंकि हम मुख्य स्थल में प्रवेश नहीं कर सके, इसलिए हमने

हमने विरोध जताने के लिए प्रवेश द्वार के बाहर खड़े होकर अपने पोस्टर लहराए।

तख्तियों और पर्चों के साथ। इस दिखावटी विरोध प्रदर्शन ने सुर्खियां बटोरीं और कई विदेशी

टेलीविजन क्रू ने हमारे विरोध प्रदर्शन को कवर करना शुरू कर दिया। कई मशहूर हस्तियां भी इसमें शामिल हुईं।

वह समारोह में दाखिल हुए और एकजुटता के प्रतीक के रूप में कुछ मिनटों तक हमारे साथ खड़े रहे।

कुछ लोगों ने सफदर पर हुए हमले के बारे में बयान भी दिए और इसकी निंदा की।

भारतीय राज्य कला के प्रति अपनी असहिष्णुता के लिए जाना जाता है। इससे काफी कुछ उत्पन्न हुआ।

हमारे और सुरक्षा गार्डों तथा सरकार के बीच थोड़ा तनाव है।

अधिकारियों को भी शर्मिंदगी उठानी पड़ी। इससे महोत्सव के आयोजकों को भी शर्मिंदगी उठानी पड़ी। चूंकि कई वीआईपी

हम वहां उपस्थित होने वाले थे, पुलिस हमें हटाना चाहती थी, लेकिन हम वहीं डटे रहे।

ज़मीन पर। उन्होंने हमारे खिलाफ बल का प्रयोग नहीं किया क्योंकि इससे स्थिति और बिगड़ सकती थी।

कानून-व्यवस्था की समस्या थी। हम प्रदर्शनकारी यहीं डटे रहने के लिए दृढ़ थे।
कुछ देर बाद हमने शबाना आज़मी को निर्देशक जॉन के साथ देखा। श्लेसिंगर, कार्यक्रम स्थल में प्रवेश करें। उनकी फिल्म मैडम सूसात्ज़्का का कार्यक्रम निर्धारित था।
इसे महोत्सव में प्रदर्शित किया जाना था। दोनों कुछ मिनटों तक हमारे साथ खड़े रहे और
गौतम घोष और उन्होंने वहां मीडिया से विरोध प्रदर्शन के बारे में टिप्पणी की।
एम.एस. सथ्यू भी उनके साथ शामिल हो गए। मैंने विरोध प्रदर्शन के पर्चे वाला एक चमड़े का थैला ले रखा था।
और मैंने चुपके से शबाना से उनमें से कुछ को सभागार में ले जाने का अनुरोध किया।
गौतम घोष ने टिप्पणी की, 'क्या आप आकर इन्हें वितरित नहीं कर सकते?'
आप लोग दर्शकों के सामने कैसे आएंगे?’ मैंने जवाब दिया कि हममें से किसी के पास प्रवेश पास नहीं था, इसलिए
शबाना और सथ्यू ने सुझाव दिया कि हममें से कुछ लोग उनके समूह में शामिल हो जाएं और ऐसा दिखावा करें जैसे कि
हम सब एक साथ आए थे। हममें से तीन ने इन चार का अनुसरण किया।
हम मशहूर हस्तियों के बीच ऐसे घुलमिल गए जैसे हम उनके समूह का हिस्सा हों, और हम अंदर प्रवेश करने में सफल रहे।
मुख्य स्थल।
आधिकारिक उद्घाटन किसी भी क्षण होने वाला था, इसलिए शबाना, सत्यु और गौतम घोष आगे की सीटों पर बैठने के लिए हमें छोड़कर चले गए।
पंक्तियों में। मैंने हॉल के अंधेरे में चुपचाप अपने बैग का हैंडल खोला और

मैंने पर्चे निकाले। मैंने एक बंडल अपने सहकर्मियों को दे दिया और बाकी अपने पास रख लिए।

दूसरा मेरे लिए। समारोह की शुरुआत कबीर बेदी ने की, जिन्होंने समारोह के संचालक के रूप में मंत्रालय की प्रशंसा में अपने सभी ज्ञात विशेषणों का पाठ किया।

सूचना एवं प्रसारण। हमने चुपचाप अपने विरोध प्रदर्शन के पर्चे वितरित किए।

दर्शकों के बीच में कुछ लोग बैठे हुए थे, उन्होंने भी हमारी मदद की। कुछ लोग जो पहले से ही बैठे हुए थे, उन्होंने भी हमारी मदद की।

अन्य मेहमानों को पर्चे बाँट दें। फिर कबीर बेदी ने शबाना को आमंत्रित किया।

आज़मी अभिनेता विक्टर बैनर्जी के साथ मंच पर अपने-अपने विचार व्यक्त करने के लिए उपस्थित थीं।

त्यौहार के बारे में, भारत सरकार की प्रशंसा करने के लिए और इसके बारे में बात करने के लिए

भारतीय सिनेमा।

इस समय तक, हमने लगभग पूरे सभागार को अपने काले रंग से ढक दिया था।

सफेद रंग के पर्चे थे, इसलिए लगभग सभी मेहमानों के हाथों में एक-एक पर्चा था।

जब कबीर बेदी ने शबाना को बोलने के लिए कहा, तो उन्होंने अपना विरोध जताया।

उन्होंने एक पर्चा उठाया और बोलते समय उसे दर्शकों के सामने लहराया, 'मुझे यकीन है कि आप

यह कागज़ आपके हाथों में है, और मैं इसे मंच से पढ़ रहा हूँ।

कलाकारों द्वारा सफदर हाशमी की क्रूर हत्या के खिलाफ विरोध दर्ज कराएं।

बिल पढ़ते हुए उन्होंने आगे कहा, ‘सफदर हाशमी की हत्या के साथ, स्वतंत्रता समाप्त हो गई है।’
वर्ष 1989 में अभिव्यक्ति की शुरुआत अशुभ संकेत के साथ हुई है। बर्बर
हमारे साथी कलाकार और लेखक की हत्या कला जगत के लिए एक गहरा सदमा है।
और देश भर के बुद्धिजीवियों के लिए। यह एक दुखद और गंभीर घटना के रूप में सामने आई है।
यह हमें अपने तरीके से जीने में आने वाले अत्यधिक खतरों की याद दिलाता है।
व्यवसाय और विश्वास। कलाकारों पर हमले की घटनाएं घटित हुई हैं। पहले इनकी संख्या कम थी, लेकिन अब इनकी आवृत्ति चिंताजनक रूप से बढ़ गई है। इस दुखद घटना के साथ
सफदर हाशमी की मृत्यु के बाद, अब समय आ गया है कि हम खुद को संगठित करें।
विघटनकारी शक्तियों के खिलाफ, ताकि हम अब और न रह सकें।
भंगुर, असुरक्षित और अकेला।
जैसे ही उन्होंने बोलना समाप्त किया, सभागार में हंगामा मच गया।
समारोह की गंभीरता पूरी तरह से गायब हो गई थी। लोग चिल्ला रहे थे, और
इस सारी हलचल को टेलीविजन कैमरों ने लाइव रिकॉर्ड कर लिया और देश भर में लाखों लोगों ने इसे देखा। हमने इस अफरा-तफरी में देखा कि...
काले चश्मे पहने, क्रोधित एच.के.एल. भगत, जो उस समय सूचना मंत्री थे,
और राजीव गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार के प्रसारण में जल्दबाजी दिखाई गई।

शबाना और जनता के विरोध के चलते, वह मंच पर आकर सभी आरोपों का खंडन करते हुए खुद और अपनी सरकार का बचाव करने की कोशिश करने लगे। लेकिन शबाना और जनता के विरोध के कारण
सभागार में महोत्सव का उद्घाटन समारोह समाप्त हो चुका था। अगले दिन राष्ट्रीय और स्थानीय मीडिया खबरों से भर गया था। पिछली शाम के कार्यक्रम में राष्ट्रीय और अन्य हस्तियों की टिप्पणियों से इसे और भी खास बना दिया गया था।
अंतर्राष्ट्रीय फिल्म जगत की हस्तियाँ। यह भारतीय फिल्म जगत के लिए बहुत शर्मनाक बात थी।
राज्य। उत्सव का उद्घाटन शायद विरोध प्रदर्शनों के उस चरण की पराकाष्ठा थी।
रचनात्मक समुदाय द्वारा।

---

6. सहमत अभिलेखागार।

8

सफदर हाशमी मेमोरियल ट्रस्ट-सहमत

SAHMAT का निर्माण कई बैठकों और चर्चाओं के साथ शुरू हुआ।

ट्रस्ट के सदस्य कौन होंगे और ट्रस्ट किस प्रकार का कार्य करेगा

ठीक रहेगा। पहली मुलाकात में, मुझे लगा कि कुछ दोस्त जो पूरी तरह से...

उस समय सीपीआई (एम) के सदस्य चाहते थे कि फैसला उनकी पार्टी के पक्ष में आए।

सच कहूँ तो, मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं थी। सफदर एक सक्रिय सदस्य थे।

सीपीआई(एम) पार्टी, जिसने प्रदर्शन की वेदी पर अपना जीवन बलिदान कर दिया था।

बहुत ही शानदार स्ट्रीट थिएटर का मंचन करते समय जगह की कमी। यह नाटक, इसके अलावा

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से प्रेम कहानी दिखाने का एक प्रयोगात्मक प्रयास होने के कारण, यह भी एक

यह कहानी श्रमिक वर्ग के संघर्षों से संबंधित है, इसलिए यह स्पष्ट रूप से CITU समर्थक है।

(सेंटर ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियंस) नाटक। जनम नाटक हमेशा से समर्थक रहे हैं-

श्रमिक वर्ग, श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा करना और उनके अधिकारों को उजागर करना।

उन्हें बेहतर वेतन और बेहतर जीवन स्थितियों को सुरक्षित करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

सफदर के नाम पर उनकी पार्टी के सदस्यों का भरोसा होना स्वाभाविक था।

लेकिन सफदर एक रचनात्मक लेखक, कवि, नाटककार, फिल्म निर्माता भी थे।

अभिनेता और भी बहुत कुछ। उनके कुछ ऐसे लोगों से व्यक्तिगत संबंध थे जो उनसे इतर थे।

वह अपनी पार्टी से जुड़ा हुआ था और अपने कई वर्षों के कार्यकाल में उसने कई दोस्त बनाए थे।

नई दिल्ली स्थित पश्चिम बंगाल सूचना केंद्र में वरिष्ठ अधिकारी।

कनॉट प्लेस स्थित बाबा खड़क सिंह मार्ग पर स्थित कार्यालय एक खुला अड्डा था।

उन सभी प्रकार के रचनात्मक लोगों के लिए जो उनके साथ समय बिताने के लिए आते थे,

और नवीनतम फिल्मों, किताबों, नाटकों और चित्रों पर चर्चा करते हैं। सफदर का गर्मजोशी भरा रवैया।

उनके व्यक्तित्व और खुले दिल के कारण लोग उनसे आसानी से जुड़ जाते थे।

और उनके साथ दीर्घकालिक रचनात्मक तालमेल स्थापित करें। वह संकीर्ण सोच वाले व्यक्ति नहीं थे।

चाहे वह एक रूढ़िवादी विचारधारा वाला व्यक्ति हो या एक कट्टर राजनीतिक ब्राह्मण; उसकी ताकत इसी में निहित थी।

वह बौद्धिक दृढ़ता जिसके साथ वह मार्क्सवाद को वैज्ञानिक उपकरण के रूप में लागू करता था

जीवन को उसके विभिन्न रूपों में समझना। एक ऐसा ट्रस्ट जिसमें केवल उनकी राजनीतिक पार्टी के लोग थे, मुझे संतुष्ट नहीं कर पाया। मुझे लगा कि यह

मुझे कुछ कमी लग रही थी, और मैंने अपने विचारों को पूरी ईमानदारी से व्यक्त किया।

मीटिंग में कहा गया कि मुझे, या मेरे जैसे किसी अन्य व्यक्ति को, ट्रस्ट में रखना

इससे इसे कोई प्रतिष्ठा नहीं मिलेगी। यह एक औसत दर्जे का संगठन होगा क्योंकि हम

वे सभी युवा थे और सफदर के कार्यों को पूरा करने और लागू करने के लिए स्वयंसेवक के रूप में ही बेहतर हो सकते थे।

विचार। हमें वास्तव में ऐसे न्यासियों की आवश्यकता थी जो अपने- अपने क्षेत्रों में योगदान के लिए जाने जाते हों।

और कौन इस भरोसे को कायम रख सकता है?

मेरे इस हस्तक्षेप के कारण प्रतिभागियों के बीच काफी देर तक सन्नाटा छा गया।

उन्होंने सोचा था कि बैठक सुचारू रूप से होगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

उस तरह से। मेरे बोलने के बाद कुछ और लोगों ने भी बोला, लेकिन हम किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सके।

ट्रस्ट के बोर्ड में बैठने वाले व्यक्तियों के नामों पर आम सहमति।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त वरिष्ठ नागरिकों के नाम चाहिए थे, जिनका नाम शामिल करने से

इस नए संगठन को कुछ मजबूती प्रदान करें। हमारे विरोध प्रदर्शनों ने नए मुद्दे उठाए थे।

पूरे देश में उम्मीद जगी थी, इसलिए विश्वास ऐसा होना चाहिए था जिस पर लोग भरोसा कर सकें।
राष्ट्रीय स्तर तक।
मैं मदन गोपाल सिंह के साथ बैठक से बाहर आया।
उन्होंने मेरे कंधों पर हाथ रखा और मुझे एक तरफ ले जाकर बहुत धीमी आवाज़ में कहा,
‘सर, आपने तो बम गिरा दिया।’ मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सका।
मैं समझ नहीं पाया कि उसका क्या मतलब था। मैं उप-विषय के उसके विश्लेषण को समझ नहीं सका।
इस बैठक का पाठ। मैं हँसा, 'मदन, मुझे सच में लगता है कि जो नाम रखे गए हैं
ट्रस्ट की बैठक में आगे आने वाले सभी लोग दिग्गज नहीं थे।' अब वह हंसते हुए बोली, 'रैना साहब, आप तो बहुत भोले हैं, और आपने तो...' मुझे बैठक के राजनीतिक निहितार्थ समझ नहीं आ रहे हैं।’ मैंने जवाब दिया।
‘मदन, मुझे इसकी ज़रूरत नहीं थी। हम दोनों ने अपना दोस्त खो दिया, और अगर कोई संगठन
अगर उनके नाम पर कुछ भी बनाया जाना है, तो आपको और मुझे इससे प्रेरणा लेनी चाहिए।
इसके लिए काम करो, न कि इसके पदाधिकारी बनने के लिए।
कुछ दिनों बाद एक और बैठक बुलाई गई, और उसमें कई और नामों पर चर्चा हुई।
सुझाव दिए गए। बैठक में उपस्थित सभी लोगों ने अपनी सहमति दी और आपत्तियां। जिन नामों को सबसे अधिक स्वीकृति मिली, उन्हें अंततः चुना गया।

भरोसे पर: भीष्म साहनी, विवान सुंदरम, मोलॉयश्री हाशमी, सुहैल हाशमी, गोविंद देशपांडे, ई. अल्काज़ी, उत्पल दत्त; मेरा भी नाम था
मुझे भरोसा था। मैं नामों से बहुत खुश था। उन्होंने मुझे आत्मविश्वास दिया।
कि यह विश्वास कायम रहेगा।
अंततः, फरवरी 1989 में, सफदर हाशमी मेमोरियल ट्रस्ट, या SAHMAT का गठन हुआ। इसका कार्यालय विठ्ठल भाई के बंद बरामदे में था।
पटेल फ्लैट, नंबर चार। ट्रस्ट को किसी भी अन्य संस्था से कोई बड़ा वित्तीय योगदान प्राप्त नहीं हुआ था।
कहीं भी। लेकिन सहमत पिछले इकत्तीस वर्षों से एक प्रमुख संस्था के रूप में कायम है।
एक सांस्कृतिक प्रतिरोध मोर्चा जो अपने मूल मिशन के प्रति दृढ़ है, यानी अपने अधिकारों के लिए खड़े होना।
रचनात्मक स्वतंत्रता और सांस्कृतिक समुदाय के लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए
भारत। सहमत की ताकत हमेशा से ही इसके विशाल समुदाय में निहित रही है।
देश और विदेश के कलाकारों से प्रेरित। इसके प्रमुख विचार हमेशा कलाकारों से ही आते हैं।
रचनात्मक समुदाय। मैंने एक मुहावरा गढ़ा है: 'सहमत हुआ'।
उसे।’ इसका मतलब है कि एक बार जब आप सहमत की खुशबू से मोहित हो जाते हैं,
यह आपको कभी नहीं छोड़ता। आप हमेशा इसमें बने रहते हैं, और आप हमेशा इसे चाहते हैं।
सहमत। जब सहमत को आपकी ज़रूरत होती है, आप हमेशा मौजूद रहते हैं।

SAHMAT उन प्रतिभाशाली लोगों का एक अनूठा समूह है जो बेहद राजनीतिक विषयों पर काम करते हैं।

विस्फोटक विचार, जो प्रस्तुत या प्रदर्शित होने पर एक अत्यंत प्रभावशाली रूप ले लेते हैं।

परिष्कृत अवंत-गार्डे सांस्कृतिक संरचना। अक्सर, यह एक विश्वविद्यालय या एक

वह प्रयोगशाला जहाँ राजनीतिक और सांस्कृतिक गतिशीलता एक असाधारण अवधारणा को जन्म देती है।

बॉक्स प्रस्तुति। व्यक्तियों के बीच असहमति सहमत की समस्या रही है।

अंतर्निहित शक्ति, क्योंकि यह इन बिंदुओं के आधार पर आकार लेती है और बेहतर होती है।

अंतर। परिणाम फलदायी हैं और शुरुआती अनुमानों से बिलकुल अलग हैं।

अंतरों से संकेत मिल सकते थे।

भारत में, इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन (आईपीटीए) के बाद, सहमत

वामपंथी लोकतांत्रिक सांस्कृतिक क्षेत्र में यह सबसे महत्वपूर्ण विकास रहा है।

एक ऐसा क्षेत्र। सहमत ने जो कुछ भी किया या हासिल किया, उससे हमेशा एक विवादित स्थिति पैदा हुई।

आम जनता और राज्य के अधिकारियों के बीच सामाजिक-राजनीतिक बहस।

भारत में इससे पहले कभी भी राजनीतिक वर्ग को ऐसा कदम उठाने के लिए मजबूर नहीं किया गया था।

कलात्मक स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक स्वतंत्रता के संबंध में स्थिति

अधिकारों। सांस्कृतिक और रचनात्मक प्रयासों द्वारा उत्पन्न प्रमुख कलात्मक चुनौतियों के दौरान राजनीतिक वर्ग के कई पाखंड उजागर हुए।

सहमत समूह का। सहमत को भी अपने हिस्से का अनुभव रहा है।
राज्य के साथ हुए सभी टकराव, विभिन्न प्रकाशनों में दर्ज हैं।
पुस्तकों और प्रदर्शनियों, चित्रों, फिल्मों और कुछ विशाल सांस्कृतिक स्थलों के रूप में-
कार्यक्रमों में। इन प्रकाशनों और गतिविधियों ने स्वयं नए मानक स्थापित किए हैं।
समकालीन कला और संस्कृति की दुनिया में मानक और रुझान
भारत में प्रतिरोध। इकत्तीस साल पहले निर्धारित इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में...
SAHMAT की स्थापना के पीछे अनगिनत, नाटकीय घटनाएँ घटी हैं। ये घटनास्थल की कहानियां और घटनाएं हैं। ये संकटों की कहानियां हैं।
टकराव, अकेलापन और उपलब्धियाँ। हम SAHMAT में कभी-कभी
उन पलों को याद करके हम खुद पर हंसते हैं और खुद से पूछते हैं, 'क्या वह
हम?'

सफदर के सपने और विचार

जब सफदर जीवित थे, तब वे मुझसे अपने विचार साझा किया करते थे, जैसा कि वे अन्य लोगों से भी करते थे।
कई अन्य समान विचारधारा वाले मित्र भी थे। वह संभावनाओं पर चर्चा करता था।
कारखाने के श्रमिकों के लिए जन उत्सव का आयोजन करना, जो भारत का एक वास्तविक जन उत्सव है।
कृषि श्रमिक और कार्यालय जाने वाली जनता—अर्थात, सीधे शब्दों में कहें तो एक

भारत के दलित लोगों के लिए त्योहार। हमने इस बारे में बात की।
कांग्रेस द्वारा आयोजित विशाल अपना उत्सव की पृष्ठभूमि
देश के विभिन्न हिस्सों में सरकारें भारी मात्रा में धन से वित्त पोषित हैं।
धन।
सफदर ने यूनिसेफ के लिए बड़ी संख्या में फिल्म स्क्रिप्ट लिखी थीं।
साक्षरता और अन्य सामाजिक विषयों पर आधारित विषय। उन्हें पर्याप्त उम्मीद थी।
इस कार्य से प्राप्त पारिश्रमिक का उपयोग वह अपने एक उद्देश्य को पूरा करने के लिए करना चाहता था।
उसका सबसे बड़ा सपना था एक यात्रा करने वाला स्ट्रीट थिएटर समूह बनाना। इसके लिए उसने
मैं एक वैन खरीदना चाहता था, जिसे एक परफॉर्मेंस स्टेज में डिजाइन और परिवर्तित किया गया था, और
अपने थिएटर समूह को लाने-ले जाने के लिए एक और वाहन।
एक सुबह वह अचानक मेरे घर आ गया। उसने एक
उसने अपने बैग से एक लंबा सफेद कागज निकाला और कहा, 'मैं देश में चल रहे साक्षरता अभियान के लिए लिखी गई इस कविता पर आपकी प्रतिक्रिया चाहता हूं।' जब
जब उसने कविता का पाठ समाप्त किया, तो मैं मुस्कुराई और बोली, 'सफदर, तुम तो कवि बन गए हो।'
हँसते हुए बोला, 'यार, तुम्हें पता है, मैं बर्टोल्ट ब्रेख्त की कविता से मुकाबला नहीं कर सकता।'
उनका नाटक 'मदर' था। यह नाटक 'मदर' नामक उपन्यास का रूपांतरण था। गोर्की।

बहुत समय पहले, जब मैंने नाटक 'मदर' का निर्माण किया था, तब वयस्कों पर आधारित गीत लिखा गया था।
नाटक में प्रयुक्त साहित्य की रचना एक प्रसिद्ध जर्मन कवि और नाटककार ने की थी।
बर्टोल्ड ब्रेख्त की यह नई कविता बहुत लोकप्रिय हो गई थी। लेकिन जब उनकी यह नई कविता आई,
जब सफदर की रचना हुई तो यह तुरंत हिट हो गया। यह एक राष्ट्रगान बन गया।
भारत में साक्षरता अभियान, साक्षरता से संबंधित सभी कार्यक्रमों में प्रस्तुत किया गया।
राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर। तत्कालीन सरकार के शिक्षा मंत्री।
भारत के लोगों को भी सफदर का गाना पसंद आया था, लेकिन दुर्भाग्यवश, वह नहीं चाहते थे कि...
कविता में कुछ ऐसे शब्दों को बदलें जो हमें बेतुके लगे।
मूल पंक्तियाँ इस प्रकार थीं:

Padhna likhna sikho o mehnat karne walon,
Padhna likhna seekho o bhook se ladne walon.

महान मंत्री की आपत्ति दूसरी पंक्ति के शब्दों पर थी।
वह भूख शब्द को हटाना चाहता था। इसके बजाय, उसने सुझाव दिया कि दूसरी पंक्ति में लिखा है:

Padhna likhna seekho o desh mein rehne walon.

[‘भूख से लड़ रहे लोगों, पढ़ना-लिखना सीखो’ को बदलकर यह कर दिया गया]
‘इस देश के निवासियों, पढ़ना-लिखना सीखो’।
जब हमने इस बदलाव के साथ गाना सुना, तो हम दोनों हंस पड़े।
मंत्री की मूर्खता पर जमकर भड़ास निकाली और उसे कुछ अपशब्दों से नवाजा।
मंत्री ने ‘भूख’ शब्द पर आपत्ति जताई, लेकिन इसे हटाया नहीं गया है।
तारीख।
सफदर से मेरी आखिरी मुलाकात तब हुई थी जब वह मेरा नया थिएटर देखने आए थे।
वीरगति नामक नाटक का निर्माण असगर वजाहत ने किया था। मुझे याद है कि मैं श्री राम सेंटर के प्रवेश द्वार पर उनका और उनके समूह का इंतजार कर रहा था। वे लगभग देर से आए थे।
दस मिनट। जब मैंने उसे आते देखा, तो मैंने उस पर चिल्लाकर कहा, 'तुम इतने जल्दी में क्यों हो?'
'देर हो गई?' उसने जवाब दिया, 'यार, मैं लाल रोटियाँ खरीदने जामा मस्जिद गया था।'
अम्माजी।’ मैंने रोटियों का पैकेट उठाया, एक रोटी निकाली और खाने लगी। सफदर
हँसते हुए उसने एक और निकाला और उसे खाने लगा। पास में खड़े कुछ दोस्त भी थे।
उसने बाकी रोटियाँ उठा लीं। यह सब काफी हास्यास्पद था, हम सब हंस रहे थे।
और खाना खाया। फिर हम सब तुरंत परफॉर्मेंस देखने के लिए अंदर चले गए।
उन्होंने कहा, 'हम इस नाटक पर बाद में चर्चा करेंगे, लेकिन सेंट्रल थिएटर में जरूर आइए।'

मेरे नए नाटक 'हल्ला बोल' के प्रदर्शन के लिए सचिवालय पार्क।
मैंने कोशिश की है।

पहली बार नुक्कड़ नाटक में प्रेम कहानी करने जा रहे थे।’ दुख की बात है कि मैंने उन्हें कभी नहीं देखा।

लाल रोटी खाने और श्री राम के प्रवेश द्वार में हंसने के बाद भी वह जीवित था।

केंद्र। तीन दिन बाद हाल्ला बोल गाने के कारण उनकी हत्या कर दी गई।

सहमत का निर्माण

जब SAHMAT की शुरुआत हुई, तो हमने सफदर समारोह से शुरुआत की।
एक आह्वान

सफदर के 12 अप्रैल के उत्सव के लिए देश भर में लोग निकले।

जन्मदिन को राष्ट्रीय स्ट्रीट थिएटर दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन स्ट्रीट थिएटर समूह भाग लेते हैं।

पूरे भारत में कई अलग-अलग भारतीय वेशभूषा में नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किए जाते थे।

भाषाएँ। सहमत ने एक पोस्टर डिज़ाइन किया जिस पर बस इतना लिखा था, 'स्ट्रीट थिएटर'

'दिन'। पोस्टर का बाकी हिस्सा खाली था, जिससे स्ट्रीट थिएटर के लिए जगह बच गई थी।

समूहों को अपनी-अपनी भाषाओं में जानकारी भरने के लिए कहा गया। हमने इन्हें भेजा।

देश भर के थिएटर समूहों को बड़ी संख्या में पोस्टर भेजने के लिए, आवश्यकता होती है

पोस्टर की एक प्रति, जिसमें स्थानीय जानकारी भी शामिल हो, वापस भेज दी जाए।

प्रत्येक समूह द्वारा SAHMAT को प्रस्तुत किए गए कार्यक्रमों के सभी विवरणों के साथ।
संबंधित समूह।
12 अप्रैल 1989 को, पूरे देश में 3000 प्रदर्शन हुए।
विभिन्न स्थानीय भाषाएँ। भारतीय इतिहास में यह पहली बार था।
रंगमंच और दुनिया भर के रंगमंच प्रेमियों से मिली जबरदस्त प्रतिक्रिया
देश ने देशभर में थिएटर कार्यकर्ताओं का एक बड़ा नेटवर्क स्थापित किया।
अगले दिन, एक विशाल विरोध मार्च निकालकर उनके आवास तक पहुँचाया गया।
गृह मंत्री। हत्या करने वाले दोषियों को कुछ नहीं हुआ था। सफदर। अदालती मामला भी आगे नहीं बढ़ा था। उसी दिन, देर शाम आफ्टरनून, सफदर द्वारा लिखित बच्चों की पुस्तकों की पहली प्रकाशित श्रृंखला है।
मिकी पटेल, मोना रे, बिंदिया जैसे प्रख्यात कलाकारों द्वारा बनाए गए चित्रों के साथ।
थापर, अर्पिता सिंह, बी.वी. सुरेश और वासुदेवन अक्किताम को रिहा कर दिया गया।
उसी शाम, हबीब तनवीर द्वारा निर्देशित नाटक 'मोटे राम' का भी मंचन हुआ।
इससे पहले जनम द्वारा निर्मित इस फिल्म में सफदर और ज़ोहरा सहगल मुख्य भूमिका में थे।
'रोल्स' कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण जन नाट्य मंच द्वारा किया गया था।
अगले दिन, 14 अप्रैल को अस्ताद देबू और दादी पुदुमजी ने प्रदर्शन किया

[illegible]

[illegible]

Shubha Mudgal, a Hindustani classical singer, and Pandit Durga Lal, an

[illegible]

[illegible]

[illegible] 16 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] 1989 [illegible],

सांप्रदायिक ताकतें एक खतरनाक रास्ते पर थीं, जो बहुसंख्यकवाद का इस्तेमाल कर रही थीं।

देश में सांप्रदायिक सद्भाव के सदियों पुराने मूल्यों के खिलाफ एक हथियार।

सहमत ने पारंपरिक और समकालीन, कला के सभी रूपों का प्रयोग किया।

भारत में सांस्कृतिक प्रतिरोध का जश्न मनाने और कलाओं को राजनीतिक रूप से स्थापित करने के लिए

असहिष्णुता का बढ़ता माहौल। इसने अपने मूल्यों को कायम रखते हुए कई विरोधों का सामना किया। इनमें से कुछ विरोध राज्य की ओर से भी आया, और

कुछ ऐसे संगठनों से थे जो नफरत, हिंसा और हिंसा की राजनीति में विश्वास करते थे।

असहिष्णुता। सहमत की सारी उपलब्धियां इसी रीढ़ की हड्डी पर टिकी हैं।

भारत के उन कलाकारों में से एक, जो न केवल अपने कला के माध्यम से राष्ट्र में योगदान देते हैं, बल्कि

न केवल उनकी कला के माध्यम से बल्कि उनके दान के माध्यम से भी।
कलाकार SAHMAT को एक प्रेरणास्रोत के रूप में देखते हैं।

अन्याय के खिलाफ विरोध व्यक्त करने के लिए उन्होंने सेफ्टी वाल्व का इस्तेमाल किया।

हो रहा है।

व्यक्तिगत रूप से, SAHMAT मेरे विकास के लिए एक बेहतरीन माध्यम रहा है।

पर्दे के पीछे काम करने वाली प्रणाली की कार्यप्रणाली को समझना।

इससे मुझे कई अलग-अलग कलाकारों को समझने के बेहतरीन अवसर मिले हैं।

और विरोधाभासों और समझौतों की दुनिया। इसने मुझे यह दिया है

कई राजनीतिक हस्तियों को करीब से देखने का मौका खतरनाक साबित हो सकता है।
ऐसे उलटफेर जिनका देश के भविष्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है।
इसने मुझे सिखाया कि किसी संगठन में कैसे काम करना है जहाँ आपकी व्यक्तिगत सुरक्षा का विशेष महत्व होता है।
केवल विचार ही आगे नहीं बढ़ते। इसने मुझे सिखाया है कि कैसे दूसरों के विचारों का जवाब दें, उनका सम्मान करें और उन्हें महत्व दें।
SAHMAT एक ऐसी प्रयोगशाला रही है जो विभिन्न विचारों और संसाधनों को आकर्षित करती है।
जो बहु-विषयक दृष्टिकोणों से अनेक वास्तविकताओं को जन्म देते हैं।
प्रख्यात इतिहासकार जोया हसन ने एक बार SAHMAT को 'ग़रीब' के रूप में वर्णित किया था
नवाज़ की देग, या गरीबों का पात्र, क्योंकि यह पर्याप्त भोजन प्रदान करता है।
सभी के विचारों को पोषित किया जाना चाहिए। वर्षों से इसमें कई बदलाव आए हैं।
सामाजिक रूप से सत्य को विस्थापित करने वाली बुराइयों से प्रभावी ढंग से निपटने की रणनीतियाँ या
राजनीतिक रूप से। इस तरह, इसकी रणनीति कभी कमजोर नहीं होती बल्कि और भी तेज होती जाती है।
मजबूत करता है। यह विचार महत्वपूर्ण था। जब 1998 के आम चुनाव हुए।
यह घटना भाजपा के सांप्रदायिक लाल कृष्ण आडवाणी के रथ यात्रा के बाद हुई।
भाजपा की बयानबाजी चरम पर पहुंच गई और देश में बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे।

देश। सहमत भाजपा के भ्रम को तोड़ना और उसे चुनौती देना चाहता था।

आक्रमण। कई विचार प्रस्तावित किए गए, लेकिन उनके लिए बड़े संसाधनों की आवश्यकता थी, जो

SAHMAT के पास यह नहीं था। अंततः, हमने एक विचार पर ध्यान केंद्रित किया—एकल जारी करना।

भाजपा के दुष्प्रचार का तथ्यात्मक खंडन करने वाली शीट, फैक्स या ईमेल के माध्यम से धर्मनिरपेक्ष नेताओं और कई क्षेत्रीय समाचार पत्रों को भेजें। नेता इसका उपयोग कर सकते हैं।

उनके चुनाव अभियानों में दी गई जानकारी और क्षेत्रीय मीडिया, जो

सीमित संसाधनों के बावजूद, वे अपने पाठकों के लिए विवरण प्रकाशित कर सकते थे। यह सब

इससे भाजपा के दुर्भावनापूर्ण सांप्रदायिक अभियान को झटका लग सकता है। सहमत ने यह जानकारी एकत्र की।

नेताओं, पार्टियों और मीडिया के लगभग 300 फैक्स नंबर या ईमेल आईडी

संगठनों को। इसका मतलब था कि 300 से अधिक ईमेल या फैक्स शीट भेजी गईं।

हर दिन। तथ्यों का नया प्रतिवाद इसे मुश्किल बना देगा।

सांप्रदायिक तत्वों का विरोध करने के लिए।

सहमत को अन्य राजनीतिक कार्यालयों से अनुरोध प्राप्त होने लगे।

अधिक जानकारी के लिए नेताओं और प्रकाशन गृहों से संपर्क करें।
हमने इन्हें क्रमांकित किया है।

तथ्य पत्रक, जिनका शीर्षक ‘सांप्रदायिकता चेतावनी [#]’ था।
शिकायतें शुरू हो गईं।

यदि सांप्रदायिकता चेतावनी संदेश नहीं पहुंचा होता, तो अनुरोध वाले संदेश पहुंच जाते।

कृपया इसे जल्द से जल्द भेजें। यह SAHMAT के लिए एक रोमांचक परियोजना बन गई है।
उसी दिन, राजेश पायलट के कार्यालय से एक व्यक्ति SAHMAT कार्यालय में पहुंचा।
उन्होंने जो तथ्य पत्रक खो दिए थे, उनके कुछ संस्करण एकत्र करें।
सुनील दत्त के कार्यालय से एक अनुरोध आया जिसमें लिखा था, 'आपकी सांप्रदायिकता चेतावनी'
सुनील दत्त के चुनाव अभियान के लिए ये शीटें बहुत उपयोगी हैं। सांप्रदायिकता चेतावनी पत्रक विद्वानों, पत्रकारों और अन्य लोगों द्वारा लिखे गए थे।
अन्य लोगों ने गहन शोध के बाद यह कार्य किया। यह सब उन्होंने स्वेच्छा से किया था।
भाग। इसमें एक रोमांचक मोड़ तब आया जब सहमत को सामग्री प्राप्त होने लगी।
भारत भर के गांवों और कस्बों में अज्ञात स्रोतों से इन ज्यादतियों के बारे में जानकारी मिली है।
भाजपा और आरएसएस द्वारा किए गए कृत्य। उन्होंने अनुरोध किया कि जानकारी दी जाए।
सांप्रदायिकता चेतावनी पत्रक में शामिल।
यह सिंगल-पेज अभियान अपनी विशिष्टता के कारण प्रभावी रहा और लागत-प्रभावशीलता। इसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय समाचार मीडिया ने हमारी खबरें प्रकाशित कीं।
अपने स्वयं के अधिक तथ्यों के साथ। यह एक कानूनी, सस्ता प्रतिवाद बन गया।
भाजपा के खिलाफ एक ऐसा नैरेटिव तैयार किया गया, जिसका बचाव करना उस पार्टी के लिए मुश्किल हो गया।

राष्ट्रीय राजनीति में जब तनाव चरम पर था, तब हम SAHMAT में काम कर रहे थे।
भाजपा के सांप्रदायिक चुनावी माहौल के प्रति हमारी प्रतिक्रिया विकसित करने पर
अभियान। मदन गोपाल सिंह, सोहेल हाशमी, राम रहमान, राजन और मैंने भारतीय परंपराओं को एक साथ लाने के लिए एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने का विचार किया।
संगीत अपने सभी रूपों और अभिव्यक्तियों में। काफी समय तक हमने इस पर विचार किया।
एक ‘सूफी रॉक’ कॉन्सर्ट आयोजित करने का विचार है, लेकिन इसके लिए क्या-क्या करना होगा?
हमें इसके बारे में कोई ठोस जानकारी नहीं थी। यह हमारे दिमाग में महज एक अमूर्त विचार था।
हम इसके बारे में बात करते रहे लेकिन समझ नहीं पा रहे थे कि इसे कैसे करेंगे।
भारत में सूफी और रॉक संगीत का मिश्रण तब तक अनसुना था, लेकिन हम उन्होंने इस विचार पर दृढ़ता से अमल किया।
कभी-कभी राजनीतिक घटनाक्रम आपकी शराब बनाने की प्रक्रिया के लिए उत्प्रेरक का काम करते हैं।
अमूर्त धारणाओं और अवधारणाओं को अंकुरित होने देना। अचानक, रूप और विषयवस्तु
जो कुछ तुम सपने में देखते रहे हो, वह तुम्हारे सामने ही अंकुरित होकर फूल बन जाता है।
आँखें। सहमत में ठीक यही हुआ था। धार्मिक
राजनीति में बहुसंख्यकवाद को गति मिली, इसने हमें अपने विचारों को विकसित करने में मदद की।
एक सूफी रॉक कॉन्सर्ट के लिए। चारों ओर हो रहे सांप्रदायिक दंगों ने इसे और भी भड़का दिया।

हमारे भीतर दर्द और पीड़ा की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, और अब हमें एक आवश्यकता दिखाई दे रही थी।
इन मुश्किल समय में ज़ोर से बजने वाली प्रतिध्वनि। संस्कृति एक है
अंधकार के समय में सहारा और आराम का वह स्तंभ जिसे प्रमुखता से सामने रखने की आवश्यकता है।
संकट के समय।
अनेक संस्कृतियों और भाषाओं का संगम स्थल भारत की एक महान परंपरा है।
यह अपने मध्ययुगीन काल की सबसे महत्वपूर्ण विरासतों में से एक है।
चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी में, राजनीतिक स्थिति में काफी बदलाव आया था।
उथल-पुथल और कई संघर्षों और चुनौतियों का सामना कर रहे भारत में एक अनूठी आवाज
दक्षिण एशिया के हर कोने से प्रेम और भाईचारे की भावना उभरी। ये आवाजें
ये दलित, निम्न जाति और अछूत वर्ग से थे।
आवाजों ने मानव जाति की सार्वभौमिकता के बारे में बात की। वे इसके विरुद्ध खड़े हुए।
संगठित, अनुष्ठानिक धर्म, जाति और रंग के पदानुक्रम को चुनौती देते हुए
और नस्ल। उन्होंने मोक्ष के बारे में धर्मों की रूढ़िवादिता पर सवाल उठाए।
उन्होंने कहा कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए किसी उच्च जाति के ब्राह्मण के माध्यम की आवश्यकता नहीं है।
वे सबसे कमजोर लोगों की आवाजें थीं, एकता और प्रेम की आवाजें थीं।

सभी मनुष्य। ये सूफी और भक्ति कवियों की आवाजें थीं, जो दक्षिण एशिया के परिदृश्य में गहराई से डूबी हुई थीं, और अनगिनत रूपों में गा रही थीं।

भाषाएँ और बोलियाँ।

धर्मनिरपेक्ष भारत की इस विरासत को पुनः प्राप्त करने के प्रयास में, सहमत अंततः

एक विशाल संगीत समारोह के लिए एक संरचना तैयार की गई, जहाँ

सूफी और भक्ति कवियों के संदेश को पारंपरिक रूप से व्यक्त किया जाएगा।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों के कलाकारों को आमंत्रित किया गया। हमने तय किया कि यह संगीत कार्यक्रम भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आएगा।

पोस्टर में कलाकारों, बुद्धिजीवियों आदि के सभी नाम शामिल होंगे।

शिक्षाविद, गायक, कवि और खिलाड़ी उपस्थित रहेंगे, और अपने साथ एक

उनके द्वारा भारत की धर्मनिरपेक्ष परंपराओं के मूल्यों को बनाए रखने की अपील।

यह संगीत कार्यक्रम सांप्रदायिकता विरोधी कलाकारों द्वारा आयोजित पहला सांस्कृतिक धरना था।

भारत में सहमत, और यह कहना जितना आसान है, करना उतना ही मुश्किल है। हमें

संगीतकारों और अन्य कलाकारों को SAHMAT मंच पर प्रस्तुति देने के लिए राजी करना।

प्रत्येक कलाकार को पंद्रह मिनट का एक छोटा संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत करना था।

कॉन्सर्ट से पहले, कलाकार दो या तीन मिनट तक बोल सकता था।

यह बताएं कि वह उस दिन प्रदर्शन क्यों कर रहा था/रही थी। इसके अलावा, कुछ मामलों में

दिन के दौरान किसी समय, प्रत्येक कलाकार एक कंपेयर के रूप में कार्य करेगा, परिचय देगा और

एक और कलाकार का स्वागत करते हुए।

हमें अपने दो महान मित्रों का समर्थन प्राप्त था, जिनमें से एक स्वर्गीय थे।

सबीना सहगल सैकिया, जिन्हें हमने ताज होटल पर हुए 26/11 के आतंकवादी हमले में खो दिया।

2008 में मुंबई का महल होटल; और दूसरा, कालिदास स्वामीनाथन।
दोनों

वे भारतीय संगीत के पारखी और बहुत प्रसिद्ध पत्रकार थे।

मैं ज्यादातर भारतीय संगीतकारों को व्यक्तिगत रूप से जानता था। चूंकि यह एक सामान्य स्थिति नहीं थी।

यह एक संगीत कार्यक्रम था, न कि शांति के लिए विरोध-सह-अपील, जिसका उद्देश्य था...

कला जगत की सांप्रदायिक विभाजन को लेकर चिंता और आक्रोश व्यक्त करना

यह भारत में हो रहा है। हमें लगा था कि इसके लिए हमें मनाना थोड़ा मुश्किल होगा।

कलाकार कम से कम अठारह घंटे तक चलने वाले ऐसे सांस्कृतिक धरने में शामिल होंगे।

बड़ी संख्या में प्रतिभागी थे। हमें आश्चर्य हुआ कि आमंत्रित कलाकारों में से शायद ही कोई उपस्थित था।

किसी भी नर्तक, कवि, चित्रकार या फिल्म निर्माता ने भाग लेने से इनकार कर दिया।

यह संगीत कार्यक्रम 1 जनवरी 1990 को सफदर की दूसरी पुण्यतिथि पर आयोजित किया गया था।

वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को जनता से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली। कार्यक्रम सुबह 9 बजे मंडी हाउस गोलचक्कर के पास सफदर हाशमी मार्ग पर शुरू हुआ।

नई दिल्ली।
जब आपके पास पैसे न हों लेकिन बड़े सपने हों, तो कभी-कभी असंभव भी संभव हो जाता है।
ऐसा हुआ। यह भारतीय सांस्कृतिक समुदाय की जानी-मानी हस्तियों का धरना था।
जो भी आए, बोले और प्रस्तुति दी, उन सभी ने एक ही आवाज़ उठाई जो हमारे बारे में बोलती थी
राष्ट्र और उसका सदियों पुराना समन्वित सांस्कृतिक इतिहास, जिसे आवश्यकता थी
संरक्षण।
मुझे याद है कि मैं डागर भाइयों से मिलने के लिए एशियाड विलेज गया था और
असदुल्ला खान साहब, महान रुद्र वीणा वादक। डागर बंधुओं
इसकी तुरंत पुष्टि हो गई, और असदुल्ला खान साहब इससे बहुत उत्साहित थे।
उन्होंने अपने संगीत कार्यक्रम की शुरुआत राग देश से करने की स्वेच्छा से पेशकश की, यह पूरी अवधारणा ही अनोखी थी।
वीणा, भारत का सबसे पुराना वाद्य यंत्र है। इसके बाद उनकी योजना घर लौटने की थी।
लेकिन दोपहर में किसी अन्य कलाकार के प्रदर्शन के लिए कंपेयर बनने के लिए वापस लौटना होगा।
जिसे उन्होंने बड़े ही शानदार ढंग से अंजाम दिया।
कलाकारों से संपर्क करने पर कई मजेदार घटनाएं घटीं।
उन्हें भाग लेने के लिए राजी करना। इस काम का अधिकांश हिस्सा सबीना ने पूरा किया।
और कालिदास, क्योंकि दोनों ही अधिकांश संगीतकारों को व्यक्तिगत रूप से जानते थे। कभी-कभी

उन्होंने मुझसे उन लोगों से बात करने को कहा जिनके साथ वे सहज महसूस नहीं करते थे।

मेरे लिए यह एक नई दुनिया थी, लेकिन मेरे पास इसे स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

ज़िम्मेदारी।

जब मैंने सरोद वादकों में से एक को फोन किया, तो उनका रवैया काफी ठंडा था।

मुझे यह जानने की उत्सुकता थी कि सहमत कौन था और वह कौन था।

कॉन्सर्ट के पीछे। जब मैंने उन्हें कार्यक्रम का विचार समझाया, तो उन्होंने कहा

वह मुझे अगले दिन अपनी भागीदारी के बारे में बता देगा। जब मैंने फोन किया

अगले दिन, उसके पास पूछने के लिए फिर से और भी सवाल थे: 'दूसरे कौन हैं?'

कलाकार? क्या अशोक बाजपेयी का उस प्रदर्शन से कोई लेना-देना था?’ जब मैं

मैंने मना कर दिया, अगला सवाल था, 'इस कार्यक्रम को कौन वित्त पोषित कर रहा है?'

हमने समझाया कि हमारे पास बहुत सीमित धनराशि है और किसी को भी कुछ नहीं मिलेगा।

प्रदर्शन के लिए भुगतान क्योंकि हमारे पास केवल इतना ही पैसा था कि हम भुगतान कर सकें।

कार्यक्रम के खर्चों के बारे में। उन्होंने जवाब दिया, 'ओह, ऐसा है? आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं, जिसकी बहुत ज़रूरत है।' मैंने उन्हें बीच में ही रोककर सीधे उनसे पूछा,

‘तो, उस्ताद जी, क्या आप आ रहे हैं और भाग ले रहे हैं?’ लंबे विराम के बाद, उसने पूछा।

उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि वह अगले दिन फोन करेंगे, क्योंकि उनका एक और कार्यक्रम था।

उस दिन मद्रास में।
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं। मैंने अपनी बातचीत सबीना को बताई और
कालिदास से विनती की कि वे उनसे बात करें क्योंकि वे उन्हें बहुत अच्छी तरह जानते थे।
दोनों हँसे और उनमें से एक ने कहा, 'बिल्कुल नहीं। तुम करो। तुम भी अच्छे हो।'
इस पर।'
अगले दिन दोपहर ढल चुकी थी और उस्तादजी की तरफ से अभी तक कोई फोन नहीं आया था।
शाम को जब मैं घर पहुंचा, तब आठ साल के अनंत ने मुझे बताया
मुझे पता चला कि किसी उस्ताद ने फोन किया था और मुझसे कहा था कि मैं उन्हें वापस फोन करूं। मैं हिचकिचा रहा था।
उसे फोन करने के लिए। मुझे उसके सवालों से डर लग रहा था, लेकिन मैंने फोन किया क्योंकि मैं चाहती थी कि वह मुझसे बात करे।
आओ। उन्होंने फिर से इस सवाल से शुरुआत की कि कौन से राजनेता थे इस कार्यक्रम में मेरी क्या भूमिका थी और हम इसमें क्यों शामिल थे?
मैं उन्हें बुलाने के लिए बहुत उत्सुक था। मेरे लिए इतना ही काफी था कि मैं अपना अभियान शुरू कर दूं।
हल्की-फुल्की बातचीत में। हर कोई सफदर और मेरे रिश्ते के बारे में जानता था।
दिल्ली में सहमत से मेरी मुलाकात हुई, लेकिन मैंने विनम्रतापूर्वक उन्हें समझाया कि सफदर मेरा पुराना दोस्त है।
और मेरे एक निजी मित्र की राजनीतिक गुंडों ने हत्या कर दी। मैं थोड़ा सा
भावुक भी।

एक कलाकार के रूप में हम उनके लिए कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं कि उनके मूल्यों को कायम रखें।
और उनका बलिदान। ‘इसीलिए,’ मैंने उनसे कहा, ‘मैं आप जैसे गुरु को बहुत महत्व देता हूँ।’
उन्हें आकर हमारे साथ एकजुटता दिखानी चाहिए।’ कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने पूछा,
‘लेकिन क्या सफदर किसी राजनीतिक दल का हिस्सा नहीं थे?’ यही आखिरी झटका था।
मैंने कहा, 'उस्तादजी, आप जानते हैं कि देश में क्या हो रहा है।' वे लोगों की हत्या कर रहे हैं, और हम इसके जवाब में यह कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं।
नफरत के माहौल को खत्म करने और शांति की अपील करने की इच्छा। 'तब मैंने सोचा कि मैं
पास्टर मार्टिन नीमोलर की मौन के बारे में कुछ पंक्तियाँ पढ़नी चाहिए।
नाज़ीवाद पर जर्मन बुद्धिजीवियों और पादरियों के विचारों को, जिनमें स्वयं उनके विचार भी शामिल हैं, उन्होंने अपने लेखन में व्यक्त किया है।
6 जनवरी 1946 को फ्रैंकफर्ट के एक चर्च में दिया गया स्वीकारोक्ति भाषण। इस स्वीकारोक्ति का काव्य रूप में उत्कीर्णन न्यू इंग्लैंड संग्रहालय में देखा जा सकता है।
मैसाचुसेट्स के बोस्टन में स्थित होलोकॉस्ट स्मारक।

कम्युनिस्टों के लिए वे सबसे पहले आए।
और मैंने इसलिए कुछ नहीं कहा क्योंकि मैं कम्युनिस्ट नहीं था।
फिर वे यहूदी को लेने आए
और मैंने इसलिए आवाज नहीं उठाई क्योंकि मैं यहूदी नहीं थी।

फिर वे ट्रेड यूनियनवादियों के लिए आए।
और मैंने इसलिए आवाज नहीं उठाई क्योंकि मैं ट्रेड यूनियन का सदस्य नहीं था।
फिर वे मेरे पास आए और तब तक बोलने वाला कोई नहीं बचा था।

लेकिन मुझे लगा कि उनके द्वारा कही गई उन पंक्तियों का पाठ करना उचित नहीं होगा।
हमें मना करने का पूरा अधिकार है। इससे पहले कि मैं अपनी बात पूरी कर पाता, उसने
उसने कहा, 'ठीक है, मैं आपको बता दूंगा।' मुझे बहुत दुख हुआ लेकिन मैं कुछ कह नहीं सका।
मुझे एहसास हो गया था कि वह नहीं आएगा। उसे निश्चित रूप से कुछ आपत्तियाँ थीं।
यह एक कार्यक्रम था, और वह अपने फैसले खुद लेने के लिए स्वतंत्र था। लेकिन फिर भी, मैं चाहता था कि वह...
मैंने इसमें भाग लिया क्योंकि मुझे सरोद बहुत पसंद था, और वह इस क्षेत्र के बेहतरीन वादकों में से एक थे।
उस देश में वह उपकरण।
मैं असहाय था और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उसे हमारे लिए प्रदर्शन करने के लिए कैसे मनाऊं।
मैंने खुद से कहा, 'उसे मना करने का पूरा अधिकार है। आखिर मैं कोई बड़ा या अमीर तो हूं नहीं।'
व्यक्ति।' लेकिन मैं उसे समझाने में अपनी विफलता से निराश था। प्रदर्शन करो। अगले दिन मुझे फिर से मेरे बेटे अनंत का फोन आया। सहमत कार्यालय। ‘बाबा,’ उसने कहा, ‘उस्तादजी ने कहा है कि वह आ रहे हैं और आपको बताने आ रहे हैं।’

तुरंत।’ मैं हैरान था, पूरी तरह आश्वस्त नहीं था। मैंने अनंत से पूछा, ‘क्या?’

क्या उसने तुम्हें बताया? क्या तुम निश्चित हो?’ अनंत ने उत्तर दिया, ‘उसने मुझसे कागज पर लिखवाया’

तुम्हारे लिए। उन्होंने कहा, 'अभी अपने बाबा को फोन करो।' उन्होंने मुझसे मेरा नाम भी पूछा।

वे मद्रास से सीधे इस कार्यक्रम में शामिल होने आए थे। उन्होंने प्रस्तुति तो नहीं दी, लेकिन भाषण दिया।

भारत को विभिन्न रंगों के कई फूलों के गुलदस्ते के रूप में वर्णित किया गया है और

सुगंध। उन्होंने कहा कि यह गुलदस्ता हम सभी का है और यह हमारा कर्तव्य है कि हम

इसकी सुगंध को बनाए रखें। मैंने आने के लिए उनका बहुत-बहुत धन्यवाद किया और बातचीत की।

उसके साथ मुस्कुराना—जिससे बहुत कुछ पता चलता था।

अधिकांश कलाकारों को उनके प्रदर्शन के लिए निश्चित समय दिया गया था।

प्रदर्शनों के बावजूद, कार्यक्रम का पालन करना संभव नहीं हो सका। बिरजू महाराज को शाम के शुरुआती समय में उनका पसंदीदा समय दिया गया था, लेकिन

दोपहर होते ही उनके एक शिष्य ने मुझसे पूछना शुरू किया, 'महाराजजी किस समय आते हैं?'

'क्या उसे उपस्थित होना है?' मैं उसे समय बताता, और वह स्वीकार कर लेता।

और फिर वह गायब हो जाता। कुछ समय बाद, वह मुझसे वही सवाल दोबारा पूछता।

और यह देखने के लिए सभागार में झाँका कि दर्शकों की संख्या कितनी थी।

कुछ समय बाद उसने अपना सवाल फिर दोहराया, मैंने उससे पूछा, 'कहाँ है?'
महाराजजी? वे अभी तक क्यों नहीं आए?’ शिष्य ने उत्तर दिया, ‘चिंता मत करो।’
वह बहावलपुर हाउस स्थित कथक केंद्र में इंतजार कर रहे हैं और जल्द ही यहां आएंगे।
किसी भी क्षण।
क्योंकि कई कलाकार प्रस्तुति देने वाले थे, इसलिए हमने कोई विराम निर्धारित नहीं किया था।
मेरे पास आगे बढ़ने और अन्य कलाकारों से प्रस्तुति देने के लिए कहने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।
यह मानकर कि महाराजजी किसी भी क्षण वहाँ आ जाएँगे। लेकिन वे अभी तक नहीं आए थे।
आओ। मुझे आश्चर्य और हैरानी हुई जब मैंने उसी शिष्य को अपने सामने खड़ा देखा।
मुझे महाराजजी का यही संदेश थोड़ी देर बाद मिला।
अचानक हरि प्रसाद चौरासिया मंच के पीछे पहुंचे। वे बहुत जल्दी में थे।
और वह तुरंत मंच पर जाना चाहता था। वह मेरे पास आया और बोला कि वह
वह अगला नंबर लेना चाहते थे। मैंने बड़ी विनम्रता से उन्हें जवाब दिया, 'लेकिन हरिजी, इसके बाद...'
अगला कार्यक्रम कथक नृत्यांगना उमा शर्मा का है।’ उन्होंने मेरी बात बीच में ही काट दी।
‘नहीं, आपको मुझे अभी खिलाना होगा। मुझे भूख लगी है।’ मैंने उसे जल्दी से खाने का प्रस्ताव दिया।
‘मैं अभी आपके लिए कुछ फल लाता हूँ, साहब।’ उन्होंने कहा, ‘नहीं बाबा, मैं उपवास रखता हूँ।’

जिस दिन मेरा कार्यक्रम है। मैंने अभी-अभी FICCI में अपना कॉन्सर्ट समाप्त किया है।

सभागार में, और वहाँ से मैं अपनी प्रतिबद्धता पूरी करने के लिए यहाँ आया था।

आप। यहाँ प्रस्तुति देने के बाद ही मैं अपना व्रत तोड़ सकता हूँ।

इसी बीच, उमा शर्मा मंच पर जाने के लिए तैयार खड़ी थीं, प्रतीक्षा कर रही थीं।

वह अपने संगीतकारों के साथ मंच पर थी। अचानक, इससे पहले कि मैं मंच पर आ पाता...

introduce Umaji, Hari Prasadji ran onto the stage with his bansuri bag and a

उन्होंने अपने हाथों में तबला लिया और उस पर बैठ गए, उनके पीछे उनका तबला वादक भी आ गया। बैठने के बाद

नीचे झुककर, अपनी बांसुरी निकालते हुए, उसने मुझे मुस्कुराते हुए देखा। मैं खुद को रोक नहीं सका।

हंसते हुए। उन्होंने तो मेरे परिचय का भी इंतजार नहीं किया। उन्होंने खुद ही सब कुछ कर दिया।

उन्होंने खुद भी मुस्कुराया और कुछ चुटकुले भी सुनाए, और कहा, 'उमाजी, माफ कीजिए। मुझे बहुत भूख लगी है, इसलिए कृपया थोड़ा धैर्य रखिए।' उमाजी भी मुस्कुराईं, और फिर हरिजी ने भी मुस्कुरा दिया।

उन्होंने अपना संक्षिप्त लेकिन मधुर प्रदर्शन शुरू किया।

इस कार्यक्रम से कुछ दिन पहले, SAHMAT में मेरे समूह ने मुझसे यह अनुरोध किया था।

प्रसिद्ध कवि राही मासूम रजा से संपर्क करने के लिए, जो एक प्रसिद्ध कवि हैं।

बी.आर. आर. के सबसे प्रसिद्ध टेलीविजन धारावाहिक महाभारत के संवाद लेखक।

चोपड़ा से मेरी कभी मुलाकात नहीं हुई थी, लेकिन मुझे उनके बारे में जानकारी थी। मैंने उनसे कभी मुलाकात नहीं की थी, लेकिन मुझे उनके बारे में पता था।
मैंने उसका टेलीफोन नंबर लिया और पूरी हिम्मत जुटाकर उसका नंबर डायल किया। जब मैं
जब राही साहब के बारे में पूछा गया तो दूसरी तरफ से आवाज आई, 'हां, बोलिए।'
मैं राही बोल रहा हूँ। मैंने परिचय दिया।
मैंने स्वयं को प्रस्तुत किया और SAHMAT के बारे में विस्तार से बताया और कार्यक्रम का वर्णन किया।
सांप्रदायिकता के खिलाफ कलाकार। इससे पहले कि मैं आगे कुछ कह पाता, उन्होंने मुझे आमंत्रित कर दिया।
himself, saying, ‘Hum zaroor aayenge aur apni nazm bhi padhenge [I will
जरूर आइए और मेरी नज़्म भी पढ़िए।
मुझे उनके उत्साहवर्धक शब्दों से बहुत प्रसन्नता हुई। मैंने उनसे पूछा कि कितने बजे।
उन्हें यह ठीक लगेगा। उन्होंने कहा, 'मैं सुबह करीब 11 बजे आऊंगा और कुछ समय बिताऊंगा।'
आप सभी के साथ, कुछ लोगों से मिलूँ, और जब भी आपको लगे कि मुझे अपनी कविता सुनानी चाहिए
नज़्म, मैं ऐसा करूँगा। चिंता मत करो, यह एक बहुत ही नेक काम है। उन्होंने यह कार्य शुरू किया है और कृपया सभी को मेरी बधाई दें। बहुत नेक
kaam aap kar rahe hain [You are doing a very good deed].’
राही साहब आए और चित्रकारी कर रहे लोगों के साथ घंटों बिताए। कार्यक्रम स्थल के बाहर की सड़कों पर। वह अपने कई पुराने दोस्तों से मिला और वास्तव में,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Masjid to Allah ki thri,

Mandir Ram ka nikla,

Lekinmera yeh awaaradil,

Bolo kiskaam ka nikla,

Banda kiskaam ka nikla.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मदन गोपाल सिंह, सोहेल हाशमी, राम रहमान द्वारा वर्षों तक देखभाल की गई।
विवान सुंदरम, शबनम हाशमी, अशोक कुमारी, पार्थिव शाह, कालिदास स्वामीनाथन, राजेंद्र प्रसाद और मुझे इसका पहला अनुभव हुआ था।

9

अनहद गर्जे

दिसंबर 1992 में, हिंदू दक्षिणपंथी कारसेवकों ने बाबरी मस्जिद को ध्वस्त कर दिया।
भाजपा नेताओं के नेतृत्व में एक विशाल रैली के दौरान अयोध्या की मस्जिद में लाल कृष्ण
Advani, Murli Manohar Joshi and Uma Bharti. Great anger exploded all
तोड़फोड़ के खिलाफ। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सरकार प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के नेतृत्व में देश को निराशा हाथ लगी थी, और अब
दक्षिणपंथी परिवार के साथ-साथ इस कृत्य में एक संदिग्ध। कुछ कांग्रेसी
नेताओं ने अपनी ही सरकार के खिलाफ कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की जबकि
इस तनावपूर्ण राष्ट्र के समक्ष तोड़फोड़ की इस घटना की निंदा की गई। किसी को पता नहीं था
आगे क्या होने वाला था।
SAHMAT में हम समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें। एक बैठक में, विभिन्न

सदस्यों ने कई विचार रखे, लेकिन किसी पर भी सहमति नहीं बन पाई। उन्हें। एक विचार यह था कि विरोध के प्रतीक के रूप में एक पोस्टर बनाकर भेजा जाए। लेकिन
किसी को भी यह स्पष्ट नहीं था कि पोस्टर किस प्रकार का होगा।
मैंने सुझाव दिया कि हम
राजनीतिक सीमाओं से परे जाकर लोगों की अंतरात्मा से अपील करें। राष्ट्र।
I coined the slogan, ‘Ab koi naara na hoga, bas desh bachana hoga
अब नारेबाज़ी नहीं होगी, बात सिर्फ़ बचाने की होगी।
राष्ट्र]।
इसके बाद काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। कुछ लोगों को यह विचार पसंद आया, जबकि कुछ ने इसका विरोध किया।
(खासकर विवान सुंदरम, जिन्हें यह बिल्कुल पसंद नहीं आया और उन्होंने इसका विरोध किया)
मैंने नारे को पोस्टर पर छपवाकर जारी करवाने के लिए जोर दिया। इस पर बहस के दौरान, मदन गोपाल सिंह ने एक बिंदु पर टिप्पणी की कि नारे में यह नहीं कहा गया था
देश को किससे बचाना होगा, यह बात स्पष्ट नहीं थी।
मैंने नारा दिया और यह बात मान ली। फिर अचानक मेरे दिमाग में एक विचार आया—हम उस नारे को कबीर की उस कविता के साथ छाप सकते हैं जिसका मैंने अपने लेख में इस्तेमाल किया था।
play Kabira Khada Bazaar Mein:

साधु, तुम मूर्ख हो।
Hindu kahat hain Ram hamara, Musalman Rehmana,

Aaapas mein dou lade marathain
Maram koi najana.

ये पंक्तियाँ पोस्टर में एकता का आह्वान जोड़ देंगी, और अंत में समूह
सहमत इस बात पर सहमत हो गया। राजेंद्र प्रसाद ने सुझाव दिया कि हम पोस्टर छाप लें।
सस्ते कागज पर छापकर इसे सुबह के अखबारों के साथ बांट दें। रातोंरात,
दिल्ली में अखबार विक्रेताओं को हजारों पोस्टर छापकर बांटे गए।
जिन्होंने अखबारों में उन्हें प्रकाशित करने के लिए स्वेच्छा से आगे आए। सुबह, दिल्ली
निवासियों को सुबह के अखबार मिले जिनकी हेडलाइन में यह घोषणा की गई थी।
बाबरी मस्जिद को ध्वस्त कर दिया गया था, और उनके साथ हमारा पोस्टर भी।
पन्नों के बीच में छिपा हुआ। यह पोस्टर पूरे भारत में फैल गया।
इस तस्वीर को कई क्षेत्रीय समाचार पत्रों ने अपने माध्यम से प्रदर्शित किया।
सूत्रों के अनुसार, मैंने टाइम्स ऑफ इंडिया के पहले पृष्ठ पर एक छोटी सी तस्वीर देखी।
लड़का अपने हाथों में पोस्टर लिए हुए है।
बाबरी मस्जिद विध्वंस के अगले दिन, 7 दिसंबर को, सहमत राष्ट्रपति से मुलाकात का अनुरोध किया गया। किसी को भी यह निश्चित नहीं था कि मुलाकात कब होगी।

[illegible]

[illegible]

comprising Rajendra Prasad, Indu Chandra Shekar, Suhail Hashmi, Anil

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सरकार ने अभी तक मुझसे मुलाकात नहीं की है।'
उसने दीवारों और छत पर एक नज़र डाली और नम आँखों से उसने उन्होंने आगे कहा, ‘हमने अपनी शिक्षा नहीं छोड़ी थी जब बापू (महात्मा)
गांधी जी ने हमें स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए कहा था—और अब इसे देखने का अवसर मिला है।
यह।’ उनकी आँखें अभी भी नम थीं और उनकी आवाज लगभग कांप रही थी, उन्होंने हमसे पूछा कि क्या हम ऐसा कर सकते हैं।
उसके साथ चाय। कमरे का माहौल उदासी से भरा था। विवान
हमने उनसे हमें क्षमा करने का अनुरोध किया। शंकर दयालजी ने जोर देकर कहा, 'चूंकि आप आए हैं
इस ठंड में और पहले प्रतिनिधिमंडल के रूप में, कृपया एक कप चाय के लिए रुकें।
हमने लगभग पूरी खामोशी में चाय पी, मानो हम शोक मना रहे हों। चाय के बाद, वह हाथ जोड़कर खड़े हो गए और हममें से प्रत्येक को एक-एक करके धन्यवाद दिया।
राष्ट्रपति भवन से प्रस्थान किया। इस कृत्य के पीछे की राजनीतिक प्रक्रिया स्पष्ट नहीं है।
विध्वंस इतना स्पष्ट हो गया... कि कमांडर-इन-चीफ भी
देश को इस महत्वपूर्ण घटना के बारे में आधिकारिक तौर पर सूचित नहीं किया गया था।
देश। किसी ने कहा कि मस्जिद के विध्वंस के साथ, एक
भारतीय लोकतंत्र के स्तंभों को ध्वस्त कर दिया गया था। कौन जाने।
जब अन्य स्तंभ—न्यायपालिका, संसद और कार्यपालिका—
गिर जाएगा?
बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद के हालात भयावह थे।

सांप्रदायिक दंगों की पुनरावृत्ति हुई और भारतीयों का खून बहाया गया।
देश के कोने-कोने में। अधिकांश हिस्सों में हिंसक समय के दौरान विश्व में, सांस्कृतिक समुदाय के हथियार भावना के माध्यम से आते हैं।
कला। कलाकार राजनेता, पुलिस या सड़कों पर घूमने वाले गुंडे नहीं होते।
वे शांति, भाईचारे और सद्भाव का संदेश देते हैं।
वे सड़क पर लड़ने वाले नहीं होंगे, लेकिन वे अपने गीतों के साथ सड़कों पर कब्जा जमा लेंगे।
प्रेम और एकता। वे लोगों को अपने वास्तविक जीवन का प्रकाश दिखाने के लिए मशाल थामे हुए हैं।
विरासत। ये सभी रंगों और धर्मों के लोगों को एक साथ जोड़ती और बांधती हैं।
सहमत ने सड़कों पर शांति बहाल करने के लिए बाहर जाने का फैसला किया।
मुंबई, अहमदाबाद, लखनऊ, पुणे, हैदराबाद और कई अन्य स्थान
जहां समुदायों के बीच झड़पें और हत्याएं हुई थीं। कई
भारत भर में यात्रा करने के लिए अभिनव सांस्कृतिक कार्यक्रम तैयार किए गए थे।
एकता का संदेश फैलाते हुए। योजना संबंधी चर्चाओं में, मदन गोपाल
सिंह ने कबीर की एक कविता से लिए गए शब्दों 'अनहद गर्जे' शब्द को गढ़ा।
जो सूफी कवियों की छंदों में राष्ट्र के लिए एक जोरदार आह्वान के रूप में प्रकट होते हैं।
एकजुट होकर प्रेम का संदेश फैलाएं।

अनहद गर्जे एक विशाल सांस्कृतिक धरने में बदल गया, लेकिन इसकी शुरुआत 19 तारीख को दिल्ली में हुई थी।
जनवरी, बाबरी मस्जिद विध्वंस के तुरंत बाद। दिल्ली कार्यक्रम इसमें अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश के सभी प्रमुख संगीतकार शामिल थे।
जिन्होंने भारत के विभिन्न हिस्सों से आए कलाकारों के साथ भाग लिया।
शास्त्रीय से लेकर लोक परंपराओं तक, विविध भाषाओं और परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हुए।
अनहद गर्जे ने भारत के प्रमुख महानगरों की यात्रा की।
अनहद गर्जे की यात्रा में कई मार्मिक क्षण शामिल थे।
इससे मिला सहयोग जबरदस्त था। हर उस जगह पर जहां अनहद मौजूद थे।
जब गरजे का आयोजन हुआ, तो स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर के अधिकांश प्रतिभाशाली कलाकारों ने इसमें भाग लिया।
इस आयोजन में न केवल भाग लेना बल्कि स्वयंसेवा के लिए आगे आना भी शामिल है।
दिल्ली में, पाकिस्तान के एलन फकीर ने बांग्लादेश के सभी संगीतकारों को आमंत्रित किया।
पश्चिम बंगाल, राजस्थान और उससे आगे के क्षेत्रों को मंच पर लाया गया। उन्होंने तात्कालिक प्रस्तुति दी, और वे
सभी ने एक साथ ऐसे प्रदर्शन किया मानो उनके राष्ट्रों की सीमाएँ पिघल रही हों।
दूर। कलाकारों में से कोई भी एक-दूसरे की भाषा नहीं समझता था, लेकिन
कला और दिलों के जादू ने उन्हें आपस में जोड़ दिया, जिससे एक संगीतमय वातावरण का निर्माण हुआ।
उपमहाद्वीप में शांति की अपील करते हुए। केवल लोक कलाकार ही नहीं, बल्कि अन्य कलाकार भी इसमें शामिल थे।

[illegible]

colourful faqeer chogha, Madan Gopal Singh, Kajal Ghosh, Deepak

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]: ‘[illegible]-[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]'

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मुझे मद्रास के लिए तुरंत फ्लाइट पकड़नी है। मेरा वहां एक कॉन्सर्ट है।

'देर शाम।' मुझे समझ नहीं आया कि क्या कहूँ। मैंने हाथ जोड़ लिए। उसने देखा

उन्होंने मेरी ओर देखा, मुझे आशीर्वाद दिया और चले गए।

जब लखनऊ में अनहद गर्जे की घटना घटी, तो हममें से किसी ने एक सवाल पूछा...

मेरे एक स्थानीय मित्र ने मुझसे पूछा कि अयोध्या कार से कितनी दूर है। उन्होंने जवाब दिया कि यह दो घंटे और एक घंटा है।

लखनऊ से आधे घंटे की दूरी पर। विवान उत्साहित हो गया और वहाँ जाना चाहता था।

अयोध्या। राम रहमान भी उत्साह में शामिल हो गए, और यह निर्णय लिया गया कि

वे अयोध्या की यात्रा करेंगे। इस यात्रा की व्यवस्था की जा रही थी, तभी...

SAHMAT में बाकी लोग—राजन, मदन, सुहैल, सबीना और मैं—ने शुरुआत की।

अयोध्या में सांस्कृतिक धरना आयोजित करने की संभावना पर विचार किया जा रहा है।

हम सभी को यह बात पता थी कि यह एक चुनौती होगी, बिल्कुल भी आसान काम नहीं होगा।

लेकिन सभी इस संगीत कार्यक्रम की संभावना पर विचार करने के लिए सहमत हुए।

नरसिम्हा राव के रवैये को देखते हुए अनुमति मिलना बहुत मुश्किल होगा।

सरकार। वह अयोध्या में कुछ भी घटित होते देखना नहीं चाहेंगे, यहां तक कि एक भी घटना नहीं।

शांतिपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम। उन्हें अपनी ही पार्टी के लोगों के निशाने पर लिया गया था।

और देश के लाखों लोगों से।
राम और विवान अयोध्या गए और लौट आए। राम अपने साथ ये चीजें लेकर आए।
सरयू नदी पर स्थित घाटों की तस्वीरें। इन खूबसूरत तस्वीरों में दिखाया गया है कि...
प्राचीन इमारतों की लंबी कतार—मंदिर, मस्जिद, धर्मशालाएं, घर, और भी बहुत कुछ—वास्तुकला की सभी शैलियाँ एक दूसरे के साथ सामंजस्य में खड़ी हैं। नदी के किनारे का स्थल संघर्ष स्थल से काफी दूर था, जहाँ कभी बाबरी मस्जिदें थीं।
मस्जिद खड़ी थी। नदी का किनारा शांत और मनमोहक लग रहा था।
बहुत विचार-विमर्श के बाद, सहमत ने अंततः अनहद गर्जे को अपने साथ ले जाने का फैसला किया।
अयोध्या के लिए। यह एक बहुत ही गंभीर निर्णय था, जिसके राजनीतिक परिणाम हो सकते थे।
इसके परिणाम। हमने बुद्धिजीवियों, कलाकारों के साथ अनगिनत बैठकें कीं,
इतिहासकार, संगीतकार, शिक्षाविद और सहमत के कई शुभचिंतक।
इन सत्रों में प्राप्त सलाह और जानकारी के आधार पर, हमने एक योजना तैयार की।
कार्यक्रम की रूपरेखा इस प्रकार है, जिसमें अयोध्या पर एक बड़ी प्रदर्शनी भी शामिल है।
प्रमुख इतिहासकारों के मार्गदर्शन और सहयोग से, हमने एक निर्णय लिया।
15 अगस्त की आधी रात से सूर्योदय तक चलने वाला रात्रिकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रम।
स्वतंत्रता दिवस। अयोध्या प्रदर्शनी, जिसका शीर्षक है 'हम सब अयोध्या'।

यह प्रदर्शनी 12 अगस्त को, भारत छोड़ो दिवस पर खुलेगी। यह एक लंबे इतिहास को उजागर करेगी।
उस स्थान के वर्तमान समय तक के सभी पहलुओं को शामिल किया जाएगा और इसमें सभी परतें शामिल होंगी।
अयोध्या में प्राचीन काल से लेकर 1993 तक की ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन।
वाल्मीकि की राम कथा के अनेक संस्करणों को प्रमुखता दें। रामायण का स्थानीय भाषा में अनुवाद। यह परियोजना
यह महत्वाकांक्षी कृति प्रख्यात इतिहासकारों रोमिला थापर और सुविधा द्वारा संचालित है।
Jaiswal, Irfan Habib and Dr Shrimali.
रात्रि प्रदर्शनों के लिए, हमने काम करने वाले लोगों को एक सामान्य आमंत्रण भेजा।
प्रदर्शन कलाओं के माध्यम से कार्यक्रम में भाग लेने और अपना विरोध दर्ज कराने के लिए
उन्होंने अपनी एक प्रासंगिक रचना प्रस्तुत की। हमें जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली।
प्रतिक्रिया। विभिन्न क्षेत्रों के लगभग 3000 कलाकारों ने अपनी प्रतिक्रिया की पुष्टि की।
वे 14 अगस्त को पहुंचेंगे और उसी शाम को रवाना हो जाएंगे।
15 अगस्त। दक्षिण भारत और पूर्वी भारत से कलाकारों के दल आएंगे।
भारत के साथ-साथ हिंदी भाषी राज्यों के भी कई लोग शामिल हैं।
कुछ बड़े सितारे भी हैं।
भी आने की योजना: गिरीश कर्नाड, शाहजी करुण, उन्नियाल परन शिवराम,
Sitara Devi, Habib Tanveer, Suhag Sen, Girija Devi and many others.

Sabina Sehgal Saikia and Kalidas Swaminathan put in all their talent,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

इस बीच, लखनऊ में हम स्थानीय सरकार की मंजूरी का इंतजार कर रहे थे।
शबनम ने नौकरशाही से दैनिक रूप से इस मामले की जानकारी ली, लेकिन उत्तर प्रदेश
सरकार ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। राजनीतिक वर्ग ने अपना रुख स्पष्ट कर दिया था।
इस मुद्दे पर उनके रुख और यूपी सरकार पर बढ़ते दबाव के कारण
इस घटना को घटित होने दें।
इस पूरी अनिश्चितता के दौरान, सहमत ने कार्यक्रम का आयोजन जारी रखा।
हर स्तर पर। राम रहमान ने एक अनोखा और यादगार पोस्टर डिजाइन किया।
और सामग्री, जिसका शीर्षक है 'हम सब अयोध्या'। SAHMAT से जुड़े सभी लोग।
वे उत्साह से भरे हुए थे और अनुमति मिलने का इंतजार कर रहे थे। समय
समय कम पड़ रहा था; आयोजन की तारीखें नजदीक आ रही थीं। उत्साह और उमंग के साथ
रहस्य अभी भी बना हुआ था, सहमत ने फैसला किया कि प्रदर्शनी 'हम सब'
अयोध्या को तैयार कर लिया जाएगा और भारत छोड़ो दिवस पर इसका उद्घाटन किया जाएगा।
भारत के सत्रह शहरों में एक साथ।
मदन गोपाल सिंह के सुझाव पर हमने रात भर चलने वाले इस संगीत कार्यक्रम का शीर्षक रखा।
मुक्ता नाद, जो 15 अगस्त की आधी रात को शुरू होने वाली है।
सरयू नदी के तट। स्वतंत्र भारत में इससे पहले कभी भी राजनीति इस तरह नहीं हुई थी।

सांस्कृतिक समुदाय से ऐसी चुनौती का सामना करना पहले कभी नहीं हुआ था जैसा कि अब हो रहा है। मुक्ता नाद से पहले के समय में, हर दिन चेतावनी दी जाती थी और
यहां तक कि इसके विरोधियों और इसे न चाहने वालों की धमकियों का भी सामना करना पड़ा।
होना।
एक दिन अचानक राज्यपाल के कार्यालय से एक फोन आया।
उत्तर प्रदेश में SAHMAT के प्रतिनिधियों के साथ बैठक का अनुरोध किया गया है।
लखनऊ। शबनम हाशमी और राजेंद्र प्रसाद मिलने के लिए लखनऊ रवाना हुए।
राज्यपाल। उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें टिकट की पेशकश की थी।
लखनऊ आने को उन्होंने मना कर दिया। अगली सुबह, शबनम और
राजन को यूपी के अधिकारियों द्वारा राजभवन ले जाया गया, जहां उन्होंने मुलाकात की।
राज्यपाल, मोती लाल वोहरा।
शबनम और राजन द्वारा दी गई रिपोर्ट के अनुसार, बैठक में कुछ सूक्ष्म पहलू सामने आए।
सत्ताधारी पार्टी के भीतर मतभेदों के कारण। वे एक समर्थक को महसूस कर सकते थे-
कांग्रेस पार्टी के एक वर्ग में भाजपा का झुकाव था और उन्हें लगा कि मोतीलाल वोहरा
उन्होंने सहमत को ‘हम सब’ परियोजना को आगे बढ़ाने से रोकने की कोशिश की।
'अयोध्या' प्रदर्शनी और मुक्ता नाद संगीत कार्यक्रम।
वोहरा ने शबनम और राजन से कार्यक्रम को लखनऊ में स्थानांतरित करने का अनुरोध किया, और

वह इस आयोजन के लिए हर संभव सहायता प्रदान करेगा। जब उसे अंततः यह एहसास हुआ कि

उन्होंने जोशी से पूछा कि क्या SAHMAT आयोजन स्थल को लेकर अपना फैसला नहीं बदलेगा।

उन्होंने अपने वरिष्ठ अधिकारियों को अयोध्या ले जाकर स्वयं देखने का अनुरोध किया।

वहां इस कार्यक्रम का आयोजन करना कितना मुश्किल होगा।

जोशी ने शबनम और राजन को ले जाने के लिए एक सरकारी हेलीकॉप्टर तैयार रखा था।

अयोध्या। शबनम ने सरकारी हेलीकॉप्टर में उड़ान भरने से इनकार कर दिया और जोशी को बताया।

कि वह और राजन वहाँ खुद ही पहुँच जाएँगे। जोशी, अपनी पत्नी और

बेटी सरकारी हेलीकॉप्टर से अयोध्या के लिए रवाना हुई। वहाँ सबसे पहले उसने जो देखा, वह यह था कि बेटी ने आधिकारिक हेलीकॉप्टर से अयोध्या के लिए उड़ान भरी।

जोशी ने विवादित स्थल का दौरा किया जहां एक अस्थायी राम मंदिर बना हुआ था।

इसका निर्माण हो चुका था। उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों के साथ वहां श्रद्धांजलि अर्पित की।

राजभवन की बैठक, हेलीकॉप्टर की सवारी और इन सब ड्रामे के अलावा...

अस्थायी मंदिर का दौरा यह स्पष्ट करने के लिए किया गया था कि उत्तर प्रदेश सरकार

वह भाजपा समर्थक थी और हमारे कार्यक्रम में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। इस मुलाकात के बाद, जब शबनम

राजन ने वरिष्ठ अधिकारी से मुलाकात की, उन्होंने उनसे बस इतना ही कहा कि उन्हें सरकार के फैसले के बारे में सूचित कर दिया जाएगा। वह उसी गाड़ी में बैठकर रवाना हो गए।

लखनऊ के लिए हेलीकॉप्टर। इस यात्रा से कुछ भी हासिल नहीं हुआ, जो अंततः व्यर्थ साबित हुई।
हमारे दो सहमत सदस्यों के लिए यह समय की बर्बादी होगी।
SAHMAT अपने रुख पर अडिग रहा और उसे व्यापक सामाजिक और राजनीतिक समर्थन प्राप्त हुआ।
जब निर्माण कार्य चल रहा था, तब अंततः सरकार ने नरमी बरती और उसे अनुमति दे दी।
अयोध्या में कार्यक्रम आयोजित करने के उनके प्रयास यहीं समाप्त नहीं हुए। लेकिन इससे कार्यक्रम को विफल करने के उनके प्रयास समाप्त नहीं हुए।
उत्तर प्रदेश प्रशासन की कार्यप्रणाली में कई खामियां थीं।
इस घटनाक्रम से असंतुष्ट लोग और अधिक बाधाएं उत्पन्न करने के लिए बाध्य थे।
आगे बढ़ने पर हमें समस्याओं का सामना करना पड़ा।
हरी झंडी मिलने के बाद, SAHMAT ने पूर्ण और अंतिम चरण में प्रवेश किया।
तैयारी। सोहेल हाशमी और शबनम हाशमी अयोध्या के लिए रवाना हुए।
वहाँ एक बेस कैंप कार्यालय स्थापित किया गया, और हम बाकी लोग अपने कामों में व्यस्त रहे।
‘हम सब अयोध्या’ प्रदर्शनी का उद्घाटन। प्रदर्शनी की प्रतियां उपलब्ध थीं।
देश भर में सत्रह केंद्र एक साथ खुलेंगे।
भारत छोड़ो दिवस पर सत्रह शहरों में प्रदर्शन हुए। सब कुछ योजना के अनुरूप चल रहा था।
प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। राजन और मैं दिल्ली से फैजाबाद के लिए रवाना हुए, जहाँ
सहमत ने फैजाबाद अवध लॉज में कमरे बुक किए थे। यह बहुत ही

दिन बहुत गर्म और उमस भरा था। लॉज पहुँचने पर सोहेल ने हमसे मुलाकात की और

उसने तुरंत हमें एक तरफ ले जाकर चेतावनी दी कि वहां मौजूद किसी से भी बात न करें।

लॉज की लॉबी। प्रदर्शनी पर हमला किया गया था और उसमें तोड़फोड़ की गई थी।

हम शाम करीब 4 बजे एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित करेंगे और इस मुद्दे पर चर्चा करेंगे।

एक शत्रुतापूर्ण स्थानीय प्रेस इंतजार कर रही थी, और जब सुहैल ने अपनी बात शुरू की।

एक पत्रकार ने प्रदर्शनी में तोड़फोड़ के बारे में बयान मांगा।

‘अब तुम क्या करोगे?’ सोहेल ने जवाब दिया, ‘कुछ नहीं। हमारे पास बहुत कुछ है।’

प्रदर्शनी की कई मुद्रित प्रतियां उपलब्ध हैं, इसलिए इसमें कोई समस्या नहीं होगी।

एक और प्रदर्शनी का आयोजन। हमलावरों से हमें कुछ नहीं कहना है।

अधिकारियों द्वारा कानून के अनुसार कार्रवाई की जाएगी।’ एक अन्य पत्रकार ने पूछा।

बहुत गुस्से से, 'क्या आप 15 अगस्त को अपना प्रस्तावित संगीत कार्यक्रम करने जा रहे हैं?'

क्या आपको सच में लगता है कि इस हमले के बाद आप ऐसा कर सकते हैं?’ इस पर, मैं

उन्होंने उत्तर दिया, 'हाँ, हम वह काम करेंगे जिसके लिए हमें आधिकारिक अनुमति मिली है, और यह अधिकारियों का कर्तव्य है कि वे सुनिश्चित करें कि हम

'हमारा कार्यक्रम पूरा करें।' हमसे एक और सवाल पूछा गया, 'क्या आपने

'क्या आप विवादित स्थल पर गए हैं?' शबनम ने उत्तर दिया, 'हम यहां एक काम करने आए हैं।'

कार्यक्रम में हमारा कोई इरादा नहीं है और विवादित स्थल पर जाने का भी हमारा कोई इरादा नहीं है।'
राजन ने आगे कहा, 'अयोध्या के लोगों ने हमारा स्वागत किया है, और बड़े पैमाने पर
उनमें से कई लोग हर संभव तरीके से हमारी मदद कर रहे हैं। और इसके लिए हम आभारी हैं।
मैं उन सभी का आभारी हूं।
सम्मेलन समाप्त होने के बाद, हमें तरह-तरह के लोगों के फोन आने लगे।
हमारी कुशलक्षेम पूछ रहे थे। 'क्या किसी को चोट लगी है?' हमारा एकमात्र जवाब यही था।
सभी को उम्मीद थी कि सब कुछ तय योजना के अनुसार चल रहा है और मुक्ता नाद भी सफल होगा।
ऐसा हुआ। जब सभी लोग तितर-बितर हो गए, तो हम नहाने के लिए अपने कमरों में चले गए और
तरोताज़ा होने के बाद, मैं अपने कमरे से बाहर निकला, लेकिन तभी... अपने कमरे की रखवाली करते हुए बंदूकधारी पुलिसकर्मी को देखकर मैं चौंक गया। मैंने नीचे देखा।
गलियारा, जहाँ मेरे दोस्तों के कमरों के बाहर अन्य बंदूकधारी पहरा दे रहे थे।
मैंने पुलिसकर्मी से पूछा कि वह कौन है और यहाँ क्यों आया है। उसने उत्तर दिया, 'सर,
मैं आपका सुरक्षा गार्ड हूं और मैं हमेशा आपके साथ रहूंगा, आप जहां भी जाएं।
मैं जोर से हंस पड़ी। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि अचानक ऐसा लग रहा था कि हमें ऐसा करना पड़ेगा।
सुरक्षित। इसके अलावा, मुख्य द्वार पर दो पुलिसकर्मी पहरा दे रहे थे।

अवध लॉज। जब हम सब मिले, तो हम हँसे बिना नहीं रह सके।
हमने सुरक्षा मांगी थी, लेकिन यह हम पर थोपी गई, और यह बात समझ से परे थी। बाद में
शाम को, हमने यह निष्कर्ष निकाला कि ये हमले करने की आम रणनीति थी।
हम पर मनोवैज्ञानिक दबाव डाला जा रहा है, ताकि हम इस कार्यक्रम में भाग लेने से हतोत्साहित हों।
ऐसी अफवाहें थीं कि कुछ स्थानीय नेता जो हमारे मुक्ता के खिलाफ थे
नाद ने चेतावनी जारी की थी कि वे 'सिंघा नाद' का आयोजन करेंगे। उनका मतलब था कि किसी को कोई जानकारी नहीं थी। हमने अनुमान लगाया था कि यह मुश्किल होगा।
हमें कलाकारों के रहने के लिए धर्मशालाओं में कमरे बुक करने थे। मुझे याद है।
राजन, सोहेल और शबाम ने मुझे सलाह दी कि मैं इस स्थिति में शांत रहूँ।
उकसावे से उन्हें आनंद आएगा, जिससे उन्हें एक टकराव मिलेगा।
हमारी अनुमति रद्द करने के लिए पर्याप्त कारण थे और हमें एक टीम के रूप में इससे बचना था।
हर क़ीमत पर।
अगली सुबह, जब हमने विभिन्न होटलों में कमरे बुक करने का प्रयास किया,
इलाके में स्थित धर्मशालाओं में, पुलिस हमारे साथ थी। हम हास्यास्पद लग रहे थे।
हम उनके साथ घूम रहे थे। हर जगह लोगों ने हमारा स्वागत किया और हमारे दरवाजे खोल दिए।
हमारे लिए धर्मशाला एक आश्चर्यजनक और उत्साहवर्धक संकेत था।
जब हम गए थे

अयोध्या के महाराजा से मुलाकात करने पर, उन्होंने व्यक्तिगत रूप से हमारा अभिवादन नहीं किया, लेकिन पेशकश की
उन्होंने अपने महल के कमरे हमारे वरिष्ठ और प्रसिद्ध कलाकारों के लिए खोल दिए। उन्होंने अपना
पीकॉक रूम, जो पूरी तरह से जटिल दर्पणवर्क से सजाया गया है। दीवारें। लोगों के स्वागत के तरीके से हमें राहत और खुशी महसूस हुई।
हर जगह।
वहाँ कई बड़े स्थानीय स्वयंसेवी समूह थे जिन्होंने हमारी मदद और मार्गदर्शन किया।
यह सुनिश्चित किया कि सब कुछ योजना के अनुसार हो। वास्तव में, इस समूह ने
मुक्ता नाद की असली रीढ़ स्वयंसेवक बन गए। उन्होंने अधिकांश कार्यभार संभाल लिया।
कलाकारों की देखभाल करने, उनका स्वागत करने और उनकी देखरेख करने के कार्य में
घटना के बाद अयोध्या से प्रस्थान करने तक उन्हें वहीं रखा गया। इस बीच, चारों
हममें से अधिकांश ने वास्तविक कार्यक्रम और उसके विवरणों पर ध्यान केंद्रित किया।
शीतलजी, स्थानीय समाचार पत्र लोक लहर के मालिक थे, और उनका कार्यालय था।
अद्भुत। उन्होंने इसे हमारे लिए खोल दिया ताकि हम इसे अपने कार्यालय की तरह इस्तेमाल कर सकें। किसी समय, मैं
मैंने खुद से पूछा, 'अगर अयोध्या के लोग इतने खुले दिल के, मेहमाननवाज और संकोची हैं, तो
जब सभी हमारे कार्यक्रम के विरोधी हैं, तो अयोध्या को किसी खास तरह से क्यों पेश किया जा रहा है?

'दुश्मन कस्बे का?' रिक्शा चालक से लेकर चाय की दुकान के मालिक तक, किसी ने भी
उन्हें हमारी उपस्थिति से समस्या थी।
हमें एक अधिकारी ने बताया कि कलेक्टर साहब एक
हमारे साथ बैठक। यह एक खतरे की घंटी जैसा लगा। मैंने बाकी सब लोगों से पहले प्रतिक्रिया दी।
अधिकारी को जवाब दे सकते थे, 'अभी हम बहुत व्यस्त हैं, और बहुत देर हो चुकी है। हम'
अब हम भी थक गए हैं। शायद हम कल आएंगे।’ वह चला गया, लेकिन हमें शक था।
कुछ गड़बड़ी होने वाली थी और सतर्क रहने की जरूरत थी।
अयोध्या में यह बात अजीब लग रही थी कि 'सहमत' में सिर्फ हम चार लोग ही शामिल थे।
हर चीज के लिए व्यवस्था करना और निर्णय लेना, हालांकि
फैजाबाद और अयोध्या के कई स्वयंसेवकों के सहयोग से संचालित पाठ्यक्रम।
जिन्होंने स्थानीय राजनीतिक तौर-तरीकों को बेहतर ढंग से जानते और समझते हुए हर कदम पर हमारा मार्गदर्शन किया और सलाह दी। लेकिन कॉल और
भारत के विभिन्न स्थानों से हमें जो पूछताछ मिल रही थी, उससे लोगों को यह जानकारी मिली कि...
यह धारणा थी कि हमारे पास एक बहुत बड़ा प्रतिष्ठान था जिसे बड़ी संख्या में लोगों द्वारा चलाया जा रहा था।
जिन लोगों के पास सचिवीय कार्यालय था। असल बात यह थी कि शबनम ही मुख्य थी।
वह SAHMAT ट्रस्ट की मुख्य संचालक थीं और अपने डेस्कटॉप कंप्यूटर से इसका प्रबंधन कर रही थीं।

एक कंप्यूटर और एक टेलीफोन। राजन का दिमाग तेज था जो चीजों को समझता था।
किसी समस्या को देखने के विभिन्न दृष्टिकोण और
स्पष्टता के साथ गहन आलोचना प्रस्तुत करें।
अगले दिन, 13 अगस्त को, बहुत गर्मी और उमस थी, लेकिन बहुत सारा काम करना था।
इसे पूरा किया जा सके। हम सभी एक ही आवृत्ति और तरंगदैर्ध्य पर केंद्रित हों।
घटनाक्रमों के घटित होते ही उन पर एक साथ प्रतिक्रिया और विश्लेषण करना।
फैजाबाद और अयोध्या। दोनों के बीच की समकालिकता का अनुभव करना अद्भुत था।
एक दूसरे के विचारों को लगभग समझने में सक्षम हो गए थे... और आगे...
हम सोचने लगे कि कलेक्टर हमसे अभी क्यों मिलना चाहेगा। संग्राहक को यह अच्छी तरह पता था कि अंतिम समय से पहले बहुत कम समय बचा था।
कार्यक्रम। हमें थोड़ी चिंता हुई और इस अचानक हुई घटना के बारे में जानने की उत्सुकता हुई।
बैठक के लिए अनुरोध आया। हमें तैयार रहना था, इसलिए हमने बैठक को स्थगित कर दिया।
कलाकारों की टीमों को देश के सभी हिस्सों से अपनी ट्रेनों में चढ़ने के लिए अधिक समय मिल सके।
देश के लोगों को या तो 14 अगस्त की रात को या फिर अयोध्या पहुंचना होगा।
15 अगस्त की सुबह। अगर हम चारों को कुछ हो जाता, तो सभी 3000 सदस्य खतरे में पड़ जाते।

अयोध्या में एकत्रित होने वाले भारत के रचनात्मक समुदाय के सदस्यों के लिए यह एक सुखद अनुभव होगा।
राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारी भीड़ की मौजूदगी में अदालत में एक साथ गिरफ्तारी।
मीडिया।
शॉर्ट्स पहने और गमछे से चेहरा ढके हुए, मैं सोहेल के साथ चल रही थी।
फैजाबाद के स्थानीय बाजार से गुजरते हुए। मेरी एक चप्पल टूट गई, इसलिए सोहेल ने...
और मैं एक नई जोड़ी जूते खरीदने के लिए एक दुकान में गया। जब हम बेंच पर बैठे थे, तभी...
चप्पलें दिखाते हुए दुकानदार ने मुझसे casually कहा, 'तुम
ये लोग फैजाबाद के नहीं लगते।’ मैंने जवाब दिया, ‘हाँ, आप सही कह रहे हैं, लेकिन
आपने कैसे अनुमान लगाया?’ उसने उत्तर दिया, ‘आपके भाषण से। आप कहाँ हैं?’
'कहां से?' जब मैंने कहा कि हम दिल्ली से आए हैं, तो उन्होंने कहा, 'आप लोग सहमतवाले हैं। आपने गलत काम किया है।' चौंककर मैंने पलटकर कहा, 'क्या?'
गलत?’ उन्होंने फैजाबाद में एक दिन पहले तोड़फोड़ का शिकार हुई प्रदर्शनी का वर्णन किया।
उन्होंने टिप्पणी की, ‘आपने एक पोस्टर प्रदर्शित किया है जिसमें राम और सीता को भाई-बहन के रूप में दर्शाया गया है।’
और बहन।
मैंने सोहेल की ओर देखा, जिसने दुकानदार से पूछा, 'आपको यह किसने बताया?'
उन्होंने जवाब दिया, 'यह सब स्थानीय अखबारों में छपा था।' मैंने तुरंत पूछा, 'क्या अब तुम हमें हराने वाले हो?'

उसने पलटकर जवाब दिया, 'नहीं, लेकिन आपने ऐसा क्यों किया, महोदय? यह गलत है।'
हमने उन्हें समझाया कि इस तरह का कोई पोस्टर प्रदर्शनी का हिस्सा नहीं था।
इसके विपरीत, प्रदर्शनी में सदियों से अयोध्या का चित्रण किया गया था।
विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनेक स्रोतों से अनेक राम कथाएँ, यहाँ तक कि
दक्षिणपूर्व एशिया से। ये सभी विविधताएँ, ये सभी राम कथाएँ, वास्तव में मौजूद हैं, और
उनमें से एक, जो सदियों पहले लिखा गया था, वह किसी भारतीय द्वारा रचित भी नहीं था, बल्कि
भारत के पुस्तकालयों में बैठे।
जब आप अयोध्या पर कोई प्रदर्शनी लगाते हैं, तो आप इनमें से किसी को भी हटा नहीं सकते।
विभिन्न संस्करण। इसके अलावा, कई प्रख्यात इतिहासकारों ने इस प्रदर्शनी पर काम किया था। हम
हमने उन्हें आश्वस्त किया कि उनके द्वारा वर्णित जैसा कोई पोस्टर नहीं था।
यह महसूस हुआ कि जानबूझकर झूठ उन लोगों द्वारा फैलाया गया था जो ऐसा नहीं करते थे।
मैं चाहता हूं कि हर कोई प्रदर्शनी में आए और अयोध्या की कहानी पर विचार करे।
दुकानदार ने कहा, 'भले ही यह पुराने शास्त्रों में हो, तो शास्त्र ही सही है।'
गलत।'
फिर भी, वह हमारी बातचीत का आनंद ले रहा था और उसने चाय और समोसे मंगवाए।

जब हमने मना कर दिया, तो उन्होंने ज़िद की, 'साहब, आपको चाय पीनी ही होगी। यह...'
अयोध्या, और आप हमारे मेहमान हैं। मतभेदों को दरकिनार रखते हुए, आपको अवश्य आना चाहिए।
हमने उनकी मेहमाननवाजी स्वीकार की, जिस पर उन्होंने उत्सुकता से पूछा, 'क्या आपने
क्या आप मंदिर के दर्शन करेंगे?
मैंने जवाब दिया, 'नहीं। हम यहाँ शांति के लिए आए हैं, और संघर्ष उसी जगह पर है।'
चल रहा है। हम सरयू नदी से प्यार करते हैं, और हमारा कार्यक्रम शांति के लिए है।
सद्भाव।'
वह जानना चाहता था कि हमने अगली रात के लिए क्या योजना बनाई है, और हम
हमने उन्हें आने का निमंत्रण दिया। हमने ज़ोर देकर कहा, 'जब आप आएं, तो हमसे ज़रूर मिलें।' हमने भुगतान किया।
चप्पलों के लिए, और वह यह देखने आने के लिए सहमत हो गया कि हम क्या कर रहे हैं।
करने के लिए।
अपने लॉज में लौटते समय, सोहेल और मैंने इस बातचीत पर विचार किया।
ऐसा प्रतीत होता है कि जानबूझकर एक अफवाह फैलाई जा रही है।
सोहेल ने कहा, 'ऐसा पोस्टर जो मौजूद ही नहीं है।' 'यह एक आम तकनीक है।'
झूठ फैलाना और फिर उन्हें तब तक दोहराते रहना जब तक लोग उन पर विश्वास न कर लें।
सच रहो।'

लॉज में वापस आने पर, कलेक्टर कार्यालय से दूत फिर से आ गया।
उन्होंने हमसे एक संग्राहक के साथ बैठक में आने का अनुरोध किया। हमने प्रत्येक को देखा।
दूसरा व्यक्ति चुपचाप ट्रेनों के प्रस्थान के समय की गणना कर रहा था।
अयोध्या में विभिन्न गंतव्यों और उनके आगमन के समय। हमने इसमें देरी की।
आगे की बैठक के बारे में मैंने प्रबंधक से पूछा कि बैठक कहाँ होगी।
‘सर, कलेक्टर के कार्यालय में,’ उसने उत्तर दिया। शबनम ने तुरंत गोली चला दी।
उन्होंने जवाब दिया, 'नहीं, हम किसी कार्यालय में नहीं जा रहे हैं, और अगर यही शर्त है तो...'
हम कलेक्टर से नहीं मिलना चाहते।
अब यह मानसिक संघर्ष बन गया था। कई स्थानीय मित्रों ने हमें पहले ही चेतावनी दी थी।
बर्खास्त भाजपा नेताओं और कई नागरिक संगठनों के बीच संदिग्ध संबंध
नौकर।
संदेशवाहक लौटकर आया और उसने हमें सूचित किया कि बैठक हो चुकी थी।
हमें सर्किट हाउस में स्थानांतरित कर दिया गया, जो हमारे लॉज के ठीक बगल में था। समय तय कर दिया गया था।
दोपहर के भोजन के बाद, लगभग 3 बजे। हमें संदेह था कि यह बैठक हो सकती है।
हमें गिरफ्तार करने या हमारी अनुमतियों को रद्द करने के लिए बुलाया गया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हमारा

कार्यक्रम आयोजित नहीं हुआ। लॉज से निकलने से पहले हमने एक रणनीति बनाई थी।
मीटिंग के लिए। शबनम आक्रामक रवैया अपनाएगी जबकि राजन... तटस्थता बनाए रखें, अत्यंत तर्कसंगत बने रहें। वे इस रणनीति को जारी रखेंगे।
पूरी बैठक के दौरान।
जब सर्किट हाउस जाने का समय आया, तो एक हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न हो गई।
दोनों में से कोई भी पक्ष पहले पहुंचकर दूसरे का इंतजार नहीं करना चाहता था। अंततः, दोनों पक्षों की गाड़ियां एक साथ पहुंचीं। सर्किट
घर में एक बहुत बड़ा हॉल था जिसमें हर तरह का औपनिवेशिक फर्नीचर था। चूंकि कोई
एक दूसरे को जानते थे, औपचारिक परिचय हुआ—कलेक्टर भगवती Sharan Varma and Superintendent of Police Satyendra Kumar Garg. Then
हम सभी अपने-अपने स्थानों पर बस गए।
काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। किसी ने भी पहले बोलने की इच्छा नहीं जताई। अंत में,
कलेक्टर ने गार्ग को शुरू करने का इशारा किया। गार्ग की आवाज़ कर्कश हो गई और
उन्होंने आपत्तिजनक लहजे में कहा, 'आपको पता है सीआईडी रिपोर्ट क्या होती हैं। मैं जा रहा हूँ...'
मैं आपको विषयवस्तु बता दूंगा।’ उसने एक कागज़ निकाला और तैयार हो गया।
इसे हमें पढ़कर सुनाइए।

मैंने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा, 'हमें आपकी सीआईडी रिपोर्ट जानने की ज़रूरत नहीं है। हमारे पास पहले से ही जानकारी है।'

हमें आवश्यक अनुमतियाँ मिल गई हैं और हम अपनी तैयारियों के साथ आगे बढ़ रहे हैं।'

गर्ग को मेरा बीच में टोकना पसंद नहीं आया और उसने ऊंची आवाज में कहा, 'तुम्हें क्या लगता है?'

आप कौन हैं? आप तो सिर्फ कलाकार हैं। हमें कानून-व्यवस्था का ध्यान रखना होगा।

यह हमारी जिम्मेदारी है कि कोई अप्रिय घटना न हो।

मैंने भी अपनी आवाज बुलंद की और कहा, 'बिल्कुल सही। कानून आपकी जिम्मेदारी है और

यह आदेश हमारा नहीं है। हम स्वतंत्र नागरिक हैं। हमें वर्दी पहनने की कोई बाध्यता नहीं है।

लेकिन आप हैं। इसलिए, आप अपना कर्तव्य निभाएं जबकि हम अपना काम करते हैं।'

उस समय मैंने उनसे कहा कि याद रखें कि अगर अगली बार कुछ भी हुआ तो

उस दिन देश के सभी हिस्सों से 3000 कलाकार, संगीतकार और कवि उपस्थित होंगे।

जिस देश का उन्हें सामना करना पड़ेगा। हम गिरफ्तारी का सामना करेंगे, इसलिए

अधिकारियों को इस बात को ध्यान में रखना चाहिए इससे पहले कि वे इसे बनाने के बारे में सोचें।

और भी शरारत।

गर्ग ने पूरी ताकत से चिल्लाकर जवाब दिया, 'सुरक्षा की जिम्मेदारी मेरी है';

जिस पर शबनम ने पलटवार करते हुए कहा, 'असुरक्षा की जिम्मेदारी तो आपकी है। यह हम देख सकते हैं।'

उसी समय राजन ने हस्तक्षेप किया और हम सभी से शांत रहने की अपील की।
और कोई समाधान ढूंढना था क्योंकि वह कार्य किसी भी कीमत पर होना ही था। हम बैठे थे।
कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया। अंत में, संग्राहक ने अपनी दूसरी योजना का खुलासा किया।
और कहा, 'आपने अपने समारोह के लिए जो स्थान चुना है, वह इस पर है।' सरयू नदी के किनारे, और हम चाहते हैं कि आप इसे किसी अन्य स्थान पर स्थानांतरित कर दें।'
चूंकि हमें डराने-धमकाने की उसकी पहली योजना विफल हो गई थी, इसलिए उसने अपनी नई योजना अपनाई।
कार्यक्रम स्थल बदलने का विचार था। दुर्भाग्यवश, हम सभी ने इसे अस्वीकार कर दिया।
और उसे बताया कि यह संभव नहीं है। कार्यक्रम स्थल का चयन पहले ही हो चुका था।
सुविधा और सौंदर्य दोनों कारणों से उचित विचार किया गया था, क्योंकि
एक बड़ा पार्क जहाँ लोग बिना किसी परेशानी के बैठ सकते थे। यहाँ पुलिस अधीक्षक ने एक और आपत्ति उठाई: 'मान लीजिए कि कुछ है
एक तरह की दंगा जैसी स्थिति या कुछ गड़बड़ी हो सकती है। लोग प्रभावित हो सकते हैं।
सुरक्षा के लिए पानी में कूद रहे हैं। वे डूब सकते हैं।
शबनम ने कार्यक्रम स्थल बदलने से साफ इनकार कर दिया। हमारे पास लगभग कोई विकल्प नहीं था।
समय बीत चुका था; लोग लगभग तीन दिनों से साइट पर काम कर रहे थे, और अब यह
स्थान बदलना न तो संभव था और न ही व्यावहारिक। लेकिन उन्होंने स्वीकार किया, 'अगर

कुछ मामूली बदलाव या समायोजन हैं जिनसे कोई बड़ा फर्क नहीं पड़ेगा।
अंतिम प्रस्तुतियों में आने वाली समस्याओं को हम स्वीकार करेंगे। कृपया
यह समझना महत्वपूर्ण है कि संगीत के क्षेत्र में बहुत ही प्रतिष्ठित रचनात्मक व्यक्तित्व हैं,
नृत्य, ललित कला और रंगमंच यहाँ प्रदर्शन करने आ रहे हैं। हम ऐसा नहीं कर सकते।
जर्जर मंच। मंच नदी के पानी में तैरता रहेगा और
अयोध्या शहर इस प्रस्तुति का पृष्ठभूमि होगा।
चूंकि उन्होंने इन पटाखों पर काफी समय बिताया था, इसलिए संग्राहक ने पूछा
हमने कहा, 'क्यों न हम सीधे साइट पर जाकर देखें कि क्या किया जा सकता है?' हम सहमत हो गए और
वह जाने के लिए उठा, लेकिन तभी उसने कहा, 'हम तुम्हारे साथ नहीं जा रहे हैं, बल्कि...'
अयोध्या के मजिस्ट्रेट बाहर इंतजार कर रहे हैं और वे आपको अंदर तक ले जाएंगे।
साइट।'
एक और आश्चर्य। फैजाबाद और अयोध्या जुड़वां शहर हैं, लगभग
बीस किलोमीटर दूर स्थित अयोध्या के मजिस्ट्रेट का पद एक अलग क्षेत्र के अंतर्गत आता है।
अलग कार्यालय। सरकार ने इसके लिए एक अलग मजिस्ट्रेट नियुक्त किया था।
अयोध्या, जो हमारे और कलेक्टर के बीच हुई बैठक का हिस्सा नहीं थे और
पुलिस। यह हमें बहुत अजीब लगा। जब हम सर्किट से बाहर आए

उस घर में हमारी मुलाकात सुधाकर अब्दी नाम के एक युवा अधिकारी से हुई, जिनके
मैं जीप से कार्यक्रम स्थल तक गया, उसके पीछे राजन और शबनम सोहेल टैक्सी से आए।
मजिस्ट्रेट की गाड़ी में बैठे-बैठे मैंने मन ही मन बुदबुदाया, 'उन्होंने हमारा इतना समय क्यों बर्बाद किया? वे शुरू में ही कह सकते थे कि हमें...'
अयोध्या प्रशासन से निपटना सरासर समय की बर्बादी है। मजिस्ट्रेट, जो स्वयं अपनी आधिकारिक जीप चला रहे थे, ने कोई जवाब नहीं दिया, केवल
उसने मुस्कुराकर मेरी तरफ देखा। बीस किलोमीटर गाड़ी चलाने के बाद हम पहुँच गए।
आयोजन स्थल। यह एक खूबसूरत नजारा था, जिसके सामने एक विशाल पार्क था।
नदी और लाल बलुआ पत्थर की सीढ़ियाँ और घाट नीचे की ओर जाते हुए तल तक पहुँचते हैं।
पानी। नदी के दूसरी ओर, तीर्थयात्री स्नान करने और प्रार्थना करने आए थे।
इसके अलावा, दूसरी ओर लाल बलुआ पत्थर की खूबसूरत इमारतें खड़ी थीं।
मुगल, राजस्थानी, गोथिक सहित वास्तुकला की विभिन्न शैलियाँ। बारोक और एलिज़ाबेथन शैली। इनमें से कई पुरानी इमारतों में प्राचीन मंदिर थे।
जहां तीर्थयात्री पूजा करते थे। शाम को, सूर्यास्त के समय, यह लंबी भव्य कतार
घाटों का स्वरूप कालजयी लग रहा था। अयोध्या, अयुज्जा, साकेत, विनीता, विशाखा,
कोसल, महाकोसल, इश्वकभूमि, राम जन्मभूमि-जो भी नाम हो

आप इसे जिस भी नाम से पुकारना चाहें—ये सभी नाम इस जगह की पहचान हैं।
हम अयोध्या के मजिस्ट्रेट के साथ घटनास्थल पर लगभग एक घंटे तक इंतजार करते रहे।
कुछ पुलिस अधिकारियों के आने का इंतज़ार किया। मैंने मजिस्ट्रेट से अधिकारी को बुलाने का अनुरोध किया।
अपने वॉकी-टॉकी पर चिंतित होकर उसने उसे जल्द आने का आदेश दिया क्योंकि उमस बहुत ज्यादा थी।
उस शाम हमारी सारी ऊर्जा खत्म हो रही थी। मजिस्ट्रेट से बात करने के बाद...
किसी ने मुझे अपनी जीप में बुलाया।
उसने कार के ग्लव कंपार्टमेंट से हिंदी कविताओं की दो किताबें निकालीं।
जीप के कुछ कागज़ों पर 'रैना साहब के लिए' लिखा था। उन्होंने मुझे वे कागज़ सौंप दिए।
मुझे उपहार के रूप में ये कविताएँ मिलीं। मैंने उनसे पूछा कि क्या ये उनकी कविताएँ हैं, और उन्होंने हाँ कहा।
उन्होंने आगे कहा, ‘मैं सुधाकर अब्दी हूं। मेरा परिवार मूल रूप से यहां का निवासी है।’
कश्मीर। आपने फिल्म इंडस्ट्री में अभिनेता अब्दी के बारे में सुना होगा। वह...
मेरे अंकल।'
मैंने कहा, 'ओह, यह तो वाकई उल्लेखनीय है।'
उन्होंने जवाब दिया, 'अब आप जानते हैं कि आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं और समझ सकते हैं कि मेरा क्या मतलब है।'
भावनाएँ झूठ बोलती हैं, और आप मुझ पर विश्वास कर सकते हैं। मैं आपको दिखाऊंगा।’ उसने ले लिया

उसने अपनी पतलून की जेब से एक छोटा पीला पर्चा निकाला और मुझे दिखाया। पर्चे पर छपा था: ‘तुर्की पार्टी मस्जिद बनाने आ रही है’ [तुर्की पार्टी मस्जिद बनाने आ रही है।]
मेरी ओर गंभीरता से देखते हुए उन्होंने मुझे चेतावनी दी, 'तुम्हें पता है कि उन्होंने फैला दिया है...'
आप लोगों के बारे में यह अफवाह फैली है कि कुछ कलाकार यहाँ आ रहे हैं जो
वे शराब पिएंगे, मुर्गे का मांस खाएंगे और अयोध्या के पवित्र स्थान का अपमान करेंगे।
प्रशासन ने ईंटों, सीमेंट और रेत की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया है। इसलिए, मेरा
आप सभी से अनुरोध है कि उन्हें किसी भी प्रकार की स्थिति उत्पन्न करने का अवसर न दें।
जहां यह उल्टा असर डालेगा और हिंसा भी पैदा कर सकता है।
मैं घबरा गया और मैंने उससे कहा, 'कृपया किसी भी खाने-पीने की चीज बेचने वाले को अंदर न आने दें।'
इस क्षेत्र के आसपास। कृपया उनकी उपस्थिति पर प्रतिबंध लगा दें। उन्हें जाने के लिए कहा जा सकता है।
मुख्य सड़क स्थल पर किसी को भी इस क्षेत्र में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है।' मैंने उन्हें धन्यवाद दिया।
हमें यह अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करने के लिए। वह मुस्कुराया, 'मत करो'
चिंता मत करो। कुछ नहीं होगा।
सुरक्षा अधिकारी अभी तक नहीं पहुंचे थे, इसलिए सुधाकर ने फिर से
मैंने उसे वॉकी-टॉकी पर फोन किया। इसी बीच सोहेल कुछ लेकर आया। मूंगफली देखकर, मुझे उपहार में मिली किताबें देखकर, उसने मुझसे धीरे से पूछा, 'क्या है?'

'क्या चल रहा है?' मैंने जवाब दिया, 'बाद में। पहले इन अधिकारियों से निपट लें।'
एक जैतून-हरे रंग की जिप्सी गाड़ी आई और एक बहुत ही युवा, सुंदर पुलिस अधिकारी भी।
जीप से उतरकर उन्होंने हम सभी का अभिवादन किया। उन्होंने अब्दी से पूछा कि यह मुलाकात किस लिए है।
वह वहीं मौजूद था, और अब्दी ने उसे अगले दिन का कार्यक्रम समझाया।
उसने चारों ओर काफी देर तक देखा और बस इतना कहा, 'ठीक है, कोई बात नहीं।' वह चाहता था कि
कार्यक्रम के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के बाद, वह इसे समझने लगा।
पूरा आयोजन।
उन्होंने हमसे पूछा, 'क्या आप दिल्ली से हैं?' और जब हमने इसकी पुष्टि की, तो उन्होंने
उन्होंने जवाब दिया, 'मैं भी दिल्ली में ही था, जेएनयू में, जहां मैंने आईपीएस परीक्षा की तैयारी की थी।'
मैंने तुरंत कहा, 'कृपया प्रतीक्षा करें,' और सोहेल को बुलाया। 'क्या आप कुछ खरीदते हैं?'
मैंने पूछा, 'क्या आप उसे जानते हैं?'
अधिकारी ने जवाब दिया, 'ये सोहेल हाशमी हैं, जो महासचिव हैं।' जेएनयू में स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) के सदस्य। उन्होंने हाथ मिलाया, और फिर वह
उसने अब्दी की ओर मुड़कर कहा, 'सब ठीक है। कोई समस्या नहीं है।' जब हमने उनसे चारों ओर फैल रही अफवाहों के बारे में पूछा, तो वे हँस पड़े और
उन्होंने हमें आश्वस्त करते हुए कहा, 'चिंता मत करो। हमें पता है हमें क्या करना है, और तुम अपना काम करो।'

थोड़ा सा।’ वह हँसा लेकिन जब हमने उसे इसके बारे में बताया तो वह अचंभित नहीं दिखा।

कलेक्टर से मुलाकात हुई। उन्होंने मुस्कुराते हुए हमसे विदा ली, जैसा कि अब्दी ने भी किया।

*

14 अगस्त 1993 SAHMAT के लिए एक ऐतिहासिक दिन था। सुबह के लोगों से

देश के कोने-कोने से लोग आने लगे। हमारे स्थानीय स्वयंसेवकों ने

कलाकारों के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ की गईं।

अयोध्या शहर के आसपास स्थित धर्मशालाएँ। अधिकांश सहमत सदस्य

पहले ही आ चुका था, इसलिए हम चार ही नहीं बल्कि एक बड़ा समूह भी मौजूद था।

टीम के सदस्यों और शुभचिंतकों का समूह। अब सहमत का ध्यान इस पर केंद्रित था।

संगीतकारों के लिए व्यवस्था की गई। उनमें से अधिकांश सड़क मार्ग से यात्रा करेंगे।

लखनऊ और बनारस से। कुछ लोग लखनऊ के लिए उड़ान भरते थे और उन्हें वहीं रहना पड़ता था।

हवाई अड्डे पर उनका स्वागत किया गया और सड़क मार्ग से अयोध्या लाया गया। यह एक बहुत बड़ा अभियान था।

सभी कलाकारों की देखभाल करना और यह सुनिश्चित करना कि वे ठीक हैं।

दिन के दौरान आरामदायक रहेगा और प्रदर्शन करने के लिए अच्छी स्थिति में होगा।

रात। अंतिम प्रस्तुति में स्थानीय कलाकारों ने भाग लिया। हमने सुना
ऐसी अफवाहें थीं कि शाम को कुछ लोग प्रदर्शन करेंगे।
यह सुनिश्चित करने के लिए कि प्रदर्शन न हों।
कई दिनों की योजना और मेहनत के बाद हम सब यहाँ पहुँचे थे।
सभी लोग एक साथ थे और मनोबल ऊंचा था। शाम होते-होते सभी व्यवस्थाएं पूरी हो गईं।
मुख्य स्थल पूरी तरह तैयार थे। नदी के दूसरी ओर, राम रहमान के पास
घाटों और इमारतों के पूरे अग्रभाग को मंद रोशनी से रोशन करने की व्यवस्था की गई।
बिजली जनरेटरों की मदद से। पूरा नदी तट होगा
उस तैरते हुए मंच की पृष्ठभूमि जिस पर प्रस्तुतियाँ होंगी जगह।
15 अगस्त 1993 की आधी रात को कार्यक्रम शुरू हुआ।
देश के विभिन्न हिस्सों से आए 3000 कलाकार घाटों पर खड़े थे। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल जवाहरलाल नेहरू के भाषण के दौरान, जलती हुई मोमबत्तियाँ लिए हुए सरयू नदी में तैरते हुए नाविकों ने भाग लिया।
नेहरू, साउंडट्रैक पर बजाया गया। 'आधी रात को जब पूरा
उन्होंने कहा, 'जब दुनिया सो रही होगी, भारत आजादी और स्वतंत्रता के साथ जागेगा।' यह एक
15 अगस्त 1947 की प्रतीकात्मक स्मृति, राष्ट्र को याद दिलाने के लिए कि क्या हुआ था
उस समय किए गए वादे और हम जहां तक पहुंच चुके थे।
कार्यक्रम की प्रस्तावना सुचारू रूप से संपन्न हुई। मैंने कार्यक्रम के पहले एंकर के रूप में कार्य किया।

उस रात, पहले संगीत कार्यक्रम के साथ शाम की शुरुआत करने के लिए मंच पर प्रस्तुति दी।
इसमें दिग्गज संगीतकार उमयालपुरम शिवरामन, जो संगीत के उस्ताद हैं, शामिल हैं।
कर्नाटक संगीत शैली में मृदंगम, और स्थानीय पखावज, पागल दास मालिक।
अचानक किसी ने मेरे कान में फुसफुसाकर कहा कि पागल दास नहीं आया है।
कुछ लोगों ने उसे उठा लिया था, लेकिन किसी को नहीं पता था कि वे उसे कहाँ ले गए थे।
उसे। पहला उद्घाटन प्रदर्शन, उत्तरी और
देश में शास्त्रीय संगीत की दक्षिणी परंपराओं को नुकसान पहुंचाया गया था।
यह तय किया गया कि उमयालपुरम एकल प्रस्तुति देगी। जब मैं बनाने गया तो
घोषणा होते ही, मेरे अंगरक्षक ने मुझे रोक दिया और निर्देश दिया कि अगर मैं...
मुझे कोई आवाज़ सुनाई दी। मैंने उसकी तरफ और पास बैठे विवान की तरफ देखा।
वह मुझे मंच पर देख रहा था। उसने पूछा, 'यह क्या है?' मैंने चुपचाप उसे इशारा किया और
उन्होंने कहा, ‘कुछ हो सकता है। बस सावधान रहना।’ विवान ने भी यही कहा।
उसने कहा, 'सावधान रहना।' अचानक मेरे मन में एक विचार आया—क्या होगा अगर कोई
मुझ पर गोली चलाने की कोशिश की? फिर क्या? मैंने इस विचार को मन से निकाल दिया और
घोषणा की गई। शिवरामन अपने मृदंगम के साथ मंच पर आए।

विशाल जनसमूह के सामने।

यह सहमत कॉन्सर्ट राजनीतिक रूप से विवादास्पद हो गया था।
इसमें मौजूद हर कोई

राजनीतिक जगत ने इसके पक्ष या विपक्ष में अपना रुख अपना लिया था।

बाबरी मस्जिद के विध्वंस से पहले, मुझे नहीं लगता कि उस दिन तक कोई घटना हुई थी।

इसके जवाब में कोई भी समारोह या कोई भी कार्यक्रम वहाँ था क्योंकि सभी राजनेताओं के पास था

वह उस जगह से दूर रहा और उससे बचता रहा।

जैसे-जैसे कार्यक्रम एक के बाद एक संगीत कार्यक्रमों के साथ आगे बढ़ता गया, एक शोर उत्पन्न होने लगा।

दर्शकों के बीच से आवाजें उठने लगीं और शोरगुल मच गया। अचानक, दर्शकों में से कुछ साधु और स्थानीय लोग खड़े हो गए और 'जय श्री राम' के नारे लगाने लगे।

यह सिलसिला करीब पांच मिनट तक चला, जिसके दौरान संगीत कार्यक्रमों को रोकना पड़ा।

विराम हो गया। इसलिए, हमने अपने लाउडस्पीकरों की आवाज़ बढ़ा दी, जिससे हमारी आवाज़ और तेज़ हो गई।

अनहद गर्जे ने 400 किलोवाट की पूरी मात्रा में संगीत रिकॉर्ड किया। सरासर

संगीत की तेज़ आवाज़ ने नारों को दबा दिया। जल्द ही पुलिस ने उन्हें हटा दिया।

उन्हें कार्यक्रम स्थल से बाहर निकाला गया और हमारा कार्यक्रम फिर से शुरू हो गया।

जैसे-जैसे लोग बैठ गए, मैंने देखा कि अर्जुन सिंह एक कुर्सी पर बैठे हैं।

अपने राजनीतिक सहयोगियों में से एक, सांसद पवन दीवान ने पिछले कुछ समय में

दर्शकों की पंक्ति में। मुझे अचानक एहसास हुआ कि नारे लगाए गए होंगे।

अर्जुन सिंह की उपस्थिति के विरुद्ध, जिन्होंने सार्वजनिक रूप से समर्थन प्रदर्शित किया था

संसद में SAHMAT कार्यक्रम में भाग लिया और अब यहां मौजूद लोगों के बीच था।

अयोध्या के लोगों के प्रति उनके मन में गहरी आपत्ति थी।
उन्होंने नरसिम्हा राव के कामकाज पर कड़ी आपत्ति जताई थी।

बाबरी मस्जिद कांड के सिलसिले में। वह आधे घंटे तक वहाँ रुके और फिर चले गए।

रात।

एक युवक मेरे पीछे-पीछे हर जगह जाता था। वह मेरा इंटरव्यू लेना चाहता था।

जब मैंने उनसे पूछा कि वे किस संगठन से जुड़े हैं, तो उन्होंने बड़े ही सहज भाव से जवाब दिया।

उसने साफ-साफ कहा कि वह आरएसएस से है। मैंने कहा, 'ठीक है, लेकिन मुझे अपने सवाल बताओ।'

'मैंने तुम्हें लिखित में जवाब दिए हैं, और मैं तुम्हें लिखित में जवाब दूंगा।' उसने ऐसा करने से इनकार कर दिया और टालमटोल करता रहा।

वह मुझसे इंटरव्यू के लिए बार-बार गुहार लगा रहा था, लेकिन मैंने उसकी बात नहीं मानी। एक समय देर रात

रात में मुझे प्यास लगी थी और मैं पानी पीना चाहता था। लेकिन पानी नहीं था।

कहीं भी नहीं, क्योंकि हमने खुद ही सभी फेरीवालों को बहुत दूर धकेल दिया था।

मजिस्ट्रेट अब्दी की चेतावनी का दृश्य। इस लड़के ने कहा कि वह कुछ लाएगा।

वह मेरे लिए पानी लाया था, लेकिन वह बिना पानी लाए वापस आ गया।

कुछ समय बाद उन्होंने मुझसे पूछा, 'तुम्हें सारे सवाल क्यों चाहिए?'
लिखा हुआ?'
मैंने कहा, 'आपके संगठन को जानते हुए, जो बहुत नाराज और विरोधी है,
इस घटना में, आप लोग मेरे उत्तरों को गलत तरीके से प्रस्तुत करेंगे और गलत शब्दों का प्रयोग करेंगे।
मेरे मुंह में, और मैं तुम्हें ऐसा करने का कोई मौका नहीं देना चाहता।'
सुबह के शुरुआती घंटों में, महान कथक नृत्यांगना सितारा देवी जब नृत्य प्रदर्शन शुरू हुआ, तो नदी के उस पार स्थित मंदिरों से आरती और शंख की ध्वनि सुनाई दी। उसी क्षण सितारा देवी और वहां उपस्थित सभी लोगों ने नृत्य प्रदर्शन रोक दिया।
जब तक पूजा समाप्त नहीं हुई, तब तक यह युवक आश्चर्यचकित हुआ और उसने पूछा, 'कैसे?'
‘क्या आपने पूजा समाप्त होने तक अपना कार्यक्रम रोक दिया था?’ मैं उसकी बात सुनकर हंस पड़ा।
अपनी मासूमियत को समझाते हुए उसने कहा, 'इस तरह से आप दूसरे लोगों के प्रति सम्मान दिखाते हैं।'
विश्वास।’ अब तक हम वास्तव में एक दूसरे के साथ काफी अच्छे दोस्त बन चुके थे।
सूर्योदय के समय गिरिजा देवी राम भजन गा रही थीं। यह एक भावपूर्ण दृश्य था।
यह क्षण मुक्ता नाद के रात भर चलने वाले संगीत कार्यक्रम के समापन का प्रतीक था।
अब तक मैं काफी थक चुका था और मुझे बहुत भूख लगी थी, और मैं चाय पीना चाहता था।
यह युवक मिट्टी के कुल्हड़ में चाय और कुछ समोसे लेकर आया।

मैंने उससे कहा, ‘मुझे उम्मीद है कि तुम इसे मना नहीं करोगे। मुझे पता है तुमने खाना नहीं खाया है।
'पूरी रात कुछ भी।' तो मैंने उससे पूछा, 'क्या तुम जानते हो क्यों? क्योंकि तुम
लोग इन समोसों को चिकन टिक्का में बदल देते, और हम
मैं आपको विवाद शुरू करने का कोई मौका या बहाना नहीं देना चाहता था।'
मैंने उनकी चाय पी, और उन्होंने खुद स्वीकार किया, 'मुझे इस तरह की उम्मीद नहीं थी।'
कार्यक्रम। हमें कुछ और बताया गया था। मैं आरएसएस से हो सकता हूँ, लेकिन मैं
मुझे कार्यक्रम पसंद आया।
उस समय मैंने उनसे कहा, 'आप हमारे दिल्ली कार्यालय क्यों नहीं आते, और उसके बाद'
हमारे काम करने के तरीके को देखकर, फिर अगर आपको लगे कि आप मेरा इंटरव्यू ले सकते हैं,
आपका स्वागत है।'
अयोध्या में सब कुछ समाप्त हो जाने के बाद, हममें से अधिकांश लोग बड़े-बड़े समूहों के साथ लखनऊ के लिए रवाना हो गए। कलाकारों की संख्या। लखनऊ जाने से पहले, मैं जाना चाहता था... अयोध्या के बहुत पास स्थित मनकापुर में, मैं अपनी छोटी बहन से मिलने गई थी। उसे वहाँ जाना था।
कश्मीरियों के पलायन के दौरान वह अपने परिवार के साथ कश्मीर से बाहर चली गई।
1990 में, उग्रवाद और आतंकवाद के चरम पर, घाटी के पंडितों की तस्वीर।
वहाँ। वह और उनके पति, साथ ही उनके दो बेटे, जिनकी उम्र सात और नौ साल थी,

वह एक स्टील का गिलास और एक सूटकेस लेकर मनकापुर आया था जिसमें एक
कुछ ही कपड़े थे। हम दो साल से नहीं मिले थे, और मैं देखना चाहता था कि वे कैसे दिखते हैं।
वे अपने जीवन से तालमेल बिठा रहे थे। चूंकि मेरे बहनोई
पी एंड टी विभाग में दूरसंचार इंजीनियर के पद पर कार्यरत, उन्हें एक
श्रीनगर से पिछड़े कस्बे मनकापुर के लिए स्थानांतरण, जो बहुत ही सीमित सुविधाओं वाला कस्बा है। अपनी बहन के परिवार से कुछ घंटे मिलने के बाद, मैं
लखनऊ हवाई अड्डे के लिए रवाना हो गए।
एयरपोर्ट पहुँचते ही मैंने चेक-इन कर लिया, लेकिन मुझे वहाँ बाकी लोग नहीं दिखे।
उन्हें एक ही फ्लाइट लेनी थी। मैं घबरा गई; अगर उनकी फ्लाइट छूट गई तो,
सहमत के पास इतने बड़े समूह के लिए नए टिकट खरीदने के लिए पैसे नहीं थे।
मैंने लखनऊ में अपने दोस्तों से पूछताछ की। ऐसा लग रहा था कि वे यात्रा कर रहे थे।
बस और ड्राइवर हवाई अड्डे का रास्ता भटक गए थे। मैंने कुछ अधिकारियों से पूछने की कोशिश की।
अगर वे उड़ान में देरी कर सकते, तो ठीक था, लेकिन किसी ने भी मुझे कोई निश्चित जानकारी नहीं दी।
उत्तर। मैंने देखा कि अटल बिहारी वाजपेयी भी उसी फ्लाइट में चेक-इन कर रहे थे। मेरे पास था
मुझे उससे कुछ शिकायत थी, क्योंकि 12 अगस्त को, जब राजन और मैं लखनऊ पहुँचकर हमने रवाना होने से पहले कुछ अखबार खरीद लिए थे।

अयोध्या, और मैंने अटलजी का एक पूरे पृष्ठ का साक्षात्कार देखा जिसकी हेडलाइन थी...
SAHMAT एक राष्ट्रविरोधी संगठन था। मैंने पूरा साक्षात्कार पढ़ा।
उन्होंने सहमत के बारे में झूठ बोला था और हम पर राष्ट्रविरोधी होने का आरोप लगाया था।
उसे हवाई अड्डे पर देखकर मेरा खून खौल उठा, लेकिन मुझे सही जवाब नहीं मिल पाया।
उसके पास जाने का मौका मिला। एक पल के लिए मुझे लगा कि मैं उसे पकड़ लूंगा।
जब विमान हवा में था।
मैंने विमान में चढ़कर देखा तो वह अपने साथ पहली पंक्ति में बैठा था।
परिचारक। मैंने उसे देखा, लेकिन वह खिड़की से बाहर देख रहा था।
मैं बैठा रहा।
मेरी सीट पर ही घोषणा हुई कि उड़ान में देरी होगी।
क्योंकि अयोध्या से कुछ यात्री अभी तक नहीं आए थे। मुझे राहत मिली।
और हमने अपने समूह के विमान में सवार होने का इंतजार किया। विमान में प्रवेश करने वाले पहले व्यक्ति गिरीश कर्नाड थे, उनके बाद...
Shahji Karun, the Malayalam film-maker. Then came Ram Rehman and
पाब्लो बार्थोलोम्यू, दोनों ही जाने-माने फोटोग्राफर हैं, और बड़ी संख्या में
तानपुरा और तबला वादक संगीतकार। उनमें एम.ए. बेबी भी थे, जो एक सदस्य थे।

केरल से संसद के लिए। जब सभी अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए, तो मैंने राम रहमान से कहा।

मैं अटलजी से उनके साक्षात्कार और उनके बारे में बातचीत करना चाहता था।

SAHMAT पर टिप्पणियाँ। राम और पाब्लो उत्साहित हो गए और उन्होंने अपने

कैमरे। उन्होंने कहा, 'एक बार जब आप वहां पहुंच जाएंगे, तो हम सब तस्वीरें खींचेंगे।' कुछ मिनटों बाद, और उड़ान भरने से ठीक पहले, मैंने मौका देखा। अटलजी सो रहे थे।

या सोने का नाटक कर रहे थे, इसलिए मैंने बड़ी मूंछों वाले उसके अटेंडेंट को बताया।

मैंने उनसे बात करने की इच्छा जताई। उन्होंने कहा, 'बाद में।
उन्हें आराम करने दो।' तो हम वापस लौट आए।

हम अपनी सीटों पर बैठ गए। लगभग चालीस मिनट बाद, मैं फिर गया। इस बार मैंने अपने साथ कुछ और भी लिया था।

अनहद गर्जे के दो कैसेट निकाले गए, जो हमारे संगीत कार्यक्रम के थे और साबित हुए थे...

बड़ी सफलता मिली। इन टेपों में सूफी और भक्ति संगीत के सभी अंश शामिल थे।

अनहद के संगीत कार्यक्रमों में। राम रहमान और पाब्लो ने फिर से मेरा अनुसरण किया।

कैमरे लगे हुए थे, लेकिन अटलजी नहीं जागे थे। वे सोते रहे।

अंततः, जब हम उतरे और हमें बसों में बिठाकर ले जाया जाने लगा...

लाउंज में, मैंने अटलजी को अपने सहायक के साथ बैठे देखा। दरअसल, एम.ए. बेबी वहीं खड़े थे।

बस में उसके बगल में बैठकर, मैं उससे हल्की-फुल्की बातचीत कर रहा था। आखिरकार

मैंने अटलजी से संपर्क किया, और एम.ए. बेबी ने मेरा परिचय कराते हुए कहा, 'यह रैना है।'

'सहमत, अयोध्या से लौट रहा हूँ।' वाजपेयी ने मेरी ओर देखा। मुस्कुराते हुए मैंने बिना समय बर्बाद किए कहा, 'सर, मैंने आपका इंटरव्यू पढ़ लिया है।'
जो आपने लखनऊ में अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में दिया था
सहमत। आपने जो कुछ भी कहा, उसमें त्रुटियाँ थीं और वह असत्य से भरा हुआ था।
हमारे बारे में। आपने हम पर राष्ट्रविरोधी होने का आरोप लगाया है। क्या आप सचमुच ऐसा मानते हैं?
वो? खैर, मेरे पास सहमत की तरफ से आपके लिए एक तोहफा है। ये दो चीजें लीजिए।
हमारे सांप्रदायिकता विरोधी अभियान के संगीत कार्यक्रमों की कैसेटें। कृपया इन्हें सुनें।
और फिर हमारे बारे में अपना मन बना लेना।’ चेहरे पर मुस्कान लिए हुए उसने कहा।
उन्होंने कैसेट स्वीकार कर लीं, मेरी तरफ देखकर जोर से हँसे और वादा किया
उनकी बात सुनने के लिए।

10

कश्मीर में आंतरिक कलह का प्रकोप

जनवरी 1990 की सर्दियों में अचानक मुझे एक फोन आया।
श्रीनगर में मेरे बहनोई ने कहा कि मेरी माँ में बुद्धि थी।
रक्तस्राव हुआ था और उन्हें सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया था।
कुछ दिनों तक कश्मीर में आतंकवाद अपने चरम पर था। रोजाना खबरें आती रहती थीं।
घाटी भर में हत्याओं और बम धमाकों की घोषणा की गई। कर्फ्यू लगा दिया गया है।
मुझे पता था कि घर से उस जगह जाना मेरे लिए मुश्किल होगा। अस्पताल। मैंने अपने बचपन के दोस्त एम.के. राजदान को फोन किया, जो अब पीटीआई के सीईओ हैं।
और मैंने उसे अपनी माँ के बारे में बताया और कहा कि मुझे घर जाना है। क्या वह
कृपया मुझे कर्फ्यू पास प्राप्त करने में मदद करें? रज़दान ने उत्तर दिया, 'जब आप उतरेंगे'
कश्मीर में, रीगल चौक के पास लैम्बर्ट लेन पर सीधे जाएं, जहां हमारी पीटीआई की खबर उपलब्ध है।

कार्यालय में जाकर श्री सोफी से मिलें। वे आपको दो प्रेस कर्फ्यू पास जारी करेंगे।
चिंता मत करो। मैं उसे अभी फोन करूंगा, और मुझे उम्मीद है कि सब ठीक रहेगा।
आपकी मां।'
मैंने अपना टिकट खरीदा, अपने कुछ सर्दियों के कपड़े और कुछ नकदी पैक की और निकल पड़ा।
श्रीनगर के लिए पूरी तरह से भरी हुई फ्लाइट थी। विमान में सवार लोग शहर की स्थिति के बारे में बात कर रहे थे।
घाटी में चल रहे मामलों को लेकर किसी ने कहा कि जग मोहन फिर से सक्रिय हो गया है।
उन्हें राज्य का राज्यपाल नियुक्त किया गया। यात्रियों में सन्नाटा छा गया, और
कुछ समय बाद विमान श्रीनगर में उतरा।
मुझे नहीं पता था कि क्या उम्मीद करनी है, लेकिन मेरे मन में यह बात स्पष्ट थी कि मैं
मैं अपने माता-पिता को जल्द से जल्द दिल्ली ले जाऊं, जहाँ हमें कुछ मिल सके।
मेरी माँ को सर्वोत्तम संभव चिकित्सा उपचार मिले। मैं टैक्सी से हवाई अड्डे से निकल गया।
मैंने पीटीआई कार्यालय से अपने कर्फ्यू पास लिए और जल्दी से घर भागा।
बहन गिरिजा वहाँ थीं; उनके छह और आठ साल के बच्चे; मेरी भाभी- शोभा और मेरे पिता बाबूजी। अपना बैग वहीं छोड़कर मैं जल्दी से भागा।
अस्पताल की ओर। शाम ढल रही थी; कड़ाके की ठंड थी और सड़कें गीली थीं। चारों ओर उदासी का माहौल था। वहाँ शायद ही कोई लोग थे।
सड़कों पर घूमना।

मैं जल्द ही अपनी माँ के बिस्तर पर पहुँच गया। मैंने देखा कि वह बेचैन थीं और कुछ चाहती थीं।
वॉशरूम जाने को कहा गया। नर्स और डॉक्टर ने उसे हिलने-डुलने नहीं दिया।
लेकिन उसने उठने की जिद की। मुझे नहीं पता कि उसने मुझे देखा या पहचाना या नहीं।
क्योंकि वह असहज, भ्रमित और अर्धचेतन अवस्था में थी। डॉक्टर अंततः मैंने उसे एक इंजेक्शन दिया, जिससे वह तुरंत गहरी नींद में सो गई।
मैंने प्रभारी डॉक्टर से पूछा, 'आपने उसे कौन सा इंजेक्शन दिया है? क्या आप बता सकते हैं?'
कृपया मुझे मरीज की हालत के बारे में बताएं?’ उसने बस इतना ही कहा।
उसके मस्तिष्क में रक्तस्राव हुआ था, और इस अवस्था में उसे इलाज की आवश्यकता थी।
उसे निगरानी में रखा जाए। और वह अचानक आगे बढ़ गया। मेरे चचेरे भाई ने उसकी देखभाल की।
उस रात उससे। जैसे-जैसे अंधेरा होता गया, मैं घर लौट आया, और रात में...
परिवार में इस बात पर बहस हुई कि क्या किया जाए। मैंने सुझाव दिया कि सबसे अच्छा विकल्प यह था कि...
उसे दिल्ली ले चलो, जहाँ हम सब मिलकर उसका सर्वोत्तम इलाज करा सकते हैं।
श्रीनगर में मौजूदा परिस्थितियों में कुछ खास संभव नहीं था।
वहाँ।
अगली सुबह, मैं सुबह-सुबह, लगभग नौ बजे अस्पताल पहुँच गया।
मेरी यही इच्छा थी।

डॉक्टर से मिलने के लिए। उन्होंने मेरी माँ को दो बिस्तरों वाले कमरे में स्थानांतरित कर दिया था।

दूसरे बिस्तर पर एक मुस्लिम महिला लेटी हुई थी जो कहीं दूर से आई थी।

मैं गांव गया था। मैं वहां के प्रभारी डॉक्टर से मिलने गया। वह भी एक कश्मीरी पंडित थे।

एक रैना। मैंने अपना परिचय दिया और उसने मुझे पहचान लिया।
मैंने उससे अपने बारे में पूछा।

मैंने अपनी मां की हालत के बारे में बताया और उन्हें दिल्ली ले जाने की अपनी इच्छा व्यक्त की।

इलाज के दौरान। उन्होंने बताया कि मेरी माँ कोमा में चली गई थीं, और इलाज के दौरान।

ऐसी परिस्थितियों में, उसे हिलाया नहीं जा सकता था। और ऐसा तब भी होता अगर वह

हम न्यूयॉर्क में थे। हमें यह देखने के लिए कम से कम दो सप्ताह इंतजार करना होगा कि क्या

उसकी हालत स्थिर हो गई है, और फिर शायद उसे दिल्ली ले जाया जा सकता है। इन दो हफ्तों में।

ये उपचार बेहद महत्वपूर्ण थे क्योंकि उनके मस्तिष्क में रक्तस्राव को रोकना आवश्यक था। उपचार में निम्नलिखित शामिल थे:

निर्धारित इंजेक्शन। वह सामान्य रूप से खाना नहीं खा पा रही थी, और वह

मुझे ट्यूब के जरिए दूध और संतरे का रस पिलाया गया। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और चला गया।

मैं वार्ड में अपनी मां से मिलने जा रहा हूं जो वहां लेटी हुई हैं।

अस्पताल का माहौल सामान्य नहीं लग रहा था; वहाँ कुछ असामान्य सा प्रतीत हो रहा था।

कुछ तनाव सा था। किसी मरीज के साथ ऐसे अस्पताल में दो सप्ताह बिताना।
कोमा में होना कोई सुखद विचार नहीं था। लेकिन कोई और विकल्प न होने के कारण, हमें यही करना पड़ा।
इसे करने के लिए। परिवार ने फैसला किया कि मेरा बड़ा भाई और मैं बारी-बारी से यह काम करेंगे।
मैं अस्पताल में रहूंगी, जबकि मेरी बहन और भाभी मेरी देखभाल करेंगी।
बाबूजी और मेरी बहन के दो छोटे बच्चे।
अस्पताल में मेरी पहली रात, कड़ाके की ठंड में एक स्टील के स्टूल पर बैठी हुई,
यह बहुत कठिन था। वहाँ खाना या गर्म चाय खरीदने के लिए कोई कैंटीन नहीं थी।
कई वर्षों बाद मैं सर्दियों में अपने गृहनगर में था। लगभग
आधी रात को, मैंने तेज चीखें सुनीं, जिसके बाद चारों ओर अफरा- तफरी मच गई।
बाहर, मुख्य गलियारे में। मैं घबरा गया लेकिन बाहर देखने की हिम्मत नहीं की।
यह कैसी आवाज थी? मुझे भागते कदमों की आहट सुनाई दी और कभी-कभी दर्द भरी चीखें भी।
और बेबसी भरी चीखें। मैंने अनुमान लगाया कि कुछ गंभीर घटना घटी है।
शायद अस्पताल पर आतंकवादी हमला हुआ हो। मैं डर के मारे अपनी कुर्सी पर सिकुड़ गया।
अपनी माँ के सौम्य, शांत चेहरे को देखते हुए, एक पल के लिए मुझे लगा कि शायद ऐसा हो सकता है।
हम दोनों का अंत। कुछ समय बाद शोर कम हो गया।

कमरे में मौजूद दूसरे मरीज की देखभाल कर रहे सज्जन भी चुपचाप बैठे रहे।
कभी-कभी मेरी तरफ देखते हुए, लेकिन कुछ नहीं कहते हुए। कमरे में सन्नाटा छाया हुआ था।
यह डरावना था। कुछ घंटों बाद, इस सज्जन ने कुछ हिम्मत जुटाई और उसने चुपचाप बिना आवाज किए दरवाजा खोला और बाहर झाँका। फिर उसने
वह चुपचाप अपनी कुर्सी पर वापस बैठ गया। कुछ सेकंड बाद, हमने एक दूसरे की ओर देखा।
और उसने फुसफुसाते हुए कहा, 'घायल लोग आ गए हैं, और उनका ऑपरेशन किया जा रहा है।'
अब।’ मैंने एक शब्द भी नहीं कहा, लेकिन मैं सोचने लगा, ‘घायल? कहाँ से?’
वे आ गए हैं?’ उसने मेरे भ्रमित चेहरे को जरूर पहचान लिया होगा और
उन्होंने समझाया, ‘ये घायल मुजाहिदीन हैं।’ जब उनका यह बयान बेमानी साबित हुआ।
मैं तो टॉयलेट सीट पर ही बेहोश हो गया।
सुबह सब कुछ सामान्य था, मानो रात में कुछ हुआ ही न हो।
मैं गलियारे से गुज़रा, यह सोचकर कि मुझे घायल मुजाहिदीन दिखेंगे।
वार्डों में, लेकिन मुझे कोई नहीं दिखा। उनका कोई अता-पता नहीं था। मैं बड़ा हो गया।
मुझे जिज्ञासा हुई और मैं जानना चाहती थी कि वे कहाँ गायब हो गए, लेकिन किसी से पूछने की हिम्मत नहीं हुई। मैं कुछ संतरे पकाने के लिए कमरे में वापस चली गई।
मैंने अपनी माँ के लिए जूस बनाया और उन्हें ट्यूब के ज़रिए खाना खिलाना शुरू किया। वहाँ एक

दरवाजा खटखटाया। हम दोनों के दरवाजा खोलने से पहले ही एक युवक अंदर आ गया।

और मैंने पूछा, 'आपके मरीज को क्या हुआ है?' जैसे ही मैंने समझाया, उसने पलटकर जवाब दिया।

‘आप क्या करते हैं?’ मैंने सोचा, ‘हे भगवान, अगर मैं उन्हें बता दूं कि मैं थिएटर में काम करता हूँ और

दिल्ली का फिल्म निर्माता, शायद उसे गलतफहमी हो जाए।’ इसलिए मैंने झूठ बोला, ‘मैं अंग्रेजी पढ़ाता हूँ।’

मैं दिल्ली के एक निजी कॉलेज में पढ़ती हूँ और अभी-अभी अपनी माँ की देखभाल करने आई हूँ।'

उसने कमरे के चारों ओर एक लंबी और गहन नज़र डाली, और फिर दोबारा

उसने पूछा, ‘तुम्हें क्या चाहिए?’ मैंने कहा, ‘ज्यादा कुछ नहीं। मुझे दूध और संतरे चाहिए।’

मेरे मरीज के लिए।’ उन्होंने समझाया, ‘अगर आपको मरीज के लिए दूध चाहिए, तो ड्यूटी पर जाएं।’

कमरा। वे आपको गाय का दूध देंगे, लेकिन अगर आपको अपनी चाय के लिए दूध चाहिए,

फिर वे आपको पाउडर वाला दूध देंगे।’ मैंने उन्हें धन्यवाद दिया, और उन्होंने आखिरी बार कहा।

कमरे में चारों ओर देखो और बाईं ओर देखो।

ड्यूटी रूम ने सभी को मुफ्त दूध बांटा। यह एक अजीब बात थी।
मुझे पता था।

ड्यूटी रूम डॉक्टरों के लिए ड्यूटी के बीच में आराम करने के लिए बनाए गए थे।

चक्कर लगाए। आखिरकार, मुझे ड्यूटी रूम से दूध मिल ही गया। दिन का अधिकांश समय मैं

मैंने इस सरकारी अस्पताल के गलियारों में घूमते हुए ही काफी समय बिताया।

सुबह कर्फ्यू में लगभग दो घंटे की ढील दी जाएगी। मैं निकल जाऊंगा।
मैं घर के लिए रवाना होता और मेरा भाई अस्पताल के लिए घर से निकलता। हम दोनों
रास्ते में कुछ मिनटों के लिए मिलें, जल्दी से कुछ बातें साझा करें और आगे की योजना बनाएं।
अब क्या किया जाए? फिर हमारे रास्ते फिर मिलेंगे, मैं घर की ओर और वह...
अस्पताल। घर लौटते समय, मुझे शहर में तनाव का एहसास हो रहा था। लोगों के समूह, जिनमें ज्यादातर पुरुष थे, आपस में उत्तेजित होकर बातें कर रहे थे। मैं रुक गया।
मैं इनमें से एक समूह के पास था और मैंने उनकी बातें सुनीं। वे नाराज़ थे।
क्योंकि पूरी रात आतंकवादियों और उनके बीच गोलीबारी होती रही थी।
सुरक्षा बलों ने सैनिकों के घरों में घुसकर लोगों के साथ मारपीट की और तोड़फोड़ की।
दुकानों के लकड़ी के चबूतरे। किसी ने तो लोगों को उकसाया भी था।
उन्होंने सुझाव दिया कि वे अपने नुकसान की भरपाई के लिए पंडितों की दुकानें जला दें।
सौभाग्यवश, किसी ने भी उस सुझाव पर ध्यान नहीं दिया।
लोगों के बीच सुलग रहे गुस्से को देखकर मुझे लगा कि यह
आगे का रास्ता आसान नहीं होने वाला है। घर पहुँचकर मैंने सामान जमा करने का फैसला किया।
हमारी दैनिक जरूरतों के लिए पर्याप्त सामान उपलब्ध था। चूंकि मुख्य सड़क की सभी दुकानें बंद थीं।
बंद होने पर, संकरी गलियों में स्थित छोटी-छोटी मोहल्ले की दुकानों को ढूंढना पड़ता था।

इलाके की गलियों और उपगलियों में। सौभाग्य से, इनमें से कुछ दुकानें
एक दुकान खुली रही। मुझे एक दुकान मिली और मैंने दाल, खाना पकाने का तेल, चावल, साबुन आदि का ऑर्डर दिया।
बड़ी मात्रा में चीनी। बर्फ गिरनी शुरू हो गई थी। कोई कुली काम पर नहीं था और
मैंने सामान घर ले जाने में मदद के लिए दुकानदार से पूछा। मैंने एक बड़ी बोरी ली और उस भारी बोझ को एक मजदूर की तरह अपनी पीठ पर लादकर ढोया।
कोई चारा नहीं था। बर्फ की पतली परत के कारण सड़कें गीली और फिसलन भरी थीं।
जमीन पर जमा होने लगा। जब मेरे पिता और मेरी बहन ने मुझे देखा उस विशाल बैग को देखकर वे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर पा रहे थे। मेरे पिताजी परेशान थे।
लेकिन जब मैंने कहा, 'आपने मुझे काफी मजबूत बना दिया है,' तो वह हंस पड़ा।
बचपन के दिन। तो चलिए अब साथ में चाय पीते हैं।
अगली सुबह मुझे अस्पताल वापस भागना पड़ा ताकि मेरा भाई
वह घर लौट सकता था। पुल पर हमारी मुलाकात हुई और मैंने उससे पूछा कि हमारा कैसा हाल है।
माँ थी। काफी देर रुकने के बाद उसने कहा कि वह भी वैसी ही थी।
कोई सुधार नहीं हुआ। अस्पताल वापस आते ही मैंने तुरंत कार्रवाई शुरू कर दी।
मैंने रास्ते में संतरे और दूध खरीदा था। जूस बनाने के बाद, मैंने उसे पिलाया।
मेरी माँ को ट्यूब के ज़रिए अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल की हालत बहुत खराब हो चुकी थी।

सफाईकर्मियों का दल, कुछ नर्सें और कुछ परिचारक। मेरी माँ को देखते हुए,

मुझे नहीं पता था कि आगे हमारे लिए क्या होने वाला है। मैंने एक डॉक्टर को जाँच करते हुए देखा था।

मेरी माँ के पैरों की प्रतिक्रियाएँ देखकर, उस दिन मैंने एक चम्मच उठाया और उसे दबाया।

उसने पैर के तलवे पर रगड़ा और उसे नीचे की ओर सरका दिया। लगभग कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

उसके पैरों में हलचल थी। मुझे चिंता होने लगी, लेकिन फिर मेरे अंदर के शाश्वत आशावादी ने मुझे शांत किया।

मैंने अच्छे की उम्मीद की। मैं बस यही चाहती थी कि वह दो या तीन दिनों तक स्थिर रहे।

कुछ हफ्तों बाद, मैं उसे उचित इलाज के लिए दिल्ली ले जाता था।

श्रीनगर के अस्पताल अधिकारियों की उदासीनता उनके व्यवहार में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।

मरीजों की इतनी उपेक्षा की जाती थी कि समझ नहीं आता था कि किससे बात करें। इन सभी दिनों में मैं अपनी माँ के साथ वहाँ थी, मैंने केवल डॉ. रैना को ही देखा था।

पहले दिन ही, और वह भी कुछ ही मिनटों के लिए, उसके बाद वह गायब हो गया।

मैं अस्पताल के लॉन में एक आम नल के पास गया, जो

किसी तरह सर्दी में ये जमे नहीं थे। मुझे कुछ बर्तन साफ करने थे।

भले ही पानी में मेरी उंगलियां गुलाबी हो जाती थीं और आंशिक रूप से जम जाती थीं।

जब मैं काम से उठा, तो एक पीली पड़ी हुई ग्रामीण महिला मेरे सामने आ गई।

मेरे साथ, उसके फरन के नीचे एक बच्चा, ऐसे लिपटा हुआ जैसे कोई छोटा कंगारू का बच्चा अपने फरन से बाहर निकल रहा हो।

उसने अपनी माँ की कंगारू थैली से अपना सिर बाहर निकाला। जब मैंने उसे देखा, तो वह टूट गई।

मैं बच्चे की तरह रोने लगी। मैंने उससे पूछा कि क्या हुआ था। उसने कहा कि उसे

तीन दिन पहले एक बीमार बच्चे को लेकर इस अस्पताल में आए थे और तब से बिना किसी इलाज के थे।

वह हर समय खाना खा रही थी। 'मेरा बच्चा मर जाएगा,' वह सिसकते हुए बोली। मैंने उससे पूछा, 'कैसे?'

'तुम आओगे?' उसने समझाया, 'पहले मैंने ट्रक में लिफ्ट ली और फिर तांगा पर।'

मैं इस अस्पताल तक पहुँचने की कोशिश कर रहा हूँ। लेकिन यहाँ कोई डॉक्टर नहीं है। मुझे नहीं पता कि क्या करना है।

मैं सुदूर गांव दुरु से आया हूँ।’ मैंने उससे मेरे पीछे आने को कहा और

उसे आम जनता के लिए बने तथाकथित रसोईघर या कैंटीन में ले गया, जिसे मैंने

कुछ दिन पहले ही उसे यह मिला था। इस बेचारी महिला को बिल्कुल भी पता नहीं था कि क्या हो रहा है।

उसके आसपास की दुनिया में जो कुछ घट रहा है।

जब मैं कैंटीन में दाखिल हुआ, तो वह एक अंधेरी गुफा जैसी लग रही थी जिसमें कुछ लोग थे।

बेंच और टेबल और एक रसोई जिसमें लकड़ी का चूल्हा जल रहा था।
मैंने उससे कहा कि

मैं एक बेंच पर बैठ गया, और मैंने रसोई के प्रभारी से मुझे दो बेंच देने के लिए कहा।

गरम चाय और चावल, साथ में दालों से भरी एक पूरी थाली। मैंने चाय खुद ली, और

उसे थोड़ा पीने के लिए कहते हुए, मैंने उसके बच्चे के मुंह में थोड़ी चाय डाल दी।

एक चम्मच। बच्चा बहुत बीमार था और उसे खांसी के कारण सांस लेने में तकलीफ हो रही थी, जो सुनने में काफी डरावनी लग रही थी।

उसकी नाक से गाढ़ा बलगम टपक रहा था। चाय पीने के बाद उसे थोड़ी राहत महसूस हो रही थी।

थोड़ी देर बाद जब महिला थोड़ी शांत हुई तो उसने खाना शुरू किया और अपने बच्चे को भी खिलाने लगी, लेकिन उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे।

उसके गालों से लगातार आंसू बह रहे थे। यह एक असहनीय दृश्य था।
मैंने उसे आश्वस्त किया।

मैंने उसे चिंता न करने के लिए कहा और उसे मेरी माँ के कमरे का रास्ता समझाया।

उसे बताया कि खाना खाने के बाद और रसोई के चूल्हे की गर्मी से उसे थोड़ी गर्माहट महसूस होने के बाद, वह

मैं मेरी माँ के पास आ सकता था। वहाँ हम मिलकर तय करते कि क्या करना है।

करो। ‘लेकिन कृपया रोना मत,’ मैंने विनती की। ‘सब ठीक हो जाएगा।’ मैंने अपनी जेब से कुछ सौ रुपये के नोट निकाले और उसे दे दिए। एक युवक

वह हमारे पास आया। मेरे सामने खड़े होकर उसने पूछा, 'क्या बात है?'

'उसकी?' मैंने उन्हें उस महिला की कहानी सुनाई, और उन्होंने कहा, 'ठीक है। आपके पास है

मैंने उसे पैसे दे दिए। ठीक है।’ महिला की ओर देखते हुए उसने उससे कहा कि चिंता न करे।

उन्होंने उसे आश्वासन दिया, 'तुम्हें यहाँ खाना मिल जाएगा।' मैंने उनसे उसकी मदद करने का अनुरोध किया।

वह मुस्कुराया और बोला, 'ठीक है, तुम भी चिंता मत करो।' वह वापस बैठ गया।

वह अपने अन्य दोस्तों के साथ पास की एक बेंच पर बैठा था। वे सभी देख रहे थे...

जब से हम कैंटीन में दाखिल हुए, तब से मैं और वह महिला एक-दूसरे को जानने के लिए उत्सुक थे।
युवकों का यह समूह।
जब मैं अपनी माँ के कमरे में वापस गई, तो मेरे बहनोई आ चुके थे।
उनका आना बहुत जोखिम भरा था, और मैं चाहता था कि वे घर लौट आएं।
जितनी जल्दी हो सके। वह अपने घर से एक शॉर्टकट जानता था, जिसके बारे में उसने मुझे आश्वासन दिया।
इतना खतरनाक नहीं था। वह मेडिकल कॉलेज के निकास द्वार से निकल जाता था, इसलिए मैंने
मैं उसे विदा करने के लिए उसके साथ गया। जब हम मुख्य द्वार पर पहुँचे, तो उसने एक ओर इशारा किया।
एक व्यक्ति अपने शरीर पर लंबी शॉल लपेटे हुए स्वतंत्र रूप से घूम रहा है।
सड़क पर, और उसने कहा, 'वह जावेद नलका है।'
मैंने पूछा, ‘वह कौन है?’
वह सबसे वांछित व्यक्तियों में से एक है और किसी आतंकवादी संगठन का नेता है।
'संगठन,' मेरे बहनोई ने समझाया। 'और आप देख रहे हैं कि वह कैसे आगे बढ़ रहा है।'
बिना किसी डर या आशंका के घूमना-फिरना?
मैंने अपने बहनोई को विदा किया और अपनी मां के कमरे में जाने के लिए वापस मुड़ गया।
अस्पताल के लॉन से गुजरते समय, मैंने एक बड़ा छेद देखा। अस्पताल की चारदीवारी जो एक छोटे से तटबंध पर खुलती थी
नीचे नदी की सहायक नदी। कमरे में वापस आकर, दूसरे मरीज के परिचारक ने पूछा

मैंने उससे पूछा, ‘तुम कहाँ से आ रहे हो?’ मैंने उसे बताया कि मैं पीछे से आया हूँ।
मेडिकल कॉलेज का अंत।
उसने पूछा, 'क्या तुमने दीवार में वह बड़ा सा छेद देखा?'
मैने हां कह दिया।
वह मुस्कुराया और बोला, 'तुम्हें पता है, सभी घायल मुजाहिदीन, उसके बाद
इलाज या सर्जरी करवा रहे लोगों को उस छेद के रास्ते अस्पताल से बाहर निकाला जाता है और फिर नावों में बिठाया जाता है, और वे गायब हो जाते हैं, और कोई भी हिम्मत नहीं करता।
उन्हें छूकर देखो। क्या आपने ध्यान दिया कि सुरक्षाकर्मी अस्पताल के बाहर ही रहते हैं?
और क्या वे कभी अस्पताल नहीं आएंगे? उनके बीच एक तरह का संबंध है।
युद्धविराम। सुरक्षाकर्मी अस्पताल में प्रवेश नहीं करेंगे, और कोई भी व्यक्ति अंदर नहीं आएगा।
अस्पताल की तरफ से सुरक्षाकर्मियों पर गोली चलाई जाएगी। दोनों पक्षों के लिए यह एक अच्छा सौदा है।
पार्टियां।'
मेरी आँखों से धुंध धीरे-धीरे छंट गई। युवकों का बड़ा समूह अस्पताल की कैंटीन, वह आदमी जिसने मुझे ड्यूटी पर मौजूद कर्मचारी से दूध लाने को कहा था
कमरे में, घायलों के अस्पताल से गायब हो जाने के बाद
सर्जरी, दिन के समय अस्पताल में डॉक्टरों की अनुपस्थिति—यह सब मेरे लिए चीजें धीरे-धीरे सही जगह पर आने लगीं। यह सब एक सुनियोजित व्यवस्था थी।
घाटी में अलगाववादी आंदोलन।

उस रात घर पर हमें कहीं से गोलियों की आवाज सुनाई दी, जो ज्यादा दूर नहीं थी।
हमसे। किसी को नींद नहीं आ रही थी, और किसी को पता नहीं था कि यह सब क्या हो रहा है।
सुबह, जब अभी अंधेरा ही था, मैं पास के एक दूधवाले से दूध खरीदने गया।
दूधवाला बीबीसी समाचार बुलेटिन सुन रहा था और चुप था,
बहुत बातें कर रहा था। अचानक उसने मुझे देखा और जानना चाहा कि मैं कब से यहाँ हूँ।
वह आ गया था। जब मैंने उसे अपनी माँ के बारे में बताया, तो उसने उसके लिए प्रार्थना करना शुरू कर दिया।
वह मेरी माँ को जानता था; वह उसके लिए नियमित रूप से दूध खरीदती थी। मैंने उससे इसके बारे में पूछा।
बीबीसी पर कश्मीर से जुड़ी खबरें।
उसने हैरानी से मेरी तरफ देखा और कहा, 'क्या तुम कल रात सो रहे थे? क्या
क्या आपको गोलियों की आवाज नहीं सुनाई दी?
मैंने जवाब दिया, 'क्यों, हाँ, लेकिन यह कहाँ हो रहा था?' उन्होंने कहा, ‘गौकादल में रात भर लड़ाई चली।
मुजाहिदीन और सेना। अब सेना उन घरों की तलाशी ले रही है। क्षेत्र।'
हालांकि वह मेरे प्रति बहुत दयालु थे, लेकिन साथ ही उन्होंने एक तरह की संवेदनहीनता भी प्रदर्शित की।
मुजाहिदीन पर गर्व। मैंने उसे दूध के पैसे दिए और चला गया। मुझे पहुंचना था।
कर्फ्यू में ढील दिए जाने के कुछ ही घंटों के भीतर अस्पताल में भर्ती कराया गया।

मेरी भाभी शोभा ने खाने से भरा एक टिफिन बॉक्स पैक किया था और पूछा था
मैंने उससे कहा कि वह इसे अपने साथ अस्पताल ले जाए। मैंने उससे पूछा कि यह किस लिए है, और
उसने बताया कि पूर्ण कर्फ्यू लगने की संभावना है। उसने सुना था कुछ पड़ोसी इसके बारे में बात कर रहे थे। 'अगर आप में से कोई अस्पताल में भर्ती हो जाता है,'
उसने कहा, 'कम से कम तुम्हारे पास जीवित रहने के लिए भोजन तो होगा।'
मैं जाने के लिए तैयार हो गया और अपने पिता को अलविदा कहा, जो आजकल बहुत कम बोलते हैं।
कई दिनों तक वह चुपचाप सब कुछ सहता रहा। जब मैं मुख्य द्वार पर पहुँचा,
सड़क पर सरकारी सामान ले जा रहे एक ट्रक के अलावा कोई और नहीं था।
अधिकारियों को उनके घरों से उनके कार्यालयों तक पहुँचाने के लिए। मैंने ड्राइवर को लिफ्ट के लिए इशारा किया और
मैंने उनसे मुझे सरकारी अस्पताल छोड़ने के लिए कहा। वे मान गए क्योंकि वे
हम वैसे भी उसी दिशा में जा रहे थे, इसलिए मैं ट्रक में चढ़ गया। जैसे ही ट्रक चलने लगा,
श्रीनगर शहर के विभिन्न हिस्सों से होते हुए, लोगों को उनके कार्यालयों तक छोड़ते हुए, हम
उस रात हुई तबाही को देखा जा सकता था—जले हुए वाहन,
अभी भी धुआं उगलते अधजले टायर और अन्य जलती हुई चीजें। शहर ऐसा लग रहा था जैसे
एक बड़े दंगे के बाद का मंजर। हमने सुनसान, गीली सर्दियों की सड़कें देखीं।

पैदल चलने वालों की संख्या लगभग न के बराबर थी। ट्रक की यात्रा काफी लंबी और थका देने वाली हो गई।
और मैं अस्पताल पहुँचकर अपने भाई को घर भेजना चाहता था। लगभग शहर की सड़कों और गलियों में दो घंटे की यात्रा के बाद, आखिरकार मैं
अस्पताल पहुंच गया।
ट्रक ने मुझे आपातकालीन गेट पर उतार दिया। जब मैं अंदर गया तो...
गेट से निकलते ही मैंने देखा कि इमरजेंसी वार्ड में पूरी तरह से अफरा-तफरी मची हुई थी। लोग इधर-उधर भाग रहे थे।
हर दिशा में। किसी ने प्लास्टिक की थैली से लोगों को खाना दिया। और सबने एक-एक करके एक ही गिलास से पिया। वे सब युवा थे।
और वह थका हुआ और हांफता हुआ लग रहा था। मैं रुका नहीं बल्कि अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहा।
मां का वार्ड। यह एक लंबा सफर था। एक जगह मेरी नजरें एक व्यक्ति से मिलीं।
एक युवक बार-बार मेरे रास्ते में आ रहा था। उसने मुझे उत्सुकता भरी नजरों से देखा,
इससे मैं थोड़ा घबरा गया। मैं चलता रहा, और जब मैं सीढ़ियाँ चढ़ने के लिए मुड़ा तो...
पहली मंजिल पर, मैंने उसी लड़के को उसी स्थिर नज़र से मेरे पास से गुजरते देखा। मुझे गुस्सा आ गया।
थोड़ा चिंतित था लेकिन पीछे मुड़कर नहीं देखा।
वार्ड में पहुँचते ही मेरा भाई वहाँ कहीं नहीं मिला, इसलिए मैं वहाँ से चला गया।
मैंने अपना टिफिन बॉक्स कमरे में ही छोड़ दिया और उसे ढूंढने के लिए बाहर चली गई। मुझे वह नहीं मिला।

मैंने कमरे में मौजूद दूसरे कर्मचारी से पूछा, 'क्या आपने मेरे भाई को देखा?'

जवाब दिया, 'सख्त कर्फ्यू के कारण वह घर चला गया है।' कर्फ्यू के बाद से

पहले सुबह के शुरुआती घंटों में केवल दो घंटे ही आराम किया जाता था।

लोग आवश्यक वस्तुएं खरीदने के लिए दौड़ते थे और फिर घर के अंदर रहने के लिए वापस भाग आते थे।

कर्फ्यू दोबारा लागू होने से पहले। लोगों के लिए पहुंचना बहुत जरूरी था।

सुरक्षा के लिए उन्हें समय पर उनके स्थानों पर पहुँचा दिया गया। मुझे समझ में आया कि मेरे भाई ने क्यों छोड़ा था।

अस्पताल। राहत महसूस करते हुए, मैं स्टूल पर बैठ गया और कुछ पल आराम करने की कोशिश की।

शहर में हालात बिगड़ने के साथ-साथ आवागमन पर और भी प्रतिबंध लग गए।

लोगों, इन सब से कैसे निपटना है, यह जानना मुश्किल था। अपनी स्थिति को देखते हुए

माँ, गहरी नींद में सो रही थी और दुनिया से बेखबर थी, मैंने फिर से उसकी जाँच की।

उसके पैरों के नीचे चम्मच रखकर उसकी प्रतिक्रियाओं का परीक्षण किया गया। वे ठीक लग रही थीं, और फिर मैंने

मैं दो सप्ताह के खत्म होने का बेसब्री से इंतजार कर रहा था ताकि मैं उसे दिल्ली ले जा सकूं।

मैं एक अस्पताल में बैठा था जहाँ न डॉक्टर थे, न नर्सें, केवल कुछ ही कर्मचारी थे।

कर्मचारी और मरीज, मेरी माँ कोमा में है, और मेरे पास करने के लिए कोई काम नहीं है।

मैं बस बैठकर अपनी माँ को देखता रहा और उनकी अनेक समस्याओं के बारे में सोचता रहा।
आगे, बीच-बीच में दूर से दमकल गाड़ियों और गोलियों की आवाजें सुनाई दे रही थीं।
गलियारे के शीशों पर जम्मू और कश्मीर के स्टिकर चिपके हुए थे।
मुक्ति मोर्चा, स्वतंत्रता और बलिदान के नारे लिए हुए। अज़ान कई मस्जिदों से एक साथ आवाजें गूंज उठीं। माहौल भयावह था। निराशाजनक, उबाऊ। मेरी माँ का चेहरा शांत था, मानो वह किसी और ही दुनिया में हो।
ध्यानमग्न होकर मैं सोचने लगा कि यह सब कब खत्म होगा। स्थिति ऐसी थी...
हालात और बिगड़ रहे हैं। किसी भी समय कुछ भी हो सकता है। हर दिन आज सुबह मैंने कश्मीरी पंडितों को जम्मू ले जा रही टैक्सियों को देखा। वे
अपने घरों और अपने पैतृक संसार को छोड़कर एक अज्ञात दुनिया की ओर प्रस्थान करना
गंतव्य। मां के बिस्तर के पास बैठे-बैठे मेरे मन में एक विचार आया। कैसे?
क्या मैं इससे निपट पाऊँगी? क्या यहाँ मेरे परिवार का अंत हो गया है? मेरा दिमाग सुन्न पड़ गया।
और मैं चुपचाप किसी चीज का इंतजार नहीं कर रहा था।
किसी ने मेरे कंधे पर थपथपाकर मेरी सोच को भंग कर दिया।
मैंने आंखें खोलीं। वहां वही युवक खड़ा था जो मेरे पास से गुजरा था।
उस जिज्ञासु नज़र से गलियारे की ओर देखते हुए। उठते ही मेरे दिल की धड़कन तेज़ हो गई। उसने कहा, 'मैं

मुझे दान की आवश्यकता है।’ मैंने तुरंत करेंसी नोटों का एक छोटा सा बंडल निकाला।
मैंने आपात स्थिति के लिए अपनी जेब में जो रखा था, उसे मैंने अपने सामने सारे नोटों के साथ फैला दिया।
उसकी ओर। उसने मेरी ओर देखा और फिर नोटों की ओर। उसने केवल एक नोट उठाया।
दस रुपये का नोट देकर वह चला गया। मुझे समझ नहीं आया कि इसका क्या मतलब है। मैं वापस अपनी कुर्सी पर बैठ गया।
मैं सोच रहा था कि आखिर चल क्या रहा है। क्या वह यह सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहा था कि मैं
क्या वह सचमुच मरीज के साथ था, न कि किसी मुखबिर के साथ?
जब मैं स्थिति पर विचार कर रहा था, तभी एक बुजुर्ग सज्जन अंदर आए।
वह कुरान की आयतें पढ़ रहा था और मरीजों को आशीर्वाद दे रहा था। वह एक टोकरी लिए हुए था।
वह अस्पताल में लोगों को ताज़ी स्थानीय रोटी दे रहा था। तभी उसने
जब उसने मुझे रोटी भेंट की, तो पहले तो मैं हिचकिचाया और रोटी लेने से इनकार कर दिया, लेकिन उसने
उन्होंने मुझसे एक लेने की ज़िद की और मेरे हाथों में रोटी का एक टुकड़ा रखते हुए कहा,
‘अल्लाह आपके धैर्य पर कृपा करेगा।’ उन्होंने पवित्र आयतों का पाठ करते हुए छोड़ दिया।
मेरे हाथ में रोटी थी, मैंने अपनी माँ की तरफ देखा। अजीब बात है, मुझे थोड़ा बेहतर महसूस हुआ, और
मैंने रोटी खाना शुरू कर दिया।
मुझे कई साल पहले इसी अस्पताल में घटी एक घटना याद आई, जब मैं

मैं स्कूल में था। मेरी माँ को किसी सर्जरी के लिए यहाँ भर्ती कराया गया था।

मेरी चाची हमेशा मेरी माँ की देखभाल करती थीं जब भी वह बीमार होती थीं। मेरी दोनों

मेरी माँ के लिए बड़ी चाचियाँ माँ समान थीं। वे उन्हें लाड़- प्यार करती थीं, उन्हें खाना खिलाती थीं।

वह तरह-तरह के स्वादिष्ट कश्मीरी व्यंजन बनाती थी। एक दिन, कोई व्यक्ति अंदर आया।

वार्ड में स्थानीय ब्रेड से भरी टोकरी लेकर मरीजों को ब्रेड भेंट की जाती है। सामान्यतः,

मेरी माँ विनम्रतापूर्वक क्षमा मांगती और उन्हें धन्यवाद देती, और उस व्यक्ति से कहतीं

उसके पास अपनी पर्याप्त रोटी है और कृपया इसे किसी ऐसे व्यक्ति को दे दें जो

उसे इसकी जरूरत थी। उस दिन, रोटी को देखकर, उसने जिद की, लगभग गिड़गिड़ाया।

अपने दोनों हाथों से, एक हाथ से। मेरी चाची और मैं हैरान थे। मेरी माँ

उसने हम दोनों की ओर देखा और कहा, 'मैं दान की रोटी लेने से इनकार करता रहा हूँ।'

इसे स्वीकार करके खा लेना ही बेहतर होगा। नहीं तो, मुझे बार-बार आना पड़ेगा।

मुझे अस्पताल जाना होगा। मुझे दान में मिली अपनी हिस्सेदारी खानी ही होगी।'

19 जनवरी 1990 की रात को अस्पताल से घर लौटने पर, अचानक

अचानक, हमें लाउडस्पीकरों की तेज आवाज सुनाई दी, जिनसे इस्लामी नारे गूंज रहे थे:

नारा-ए-तकबीर, अल्लाह-हू-अकबर, नारा-ए-रिसाला यो, मुहम्मद रसूलका,

Yeh Mulk Hamara Hai, Iska Faisla Hum Karenge and many more separatist

[illegible]

[illegible]

[illegible]

devotional Hindi film song, ‘Kamli wale ke sadqe mein ya rab’. This song

जब मैं सुबह अस्पताल से लौटता था, तो रास्ते में मुझे कारवां दिखाई देते थे।
पंडित परिवारों को जम्मू ले जाने वाली टैक्सियों की कतार। एक दिन, दोपहर बाद, मैं
मुझे अपने बचपन के दोस्त से मिलने का मौका मिला जो मेरे घर के सामने रहता था। पूछताछ करने के बाद...
मेरी माँ की हालत के बारे में और हालात कैसे बदल गए थे, इस पर टिप्पणी करते हुए।
पंडितों के लिए कठिन परिस्थितियों में, वह अपने घर के अंदर चला गया। अगली सुबह, जब मैं जाने लगा तो...
अस्पताल में, मैंने उसके घर के मुख्य दरवाजे पर एक बड़ा ताला देखा। वह घर छोड़कर चला गया था।
डर और अपने प्रियजनों की सुरक्षा के लिए, कश्मीर से बिना किसी को बताए भाग गया।
डर के मारे पंडित घाटी से बाहर जाने को मजबूर हो रहे थे।
कुछ दिनों बाद, सुबह-सुबह ब्रश करते समय
बगीचे में लगे आम नल के पास, मैंने अपने बड़े चाचा और उनके बेटे को अपने कमरे में ताला लगाते देखा।
घर। मैंने अपने चाचा से पूछा, 'क्या बात है? आप आज कहाँ जा रहे हैं?'
'सुबह-सुबह?' उसने बड़े ही सहज भाव से कहा, 'हम जा रहे हैं, बता दो।'
'जाना [मेरे पिता], मैंने उन्हें छोड़ दिया है और आगे बढ़ गई हूँ।' मैं अवाक रह गई। मैं
मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि एक बड़ा भाई अपने छोटे भाई को बिना बताए छोड़कर चला जाएगा।
भाई। मुझे आज भी उस सदमे का एहसास है। यह जानते हुए कि उसका छोटा भाई...

भाई की पत्नी अस्पताल में कोमा में थी और जिंदगी के लिए संघर्ष कर रही थी, वह बच निकला।
चुपचाप। मेरे चाचा और मेरे पिता दोस्त थे। मेरे पिता एक
अपने जीवन के कई संकटों के दौरान इस बड़े भाई को बहुत बड़ा सहारा मिला, और यहाँ,
मेरे पिता तो मुश्किल से दस फीट दूर सो रहे थे, लेकिन मेरा बड़ा भाई तो बिल्कुल भी नहीं सोया।
क्या आपको लगता है कि उनसे विदाई लेना या उन्हें कुछ सहानुभूति भरे शब्द कहना उचित होगा?
अपने छोटे भाई की स्थिति के कारण।
मृत्यु का भय इस हद तक बढ़ गया था कि लोग उदासीन हो गए थे। दूसरों के साथ रिश्ते बेतुके होते जा रहे थे। जीना असंभव सा हो गया था।
सर्वोपरि... अस्तित्व का कारण! सदियों पुराने संबंध
पड़ोसियों के बीच मौजूद परस्पर निर्भरता खत्म हो गई। कोई भी वे आपस में बात करते रहे। किसी ने एक-दूसरे की तरफ नहीं देखा। बहुसंख्यक लोग अपनी लाचारी में चुपचाप बैठे रहे और अल्पसंख्यकों के साथ यह सब होते रहने दिया।
अल्पसंख्यक लोग चले गए... उस जगह के लिए जिसे वे खुद भी नहीं जानते थे।
कई दिनों से सख्त, अनिश्चितकालीन कर्फ्यू लागू था, जिसे केवल कुछ समय के लिए ही ढील दी गई थी।
सुबह के दो घंटे। 25 जनवरी 1990 को मैं घर पर था और मेरा
मेरा भाई अस्पताल में था। मेरी माँ चौदह दिनों से कोमा में थी।
हमने दिल्ली की यात्रा के विभिन्न संभावित तरीकों पर चर्चा की।
ठंडी और अंधेरी रात। रात करीब 8:30 बजे, भूतल पर दस्तक हुई।
खिड़की। पूरा परिवार चुप हो गया; रात में दस्तक खतरनाक होती है।

आतंकवादियों के आने और अपनी मनचाही चीज़ें मांगने की आवाज़
या फिर उन्होंने ऐसे व्यक्ति की हत्या कर दी जिस पर उन्हें संदेह था कि वह उनके सिद्धांतों के खिलाफ है।
यह दस्तक किसी पंडित या मुसलमान के लिए हो सकती है। कुछ समय तक हमें पता नहीं चला।
पता नहीं क्या करना है। तभी मैंने अपने भाई की आवाज़ सुनी जो हमें खोलने के लिए कह रहा था।
खिड़की। जब मैंने खिड़की खोली, तो वह वहाँ खड़ा था, थका हुआ और आँखों में आँसू लिए उसने कहा, ‘कहानी खत्म हो गई है, बाहर आओ और उसे अंदर ले जाओ। वह...’
एम्बुलेंस में बाहर।
मुझे समझ आ गया था कि मेरी माँ अब इस दुनिया में नहीं हैं। सर्दियों के घोर अंधेरे में।
रात में, हम मेरी माँ का शव गाड़ी से बाहर लाए। वहाँ कुछ भी नहीं था।
शहर में बिजली तो थी, लेकिन कुछ पुलिसकर्मियों ने टॉर्च जलाकर गली को रोशन कर दिया, जिससे हम
शव को बिना किसी समस्या के घर ले जाया जा सकता था। रीति-रिवाज के अनुसार, शव
उसे ज़मीन पर रखा गया और एक मिट्टी का दीपक जलाया गया। हम सब उसके चारों ओर बैठ गए।
काफी देर तक मेरा शरीर खामोश रहा। मेरे दोनों छोटे भतीजे चुप रहे।
वे हमारी ओर और फिर अपनी दादी की ओर देखकर बहुत कुछ समझते हैं, लेकिन नहीं।
एक शब्द भी नहीं बोला। मेरे तीनों चचेरे भाइयों ने बहुत मदद और समर्थन दिया।

अगला दिन 26 जनवरी 1990 था, जो शुक्रवार और भारत का गणतंत्र दिवस था।
श्रीनगर में सरकार ने पूर्ण बंद और गोली मारने का आदेश दिया था। दृष्टि संबंधी आदेश जारी किए गए थे, जिसका मतलब था कि सड़कों पर कोई आवाजाही नहीं थी। सभी को
घर के अंदर ही रहो। मेरे भाई ने मुझे बताया कि अस्पताल में उसका दिन बहुत कठिन रहा।
मेरी माँ का दिन में निधन हो गया था, लेकिन उन्हें लाने का कोई तरीका नहीं था।
मेरी माँ का शव घर ले जाने के लिए अस्पताल से किसी ने भी उसे वाहन उपलब्ध कराने में मदद नहीं की। क्योंकि लॉकडाउन के आदेश जारी हो चुके थे।
घोषणा की गई कि अस्पताल में कोई भी पहल करने को तैयार नहीं था।
वह वही लड़का था जिससे मैं उस दिन गलियारे में मिला था और जो... उसने मुझसे दस रुपये का दान ले लिया था, जिसने मेरी मदद की थी। वह अंदर आ गया था।
कार्रवाई करते हुए, उन्होंने चिकित्सा अधिकारी पर चिल्लाकर उस व्यक्ति के लिए वाहन उपलब्ध कराने को कहा जो
मेरी माँ की मृत्यु हो गई थी। एक बकरवाल ने मेरी माँ के शव को गाड़ी में उठाया।
कमरे में दूसरे मरीज के साथ मौजूद एक अन्य परिचारक। मेरे भाई ने मुझे बताया कि
युवक ने कहा कि वह शव के साथ जाता लेकिन, 'आप जानते हैं,
हालात खराब हैं, इसलिए मैं नहीं आ सकता। अपने भाई को मेरी संवेदनाएं दे देना।
उन घोर अंधेरी सड़कों पर बिना हेडलाइट और बिना किसी सहारे के स्ट्रीटलाइट्स के नीचे, मेरा भाई मेरी माँ के अवशेष घर ले आया था।

ड्राइवर को उतनी दूरी तय करने में एक घंटे से अधिक समय लग गया, जितनी दूरी आमतौर पर तय करने में लग जाती है।
इसमें केवल पंद्रह मिनट लगेंगे।
अंतिम संस्कार करना असंभव लग रहा था। पिता ने हमें चिंता न करने की सलाह दी थी; हम
इसे स्थगित किया जा सकता था और अगले दिन देखा जाता कि क्या होता है। पूरी रात मैं
मुझे चैन नहीं मिला। मेरा मन इस बात पर अटका हुआ था कि मेरी माँ का अंतिम संस्कार कैसे होगा।
सही जगह और समय पर। मुझे लगा कि यह उनका अंतिम संस्कार का अधिकार था, और यह होना ही था।
समय। हालात इतने खराब थे कि हमारे पड़ोस में रहने वाले को भी पता नहीं था।
हमारे घर में एक मौत हो गई थी। सड़कें बंद कर दी गई थीं और टेलीफोन भी बंद थे।
लाइनें कट गईं। मेरे चाचा के पास एक टेलीफोन था, जिसे उन्होंने स्वेच्छा से डिस्कनेक्ट कर दिया था।
लैम्पपोस्ट से केबल लाइनें काटकर, ताकि उस पर संदेह न हो।
सुरक्षा बलों के लिए मुखबिर होने के कारण लोगों में अविश्वास पैदा हो गया था।
बात इस हद तक पहुंच गई कि पिता और पुत्र के बीच संदेह पैदा हो गया।
भाई-भाई, पंडित-मुस्लिम। सुरक्षित रहने का सबसे अच्छा तरीका यही था कि...
सार्वजनिक स्थानों पर फोन लाइनें डिस्कनेक्ट कर दें।
उस मोहल्ले में एक ही फोन था, जो एक व्यक्ति के स्वामित्व में था।

दूरसंचार अधिकारी। मैं और मेरा चचेरा भाई अपनी गली से रेंगते हुए आगे बढ़े।
उसके घर पर, और फुसफुसाते हुए हमने उसे जगाया और फोन किया।
डाक एवं तार विनिमय कार्यालय में ऑपरेटर। वो दिन क्या दिन थे! जब लंबी दूरी के नंबर सीधे डायल नहीं किए जा सकते थे, तो पी एंड टी ऑपरेटर के माध्यम से कॉल बुक करनी पड़ती थी। मैंने ऑपरेटर से विनती की कि वह सिर्फ एक नंबर डायल कर दे।
दिल्ली में वह नंबर जिस पर मैं अपनी पत्नी को उसकी माता के निधन की सूचना दे सकूँ।
ससुराल वालों को, और उन्हें इस बारे में हमारे रिश्तेदारों को सूचित करना चाहिए और उन्हें भी।
उन्हें अपने सभी परिचित रिश्तेदारों को सूचित करना चाहिए।
लेकिन किसी को भी इसके बारे में नहीं सोचना चाहिए।
श्रीनगर आ रहा है।
मैं पूरी रात सो नहीं पाया। मैंने सुबह का इंतजार किया, और आखिरकार,
भोर होते ही, मैंने अपनी जैकेट की ज़िप बंद की और पुलिसवालों से बात करने के लिए अपनी गली से बाहर निकल गया।
उन्होंने कल रात हमें शव घर लाते हुए देखा था, इस उम्मीद में कि जैसा कि वे जानते थे
अगर उन्हें इस त्रासदी के बारे में पता होता, तो वे सहानुभूति दिखाते और मेरी बात सुनते।
जब मैं बाहर आया, तो मैंने देखा कि एक मशीन गन सीधे हमारी लेन की ओर ताने खड़ी थी।
इसके किनारों से गोलियों की बौछार नीचे की ओर बह रही है, बिल्कुल हॉलीवुड फिल्मों की तरह।
फिल्मों में। बंदूक के पीछे एक सैनिक गोली चलाने के लिए तैनात था। तस्वीर थी

बहुत डरावना। मुझे हाथ ऊपर करके उसकी ओर चलते हुए देखना।

हवा में, मशीन गन के पीछे खड़ा सिपाही चिल्लाया, 'ए बेहेनचोद! मार्ने'

nikla hai? Wapas ja nahin to goli lagegi [Have you come out to be shot? Do

क्या तुम्हें मरने की इच्छा है? वापस चले जाओ, वरना तुम्हें गोली लग जाएगी।

उसके लहजे से मुझे पता चल गया कि यह सैनिक हरियाणा का है। पिछली रात

पुलिसवाले उत्तर-पूर्वी इलाके से थे; उन्होंने रातोंरात पहरा बदल दिया था।

मुझे एहसास हुआ कि इस व्यक्ति को हमारे परिवार में हुई मृत्यु के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया,

उसकी ओर बढ़ते हुए, वह हर तरह की गालियां बकता रहा, उसकी बात नहीं सुन रहा था।

जो मैं उसे समझाने की कोशिश कर रहा था। आखिरकार, जब मैं उससे आमने-सामने था

मैंने उसे शुद्ध हिंदी में समझाया कि मैं सड़क पर अपनी जान जोखिम में क्यों डाल रहा था।

मैंने अनुमान लगाया कि उसने मुझे गोली इसलिए नहीं मारी क्योंकि मैंने अपनी जान बचाई थी।

हमेशा हाथ ऊपर रखो। मेरे दोस्त अमिताभ श्रीवास्तव ने मुझे बताया था जब वह

वह पोलैंड में नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के एक कार्यक्रम के साथ थीं।

जनरल गेर्नोस्की के साम्यवाद-विरोधी शासन के दौरान, वह इसी तरह की स्थिति में फंस गए थे।

स्थिति ऐसी थी कि एक पुलिसवाले ने उस पर पोलिश भाषा में चिल्लाया था, जो भाषा उसे नहीं आती थी।

बिल्कुल समझ में आता है। एक सतर्क राहगीर ने उसकी बांहें पकड़ लीं।
उसने उन्हें अपनी जेबों से निकाला और हवा में उछाल दिया। वह बच गया।
गोली लगने से।
मशीन गन लिए पुलिसवाले के सामने खड़े होकर मैंने कहा, ‘मेरी मां का देहंत’
hua hai. Smashan jaana hai. Unka daah sanskar karna hai. Permission
मुझे अपनी मां के पार्थिव शरीर को दाह संस्कार के लिए ले जाने की अनुमति चाहिए थी।
मैंने दलील दी।
He was in a foul mood and said, ‘Aaj na koi aayega, na koi jaayega.
भागो साले [कोई भी बाहर निकलने की हिम्मत नहीं करने वाला था, और चले जाओ]।
मैंने अपनी बात पर जोर देते हुए उसे समझाया कि हम किसी मृत शरीर को यहाँ नहीं रख सकते।
home: ‘Hum ghar mein shav ko nahin rakh sakte.’
तभी एक और पुलिसकर्मी अपने कंधे पर स्टन गन लिए हुए दिखाई दिया। उसने पूछा
me, ‘E, kya baat hai? Saale, kya karne nikla hai? Ghar mein pani hai [What
क्या बात है? आप किसलिए निकले हैं? क्या आपके आस-पास पानी है? घर]?'
मैंने जवाब दिया, 'हां।'

उन्होंने मुझे पानी का एक घड़ा लाने का आदेश दिया, ‘दौड़ जल्दी कर [भागो,
जल्दी करो]।'
मैं वापस भागी। मेरी भाभी शीशे से यह सब देख रही थी।
खिड़की के पास, डर से कांपते हुए। मैंने उससे पानी लाने को कहा। वह ले तो आई लेकिन रुकी रही।
वह मुझसे वापस न जाने की विनती कर रही थी। मैंने उससे पानी का जग लिया और वापस भाग गई।
इसे पुलिसवाले को दे दो। इसे लेकर पुलिसवाला दूसरी लेन में गायब हो गया। मुझे लगता है
वह अपनी पीठ साफ करना चाहता था, क्योंकि उसने गली में कहीं शौच कर दिया था। कुछ देर बाद
कुछ मिनटों में वह वापस आ गया। इस पूरे समय मैंने अपने हाथ हवा में उठाए रखे।
अब मशीन गन वाले पुलिसवाले ने मुझसे कहा कि मुझे साहब के पास ले चलो।
मेरी पीठ पर स्टन गन ताने हुए, मैं पुलिस स्टेशन की ओर बढ़ा, जो कि
लगभग आधा मील दूर। जब मैं चल रहा था, मेरे बचपन के दोस्त हसन ने देखा।
उसने मुझे अपनी खिड़की से देखा। मुझे एक पुलिसवाले के साथ देखकर वह बहुत हैरान हुआ और उसने मुझे बुलाया।
उन्होंने कश्मीरी में मुझसे पूछा, ‘क्या हुआ? तुम कब आए? तुम कहाँ हो?’
वे तुम्हें ले जा रहे हैं?’ मैंने उसे बस इतना ही कहा, ‘मेरी माँ अब इस दुनिया में नहीं हैं, और मैं जा रही हूँ...’
मैं पुलिस स्टेशन जाकर उसका अंतिम संस्कार करने की अनुमति मांगूंगा।’ मैं आगे बढ़ता रहा।

पुलिस स्टेशन के बाहर एक बड़ी, भूरे रंग की पुलिस ट्रक खड़ी थी।
केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों की एक टुकड़ी अपने हथियारों, स्टन गन और लाइट मशीन गन के साथ ड्यूटी पर थी। मुझे देखकर एक पुलिसवाला अपनी बंदूक मेरी ओर ताने खड़ा था।
मेरी पीठ, एक जवान चिल्लाया। 'तुम इसे कहाँ से लाए?' अधिकांश जवानों ने हंसते हुए कहा कि उन्हें लगा कि कोई दाढ़ी वाला आतंकवादी आया होगा।
पकड़े गए। मैं उन्हें दोष नहीं देता। मेरे कश्मीरी रूप, जैकेट और गंदे कपड़ों के साथ।
मेरी शक्ल-सूरत देखकर लगता था कि मैं भी उन्हीं में से एक हूँ।
जब पुलिस स्टेशन का दरवाजा खुला, तो मैंने एक सिख कमांडर को देखा।
एक बुखारी के बगल में बैठा हुआ, स्थानीय लकड़ी के हीटर से खुद को गर्म रख रहा था।
उसने मेरी तरफ देखा और अंग्रेजी में कहा, 'हां?' मुझे राहत मिली, यह जानकर कि
वह एक शिक्षित अंग्रेजी भाषी अधिकारी थे, संभवतः उच्च पद के। मैंने उसे सब कुछ समझाया और मदद मांगी ताकि मैं अपने शव का अंतिम संस्कार कर सकूं।
माँ। वह एक पल के लिए रुका, मेरी तरफ देखा और बोला, 'मैं तुम्हें जानता हूँ।'
लोगों को कई कठिनाइयाँ हैं। मैं इस उद्देश्य के लिए आपको एक ट्रक दे सकता हूँ। क्या यह
शरीर तैयार है?
तब तक मेरा चचेरा भाई आ चुका था, और उसने जवाब दिया, 'नहीं महोदय, हमारे पास है'
कफ़न और अन्य धार्मिक वस्तुएं प्राप्त करने के लिए।

मैंने कहा, 'हम वह सब कुछ नहीं प्राप्त कर सकते क्योंकि सब कुछ बंद है।'
मेरे चचेरे भाई ने जवाब दिया, 'अगर गणपत्यार मंदिर खुला हो तो हम उन्हें प्राप्त कर सकते हैं।'
वे सब कुछ वहीं रखते हैं।
इसका मतलब था गणेश मंदिर की ओर दौड़ना और सभी चीजें प्राप्त करना।
जिन चीजों की जरूरत थी, उनमें अर्थी भी शामिल थी, जो शव को ले जाने के लिए इस्तेमाल होने वाला लकड़ी का तख्ता होता है। पुलिस अधिकारी ने हमें मंदिर जाने की अनुमति दे दी, लेकिन जैसे ही हम जल्दी से मंदिर की ओर बढ़े...
मुख्य सड़क पर स्थित गणेश मंदिर के पास एक और मशीन गन तैनात थी। वहाँ सड़क पर। उस बंदूक के प्रभारी जवान ने चिल्लाकर हमें आदेश दिया।
वापस जाने के लिए। आखिरकार, जम्मू-कश्मीर का एक स्थानीय पुलिसकर्मी पुलिस स्टेशन से दौड़कर उसके पास पहुंचा।
हमने स्टेशन पर जाकर उन्हें बताया कि उनके साहब ने हमें जाने की अनुमति दे दी है। उन्होंने हमें जाने दिया।
वे चले गए और हमें कड़ी चेतावनी दी कि हमें पंद्रह मिनट के भीतर वापस आ जाना चाहिए।
बिल्कुल वापस नहीं आए। हम संकरी गलियों से भागे, और हमारी किस्मत अच्छी थी कि हम वापस आ गए।
हमें कश्मीरी पंडित के अंतिम संस्कार के लिए आवश्यक सभी चीजें मिल गईं।
हमारे यहां अंत्येष्टि समारोहों में हर चरण में बहुत विस्तृत रस्में निभाई जाती हैं, लेकिन उनमें
इन परिस्थितियों में, हमें सभी आवश्यक रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों को संपन्न कराने के लिए एक योग्य पुजारी कहाँ से

मिल सकता था? इसलिए, यद्यपि हम सभी आवश्यक सामान लेकर घर लौट आए थे,
हमारे पास अभी भी कोई पुजारी नहीं था और हमें यह भी पता नहीं था कि अनुष्ठान कैसे किए जाएंगे।
पूरी रात मेरी एकमात्र चिंता मेरी मां का समय पर अंतिम संस्कार करवाना ही थी।
बाकी सब मुझे अनावश्यक लगा। हमारी राहत की बात यह थी कि हमारे मोहल्ले के पुजारी ने
शीतल नाथ मंदिर ने सभी पारंपरिक अनुष्ठानों को संपन्न करने की स्वेच्छा से जिम्मेदारी ली।
अंत्येष्टि तक। अंत में, मेरी माँ को ठीक से स्नान कराया गया।
हमारी रीति-रिवाजों और परंपराओं के अनुसार। अब वह अपनी अंतिम यात्रा के लिए तैयार थी।
यात्रा। हमारे साथ कुछ लोग थे जो हमारे दुख में भागीदार थे।
हमने उसे उठाया।
आरती को शीतल नाथ मंदिर ले जाया गया और वहां कुछ मिनटों के लिए विश्राम कराया गया।
वह हर सुबह इसी मंदिर में जाया करती थी।
वहां से हम पुलिस स्टेशन पहुंचे जहां कमांडर मौजूद था।
उन्होंने हमारे लिए एक ट्रक तैयार रखा। जब हम निकलने ही वाले थे, गुलाम
मेरे पिता के बचपन के दोस्त रसूल दौड़ते हुए आए, वे भी साथ जाना चाहते थे।
हमने। मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे अपने दोस्त, मेरे पिता के साथ रुकें, जो घर पर अकेले बैठे थे।
और उसकी संगति से मुझे बेहतर महसूस होगा।
ट्रक शहर की मुख्य सड़कों से होते हुए आगे बढ़ने लगा।

उस दिन हम शायद उन गिने-चुने लोगों में से थे जो शहर से गाड़ी चलाते हुए गुजर रहे थे।
मृत शरीर। सड़कों पर सैनिकों और उनके साथियों के अलावा कोई भी नहीं था।
हथियार। ट्रक ने रफ्तार बढ़ाने की हिम्मत नहीं की। ऐसा करना एक खतरनाक स्थिति होती।
सैनिकों की नज़र में यह एक अपराध था। सैनिकों ने हर 200 फीट पर नाकाबंदी कर रखी थी।
सड़कों पर कांटेदार तारों के बड़े-बड़े कुंडल लगे हुए थे। हर जगह हमें रुकना पड़ता था।
सैनिक हम सभी को वाहन से बाहर निकलने का आदेश देते और फिर एक जांच करते।
हर किसी की पूरी तलाशी ली जाती थी। वे हमें किसी का चेहरा दिखाने का आदेश देते थे।
हमने शव के चेहरे से कफ़न हटाकर यह सुनिश्चित किया कि हम
किसी मृत शरीर के स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति को नहीं ले जाना। सैनिक एक शव को ले जाते।
निर्जीव शरीर को देखो, नमस्कार की मुद्रा में हाथ जोड़ो, सिर झुका लो—
श्रद्धावश या किसी मृत चेहरे को देखने के भय से—और फिर हमें आगे बढ़ने का आदेश देते हैं
आगे बढ़ते हुए। इन चौकियों पर काफी समय लगा, क्योंकि हम हर जगह रुक रहे थे।
200 या 300 फीट।
घुटन होने लगी थी। हमें कितनी बार इसे हटाना पड़ा?
मेरी माँ के चेहरे से नकाब हटाना? इससे मुझे गुस्सा आया। एक चौकी पर, एक सैनिक

उन्होंने मुझसे पूछा, ‘उसकी मृत्यु कैसे हुई? उसे क्या बीमारी थी?’ एक अन्य मौके पर उन्होंने पूछा

उन्होंने हमें हमारे नाम बताए, और जब उन्होंने पुष्टि कर ली कि हम सभी हिंदू हैं, तो उन्होंने

इससे हमें आगे बढ़ने की अनुमति मिल गई। हालाँकि, हमारे साथ एक मुस्लिम मित्र था, इसलिए हम

हमने उनसे अपना नाम बदलकर सुरेश रखने को कहा, लेकिन हमें काफी डर था कि इससे

इससे हम बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाएंगे। उसके लिए तो यह और भी भयानक होता।

जब हम छोटा बाजार के पास, दूसरे पुल के पास से गुजरे

हब्बा कदल के पुल के पास ही एक ज़ोरदार धमाका हुआ। हमने अपनी गाड़ियाँ रोक दीं।

गाड़ी में बैठे-बैठे हम जम गए। हमें बंदूकें लोड करने की आवाज़ें सुनाई दीं, और कुछ ही देर में...

कुछ ही सेकंड में, सैकड़ों सैनिक सभी दिशाओं में भाग गए, उनमें से कुछ ने

हमारे आस-पास ही पोजीशनें थीं। हममें से ज्यादातर लोग घबरा गए। मुझे बहुत डर लगा और मैं भाग गया।

ड्राइवर कांप रहा था, वह बुरी तरह डरा हुआ था। मैंने अपने भाई से कहा कि वह चला जाए।

मैं ट्रक के पीछे वाले हिस्से में बैठा था और ड्राइवर के बगल में। मैंने अपने भाई से सिगरेट जलाने को कहा।

ड्राइवर के लिए एक सिगरेट। ड्राइवर ने सिगरेट का कश ऐसे लिया जैसे वह...

वह उसे खा रहा था। कुछ क्षण बाद, वह अपनी घबराहट से उबर गया।
मैंने जारी रखा।

मैं उससे बात कर रहा था ताकि वह शांत हो जाए। मैंने देखा कि एक युवा सेना अधिकारी जल्दी में था।

हमारी ओर आते हुए, चिल्लाते हुए, ‘निकल जाओ। जल्दी! और जगह खाली करो।’ हमारे ड्राइवर ने
अब तक वह संभल चुका था और उस जगह से तेजी से निकलने के लिए उसने एक्सीलरेटर दबा दिया।
उस बिंदु से आगे हमें ज्यादा तनाव का सामना नहीं करना पड़ा, और जल्द ही हम पहुँच गए।
श्मशान घाट।
किसी ने पूछा कि अगर शवदाह करने वाला कोई न हो तो हम क्या करेंगे?
वहाँ। मैंने कहा, 'हम इसे खुद करेंगे।' एक बार जब हम शव को नीचे ले आए।
ट्रक से उतरने पर मुझे एक शालीन, धार्मिक दिखने वाला सफेद दाढ़ी वाला आदमी मिला।
चिनार के पेड़ों के पीछे से निकलते हुए, उन्होंने हमें पुकारा और आने का इशारा किया।
उस तरह से। वह हमारा शवदाह करने वाला व्यक्ति था, एक मुस्लिम। कश्मीर में, यह एक
सदियों पुरानी परंपरा है कि मुसलमान दाह संस्कार करते हैं कश्मीरी हिंदू। एक कहावत है कि कश्मीरियों के बीच का बंधन हिंदू और मुस्लिम बंधुआ जीवन जन्म से मृत्यु तक फैला हुआ है। मेरी माँ का अंतिम संस्कार।
शीतल नाथ के गुरुजी और इस धर्मनिष्ठ शवदाह करने वाले व्यक्ति द्वारा सभी रीति-रिवाजों और विवरणों का ध्यान रखते हुए यह सब हुआ। जब अंततः हम तैयार हुए तो...
उस जगह को छोड़ते समय मेरा मन भारी था, फिर भी ऐसा लगा जैसे मेरे ऊपर से कोई बोझ उतर गया हो।
सीने में शांति का अहसास हुआ। मुझे बस समय पर एक शांति चाहिए थी।

मेरी माँ का अंतिम संस्कार, और यह सब भयानक परिस्थितियों के बावजूद संभव हो पाया।
इस स्थिति में, मैंने अपने तीन चचेरे भाइयों, जवाहर, मनोहर, तेज, आदि के सहयोग से इसे संभाला।
मेरे मुस्लिम मित्र और शीतल नाथ मंदिर के गुरुजी।
घर लौटना एक और चुनौती थी। पिछले बम धमाके के कारण, कोई भी हममें से कुछ लोग वापसी के लिए एक ही रास्ते से जाना चाहते थे, इसलिए हमने दूसरा रास्ता अपनाने का फैसला किया।
बटमालू क्षेत्र से होकर जाने वाली सड़क। सुरक्षा के लिए, हमने अपने साथ अर्थी रखी थी।
शव को श्मशान घाट तक ले जाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला लकड़ी का तख्ता, जैसे
हमारे मूल स्थान का प्रमाण। एक बार फिर, हमें कई जगहों पर रोका गया।
चौराहों पर जाँच की गई, तलाशी ली गई और पूछताछ की गई। हालाँकि हमने प्रदर्शित किया
हर जगह अर्थी होने के कारण, घर लौटने में हमें काफी समय लग रहा था।
किसी ने सुझाव दिया कि हम बटमालू में पुलिस मुख्यालय जाएं और हम वहां के अधिकारियों से मदद करने के लिए कहेंगे।
हम सीधे श्रीनगर पुलिस मुख्यालय के परिसर में दाखिल हुए।
वहाँ पहुँचते ही हमने वर्दीधारी पुरुषों की हलचल देखी। यह एक किसी युद्ध फिल्म का दृश्य, जिसमें कैमरा क्रेन की मदद से ऊपर उठता है और फिर...
पूरे इलाके का एक लंबा शॉट। वहां बख्तरबंद गाड़ियों का एक बेड़ा था, और

सेना की जीपें और वर्दीधारी सैनिक अपने युद्ध सामग्री से लैस होकर इधर-उधर घूम रहे थे।

वहाँ सीआरपीएफ के जवान, नियमित सेना के सैनिक और जम्मू और कश्मीर के सैनिक मौजूद थे।

पुलिसकर्मी। यह परिसर किसी तैयारी में लगा हुआ प्रतीत हो रहा था।

बड़ी लड़ाई। हल्के टैंक तैनात थे और किसी भी स्थिति के लिए तैयार थे। सैन्य

परिवहन वाहन तेजी से आ-जा रहे थे। हर कोई व्यस्त था; कोई भी आराम नहीं कर रहा था।

वे हममें दिलचस्पी ले रहे थे। मैंने मन ही मन सोचा, 'ये क्या है? आखिर चल क्या रहा है?'

मैं उस कमरे में गया जहाँ स्थानीय पुलिस अधिकारी बैठे थे और मैंने अपनी बात समझाई।

उनके लिए समस्या। उन्होंने मेरी बात सुनी लेकिन कोई मदद नहीं की। एक वरिष्ठ अधिकारी

उनमें से एक ने कहा, 'आपको पहले पहली मंजिल पर जाना होगा। वहाँ है

वह सेना में मेजर हैं, और वह आपकी मदद कर सकते हैं।’ मैं कमरे से बाहर निकल गया।

जम्मू और कश्मीर पुलिस के अधीक्षक ने मुझे पहचान लिया और पूछा कि मैं पुलिस मुख्यालय में क्यों हूँ। जब मैंने उन्हें कारण बताया

हम वहाँ थे, उसने जवाब दिया, 'चिंता मत करो, बस प्रतीक्षा करो। मेरे ड्राइवर की छुट्टी है।'

दोपहर का भोजन। उसके वापस आने पर, तुम मेरी जीप का पीछा करना, और मैं सुनिश्चित करूँगा कि तुम

अपने घर पहुंचो।’ हमने इंतजार किया, लेकिन ड्राइवर कभी नहीं आया। जल्द ही यह पुलिस

अधीक्षक भी लापता हो गया।
अंत में, मैं पहली मंजिल पर गया, जहाँ मेरी मुलाकात भारतीय सेना के एक युवा अधिकारी से हुई।
डोगरा रेजिमेंट का एक सिपाही। वह श्रीनगर के एक बड़े, विस्तृत नक्शे का अध्ययन कर रहा था।
वह शहर में था और अपने वायरलेस सेटों के माध्यम से निर्देश दे रहा था। मुझे अंदर आते देख उसने मुझे अंदर आते देखा।
कमरे में, वह रुक गया, 'हाँ?' मैंने उसे अपनी कहानी दोहराई और उससे अनुरोध किया कि वह
चलो घर चलते हैं। ‘घर पर मेरे लोग चिंतित होंगे, क्योंकि यह काफी देर हो चुकी थी, और हम श्मशान घाट के लिए बहुत जल्दी निकल गए थे। उन्होंने मुझसे मेरे इलाके का नाम पूछा, और मैंने कहा, 'शीतल' नाथ।’ उन्होंने कहा, ‘मुझे इस नक्शे पर वह इलाका दिखाओ।’ मैंने उनसे पूछा, ‘क्या आप बता सकते हैं?’
मुझे इस नक्शे पर मेरी स्थिति बताइए?’ उसने अपनी पेंसिल से उस स्थान की ओर इशारा किया।
मैंने अपने मोहल्ले का पता लगा लिया, उसने कहा, 'ठीक है, अब मुझे इनके नाम बताओ।'
'आपमें से प्रत्येक का नाम और साथ ही वाहनों के नंबर भी।' मैंने तुरंत उसका फ़ोन उधार लिया।
हमने कलम और कागज लेकर अपनी सारी जानकारी लिख ली। फिर उन्होंने समझाया, 'मैं नहीं कर सकता।'
मैं आपको कोई लिखित अनुमति नहीं दूंगा, लेकिन मैं पहले व्यक्ति को सूचित करूंगा।
घर लौटते समय रास्ते में पड़ने वाले चेक-पोस्ट पर, वे आपकी जानकारी आगे भेज देंगे।
'अगली पोस्ट और इसी तरह जब तक आप घर न पहुँच जाएँ।' मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और जल्दी से बाहर निकल गया।

कमरा। इसी तरह हम घर पहुँचे। जब बाबूजी, मेरी बहन और सभी लोग परिवार के अन्य सदस्यों ने हमें सुरक्षित वापस आते देख लिया, उन्हें बहुत राहत मिली।
पूरे दिन मेरी मानसिक स्थिति अजीब सी थी। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं एक ज़ोंबी हूँ।
मैं एक बेटे के रूप में अपने कर्तव्यों पर ध्यान केंद्रित कर रहा था, लेकिन कई बार मुझे ऐसा लगता था जैसे मैं
कुछ ट्रेजिकॉमेडी देख रहे हैं। इस अराजकता, अनुष्ठानों और
जब हजारों लोग थे तब रीति-रिवाज, सब कुछ अर्थहीन हो गया।
हर दिन किसी अनिश्चित भविष्य की ओर पलायन। अंत्येष्टि हुई, विरोध प्रदर्शन हुए,
गोलीबारी और हत्याएं हो रही हैं। सदियों पुरानी दुनिया का यही मूल ताना-बाना है।
उसे फाड़ा जा रहा था।
अगले तेरह दिनों तक, कुछ दैनिक समारोह थे जिन्हें पूरा करना आवश्यक था।
मेरे बड़े भाई अशोक कुमार द्वारा घर पर दिवंगत आत्मा की स्मृति में यह अनुष्ठान किया जाएगा।
बेचारा। उसे ये सब करने के लिए सर्दियों की कड़ाके की ठंड में सुबह जल्दी उठना पड़ा।
शहर में अपने घर के बाहर हर दिन धार्मिक समारोहों में भाग लेना, ऐसा लगता था जैसे
एक युद्ध क्षेत्र। हर दिन गोलियों की आवाजें, बम धमाके और हत्याओं की आवाजें आती थीं।
और उग्रवादियों और सुरक्षा बलों के बीच बड़े पैमाने पर झड़पें हुईं।
अफवाहें फैल गईं कि कई अफगान और अन्य आतंकवादी घुसपैठ कर चुके हैं।

घाटी में आतंकी हमले किए जाएंगे।
कुछ दिनों बाद, एक शाम मेरे चचेरे भाई ने अपने घर से फोन किया और कहा
उसके पिता सबको अपने कमरे में बुला रहे थे। यह सुनकर हमने प्रार्थना की कि...
मामला कुछ ज्यादा गंभीर नहीं था; वह पचासी साल के थे, वरिष्ठ-परिवार में सबसे प्रमुख, कुल के मुखिया, अब ल्यूकेमिया से पीड़ित हैं। हम
हमें उम्मीद थी कि उसे कुछ भी गलत नहीं है। जब हम सब उसके कमरे में इकट्ठा हुए, तो हम
मैंने उसे बेचैन और व्याकुल देखा। उसने अपने छोटे भाई, मेरे पिता की ओर देखा।
और उससे कहा, ‘नहीं, नहीं, जाना, हम उसे वहाँ नहीं छोड़ सकते। कुछ भी संभव है।’
मुझे उसे अभी यहीं लाना होगा। आपको उसे जल्द से जल्द ले जाना होगा।
सबसे पहला विचार जो सबके मन में आया वह यही था कि वह मतिभ्रम का शिकार हो रहा है।
हम सब उसकी कही बात का मतलब समझने की कोशिश कर रहे थे, तभी आखिरकार,
मेरे पिता को अचानक यह बात समझ में आ गई और उन्होंने तुरंत जवाब दिया, 'जी हाँ, हाँ, हम करेंगे।'
लेकिन सवाल यह है कि हम उनकी अस्थियों को कहां विसर्जित करेंगे?
तब सबको समझ आ गया कि हमारे चाचा ने सबको क्यों बुलाया था। परिवार। उन्हें मेरी माँ की अस्थियों की चिंता थी, जो अभी भी वहीं थीं।
शवदाह स्थल। हालात दिन-प्रतिदिन बिगड़ते जा रहे थे और अधिकांश

पंडित चुपचाप पलायन कर रहे थे, हम उनकी अस्थियों को लावारिस नहीं छोड़ सकते थे।
हमने उनसे वादा किया कि हम अगले दिन सुबह-सुबह ऐसा करेंगे।
कर्फ्यू में दो घंटे की ढील दी गई। शादिपुर जाना संभव नहीं था।
कश्मीर में संगम, जहाँ झेलम और सिंधु नदियाँ मिलती हैं, जलमग्नता। वह बहुत दूर था। उसने कहा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कहाँ हैं।
राख को विसर्जित किया गया, लेकिन उसे विसर्जित करना आवश्यक था। यह नदी में भी हो सकता था।
झेलम नदी पास में हो या फिर डल झील में ही क्यों न हो। कितना सुंदर नजारा होगा!
सभी चचेरे भाई-बहनों ने सुबह जल्दी, लगभग 5 बजे, निकलने का फैसला किया।
एक किराए की मैटाडोर वैन। जब हम निकले तो अंधेरा हो चुका था। राख उठाने से पहले,
हमें कुम्हारों से एक मिट्टी का बर्तन खरीदना पड़ा। हमने उसे जगाया। पहले तो वह
वह डर गया था, उसे लगा कि कुछ पुलिसवाले उसके घर की तलाशी लेने आए हैं...
यह तो आम बात थी। हमें उसे दरवाजा खोलने के लिए चिल्लाना पड़ता था और फिर समझाना पड़ता था।
उन्हें ही हमारे आने का कारण बताया गया। उन्होंने दरवाजा खोला और थोड़ी देर में एक बड़ा सा सामान बाहर निकाला।
मिट्टी का बर्तन लिया, और फिर हम सूखे मेवों की दुकान की ओर जल्दी से चले गए। सुबह-सुबह और
कर्फ्यू के चलते स्वाभाविक रूप से दुकान बंद थी, लेकिन सौभाग्य से, यह एक दुकान थी-
दुकानदार की पत्नी ने मुझे बताया कि वह वहाँ गया था।

अगली गली में मस्जिद थी, जहाँ सुबह की नमाज़ पढ़नी थी। हम जल्दी से मस्जिद की ओर भागे।
और हमने उसे वहाँ पाया। हम सबको वहाँ देखकर वह अचंभित रह गया। वह हमारे परिवार को बहुत अच्छी तरह से जानता था। जब मैंने उसे बताया कि मेरी माँ का निधन हो गया है।
जब हम दूर चले गए और हमें उनकी राख उठानी पड़ी, तो उन्होंने तुरंत जवाब दिया, 'आओ,
आओ। मुझे पता है तुम्हें क्या चाहिए।’ हम उसके पीछे-पीछे उसकी दुकान तक गए, और आगे
उसने समारोह के लिए आवश्यक सभी सामान पैक कर लिया, और इस दौरान वह लगातार काम करता रहा।
मैं अपनी मां की आत्मा को शांति प्रदान करने के लिए प्रार्थना करता हूं और अल्लाह से उन्हें स्वर्ग भेजने की दुआ करता हूं। सारा सामान इकट्ठा करने के बाद, हम सीधे दाह संस्कार स्थल की ओर दौड़े।
जमीन। तब तक दिन का उजाला हो चुका था। वहाँ पहुँचने पर, आखिरी मेरी मां के अवशेष जमीन पर पड़े थे, जो अब सफेद और भूरे रंग में बदल चुके थे।
राख। वही पुराना शवदाह करने वाला आया और हमारे द्वारा लाई गई सभी चीज़ें ले गया।
और उन्होंने हमें रीति-रिवाजों के अनुसार निर्देशित किया, और बताया कि कैसे सामान उठाना है।
राख और प्रत्येक क्रिया के महत्व को समझाते हुए। उन्होंने हमसे सबसे पहले पूछा कि...
उस जगह पर पानी और दूध छिड़क दें ताकि राख दिखाई देने लगे।
फिर उन्होंने हमसे अगरबत्तियां जलाने और फूलों की पंखुड़ियां और सूखे पत्ते छिड़कने को कहा।

चारों तरफ फल बिखरे हुए थे। फिर उन्होंने हमें हमारी परंपरा के अनुसार राख उठाने को कहा।

जब हम यह कर रहे थे, तो उसने मेरे बड़े भाई से राख को एक जगह से उठाने के लिए कहा।

एक खास जगह पर। फिर उन्होंने मेरे भाई को उसे दूध-पानी में डालने का निर्देश दिया।

बर्तन। उन्होंने हिंदू पंडितों की तरह समझाया, 'इसे देखो। इसे कहते हैं बर्तन।'

पौरुष। आप इसका रूप देख सकते हैं; ऐसा लगता है जैसे कोई कमल मुद्रा में गहरी ध्यान मुद्रा में बैठा हो। इसे अन्य आवश्यक राख के साथ अलग से रखें।

और उन सभी को हरिद्वार में गंगा में विसर्जित कर दें।'

उन्हें देखकर और उनके निर्देशों और मेरे बारे में उनके ज्ञान को सुनकर

धर्म के बारे में सुनना किसी ऋषि का प्रवचन सुनने जैसा था। उनके सुखदायक शब्द और उनका

उनका आशीर्वाद मेरे परिचित किसी भी विद्वान पंडित के आशीर्वाद से श्रेष्ठ था। उन्होंने हमें आशीर्वाद दिया।

और हमने उनके द्वारा किए गए सभी कार्यों के लिए उन्हें धन्यवाद देते हुए उनसे विदा ली।

वहां से हमें तेजी से झेलम नदी की ओर जाना था, उस बिंदु तक जहां से वह नदी निकल जाती है।

श्रीनगर शहर से होकर यह नदी बारामूला की ओर बहती है। जब हम वहाँ पहुँचे, तो एक

नमाज़ के बाद बड़ी संख्या में लोग मस्जिद से बाहर निकल रहे थे। एक सज्जन

मेरी गोद में रखे मिट्टी के बर्तन को देखकर मैं तुरंत उसका उद्देश्य समझ गया।

नदी की हमारी यात्रा। वह नदी के किनारे दौड़ा और चिल्लाकर बोला।
एक मछुआरा जो सुबह-सुबह मछली पकड़ रहा था, उसने उसे आने के लिए कहा।
बैंक जाना एक पवित्र कार्य के रूप में अनिवार्य था। मछुआरा, मेरा बड़ा भाई।
मैं और मेरा भाई, हाथ में मिट्टी का घड़ा लिए नाव पर चढ़ गए। नाविक
उसने हमें नदी के बीचोंबीच खींच लिया, जहाँ पानी की धाराएँ बह रही थीं।
और तेज़। यहाँ मैं और मेरा भाई, किसी मंत्र या पवित्र श्लोक को जाने बिना,
उसने बर्तन उठाया और सारी राख वितास्ता के पानी में डाल दी, या झेलम। राख को पानी में डालते समय, मैंने मन ही मन यह मंत्र दोहराया।
गायत्री मंत्र, जो मेरी माँ ने मुझे बचपन में सिखाया था। ये क्या हैं?
मेरे शब्दों का सटीक अर्थ मुझे पता नहीं था, लेकिन चुपचाप मैंने अपनी माँ को अलविदा कहा।
जैसे ही मिट्टी का घड़ा नदी में बहने लगा, मेरी आँखों में आँसू आ गए।
मैंने उसका अनुसरण किया। पहली बार मुझे लगा कि मैंने सचमुच अपनी माँ को खो दिया है क्योंकि वह
वह अपनी शाश्वत यात्रा पर वितास्ता की धाराओं के साथ बहती रही। हम नदी किनारे लौट आए। मेरे चचेरे भाई-बहन, जो घाटों पर इंतजार कर रहे थे,
उसने चिल्लाकर कहा, ‘मछुआरों को कुछ पैसे दो।’ मैंने अपना पर्स निकाला और

मैंने नाविक को 100 रुपये के दो नोट दिए। उसने मुझे एकटक देखा। और उन्होंने कहा, 'इस धार्मिक सेवा के लिए, आप नकद में लेन-देन नहीं करते।'
उनकी इस गहन बात से मेरी नींद खुली, लेकिन चूंकि वह
वह एक बेहद गरीब मछुआरा था, मैंने उससे कुछ पैसे लेने का आग्रह किया। उसने फिर से इनकार कर दिया।
जैसे ही हम नाव से कूदे, मेरे चचेरे भाइयों ने फिर से हमें आवाज़ दी और धार्मिक रीति-रिवाज के अनुसार हमसे पैसे देने की ज़िद करने लगे। मैंने उनसे विनती की...
नाविक ने हमसे पैसे लेने के लिए कहा, लेकिन नाविक अडिग रहा, 'इतने कम पैसे के लिए...'
यह एक पवित्र सेवा है, इसमें पैसों का लेन-देन नहीं होता। जाओ, तुम्हारी माँ स्वर्ग जाएगी।
या पीर दस्तगीर।’ उसने अपनी नाव वापस नदी में खींच ली। मैंने उसे ऐसा करते देखा।
बहकर दूर चला गया। जाहिर है, वह आर्थिक रूप से संपन्न नहीं था, वरना वह ऐसा क्यों करता?
इतनी सर्द सर्दियों के दिन सुबह-सुबह मछली पकड़ना और
कर्फ्यू के दौरान?
दुर्भाग्यवश, मेरे चचेरे भाई-बहन इस बात की गहराई को नहीं समझ पाए।
मछुआरे की भावना को समझते हुए, वह मुझे शास्त्रों और अन्य बातों की व्याख्या करता रहा।
मेरी माँ की परलोक यात्रा के लिए भुगतान करने का महत्व। मुझे एहसास हुआ कि हम
उनकी समझ का स्तर अलग-अलग था। वे मृत्यु के बाद के जीवन को लेकर चिंतित थे।
जब मैं वर्तमान में जीवन को देख रहा था।

एक ही दिन में इतने सारे अनुभवों का सामना करना—कुम्हार के साथ
सुबह, सूखे मेवे बेचने वाला, शवदाह करने वाला और अंत में, यह मछुआरा—यह एक संपूर्ण यात्रा प्रतीत हुई, जो ताने-बाने को खोलती हुई आगे बढ़ रही थी।
घाटी द्वारा निर्मित सामाजिक-सांस्कृतिक मोज़ेक, जो सदियों से बुना गया है और
अब बहुत बड़ा खतरा है।
मेरी माँ के निधन के कुछ सप्ताह बाद भी, हम अपने घर को नहीं छोड़ पाए।
घर में पिताजी अकेले थे, और वे बाहर जाने को तैयार नहीं थे। हमारे मोहल्ले में
वहां पंडित परिवारों की संख्या लगभग न के बराबर थी, और स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ था।
इसके विपरीत, स्थिति और बिगड़ गई थी। कर्फ्यू अभी भी लागू था, सिवाय इसके कि...
सुबह के उन दो घंटों में, हर जगह सेना की मौजूदगी थी।
जगह। मुझे दिन भर घर के अंदर रहना घुटन भरा लगने लगा था।
एक दिन, दिन के समय कर्फ्यू में ढील दी गई। मैंने लंबी सैर पर जाने का फैसला किया।
मैं रेजिडेंसी रोड से होते हुए जीरो ब्रिज तक पैदल चलकर यह देखने की कोशिश करूंगा कि क्या मैं किसी से मिल सकता हूँ।
मैं किसी परिचित को जानता था। सड़क पर पुलिसकर्मियों के अलावा शायद ही कोई था।
और हर कुछ मिनटों में हथियारों से लैस सेना के जवान तेजी से गुजरते हुए दिखाई दे रहे थे। यह एक
मैं अकेले ही चलता रहा और कुछ देर बाद दूरदर्शन केंद्र पहुँच गया, जो कि उसके बगल में ही स्थित था।

जीरो ब्रिज। मुझे यह जानने की उत्सुकता हुई कि क्या वहां कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे मैं जानता हूं।

श्रीनगर दूरदर्शन के मुख्य द्वार पर तैनात सुरक्षाकर्मियों ने मुझे रास्ता खोजने से रोक दिया।

मुझे उस व्यक्ति का नाम नहीं पता था जिससे मैं मिलना चाहता था। चूंकि मुझे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि मैं किससे मिल रहा हूँ।

अगर हम वहां मिल सकते, तो मैंने बस पूछा, 'स्टेशन निदेशक कौन है?' उन्होंने मुझे बताया,

‘लस्सा कौल।’ मैंने सुरक्षाकर्मियों से अनुरोध किया कि वे कृपया उन्हें स्थानीय नंबर पर बुलाएँ।

सिस्टम और उसे मेरा नाम बता दो। देखते ही देखते पहली मंजिल पर एक खिड़की खुल गई।

दरवाजा खुला और लस्सा कौल बाहर झाँक रहा था, आश्चर्य से मेरी ओर देख रहा था।

उन्होंने सुरक्षाकर्मियों को आदेश दिया कि मुझे उनके कमरे में आने दें। नियमित प्रक्रिया के बाद

जाँच के बाद, उन्होंने मुझे प्रवेश पास दिया और अंदर जाने दिया। मुझे उनसे बाद में मिलना था।

कई साल। औपचारिक हाथ मिलाने, गले लगने और अभिवादन के बाद, हम बैठ गए, और वह

मैंने कहवा ऑर्डर किया। यहीं से हमारी बातचीत शुरू हुई। मैंने उसे कारण बताया।

वह इस सर्दी के मौसम में और इतने उथल-पुथल भरे समय में श्रीनगर आए थे। हमने बातचीत की।

घाटी की मौजूदा स्थिति के बारे में। वह चिंतित और तनावग्रस्त लग रहा था।

तेजी से बदलते घटनाक्रम के कारण वह अपने निवास स्थान पर नहीं लौटा था।

घाटी। यह वी.पी. सिंह की सरकार थी और जगमोहन राज्यपाल थे। राज्य। राज्यपाल अपने आगमन के दिन से ही सख्त रवैया अपना रहे थे।
कौल ने मुझे उन अनिश्चित दिनों की तरह-तरह की कहानियां सुनाईं। सेंट्रल
सरकार ने उन्हें स्थिति के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए टीवी पर रिपोर्ट करने का निर्देश दिया था, और
तदनुसार, उन्होंने कल रात अपने समाचार प्रसारण में बताया था कि वहाँ
घाटी में लॉकडाउन था और सभी दुकानें बंद थीं। इसके लिए उन्हें दंडित किया गया।
स्थानीय अधिकारियों ने उन्हें रोक लिया था और राज्यपाल नहीं चाहते थे कि वह ऐसा करें।
किसी भी नकारात्मक खबर की रिपोर्ट करें। कौल दुविधा में था और चिंतित था।
समाचारों और दूरदर्शन श्रीनगर की विश्वसनीयता को कैसे बहाल किया जाए?
पंडितों के पलायन ने उन्हें विचलित कर दिया और उन्होंने कहा, 'सुबह जब मैं
मैं कभी-कभी अपने स्टेशन से पर्यटक स्वागत कक्ष तक थोड़ी दूर पैदल चलकर जाता हूँ।
केंद्र में, मैं इन कश्मीरी पंडित परिवारों को गांवों से निकलते हुए देखता हूं।
बिना किसी सामान के, सिर्फ एक फिरन पहने हुए बसों में सवार।
एक छोटा सा बैग लिए हुए। यह देखकर मेरा दिल टूट जाता है। उन्हें देखकर मैंने खुद से पूछा,
वे क्या करेंगे और कहाँ जाएँगे?

प्रशासन के भीतर की घटनाओं ने उन्हें भी परेशान कर दिया था।
उन्होंने खुलासा किया।

स्थानीय विधायकों को आत्मरक्षा के लिए जारी की गई रिवाल्वरों से जुड़ी एक और अनकही कहानी। अब, राज्यपाल शासन लागू होने और कोई व्यवस्था न होने के कारण।

मौजूदा सरकार में निर्वाचित प्रतिनिधियों का कोई नामोनिशान नहीं था।

या तो उन रिवाल्वरों के बारे में या उन विधायकों के नामों के बारे में जिन्हें वे जारी की गई थीं।

किसी को कुछ पता नहीं था। हमने कई कप चाय पी और दोपहर करीब 2 बजे उसने फोन किया।

मैंने उनके दो निर्माताओं से बात की और उनसे मेरा साक्षात्कार लेने के लिए कहा। यह साक्षात्कार था।

महज एक औपचारिकता थी क्योंकि साक्षात्कारकर्ता में पूछने की हिम्मत नहीं थी।

मुझे वर्तमान स्थिति के बारे में कोई भी प्रश्न पूछने की अनुमति नहीं थी। अजीब बात यह थी कि स्थिति वैसी ही बनी रही।

हालातों को देखते हुए, सब कुछ मेरे काम के बारे में था। शाम करीब 5 बजे, कौल और मैं

हमने एक-दूसरे को अलविदा कहा और मैं घर की ओर चल पड़ा। लगभग एक हफ्ते बाद, लासा

श्रीनगर दूरदर्शन के निदेशक कौल की घर लौटते समय गोली मारकर हत्या कर दी गई।

अपने बीमार बूढ़े माता-पिता से थोड़ी देर के लिए मिलने जाने के लिए। इस खबर ने पंडित को झकझोर दिया।

समुदाय को और भी अधिक।

घर आकर हमने फैसला किया कि अब हममें से किसी के लिए भी यहाँ रहना संभव नहीं है।

घाटी में। हमने तय किया कि परिवार के सदस्य कब और कैसे आएंगे।

घर छोड़कर चले जाना। मेरे पिता अंततः जाने के लिए सहमत हो गए, लेकिन उससे पहले, वे चाहते थे कि...
अपने उन सभी मुस्लिम पड़ोसियों से मिलें जो उनके जीवन भर उनके मित्र रहे थे।
जीवन। बचपन से ही उन्होंने उनके साथ कई उतार-चढ़ाव साझा किए थे। उन्होंने कहा कि उनके संबंध उनके परदादा के समय से थे, इसलिए वह ऐसा कर सकते थे।
वह यूं ही छोड़कर गायब नहीं हो सकता था। उसने मुझे दिल्ली जाने के लिए कहा और मुझे आश्वासन दिया।
कि वह मेरे बड़े भाई के परिवार के साथ जम्मू के लिए रवाना होगा, जहाँ वह
मुझे अपनी माँ के भाई और उनके परिवार से मिलना था। वे आए हुए थे। मुझे उसकी मौत के बारे में लगभग दस दिन बाद ही पता चला।
तो, घाटी में यही स्थिति थी। संचार लाइनें कट गई थीं।
नागरिक तनाव में थे, और अगर परिवार का कोई भी सदस्य समय पर घर नहीं लौटा तो
उनके निर्धारित समय पर, घर में अफरा-तफरी और हंगामा मच जाता था।
हर जगह असुरक्षा की भावना व्याप्त थी।
जब मैं अकेले दिल्ली के लिए रवाना हुई, तो मैंने अपने सभी परिवार वालों और चाचाओं से विनती की।
घाटी से उनके प्रस्थान में देरी न करें। वहां रुकना अब सुरक्षित नहीं था।
वापस। उस समय, कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि कश्मीर लौटना संभव होगा।
यह असंभव था। कई कश्मीरी पंडितों को भोलापन था और वे मानते थे कि दो-तीन महीनों में हालात सुधर जाएंगे; कि जब वसंत आएगा

शीतकालीन अवकाश के बाद जब लोग वापस लौटे और शिक्षण संस्थान खुल गए, तो
वापस आ सकेंगे। मेरे चचेरे भाइयों समेत कई लोगों का मानना था कि राज्यपाल जगमोहन जल्द ही मामले को सुलझा लेंगे और सब कुछ ठीक हो जाएगा।
वापस सामान्य करने के लिए।
जब मैं दिल्ली पहुंचा, तो मेरे दो दोस्त राजन और सोहेल हाशमी थे।
मेरा इंतजार कर रहे थे। हमारी मुलाकात के कुछ मिनट बाद, सोहेल ने मुझसे पूछा,
‘राइना, क्या तुमने आईने में अपना चेहरा देखा है?’ मुझे एहसास हुआ कि मैंने नहीं देखा था।
मैंने चार सप्ताह से अधिक समय तक दर्पण में देखा। मैंने कहा, 'आपने मुझसे क्यों पूछा?'
उसने जवाब दिया, 'क्योंकि तुम्हारा चेहरा देखकर लगता है जैसे तुम जेल में रहे हो।' मैंने जवाब दिया,
‘सोहेल, कश्मीर एक जेल है जहाँ हर मिनट हिंसा की घटनाएँ घटित होती रहती हैं।’
मैंने तुरंत आईने में अपना चेहरा देखा, और मैं सचमुच उसे देख नहीं पा रही थी।
मेरा मानना है कि तनाव किसी के चेहरे को इस हद तक बदल सकता है। चार दिन बाद मुझे मेरे भाइयों का फोन आया, उन्होंने बताया कि उनके पास सब कुछ है।
उन्होंने अपने घर बंद कर दिए और श्रीनगर छोड़ दिया। मेरे पिता ने जम्मू में ही रहना पसंद किया।
क्योंकि उनके कई दोस्त, परिचित और रिश्तेदार अब शहर में थे।
उस क्षण मुझे लगा कि मेरा कश्मीर, मेरा घर, जहाँ मैं पैदा हुई थी, मुझे ले आया।

मेरे लिए परवरिश, शिक्षा और पालन-पोषण का अध्याय अब समाप्त हो चुका था। लेकिन मेरा मन

वह इस तथ्य को स्वीकार करने को तैयार नहीं था।

11

दिल्ली—दुविधा

दिल्ली में, उन भयानक घटनाओं के बाद मैंने अपने काम को फिर से पटरी पर लाने की कोशिश शुरू की।

कई सप्ताह बीत गए। मैंने अपनी दिनचर्या में लौटने की कोशिश की, लेकिन हर दिन परेशान करने वाली खबरें आती रहीं।

घाटी से खबरें आईं। कश्मीरी पंडित मोहल्लों को जलाने की खबरें मिलीं।

नियमित रूप से आते रहते थे। मेरी दूसरी बहन अपने पति और दो छोटे बेटों के साथ आती थी।

उन्हें पूर्वी उत्तर प्रदेश के मनकापुर में तबादला कराने में सफलता मिल गई थी।

एक पिछड़ा क्षेत्र। चूंकि यह एक विकसित क्षेत्र नहीं था, इसलिए यहाँ परिस्थितियाँ कठिन थीं।

शुरुआत में उनके परिवार के लिए। उन्होंने इस स्थिति में अपने जीवन को फिर से पटरी पर लाने की कोशिश की।

एक अनजान जगह जहाँ वे किसी को नहीं जानते थे। हम कभी-कभार बातें करते थे।

उन्होंने फोन किया और उनका मनोबल ऊंचा रखने की कोशिश की। यह एक अजीब नई दुनिया थी, एक

एक अनिश्चित भविष्य के साथ नई शुरुआत। लेकिन ढाई दशकों से अधिक समय बीत चुका है,

अपनी सेवानिवृत्ति तक, उन्होंने वहां अपना जीवन काफी अच्छे से व्यतीत किया।

कश्मीरी पंडित समुदाय का लचीलापन अद्भुत है। दर्द के बावजूद

सदियों से जिस घर में वे रहते आए थे, उसे छोड़कर उन्होंने अपना घर फिर से बनाया।

समुदाय के रूप में जीवन व्यतीत करना, ईंट दर ईंट, आंसुओं पर आंसुओं के साथ, साहस और गरिमा के साथ।

और दृढ़ संकल्प।

कई साल बीत गए। कश्मीर और भी जटिल आतंकी हमलों में उलझता चला गया।

संबंधित अभियानों में कश्मीरी पंडितों की दुर्दशा को प्राथमिकता नहीं दी गई।

भारत को इस समस्या से निपटना पड़ा, और कश्मीर मुद्दा राजनीतिक रूप से अधिकाधिक जटिल होता चला गया।

यह एक जटिल मुद्दा है, जिसके अंतरराष्ट्रीय निहितार्थ हैं। भारत की मुख्यधारा की राजनीतिक व्यवस्था

लाखों लोगों के पलायन को लेकर पार्टियों ने सिर्फ दिखावटी समर्थन दिया।

राज्य स्तर पर भी उन्होंने अपना मुद्दा नहीं उठाया। राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उन्होंने इसे आगे नहीं बढ़ाया।

भाजपा को छोड़कर, जिसने खुद को इस त्रासदी से जोड़ा, बाकी सभी दलों ने इस स्तर पर अपनी भागीदारी निभाई।

पंडित, जिनका इस्तेमाल यह पहले भी करता था। यह घटना भाजपा के राम रथ अभियान के चरम पर पहुंचने के साथ मेल खाती है।

यात्रा और राम मंदिर आंदोलन के दौरान कश्मीरी पंडितों का पलायन उनके लिए एक वरदान साबित हुआ, एक ऐसा उपहार जिसका उन्होंने दशकों तक लगन से लाभ उठाया और आज भी उठा रहे हैं।

आज दूध।
भारत की प्रमुख धर्मनिरपेक्ष पार्टियों को देखकर मैं बेहद निराश और स्तब्ध रह गया।
इन बेघर लोगों की दुर्दशा को उजागर करने की शायद ही कोई जहमत उठाई जा रही है।
कई सम्मेलनों और सेमिनारों में, मैंने बुद्धिजीवियों को अचानक यह कहते हुए सुना कि वे
यह प्रवास, यह तर्क देते हुए कि कश्मीरी पंडित एक थे
जमींदार और विशेषाधिकार प्राप्त समुदाय, जिन्होंने हमेशा महाराजा का समर्थन किया था
सामंती शासन। ये तर्क, जो अधूरी सच्चाइयों पर आधारित थे, दर्शाते हैं कि ये
बुद्धिजीवियों को महाराजा-विरोधी संघर्ष की जानकारी का अभाव था जिसमें
पंडितों ने सामंती अत्याचारों के खिलाफ लड़ाई में अग्रणी भूमिका निभाई।
सरकार। इनमें से कोई भी धर्मनिरपेक्ष विचारक इसे नहीं देख सका। कश्मीर विद्रोह में अखिल इस्लामी आंदोलन की अंतर्धाराएँ।
धर्मनिरपेक्ष होने का मतलब यह नहीं है कि कोई सांप्रदायिक जहर को नहीं देख सकता।
उन्हें यह स्पष्ट हो गया था कि अफगानिस्तान में जिहाद में पाकिस्तान मुख्य भूमिका निभा रहा था।
और इसे अमेरिकी साम्राज्यवादी दलों का पूरा समर्थन प्राप्त था।7 मुझे इस बात का दुख हुआ कि
जो लोग एक समन्वित भारत में विश्वास रखते थे, वे आने वाले खतरे को समझने में विफल रहे।
धीरे-धीरे, धर्मनिरपेक्ष स्थान सिकुड़ने लगा, और एक नया, शोरगुल भरा, हिंसक और

असहिष्णु मानसिकता का विस्तार होता गया और उसने अधिकाधिक स्थान हथिया लिया।

यह अजीब था। इस सारी उथल-पुथल के दौरान, धर्मनिरपेक्ष समुदाय के भीतर किसी ने भी इस पर ध्यान नहीं दिया।

मुझे कम से कम यह जानने की जिज्ञासा भी थी कि मेरे परिवार का क्या हुआ।

कश्मीर। मुझे अपने कश्मीरी पंडित मित्रों को सवाल पूछते हुए सुनकर बहुत दुख हुआ।

जैसे कि, 'आपकी वामपंथी और धर्मनिरपेक्ष पार्टियां हमारा समर्थन क्यों नहीं कर रही हैं?'

सच कहूँ तो, मेरे पास कोई जवाब नहीं था। वहाँ कुछ कश्मीरी पंडित थे जो...

कई गैर-राजनीतिक प्रगतिशील लोकतांत्रिक संगठनों का हिस्सा

घाटी। उन्हें बस यही उम्मीद थी कि कम से कम उनकी दुर्दशा को उनके अपने लोगों से मान्यता मिल जाए।

भारत के बाकी हिस्सों में भी इसके समकक्ष थे। यहाँ एक मजबूत वामपंथी और प्रगतिशील विचारधारा थी।

घाटी में, विशेषकर शिक्षण संस्थानों में, आंदोलन चल रहा है। आक्रोश

भारत के धर्मनिरपेक्ष नेतृत्व के प्रति मोहभंग और उससे मोहभंग ने इस ओर धकेल दिया।

कुछ अपवादों को छोड़कर, पंडित राजनीतिक दक्षिणपंथ की गोद में समा गए हैं।

मुझे यह स्वीकार करना होगा कि सांप्रदायिक कहलाने के डर से मैं पहले छिपाकर रखता था।

चुपचाप हमारी त्रासदी को सहते रहो। दरअसल, मुंबई में, जब मेरे एक दोस्त ने

पुराने दोस्तों ने एक बार कहा था, 'तुम अब सांप्रदायिक मानसिकता वाले व्यक्ति की तरह व्यवहार करने लगे हो।'

‘रैना’, इस बात ने मुझे बहुत दुख पहुँचाया, क्योंकि इतने सालों से, मेरे पास जो कुछ भी था, वह सब मेरा था।
मेरा मानना था कि भारत एक बहुसांस्कृतिक और बहुधार्मिक देश होना चाहिए, जिसके लिए मेरे मन में आस्था थी।
मैंने सांप्रदायिक अधिकारों के समर्थन में चल रहे सभी आंदोलनों और संघर्षों में भाग लिया।
सद्भाव। मैं अब भी भारत की अवधारणा में विश्वास रखता हूँ, जो स्वतंत्रता की विरासत है।
यह आंदोलन समाज के सभी वर्गों के नेतृत्व में था। केवल एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा था।
मेरे परिवार की दुर्दशा के बारे में मुझे मेरे शिक्षक, मेरे गुरु, ई. अल्काज़ी ने बताया था।
मैं कश्मीर से अपने परिवार के पलायन के बारे में विस्तृत जानकारी जानना चाहता था।
उन्होंने मुझे अपने परिवार की कहानी भी सुनाई। जब इराक ने हमला किया
कुवैत में, उनका अपने परिवार से सारा संपर्क टूट गया। अंततः, उन्हें हवाई मार्ग से घर वापस लाया गया।
एक भारतीय विमान।
आतंकी हिंसा और हत्याओं के कारण कश्मीर में अशांति जारी रही।
यह एक नियमित घटना बन गई, एक ऐसी नई घटना जिससे कश्मीर अनजान था।
समुदाय को अपने घर छोड़कर एक अनिश्चित भविष्य की ओर जाना पड़ा।
कश्मीरी पंडितों के कबीले अलग-अलग होकर भारत के विभिन्न भागों में बिखर गए।
वे अपने ही देश में शरणार्थी बन गए। उनमें से अधिकांश ने शरणार्थी शिविरों में शरण ली।
ऐसे शिविर जहां की स्थितियां अमानवीय और अस्वच्छ थीं।

जीवन अर्थहीन और बेतुका हो गया, लेकिन मानव मन ने हार नहीं मानी।

किसी अज्ञात आशा की ओर बढ़ते हुए, अपने घावों को भरने का प्रयास जारी रखते हुए।

कश्मीरी पंडितों ने यही किया था, और आज भी करते हैं।

अपने पूर्वजों की भूमि को छोड़ने का सदमा, एक ऐसे जीवन के लिए अभिशप्त होना जो

प्रवासी शरणार्थियों की वास्तविकता को स्वीकार करना कठिन था। इसलिए, सांस लेना और महसूस करना

सामान्यतः, कश्मीरी पंडित कुछ शांति या उसके कुछ हिस्सों की तलाश में रहते थे, जहाँ वे

वे अपने समुदाय का हिस्सा होने का एहसास कर सकते थे। दिल्ली में, छोटे-छोटे समूहों में पंडित पुरुष।

कई लोग बाबा खड़क सिंह मार्ग के पास स्थित कॉफी होम में जाने लगे।

कनॉट प्लेस। जल्द ही यह जगह शहर से दूर एक छोटा सा मीटिंग स्थल बन गई।

घुटन भरे छोटे-छोटे स्थान जहाँ उन्हें अपना अधिकांश जीवन बिताना पड़ता था

अपने परिवारों के साथ। कॉफी सस्ती थी, और प्रवासी इसे खरीद सकते थे और दिन के कुछ घंटे वहाँ बिताते थे। यहाँ कॉफी होम में, वे मिले।

उनके दोस्त और रिश्तेदार। अक्सर, वहां कश्मीरियों का एक समूह दिखाई देता था।

एक बड़ी मेज के चारों ओर huddled होकर कॉफी पीते हुए कश्मीर पर चर्चा कर रहे थे।

और जीवनयापन से जुड़ी उनकी व्यक्तिगत समस्याओं पर चर्चा होती थी। ये बैठकें धीरे-धीरे एक सामाजिक और सामाजिक व्यवस्था का हिस्सा बन गईं।

यह दैनिक फीचर इतना लोकप्रिय था कि उनके कश्मीरी मुस्लिम मित्र भी इसे पसंद करते थे।
वे अपने पुराने पंडित मित्रों से मिलने के लिए यहाँ आते थे। आम तौर पर, यह स्थान उन्हें इसकी अनुमति देता था।
अपनी कुंठाओं को निकालने के लिए। यह एक ऐसी जगह थी जहाँ उन्हें सुकून मिलता था और वे अपना मार्गदर्शन कर सकते थे।
एक दूसरे के साथ, यह गरमागरम, गुस्से भरी बहसों का मंच नहीं है। अगर आप इसे देखते तो...
दूर से देखने पर आपको कश्मीरी कॉफी की याद आ जाएगी।
श्रीनगर के रीगल चौक स्थित वह घर, जहाँ सभी कलाकार, बुद्धिजीवी और
घाटी के राजनेता कॉफी पीने और बातचीत करने के लिए मिलते थे। कभी-कभी लोग लंबे अंतराल के बाद मिलते थे। कॉफ़ी होम
यह उनके लिए खोए हुए संपर्कों का पता लगाने का स्थान बन गया। प्रवास ने दोस्तों और रिश्तेदारों को अलग कर दिया था, और कॉफी होम
सभाओं ने कुछ लोगों को फिर से एकजुट होने में मदद की। कश्मीरी टेबल बन गई
घाटी के लोगों के लिए यह एक तरह की स्थायी विशेषता है।
इसी प्रकार, नई दिल्ली स्थित प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में एक समर्पित टेबल थी।
जहां शाम को कश्मीरी पंडितों का एक बड़ा समूह इकट्ठा होता था। अधिकतर
उनमें से कुछ श्रीनगर के लुब्ब कौल के बार में बिताई अपनी रातों को याद कर रहे थे।
कुछ ड्रिंक्स पीने के बाद, वे रात के अंधेरे में निकल जाते और वापस लौट आते।

उनके प्रवासी घोंसले। हर शाम कश्मीरी टेबल चहल-पहल से भरा रहता था।
तरह-तरह के पत्रकार और सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ता एक साथ बैठते थे
कश्मीर की विभिन्न समस्याओं पर चर्चा। घाटी से कई मित्र। भारतीय राज्य के साथ हुए विश्वासघात पर बहस करने के लिए हम साथ में बैठकर पेय पदार्थ का सेवन करेंगे।
कश्मीर घाटी। यह मेज हमेशा मेहमानों से भरी एक निरंतर पार्टी की तरह दिखती थी।
यह समस्या लगातार बनी रहती है और अभी भी बनी हुई है।
मैं ज्यादातर शामों को रिहर्सल करता हूँ, इसलिए प्रेस क्लब मेरे लिए उपयुक्त जगह नहीं है।
मैं अपनी रातें वहीं बिताता था। जब भी मौका मिलता, लोगों से मिलना हमेशा सुखद अनुभव होता था।
और उनका स्नेह प्राप्त करना, और अक्सर खूब टांग खींचना। एक दिन मुझे...
वहाँ किसी से मुलाकात हुई। इस बार 2005 की सर्दियों में, मेरी मुलाकात लियाकत नाम के एक युवक से हुई, जो उस समय अनंतनाग क्षेत्र का प्रमुख सरगना था।
उसके गाल गुलाबी और चमकदार थे और आँखें नीली और सुंदर थीं। जब मैं मेज पर बैठा, तो एक
एक वेटर पाँच गिलास रम लेकर ट्रे में आया और उन्हें रख दिया।
लियाकत के सामने। सिगरेट पीते हुए उसने एक गिलास उठाया।
उसने रम का एक गिलास लिया और उसे एक ही बार में गटक गया। कुछ मिनट बाद, उसने एक और गिलास गटक लिया।
उस युवक को इतनी तेजी से शराब पीते देख मैं दंग रह गया।
फिर किसी ने मुझे बताया कि वह इक्वान पार्टी के नेता थे, एक बहुत ही

अपने इलाके का ताकतवर आदमी। उन्होंने लियाकत को बताया कि मैं काम कर रहा था।
कश्मीरी भांड पाथेर लोक कलाकारों के साथ अकिंगम गांव। उन्होंने दिलचस्पी दिखाते हुए मुझसे कहा, 'अगर आपको कोई समस्या हो तो मुझे बता देना। मैं उसे हल कर दूंगा।'
इसे तुरंत बाहर निकाल दें।
मुझे उसके बारे में बहुत जिज्ञासा हुई और मैं उसके बारे में और अधिक जानना चाहता था, इसलिए मैंने उससे पूछा।
अगर वह सीमा पार होता, और उसे वहीं प्रशिक्षण मिला होता। उसने शुरू किया...
हंसते हुए उसने कहा, 'खैर, यह तो एक लंबी कहानी है।' मैंने फिर पूछा, 'वहाँ कैसा था?'
सीमा के दूसरी ओर?’ तब तक वह अपना तीसरा गिलास उठा चुका था।
रम। वह संतुष्ट लग रहा था और अपनी शाम का आनंद ले रहा था। उसने जल्दी से तीन ड्रिंक्स पी लीं।
इन सब बातों का असर हुआ और उसने अपनी झिझक छोड़ दी। मैं उसे लगातार परेशान करता रहा, उससे पूछता रहा।
वहाँ उसे किस तरह का प्रशिक्षण मिला था। अब वह अपने माहौल में पूरी तरह ढल चुका था और
उसने अपनी कहानी सुनाना शुरू कर दिया।
मैंने हथियारों का काफी प्रशिक्षण लिया क्योंकि मैं अच्छा था। मुझे इसके लिए भेजा गया था।
हिकमत्यार शिविर में आगे का प्रशिक्षण। मैंने सब कुछ देख लिया है, आप जानते हैं,’ उन्होंने कहा।
जब मैंने कश्मीर सीमा पार करके पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में प्रवेश किया, तब हम
मेरे गाँव के सात लड़के। मैंने नाइकी के जूते और हारा जींस पहनी हुई थी।

एक गर्म जैकेट। जैसे ही हम अपने शिविर में पहुँचे, हमें तुरंत

हमें अपनी जींस में न दिखने का आदेश दिया गया था, और एक गंदे दिखने वाले अफगान आतंकवादी

मुझे एक सलवार और कुर्ता दिया गया। मैंने सलवार को देखा, उसका निचला हिस्सा खुला हुआ था।

यह लगभग चौबीस इंच चौड़ा था और मेरे लिए बहुत ढीला था। मुझे यह पसंद नहीं आया।

मुझे ये पोशाक बिल्कुल भी पसंद नहीं आई। मुझे फैशनेबल कपड़े पहनना बहुत अच्छा लगता था। तो, अगली बात जो मैंने सोची वो ये थी कि...

मैंने बस अपनी सलवार के निचले हिस्से की चौड़ाई को चौदह इंच तक कम कर दिया।

अब यह काफी स्मार्ट लग रहा था। मैंने इसे अपने दोस्तों को दिखाया और हम कश्मीरी भाषा में मजाक कर रहे थे। अचानक किसी ने हम पर चिल्लाकर हमें आदेश दिया कि हम ऐसा न करें।

इस शिविर में कश्मीरी में बात करना। मैंने इस आदमी को देखा। फिर से, यह था

एक और बदहाल दिखने वाला अफगान। उसके दांतों से नसवार (तंबाकू) की बदबू आ रही थी।

लगभग उल्टी आ गई। हर समय केवल कठोर आदेशों का पालन करना पड़ता था।

जब भी हम कश्मीरी दोस्तों को ये गंदे दिखने वाले अफगानी लोग दिखाई देते थे

प्रशिक्षकों के साथ, हम एक-दूसरे को इशारे करके उपनाम सुझाते थे।

उन्होंने ही उनके लिए एक नया नाम गढ़ा था—‘नासवारी शलवारी’। यह सुनकर मुझे हंसी आ गई।

उन्होंने आगे कहा, ‘आप जानते हैं, कई धनी और खूबसूरत महिलाएं

सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में हमारे शिविरों में आते थे और हमें व्याख्यान देते थे।
वे हमारे कार्यों में हमारी सहायता करते हैं और अक्सर हमारी बहादुरी की सराहना करते हैं। कभी-कभी वे हमें आमंत्रित भी करते हैं।
हममें से कुछ लोग उनके घर अच्छे भोजन के लिए जाते थे, जहाँ वे हमें अपनापन महसूस कराते थे।
उनका व्यवहार और उनकी टिप्पणियाँ बेहद ही घटिया थीं। सचमुच। मेरा मानना था कि जिस कश्मीर में हम रहते थे वह बहुत पिछड़ा हुआ था, बिना किसी सुविधा के।
प्रगति या विकास। एक दिन, एक बहुत ही आकर्षक और उच्च पदस्थ महिला
उसने अपना फ्रिज दिखाते हुए कहा, “देखो, हम इसमें बहुत सी चीजें रखते हैं, और
आप देख सकते हैं कि ये बहुत ताज़ा रहते हैं।" उसने फ्रिज का दरवाजा खोला और
उसने मुझे अपनी सब्जियां दिखाईं और कहा, "मुझे पता है कि आप लोगों ने ऐसी सब्जियां नहीं देखी होंगी।"
अब, इंशाल्लाह, जब कश्मीर आज़ाद होगा, तो आप लोग भी
ये सब चीजें मेरे पास हैं।" मैं इस असंवेदनशीलता को बर्दाश्त नहीं कर सकता था।
और उन्होंने जवाब दिया, "नहीं, हमारे घरों में रेफ्रिजरेटर तो हैं, लेकिन हम
हम अपने जूते उनमें रखते हैं ताकि वे ताजे और ठंडे रहें।"
टेबल पर बैठे सभी लोग जोर से हंस पड़े।
लियाकत ने अपना चौथा घूंट पी लिया। मैंने उससे पूछा, 'तुम क्यों चले गए?'

आतंकवाद और आपने अपना विचार क्यों बदल दिया?’ उन्होंने जवाब नहीं दिया।
जैसे मेरा सवाल। उसने मुझे भेदक नज़र से देखा, अपनी सिगरेट से कुछ कश लिए।
सिगरेट पीते हुए वह कुछ क्षण चुप रहा, फिर बोला, 'एक दिन
आपको पता है, कैंप में सुबह की सभा होती थी, और लगभग छह लड़के उन्हें पूरी सभा के सामने खड़ा किया गया। इसकी घोषणा एक व्यक्ति द्वारा की गई।
अफगानी प्रशिक्षक ने बताया कि ये छह मुजाहिदीन सीमा पार करेंगे।
दिन भर काफिर भारतीय सेना से लड़ो। सबने उनकी लंबी उम्र के लिए प्रार्थना की और नमाज़ अदा की। इनमें से कुछ लड़के हमारे गाँव के दोस्त थे।
उन्हें विदाई दी गई और वे चले गए। लगभग तीन दिन बाद एक आपातकालीन सभा के लिए अचानक घोषणा। जब हम सभी
शिविर में उपस्थित लोगों ने घोषणा की कि हमारे भाई
तीन दिन पहले जिहाद के लिए निकले मुजाहिदों ने यह उपलब्धि हासिल कर ली थी।
शहादत। बेचैनी और सन्नाटा छा गया। फिर फातिहा पढ़ी गई।
उनके सम्मान के समक्ष, हमें तुरंत अपने सामान्य काम पर वापस जाने का आदेश दिया गया।
मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मैंने अपने दो दोस्तों को खो दिया है।
मैं अपने ही गाँव में था। मैंने उनके साथ सीमा पार की थी। मैं रास्ता भटक गया और चलने लगा।
चुपचाप रोते हुए, उनकी मृत्यु पर शोक मनाते हुए। मैंने उनके परिवारों के बारे में सोचा।

माता-पिता को यह भी पता नहीं था कि उनके बच्चे मर चुके हैं और चले गए हैं, जो
चाहे उन्हें दफनाया गया हो या उनके शव पड़े हों, उन्हें दफना दिया गया था या नहीं।
खुले आसमान के नीचे गिद्धों के खाने के लिए? मुझे एहसास हुआ कि हम कश्मीरी ऐसे ही हैं
उनके लिए बलि के बकरे। कोई भावना नहीं थी, नुकसान के लिए कोई पछतावा नहीं था।
हमारे लड़के। शिविर में सभी लोग अपने-अपने कामों पर लौट गए। कोई अंतिम संस्कार नहीं, कोई
अंतिम संस्कार।
इसने मेरी सोच और मेरे संकल्प को बदल दिया। मैंने उस दिन फैसला किया कि जब मैं
अगर मुझे सीमा पार करके वापस कश्मीर भेज दिया जाता, तो मैं यह सब छोड़ देता और
भारतीय सुरक्षा बलों के सामने आत्मसमर्पण कर दो। मैं पूरी तरह से निराश हो गया था।
उन्हें मानव जीवन का कोई मूल्य नहीं था। उनकी जगह मैं भी हो सकता था।
मैंने फैसला किया कि मुझे यह सब छोड़ना होगा। और मैंने वही किया।'
अब उसने अपना पाँचवाँ पेय उठाया और उसे जल्दी से पी लिया, फिर एक नया पेय निकाला।
सिगरेट जलाई और एक लंबा कश लिया। काफी देर की चुप्पी के बाद, एक शरारती आवाज़ आई।
उसके चेहरे पर एक मुस्कान आ गई। वह मुस्कान व्यंग्यात्मक लग रही थी। वह हंसने लगा। 'क्या है?'
अब?

उन्होंने जवाब दिया, 'तुम्हें पता है, कश्मीरी लड़के बहुत सुंदर होते हैं और

आकर्षक।’ फिर उन्होंने मेज के चारों ओर बैठे सभी लोगों की ओर देखा और कहा, ‘हम

उन्होंने कई महिलाओं और यौन संबंधों का भरपूर आनंद लिया। वे हमें चाहते थे। वे हममें से कुछ को अपने पास रखते थे।

कई दिनों तक हम उनके साथ रहे। हमें उनके साथ सेक्स करने में बहुत मज़ा आया।

व्यक्तिगत दुविधा

आज देश में हम जिस असहिष्णुता को देख रहे हैं... उसके बीज बोए गए थे।

कई दशक पहले जब हमारी अदूरदर्शी राजनीतिक दृष्टि ने हर तरह की

उन्होंने समझौता किया और उपद्रवियों को हर तरह की रियायतें दीं।

कश्मीर और देश के अन्य हिस्सों में गुपचुप तरीके से अशांति पनपने लगी।

सांप्रदायिकता और आतंकवाद का धर्म से कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन धर्म

इसका इस्तेमाल एक मुखौटे के रूप में किया जाता है और भारत के बारे में एक खतरनाक धारणा को बढ़ावा देने के लिए इसका दुरुपयोग किया जाता है।

मैंने अपनी व्यक्तिगत त्रासदी को अपने विश्वासों पर हावी नहीं होने दिया। मैंने जारी रखा।

मैं अपनी पेशेवर क्षमता और एक सांस्कृतिक प्रतिनिधि के रूप में हर संभव प्रयास कर रहा हूँ।

कार्यकर्ता। दरअसल, कश्मीर त्रासदी ने मुझे अपनी मान्यताओं और अपने

रचनात्मकता। मैं काम करता रहा, यात्रा करता रहा और विभिन्न हिस्सों में प्रदर्शन करता रहा।
भारत और विदेश में। सहमत का गठन एक बहुत बड़ा वरदान साबित हुआ। यहाँ
कम से कम, हमने अपनी आँखें बंद नहीं कीं। लगातार चुनौतियों का सामना करते हुए
SAHMAT में पढ़ाई करने और समसामयिक मुद्दों में इसकी निरंतर भागीदारी ने मेरी बहुत मदद की।
ठीक होने के साथ-साथ, मैं एक समन्वित दुनिया में अपने विश्वास के आधार पर अपनी वस्तुनिष्ठता को भी बनाए रखूं।
भारत भर में मेरी यात्राओं और तरह-तरह के लोगों से हुई मुलाकातों ने मेरे इस विश्वास को और पुष्ट किया।
भारतीय विविधता की शक्ति में मेरा विश्वास। रंगमंच में मेरी यात्रा, काम करना
कई स्थानीय भाषाओं ने मेरे लिए रंगमंच के नए आयाम खोल दिए। मैं इन वर्षों की यात्रा के दौरान मिले कई अनुभवों से विनम्रता का परिचय हुआ।
इन अनुभवों से मुझे बहुत सुकून और शांति का अनुभव हुआ। मैंने बनाना शुरू किया।
वृत्तचित्र और टेलीविजन कार्यक्रम जो मुझे सुदूर कोनों तक ले गए
भारत। इस दौरान मेरे कई अनुभवों ने मेरे जीवन को बदल दिया।
आम लोगों, विशेषकर सबसे गरीब लोगों, और उनकी समझ
उनके संघर्ष। उनकी मानवता उतनी ही महान, वीर और ऐतिहासिक थी जितनी किसी अन्य की।
विद्वान व्यक्ति।
जब मैं भारत में साक्षरता आंदोलन पर फिल्मों की एक श्रृंखला बना रहा था,

विशेष रूप से उन महिलाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया था जो नेताओं के रूप में उभरी थीं।

इस आंदोलन के दौरान, मैंने झारखंड में टुंडी के घने आदिवासी जंगलों की यात्रा की,

नक्सल प्रभावित इलाका। वहां मेरी मुलाकात शीला नाम की एक युवा आदिवासी महिला से हुई।

मणि टुडू, युवा और अभी तक अविवाहित, साक्षरता आंदोलन की नेता, शिक्षित और अपने आदिवासी गांवों में काम करने का अनुभव रखती थीं।

वह पढ़ाने के लिए प्रतिदिन कम से कम पचास किलोमीटर साइकिल से यात्रा करती थी और

अपने लोगों को शिक्षित करना। वह अपने पिता और माता के साथ एक आदिवासी झोपड़ी में रहती थी।

परिवार साल के आठ महीने अपने ही संसाधनों से अपना पेट भर सकता था।

उपज। बाकी महीनों में, वे या तो भूखे रहते थे या उन्हें दिन में एक बार ही भोजन मिलता था।

स्थानीय बनिया से उधार लेकर उन्होंने किसी तरह दिन गुजारा किया।

वह अपना गुजारा चलाती थी। साक्षरता के काम के लिए उसे बहुत कम वेतन मिलता था, जो उसके लिए अपर्याप्त था।

परिवार। चूंकि वह एक सुशिक्षित युवती थी, इसलिए यह मुश्किल था।

उसके लिए पति ढूंढना मुश्किल था क्योंकि उसके समुदाय के अधिकांश युवा पुरुषों की पहले से ही तलाश की जा चुकी थी।

उससे कहीं कम शिक्षा प्राप्त की थी। उसे कई सम्मान प्राप्त हुए थे और

उन्हें अपने काम के लिए पुरस्कार मिले, लेकिन कोई भी युवक उनसे शादी करने के योग्य नहीं लगा।

अपने शब्दों में, उन्होंने कहा, 'अब यह सारी शिक्षा और मान्यता एक
'मेरे लिए अभिशाप।' वह एक सुंदर युवती थी, लेकिन साक्षरता के प्रति उसकी प्रतिबद्धता
अपनी गरीबी के बावजूद, समुदाय के लोगों के बीच काम करना उनके लिए एक चुनौती थी।
पूरा।
यह इलाका नक्सल प्रभावित होने की आशंका वाला होने के कारण, वह अपने जीवन को होने वाले खतरों से अवगत थी।
उसके माता-पिता को हमेशा डर रहता था कि वह युद्ध के बीच फंस जाएगी।
नक्सली और सुरक्षाकर्मी। वह आरएसएस की गुप्त गतिविधियों को समझती थी।
उनकी गतिविधियों और प्रभाव के बारे में जानते थे और इस क्षेत्र में उनकी संलिप्तता के बारे में भी जानते थे, लेकिन
वह शिक्षा और ज्ञान की शक्ति में भी विश्वास करती थी और ऐसा नहीं करती थी।
उसे खुद को संभावित खतरों के बारे में चिंता है।
इसी प्रकार, जलते हुए कोयले के खेतों के बीच तित्री देवी से मिलना
झारखंड राज्य में धनबाद के पास स्थित झरिया भी एक और आंखें खोलने वाला अनुभव था।
झरिया एक विशाल क्षेत्र है, जिसका व्यास लगभग पचास किलोमीटर है, जहाँ कोयला पाया जाता है।
यह आग सालों से जमीन के नीचे जल रही है। यह इलाका वीरान लग रहा है।
परिदृश्य... चेर्नोबिल परमाणु आपदा स्थल की छवियों को याद दिलाता है।

1980 के दशक में रूस। फर्क सिर्फ इतना था कि यहाँ हजारों इंसान चेर्नोबिल में लोग अपने परिवारों के साथ एक ही भूमि पर रहते थे, जबकि चेर्नोबिल में एक
100 वर्ग किलोमीटर के दायरे में आने वाले क्षेत्र को खाली करा लिया गया था।
आग और गैस के धुएं की इस भूमि पर तित्री देवी रहती हैं, जो एक मजबूत और
एक समर्पित महिला जो कोयला लोडर के रूप में काम करती थी, जिसका मतलब था कोयला उठाना और...
वह बड़े-बड़े टोकरियों में काला कोयला भरकर ट्रकों पर लाद रही थी।
मैं झरिया में दो मोर्चों पर शामिल रहा हूँ: पढ़ना और लिखना सीखना।
वयस्क साक्षरता कक्षाओं में और अधिकारियों से अनुबंध प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना
कोयले से भरे ट्रकों में कोयला लोड करने के लिए महिलाओं का एक समूह। इसका मतलब था एक
शिक्षा और स्थानीय कोयला माफिया, रंगदारों से लड़ना,
उस इलाके पर उसका नियंत्रण था। उसने पढ़ना-लिखना सीख लिया था और वह समझती थी कि महिलाओं को कितना वेतन दिया जाना चाहिए। वह कहती थी, 'बाबा,
अब और टीपा नहीं। टीपा का तात्पर्य कागज पर बने अंगूठे के निशान से था।
वे अपनी मजदूरी पाने के लिए कुछ भी देने को तैयार रहते। 'अब मैं हस्ताक्षर करने से पहले पढ़ सकती हूँ,' उसने कहा।
उन्होंने कहा, ‘पिछले दिन मैंने अपना नाम लिखना सीखा। मैंने इसके खिलाफ लड़ने का फैसला किया।’

पुरानी रंगदारी व्यवस्था। हम महिलाएं अपना हिस्सा पाने के लिए अंत तक लड़ेंगी।

अब अधिकार, कोई बिचौलिए नहीं।

अपने महिला समूह की बैठक में अपने भाषण में उन्होंने कहा, 'मरना होगा और

मरना होगा [या तो हमें मरना होगा या फिर हमें वार करना होगा]। तभी हम

हम स्वतंत्र होंगे और अपने भाग्य के स्वामी बनेंगे।’ मैंने उससे पूछा, ‘यह कैसे संभव है?’

आप इस गैस से भरी और बदबूदार ज़मीन पर रहते हैं?’ वह हंस पड़ी और बोली, ‘बाबू,

main yahan badi hui, yahin beti ki shaadi karaungi aur yahin maroongi

[बाबू, मेरा जन्म यहीं हुआ है, मेरी बेटी की शादी भी यहीं होगी और मेरी मृत्यु भी यहीं होगी]

मैं उनकी और उनके जैसी कई महिलाओं की प्रशंसा करती हूँ जो साक्षरता के माध्यम से पली-बढ़ी हैं।

आंदोलन। मैंने इन महिलाओं को 'ब्लैक डायमंड वुमन' कहना शुरू कर दिया।

_____

7. □□□□□ □□□□□□□, □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□, □□□□□□□, 2005□

12

उत्तर-पूर्व में काम करना

इम्फाल हवाई अड्डे से बाहर निकलते ही मैं वहां मौजूद लोगों की भारी संख्या को देखकर दंग रह गया।
बख्तरबंद वाहनों के कई समूह थे, जिनके ऊपर मशीनगनें लगी हुई थीं।
ड्यूटी पर तैनात सैनिक। हवाई अड्डा किसी सैन्य छावनी शिविर जैसा लग रहा था, और मैं
उन्होंने टिप्पणी की, 'यह कश्मीर जैसा दिखता है।' मैं एक बड़े थिएटर का निर्देशन करने आया था।
स्थानीय प्रतिभाओं के लिए पैंतालीस दिनों की कार्यशाला। मणिपुर में कई वर्षों से अशांति फैली हुई थी। हिंसा इसका एक अभिन्न अंग थी।
उनकी दैनिक दिनचर्या। राजनीतिक गतिविधियाँ ज़ोरों पर थीं, लेकिन इसके साथ-साथ,
वहां भूमिगत आतंकवादी समूह भी मौजूद थे।
जैसे ही हमने काम शुरू किया, स्थानीय वरिष्ठ थिएटर कलाकारों ने हमें चेतावनी दी कि हम ऐसा न करें।
इम्फाल शहर से थोड़ा बाहर स्थित उस इलाके में काम करना या रहना।

पहले कुछ दिनों तक, मैंने जिसे भी अपने थिएटर वर्कशॉप के बारे में बताया,

इम्फाल के उस इलाके में लोग कहते थे, 'तुरंत वहां से निकल जाओ।'

यह इलाका सुरक्षित नहीं है।’ हममें से कोई भी यह नहीं समझ पा रहा था कि वे इतने ज़ोर क्यों दे रहे थे।

इस बारे में मुझे तब तक पता नहीं चला, जब तक कि एक रात मैं तेज आवाज़ों और चीख-पुकार से जाग नहीं गया।

मुख्य सड़क। हमारे लड़के, जो ऊपरी मंजिल पर सो रहे थे, आ गए थे।

बाहर खड़े लोगों पर चिल्लाते और गाली देते हुए, वे नीचे झुके हुए थे, गुस्से में थे और गाली-गलौज कर रहे थे। सौभाग्य से, हमारे

इमारत में ताला लगा हुआ था इसलिए हमारे छात्र बाहर नहीं जा सके। उन्होंने मांग की कि

हमने गेट खोल दिया, जिसकी मैंने अनुमति नहीं दी थी। किसी ने मुझे यह नहीं बताया कि क्या हुआ था।

ऐसा हो रहा था। जब मैंने अपने दो छात्रों को हथियार लहराते देखा तो मैं डर गया।

खुकरी, मानो जान लेने को तैयार हों। घबराकर मैंने उन्हें शांत करने की कोशिश की।

डेढ़ घंटे बाद उन्हें उनके छात्रावासों में वापस लाने में सफलता मिली।

मैंने अपने स्थानीय समन्वयकों में से एक को फोन किया और उनसे पूछा कि क्या हुआ था।

ऐसा हुआ। उन्होंने कहा, 'आप जिस इलाके में हैं वह नागा बहुल इलाका है, लेकिन सभी

आपकी कार्यशाला में काम करने वाले लड़के मैतेई जनजाति के हैं।
चूंकि आपकी कार्यशाला में एक भी नाग छात्र नहीं है, इसलिए नाग बहुत क्रोधित हैं और आप पर हमला करना चाहते हैं।

कार्यशाला को बंद कर दो।

अब मुझे समझ में आया कि नागाओं और मैतेईयों के बीच संबंध कैसे थे।
यह अच्छा नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे भारत के कुछ क्षेत्रों में हिंदू-मुस्लिम तनाव है, और
कुछ भी हो सकता है। दोनों समुदायों के बीच तनाव।
यह नागालैंड और मणिपुर के बीच एक बड़े राजनीतिक मुद्दे से उत्पन्न हुआ था।
कार्यशाला क्षेत्र के बाहर जिन युवकों से मैं मिली थी, वे प्यारे, विनम्र और
वे नरम स्वभाव के थे, लेकिन असल में उन्होंने ही टकराव को भड़काया था।
वे जैसा दिख रहे थे, उसका पूरी तरह उलट हो गया, लेकिन हमारे लड़के
कार्यशाला क्षेत्र ने भी वैसी ही प्रतिक्रिया दी थी। यह वाकई परेशान करने वाला था, अब मुझे समझ में आया।
मेरे दोस्तों की चेतावनियों के बावजूद, इम्फाल में अच्छे स्थानों की कमी के कारण, हम
हम अपनी कार्यशाला का स्थान नहीं बदल सके। इसलिए, हमने वहीं काम जारी रखा।
धीरे-धीरे हालात सुधरने लगे और हमने प्रगति करना शुरू कर दिया। हालांकि, मेरी कार्यशाला में नागा छात्रों की अनुपस्थिति ने मुझे परेशान किया।
मैंने सोचा, 'स्थानीय संगीत नाटक अकादमी ने उन्हें क्यों नजरअंदाज किया?'
एक दिन नाश्ते के दौरान मेरी मुलाकात एक युवक से हुई जिसने मुझसे पूछा...
मेरे काम का कारण और उद्देश्य। मैंने वैसे ही जवाब दिया जैसे मैं किसी और को देता।

उन्होंने समझाया कि यह क्या था। उन्होंने मुझसे पूछा कि वहाँ कोई नागा छात्र क्यों नहीं थे।
मेरा शिविर। मैंने उसे बेबसी से समझाया, 'उस हिस्से का ध्यान रखना होगा।'
स्थानीय लोगों द्वारा। मेरे लिए, सभी का स्वागत है। मैं भेदभाव नहीं कर सकता।
नागा और मैतेई के लड़कों। तुम सब मेरे लिए एक समान हो। उन्होंने कहा, 'नहीं, आपकी कार्यशाला में एक भी नागा छात्र नहीं है।'
मैंने कहा, 'मैं केवल माफी मांग सकता हूं, लेकिन मुझे सभी के साथ काम करना अच्छा लगेगा और क्यों?'
क्या मुझे भेद करना चाहिए? यह हमारे लिए अच्छा नहीं है। टकराव जो हुआ वो नहीं होना चाहिए था।
फिर मैंने उनसे पूछा, 'क्या आप नागा हैं?'
उन्होंने उत्तर दिया, 'हां।'
मैंने उनसे हाथ मिलाया और कहा, 'मैं आपका गुस्सा समझता हूँ, लेकिन मुझ पर भरोसा कीजिए, मैं...'
मुझे इससे कोई लेना-देना नहीं है। वे सब मेरे दोस्त हैं।'
उसने मुझसे हाथ मिलाया, अलविदा कहा और चला गया। मैं सोचने लगा कि इसका क्या मतलब है और
अब क्या होगा, लेकिन बाद में कुछ भी अप्रिय नहीं हुआ।
उस मुलाकात के बाद, मैंने अनुमान लगाया कि यह युवक किसी संगठन का नेता रहा होगा।
नागा लड़के मुझसे मिलना चाहते थे। किसी भी कारण से, चीजें बदल गईं।
उसके बाद स्थिति में सुधार हुआ।

एक दिन, हमारे युवा लड़के-लड़कियाँ खेल पर ध्यान नहीं दे रहे थे।

काम। चिढ़कर मैंने कहा, 'मैं तुमसे तंग आ गया हूँ। जो चाहो करो। मैं...'

'जा रही हूँ।' और मैं चली गई। अगले दिन, जब मैं सुबह अपने छोटे से कमरे में आई

कार्यालय में, एक छात्रा, जो बहुत ही होशियार और प्यारी थी, ने मुझे आने का आदेश दिया।

रिहर्सल स्थल पर नीचे। मैंने उनसे आगे बढ़ने को कहा और यह भी कहा कि मैं थोड़ी देर में आ जाऊँगा।

थोड़ी देर बाद, लेकिन वह अपनी बात पर अड़ा रहा और उसने जोर देकर कहा कि मैं उसी समय उसके साथ चलूँ।

हताश होकर मैंने उसे वापस चिल्लाकर कहा, 'मैं थोड़ी देर बाद आऊँगी। मुझे अकेला छोड़ दो।'

अकेले।’ जाते हुए उसने कहा, ‘मैं इंतज़ार कर रहा हूँ।’ कुछ मिनट बाद, जब मैं आया

रिहर्सल हॉल तक जाते समय यह लड़का मेरे साथ आया।

जब मैंने हॉल का दरवाजा खोला, तो अंदर का नजारा दिन के दृश्य से बिलकुल अलग था।

इससे पहले, कार्यशाला के सभी पचास छात्र-छात्राएं, लड़के और लड़कियां, एक बड़े घेरे में बैठे थे।

वे अपनी आँखें बंद करके ध्यान कर रहे थे। वृत्त के केंद्र में एक प्रकार का...

वेदी पर जलती हुई धूप, फूल, फल और मोमबत्तियाँ, और शास्त्र का पाठ।

इस वेदी के केंद्र में खेलो। कोई नहीं बोला। हॉल का पूरा स्थान सन्नाटे में था।

ऐसा लग रहा था मानो किसी अज्ञात ऊर्जा से परिपूर्ण हो। सन्नाटा छाया हुआ था।

अत्यधिक उत्साहजनक, और मैं भी उस घेरे में शामिल हो गया। पाँच मिनट के शुद्ध आनंद के बाद

सन्नाटा छा गया, एक-एक करके, प्रत्येक प्रतिभागी चुपचाप उठा और वेदी की ओर चल पड़ा।

हाथ जोड़कर, वेदी की ज्वालाओं के सामने साष्टांग प्रणाम करके, और फिर चुपचाप

वह घेरे में अपनी जगह पर वापस गया, बैठ गया और अपना काम जारी रखा।

ध्यान। सभी प्रतिभागियों द्वारा वेदी पर प्रणाम करने के बाद, उन्होंने खोला।

उन्होंने अपनी निगाहें मेरी ओर घुमाईं और एक भी शब्द नहीं बोला।

इस समय तक मेरे भीतर कुछ घटित हो चुका था। मैं भी झुककर खड़ा हो गया।

वे वेदी के सामने खड़े होकर चुपचाप बैठ गए। फिर भी, किसी ने कुछ नहीं कहा।

वह मुझे लगातार देखता रहा। मैं इस मौन अनुष्ठान से भावुक और प्रभावित हुआ। मौन के इस संदेश ने मुझे विनम्र बना दिया और मेरी आँखों में आंसू आ गए। मैं कुछ कह नहीं सका।

कोई भी शब्द ढूंढें।

अंत में, मैंने कहा, 'क्या हम अपना काम शुरू करें?' उन सभी ने धीरे से जवाब दिया,

लगभग फुसफुसाते हुए, 'हाँ।' फिर एक लड़की उठी और फल देते हुए बोली।

सभी को प्रसाद। उस दिन मुझे बहुत राहत और शांति का अनुभव हुआ।

मैंने इन सब बातों को समझने की कोशिश की लेकिन कोई तर्कसंगत निष्कर्ष नहीं निकाल पाया।

जब तक उस लड़के ने, जिसने ज़िद की थी, मुझे हॉल में आने और यह बात बताने तक मैंने स्पष्टीकरण नहीं दिया।

बाद में मुझे बताया गया, ‘हम अपनी स्क्रिप्ट का सम्मान नहीं कर रहे थे। इसीलिए हालात बिगड़े।’

गड़बड़ हो रही है।

कई ऐसी घटनाएं हैं जिनसे मुझे मानव स्वभाव को समझने में मदद मिली है।

अपनी तमाम जटिलताओं के साथ। कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं भाग्यशाली हूं कि मैंने इन सब से गुज़रा।

मुझे जो अनुभव हुए, उन्होंने आध्यात्मिक आत्मा में मेरे गहरे विश्वास को आकार दिया है।

मानवीय क्षमता, जो किसी की जाति या नस्ल तक सीमित नहीं है, बल्कि जो

इससे व्यक्ति को सीमाओं और बंधनों से परे देखने की प्रेरणा मिली।

13

वापस लौटने की इच्छा पूरी हुई

1990 और 1999 के बीच, कश्मीर अखबारों में छाया रहा और

टेलीविजन। यह एहसास कि मैंने अपना कश्मीर, अपना शहर, अपना स्थायी ठिकाना खो दिया है।

यह पता, हमेशा के लिए, मुझे उदास कर देता था। यह तथ्य कि मैं कभी जा नहीं पाऊँगी।

वह डर मुझे सताता रहता था। हर शाम, कश्मीर चुपचाप मेरे भीतर प्रकट हो जाता था।

और मुझे चुपचाप छोड़ दो। हत्याओं, हिंसा और भयावहता की कहानियाँ...

हर रोज आने वाले पत्र मुझे दुखी कर देते थे। मेरे पिता जम्मू से जो पत्र भेजते थे, वे भी मुझे दुखी कर देते थे।

उसने अपने अकेलेपन और हानि की भावना को प्रकट किया। मेरे भाई ने इसे इस तरह व्यक्त किया:

उस दिन, 'इस आदमी ने अपना घर, अपना मकान, अपना स्वतंत्र जीवन, अपना सब कुछ खो दिया है।'

'उसके दोस्त, उसका काम और उसकी दुनिया, बस पांच मिनट में।' उसके पास कभी कोई दोस्त नहीं थे।

गंभीर बीमारियों से ग्रस्त होने के बावजूद वे सुबह पांच किलोमीटर की सैर पर जाया करते थे।

श्रीनगर में रहने वाले, लेकिन अब जम्मू में, उनका रक्तचाप उनके स्वास्थ्य पर कहर बरपा रहा था।

मैं उसे दिल्ली ले आया, यह सोचकर कि मैं उसकी देखभाल करूँगा और उसे ठीक कर दूँगा।

उसे आराम करने दो और उसे अच्छा समय देने की कोशिश करो।

पहले ही दिन डॉक्टर ने उसकी जांच की और बताया कि उसका रक्तचाप सामान्य से अधिक है।

उसका ब्लड प्रेशर बहुत ज्यादा था और उसे शांत करने के लिए इंजेक्शन लगवाना पड़ा।

पिता की सेहत में सुधार नहीं हुआ। उनकी हालत तेजी से बिगड़ी और छह महीने के भीतर ही उनकी मृत्यु हो गई।

उन्हें खोए हुए कुछ महीने बीत चुके हैं। दिल्ली में उनके अंतिम संस्कार में कुछ रिश्तेदार ही मौजूद थे।

अब वे खुद शरणार्थी बन चुके थे। मेरे कुछ दोस्त भी आ गए, भले ही वे

वह उसे कभी नहीं जानता था। कश्मीर जाने के बाद वह कभी वापस नहीं जा सकता था।

राज्य से बाहर पलायन कर गए, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से, अपने अंत तक उन्हें दृढ़ विश्वास था।

कश्मीरी लोगों के लिए धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत, जिनके साथ उनका संबंध था।

उन्होंने राष्ट्रीय स्तर के एक युवा राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में अपने शुरुआती दिनों से ही काम किया।

सम्मेलन। उन्होंने सामंती व्यवस्था के विरुद्ध जन संघर्षों में भाग लिया था।

कश्मीर के महाराजा का शासन। युवावस्था में उन्हें भी कई उतार-चढ़ाव देखने को मिले थे।

कश्मीर छोड़ो आंदोलन के दौरान महाराजा के सुरक्षा गार्डों द्वारा लाठीचार्ज किया गया और पाकिस्तान द्वारा कबाली हमले के दौरान वह बहुत सक्रिय थे।

1947.

पार्टी छोड़ने के कई वर्षों बाद, मैंने उनसे पूछा, 'आप ऐसा क्यों नहीं कर रहे हैं?'

अपनी पार्टी की उन बैठकों में जाना जिनमें आप वर्षों से भाग लेते आए हैं

नियमित रूप से?’ उनका जवाब लंबे विराम के बाद आया। उन्होंने कहा, ‘अब पार्टी ने

इस पर अभद्र और असभ्य तत्वों का कब्जा हो गया है, जिन्हें इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है।

पार्टी का संविधान, उसके संघर्षों और बलिदानों का इतिहास।' जब वह

मैंने सोचा था कि इस दुनिया को छोड़ने के बाद कश्मीर से मेरा रिश्ता खत्म हो गया है और मैं

मैं कभी वापस नहीं जाऊंगी। मैं किस चीज़ के पास वापस जाऊंगी? मैंने उनके कई पत्र दोबारा पढ़े, जो मैंने

वे अब भी मेरे साथ हैं। वे एक ऐसे व्यक्ति की त्रासदी को उजागर करते हैं जो किसी को नहीं जानता था।

कश्मीर के अलावा इस ग्रह पर कोई और जगह, और जिसने महसूस किया कि उसका जीवन

जब उसे इसे छोड़ना पड़ा तो यह उससे छीन लिया गया। उसके लिए, ऐसा प्रतीत हुआ

जीने का कोई मकसद नहीं। दरअसल, एक दिन उसने मुझसे कहा, 'जानते हो, मैं खो गया हूँ।'

उसके बाद उन्होंने कुछ नहीं बोला।

मेरे पिता की मृत्यु के बाद, कश्मीर मेरे जीवन में कभी आता है कभी जाता है।

चेतना। अक्सर, मैं उस मछली की तरह पीड़ा सहता था जो किनारे पर बहकर आ गई हो।

और समुद्र तट पर छटपटाते हुए। यह उस तरह का कष्ट था जो पहले होता था।

वे मुझसे नियमित रूप से मिलने आते थे, लेकिन मैंने यह बात कभी किसी को नहीं बताई। कभी-कभी ऐसा होता था

जैसे किसी घायल घाटी की आत्मा से पुकार आ रही हो, जो मुझे झकझोर देती है।

बेचैनी और दर्द से तड़प।

वापसी करें या न करें

1990 में जब मेरा पूरा परिवार कश्मीर छोड़कर चला गया और फिर कभी वापस नहीं लौटा, तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरा

जिस गृह राज्य में मेरा जन्म हुआ और मेरा पालन-पोषण हुआ, उससे मेरा रिश्ता खत्म हो गया था।

एक जाने-माने सांस्कृतिक कार्यकर्ता और कई गतिविधियों में शामिल रहे व्यक्ति होने के नाते

सांस्कृतिक विविधता या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा में चलाए जाने वाले अभियान और इसी तरह

एक सवाल अक्सर मेरे मन में घूमता रहता था—मैं कश्मीर में क्यों नहीं था?

जब वह दर्द और पीड़ा में हो? मैं वहां से अपनी अनुपस्थिति का कारण नहीं बता सकता।

लेकिन यह सवाल मुझे हर दिन परेशान करता था।

मुझे अक्सर किसी न किसी लोक नाट्य कलाकार की खबर सुनने को मिलती थी।

किसी की हत्या हो रही है। यह सोचकर मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मीडिया में किसी ने भी इस बारे में कुछ नहीं कहा।
घाटी की बुनियादी सांस्कृतिक संरचना पर हुए हमलों और उनसे संबंधित घटनाओं पर रिपोर्ट दी गई।
वर्षों से सांस्कृतिक क्षेत्र पर धार्मिक फरमानों का कब्जा रहा है और
उग्रवादी संगठन। दस साल से अधिक समय से कोई सांस्कृतिक प्रदर्शन नहीं।
कश्मीर में लोकगीत मंडलियाँ और लोक रंगमंच जैसी घटनाएँ घटित हुई थीं।
भंड पाथेर के कलाकारों को बताया गया था कि नाटक और प्रदर्शन करना
लोकगीत गाना इस्लाम विरोधी था और इसलिए प्रतिबंधित था। संगीत वाद्ययंत्र
दिन दहाड़े और सार्वजनिक रूप से तोड़फोड़ की गई और कलाकारों की पिटाई की गई।
प्रसिद्ध नाटककार और विजेता मुहम्मद सुभान भगत
बंदूकधारी उग्रवादियों ने संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार को चुनौती दी।
अपने ही घर में। उसे गोली मारने ही वाले थे कि उसके साथी भांडों ने उससे गुहार लगाई।
उसने अपनी जान बचाने के लिए काफी संघर्ष किया और वह बच गया, लेकिन उसे अपने इस प्रयास के लिए भारी जुर्माना भरना पड़ा। कला। उन्हें घर में नजरबंद कर दिया गया और चेतावनी दी गई कि अगर वह बाहर आए तो
अगर वह घर में होता तो उसे तुरंत गोली मार दी जाती।
कई प्रख्यात कवियों को बंदूक की नोक पर भारी रकम चुकाने के लिए मजबूर किया गया।

आतंकी समूहों को उनके उद्देश्य में योगदान के हिस्से के रूप में। कुछ लोक कलाकार।

ग्रामीण इलाकों में रहने वालों ने मुझे बताया कि उन्हें मजबूरन वाहक बनना पड़ा।

उन्हें गोला-बारूद के थैले दिए जाते थे, और यदि वे इनकार करते थे, तो उन्हें गंभीर परिणाम भुगतने पड़ते थे।

कई शिक्षाविद जो आतंकी समूह की राजनीति में विश्वास नहीं करते थे या

जिनका दृष्टिकोण उनसे भिन्न था, उन्हें पत्रों पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया गया।

माफी। कश्मीर घाटी की समृद्ध, प्रगतिशील संस्कृति मिटा दी गई।

कश्मीर की सदियों पुरानी मिश्रित संस्कृति को खामोश कर दिया गया। सब कुछ सुनकर

इन कहानियों और घटनाओं के लिए, मैं एक ऐसे अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था जो मुझे ऐसा करने की अनुमति दे।

कश्मीर के धधकते क्षेत्र में प्रवेश करके यह देखने का प्रयास करता हूँ कि क्या मैं कुछ हद तक आग बुझाने में मदद कर सकता हूँ।

मैंने अपने छोटे से तरीके से आग की लपटें खड़ी कीं। इसके लिए मुझे कई साल इंतजार करना पड़ा।

*

एक दिन संयोगवश मेरी मुलाकात सिद्धार्थ काक से हुई, जो एक कश्मीरी थे और वहीं रहते थे।

उन्होंने अपना अधिकांश जीवन घाटी से बाहर बिताया। वे चाहते थे कि मैं दूरदर्शन के एक सांस्कृतिक कार्यक्रम 'सुरभि' के निर्देशकों में से एक के रूप में उनकी टीम में शामिल हो जाऊं।

इस श्रृंखला ने अपनी सशक्त सामग्री और विविधतापूर्ण दृश्यों के कारण इतिहास रच दिया।
भारत की संस्कृतियों पर मैंने चार निदेशकों की एक टीम के साथ काम किया, जिन्हें इस कार्य का प्रभार सौंपा गया था।
उत्तर भारत।
यह परियोजना मेरे लिए ईश्वर प्रदत्त अवसर थी। उत्तर भारत की जिम्मेदारी मेरे कंधों पर थी।
मुझे देश के कुछ सबसे अनजान स्थानों की यात्रा करने का अवसर मिला, जिससे मुझे यह मौका मिला।
मुझे भारत का सर्वोत्तम अनुभव करने का अवसर मिला। कहानियाँ रिकॉर्ड करने में मैं काफी लालची हो गया था।
उन जगहों से जहां आम तौर पर लोग शायद ही कभी जाते थे या जिनके बारे में उन्हें पता भी नहीं था।
हिमालय की ऊंचाइयों से लेकर सुदूर और गहरे इलाकों तक की फिल्माई गई कहानियाँ
छत्तीसगढ़ के जंगलों में। इस कार्यक्रम ने मेरे जीवन और मेरी सोच को समृद्ध किया।
हमारे देश की जटिल और पेचीदा सांस्कृतिक विविधता का ज्ञान। सुरभि ने शहरी लोगों के ड्राइंग रूम में जिस अज्ञात भारत को पेश किया, वह वही था।
भारतीय जनता के साथ-साथ इसके ग्रामीण क्षेत्रों तक भी। प्राप्त प्रतिक्रिया की मात्रा...
सुरभि के कार्यालय में पहुंचना अद्भुत अनुभव था—केवल प्रशंसा पत्र ही नहीं मिले।
लेकिन भारत के दूरदराज के हिस्सों से कला और शिल्प के वास्तविक नमूने। सुरभि
देश की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करके एकीकृत भारत को प्रस्तुत करना।

मैं हिमालय के ऊंचे इलाकों में स्थित चांगथांग क्षेत्र से कहानियां लेकर आया हूं।
लद्दाख, जो 17,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है, और महापाषाणकालीन संरचनाओं से
बस्तर के आदिवासी जंगलों में खुदाई स्थल। मैं पहला व्यक्ति था जिसने
मध्य प्रदेश के भीमभेटका की गुफाओं में स्थित प्रागैतिहासिक शैल चित्रों की तस्वीरें लें।
प्रदेश।
इस परियोजना ने मुझे दो साल के अंतराल के बाद जून 1992 में कश्मीर में प्रवेश करने का अवसर भी दिया।
कई वर्षों का समय, लेकिन केवल चौबीस घंटों के लिए। यह कठिन समय था।
उग्रवाद के दिनों में। मुझे मुंबई से सिद्धार्थ का फोन आया, उसने बताया कि
मैंने जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल गिरीश सक्सेना से बात की और वे चाहते थे कि हम
श्रीनगर। मैं उसके साथ चलूंगा। अगले दिन सिद्धार्थ अपने साथ आ गया।
मेरी पत्नी गीता, जो श्रीनगर जाने को लेकर नाखुश थी, क्योंकि... घाटी में स्थिति। इस दौरान, कुछ विदेशी पर्यटक आए थे।
उनका अपहरण कर लिया गया था और उनके बारे में कुछ भी पता नहीं था। और एक पोलिश पर्यटक के साथ
सिर कलम कर दिया गया था। यह वह दौर था जब आतंकवाद का बोलबाला था। गीता ने हमें श्रीनगर जाने से रोकने की कोशिश की। हालाँकि, सिद्धार्थ
मैंने शांत और प्रभावशाली तरीके से बात की और आखिरकार किसी तरह उसे हमारी यात्रा के लिए मना लिया।

अगली सुबह हम दोनों ने श्रीनगर के लिए उड़ान भरी। हमें आश्चर्य हुआ कि

राज्यपाल का झंडा लगी गाड़ी में सवार एक सेना अधिकारी ने हमारा स्वागत किया।

मैंने जिज्ञासावश चारों ओर देखा और मुझे मशीन गन से लैस दो सैन्य जीपें दिखाई दीं।

उन पर बंदूकें लगी हुई थीं, जो हमारी सुरक्षा का एक हिस्सा प्रतीत होती थीं।

राज्यपाल के राजकीय अतिथि। हम एक जीप में हवाई अड्डे से निकले।

एक हमारे आगे और दूसरा हमारे पीछे। इस व्यवस्था से सिद्धार्थ डर गया।

उसके जीवन का। उसका चेहरा तनावग्रस्त था। और मैं परेशान थी क्योंकि व्यवस्था

इससे हम निशाने पर आ गए। जब मैंने सिद्धार्थ से अपनी नाराजगी व्यक्त की,

वह समझ गया था और इस बारे में चिंतित भी लग रहा था। पूरे रास्ते भर,

सड़कें सुनसान थीं और दुकानें बंद थीं। वहां सिर्फ सुरक्षाकर्मी मौजूद थे।

सड़क के किनारे-किनारे सुरक्षाकर्मी तैनात थे। कुछ सुरक्षा इकाइयां शहर की गलियों में गश्त कर रही थीं।

अचानक एक छोटे से कमरे से दूल्हे को निकलते देखना एक अवास्तविक दृश्य था।

लेन, हरे रंग के सूट और पीले रंग की पगड़ी पहने हुए, गले में फूलों की माला लिए हुए।

गले में करेंसी नोट लटकाए, सिर्फ दो आदमियों के साथ चलते हुए, शायद कहीं जा रहे थे।

अपनी शादी की रस्म के लिए। आम तौर पर, वह घोड़े पर सवार होकर जाता।

रिश्तेदारों और दोस्तों का एक लंबा जुलूस, जिसमें महिलाएं वानवुन गा रही थीं।
विवाह गीत।
हम सरकारी गेस्ट हाउस पहुँच गए जहाँ हमें ठहरना था।
राज्यपाल के साथ बैठक दोपहर 3 बजे निर्धारित थी, इसलिए वहाँ
उस बैठक से पहले का समय था। मैं गेस्टहाउस के लॉन में बाहर आया।
मेरे सामने अमर सिंह क्लब था। मुझे अपने शुरुआती दिन याद हैं जब मैं
मैंने इस क्लब के लॉन पर क्रिकेट खेला। मेरा घर यहाँ से सिर्फ पंद्रह मिनट की दूरी पर था।
मैं यहाँ से पैदल जा सकता था, लेकिन मौजूदा हालात के कारण मैं यहाँ से नहीं जा सका।
गेस्ट हाउस। इसके बजाय, मैंने कुछ गुलाब की झाड़ियों की देखभाल कर रहे माली से बात की।
उसने उसकी ओर देखा और कश्मीरी में उससे बात की। पहले तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ।
मुझे पता चला कि मैं कश्मीरी हूँ। मैंने उनसे पूछा कि वहाँ क्या स्थिति है, और वे असमंजस में थे।
शब्दों की कमी महसूस करते-करते आखिरकार उन्होंने कहा, 'मैं क्या कहूँ, इन खूबसूरत गुलाबों को देखो। ये देखने में भव्य लगते हैं, लेकिन इनकी सुंदरता की सराहना करने वाले लोग कहाँ हैं?'
कहानी यहीं खत्म होती है।’ वह काम पर वापस चला गया।
दिल्ली से निकलने से पहले मैंने सिद्धार्थ से दो वीडियोटेप अपने साथ ले जाने को कहा था।
उन्हें यह उम्मीद थी कि हम श्रीनगर में सुरभि के लिए एक कहानी की शूटिंग कर पाएंगे।
राजभवन के खूबसूरत लॉन में राज्यपाल हमारा इंतजार कर रहे थे।

प्रसिद्ध डल झील के नज़ारे के साथ। जब सिद्धार्थ ने समझाया... राज्यपाल ने हमारी मंशा और हम जो करना चाहते थे, वह सब सुन लिया। कुछ देर धैर्यपूर्वक सुनने के बाद मैंने कहा, 'मुझे लगता है कि आप सितंबर में आ सकते हैं जब...'
हालात में कुछ सुधार आएगा। फिलहाल स्थिति काफी हद तक ठीक है। कठिन और अनिश्चित। हमें आतंकवादियों से कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
वे विदेशियों का अपहरण कर रहे हैं, और ऐसे कई और हमले होने वाले हैं।
ऐसा हो रहा है, इसलिए आपको तब तक इंतजार करना होगा।'
मैंने उनसे पूछा, 'विदेशी पर्यटकों को बचाने की क्या संभावना है?'
उन्होंने जवाब दिया, 'अच्छा, आपको लगता है कि हमें नहीं पता कि उन्होंने उन्हें कहाँ रखा है?'
लेकिन इस समय हम सफाई से काम नहीं कर सकते। इसके विपरीत, हम इससे उनकी जान को खतरा हो सकता है। इसलिए, हम सही समय का इंतजार कर रहे हैं।
और हम उग्रवादियों को अनावश्यक प्रचार नहीं देना चाहते।'
जब हम वहां से निकले, तो सिद्धार्थ काक चश्मा शाही और परी से मिलने जाना चाहते थे।
महल। ये क्षेत्र परेशानी से मुक्त थे, इसका सीधा सा कारण यह था कि ये
ये इलाके राज्यपाल की जागीर के अंतर्गत आते थे। हम परी महल गए और वहाँ कुछ समय बिताया।
दारा शिकोह की वेधशाला और पुस्तकालय के स्मारक पर बिताया गया समय। दारा
सम्राट शाहजहाँ के सबसे बड़े पुत्र और संस्कृत के महान पारखी

और फ़ारसी साहित्य। दारा फ़ारस की संस्कृतियों को समझना चाहता था और
भारत के बारे में उन्होंने एक महत्वपूर्ण पुस्तक, मजमाई-बहारिन, लिखी।
सभ्यता की इन दो नदियों को समझना। स्मारक से, आप
हरि पर्वत और शंकरचार्य की पहाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं। कश्मीरी और कश्मीरी दोनों के लिए
पंडितों और मुसलमानों, दोनों के लिए ये पवित्र स्थल हैं। हरि पर्वत की तलहटी में स्थित।
मुल्ला अखुन की खानकाह के स्मारक खड़े हैं, जो आध्यात्मिक उस्ताद थे।
दारा और एक मस्जिद।
कुछ समय बाद हम चश्मा शाही की ओर नीचे उतरे। गाड़ी चलाते समय मैंने सुना
स्वर्णई की ध्वनि, जो एक कश्मीरी लोक वाद्य यंत्र है और संगीत में एक अभिन्न भूमिका निभाती है।
कश्मीर के लोक नाट्य, भंड पाथेर में एक भूमिका। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था।
कि इन कठिन समयों में कोई भंड पथेर का प्रदर्शन करेगा
ये सुनसान जगहें थीं। मैंने ड्राइवर से रुकने को कहा। जब मैं गाड़ी से बाहर निकला तो...
कार में, मैंने एक पारंपरिक भांड पाथेर नाट्य समूह को उनके लोक प्रदर्शन करते देखा।
सीआरपीएफ शिविर के प्रांगण में संगीत। कई सीआरपीएफ अधिकारी और जवान मौजूद हैं।
सभी लोग प्रदर्शन का आनंद ले रहे थे, और सिद्धार्थ और मैं भी संगीत कार्यक्रम में शामिल हो गए।

वहाँ मेरी मुलाकात एक पुराने परिचित मुश्ताक अली से हुई, जिनके पास एक कैमरा यूनिट थी।
जैसे ही उसने मुझे देखा, उसने मुझसे मदद की गुहार लगाई ताकि उसे उस स्थिति से बाहर निकाला जा सके।
दरअसल, उसे बिना किसी आधिकारिक अनुमति के फिल्मांकन करते हुए पकड़ा गया था।
यह उच्च सुरक्षा वाला क्षेत्र है। हल्के दंड के रूप में, अधिकारी ने अपने लोगों से कहा था
संगीतकारों को यह साबित करने के लिए कुछ संगीत बजाने को कहा जाता था कि वे वास्तव में संगीतकार हैं।
मुझे समस्या समझ आ गई। मैंने राज्यपाल के अतिथि के रूप में अपना परिचय दिया।
साहब ने अधिकारी से उन्हें जाने देने का अनुरोध किया क्योंकि ये स्वर्णई
संगीतकारों को लंबे समय तक संगीत नहीं बजाना चाहिए, इससे उनके गले को नुकसान हो सकता है।
खून बहना चाहिए था। अधिकारी समझ गया, मुस्कुराया और उन्हें जाने दिया। मैंने धन्यवाद दिया।
अधिकारी और हम सब एक साथ चले गए।
कुछ देर बाद हम डल लेक बुलेवार्ड रोड पर पहुंचे और रुक गए।
वहाँ मैंने मुश्ताक अली से सुबह के समय अपना कैमरा उधार देने का अनुरोध किया।
सुरभि फिल्म के लिए चश्मा शाही में एक छोटी सी शूटिंग के लिए उन्हें दो घंटे का समय लगा। उन्होंने इससे कहीं अधिक समय दिया। उन्होंने स्वेच्छा से मुझे कैमरा यूनिट और अपना कैमरामैन देने की पेशकश की।
हमने कश्मीर घाटी में सुरभि और के लिए अपनी पहली दो कहानियाँ कैसे बनाईं

मैं तुरंत दिल्ली के लिए रवाना हो गया।
सच कहूँ तो, मैं अब और नहीं रुकना चाहता था। मुझे घुटन महसूस हो रही थी, मैं चारों तरफ से घिरा हुआ था।
सुरक्षाकर्मियों द्वारा निर्धारित समय। मैं मोहल्ले के किसी भी बुजुर्ग से मिलने नहीं जाना चाहता था।
मेरे मुस्लिम मित्र इन बंदूकधारी सैनिकों की आड़ में छिपे हुए हैं।
क्या उन्हें मुझसे मिलकर अच्छा लगता? मुझे लगा कि यह भद्दा लगेगा और
मौजूदा परिस्थितियों में उनसे मिलना असभ्य होगा। इतने वर्षों बाद
मेरी माँ के निधन के बाद से, मैं उनके हालचाल, उनके द्वारा झेली गई परिस्थितियों और वर्तमान के बारे में उनके विचारों को जानना चाहता था।
परिस्थितियाँ ऐसी थीं कि मुझे उनके साथ और समय चाहिए था, लेकिन तब यह संभव नहीं था। इसलिए,
हम डल झील से सीधे श्रीनगर हवाई अड्डे के लिए रवाना हुए। सिद्धार्थ के लिए उपहार के रूप में दिल्ली ले जाने के लिए चश्मा शाही पानी की बोतलें।
पत्नी गीता।
कश्मीर की इस यात्रा ने मेरे मन में वहाँ वापस जाने की इच्छा जगा दी। लेकिन मेरे पास कोई योजना नहीं थी।
ऐसा करने के लिए जगह थी। मैंने फिल्मों में काम करना जारी रखा, टेलीविजन धारावाहिक बनाए और
मैं अपने समूह प्रयोग और विभिन्न संगठनों के साथ नाटकों का निर्देशन करता हूँ।
भारत के ऊपर। कई साल बीत गए। हर दिन कोई न कोई कहानी सुनाई जाती थी।

घाटी में होने वाली घटनाएं मीडिया में छपती थीं। इसकी संभावना थी कि
कश्मीर में काम धीरे-धीरे कम होता गया, फिर एक दिन मुझे एक प्रस्ताव मिला।
पटियाला स्थित उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र से एक प्रमुख नाट्य प्रस्तुति का आयोजन किया जाएगा।
लद्दाख में कार्यशाला। मैंने इस अवसर का लाभ उठाया और योजना बनाना शुरू कर दिया।
मैंने अपने सहयोगियों से संपर्क किया और उन्हें अपनी संसाधन टीम में शामिल होने और परियोजना पर काम करने के लिए कहा।
मैं जम्मू-कश्मीर राज्य के लद्दाख में हूं, जो कश्मीर घाटी के काफी करीब है।
घर के करीब रहना अच्छा लगेगा।
जून में, हमने लेह में लगभग पचास प्रतिभागियों के साथ अपना काम शुरू किया, जो कि आधे थे।
उन लड़कियों के बारे में। लद्दाख में, जहाँ समाज मातृसत्तात्मक व्यवस्था का पालन करता है,
कार्यशाला में महिलाओं की भागीदारी अन्य प्रतिभागियों की तुलना में कहीं बेहतर थी।
फिर भी, समुद्र तल से 12,000 फीट की ऊंचाई पर वहां काम करना।
यह आसान नहीं था—ऊंचाई के कारण हमें पतली हवा में सांस लेनी पड़ रही थी, जो कि हम नहीं थे।
मुझे इसकी आदत थी, और खाने-पीने की चीजों के साथ तालमेल बिठाने में भी समय लगा।
हालांकि, कार्य मोर्चे पर हमने उम्मीद से कहीं अधिक हासिल किया।
हमने जो नियमित प्रशिक्षण लिया, उसमें से काम करने का सबसे दिलचस्प हिस्सा यही था।

यहां सब कुछ हमारे अपने लोगों द्वारा स्थानीय स्तर पर विकसित या निर्मित किया गया था।
प्रतिभागियों के लिए। अंतिम प्रस्तुति के लिए, हमने एक स्थानीय लोक कथा को रूपांतरित किया।
लेह पैलेस के सामने एक भव्य खुले मैदान में प्रदर्शन। हजारों लोग
स्थानीय निवासी और पर्यटक प्रदर्शन देखने आए।
दर्शकों की उत्सुकता, स्थानीय प्रशासन—जिसने इनकार कर दिया था उत्पादन के प्रारंभिक चरणों में किसी भी प्रकार की सहायता के लिए तैयार रहने के बाद, लेह के संभागीय आयुक्त ने अचानक हमारे लिए हर संभव सहायता के द्वार खोल दिए।
प्रदर्शन देखने के बाद, स्थानीय थिएटर भवन को विकसित करने का वादा किया गया।
और इसे एक आधुनिक प्रदर्शन स्थल बना दें। उन्होंने कर्मचारियों को आदेश दिया कि वे शुरू करें।
इस दिशा में काम करते हुए, भवन में उचित रोशनी और बैठने की व्यवस्था करें।
हालांकि थिएटर परियोजना ने हमारी अपेक्षा से कहीं अधिक सफलता हासिल की,
मेरे साथ भी व्यक्तिगत रूप से कुछ ऐसा ही हुआ। मैंने घंटों लोगों से बातचीत की।
लेह में कई छोटे कश्मीरी व्यापारी थे; हम बैठकर उनके बारे में बातें करते थे।
घाटी में लोगों की स्थिति और दुर्दशा के बारे में हम हर शाम मिलते थे।
कुछ रेस्तरांओं में, व्यापारी मुझे कश्मीर की ताज़ा खबरों के बारे में जानकारी देते रहते हैं।
घाटी में, और हमारे सत्र देर शाम तक चलते रहते थे।

मेरे होटल में एक अलग कमरा था जहाँ कश्मीरी व्यापारियों का एक बड़ा समूह ठहरा हुआ था।
उनमें से कुछ लोग कश्मीर वापस जाते और कुछ दिनों बाद लेह लौट आते।
कुछ दिनों तक। कश्मीरियों का यह समूह ज्यादातर अपने तक ही सीमित रहता था, और शायद ही कभी किसी से मिलता-जुलता था।
होटल के अन्य निवासियों के साथ। उनमें से एक वह था जो जंजीर से बंधा हुआ था।
वो चाय पीते समय सिगरेट पीता था। हर सुबह मैं जागकर उसे ऐसा करते देखता था।
लॉन में बैठकर, चाय से भरा गिलास लिए, उसे घूंट-घूंट करके पीते हुए और सिगरेट पीते हुए।
एक के बाद एक सिगरेट। वह मुझे बहुत आकर्षित करता था, लेकिन मेरे पास कभी भी
सुबह-सुबह लॉन में उनके साथ समय बिताने का मौका।
हम सुबह काम पर जाते थे और अंधेरा होने के बाद ही लौटते थे।
जिस दिन हम होटल लौटे, उस दिन हमें निवासियों का एक बड़ा समूह मिला, जिनमें शामिल थे
स्थानीय लद्दाखी लोग होटल की लॉबी में बैठकर बेन हर फिल्म देख रहे थे।
टेलीविजन। जिज्ञासावश, मैं भी उनके साथ कुछ पल देखने के लिए शामिल हो गया।
फिल्म देखते समय मैंने देखा कि चाय पीने वाला व्यक्ति मेरे बगल में आ गया। हमने कुछ बातें कीं।
मैंने अंग्रेजी में कुछ शिष्टाचार की बातें कीं और उनसे उनका नाम पूछा। उन्होंने जवाब दिया, 'मेरा नाम है...'
असलम।

कुछ क्षण बाद, मैंने उनसे पूछा, 'क्या आप कश्मीरी हैं?' 'हाँ,' उन्होंने कहा।

उसने जवाब दिया। ‘तो फिर आप मुझसे कश्मीरी में क्यों नहीं बात कर रहे हैं?’ मैंने पूछा। हम

हम अपनी मातृभाषा में बात करने लगे। उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मैं कश्मीरी हूँ।

बोलते हुए। उत्तेजना और सदमे से भरा हुआ, वह आंगन में दौड़ पड़ा और

उसने एनेक्स की ओर चिल्लाकर कहा, ‘हाजी साहब! वह कश्मीरी हैं!’ हाजी साहब ने खिड़की से अपना सिर बाहर निकाला और चिल्लाकर जवाब दिया, ‘कौन?’ ‘वह’

“दाढ़ी वाला आदमी,” असलम ने जवाब दिया। हाजी ने हमारी तरफ चिल्लाकर जवाब दिया।

अरे, हम कई दिनों से आपके बारे में चर्चा कर रहे हैं और यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि...

आपकी राष्ट्रीयता। और यहाँ आप हममें से एक निकले।'

हाजी ने मुझे संलग्न क्षेत्र में आमंत्रित किया, और सभी कश्मीरी नीचे आ गए।

वे आंगन में बने अपने कमरों से मुझसे मिलने आए। उनमें से एक ने कहा, 'क्या...'

क्या आप नमकीन चाय पीना पसंद करेंगे?’ जब मैंने हाँ कहा, तो माहौल बदल गया।

एक पूर्ण कश्मीरी सभा में। असलम ने कहा, 'हम सबके लिए तुम एक थे।'

'विदेशी, चाहे जर्मनी से हो या रूस से।' मैं हँसे बिना नहीं रह सका।

भगवान के लिए, आप इस निष्कर्ष पर कैसे पहुँच सकते हैं कि मैं एक हूँ?

'विदेशी?' 'तुम्हारे पहनावे की वजह से,' उनमें से एक ने जवाब दिया। 'तुम ये पहनते हो।'

कई जेबों वाले शॉर्ट्स, जैकेट और आपकी टोपियों की वजह से।’ मैं खुद को रोक नहीं सका।
हमारी सॉल्ट टी पार्टी के इस पूरे सेशन में हम हंसते रहे, साथ ही साथ...
वे कश्मीर घाटी से कश्मीरी बेकरी आइटम लाए थे।
मैं जानना चाहता था कि वे सभी लेह में क्या कर रहे हैं। एक लंबे समय के बाद
चुप्पी साधे हुए, हाजी ने कुछ हास्यबोध के साथ समझाया, 'चूंकि आप लोग घाटी छोड़कर चले गए, फिर भी हमें अपने शुभचिंतकों से आदेश मिलते रहते हैं।
हमें मारुति जिप्सी जीप न चलाने का आदेश दिया गया है। चूंकि हम मैं सवाल नहीं कर सकता और अवज्ञा करने की हिम्मत नहीं कर सकता, मैं अपने जिप्सी से छुटकारा पाने आया हूँ।
फिर उन्होंने मुझे इसे खरीदने का प्रस्ताव दिया। ‘कम से कम मुझे इस बात की तसल्ली तो होगी कि
‘मेरी जीप मेरा कश्मीरी भाई चला रहा था,’ उसने आह भरी। ‘सच कहूँ तो, अगर आप पूछें तो
मैं तो यहाँ साँस लेने आया हूँ।
मैंने जवाब दिया, 'हाजी साहब, मैं सीमित साधनों वाला व्यक्ति हूँ। मेरे पास पैसे नहीं हैं।'
इस तरह की विलासिता के लिए।’ हाजी ने अपने ही अंदाज में कहा, ‘तो इसे मुफ्त में ले लो।’
मैं कसम खाता हूँ कि मैं खुश रहूँगा।’ मैंने प्रस्ताव के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। फिर, एक ऐसे अंदाज़ में जैसे...
उन्होंने आगे कहा, ‘मैं घाटी में रहकर तंग आ चुका हूँ। मैं यहाँ आ गया हूँ।’
थोड़ी ताज़ी हवा मिल जाए तो अच्छा है। वहाँ दम घुट रहा है।'

कुछ मिनटों तक कोई नहीं बोला, फिर असलम ने अपनी सिगरेट जलाई और पूछा

मैंने पूछा, ‘आप कहाँ खाना खाते हैं?’ मैंने जवाब दिया, ‘यहाँ किसी भी ढाबे पर। वे अपना खाना परोसते हैं।’

'स्थानीय खाना, और कुछ जगहों पर पंजाबी खाना भी मिलता है।' मैंने पूछा, 'आप लोग कहाँ खाना खाते हैं?' असलम ने जवाब दिया, 'हमने अपना एक कश्मीरी समुदाय बना लिया है।'

एनेक्स में रसोईघर है। खाना बहुत अच्छा नहीं होता, लेकिन हम किसी तरह काम चला लेते हैं।

इस वीरान जगह पर बढ़िया भोजन की उम्मीद नहीं की जा सकती।

मैंने कहा, ‘अरे, मुख्य बाजार में एक बढ़िया कश्मीरी रेस्तरां है।’

वहाँ का खाना बहुत स्वादिष्ट है। मुझे बहुत पसंद आया और जब भी मौका मिलता है, मैं वहाँ ज़रूर जाता हूँ।

मुझे उनका खाना पसंद है।’ हाजी साहब बहुत उत्साहित हो गए और बोले कि हम

हम वहां से कुछ व्यंजन मंगवाएंगे और उस रात सब मिलकर एक शानदार डिनर करेंगे।

हम उसकी जीप में साथ गए और कुछ स्वादिष्ट रिस्ता और गोश्तबा वगैरह खरीदे।

समुद्र तल से 12,000 फीट की ऊंचाई पर कश्मीरी दावत का आनंद लिया।

अगली सुबह, हमेशा की तरह असलम ने चाय और सिगरेट पी। मैं भी उसके साथ शामिल हो गया।

सुबह की चाय के साथ। हमने जाना कि हम दोनों कहाँ-कहाँ से आए थे।

श्रीनगर में मुझे पता चला कि हम दोनों ने वहीं एसपी कॉलेज में पढ़ाई की थी।

अगले कुछ दिनों में हम एक-दूसरे के करीब आ गए और हम साथ में अधिक समय बिताने लगे।

सुबह घाटी के बारे में बातचीत और चर्चा हुई। समझौते और
हमारे बीच मतभेद पैदा हुए, लेकिन धीरे-धीरे हम एक-दूसरे की संगति को पसंद करने लगे।
कुछ दिनों बाद मैंने उनसे पूछा, 'आप इतनी चाय क्यों पीते हैं और सिगरेट क्यों पीते हैं?'
इतनी सारी सिगरेटें? ये आपकी सेहत के लिए अच्छी नहीं हैं और आपके स्वास्थ्य के लिए भी अच्छी नहीं हैं।
'अपने परिवार को।' सिगरेट का एक गहरा कश लेते हुए उन्होंने कहा, 'तुम मेरे परिवार को नहीं जानते।'
त्रासदी। मैं किसी पर भरोसा नहीं कर सकती। अब, जो मैं महसूस करती हूँ, जो मैं व्यक्त करना चाहती हूँ, मैं
नहीं कर सकता। मैं हर दिन मस्जिद जाता हूँ। मैं चुपचाप नमाज़ अदा करता हूँ।
किसी से एक शब्द भी नहीं बोला। मैं चुपचाप घर लौट आया। मेरा एक छोटा भाई है।
मेरा भाई, जिसे मैं प्यार करता हूँ, और मुझे यकीन है कि वह भी मुझसे प्यार करता है। लेकिन यकीन मानो, मैं
मैं उसे अपने विचार या भावनाएँ व्यक्त नहीं कर सकता क्योंकि मैं नहीं जानता कि वह क्या है।
सोच-विचार। अविश्वास बहुत गहरा हो गया है। भाई-भाई बन गए हैं। अजनबी। इसलिए, जब मैं आपसे यहां बात करता हूं, तो मेरे सीने से एक भारी बोझ उतर जाता है।
तुम्हारे साथ मैं बिना किसी डर के सांस ले सकता हूँ।
मेरे पास उसके लिए कोई जवाब नहीं था। हम चाय पीते रहे। बाद में मैंने उससे पूछा।
उन्होंने उससे पूछा, ‘आप श्रीनगर कब लौट रहे हैं?’ उन्होंने उत्तर दिया, ‘इंशाल्लाह, जब’

जैसे ही आप अपना प्रोजेक्ट पूरा करके दिल्ली के लिए रवाना होंगे, उसी दिन हम भी आपसे मिलेंगे।
श्रीनगर के लिए रवाना हों।
कुछ दिनों बाद होटल के मुख्य द्वार पर मेरी मुलाकात एक और कश्मीरी से हुई।
उन्होंने अपना परिचय मुझे सरकारी परिवहन में चालक के रूप में दिया।
विभाग के अधिकारी श्रीनगर और लेह के बीच अक्सर यात्रा करते थे।
मुझे नहीं पता था।
मैं उनसे पहले भी मिल चुका हूँ। लेकिन जाहिर है, उन्होंने कश्मीरी होटल के डिनर में भाग लिया था।
समूह। वह मुझसे कुछ पुष्टि करना चाहता था। उसने पूछा, 'क्या आप एक हैं?'
कश्मीरी पंडित?’ जब मैंने हाँ कहा, तो उन्होंने आगे कहा, ‘देखिए, मैं जा रहा हूँ...’
श्रीनगर। मैं आपके लिए वहां से क्या ला सकता हूँ?’ मैं हैरान रह गया और मैंने कहा
मैंने उससे कहा, ‘कुछ नहीं, बस दस्तगीर साहब की दरगाह पर अपना आदर अर्पित कर वापस आ जाऊँगा।’
सुरक्षित वापस लौट आओ।
उसने जवाब दिया, 'बस अपने दोनों हाथ ऊपर उठाओ और मेरी मृत्यु के लिए प्रार्थना करो।'
हे भगवान, मुझे यह सब होते हुए दिखाई नहीं दे रहा है।
मुझे लगा कि वह कोई पागल कश्मीरी है जिसे बात करने के लिए किसी की ज़रूरत है, इसलिए मैंने
उन्होंने कहा, 'कृपया इस तरह बात न करें। अल्लाह आपको दीर्घायु प्रदान करे।'

मैं आगे बढ़ना चाहता था, लेकिन उसने मुझे रोक दिया और समझाया, 'ऐसा मत सोचो कि मैं...'
मैं पागल हूँ। मेरा मतलब यही है। मैं आर्थिक रूप से संपन्न हूँ। मेरे बच्चे पढ़े-लिखे हैं और बहुत अच्छा कर रहे हैं।
अच्छा। लेकिन क्या आप कन्हैया लाल को जानते हैं? वह मेरा पड़ोसी था, और वह...
मैं अपने बच्चों को उनकी स्नातक की पढ़ाई पूरी होने तक मुफ्त में पढ़ाता हूँ और उसके बाद उन्हें मार्गदर्शन भी देता हूँ।
उनके पेशेवर करियर में। और आज, मुझे नहीं पता कि वह कहाँ है या किस स्थिति में है।
कौन सा शहर? वह इस भीषण गर्मी में जरूर परेशान हो रहा होगा।
उसने अपना घर छोड़ दिया।
मुझे बिना बताए ही। जाते समय उसे कैसा महसूस हुआ होगा!
क्या यह उनका पैतृक घर है? मैं सच में यह सब नहीं देखना चाहती, इसलिए कृपया उनके लिए प्रार्थना करें।
'मुझे, कृपया।' आँखों में आँसू लिए वह चलते हुए खुद से बुदबुदाया।
दूर जाते हुए, 'मुझे कन्हैया लाल कहाँ मिलेगा?'
हमने लद्दाखी लोक कथा पर आधारित अपना नाटक, चखुंग, प्रस्तुत किया।
खुले वातावरण में 'एकता में ही शक्ति है' की समकालीन व्याख्या। लेह महल और उससे सटे पहाड़ों के बीच। यह प्रस्तुति थी
लद्दाख में इसे एक प्रमुख सांस्कृतिक आयोजन माना जाता है, लेकिन अंतिम पूर्वाभ्यास के दौरान...
प्रदर्शन से एक दिन पहले, एक बहुत ही अप्रिय घटना घटी। एक छोटी मुस्लिम लड़की
एक लड़की हमारी रिहर्सल देख रही थी, तभी अचानक मेरे पसंदीदा अभिनेताओं में से एक ने मुझे देखा।

वह आपा खो बैठा और उस पर चिल्लाने लगा। उसने उसे धमकी दी कि अगर वह रुकी तो वह उसका सिर काट देगा। यह एक चौंकाने वाला क्षण था, और तभी उसे एहसास हुआ...
हमें बताया गया कि लद्दाखी बौद्धों और उनके बीच भारी तनाव था। लद्दाखी मुसलमानों का सामाजिक बहिष्कार किया गया था।
बौद्ध धर्म। हमने इस बारे में सोचा नहीं था, लेकिन इससे हिंसात्मक स्थिति उत्पन्न हो सकती है।
भयंकर टकराव। प्रदर्शन के दौरान किसी भी प्रकार की हिंसा से बचने के लिए, हमने
लद्दाख बौद्ध नामक एक बौद्ध धार्मिक संस्था के समक्ष जाना चाहता था।
यह संगठन शहर में काफी राजनीतिक और शारीरिक शक्ति का प्रयोग करता था।
हम कस्बे में स्थित उनके कार्यालय गए, जहाँ केवल बौद्ध भिक्षु ही मौजूद थे।
उपस्थित। मुझे लगा था कि एसोसिएशन की मंजूरी प्राप्त करना आसान होगा।
दिखाओ। मैं गलत था।
उन्होंने गंभीर न्यायाधीशों की तरह व्यवहार किया और हर तरह के सवाल पूछे।
उन्हें समझाया कि यह नाटक लद्दाख की एक लोककथा पर आधारित था और इस नाटक को लद्दाखी भिक्षु ने रूपांतरित किया था। नाटक की भाषा लद्दाखी थी।
यह सब लद्दाखियों और उनकी संस्कृति के बारे में था। मैंने उनके संगठन से समर्थन मांगा।
हमें यह आश्वासन दिया गया था कि नाटक शांतिपूर्वक संपन्न हो सकेगा और किसी प्रकार की हिंसा नहीं होगी।

बस यही जगह थी। मुझे उनसे बस इतनी ही मदद और सहयोग चाहिए था। उन्होंने मेरी बात सुनी।

उन्होंने धैर्यपूर्वक मेरी ओर देखा, और फिर भिक्षुओं में से एक ने उत्तर दिया, 'हम पहले देखेंगे...'

हम पहले रिहर्सल करेंगे, उसके बाद तय करेंगे कि प्रदर्शन की अनुमति देनी है या नहीं।

या नहीं।’ नाटक में कुछ भी आपत्तिजनक नहीं था, इसलिए मैंने इसे स्वीकार कर लिया।

उनकी स्थिति के बारे में बताया और उनसे अगले दिन पूर्वाभ्यास देखने आने को कहा।

अगले दिन, भिक्षु प्रदर्शन देखने के लिए आए। कुछ समय तक,

वे भावहीन चेहरे बनाकर देखते रहे। जैसे-जैसे नाटक आगे बढ़ा और

जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ी, मेरी निगाहें प्रदर्शन पर नहीं बल्कि इन युवाओं पर टिक गईं।

बौद्ध न्यायाधीश। मैंने उनकी शारीरिक भाषा का अवलोकन किया, और देखा कि वे कैसे...

धीरे-धीरे उनका तनाव कम होने लगा और उनके चेहरों पर हल्की मुस्कान फैल गई। कुछ देर बाद

उस समय, ये भोले-भाले भिक्षु अपनी सीटों पर खिलखिलाते और उछलते- कूदते थे।

वे एक दूसरे को हाथों से थपथपा रहे थे और आपस में टिप्पणियां कर रहे थे।

वे सचमुच प्रदर्शन का आनंद ले रहे थे। प्रदर्शन के बाद, उन्होंने

वे उत्साहित लग रहे थे और उन्होंने कहा कि वे इस संदेश को आगे भेजने की योजना बना रहे हैं।

लोगों को नाटक देखने के लिए गांवों में बुलाया गया था। उन्होंने मुझसे कहा, 'रैनाजी, चिंता मत कीजिए, कुछ नहीं होगा, सभी लोग आएं और नाटक देखें।'

नाटक देखो।’ मुझे राहत महसूस हुई।
अगली शाम, नाटक के उद्घाटन की रात, सभी जगहों से लोग आए।
दिशा-निर्देशों का पालन करना, पहाड़ों पर चढ़ना और समय पर अपनी सीटों पर बैठना।
होटल से आए मेरे कश्मीरी समूह सहित हजारों लोग उपस्थित थे।
भाषा तो समझ नहीं आई, लेकिन इस अद्भुत नजारे को देखकर बहुत प्रसन्न हुए।
दयालु।
अगली सुबह, हम सभी ने अपना सामान पैक किया और तुरंत हवाई अड्डे के लिए रवाना हो गए।
और अलग-अलग विमानों में अलग-अलग दिशाओं में उड़ान भरी, कुछ श्रीनगर के लिए।
अन्य लोग दिल्ली जा रहे थे। जब हम हवाई अड्डे पर उड़ान का इंतजार कर रहे थे, हाजी साहब और
असलम ने मुझे उनके पते दिए, और मैंने उन्हें अपना पता इस वादे के साथ दिया कि
हमारी अगली मुलाकात कश्मीर घाटी में होनी थी। लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ।
उन्होंने अपना पता कहीं खो दिया। और हालांकि मैं अब कश्मीर जा चुका हूँ।
कई सालों तक नियमित रूप से मिलने के बावजूद, मेरी मुलाकात हाजी साहब या असलम से दोबारा कभी नहीं हुई।
लेह हवाई अड्डे से उड़ान भरकर, बर्फ से ढके हिमालयी पर्वतों को पार करते हुए।
मैंने अपनी खिड़की से खांगरी की चोटियों को देखा और कल्पना की कि...
वह दिन जब मैं उनसे आगे घाटी में उस स्थान तक यात्रा करूंगा जहाँ मैं

मेरा एक घर था और वह जगह थी जहां मेरा परिवार और मेरे पूर्वज सदियों से रहते आए थे।

लेकिन मेरे कुल का कोई भी व्यक्ति अब वहां नहीं रहता था। तो फिर मेरे भीतर यह तीव्र इच्छा क्यों जाग उठी?

मैं लगातार अपने सिर पर हाथ मार रहा था, ताकि मेरी यादें ताजा हो सकें।

घर? मैं लेह में काम क्यों करना चाहता था, जो मेरे गृह राज्य का हिस्सा है और फिर भी नहीं

क्या अब भी मेरी यही जगह है? मैं पीर पंजाल पर्वतमाला कब पार करके ज़मीन पर उतरूँगा?

मेरे शहर में, जहाँ मेरा जन्म हुआ और मैं पला-बढ़ा, मैंने एक आम इंसान की तरह ही जीवन बिताया।

कश्मीरी लड़का?

जब मेरी फ्लाइट दिल्ली में उतरी, तो मुझे असलम और हाजी साहब की याद आई।

वे तनाव भरे शहर में रहने के लिए अपने घर पहुँच गए होंगे।
टैक्सी में बैठे हुए,

मैंने फैसला किया कि मुझे श्रीनगर वापस जाना होगा और देखना होगा कि क्या किया जा सकता है।

मुझे इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि कैसे और कब।

कुछ समय बाद मुझे मेरे मित्र एम.के. राजदान, जो कि सीईओ हैं, का फोन आया।

पीटीआई ने मुझसे दूरदर्शन के लिए एक टेलीविजन कार्यक्रम के बारे में सोचने को कहा। मैंने तुरंत जवाब दिया, 'माफ़ कीजिए, मैं प्रचार कार्यक्रम नहीं कर सकता।'

कश्मीर।’ उन्होंने कहा, ‘ठीक है, लेकिन हम जल्द ही मिलेंगे। और इस बीच,

'कुछ ऐसे विचार सोचो जिन पर हम काम कर सकें।' मैंने कहा कि मैं आपको जवाब दूंगा।

जल्द ही उससे बात करेंगे। हमने बात वहीं खत्म कर दी। अंदर ही अंदर, मैं इस विचार से काफी उत्साहित हो गया।
कश्मीर लौटकर मैंने विचार-मंथन शुरू किया। मैं ऐसा नहीं करना चाहता था।
काल्पनिक रचनाएँ; ऐसी रचनाएँ कई लोगों ने पहले ही बना ली थीं।
जबकि कुछ विचार
मेरे मन में कुछ विचार उमड़ रहे थे, तभी मुझे कुछ समय पहले घटी एक घटना याद आ गई।
गोवा में।
हम अपनी वार्षिक पारिवारिक छुट्टी के लिए वहाँ गए थे। मेरे दोस्तों में से एक, ओरोजित, एक
एक बेहद कुशल डिजाइनर, जो गोवा में बस गया था और वहाँ तरह-तरह के सामान बेचने वाली एक दुकान चलाता था।
हाथ से बनी वस्तुएं जैसे टी-शर्ट, हैंडबैग और नकली गहने।
शाम को उन्होंने सुझाव दिया कि मैं रविवार को लगने वाले गाँव के बाज़ार में जाऊं, जहाँ मुझे कई दुर्लभ चीज़ें मिल सकती हैं।
दूर-दराज के गांवों से आए स्थानीय लोगों द्वारा बनाई गई चीजें।
इसके अलावा,
यह बहुत ही बढ़िया गोवा का खाना होगा।
अगले रविवार को हम सब उस गाँव के बाज़ार में गए। वह काफ़ी बड़ा था।
स्थानीय लोगों की बड़ी संख्या स्थानीय और गैर-स्थानीय सामान लाकर बेच रही है, जिससे
यह आपको आम बाजारों में हमेशा देखने को नहीं मिलता। इसमें कोंकणी माहौल था।
और कुछ लोगों ने गोवा के लोकगीत गाए। हमारा समूह सभी क्षेत्रों में फैल चुका था।

शिल्पकला और भोजन की समृद्धि और विविधता को देखने के निर्देश।
एक बिंदु पर
मैंने अपनी बेटी अदिति की आवाज़ सुनी। वह लगभग सात साल की थी। उस समय वह चांदी के गहने बेचने वाले एक व्यक्ति से कीमत के बारे में पूछ रही थी।
मैंने कुछ बालियों के बारे में पूछा। उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि उनकी कीमत 450 रुपये है। मेरी
बेटी ने उन्हें बहुत महंगा समझकर खरीदने से इनकार कर दिया। दुकानदार ने कहा...
मैंने उससे पूछा कि वह कितना भुगतान करेगी। मेरी बेटी ने बस इतना जवाब दिया, 'नहीं'।
धन्यवाद। मुझे यह नहीं चाहिए।
जब वे कीमत को लेकर मोलभाव कर रहे थे, तब मुझे एहसास हुआ कि दुकानदार एक
कश्मीरी हस्तशिल्प विक्रेता। मैंने कश्मीरी में उस पर चिल्लाते हुए कहा, 'तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?'
उन्हें इतनी महंगी कीमत पर उसे बेचना?’ दुकानदार ने कहा
मुझे आश्चर्य भरी नज़र से देखा। मैंने आगे कहा, 'वह मेरी बेटी है।' वह मुस्कुराया और
उन्होंने इसकी पुष्टि करने के लिए हम दोनों की ओर देखा। मेरी ओर देखकर हंसते हुए उन्होंने कहा, 'तुम कश्मीरी हो।' मैंने कहा, 'बेशक!' उन्होंने चांदी उठा ली।
मैंने झुमके नरम टिशू पेपर में लपेटकर अपनी बेटी को दे दिए। ‘तो यह मेरी तरफ से आपके बच्चे के लिए उपहार है,’ उसने कहा। वह भावुक हो गया, और
जब मेरी बेटी ने उन्हें स्वीकार करने से इनकार कर दिया, तो उसने उसे स्वीकार करने के लिए ज़ोर दिया। अंततः, मैंने

मैंने हस्तक्षेप किया और उसे पैसे देकर बालियां अपनी बेटी को दे दीं।

मैं उससे बात करता रहा, और उसने बताया कि उसका परिवार यहाँ आया था।

गोवा। वहां कई कश्मीरी लोग रहते थे। सरकार ने उन्हें अनुमति दे दी थी।

उन्होंने मुझे अपने पहचान पत्र दिए ताकि वे किसी भी प्रकार की उत्पीड़न से बच सकें।

उन्होंने मुझे स्थानीय पते पर बुलाया और मुझसे मिलने आने की ज़िद की। उन्होंने और भी छोटे-छोटे लोगों को बुलाया।

दुकानदारों ने मुझे उनसे मिलवाया। उन्होंने भी मुझे अपने साथ शामिल होने का निमंत्रण दिया।

वे शाम को इफ्तार के लिए आए थे, और मैंने उनसे वादा किया था कि मैं उपस्थित रहूंगा।

शाम को मैं अकेले ही उन कश्मीरियों से इफ्तार के लिए मिलने गया।

उनकी बड़ी दुकानें। वहाँ कम से कम बारह उपहार थे। सभी व्यंजन

उन्होंने कश्मीरी व्यंजन और नमकीन चाय तैयार की थी। हमारा भोजन बहुत अच्छा रहा।

समय बीतने के साथ-साथ कश्मीरी राजनीति, अर्थव्यवस्था, परिवारों से लेकर हर विषय पर बातचीत हुई।

और आतंकवाद। एक समय मैंने उनसे पूछा कि क्या वे सहज और खुश महसूस कर रहे हैं।

गोवा में। क्या उन्हें कश्मीरी मुसलमान होने के कारण किसी तरह के भेदभाव का सामना करना पड़ा?

सभी सकारात्मक प्रतिक्रियाओं के साथ, उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं थी।

कश्मीरी मुसलमान होने के कारण उनके साथ वहां भेदभाव किया गया और इसका खुलासा हुआ।

वास्तव में, स्थानीय समुदाय और के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध थे। उन्होंने कहा: 'स्थानीय लोग कश्मीर घूमने आते हैं, और वहां पहुंचने के बाद हम उनकी देखभाल करते हैं।'
ये रिश्ते वर्षों बीतने के साथ-साथ एक बहुत मजबूत पारिवारिक रिश्ते में तब्दील हो गए हैं।
हमारी दोस्ती है। हम एक-दूसरे को शादियों में आमंत्रित करते हैं, और इसके लिए वे भी आते हैं।
हम चाहते हैं कि घाटी हमारे उत्सवों का हिस्सा बने। और हम भी, अपनी ओर से, उनके साथ शामिल हों।
उत्सव। वे हिंदू और ईसाई हैं, और हम मुसलमान हैं। लेकिन यह
कोई फर्क नहीं पड़ता। यह बंधन दशकों से मजबूत होता आ रहा है, जब से हमारा
मेरे दादाजी यहाँ काम करने आते थे। एक और सच्चाई और वास्तविकता है।
हम सब यहाँ युवा हैं। हमारे परिवार नहीं चाहते कि हम किसी भी गतिविधि में शामिल हों।
कश्मीर में अशांति है। इसलिए, वे हमें यहाँ सुरक्षित रखने और अशांति से दूर रखने के लिए भेजना पसंद करते हैं।
खतरा। यहां हर बाजार में आप देखेंगे कि कम से कम 25 प्रतिशत दुकानें कश्मीरी कला और शिल्प बेचती हैं। केरल में भी हमारा कारोबार है।
मद्रास, उड़ीसा और बंगाल।
शाम को जब मैं घर लौटा तो अंधेरा हो चुका था। मुझे एहसास हुआ कि
हजारों कश्मीरी वर्षों से भारत के विभिन्न राज्यों में व्यापार कर रहे थे।
बिना किसी समस्या के, फिर भी यह तथ्य आम तौर पर अज्ञात था। मैंने एम.के. को फोन किया।

मैंने गोवा के राजदान से बात की और प्रस्तावित श्रृंखला 'कश्मीर' के लिए अपना विचार समझाया।

'कहीं भी और हर जगह'। मैंने उसे कश्मीर पर आधारित एक यात्रा कार्यक्रम के बारे में बताया।

कश्मीर और कश्मीरियों के भारत के शेष भाग के साथ एकीकरण को दर्शाने वाला चित्र।

हमारे कारीगरों और उनकी कलाओं के माध्यम से। वह पूरी तरह से नहीं समझ पाया कि मैं क्या कहना चाह रहा था।

उन्होंने कहा और मुझे अपने पीटीआई कार्यालय में बुलाया। जब मैं दिल्ली लौटा, तो मेरी मुलाकात हुई।

राजदान अपने दफ्तर में थे। उन्होंने मुझे खाली कागज और एक कलम दी और कहा,

‘जो कुछ भी तुम मुझे बताना चाहते हो, सब लिख लो।’ मैंने लिखना शुरू किया, और

कुछ ही घंटों के भीतर, पूरी परियोजना लिखी जा चुकी थी और तैयार थी।

दूरदर्शन अधिकारियों को प्रस्तुत किया गया।

मैंने इसे एक सामाजिक-सांस्कृतिक यात्रा कार्यक्रम समझा था, और सौभाग्य से, ऐसा नहीं हुआ।

दूरदर्शन के प्रचार कार्यक्रम में बदल गया। जब मैं श्रीनगर पहुँचा।

पहले शूट के लिए एयरपोर्ट पर पहुँचते ही मेरा उत्साह गायब हो गया, और काफी समय तक

मैं विचारों में खोई हुई थी। जैसे ही मैंने अपना बैग उठाया, अचानक मेरे मन में आया, 'मैं कहाँ हूँ?'

मुझे कहाँ जाना चाहिए? और मैं कहाँ रहूँगी? यहाँ न घर है, न दोस्त।

मुझे एक अजीब सा डर सताने लगा और मैं खुद को कोसने लगा। आखिरकार, मैं वहां से चला गया।

हवाई अड्डे पर। वहाँ मैंने अपने एक कनिष्ठ सहकर्मी, अरशद मुश्ताक को देखा। मेरे पास

मैंने उसे अपने आने की सूचना दे दी थी, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया इसलिए मैंने भी कुछ नहीं कहा।

मुझे हवाई अड्डे पर उसका इंतज़ार था। जब मैंने उसके चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान देखी, तो मेरा

थोड़ा आत्मविश्वास लौट आया। संक्षिप्त शिष्टाचार के बाद, अरशद ने मुझसे पूछा,

‘अब आप यहाँ से कहाँ जा रहे हैं?’ यह एक बहुत कठिन प्रश्न था। मैंने कुछ देर सोचा।

एक क्षण रुककर उसने उसे निर्देश दिया, 'चलो रीगल चौक चलते हैं। वहाँ एक लैम्बर्ट है।'

एक गली थी, और उस गली में हाजी साहब का एक छोटा सा होटल हुआ करता था।

कॉलेज के दिनों में, मैं और मेरे दोस्त कबाब खाया करते थे और चाय पिया करते थे।

वहाँ नियमित रूप से जाते थे—ये लेह वाले हाजी साहब नहीं थे।

हमने एक टैक्सी ली और निकल पड़े। यह असल मायने में कोई होटल नहीं था, लेकिन

यह एक छोटा-सा ठिकाना है जिसमें कुछ ही कमरे हैं; यहाँ ज्यादातर लोग कारगिल से आते हैं।

मैं वहीं रुकना चाहूंगा। यह बहुत ही सस्ता आवास था। सबसे अच्छी बात यही थी।

इसके स्थान के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि इसने मेरे किशोरावस्था के दिनों की यादें ताजा कर दीं।

इस इलाके में। परिचित होने के कारण मुझे यहाँ सुरक्षित महसूस हुआ। मेरा घर यहाँ से बस दस किलोमीटर दूर था।

पैदल चलकर कुछ ही मिनटों की दूरी पर। यह वह इलाका था जहाँ मैं पला-बढ़ा था और मैं वहाँ के हर व्यक्ति को जानता था।

गली। मनोवैज्ञानिक रूप से, इसने मुझे शहर का हिस्सा बनने में मदद की।
चेक-इन करने के बाद, दशकों बाद मेरी मुलाकात हाजी साहब से हुई और मुझे उन्हें याद दिलाना पड़ा।
मैं कौन था। आखिरकार उसने पुरानी यादों को कुरेदते हुए कहा, 'हां, पहले ऐसा हुआ करता था।'
आप तीनों लॉन के उस कोने में बैठे हंस रहे थे। हां, अब मैं
मुझे याद है।’ चाय और जलपान के बाद, मैंने हमारे काम पर लग गया। मेरी तकनीकी टीम दो दिन में सीरीज की शूटिंग के लिए आने वाली थी, इसलिए मैंने अपना शेड्यूल तय कर लिया था।
डर और आशंका के बीच, हमने अपनी कहानियों को फिल्माना शुरू किया ताकि उन्हें कैद कर सकें।
कश्मीर की संस्कृति और विरासत के सभी पहलुओं का अध्ययन। हम सुबह करीब 10 बजे रवाना हुए।
और मैं हर दिन शाम करीब 7 बजे लौट आता था। शुरुआत में, मैं बहुत कुछ संभालता था।
मेरे मन में वहां काम करने को लेकर डर है, क्योंकि मेरे आसपास तनावपूर्ण स्थिति है।
लेकिन धीरे-धीरे, मैं जहां भी फिल्म की शूटिंग के लिए गया, मुझे पूरा समर्थन मिला और
प्रोत्साहन मिला। जल्द ही मैंने अपने डर पर काबू पा लिया और उन जगहों पर जाने लगी जहाँ मैं नहीं जा सकती थी।
श्रीनगर की नगर सीमा के भीतर। अभी तक मैंने किसी अधिकारी से संपर्क नहीं किया है।
अधिकार। मैं अकेला था, और हमारे काम की गति तेज हो गई। हर
दिन में हम कम से कम दो खबरें रिकॉर्ड कर सके। दिन के दौरान, कुछ परेशान करने वाली घटनाएं हुईं।
ये घटनाएँ होती रहीं—चाहे हत्याएँ हों या पुलिस और

सुरक्षा बल। किसी भी समय कुछ भी हो सकता था, जिससे हम घबरा गए थे, लेकिन
हम काम करते रहे।
एक दिन हम झेलम नदी में नाव से यात्रा करते हुए शहर का दृश्य रिकॉर्ड कर रहे थे।
श्रीनगर अपने सदियों पुराने लकड़ी के घरों, मस्जिदों और ऐतिहासिक नदी के दोनों किनारों पर मंदिर हैं। हमारी नाव ने दूसरी मंजिल पार की।
हम हब्बा कदल पुल के पास पहुँचे और तीसरे पुल, फथा कदल के पास पहुँच गए।
नदी के बाईं ओर रघुनाथ मंदिर स्थित था। मैंने पहले कभी वहां दर्शन नहीं किए थे।
इससे पहले, मैंने अपने नाविक से घाट पर लंगर डालने को कहा ताकि मैं नदी के उस पार से शाह हमदान दरगाह की कुछ तस्वीरें ले सकूँ। हम नाव से उतर गए,
मंदिर की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़े, और कैमरा लगाने से पहले
शूटिंग के दौरान, हम अंदर गए। मंदिर को देखकर हम चौंक गए।
केवल खाली दीवारें थीं और किसी भी देवता की एक भी मूर्ति नहीं थी। सन्नाटा पसरा हुआ था।
सन्नाटा पसरा हुआ था—हममें से कोई एक शब्द भी नहीं बोल पा रहा था। खाली जगह डरावनी थी; वहाँ सन्नाटा छाया हुआ था।
दीवारों पर काले रंग से तरह-तरह के राजनीतिक नारे लिखे हुए थे और
इस्लामी अलगाववादियों द्वारा लिखे गए कुछ भारत-विरोधी नारे। यह भित्तिचित्र
कश्मीर संघर्ष के बारे में बहुत कुछ पता चलता है। कुछ स्थानीय लड़के खेल रहे थे।

परिसर। हमने उनसे मंदिर की स्थिति के बारे में पूछा, और उन्होंने
उन्होंने बस इतना कहा कि लोग बंदूकें लेकर आए थे। उन्होंने उस विशाल श्रृंखला पर गोली चलाई।
मंदिर की धातु की घंटी को सहारा दिया हुआ था। जब हमने चारों ओर देखा, तो हमें
देखा कि पंडितों के सभी घर जल गए थे। चारों ओर
अधिकांश भाग खंडहरों में तब्दील हो चुका था, जिनमें घर भी शामिल थे। पुरानी खिड़कियाँ लटकी हुई थीं, जिनसे दृश्य दिखाई दे रहा था।
बचे हुए कुछ कमरों के अंदरूनी हिस्से, लेकिन बाकी सब कुछ पूरी तरह से नया था।
मलबे का ढेर, एक निराशाजनक और दयनीय दृश्य।
जब हमने नदी के विपरीत किनारे की ओर देखते हुए एक कैमरा लगाया शाह हमदान दरगाह के सामने झेलम नदी के किनारे, मेरे कैमरामैन को कुछ महसूस हुआ।
उसके पैरों के नीचे। हम सबने देखा और पाया कि वह अच्छी तरह से पॉलिश किया हुआ, चिकना और गोल था।
पत्थर। मैंने और उसने मिलकर पत्थर को मिट्टी से बाहर निकालने के लिए उसे पलटने की कोशिश की, जहाँ वह
वह जंगली घास में फंसा हुआ था। जब हमने उसे थोड़ा हिलाकर उल्टा किया, तो
नीचे, मेरे कैमरामैन ने अपने तमिल लहजे में कहा, 'सर, यह गणेश जी हैं।'
बहुत धार्मिक व्यक्ति होने के नाते, उसने इसे अपने हाथों से थोड़ा साफ किया और
गणेश जी की विकृत मूर्ति सामने आई। व्यथित होकर उन्होंने कहा, 'सर, मैं इसे ले जा रहा हूँ।'

घर।’ मैंने उसे याद दिलाया कि हम यहाँ से कुछ भी नहीं ले जा सकते, यहाँ तक कि एक

विकृत देवता। हम सब बड़ी मुसीबत में पड़ सकते थे, इसलिए हमने बस जाने का फैसला किया।

हम अपनी तस्वीरें लेते हैं और जल्दी से निकल जाते हैं।

अचानक, हर तरह के हथियारों से लैस एक सैन्य टुकड़ी प्रकट हुई। सैनिकों

उन्होंने हमसे पूछताछ शुरू कर दी और हमारे पहचान पत्र मांगने लगे। समझाने के बाद

उनकी हर बात को संतुष्ट करने के बाद, उन्होंने हमें उस क्षेत्र को खाली करने का आदेश दिया।

तुरंत। जाने से पहले, जिज्ञासावश मैंने वरिष्ठ अधिकारी से पूछा, 'आपको कैसे पता चला कि हम यहाँ थे? हमें किसी ने नहीं देखा।' अधिकारी हँस पड़ा।

‘हमें आप लोगों के बारे में वायरलेस संदेश मिला है।’ हमारा पीछा किया गया होगा।

एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तक संदेश पहुंचता गया, और इस तरह संदेश दूसरे क्षेत्र तक पहुंच गया।

दूसरे इलाके में सुरक्षा दल तैनात था। उन्होंने हम पर कड़ी नजर रखी होगी।

हमने अपना सामान समेटा और अपनी नावों में वापस बैठ गए, कोई बात नहीं करना चाहता था। केवल...

चप्पूओं की आवाज सुनाई दी, जो नाव को धारा के साथ नीचे की ओर खींच रही थी।

एक और दिन, मैंने तांबे के बर्तन बनाने के बारे में एक कहानी शूट करने की योजना बनाई थी, और

स्थानीय कारीगरों ने किस प्रकार सुंदर और सजावटी बर्तन बनाए?

तांबे से बनी नाजुक डिज़ाइनों वाली वस्तुएँ। इस विशेष शिल्प में, उस्ताद

कारीगरों ने विश्व प्रसिद्ध वस्तुएँ बनाईं। मेरे टैक्सी ड्राइवर को उनमें दिलचस्पी हो गई।

हम इस तरह के काम की फिल्म बनाना चाहते थे और उन्होंने हमें वहां ले जाने के लिए स्वेच्छा से आगे आने की पेशकश की।

तांबे के बर्तनों की कार्यशाला। अगले दिन, हम श्रीनगर के मुख्य इलाके में घूमने निकले।

जहां तांबे के हस्तशिल्प निर्माताओं की कार्यशालाएं बहुतायत में फैली हुई थीं।

हमारा ड्राइवर हमें पुराने शहर की संकरी गलियों और उप-गलियों से होते हुए ले गया जब तक कि

अंततः, हम एक बड़े कश्मीरी घर में दाखिल हुए।

कार्यशाला के मालिक ने हमारा स्वागत किया, वे हमें पाकर प्रसन्न थे।

उन्होंने मुझे भाई कहकर संबोधित किया, यह उनकी ओर से एक स्नेहपूर्ण भाव था। उन्होंने मेरे लिए चाय तैयार रखी थी।

हम सभी। जब हम चाय का आनंद ले रहे थे, तब उन्होंने हमें अपनी सारी बातें विस्तार से समझाईं।

शिल्प कला में तांबे की सपाट चादर से लेकर सुंदर वस्तुएं बनाने तक की सारी प्रक्रिया शामिल है।

इससे बाहर। उन्होंने हमें प्रक्रिया के हर चरण को विस्तार से फिल्माने के लिए कहा।

उन्होंने इस कला की बारीकियों को समझाया। हमें सभी दृश्यों की शूटिंग में लगभग पूरा एक दिन लग गया।

इस प्राचीन, पारंपरिक शिल्प के तत्वों को उजागर करते हुए, सभी तकनीकों और तकनीकों का खुलासा किया गया है।

इसे सौंदर्यपूर्ण रूप से समृद्ध बनाने के लिए आवश्यक विभिन्न रसायनों के बारे में।

पूरी प्रक्रिया के दौरान, हमने अपना सामान पैक करना शुरू कर दिया। मालिक ने फिर

उन्होंने चाय पीने पर जोर दिया। मुझसे उन्होंने कहा, 'तुम्हें एक खास चाय मिलने वाली है।'
मैं नमक वाली चाय पीऊंगा, जबकि बाकी लोग लिप्टन चाय पिएंगे।' दरअसल, यह एक बड़ी चाय पार्टी साबित हुई, एक साधारण पार्टी नहीं बल्कि एक
एक विस्तृत भोज जिसमें केक और कश्मीरी बेकरी की विशेष वस्तुएं शामिल होती हैं।
अलग-अलग तरह के। मैंने उससे कहा कि उसे इस विस्तृत प्रक्रिया में पड़ने की कोई आवश्यकता नहीं थी।
व्यवस्था। उन्होंने उत्तर दिया, ‘चूंकि मेरा भाई पहली बार मेरे घर आया है, वह भी इतनी दूर से, इसलिए इतना तो अनिवार्य है। और ये सभी लोग
आपको कश्मीरी आतिथ्य सत्कार के बारे में पता होना चाहिए।’ उन्होंने अपनी बात रखी।
कश्मीरी पंडितों के अपने घर छोड़ने को लेकर असंतोष। वह बहुत ही बहुत ही दयालु व्यक्ति। जब हम जाने लगे, तो उन्होंने मुझे फिर से अपने घर पर रात बिताने का निमंत्रण दिया।
उसका घर। इस गर्मजोशी और प्यार से, मैंने खुद से कहा: कश्मीर जो मैं
जिस जगह मैं पला-बढ़ा, क्या वह जगह अभी भी जीवित है?
जब हम अपनी टैक्सियों में बैठे, तो मेरे ड्राइवर ने कहा, जिसकी मदद के बिना हम नहीं चल सकते थे।
उन्होंने ऐसा किया और मुझसे पूछा, 'तो, क्या आप आज अपने काम से खुश हैं?'
मैंने जवाब दिया, 'बिल्कुल, और सिर्फ आपकी वजह से।'
उन्होंने मुझे देखकर मुस्कुराते हुए कहा, 'क्या तुम्हें पता है कि तुम किसके घर में थे?'
कार्यरत?'

मैंने कहा, 'मुझे कैसे पता चलेगा?'
वह फिर मुस्कुराया और बोला, 'यह लैट्रम का घर है।'
मैंने पूछा, 'कौन सा लैट्रम?'
थोड़ा आश्चर्यचकित होकर उसने कहा, 'कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम लैट्रम को नहीं जानते?'
मैंने जवाब दिया, 'मैं कसम खाता हूँ कि मुझे बिल्कुल भी पता नहीं है।'
वह हँसते हुए बोला, 'मुश्ताक लाट्रम।'
अचानक मेरी नींद खुली, ‘वो मुश्ताक लाट्रम? जिसे अदला-बदली करके रिहा किया गया था?’
कंधार हवाई अड्डे पर जब आतंकवादियों ने भारतीय विमान का अपहरण किया था
Amritsar?’
टैक्सी ड्राइवर ने कहा, 'हाँ, यह वही लैट्रम है। यह इस आदमी का है।'
भाई।'
हमें हाजान जाकर प्रसिद्ध लोक संगीतकार अली की रिकॉर्डिंग करनी थी।
मुहम्मद शेख। जब मैंने रिकॉर्डिंग मांगने के लिए उन्हें फोन किया, तो उन्होंने
उन्होंने जोर देकर कहा कि रिकॉर्डिंग उनके हाजान स्थित घर पर ही होनी चाहिए, जो आतंकवाद का एक प्रमुख केंद्र है।
उन दिनों लगभग हर दिन किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा की गई हत्याओं की खबरें आती थीं।
लोग। हम हाजन के लिए सुबह थोड़ा जल्दी रवाना हुए। यात्रा के बाद लगभग एक घंटे तक हाईवे पर चलने के बाद, हम एक छोटी सी संपर्क सड़क पर मुड़ गए।

हरे-भरे धान के खेतों के बीच। एक जगह, जब हम बाईं ओर मुड़कर एक सड़क पार करने लगे।

पुलिया के पास, हमने एक चेकपॉइंट पर कई बसें और वैन खड़ी देखीं।
मैं अपनी गाड़ी से बाहर निकला और देखा कि स्थानीय युवकों का एक समूह AK-47 बंदूकें लिए जाँच कर रहा था।

हर वाहन की तलाशी ली जा रही थी और लोगों की भी। यह सोचकर मेरा दिल बैठ गया।

शायद यही हमारा अंत होगा। मैंने उनके चेहरों को देखा—निर्दयी हत्यारों की छवियाँ,

भावहीन आँखें, मछली की आँखों जैसी। वे गंदी लग रही थीं, शायद।

कई हफ्तों से नहाया नहीं था। मैंने अपने गैर-कश्मीरी क्रू सदस्यों को भी ऐसा न करने के लिए कहा था।

जब तक मैंने उन्हें मना न किया, तब तक वे गाड़ियों से बाहर निकल गए। मुझे उनकी जान का खतरा था।

One of the gunmen approached me and asked in Hindi, ‘Kahan ja rahe

'हो [आप कहाँ जा रहे हैं]?' मैंने कश्मीरी में उत्तर दिया और उन्हें हमारे बारे में बताया।

हाजन के प्रसिद्ध गायक अली मोहम्मद शेख की रिकॉर्डिंग का कार्य।

तभी भारतीय सेना की एक जीप वहां से गुजरी, जिसमें कुछ वरिष्ठ अधिकारी बैठे थे।

जीप नहीं रुकी, लेकिन बंदूकधारियों के समूह ने अधिकारियों को सलाम किया और नारे लगाए।

‘जय हिंद, सर!’ मैं असमंजस में पड़ गया। किसी ने मेरे कान में फुसफुसाकर कहा कि वे

कूका परे के आदमी भारतीय सेना के लिए काम कर रहे थे। मुझे एहसास हुआ कि वे थे

भारतीय सुरक्षा बलों के लिए काम करने वाले बागी आतंकवादी।

मैं थोड़ा निश्चिंत हो गया। थोड़ी देर बाद उनमें से एक व्यक्ति सवाल पूछने लगा और
वह हमारे उपकरण, विशेष रूप से कैमरा, की जाँच करना चाहता था। मैंने उसे बताया कि यह एक
एक खाली कैमरा जिसे हम शूटिंग के समय फिल्म से भरेंगे। मुस्कुराते हुए उसने कहा, 'नहीं, मुझे अपना उपकरण दिखाओ। तुम जानते हो कि...'
अहमद शाह मसूद, तालिबान विरोधी बलों के कमांडर
अफगानिस्तान में, एक कैमरे में रखे बम से उसकी मौत हो गई, जिसे लाया गया था।
एक साक्षात्कार के लिए। बम फटा और वह मारा गया।' हमने चुपचाप खोला
हमने अपने बैग उसे चेक करने के लिए दे दिए। उसके बाद उसने हमें आगे जाने की अनुमति दे दी।
हम हाजान शहर की ओर जा रहे थे। हमें समझ नहीं आ रहा था कि हँसें या रोएँ।
हम गाड़ी चलाकर चले गए। यह एक अजीबोगरीब चेक-पॉइंट का अनुभव था। हम हाजन कस्बे के मुख्य बाजार में दाखिल हुए, जहाँ अधिकांश दुकानें खुली थीं। दुकानदारों ने हमें अजीब नज़रों से देखा, और हम
मैंने एक दुकान में एक युवक को देखा जिसके हाथ से बंदूक की नली बाहर निकली हुई थी।
एक व्यक्ति अपने फिरन के अंदर था और दूसरा व्यक्ति खुलेआम अपनी बंदूक दिखा रहा था। उन्होंने एक
सड़क पार करने वाले हर व्यक्ति और हर चीज़ पर कड़ी नज़र रखी जा रही थी। इसने मुझे याद दिलाया कि...

गुने द्वारा निर्देशित तुर्की फिल्म YOL। एक दृश्य में, राजनीतिक गुंडे और बदमाश कसाईयों और लोहारों की दुकानों के अंदर घुस जाते हैं।
और शहर को कड़ी निगरानी में रखने के लिए बढ़ई तैनात किए गए थे। यदि कोई विरोध प्रदर्शन या
जब सड़कों पर प्रतिरोध हुआ, तो ये गुंडे हरकत में आ गए और
विरोध प्रदर्शन को दबाने के लिए प्रदर्शनकारियों को मार डाला गया और घायल कर दिया गया। यह फिल्म
फिल्म पर प्रतिबंध लगा दिया गया और फिल्म निर्माता को राष्ट्रविरोधी गतिविधि के आरोप में जेल भेज दिया गया।
हाजन स्ट्रीट, गुने की फिल्म के किसी दृश्य के वास्तविक रूप जैसी लग रही थी।
अली मोहम्मद शेख के घर पहुँचकर उन्होंने सबसे पहले मुझसे पूछा,
क्या आप हमारे रहनुमाओं (देखभालकर्ताओं) से मिले? वे हमारी अच्छी देखभाल कर रहे हैं।
इस शहर में।'
चाय के साथ थोड़ा आराम करने के बाद, हमने रिकॉर्डिंग शुरू की। उन्होंने कुछ बहुत ही बेहतरीन गाने गाए।
लोकप्रिय, दिल को छू लेने वाले गाने। हमने उनसे उनके जीवन और उनके बारे में बात की।
उन्होंने वर्तमान स्थिति पर टिप्पणी करने से बुद्धिमानीपूर्वक परहेज किया।
राज्य की स्थिति ऐसी थी कि कहीं उसे इसकी कीमत अपनी जान देकर न चुकानी पड़े। जब हम उसके घर से निकले,
घर, हम वापस उसी रास्ते से नहीं जाना चाहते थे, इसलिए शेख ने खुद उन्होंने हमें सुरक्षित रूप से श्रीनगर वापस ले जाने के लिए एक वैकल्पिक मार्ग का सुझाव दिया।

इस श्रृंखला ने मुझे राज्य के आंतरिक भागों और कई स्थानों की यात्रा करने का अवसर दिया।

भारत के अन्य हिस्सों में भी। हर जगह कश्मीरियों से मिलना और उनसे बातचीत करना बेहद दिलचस्प था।

1947 के बाद उनकी प्रतिभा और राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान को देखें।

मुझे ऐसी अद्भुत कहानियाँ पता चलीं जिनके बारे में किसी को पता नहीं था। यह मेरे लिए आँखें खोलने वाला अनुभव था।

पूरी इकाई को यह एहसास हुआ कि कश्मीरी लोगों ने चुपचाप काम किया था

कला, शिल्प, शिक्षा, लोककथा, समुद्र विज्ञान आदि क्षेत्रों में दशकों का अनुभव।

भाषाविज्ञान और कई अन्य विषय जिन पर सार्वजनिक ध्यान नहीं जाता। इसे बनाते समय

घास (विजन) नामक श्रृंखला के दौरान, मैं कई ऐसे लोगों से मिला जिन्होंने मुझे जुड़ने में मदद की।

अन्य लोगों को, जिससे मुझे विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करने का अवसर मिलता है।

हमने शिक्षाविदों और नागरिक समाज के सदस्यों के साथ संस्कृति पर चर्चा की।

राज्य के विभिन्न सांस्कृतिक संस्थानों, जैसे कि सांस्कृतिक संस्थानों की स्थिति

अकादमी।

जो कुछ घटित हुआ वह परेशान करने वाला था। ग्यारह वर्षों की अवधि के भीतर

आतंकवाद के कारण कश्मीरी सांस्कृतिक परिदृश्य बंजर हो गया था।

कारीगरों का एक वर्ग घाटी में ही रुका रहा, चुपचाप अपनी कलाकृतियाँ बनाता रहा, बिना किसी प्रदर्शन या प्रदर्शनी के, इस डर से कि कहीं उन्हें अलग-थलग न कर दिया जाए।

आतंकवादियों के मकसद के गद्दार। रचनात्मक समुदाय में भय का माहौल छा गया।
इतनी तंग जगह कि उनमें से अधिकांश अपने-अपने खोल में सिमट गए, जिससे
सन्नाटा छा गया। कलाकारों का एक बड़ा वर्ग घाटी छोड़कर चला गया। दरअसल,
जिस दिन बड़े पैमाने पर पलायन शुरू हुआ, उसी दिन कश्मीर के रचनात्मक समुदाय का विभाजन हो गया।
कश्मीर घाटी के कश्मीरी पंडितों का दौर शुरू हुआ। जब भी मैं उनमें से किसी से मिलता था,
जो कलाकार वहीं रहे या जो चले गए, उन्होंने क्रोध और बेबसी व्यक्त की।
और उनके नुकसान के एहसास पर दुख।
मुझे याद है कश्मीर विश्वविद्यालय में एक सेमिनार के दौरान मैंने
एक दिन संयोगवश वहां मौजूद रहने के दौरान, मेरी मुलाकात गुलाम नबी ख्याल से हुई, जो एक
एक सत्र के बाद, प्रख्यात कवि और कथाकार ने मुझसे पूछा, 'आपने क्या किया?'
सेमिनार के बारे में सोचो?’ शिष्टाचार और थोड़ी जिज्ञासा के कारण, मैं नहीं चाहता था
अपनी राय देने के लिए। मैंने बस इतना कहा, 'यह अच्छा था।' उनकी तत्काल प्रतिक्रिया थी।
मैंने पूछा, ‘आप लोग क्या कह रहे हैं? यह एक अधूरा सेमिनार है।’ कश्मीरी पंडित दूसरा दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करते थे। यह एक अलग दृष्टिकोण था।
एकतरफा।' मैंने उससे कुछ नहीं कहा, लेकिन मैंने उसकी बातों में सच्चाई को पहचान लिया।

ख्याल साहब ने कहा था कि पंडित समुदाय का कोई राजनीतिक महत्व नहीं है।

लेकिन शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में उनके हस्तक्षेप ने दायरे को व्यापक बना दिया था।

बहस और चर्चा के दायरे को बढ़ाते हुए, संपूर्ण संवाद को एक नई ऊंचाई पर ले जाना।

14

विविध सांस्कृतिक स्थलों की खोज

एक दिन मैं दक्षिण अफ्रीका के अकिंगम में भंड पथेर समुदाय से मिलने गया।

कश्मीर, अनंतनाग के पास। मेरा भांड जनजाति से लंबे समय से संबंध था।

पैथर समुदाय के साथ समय-समय पर काम करने के बाद, लेकिन उदय के साथ

मोबाइल फोन आने से पहले के दिनों में उग्रवाद के कारण संपर्क बनाए रखना मुश्किल था।

उनके साथ। वे श्रीनगर से काफी दूर गांवों में रहते थे। जिस दिन मैं पहुंचा

भांड परिवार के सभी लोग एक घर में इकट्ठा हुए थे। घर में प्रवेश करते ही मुझे गर्मजोशी से गले लगाया गया।

लेकिन जल्द ही माहौल मातम में बदल गया। उनमें से अधिकतर लोग रोने लगे।

चुपचाप, जिसमें उस्ताद भी शामिल थे, जो मुझसे काफी उम्रदराज थे।

वरिष्ठ भंडों में से एक, स्वर्गीय अली मोहम्मद भगत ने यह कहानी सुनाई थी...

पिछले एक दशक में उन्होंने जो कुछ झेला था। हिंसा शुरू होने के बाद से, वे
दस वर्षों में एक बार भी प्रदर्शन नहीं किया था। उन्होंने अपनी स्वर्णई को छिपा लिया था, जो
वे लंबी, पतली बांसुरियाँ थीं, इस डर से कि उग्रवादी उन्हें नष्ट कर देंगे, जैसा कि उन्होंने किया था।
उनके परिधान, सामान, मुखौटे और ढोल। वे सीधे तौर पर
उन्हें अपने प्रदर्शन बंद करने का आदेश दिया गया क्योंकि उन्हें गैर-इस्लामिक माना जाता था और
पवित्र कुरान में दिए गए निर्देशों के विरुद्ध। उनके छोटे बच्चे थे।
उन्होंने अपनी पैतृक कला को त्याग दिया और हस्तकला के माध्यम से जीविका कमाना पसंद किया।
मजदूरी या अन्य छोटे-मोटे काम। युवा पीढ़ी अपने कामों को नीचा समझती थी।
अपनी कला के प्रति उनका लगाव था, क्योंकि उन्हें लगता था कि इससे उन्हें समाज में कोई सम्मान या प्रतिष्ठा नहीं मिली है।
वे सम्मानजनक जीवन जीना चाहते थे। वे इस परंपरा को जारी नहीं रखना चाहते थे।
भंड परिवार पहले ही मोहम्मद सुभान भगत के रूप में एक नेता को खो चुका था।
स्थानीय आतंकवादी समूहों के निर्देशों का परिणाम। उग्रवादियों ने इसे
उसे भारत समर्थक बताकर उसके ऊपर पाँच उग्रवादियों की अध्यक्षता में एक 'मुकदमा' चलाया गया।
अपना घर। मैंने पहले ही बताया है कि कैसे उन्होंने उसकी जान बख्श दी, लेकिन
इस शर्त के साथ कि वह नजरबंद रहेगा और जुर्माना अदा करेगा।

परिवार और गांव वालों के सामने हुए अपमान का उन पर गहरा असर पड़ा। उनकी आवाज चली गई और कुछ समय बाद एक अज्ञात बीमारी से उनका निधन हो गया।
यह शायद किसी बीमारी से ज्यादा एक मनोवैज्ञानिक विकार है। मैंने कुछ देर तक भंड्स को सुना। एक समय मैंने उनसे पूछा कि क्या वे
उन्हें प्रदर्शन करने की तीव्र इच्छा हुई। उन्होंने सर्वसम्मति से उत्तर दिया, 'हाँ! बिल्कुल! लेकिन
कैसे?’ उस समय मेरे पास कोई जवाब नहीं था, इसलिए मैंने उनसे कहा कि मैं ऐसा करूँगा।
वापसी और उम्मीद है कि हम साथ मिलकर काम करेंगे। क्योंकि वे सब कुछ खो चुके थे।
मैंने उनकी संपत्ति, ढोल और वेशभूषा उन विनाशकारी उग्रवादियों को दे दी।
उन्हें नए खरीदने के लिए कुछ पैसे दिए। हमने उनसे वादा लेकर विदा ली कि हम यहीं रहेंगे।
एक दूसरे को स्पर्श करना।
नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के पास एक एक्सटेंशन प्रोग्राम है।
जिसके तहत यह देश के विभिन्न हिस्सों में हर तरह की गतिविधियाँ संचालित करता है।
लोक नृत्य, संगीत और रंगमंच जैसी कलाओं के लिए विभिन्न उत्सवों का आयोजन करना।
मुख्यतः क्षेत्रीय कलाकारों के लिए, विशेषकर उत्तर-पूर्वी राज्यों के कलाकारों के लिए।
विभिन्न राज्यों में कई कला रूपों को समाहित करने वाले राष्ट्रीय उत्सव
उत्तर-पूर्व। उत्तर-पूर्वी राज्यों के सांस्कृतिक समूह भी प्रदर्शन करते हैं।

देश के विभिन्न हिस्सों में, उन राज्यों में साल भर सांस्कृतिक गतिविधियाँ होती हैं।

यह कैलेंडर देश के बाकी हिस्सों को इससे अवगत कराने की उम्मीद में किया जाता है।

उस क्षेत्र की जीवंत संस्कृतियों को संरक्षित करने के साथ-साथ अन्य संस्कृतियों को भी एकीकृत करना।

इस क्षेत्र को देश के बाकी सांस्कृतिक मानचित्र में समाहित करने की कोई योजना नहीं है। दुर्भाग्यवश, कोई योजना नहीं है।

जम्मू और कश्मीर राज्य के लिए भी इसी तरह की व्यवस्थाएं मौजूद थीं। जबकि ज़मीनी हकीकत कुछ और थी।

भारत के उत्तर-पूर्वी भाग के कुछ राज्यों की वास्तविकताएँ अन्य राज्यों की वास्तविकताओं के समान थीं।

कश्मीर, मुझे इस तरह का पाखंड समझ में नहीं आया।

भारत सरकार।

हम सभी ने महसूस किया कि जम्मू और कश्मीर राज्य में, विभिन्न कारणों से

हर जगह परिस्थितियाँ और बड़ी गड़बड़ियाँ, एक तरह का खालीपन पैदा कर रही हैं।

एक समस्या उत्पन्न हो गई थी, जिसका समाधान करना आवश्यक था। नियमित रूप से बंद होने के कारण

संस्थानों, विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और स्कूलों के पतन से निराशा का माहौल छा गया था।

यह बात उन लोगों के मन में घर कर गई, जो लगातार तनाव से थक चुके थे।

हिंसा और मृत्यु की उपस्थिति और सुरक्षा बलों की दमनकारी निगाहें

कर्मचारी। वर्षों से युवा पीढ़ी ने एक ऐसे दिन का अनुभव नहीं किया था जिसे 'सामान्य' दिन कहा जा सके। लोग हफ्तों तक घर के अंदर रहना पसंद करते थे।

इससे कई मानसिक बीमारियाँ उत्पन्न हुईं। उनकी मदद करना एक असंभव कार्य प्रतीत हुआ।

बहुत बड़ा और असंभव, लेकिन शुरुआत कहीं न कहीं से तो करनी ही पड़ती है।

इसलिए जब नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा एक्सटेंशन विंग ने मुझसे पूछा कि

छत्तीसगढ़ में चार सप्ताह की नाट्य कार्यशाला का निर्देशन करें, मैंने निर्देशक से कहा।

उस समय एनएसडी में देवेंद्र राज अंकुर थे, जिनके साथ मैंने थिएटर का संचालन किया था।

छत्तीसगढ़ में 1976 से कई वर्षों तक कार्यशालाएँ आयोजित की गईं, और यह कि

अब मुझे इस संभावना में कोई उत्साह नहीं था। मैंने प्रस्ताव दिया कि हम कुछ दिखाएँ।

अंकुर ने साहस दिखाया और कश्मीर में एक थिएटर कार्यशाला का आयोजन किया। तुरंत ही

उन्होंने जवाब दिया और मुझे कुछ दिनों का समय दिया ताकि मैं उनके पास योजना लेकर वापस आ सकूँ। मेरे पास

अंततः कश्मीर में काम फिर से शुरू करने का अवसर मिल गया।

मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि एनएसडी ने पहली कार्यशाला के लिए धनराशि आवंटित की।

कश्मीर में। जब मैंने 2000 की गर्मियों में योजना बनाना शुरू किया, तब वहां की स्थिति कुछ इस प्रकार थी:

घाटी बहुत भयानक थी। यह कार्यशाला आवासीय कार्यक्रम के रूप में ही आयोजित करनी पड़ी।

कार्यक्रम के लिए, मुझे एक ऐसी जगह ढूंढनी पड़ी जहाँ हम सभी एक साथ रह सकें और काम कर सकें।

प्रोजेक्ट। मैं श्रीनगर भागा ताकि चार लोगों के लिए मुफ्त में उपलब्ध जगह मिल सके।

कुछ हफ़्ते। मैं अपने कुछ दोस्तों और कुछ सहयात्रियों से मिला, थिएटर में नहीं।

ये लोग कश्मीरी समाज का हिस्सा हैं—शिक्षाविद, सरकारी कर्मचारी और

सामाजिक कार्यकर्ताओं को शुरू में यह समझ नहीं आया कि इस तरह की परियोजना क्या होती है।

इसमें क्या शामिल होगा। मैंने समझाया कि जब इस तरह का प्रोजेक्ट किसी को भी दिया जाता है

राज्य में, स्थानीय लोगों को भागीदार के रूप में शामिल होना होगा और कम से कम एक निःशुल्क योगदान देना होगा।

आयोजन स्थल, स्थानीय आवास, भोजन और अन्य बुनियादी व्यवस्थाएँ।
सौभाग्य से, इनमें से कोई भी नहीं।

वे किसी भी राजनीतिक पूर्वाग्रह से ग्रस्त नहीं थे। उन्हें बस नागरिकों की चिंता थी।

राज्य। मेरे सिविल सेवक मित्र शफी पंडित, जो मेरी बात समझते थे।

आवश्यकताओं ने बहुत मदद की।

उन्होंने शेर-ए-कश्मीर कृषि विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार, गोरा को फोन किया और

हमने उन्हें अपनी परियोजना और उसकी आवश्यकताओं के बारे में बताया। रजिस्ट्रार ने

विश्वविद्यालय मुझसे मिलना चाहता था ताकि वे ठीक से समझ सकें कि हमें क्या चाहिए।

विश्वविद्यालय स्थित शालीमार गार्डन की ओर दौड़ पड़े। मुख्य मार्ग से

प्रवेश द्वार से परिसर बेहद खूबसूरत लग रहा था, जो विशाल बागों के बीच स्थित था और तीन तरफ से ज़बरवान की पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ था। प्रकृति

विश्वविद्यालय परिसर पर इसका प्रभुत्व है; यह हरा-भरा और शांत है मानो प्रतिनिधित्व कर रहा हो

कश्मीर अपनी प्राचीन गरिमा और सुंदरता के साथ।
रजिस्ट्रार गोरा बहुत ही मिलनसार और मेहमाननवाज थे। उन्होंने मुझे परिसर का भ्रमण कराया।
कैंपस। हम कैंपस की पहाड़ी सड़कों से होते हुए गए और रुक गए। जंगल के बीचोंबीच एक बंगले के सामने। रजिस्ट्रार ने हमें दिखाया कि कहाँ
हम वहीं रुकेंगे। यह एक खाली हॉस्टल की इमारत थी जिसमें एक बड़ा हॉल और एक
रसोई। यह हमारे लिए ठीक था, लेकिन मैंने पहले ही एक छोटे होटल में ठहरने का फैसला कर लिया था।
शहर में अन्य संकाय सदस्यों के साथ।
जब हम अपने संकाय आवास की तलाश कर रहे थे, तब हमने एक विशेष स्थान को चुना था।
हमने एक होटल बुक किया, लेकिन वह हमारे बजट से काफी बाहर था।
हैरानी की बात यह है कि होटल मालिक
उन्होंने ज़िद की कि हम फिर भी रुकें। जब मैंने उन्हें समझाया कि यह हमारे बस से बाहर है।
हमारे साधनों के बारे में, उन्होंने मेरी ओर देखा और कहा, 'आप सभी मेरे होटल में ठहर रहे हैं, और
आपको प्रति कमरा प्रति माह सरकार द्वारा निर्धारित पांच सौ रुपये की दर से भुगतान करना होगा।
मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि हम होटल वेलकम में रहेंगे। श्रीनगर का प्रमुख इलाका बुलेवार्ड। आतंकवाद के कारण इसकी मांग कम हो गई थी।
होटलों के लिए स्थिति इस हद तक बिगड़ गई थी कि मालिक किसी भी राशि को खुशी-खुशी स्वीकार करने को तैयार थे।
वे अपनी जगहें अच्छी तरह से बनाए रखते हैं। हमने अपने ठहरने के लिए लगभग कुछ भी भुगतान नहीं किया।

हमें स्थानीय समाचार पत्र में एक विज्ञापन चलाने की सलाह दी गई थी जिसमें एक घोषणा की गई थी।
नेशनल स्कूल द्वारा आयोजित की जाने वाली शैक्षिक नाट्य कार्यशाला
नाटक के माध्यम से 'शिक्षा' पर जोर दिया जाता है ताकि हमारे प्रति किसी भी प्रकार के अलगाववादी विरोध से बचा जा सके। परियोजना। कार्यशाला के उद्घाटन के दिन, हमने पूछा था कि
सभी प्रतिभागी सुबह 11 बजे रेजिडेंसी रोड स्थित प्रेस कॉलोनी में हमसे मिलें।
वहाँ से हम उन्हें विश्वविद्यालय परिसर तक ले जाएँगे। उस सुबह बारिश शुरू हो गई। मेरे सहकर्मी लोकेंद्र त्रिवेदी और सौती चक्रवर्ती,
हम दोनों एनएसडी स्नातक हैं, और मैं प्रतिभागियों के आने का इंतजार कर रहे थे। हम इंतजार करते रहे।
घंटों सड़क पर भटकते रहे, लेकिन कोई नहीं आया। ठंड बढ़ती जा रही थी, और हम तीनों
हम एक दूसरे को देखते रहे, यह सोचकर कि क्या कोई आएगा भी या नहीं।
कार्यशाला। दोपहर लगभग 2:30 बजे, सौती ने मुझसे पूछा, 'सर, अगर बहुत कम लोग हों तो...'
प्रतिभागियों, क्या हम अपनी कार्यशाला जारी रखेंगे?’ मैंने उत्तर दिया, ‘सूती, भले ही केवल एक ही व्यक्ति हो, हम अपनी कार्यशाला जारी रखेंगे।’ वह और
लोकेंद्र ने मुझे उत्सुकता भरी निगाहों से देखा लेकिन आगे कोई सवाल नहीं पूछा।
हमने इंतजार करते हुए दोपहर का भोजन नहीं किया, लेकिन एक रेस्तरां में खूब सारी चाय पी।
सड़क किनारे ठंड से बचने के लिए पास ही एक छोटी सी दुकान है।

अंततः, शाम लगभग 4 बजे, बारामूला से एक युवक आया।
कम से कम एक छात्र के होने से राहत महसूस करते हुए, हमने उसे चाय पिलाकर उसका मनोरंजन किया।
बिस्कुट। पंद्रह मिनट के भीतर एक और प्रतिभागी आ गया। हमने जारी रखा
शाम करीब 5 बजे तक इंतजार किया, लेकिन कोई और नहीं आया। शाम के उस समय
उन दिनों श्रीनगर को काफी पिछड़ा हुआ माना जाता था। हम सब अपनी जीप में बैठ गए।
और हम अपने दो बहुमूल्य प्रतिभागियों के साथ विश्वविद्यालय की ओर चल पड़े।
कैंपस में, अली मोहम्मद अपनी गर्म नमकीन चाय और स्थानीय रोटी लेकर इंतजार कर रहा था।
हम सब।
चूंकि ये सामान्य समय नहीं थे, इसलिए नियमों को ध्यान में रखना आवश्यक था।
ऐसी कठिन परिस्थितियों में काम करना। दोनों प्रतिभागियों के व्यवस्थित होने के बाद
हॉस्टल में, क्योंकि काफी देर हो चुकी थी, हमने सुरक्षाकर्मियों से बचने के लिए जल्दी से वहां से निकल गए।
जिन लोगों ने हमें बहुत परेशान किया। होटल में हमने चिंता व्यक्त की।
हमारे वर्कशॉप में लोगों के पंजीकरण न कराने के बारे में।
मैंने अपने कुछ सहयोगियों को फोन किया।
परियोजना के बारे में संदेश फैलाने के लिए दोस्तों से संपर्क करें।
अगले दिन, हमने पूरी गंभीरता के साथ अपनी कक्षाएं शुरू कीं, भले ही

हमारे पास केवल दो प्रतिभागी थे। मेरे दोनों सहकर्मियों ने उद्देश्य को समझ लिया था।
और इस तरह के काम का उद्देश्य। उन्हें उत्साहित करने के लिए मैंने एक श्लोक सुनाया।
बर्टोल्ट ब्रेख्त:

अंधकारमय समय में
क्या वहां गायन भी होगा?
जी हां, गायन भी होगा।
अंधकारमय समय के बारे में

यह हमारी कार्यशाला का गुप्त विषय था। हमें आश्चर्य हुआ कि और भी लोगों ने
कार्यशाला के पहले दिन हम पहुंचे। हमने अपनी कक्षाएं जारी रखीं, और
शाम को दूर-दराज के कस्बों से चार और लोग आए। उनसे बात करते हुए, हम
पता चला कि घाटी के भीतर यात्रा करना आसान नहीं था। हर तरह की सुरक्षा चौकियों पर लोगों से पूछताछ की जाती थी और उनके शरीर और सामान की तलाशी ली जाती थी।
इससे यात्रा का समय काफी बढ़ जाएगा। सुरक्षाकर्मियों को संदेह था कि युवा भी इसमें शामिल हो सकते हैं।
आतंकवादियों के समूह में शामिल लोगों से उन्होंने अधिक गहन पूछताछ की।
क्योंकि मौखिक प्रचार अधिक प्रभावी होता है, इसलिए अगले तीन दिनों के भीतर हमारे पास लगभग
तीस प्रतिभागियों में से केवल एक लड़की थी। उनमें से उनतीस

वे हमारे साथ ही रहते थे, लेकिन अकेली लड़की को हर दिन घर लौटना पड़ता था।
दिन। उसे सहज महसूस कराने के लिए, मैंने तय किया कि हमारा वाहन उसे छोड़ देगा।
उसे घर पर ही रखें, अन्यथा वह कार्यशाला बंद कर सकती है।
मेरे लिए यह कीमत अस्वीकार्य है।
क्योंकि हमारे पास पर्याप्त धन नहीं था, इसलिए हमने गांधीवादी शैली को अपनाया।
काम करना, जिसका अर्थ था कि प्रशिक्षण का एक हिस्सा देखभाल करना था।
हमने व्यवस्थाएँ स्वयं कीं। पूरी कक्षा को पाँच-पाँच छात्रों के छह समूहों में विभाजित किया गया था।
प्रत्येक समूह में प्रतिभागी थे। प्रत्येक समूह को निम्नलिखित कार्यों की जिम्मेदारी सौंपी गई थी:
हमारे कार्यक्षेत्र का रखरखाव, भोजन की व्यवस्था, आपूर्ति और स्टॉक-
कार्यशाला का उद्देश्य केवल सही प्रकार का प्रशिक्षण देना ही नहीं था।
रंगमंच का उद्देश्य न केवल प्रतिभागियों में मूल्यों का संचार करना है, बल्कि उन्हें यह सिखाना भी है कि...
जिम्मेदार, तर्कसंगत इंसान बनें जो एक समूह में काम कर सकें और दूसरों के कल्याण की परवाह करना। इसका उद्देश्य केवल उन्हें दुनिया के बारे में सिखाना ही नहीं था।
न केवल रंगमंच के माध्यम से, बल्कि रंगमंच के द्वारा भी उन्हें दुनिया से परिचित कराना।
हमारा उद्देश्य छात्रों को भारतीय रंगमंच को समझाना था और

हम उन्हें संस्कृति और अन्य संस्कृतियों से उसके संबंधों से परिचित कराना चाहते थे। हम उन्हें नई संस्कृतियों से रूबरू कराना चाहते थे।
प्रदर्शन कलाओं में सिद्धांतों और प्रथाओं पर विशेष जोर देते हुए
कश्मीर के रंगमंच, साहित्य और राज्य की अन्य प्रदर्शन कलाएँ। औसत कश्मीरी अपने अतीत के बारे में बहुत कम जानता है क्योंकि अधिकांश
संरक्षित ज्ञान आम लोगों की भाषा में उपलब्ध नहीं है। अधिकांश हमारे अधिकांश लिखित अभिलेख या तो संस्कृत में हैं या फारसी में, दोनों ही भाषाएँ
यह शासकों की बात है, आम आदमी की नहीं। किसी कारणवश, कश्मीरी भाषा में
यह न तो कभी अदालतों की भाषा रही है और न ही शिक्षा की।
कुछ गिने-चुने बुद्धिजीवियों के अटूट दृढ़ संकल्प ने, जिन्होंने कथा लेखन किया,
कश्मीरी भाषा में कविता और नाटक के क्षेत्र में, कश्मीरी भाषा में मौलिक रचनाओं का एक बड़ा संग्रह मौजूद है। दुर्भाग्य से, अभी भी औपनिवेशिक प्रभाव बना हुआ है।
हमारी मातृभाषा से जुड़ा पाखंड, एक गलत धारणा कि
कश्मीरी भाषा में जटिल अभिव्यक्तियों को संप्रेषित करने की क्षमता नहीं है।
विचार और अवधारणाएँ। इस प्रकार, अपनी माँ के प्रति हीन भावना उत्पन्न होना।
इस भाषा के प्रयोग से कश्मीरी भाषा के विकास को नुकसान पहुंचा है।
इसलिए, मेरी टीम और मैंने जानबूझकर कार्यशाला की शुरुआत परिचित होने के साथ की।

प्रतिभागियों को कश्मीरी संस्कृति, कश्मीरी लोककथाओं और कश्मीरी लेखन से परिचित कराया गया।
कश्मीरी लोक रंगमंच और कश्मीरी संगीत। यहीं से हम आगे बढ़ेंगे।
अध्ययन के क्षेत्र को भारतीय रंगमंच के व्यापक क्षेत्र में विस्तारित करना और फिर उससे आगे बढ़ना।
विश्व रंगमंच में।
कश्मीरी में एक कहावत है: 'किसी में प्रवेश करने की क्षमता होनी चाहिए'
सुई के छेद से होते हुए हाथी के द्वार से बाहर निकलें: अचुन "द्वार बंद है, द्वार बंद है, द्वार बंद है।"
कार्यशाला की सभी गतिविधियाँ पिछले हिस्से में हुईं। विश्वविद्यालय परिसर में, एक खाली छात्रावास में, चुपचाप, बिना कुछ लाए
इमारत के अंदर क्या हो रहा था, उस पर ध्यान केंद्रित किया गया। सौभाग्य से, ऊंचे चिनार के पेड़
हॉस्टल की इमारत का नज़ारा अवरुद्ध हो गया था। रजिस्ट्रार ने मुझे बताया था कि हाल ही में
सुरक्षाकर्मियों द्वारा पहाड़ों से ग्यारह शव नीचे लाए गए। बलों। यह क्षेत्र उग्रवाद से पूरी तरह मुक्त नहीं था, इसलिए हमें अतिरिक्त सतर्क रहना पड़ा।
कैंपस में आने वाले लोगों से सावधान रहें। चूंकि विश्वविद्यालय
स्कूल बंद था और वहां कोई छात्र नहीं थे, इसलिए सभी खूबसूरत बगीचे हमारे लिए खुले थे।
हम अपना काम करते हैं।
जब हमने शरीर को प्रशिक्षित करने के लिए शरीर और मन के व्यायामों पर काम करना शुरू किया

नियंत्रण और एकाग्रता के मामले में, हमें बहुत अलग-अलग प्रतिक्रियाओं का सामना करना पड़ा।
प्रतिभागियों को हमारे सामान्य तौर पर किए जाने वाले कार्यों से अलग करना। उदाहरण के लिए, एक अभ्यास में
उन्हें अपने आंतरिक विचारों को समूह के किसी सदस्य या किसी अन्य व्यक्ति के साथ साझा करना था।
पूरा समूह—छात्र चुन सकते थे। यह अभ्यास हमारे सामने घटित हुआ।
अधिकांश प्रतिभागियों की ओर से समर्पण की भावना के रूप में, जो उन्होंने अपने टूटे हुए शरीर और मन, आत्मसम्मान की कमी और अपने निराशा की भावना। यह प्रक्रिया कुछ घंटों तक चली। एक-एक करके लोग धीरे-धीरे खुल कर अपनी कहानियाँ सुनाने लगे।
पिछले दस वर्षों की उग्रवाद की घटनाओं ने उन्हें प्रभावित किया। प्रत्येक कहानी में एक इतिहास समाहित था।
वे जिन परिस्थितियों में रहते थे, उनका इतिहास राजनीति से संबंधित नहीं था।
उस समय के हालात थे, लेकिन उस समय की राजनीति के कारण थे। अक्सर इस दौरान
इन सत्रों के दौरान हमारी आंखों में आंसू आ गए थे।
देर रात हम संकाय सदस्यों ने मिलकर दिनभर की चर्चा की।
हमने निष्कर्ष निकाला कि हम सामान्य थिएटर प्रतिभागियों से नहीं निपट रहे थे।
उन्हें रंगमंच के नियमित सिद्धांत और अभ्यास सिखाएं। हम इन विषयों पर चर्चा कर रहे थे:
मानसिक आघात से ग्रस्त। हमने महसूस किया कि शिक्षण योजना को पुनर्व्यवस्थित करना आवश्यक था।
कुछ समय के लिए। इसके लिए, हमें अलग-अलग अभ्यास विकसित करने पड़े जो काम कर सकें।

उनके छिपे हुए घावों पर मरहम लगाने के लिए। हमने अपनी रणनीति बदल दी। हमें मदद करनी ही थी।
उन्हें विश्राम की अवस्था में पहुंचा दें। हमें प्रदर्शन पर जोर देने की आवश्यकता नहीं है।
कार्यशाला का हिस्सा। रंगमंच में, सबसे पहले एक टीम का होना आवश्यक है।
ऐसे लोग जो बिना किसी डर के अपने विचार व्यक्त कर सकें। हमें अपना रुख बदलना पड़ा।
कार्यक्रम पूरी तरह उलट गया। हमने कठोर कार्य करने की योजना बनाई थी।
मनोचिकित्सीय अभ्यास, सत्य खेल, तात्कालिक अभिनय और कहानी निर्माण
हमने कई सत्र आयोजित किए, लेकिन हमने महसूस किया कि ये प्रतिभागी इसके लिए तैयार नहीं थे।
अभी तक।
एक दोपहर, हमने एक अनोखा सत्र आयोजित किया जिसमें हमने अपने मेरे मित्र याकूब शेख, जो एक महान संतूर वादक और गायक थे—एक उस्ताद थे।
कश्मीरी सूफियाना परंपरा। उन्होंने इसकी पृष्ठभूमि और इतिहास के बारे में बताया।
इस संगीत शैली के बारे में एक छोटा सा प्रदर्शन देने के बाद, उन्होंने इसकी तकनीक का संक्षिप्त विवरण दिया।
संतूर वादन और उसका प्रयोग। उन्होंने एक प्रसिद्ध पुराने गीत को गाना शुरू किया।
प्रेम पर आधारित सूफी कविताएँ:

गरमुक को तेल में धीरे-धीरे डालें और हैम पर लगाएं।

हरमुख के द्वार पर प्रतीक्षा करते हुए, आप मुझसे जो भी कहेंगे, मैं आपका अनुसरण करूंगा।

जल्द ही सभी प्रतिभागी शामिल होने लगे। यहां तक कि शिक्षण संकाय भी शामिल हो गया।

गाना तब तक चलता रहा जब तक अंधेरा नहीं हो गया। एक अजीब तरह की अनुभूति हो रही थी।

सभी गायकों के चेहरों पर परमानंद के भाव थे। वे बार-बार पंक्तियाँ दोहरा रहे थे। याकूब ने गाना बंद कर दिया और उन प्रतिभागियों को गाने दिया जो गाना बंद नहीं करना चाहते थे।

जारी रखो। वातावरण आनंद की ध्वनि से भरा हुआ था। शब्द

कविता ने खुद को किसी प्रकार के 'सम' तक पहुँचाया। वहाँ मुस्कानें थीं और

चारों ओर आंसू ही आंसू थे, मानो कोई छिपा हुआ दर्द खुद को ठीक कर रहा हो।

यह सिलसिला जारी रहता, लेकिन हमारे खास आदमी अली मोहम्मद, जो इतने भावुक हो गए थे,

इस लंबे संगीतमय सत्र की शुरुआत कश्मीरी नमकीन चाय के एक बड़े समवार से हुई।

और स्थानीय रोटी, और घोषणा की कि यह उनके साथी की ओर से उनका योगदान है।

मेराक शाह पातशाह, एक स्थानीय फकीर थे जिनकी दरगाह पास ही स्थित थी।

विश्वविद्यालय। हर कोई बिल्कुल अलग ऊर्जा के साथ चाय पीने गया।

चाय का आनंद लेते हुए और एक-दूसरे से बातें करते हुए प्रतिभागी काफी तनावमुक्त थे।

उनके चेहरों पर मुस्कान देखकर, मैंने अपने दो सहकर्मियों से फुसफुसाकर कहा, 'मुझे लगता है कि चाबी मिल गई है।'

इसे घुमाया गया, और इसने ताला खोल दिया।
चूंकि अंधेरा हो चुका था और वापस जाने में बहुत देर हो चुकी थी, इसलिए मैंने उस्ताद याकूब से पूछा
हमारे साथ रात बिताने के लिए। याकूब ने कहा, 'बिल्कुल नहीं, अगर मैं ऐसा नहीं करूंगा तो मेरी पत्नी मर जाएगी।'
घर पहुँच जाओ। तुम्हें पता है हालात सामान्य नहीं हैं। मेरा परिवार पहले से ही वहाँ होगा।
मुझे चिंता हो रही थी क्योंकि काफी देर हो चुकी थी। इसलिए, लोकेंद्र और मैं उसके साथ उसके घर तक गए।
घर, विश्वविद्यालय से एक घंटे की ड्राइव की दूरी पर स्थित है। गाड़ी चलाते समय, मैंने याकूब को इतने खास सेशन के लिए धन्यवाद दिया कि सभी
याकूब ने कहा, 'अगर हालात सामान्य होते तो मैं यहीं रुका रहता।' याकूब ने आगे कहा, 'अगर हालात सामान्य होते तो मैं यहीं रहता।' आप सबके साथ वापस आकर हम पूरी रात गाते रहते। यही बात है। कश्मीर में शुभ की परंपरा।' उन्होंने और सत्र आयोजित करने के लिए स्वेच्छा से आगे आए।
छात्र। नतिपुरा, उनके घर पहुँचते ही हम तुरंत वापस लौट गए। सड़कों पर लगे विभिन्न सुरक्षा बैरिकेड्स के कारण चिंता हो रही है।
कश्मीर के हिसाब से काफी देर हो चुकी थी, इसलिए हमारे ड्राइवर हुसैन ने
हमने गाड़ी की रफ्तार बढ़ा दी। अचानक हमने एक पुलिसवाले को अपनी एसएलआर राइफल ताने हुए देखा।
हम सड़क के बीचोंबीच खड़े थे। हुसैन ने गाड़ी रोक दी।
तुरंत ही एक चीख के साथ। मैंने सुना कि हमारे ऊपर गालियाँ बरसाई जा रही थीं।

सैनिक। वह हमारी कार के ड्राइवर की तरफ गया और हुसैन को थप्पड़ मारा।

कुछ बार। उसने हुसैन पर चिल्लाते हुए कहा, 'तुम धीमी गति से गाड़ी क्यों नहीं चला रहे थे?'

बीम? तुम तो किस्मतवाले हो। मैं तो तुम पर गोली चलाने ही वाला था, लेकिन सौभाग्य से मैंने बाबा [मैं] को उसकी सफेद दाढ़ी के साथ देख लिया, और मैंने ट्रिगर दबाना बंद कर दिया। बेवकूफ!

आप भाग्यशाली हैं क्योंकि आपने अंदर की बत्ती जला रखी थी, और मैं देख सका।

बाबा की सफेद दाढ़ी।’ कुछ देर रुककर पुलिसकर्मी ने कहा, ‘भगवान ने मुझे भी बचा लिया।’

'मैं तुम लोगों को मार डालूंगा।' मुझे दिख रहा था कि वह भी डरा हुआ था क्योंकि उसने ऐसा कहा था।

उसे लगा कि चेकपॉइंट पर फिदायीन हमला हुआ है। मैंने फिर से ठीक से

हमने अपनी गलती के लिए माफी मांगी। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ से हूँ, और मैंने जवाब दिया।

कि मैं दिल्ली से आया हूँ और यहाँ पढ़ाने आया हूँ। उसने हुसैन की ओर देखा और

उन्हें सलाह दी, 'वे आपके मेहमान हैं, इसलिए सुनिश्चित करें कि वे सुरक्षित रहें।'

फिर उसे जाने का आदेश दिया।

कुछ देर तक हममें से किसी ने बात नहीं की, जीप में सन्नाटा छा गया। थोड़ी देर बाद,

हुसैन ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा, 'दरअसल यह मेरी गलती थी। मैं भूल गया था...'

'हम जल्दी लौट रहे थे इसलिए लो बीम पर गाड़ी चलाओ।' मैंने कहा, 'अब आराम करो।'

हुसैन, हम सुरक्षित हैं।

लेकिन जब हम अपने होटल से मुश्किल से आधा किलोमीटर दूर थे, तभी लगभग

रात 9:30 बजे पुलिस ने हमें एक और चेक पोस्ट पर रोक लिया। कई पुलिसकर्मी तैनात थे।

इस पोस्ट के बारे में। उनमें से एक हुसैन की खिड़की के पास आया और उससे पूछने लगा।

वही आम सवाल: ‘आपका नाम? आप कहाँ से हैं? ये कौन हैं?’

'क्या आपके साथ कोई है?' तभी पुलिसवाले ने मेरी ओर मुड़कर पूछा: 'आप कहाँ हैं?'

'कहां से?' जब मैंने कहा दिल्ली, तो उनका अगला सवाल था, 'दिल्ली के किस हिस्से से?'

मैं भी दिल्ली से हूँ।’ मैंने पलटकर पूछा, ‘आप दिल्ली के किस हिस्से से हैं?’

'मेजर साहब?' मुझे बताया गया था कि इन पुलिसवालों को मेजर साहब कहकर संबोधित करना

इससे उनका शत्रुतापूर्ण रवैया कम होगा, उनका अहंकार बढ़ेगा और वे आपके साथ बेहतर व्यवहार करेंगे।

नरमी से। उसने मुझे देखा और मुझे एहसास हुआ कि वह नशे में था। उसने कहा, 'मैं हूँ'

'गढ़ी गांव से।' मैंने जवाब दिया, 'मुझे पता है, यह लाजपत नगर के पास है और

'मूलचंद अस्पताल।' उन्होंने जवाब दिया, 'जी हां, जी हां, अब मैं पुष्टि कर सकता हूं कि आप

'दिल्ली से हो।' फिर पीछे बैठे लोकेंद्र की ओर देखते हुए उन्होंने पूछा

मैंने उसके बारे में पूछा। मैंने जवाब दिया, 'वह दिल्ली के लक्ष्मी नगर से है।'

मुझे लगा था कि वो हमें जाने देगा, लेकिन नहीं। अब वो मेरा नाम जानना चाहता था।

मेरा पेशा क्या था, और मैं कश्मीर में क्या कर रहा था। उस समय, मैंने विनम्रतापूर्वक

हमने उनसे हमें जाने देने का अनुरोध किया। हमने पूरे दिन काम किया था और होटल के बाकी लोग हमारे लिए चिंतित होंगे। लेकिन उन्होंने हमें जाने नहीं दिया। मुझे एहसास हुआ कि

उसे हमें परेशान करने में मज़ा आ रहा था और हममें से कोई भी इसके खिलाफ कुछ नहीं कर सकता था।

क्योंकि उसके कंधे पर भरी हुई बंदूक थी। हमें इस शराबी पुलिसवाले से निपटना पड़ा।

सावधानी से, क्योंकि उसे अपना आपा खोकर कोई मूर्खतापूर्ण काम नहीं कर देना चाहिए।

इससे हमें नुकसान हो सकता था। मुझे उससे झूठ बोलना पड़ा कि हमारी शिक्षा और रंगमंच की परियोजना हमें नुकसान पहुंचा सकती है।

यह स्थानीय लोगों के लिए था, और मुझे उन्हें यह विश्वास दिलाना था कि मैं एक शिक्षक हूँ। अगर मैं

अगर मैंने उसे बताया होता कि मैं फिल्मों में अभिनय करता हूँ और नाटकों का निर्देशन करता हूँ, तो मुझे ऐसा करना पड़ता।

वहीं पूरी रात रुको और उसके सवालों के जवाब दो।

उन्हें घाटी में मेरे काम के बारे में कुछ जानकारी तो थी, लेकिन वास्तव में हमने क्या किया, यह उन्हें समझ नहीं आया।

यह उसकी समझ से परे था। मैंने उससे फिर से हमें जाने देने का अनुरोध किया।

उसने मुझ पर हंसते हुए चांद की ओर देखा और कहा, 'आज पूर्णिमा होगी।'

आज रात देखो, यह कितना खूबसूरत लग रहा है।’ उसने कोई फिल्मी गाना गाना शुरू कर दिया।

अपना गाना खत्म करने के बाद, वह हमारी ओर मुड़ा और पूछा, 'क्या देर हो रही है?'

आपके लिए? आपसे मिलकर और बात करके अच्छा लगा। आमतौर पर कोई बात नहीं करता।
हमारे लिए यहाँ कुछ खास नहीं है, लेकिन मुझे आपसे बात करके अच्छा लगा। ठीक है, धन्यवाद। आप जा सकते हैं।
अब जाओ, लेकिन याद रखना रात में यात्रा मत करना, यह खतरनाक है।
यह हास्यास्पद था लेकिन साथ ही साथ सच्चाई उजागर करने वाला भी। मैं उसकी तन्हाई और इच्छा को महसूस कर सकता था।
रात के अंधेरे में किसी से संवाद करना।
वर्कशॉप में तेजी आने लगी और हमने अन्य लोगों को भी शामिल करना शुरू कर दिया।
हमारी कक्षाओं के लिए विचार। चूंकि हमारा कार्यक्षेत्र छोटा था और अब और काम नहीं कर सकता था।
अपने सभी व्यावहारिक कार्यों को पूरा करने के लिए, हम जल्दी से लॉन में चले गए।
लोगों की प्रतिक्रिया जानने के लिए हमने हॉस्टल खोला। हमें इस बात का डर था कि कहीं लोगों को पता न चल जाए।
हमारे काम के बारे में। हमारे काम की स्थानीय स्तर पर कई तरह की व्याख्याएं हो सकती हैं।
अगर यह जानकारी किसी को भी मिली तो हमारी सारी मेहनत बेकार हो जाएगी।
उग्रवादी संगठन होने के कारण परेशानी की संभावना थी। हमें सतर्क रहना था।
सावधान रहें और हमेशा पीछे मुड़कर देखते रहें, कहीं कोई हमें देख तो नहीं रहा है।
हम। हमेशा यही आशंका रहती थी कि किसी भी समय कुछ भी हो सकता है। जैसे ही हमने उन लॉनों पर काम करना शुरू किया जहाँ हम अपने शरीर का व्यायाम कर सकते थे

चलने-फिरने के व्यायाम आसानी से होने लगे, ग्रामीण लोग आकर हमारा काम देखने लगे।
हम नहीं चाहते थे कि वे हमें देखें, लेकिन हम उन्हें हमें देखने से रोक भी नहीं सकते थे। जब हमने कुछ खास परिस्थितियों में सही ढंग से सुधार करने पर काम करना शुरू किया
विषयों में बदलाव आने से दर्शकों की संख्या बढ़ गई। शुरू में केवल महिलाएं और बच्चे ही आते थे।
लेकिन बाद में पुरुष भी शामिल हो गए। अब हम कुछ भी छिपा नहीं सकते थे, लेकिन फिर भी,
हमारे अभ्यासों के दौरान लोगों की उपस्थिति हमारे लिए फायदेमंद साबित हुई।
लोगों से मिली तत्काल प्रतिक्रिया से हमें ऐसा लगा जैसे हम सड़क पर प्रदर्शन करना और दर्शकों से मिलने वाली प्रत्यक्ष प्रतिक्रियाओं का आनंद लेना।
हमारी कार्यशाला में कई घटक शामिल थे, जैसे अभिनेताओं के लिए बॉडीवर्क।
इसमें बहुत अधिक भौतिक स्थान की आवश्यकता होती थी। फिर हमारे पास डिज़ाइन कक्षाएं थीं।
सेट और वेशभूषा बनाना।
कार्यशाला का एक अन्य पहलू अभिनय, भाषण और कहानी सुनाना था।
बनाने की प्रक्रिया। ग्रामीणों की निरंतर उपस्थिति के कारण, हमने अपनी प्रक्रिया बदल दी।
कार्यक्रम। दोपहर से पहले, हमने शरीर को मजबूत बनाने के लिए व्यायाम किए और
डिजाइन। दोपहर और शाम के सत्र कहानी बनाने के लिए थे और
खेल की रणनीति तैयार करने में हमें मदद मिली। इस कार्यक्रम में बदलाव से हमें अपनी तैयारी करने में सहायता मिली।
गांव में आने वाले पर्यटक दिन के उत्तरार्ध में ही आते हैं।

literature, like Amin Kamil’s Kafanchoor, Hari Krishan Koul’s Shamshan

जा सकता है। और एक लोकतांत्रिक चेतना के निर्माण की प्रक्रिया को दर्शाएँ।
नाटकीय प्रदर्शन, एक टीम में एक दूसरे से सीखने का आनंद,
यह प्रक्रिया प्रत्येक प्रतिभागी की छिपी प्रतिभाओं को उजागर करती है। यह प्रक्रिया आत्म-सम्मान का निर्माण करती है। प्रतिभागियों में आत्मविश्वास। काम के प्रति इस तरह का दृष्टिकोण
घाटी में इसकी सख्त जरूरत थी। हम खुद को न केवल शिक्षक बल्कि एक प्रतिभागियों को और किसी बिंदु पर उत्प्रेरक के रूप में, अपना ज्ञान प्रदान करना।
छात्रों को अपने ज्ञान और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए प्रेरित करना।
रंगमंच के माध्यम से। संकट और उत्पीड़न के समय में, जब आम लोग, शक्तिहीन लोग अपनी स्थिति की जिम्मेदारी स्वयं नहीं ले सकते। अपने हाथों से, उनमें यह विश्वास जगाना महत्वपूर्ण और आवश्यक है कि वे
वे इस स्थिति से निपट सकते हैं और नए बदलाव लाने में योगदान दे सकते हैं।
एनएसडी प्रशिक्षण का उद्देश्य रंगमंच के बुनियादी सिद्धांतों को सिखाना है।
एक मिश्रित कला जिसमें चित्रकला, मूर्तिकला, डिजाइन, अभिनय और संगीत के तत्व शामिल हैं।
भाषण और अन्य कई चीज़ें। ये सभी रूप मिलकर एक रंगमंच का निर्माण करते हैं।
प्रदर्शन। रंगमंच के अन्य पहलू समाज, कहानियां और हैं।
लोगों के संघर्ष और सपने। कोई भी रंगमंच शून्य में नहीं हो सकता। इसका मुख्य

साझेदार दर्शक और आम जनता हैं, जिनके लिए रंगमंच बनाया गया है।
प्रदर्शन करना। इसलिए, जिनके लिए प्रदर्शन किया जा रहा है, उनके बारे में जानकारी होना बहुत महत्वपूर्ण है।
महत्वपूर्ण और आवश्यक।
कश्मीर में लोगों का जीवन ही कई विवादों से जुड़ा हुआ था।
राज्य के साथ टकराव, बंदूकधारी उग्रवादियों (स्थानीय और साथ ही साथ) जैसी वास्तविकताएं
विदेशी एजेंसियों सहित गुप्त विदेशी एजेंसियों के साथ। यह ऐसा समाज नहीं था जो शांति से रहता हो।
खुद ही। स्थानीय लोगों का सामाजिक ताना-बाना हर दिन टूट रहा था। अक्सर इसका परिणाम किसी बड़ी त्रासदी के रूप में निकलता था, आमतौर पर हत्या के रूप में। कश्मीर में मृत्यु ही सब कुछ है।
अभिन्न मित्र।
एक सामान्य शैक्षणिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना
यहाँ अनुत्पादक। रंगमंच मानवीय स्थिति को मानवीय माध्यमों से प्रस्तुत करता है।
सामग्री। छात्र सामाजिक और राजनीतिक रूप से जागरूक थे। उनके पास
उन्होंने अपने राज्य में व्याप्त उथल-पुथल का अनुभव किया था, और प्रत्येक व्यक्ति का अपना-अपना अनुभव था।
जिस स्थिति में वे थे, उसके बारे में उनकी समझ और निष्कर्ष। इसलिए, हर स्तर पर, हमें शिक्षणशास्त्र के नए दृष्टिकोणों को फिर से विकसित करना पड़ा।
उन्हें रंगमंच का सार समझाना, न केवल मनोरंजन के रूप में बल्कि एक
समाज में स्वाभाविक परिवर्तन के लिए एक उपकरण और साधन। हमें यह दिखाना था कि रंगमंच

लोग केवल मनोरंजक अभिनेता, गायक और कलाकार ही नहीं हैं, बल्कि परिवर्तन के वे समर्थक जो लोकतंत्र के अनुशासन में विश्वास रखते हैं और
समानता।
रचनात्मक लोगों के समूह में समानता के प्रति इस नए दृष्टिकोण के साथ,
जहां कोई भी सबके सामने खुलकर अपने विचार व्यक्त कर सकता था बहस, चर्चा, प्रयोग और तात्कालिक रचना के माध्यम से वे यह समझ सकते थे कि...
और यह निष्कर्ष निकालें कि एक ही मुद्दे के कई संभावित सत्य हो सकते हैं।
धीरे-धीरे छात्रों को यह प्रक्रिया अच्छी लगने लगी और उन्हें इसमें कुछ अलग ही नज़र आने लगा।
रचनात्मकता के सिद्धांत पर काम करें। इस प्रकार की रचनात्मक प्रक्रिया शुरू होती है।
आपको एक बड़े समूह में मिलकर काम करने का दृष्टिकोण विकसित करना।
जहां आप एक दूसरे के दृष्टिकोण का सम्मान करते हैं। काम के प्रति इस दृष्टिकोण ने एक
कार्यशाला में जो कुछ भी हो रहा था, उसे एक बड़ा बढ़ावा मिला। अक्सर, हम एक ऐसे मुकाम पर पहुँच जाते थे जहाँ...
वह स्थिति जब छात्रों ने मुझसे कहा कि जब तक वे अपनी समस्या का समाधान नहीं कर लेते, मैं वहां से चला जाऊं।
समस्याओं का समाधान ढूंढना और सर्वोत्तम संभव हल निकालना।
मुझे कुछ तत्व दिखाई दे रहे थे।
समूहों के भीतर नेतृत्व का विकास तब हुआ जब उन्होंने एक-दूसरे को स्वीकार किया।
विचार।

प्रतिभागियों का यह समूह अपने पिछले शौकिया प्रदर्शन से उभरा है।
रंगमंच के अनुभव, जहाँ निर्देशक ही अंतिम निर्णय लेने वाला होता है, जिसे कभी बदला नहीं जा सकता।
सवाल उठाए गए, लेकिन यहां छात्रों ने रचनात्मक योगदानकर्ता बनना सीखा।
वे स्वयं। अब वे दर्शकों के सामने प्रदर्शन करने का अनुभव चाहते थे।
एक उचित हॉल में जनता के लिए। टैगोर हॉल ही एकमात्र प्रदर्शन स्थल था।
कश्मीर घाटी, जो आम जनता के लिए खुली थी, वह भी दस साल बाद।
कई वर्षों से। उग्रवादियों ने इस हॉल को दो बार जला दिया था, इसलिए इसका शायद ही कभी किसी काम के लिए इस्तेमाल किया जाता था। प्रदर्शन। हमारा शो दोपहर 2 बजे शुरू होना था और शाम 4:30 बजे तक समाप्त होना था ताकि
अंधेरा होने से पहले सभी लोग घर लौट सकते थे।
छात्रों ने अपने दोस्तों, पड़ोसियों और रिश्तेदारों को शो में आमंत्रित किया।
ग्रामीण इलाके से लोगों से भरी एक बस आई, जिसमें महिलाएं, बच्चे और कई बुजुर्ग थे। मुझे लगा कि उनमें से कुछ ही लोग होंगे।
लोग तो थे ही, लेकिन सभागार को खचाखच भरा देखकर आश्चर्य हुआ।
प्रबंधन
प्रदर्शन का पूरा नियंत्रण छात्रों के हाथ में था।
शिक्षाविद, लेखक और कवि नाटक देखने के लिए सभागार में पहुंचे।
ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो कई वर्षों बाद किसी घटना का उत्सव मनाया जा रहा हो, और एक निश्चित
दर्शकों और प्रतिभागियों दोनों के बीच आशावाद की भावना फैल गई।

शो से पहले, मैं लाइटिंग कंट्रोल रूम में गया, जहाँ मेरी मुलाकात हुई।

प्रकाश व्यवस्था के वरिष्ठ प्रभारी मेहराज़ुद्दीन ने उत्साहपूर्वक बधाई दी।

me, saying, ‘Ba Khuda, I am going to Dastagir Sahib’s ziyarat to thank him.

कई वर्षों बाद मेरा सभागार लोगों से खचाखच भरा है, और यह किसी और कारण से नहीं हुआ है।

सरकारी अधिकारी। आजकल अगर मुखिया आए तो सिर्फ पचास या साठ लोग ही आते हैं।

मंत्री फारूक अब्दुल्ला का कोई कार्य है? रैना साहब मुबारक।

प्रस्तुतियाँ बहुत अच्छी रहीं। मुझे अपने कलाकार बहुत पसंद आए, जिन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया।

प्रदर्शन के दौरान बेहतरीन तात्कालिक प्रस्तुति। उन्होंने उल्लेखनीय प्रदर्शन किया।

संवाद, व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ, मौके पर ही बनाए गए चुटकुले और चुटकुले। वहाँ थे

मेरे बारे में कई मज़ेदार टिप्पणियाँ की गईं। दर्शक बहुत खुश हुए। रहमान

राही (महान कवि) ने मुझे गले लगाया और बस इतना कहा, 'आने के लिए धन्यवाद।' नसीम

प्रख्यात कवि शफिया ने कश्मीरी में कहा, 'लुस, बाया', जिसका अर्थ है 'आशीर्वाद दें'।

'भाई, तुम।' उनकी प्रतिक्रियाएँ मेरे लिए बहुत मायने रखती थीं क्योंकि उनके पास

उन्होंने स्वयं भी कष्टदायी समय का सामना किया था और फिर भी वे सृजन कर रहे थे।

अद्भुत कविता।

यह कार्यशाला चार सप्ताह तक, सुबह से लेकर देर शाम तक चलेगी।
जैसे-जैसे समय बीतता गया, हम हर दिन दिल्ली में अपने परिवार वालों को फोन करते थे। यह एक आदत बन गई थी।
इन सभी हफ्तों में हमने जो दिनचर्या अपनाई, वह इस तथ्य के कारण थी कि हम अपने परिवारों को घर पर जानते थे।
चिंता होती क्योंकि घाटी में अभी तक शांति नहीं थी। मोबाइल फोन अभी तक कोई नहीं आया था, इसलिए हमने मुख्य द्वार के ठीक बाहर स्थित पीसीओ बूथ का उपयोग किया।
विश्वविद्यालय से कॉल करवाने की व्यवस्था थी। एक दिन, मैं कॉल करने गया लेकिन मुझे...
लाइन में खड़े चार लोगों के पीछे अपनी बारी का इंतजार करें। पहले से ही फोन पर बात कर रहे व्यक्ति के चले जाने के बाद, सीआरपीएफ के एक जवान की बारी थी।
फोन आया। उसने रिसीवर उठाया और किसी से बात करने लगा। हम सुन तो सकते थे कि जवान क्या कह रहा था, लेकिन फोन पर मौजूद व्यक्ति क्या कह रहा होगा, इसका हम सिर्फ अंदाज़ा ही लगा सकते थे। दूसरी तरफ के लोग यही कह रहे होंगे।
उस जवान की बातचीत कुछ इस प्रकार थी:

और
kaise ho
yeha tu theek hai hai
लोगों को मत बताओ
Are tum fikar mat karo
Tum apane amma ke paas ja Mai abhi mel nahe sakta

Tum rona mat
Sun, apne ko sambhalo
इसे उबालें नहीं
Tum bache ko lekar apne ma ki paas ja
इसे उबालें नहीं
इसे उबालें नहीं
इसे उबालें नहीं
...यह काफी लंबे समय तक चलता रहा।

हमने मीटर पर नजर रखी, जिसमें पहले से ही 200 रुपये से अधिक दिख रहे थे। जल्द ही यह आंकड़ा पार हो गया।
250 रुपये। उसका बार-बार दोहराया जाने वाला 'मैं हूं ना' मुझे परेशान करने लगा। कुछ देर बाद
कुछ ही सेकंड में, उसने चुपचाप अपने कॉल का बिल चुका दिया, जो 250 रुपये से अधिक था।
उसने अपनी बंदूक उठाई, अपना पर्स जेब में रखा और बूथ से बाहर निकल गया।
उसने सड़क पार की और बाकी दिन वहीं ड्यूटी पर खड़ा रहा।
बूथ पर मौजूद सभी लोग चुप हो गए। हम सभी उस जवान की कहानी समझ गए थे।
और उसकी बेबसी। वो तीन शब्द 'मैं हूं ना' मुझे इतना गहरा आघात पहुँचाया कि मैं कुछ कर ही नहीं पाया।
मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि मैं अपनी पत्नी को फोन करके कह सकता हूँ, 'यहाँ सब ठीक है, मैं ठीक हूँ, और मैं
हम आपके लिए मौजूद हैं। 'यहां स्थिति सामान्य दिख रही थी, लेकिन कुछ भी हो सकता है।'

कुछ ही सेकंड में। इस टेलीफोन के बाद कई साल बीत चुके हैं।
यह घटना हुई, और सीआरपीएफ जवान का क्या हुआ, कौन जाने। लेकिन वे तीन शब्द आज भी मुझे परेशान करते हैं।
श्रीनगर में मेरी पहली थिएटर कार्यशाला ने एक छोटी सी जगह खोली, जैसे कि एक
वेंटिलेटर। कई ऐसे व्यक्ति जो वर्षों से घुटन महसूस कर रहे थे, वे वेंटिलेटर चाहते थे।
एक साथ सांस लें। ये लोग समझते थे कि इस नई हिंसक घटना ने राज्य को कितना नुकसान पहुंचाया है। उन्हें लगा कि किसी न किसी तरह स्थिति
आगे के क्षरण से बचाने की आवश्यकता थी। अधिकांश संबंधित लोगों का मानना था कि हम
हमें एक साथ आकर यह देखना होगा कि व्यापक परिदृश्य में क्या दांव पर लगा है।
प्रसंग।
एक दिन, एक सांस्कृतिक संगठन बनाने के लिए एक बैठक आयोजित की गई।
चेक का नाम— विरासत, पर्यावरण और संस्कृति केंद्र
कश्मीर। चेक के मूल ढांचे में शिक्षाविद, नागरिक समाज के लोग शामिल थे।
सदस्य, कुछ सरकारी कर्मचारी और मैं। पहली बैठक के दौरान,
चर्चा इस बात पर केंद्रित थी कि यह निकाय किन गतिविधियों को अंजाम दे सकता है।
मौजूदा परिस्थितियों को देखते हुए, यह एक दिलचस्प और महत्वपूर्ण बैठक साबित हुई।
कश्मीरी जीवन के सभी पहलुओं में वर्तमान स्थिति का जायजा लेने के लिए।

मेरे वनस्पति विज्ञानी मित्र ने वनस्पतियों और जीवों के बारे में एक परेशान करने वाली प्रस्तुति दी।
घाटी। उन्होंने कहा कि कश्मीर का महान अंबरी सेब अब कहीं नहीं है।
पाया गया। चावल की दुर्लभ किस्मों में से एक, जिसे मुश्क बुदेज के नाम से जाना जाता है, जिसमें एक
लगभग दो सौ मीटर दूर से भी इसकी सुगंध महसूस की जा सकती थी। गायब हो गए। कई प्रकार के जंगली फल मानो हमेशा के लिए लुप्त हो गए।
कश्मीरी भाषा, जिसका लिखित रिकॉर्ड चौदहवीं शताब्दी से मौजूद है।
आगे चलकर, दुर्भाग्यवश इसे शिक्षण संस्थानों में नहीं पढ़ाया जाता था। ऐसा महसूस किया गया
कश्मीर के एक बड़े शहरी क्षेत्र की आबादी ने अधूरी उर्दू को अपनी भाषा के रूप में अपना लिया था।
भाषा, जिसके परिणामस्वरूप एक ऐसी बोली का जन्म हुआ जो न तो उर्दू थी और न ही कश्मीरी।
उनकी बोली में कश्मीरी के तीन शब्द और उर्दू के कुछ शब्द शामिल थे।
...जिससे एक मिश्रित कॉकटेल बातचीत का माहौल बन गया। आप हँसे।
इन सब बातों की असंगति।
हमने एक व्यापक कार्य योजना तैयार करने का निर्णय लिया।
हमारी स्थिति ऐसी है कि...
अत्यंत जटिल और नाजुक स्थिति में, संचय करना उचित नहीं था।
कोई भी परियोजना जिस पर बड़ी आपत्तियां उठाई जा सकें। क्योंकि इसके लिए जगह है।
सांस्कृतिक गतिविधियों में कमी आने के कारण, हमने एक गैर-राजनीतिक परियोजना चुनने का निर्णय लिया।

सबसे पहले, एक ऐसा उदाहरण लें जो सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण हो लेकिन जिसका कोई विरोध न हो।
किसी भी तरफ से।
श्रीनगर शहर की सभी ऐतिहासिक इमारतों का दस्तावेजीकरण करना, जिनमें इसकी प्राचीन विशेषताएं भी शामिल हैं।
मंदिर, मस्जिद, खानखाने, लकड़ी की इमारतें, हवेलियाँ और मुगल बाग-बगीचे, शुरुआत के लिए सही तरह की परियोजना लग रही थी। कोई अलगाववादी या
किसी भी संघवादी को इससे कोई समस्या नहीं होगी। यह एक सार्थक कार्य होगा।
समृद्धि के लिए एक स्थायी दस्तावेज़ तैयार करें। चार युवा और समर्पित
आर्किटेक्ट, समीर हमदानी (विरासत वास्तुकार), साइमा (संरक्षण)। वास्तुकार विशेषज्ञ), आबिद खान (वास्तुकार) और जबीन मंज़ोइर (वास्तुकार)
घाटी के ही लोगों ने इस कार्य को अपने हाथ में लिया और दो साल के भीतर इसे पूरा कर लिया।
उनकी परियोजना, जो अब चार खंडों में उपलब्ध है। चेक ने इसका संकलन किया है।
मुख्य अधिकारी की अध्यक्षता में आयोजित विस्तृत प्रदर्शनी-सह-प्रस्तुति समारोह।
मंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद, कुछ मंत्रिमंडल मंत्रियों के साथ शारी कश्मीर कन्वेंशन सेंटर में आयोजित पहले महत्वपूर्ण कार्यक्रम में भाग लेना।
जांच कार्य बहुत कम समय में पूरा हो गया। प्रदर्शनी को काफी सराहना मिली।
यह कार्यक्रम आम जनता के लिए था और इसमें शामिल होने वाले सभी लोगों ने इसकी सराहना की।

जब मैं पूरे एक साल के लिए दिल्ली लौटा, तो मुझे कोई भी सेवा नहीं मिली।

किसी भी प्रोजेक्ट पर CHECK से सार्थक जानकारी मिलती है, लेकिन जब मैं लौटा तो

मेरी अगली थिएटर परियोजना यात्रा के लिए, चेक की एक बैठक थी।

यह बैठक इसके अध्यक्ष शफी पंडित द्वारा बुलाई गई थी। बैठक के दिन, शफी

पंडित, सलीम बेग और मैं उपस्थित थे, लेकिन कोई अन्य सदस्य उपस्थित नहीं था।

निर्णय लेने के लिए आवश्यक संख्या पूरी न होने के कारण कुछ भी नहीं हुआ।

बैठक हुई ही नहीं; दरअसल, कोई बैठक हुई ही नहीं। मुझे इस बात की चिंता होने लगी।

इस तरह की प्रतिक्रिया, खासकर हमारी पिछली मुलाकात की तुलना में।

कुछ दिनों पहले, मुझे चेक सदस्यों के बीच कुछ मतभेदों के बारे में पता चला।

और कुछ सदस्यों द्वारा किए गए कुछ मनमानी भरे व्यवहार के बारे में। किसी ने भी नहीं।

मुझे बैठक में शामिल होना आवश्यक लगा। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उसके बाद...

पिछली बड़ी सार्वजनिक बैठक में वे कभी मिले ही नहीं थे। मुझे मृत्यु का आभास हो रहा था।

राज्य में ठोस प्रतिष्ठा हासिल करने से पहले इसकी जांच आवश्यक थी।

सभी सदस्य मेरे दोस्त थे और अभी भी हैं; वे सभी मुझे बहुत पसंद करते थे।

मैं भी और अब भी हूँ। मुझे एक स्वयंसेवी कार्य में उनकी भागीदारी पर गर्व था।

चेक जैसी संस्थाएं कश्मीर के सांस्कृतिक विघटन को रोकने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से मेरा समर्थन किया और मेरी हर तरह से मदद की।

मेरे पहले कार्यशाला के परिणाम देखने के बाद उन्होंने कई प्रयास किए। लेकिन एक

सामूहिक रूप से, उन्हें एक साथ काम करने में कठिनाई होती थी। मैं अपने काम में जो करता हूँ

व्यक्तिगत क्षमता विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नाट्य कला का उपयोग करती है।

घाटी। मेरे चेक के अधिकांश मित्र किसी न किसी रूप में वहीं के हैं।

इसमें मेरी भागीदारी थी। मैंने सपना देखा था कि चेक इससे कहीं अधिक हासिल करेगा।

कश्मीर सांस्कृतिक मोर्चा और प्रगतिशील आंदोलन के पास जो था, उससे कहीं अधिक था।

कश्मीर में 1947 से 1967 तक कला, रंगमंच और साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई। लेकिन

अपने पहले कदम उठाने से पहले ही, चेक लड़खड़ा गया था और

कश्मीरी संस्कृति के परिदृश्य से लुप्त हो गया।

हालांकि, मैंने एक पैदल सैनिक के रूप में अपनी एकला चलो यात्रा जारी रखी।

घाटी में कश्मीरी संस्कृति कायम है, और यह इसलिए संभव हो पाया क्योंकि लोग

मैंने उस सांस्कृतिक शून्य को भरने की आवश्यकता को समझा जो उत्पन्न हो चुका था।

कई नेक इरादे वाली संस्थाओं के साथ सहयोग किया, जिनका कोई संबंध नहीं था।

वे CHECK की गतिविधियों के प्रति तो सहमत थे, लेकिन सामाजिक-शैक्षिक पहलुओं को लेकर चिंतित थे।

आतंकवाद और हिंसा का आम लोगों और विशेषकर युवाओं पर पड़ने वाला प्रभाव

और संवेदनशील। मेरा काम केवल संकीर्ण दायरे को प्रदर्शित करने से आगे बढ़ गया।

थिएटर का अर्थ केवल मनोरंजन के एक साधन के रूप में है। हमने इसे लागू किया।

बच्चों, महिलाओं, छात्रों, शिक्षकों और यहां तक कि

ऑफिस जाने वाले लोग। मैं रंगमंच को एक कला विधा के रूप में उसकी सीमाओं को आगे बढ़ाना चाहता था।

और इसका उपयोग हिंसा के उस वातावरण में बुनियादी सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए किया जाए।

और राज्य में अनिश्चितता।

मैंने हेल्प फाउंडेशन के साथ काम किया, जिसका नेतृत्व एक ऊर्जावान महिला, निगत पंडित कर रही थीं।

एक दयालु और चिंतित इंसान जो कभी भी बोलने में विश्वास नहीं करता था

नहीं। अपनी नाजुक सेहत के बावजूद, वह हमेशा आगे बढ़कर नेतृत्व करने के लिए तैयार रहती थी।

मैं उनके अनाथ बच्चों के साथ जुड़ गया, जिन्होंने आज अच्छी सफलता हासिल की है।

यह संस्था कश्मीर में एक समूह द्वारा किए जा रहे कार्यों का एक दुर्लभ उदाहरण है।

शिक्षा, संस्कृति और गरीबी से संबंधित कई कार्यक्रमों पर। मैंने देखा है

इसकी शुरुआत छोटे बच्चों के लिए कैसे हुई और यह एक प्रमुख केंद्र के रूप में कैसे विकसित हुआ।

कश्मीर के असहाय लोग। मुज़फ़्फ़राबाद भूकंप के दौरान, हेल्प फ़ाउंडेशन ने समय रहते अग्रिम क्षेत्रों में काम करने के लिए तत्परता दिखाई।

बारामूला जिले का उरी क्षेत्र, जहां भूकंप का सबसे ज्यादा असर हुआ था।
प्रभाव।
कश्मीर विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ काम करने का अनुभव बिल्कुल अलग था।
ऊर्जा से भरपूर और कठिन था। सवालों और तर्कों से भरा हुआ और भरा हुआ था।
दबी हुई नाराजगी के बावजूद, ये युवा दिल से दयालु और मददगार थे।
अगर वे
मैंने आपको खुले मन और प्रेम से स्वीकार किया।
भांड पाथेर के साथ काम करना, जो कि एक पारंपरिक लोक नाट्य समुदाय है।
कश्मीर में पुरातत्व संबंधी कार्यों के लिए गहरी खुदाई करने जैसा काम किया जा रहा था, और
खुदाई के गड्ढों के माध्यम से धीरे-धीरे रंगमंच के लुप्त स्वरूप का पुनर्निर्माण किया जा रहा है। फिर हम
प्रशिक्षण कार्यक्रम का दस्तावेजीकरण, पुनर्जीवन, पुनर्व्याख्या और निर्माण शुरू किया।
समुदाय में सकारात्मकता लाने की कार्यप्रणाली। यह एक कठिन चुनौती थी।
और काम अभी भी जारी है। अगर कोई सच्चा समकालीन रंगमंच कभी अस्तित्व में आए तो...
अगर यह कश्मीर में उभरता है, तो यहीं से इसका विकास होगा। भंड पाथेर का अपना एक अलग ही अंदाज़ है।
नाटकों, इसके शिक्षण प्रशिक्षण, संगीत के इसके प्राचीन ज्ञान भंडार और इसके
घाटी के ग्रामीण क्षेत्रों में श्रोताओं की अच्छी तरह से संरक्षित उपस्थिति।

इन वर्षों में हुए कुछ सबसे दिलचस्प काम ये थे:
उन सबसे कठिन परियोजनाओं में से जिन्हें हमने एक टीम के रूप में पूरा किया।
बंद दरवाजों, पत्थरबाजी, घेराबंदी और तलाशी अभियानों के बीच, गोलीबारी और लाठीचार्ज। मौत, खतरे और
खतरे का मतलब था कि वहां कभी भी सामान्य कार्य वातावरण नहीं था। कई बार,
हममें से कोई न कोई अपने आप को एक खोल में सिमट जाता था क्योंकि हम ऐसा नहीं कर पाते थे।
इस स्थिति के तनाव को हफ्तों तक लगातार, चौबीसों घंटे झेलना पड़ता है। किसी भी समय
रात के अंधेरे में, हम अपने दरवाजों पर ज़ोरदार दस्तक से जाग सकते हैं।
डर के मारे, हम दरवाजा खोलते तो सामने पूरी तरह से हथियारों से लैस सैनिकों का एक बड़ा समूह खड़ा होता, जो
वे कमरे में घुस आते और वहीं हमसे पूछताछ शुरू कर देते।
हमें अपने कनिष्ठ सहकर्मियों की चिंता थी, जिनमें कुछ युवतियां भी शामिल थीं।
पास के कमरों में। उनकी क्या हालत होगी? क्या वे सहन कर पाएंगे? देर रात उत्पीड़न सहकर भी काम जारी रखना? संघर्षग्रस्त क्षेत्रों में काम करना
यह कठिन है क्योंकि आप कभी भी विवाद के घेरे में आ सकते हैं। आप किसी का पक्ष नहीं ले सकते। ज्यादातर लोग आपको शक की नजर से देखते हैं। आप हमेशा
असुरक्षित। आप सोचते हैं, अगर आपके साथ ऐसा हो रहा है, तो आगे क्या होगा?
आम लोगों का क्या होगा?

श्रीनगर में काम करते समय, एक शाम मुझे अदिति का फोन आया, जो मेरी दोस्त है।
मेरी बेटी ने मुझसे घाटी के कुछ साधारण स्कूलों से संपर्क करने का अनुरोध किया।
ताकि वह 'हिंसा के प्रभाव' विषय पर अपनी स्नातक थीसिस के लिए वहां जा सके।
स्कूली बच्चे’। मुझे उसके आने के फैसले से असहजता हो रही थी और कश्मीर में काम करने के लिए। वह अपने जीवन में कभी यहाँ नहीं आई थी, और उस समय
उस समय घाटी में कुछ भी ठीक नहीं था। उसे इन सब का सामना करना पड़ता।
नियमित आतंकवादी हमले, घेराबंदी और तलाशी अभियान
सुरक्षा बलों और अर्धसैनिकों द्वारा किसी भी समय की जाने वाली यादृच्छिक जाँचों के कारण।
दैनिक अभ्यास के दौरान, व्यक्ति को अपना पहचान पत्र हमेशा अपने साथ रखना पड़ता था।
समय। मैं ऐसे लोगों को जानता था जो कई पहचान पत्र रखते थे—जैसे कि एक
रोजगार पहचान पत्र, मतदाता पहचान पत्र, पुलिस पहचान पत्र इत्यादि—सुरक्षा के लिए।
जब सुरक्षाकर्मियों ने पहचान पत्र मांगा, तो अक्सर यह एक अपमानजनक स्थिति बन जाती थी।
अगर आप बिना पहचान पत्र के पकड़े जाते हैं तो आपको कैसा अनुभव होगा?
जब मैंने अदिति को समझाने की कोशिश की कि यह मुश्किल होगा और यह
कश्मीर में हालात सुरक्षित नहीं हैं, उसने पलटवार करते हुए कुछ बेहद असहज बातें कहीं।

मुझसे सवाल पूछे गए, जैसे, 'तुम्हें कैसे पता? तुम वहां महीनों काम करते हो।'

हमेशा यही कहें कि स्थिति ठीक है और आपका काम योजना के अनुसार चल रहा है।

योजना बनाओ। अगर तुम काम कर सकते हो, तो मैं भी कर सकता हूँ।
तुम्हारी क्या समस्या है? मैं तुम्हें परेशान नहीं करूँगा।

आप अपना काम करते रहिए, आपको बस मेरे लिए व्यवस्था करनी है।

कुछ साधारण स्कूलों का दौरा करूंगा, बाकी का प्रबंध मैं स्वयं कर लूंगा।

'आपको मेरे बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है।' अदिति और उसके दृढ़ संकल्प को अच्छी तरह से जानते हुए, वह

वह अपने फैसले से पीछे नहीं हटेगी। मेरी पत्नी अंजली हमेशा कहती है, 'यह

हमने उन्हें कैसे विकसित किया है। यह कभी सीधा रास्ता नहीं था, हमेशा विपरीत दिशा में ही जाना पड़ा।

धारा का प्रवाह।’ अंततः, मैंने सहमति जताते हुए कहा, ‘ठीक है, लेकिन कृपया मुझे कुछ समय दीजिए।’

कुछ दिनों में, मैं देखूंगा कि क्या मैं इन स्कूलों में आपके दौरे की व्यवस्था कर सकता हूं।'

मैंने अपने कुछ दोस्तों और सहकर्मियों से अदिति के बारे में बात की।

वह यही करना चाहती थी। पहले तो उन्हें आश्चर्य हुआ, फिर उन्होंने इस विचार पर कुछ देर सोचने के बाद कहा कि वे पता लगाएंगे कि किन स्कूलों में वह अपना काम कर सकती है।

चूंकि अदिति अपने काम के लिए किसी प्रतिष्ठित स्कूल में नहीं जाना चाहती थी, इसलिए यह

खतरनाक इलाकों में स्थित न होने वाले सुरक्षित स्कूल ढूंढना मुश्किल है। अधिकांश

सीमित संसाधनों वाले स्कूल, जहाँ साधारण आय वाले माता-पिता अपने बच्चों को भेजते थे
बच्चों को स्कूल ले जाने वाले रास्ते श्रीनगर के शहरी इलाकों में स्थित थे। अंततः,
निगत पंडित ने मुझसे कहा कि चिंता न करो; वह अदिति के लिए स्कूल ढूंढ लेंगी।
आवश्यकता थी। पंडित हेल्प फाउंडेशन अनाथ बच्चों और उनकी सेवा के लिए समर्पित था।
यह कश्मीर की विधवाओं के लिए एक घर था और कक्षा एक से लेकर कक्षा तक के बच्चों के लिए एक आश्रय स्थल था।
बारह।
जब आखिरकार अदिति कश्मीर पहुंची, तो मेरे टैक्सी ड्राइवर हुसैन ने उसे ले लिया।
अदिति के पूरे प्रवास के दौरान उसकी देखभाल करने का जिम्मा निगत पंडित ने स्वयं उठाया।
उन्होंने उसे अपने संरक्षण में लिया और शहर के केंद्र में स्थित स्कूलों का दौरा करने की व्यवस्था की।
और श्रीनगर में रहने के दौरान उन्होंने उसकी अच्छी देखभाल भी की। दरअसल,
जब अदिति मेरे होटल में ठहरी हुई थी, तब निगत पंडित, हुसैन और मेरा थिएटर मित्र भी वहीं थे।
जावेद हकीम ही असल में उनके मार्गदर्शक थे। वह सुबह 9:30 बजे निकल जाती थीं।
वह सुबह काम के लिए निकलती थी और शाम करीब 5:30 बजे लौटती थी, उसी समय मैं भी लौट आता था।
मेरे काम से। वह सारा दिन तीन-चार स्कूलों में और
शाम को वह अपने नोट्स बनाती थी। सोने से पहले, मैं उससे उसके बारे में पूछता था।

काम और उस जगह और लोगों के बारे में उसकी धारणाओं के आधार पर उसने एक दृष्टिकोण विकसित किया।

हुसैन परिवार के साथ उनका घनिष्ठ संबंध था और अब वे हमारे ड्राइवर को हुसैन कहकर बुला रहे थे।

चाचा। उसने उनके परिवार के साथ अपना खुद का रिश्ता विकसित किया, खासकर

हुसैन की बेटी शबनम के साथ। दोनों को कॉफी बहुत पसंद थी और वे अक्सर मिलते थे।

जब भी संभव हो, इसका सेवन करें। निगत पंडित और उनके पति शफी पंडित।

उन्हें वह काफी पसंद आ गई, और एक सप्ताहांत में वे उसे अपने साथ कुछ समय बिताने के लिए ले गए।

पहलगाम में कुछ दिन।

अदिति का काम ठीक चल रहा था, लेकिन जल्द ही उसे भी एहसास हुआ कि जो दिख रहा है वो सच नहीं है।

सामान्य स्थिति वास्तव में इसके बिल्कुल विपरीत थी। उसे आभास हो गया था कि सब कुछ ठीक नहीं है।

कश्मीर घाटी। हर जगह पुलिसकर्मियों की मौजूदगी ने उसे एक अजीब सी अनुभूति दी।

लगातार बेचैनी। शाम को, जब भी मैं उससे उसके काम के बारे में पूछती,

बच्चों के बारे में उन्होंने मुझे शिक्षा की स्थिति और बच्चों के शिक्षा स्तर के निम्न स्तर की एक परेशान करने वाली और निराशाजनक तस्वीर पेश की। उनके अवलोकन के अनुसार,

बच्चों में आत्मसम्मान का स्तर बहुत कम था। उन्होंने जो महसूस किया और सहा,

उन्होंने अपनी पीड़ा या अपने भय को शब्दों में व्यक्त नहीं किया। अधिकांश

कुछ समय तक वे चुप रहे।

दिल्ली जाने से पहले, मैंने जावेद हकीम से अनुरोध किया कि वह उसे कम से कम ये चीज़ें दिखा दें।
चश्मा शाही झरना और मुगल उद्यान। वह हमेशा मेहनती थी।
समय की कमी के कारण, वह किसी भी महत्वपूर्ण स्थान पर नहीं जा सकी।
घाटी में। अपने प्रवास के आखिरी दिन, जावेद उसे चश्मा शाही ले गया।
मुख्य उद्यान में जाने से पहले, वहाँ एक सुरक्षा चौकी थी।
आपको पहचान पत्र दिखाना पड़ता था, और वह भी तब, जब पुलिस इसकी अनुमति देती थी।
आगे बढ़ने के लिए, क्या आप बगीचे में जा सकती हैं? जावेद ने अदिति को वहीं रुकने के लिए कहा।
जब जावेद ने सुरक्षाकर्मियों से अनुमति मिलने तक टैक्सी में सफर किया। जब उसने अपना
जब पुलिसकर्मी ने उसे पहचान पत्र दिखाया, तो उसे पहचान का कोई अन्य प्रमाण दिखाने के लिए कहा गया।
जावेद अपना वोटर कार्ड साथ लेकर आया था और उसने पुलिसकर्मी को दिखाया भी। फिर भी नहीं
इन दो कार्डों से संतुष्ट होकर सुरक्षाकर्मी ने उससे अपना सबूत देने को कहा।
किसी और चीज़ से पहचान। फिर जावेद ने अपना पुलिस पहचान पत्र दिखाया। सभी
यह घटना तब घटी जब अदिति गाड़ी में बैठी थी और पुलिसकर्मी को मारपीट करते देख रही थी।
जावेद को ऊपर उठाओ। एक समय पर, सुरक्षाकर्मी ने सारे कार्ड सड़क पर फेंक दिए और
जावेद पर तरह-तरह की गालियां बरसाने लगी। अदिति यह सब देख नहीं सकी।

जावेद के अपमान से वह रोने लगी और गुस्से में जावेद पर चिल्लाने लगी।
वे वापस आ गए ताकि वे हमारे होटल लौट सकें। उसी समय, दूसरे पुलिसकर्मी...
उन्हें एहसास हुआ कि कुछ गड़बड़ हो गई है, और अंततः, उन्होंने दोनों को अनुमति दे दी।
आगे बढ़ो। तब तक अदिति की विश्व प्रसिद्ध व्यंजनों का आनंद लेने की कोई इच्छा नहीं थी।
शाही झरना।
अदिति बहुत परेशान और दुखी थी। शाम को मैं उससे होटल में मिली, और
उसने मुझसे कहा, ‘यहाँ कुछ भी ठीक नहीं है।’ उसने मुझे पूरी बात बता दी।
जावेद के अपमान की कहानी। उसने कहा कि अगर पुलिसवाले इस तरह का व्यवहार करें तो—
सड़क पर मतदाता कार्ड फेंक देना—तो फिर इसका क्या सबूत था? क्या किसी को अपनी पहचान साबित करनी होगी? भला कोई आम नागरिक का अपमान कैसे कर सकता है?
और किसी भी प्रतिशोध की उम्मीद न करें? स्कूलों में बच्चों की शिक्षा का स्तर इतना दयनीय और खराब था, वे भविष्य में कैसे गुजारा करेंगे? नहीं
सत्ता प्रतिष्ठान में किसी को भी इन मासूम बच्चों की चिंता नहीं थी, जो
हिंसा और हत्याओं को चुपचाप देखते रहे। इनमें से अधिकांश स्कूली बच्चे
वे भयभीत और मानसिक रूप से परेशान थे। किसी को तो इस समस्या का समाधान करना ही था।
इन बच्चों की समस्याएं।

उसकी नाराजगी और चिंता को सुनते हुए, मुझे एहसास हुआ कि मेरी बेटी के पास
हालांकि वह अभी भी स्नातक की छात्रा थी, लेकिन वह बड़ी हो चुकी थी। उसके मन में दूसरों के लिए करुणा थी।
यह स्थिति मेरे लिए एक तरह से चेतावनी साबित हुई। मैंने खुद से सवाल किया—मैंने
मैं थिएटर के माध्यम से यहां काम कर रही थी और मैंने कभी बच्चों के बारे में सोचा ही नहीं था?
बिना किसी सहायता के इन नन्हे बच्चों को किस तरह की पीड़ा सहनी पड़ रही होगी!
अपने भीतर छिपे डर को व्यक्त करने के लिए। इन नन्हे जीवों से किसी ने नहीं पूछा कि क्या
वे इन परिस्थितियों से गुजर रहे थे।
अदिति की टिप्पणियों ने मुझे उपेक्षा के एक प्रमुख क्षेत्र के प्रति जागरूक किया।
उसके साथ हुई बहस ने मुझे सोचने और मुद्दों पर विचार करने के लिए मजबूर कर दिया।
कश्मीर में बच्चे। सीमित संसाधनों वाले मुझ जैसे व्यक्ति क्या कर सकते हैं?
क्या यह घाटी के भविष्य के इस लगभग उपेक्षित पहलू में योगदान दे सकता है?
जागरूकता ने मुझे निगथ पंडित हेल्प फाउंडेशन के साथ सहयोग करने के लिए प्रेरित किया।
INTACH कश्मीर चैप्टर, राजीव गांधी फाउंडेशन (RGF) और कई छोटे लेकिन सार्थक संगठनों को विचारों और अवधारणाओं को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करना।
रंगमंच, फिल्में, प्लास्टिक कला और विभिन्न प्रकार की चिकित्सा पद्धतियां बच्चों की मदद के लिए उपलब्ध हैं।

कश्मीर के लोग अपने घावों और पीड़ा को दूर कर सकते हैं।
यहां से हमने बच्चों के लिए कुछ प्रमुख कार्यक्रम शुरू किए और उनके साथ मिलकर काम किया।
बच्चे। अदिति के स्नातक अध्ययन में निकले कई निष्कर्ष मेरे लिए महत्वपूर्ण बन गए।
हमने मार्गदर्शक मार्ग तैयार किए, और बच्चों के साथ काम करके उन्हें और विकसित किया।
शिक्षकों के साथ अपने अनुभव साझा करना और स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में अपने अनुभव साझा करना।
विभागों। दुर्भाग्य से, राज्य शिक्षा के आधिकारिक तंत्र विभाग तब तक बहरा बना रहा जब तक स्कूल और स्कूल प्रशासन... चुनौती के लिए तैयार।

15

पिताविहीन बच्चे—खोजें
शिक्षा शास्त्र

एक दिन मुझे दिल्ली में राजीव गांधी परिषद की रत्ना माथुर का फोन आया।
फाउंडेशन। किसी ने उसे कश्मीर में मेरे काम के बारे में बताया था और वह चाहती थी

मुझसे मिलने के लिए। जब हम मिले तो उसने मुझे बताया कि उनके यहाँ बच्चों के लिए बहुत मजबूत व्यवस्था है।

घाटी में एक कार्यक्रम के बारे में मैंने सुना था, लेकिन मुझे इसके बारे में कभी पता नहीं था। घाटी में किसी को भी इसके बारे में पता नहीं था।

उसने पहले कभी मुझसे इसका जिक्र नहीं किया था। उसने मुझे बताया कि आरजीएफ बच्चों के

इन कार्यक्रमों ने छात्रवृत्ति के माध्यम से कई अनाथ बच्चों की मदद की थी।

उन्होंने घाटी में उनकी शिक्षा सुनिश्चित की। उन्होंने स्कूलों में अन्य कार्यक्रम भी चलाए।

बच्चों के लिए। रत्ना माथुर सोच रही थीं कि वे अपने व्यवसाय का विस्तार कैसे कर सकते हैं।

घाटी के बच्चों के साथ जुड़ाव। जिज्ञासावश, मैंने पूछा कि कैसे

उन्होंने छात्रवृत्ति के लिए बच्चों का चयन किया। उन्होंने समझाया कि मुख्य

छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए इस बात पर जोर दिया गया था कि बच्चे के पिता या माता

राजीव जीएफ का तर्क सीधा-सादा था, क्योंकि राजीव की हत्या आतंकवादियों ने कर दी थी।

गांधी की हत्या आतंकवादियों ने की थी, एक ऐसे बच्चे की जिसने अपने माता-पिता को खो दिया था।

आतंकवाद से संबंधित छात्रवृत्ति के लिए पात्रता मानदंड क्या है? मैं जानना चाहता था कि क्या आरजीएफ (RGF) इसके लिए पात्र है।

प्रतिनिधियों ने उन बच्चों में से कुछ से कभी मुलाकात की थी, जो पीड़ितों में से थे।

और उन्होंने आतंकवाद के बारे में बात की। रत्ना को नहीं लगता था कि उन्होंने ऐसा किया था।

मैंने समझाया, 'क्या आप जानते हैं कि आतंकवादी हिंसा का बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ता है?'
उग्रवाद के इन सभी वर्षों के दौरान? इसने गंभीर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पैदा किए हैं।
बच्चों के लिए समस्याएं। दुर्भाग्य से, इस पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है।
किसी भी प्राथमिकता को नहीं दिया गया। इन बढ़ते बच्चों की पूरी पीढ़ी को
भविष्य में उन्हें गंभीर मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, जो उनके जीवन को बर्बाद कर देंगी।
उनके निजी जीवन और उनके रिश्तेदारों तथा समुदाय के जीवन में सामान्य।'
मैंने उसे इन बच्चों के साथ एक प्रायोगिक परियोजना शुरू करने का सुझाव दिया ताकि यह देखा जा सके कि क्या संभव हो सकता है। हासिल हो गया। कम से कम हम समस्या और त्रासदी को पहचानना तो शुरू कर सके।
उनके जीवन का। हम सैद्धांतिक रूप से इस पर सहमत हो गए, और उसने कहा कि वह ले लेगी।
फाउंडेशन में अपने वरिष्ठों से चर्चा करने के बाद वह मेरे पास वापस आई।
रत्ना माथुर से कई मुलाकातों के बाद, मेरे दिमाग में एक विचार आने लगा।
जिन मुद्दों से निपटना चाहिए और जिन लोगों को मेरे साथ जुड़ना चाहिए
अगर यह प्रोजेक्ट सफल हो जाता है, तो यह एक आम बच्चों का थिएटर नहीं होगा।
कार्यशाला नहीं बल्कि एक परियोजना जिसका उद्देश्य बच्चों की मानसिकता को बदलने में मदद करना है।

भ्रम को सकारात्मकता और आशा में बदलना। हरी झंडी का इंतजार करते हुए।
आरजीएफ से मिले संकेत के आधार पर, मैं कार्यशाला के प्रकार और शिक्षण विधियों की योजना बनाता रहा।
इस तरह की परियोजना के लिए जो आवश्यक होगा, मैं बेसब्री से सकारात्मक उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था।
फाउंडेशन से प्रतिक्रिया मिलना मेरे लिए काम करने का एक अवसर होगा क्योंकि इससे मुझे कुछ नया करने का मौका मिलेगा।
लंबे समय बाद बच्चों के साथ। आखिरकार, मैंने अपना करियर शुरू किया था।
बच्चों के थिएटर में काम करना।
ड्रामा स्कूल छोड़ने के बाद, मैंने एक वरिष्ठ ड्रामा प्रशिक्षक के रूप में काम किया था।
बाल भवन और केंद्रीय बाल संग्रहालय, नई दिल्ली। मैंने वहाँ का दौरा किया था।
कई महीनों तक विभिन्न आयु वर्ग के सैकड़ों बच्चों की देखरेख की।
बिना किसी विराम के। मैंने बच्चों के लिए छोटे-छोटे नाटक बनाए थे, जिनका प्रदर्शन किया गया था।
बच्चों के लिए बच्चों के दर्शकों के लिए। हमारे सत्र बिना किसी रोक-टोक के होते थे।
और एक प्रयोग के तौर पर, प्रदर्शन की सारी जिम्मेदारी और प्रबंधन
यह जिम्मेदारी युवाओं को सौंपी गई, जिन्होंने कुछ समय बाद शानदार प्रदर्शन किया।
अच्छा। हमने बच्चों के लिए कई बड़े और कुछ छोटे नाटक किए। यहाँ, बच्चों के सामने विचार रखे गए, और फिर समूह में बच्चों ने उन विचारों पर चर्चा की।

वे उन्हें प्रदर्शन के रूप में विकसित करते थे। अक्सर, एक छोटे से विचार पर चर्चा होती थी।
और इसे तब तक सुधारा गया जब तक कि इसे एक सार्वजनिक प्रदर्शन का रूप नहीं मिल गया।
मुझे बाल भवन की तत्कालीन निदेशक शांता गांधी का धन्यवाद करना चाहिए, जो थीं
नेशनल स्कूल में पढ़ाई के दौरान मेरे संस्कृत नाटक शिक्षक भी थे।
भारत के उन लोगों ने मुझे पूरा सहयोग दिया और विभिन्न क्षेत्रों में विकास करने की स्वतंत्रता प्रदान की।
बच्चों के मन और व्यक्तित्व के विकास के लिए प्रासंगिक और आवश्यक सभी प्रकार के विषयों पर नाट्य तकनीकों का उपयोग करते हुए मॉड्यूल तैयार किए जाते हैं।
उन्हें जांच-पड़ताल और पूछताछ के मार्ग पर अग्रसर करना।
स्वयं एक कुशल नर्तकी, थिएटर निर्देशक और शांता गांधी
संस्कृत नाटक शिक्षक, रवीन्द्रनाथ टैगोर के शांतिनिकेतन में रहे थे
गुरुदेव के समय में। वह हमारे कई सत्रों में शामिल होती थीं।
बच्चे। उनमें एक बचकानापन था, जो उनके दौरान सामने आया। सत्रों।
वह मेरे साथ अपने प्रवास के दौरान के कई अनुभव साझा करती थी। शांतिनिकेतन, टैगोर के बाल शिक्षा संबंधी विचार और अंतर्दृष्टि
और समग्र व्यक्तित्व के विकास में शिक्षा की भूमिका। मैं था मुझे इंडियन पीपुल्स के साथ बिताए उनके दिनों के प्रत्यक्ष वृत्तांत सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

थिएटर एसोसिएशन (आईपीटीए), जिसने प्रमुख प्रगतिशील संस्थाओं में से एक की स्थापना की थी
भारत में सांस्कृतिक आंदोलनों में उन्होंने काम किया था।
उन्होंने प्रसिद्ध उदय के यहाँ काम किया था।
शंकर के अल्मोड़ा डांस सेंटर से जुड़ी यादगार कहानियाँ वह सुनाया करती थीं।
वहां उदय शंकर का उत्कृष्ट कार्य देखने को मिलता है।
बाल भवन में नाटक अनुभाग में बच्चों के साथ काम करने के साथ-साथ
चित्रकला, मूर्तिकला जैसी कला की अन्य विधाओं के अन्य रचनात्मक प्रशिक्षक,
शिल्प और विज्ञान, एक अनूठा अनुभव प्रदान करते हैं। बच्चों को बहुआयामी अवसर प्रदान करते हैं।
एक अनूठे दृष्टिकोण से विकसित अनुशासनात्मक अनुभव।
बाल भवन में किए गए ये प्रयोग ही सभी रचनात्मक कार्यों के लिए जिम्मेदार थे।
प्रशिक्षक नई संभावनाओं के लिए खुल रहे हैं। चूंकि बाल भवन पूरी तरह से
बच्चों के रचनात्मक विकास के लिए समर्पित, अक्सर ऐसा होता था उनकी रचनात्मक कल्पना को उजागर करने के लिए नए प्रयोग किए गए। जब भारत की महत्वाकांक्षी साक्षरता अभियान परियोजना को हरी झंडी दिखाई गई थी
सभी राज्यों में, लाखों शिक्षित स्वयंसेवकों ने साक्षरता अभियान में भाग लिया।
भारत को 100 प्रतिशत साक्षर बनाने का इसका अभियान। कई गैर सरकारी संगठन पूरी तरह से
उन्होंने खुद को इस आंदोलन के लिए समर्पित कर दिया। मैंने 'मदर' नाम का एक नाटक किया था।

मैक्सिम गोर्की के उपन्यास 'द मदर' पर आधारित, हिंदी में बर्टोल्ड ब्रेख्त की कहानी।
एक निरक्षर कारखाने के मजदूर की माँ की कहानी।
सितंबर 1993 में, सरकार में शिक्षा के संयुक्त सचिव ने
भारत ने मुझसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नाटक के एक भाग का प्रदर्शन करने के लिए संपर्क किया।
साक्षरता दिवस 7 सितंबर को मनाया जाता है।
बाद में मुझे सरकार के नए शिक्षा सचिव का फोन आया।
भारत के सुदीप बनर्जी ने मुझे अपने कार्यालय में मिलने के लिए कहा।
वह एक शांत, सौम्य क्रांतिकारी सिविल सेवक, कवि और नाटककार थे। अत्यंत दृढ़ निश्चयी और दयालु हृदय वाला व्यक्ति। जब हम मिले, वह मेरा मजाक उड़ाने लगा और कहने लगा, 'तुम अपना समय क्यों बर्बाद कर रहे हो?'
'क्या आप ये सभी थिएटर प्रोडक्शन कर रहे हैं?' मैंने काफी आश्चर्यचकित होकर जवाब दिया, 'अगर आप
अगर आपको लगता है कि यह समय की बर्बादी है, तो आप ये सब देखने क्यों आते हैं?
उन्हें?’ वह हँसा और बोला, ‘आप हमारी साक्षरता में हमारी मदद क्यों नहीं कर सकते?’
आंदोलन?'
मैं वहाँ क्या करूँगा? मैं ए बी सी डी नहीं पढ़ा सकता, क्योंकि यह मेरी विशेषता नहीं है।
मैंने पलटकर कहा, 'इसके लिए प्रशिक्षित हो?' वह फिर ज़ोर से हँसा और बोला, 'क्या तुम
क्या आपको पता है कि देश में क्या हो रहा है? हम दूसरा बना रहे हैं।

स्वतंत्रता संग्राम, और यह बिना भागीदारी के संभव नहीं है।

कवि, लेखक, वैज्ञानिक, संगीतकार, रंगमंच कलाकार, शिक्षाविद और सामाजिक कार्यकर्ता

श्रमिक। और कई राज्यों में, वे पहले ही शामिल हो चुके हैं और काम कर रहे हैं।

'मैदान।' उसने अपने हर शब्द का मतलब समझा। काफी देर रुकने के बाद मैंने पूछा, 'क्या

क्या आप मुझे उनके प्रोजेक्ट के बारे में कुछ जानकारी दे सकते हैं? मुझे माफ़ करना, मुझे इसके बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है।

इस आंदोलन के बारे में। मुझे बस इतना पता है कि केरल के एर्नाकुलम जिले में

भारत का पहला 100 प्रतिशत साक्षर जिला बनें।' उन्होंने कुछ बातें उठाईं।

उन्होंने अपनी साइड टेबल से कुछ प्रकाशन निकाले और मुझे दे दिए। मैंने उन्हें देखा।

मैंने उसे सामग्री पढ़कर सुनाया और कहा, 'मैं यह सारी सामग्री पढ़ने के बाद आपसे संपर्क करूंगा।'

और मैं कुछ विचार लेकर आऊंगा।’ वह मुस्कुराया और बोला, ‘मैं इंतजार करूंगा।’

आपके जवाब का इंतजार है।

इस बैठक से दो महत्वपूर्ण, गहन, आवासीय कार्यक्रम निकले।

लखनऊ और इंदौर में कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों में शामिल थे:

साक्षरता आंदोलन में पहले से ही काम कर रहे युवा स्वयंसेवक कुछ योगदान दे रहे हैं।

स्ट्रीट थिएटर में साक्षरता के विषय पर नाटक प्रस्तुत किए जाते हैं। अधिकांश स्वयंसेवक ग्रामीण पृष्ठभूमि से आए थे। उनमें से कुछ स्कूली या कॉलेज के छात्र थे।

शिक्षकों और अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं को यह एहसास हुआ कि उनकी समझ
साक्षरता आंदोलन का उद्देश्य लोगों को आने और भाग लेने के आह्वान तक ही सीमित था।
उनसे सीखो ताकि वे एक क्रांति ला सकें और एक नए सूर्योदय का मार्ग प्रशस्त कर सकें।
भारत में शिक्षित लोगों के बारे में। उन्हें बहुत ही सतही और नए विचारों को प्रस्तुत करने का सीमित प्रचारवादी तरीका, असंवेदनशील और गैर-
किसी भी गहराई के साथ सूक्ष्म सौंदर्य संबंधी आयाम। इसके अलावा, एक था
उनके काम के पीछे सरल दृष्टिकोण था—कि साक्षरता स्वयंसेवकों के रूप में वे जानते थे
शिक्षा का संपूर्ण सत्य। उनके काम को देखने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि उनका
श्रेष्ठता का रवैया और उनके द्वारा पेश किए गए तैयार आसान समाधान
यह उल्टा असर डालेगा और लोगों को इस बारे में सोचने या विचार करने के लिए प्रेरित नहीं करेगा।
जीवन की जटिलताएँ। सवाल पूछने या जाने के लिए कोई जगह या अवसर नहीं था।
स्पष्ट कथाओं से परे।
जब हमने आखिरकार कार्यशालाओं में अपना हस्तक्षेप शुरू किया, तो मैंने संबोधित किया
सभी प्रतिभागियों से मैंने सबसे पहले यही कहा कि उन्हें बदलाव करना होगा।
उनका रवैया। मैंने समझाया कि हमें सभी सवालों के सभी जवाब नहीं पता थे।

समस्याएँ थीं। मुझे उन्हें बताना पड़ा कि 'साक्षता' शब्द पर प्रतिबंध लगा दिया जाएगा।
हमारे प्रशिक्षण कार्यशाला में। 'इस शब्द का प्रयोग न करें क्योंकि यह सीमित करता है'
कल्पना, और हम अपने विचारों को सरल बनाने के लिए इस शब्द का सहारा लेने लगते हैं।
स्पष्टीकरण। आपको अपने विचारों में मौलिक होना होगा,’ मैंने समझाया। ‘आप चाहते हैं
आपकी माँ और आपकी दादी भी आपकी साक्षरता कक्षाओं में शामिल हों, ताकि आप
यह मानकर चलें कि वह अशिक्षित है और आप उसे पढ़ाएंगे।
यह सब शिक्षा के बारे में है। क्योंकि आपने वास्तव में तय कर लिया है कि आप जानते हैं।
सब कुछ। यह धारणा सही नहीं है। ज़रा एक पल के लिए सोचिए जब
जब आप छोटे थे तो आपकी माँ या आपकी दादी आपका अच्छे से ख्याल रखती थीं।
आपकी देखभाल। वह, जिसने आपको अपने पूरे प्यार और स्नेह से सिखाया कि कैसे...
अपने पहले कुछ शब्द बोलो; फिर उसने शाम को तुम्हें लोरी सुनाई। ताकि आप आराम से सो सकें। जैसे-जैसे आप बड़े होते गए, वह आपको लोकगीत सुनाती रही।
और उसने तुम्हें अनेक लोककथाएँ और महाकाव्य कथाएँ सुनाईं। वह तुम्हें शिक्षा देती रही।
नैतिक व्यवहार पर, अच्छे और बुरे के बारे में। आपको किसी भी बीमारी से बचाने के लिए, उसने आपके यहाँ उगने वाली जड़ी-बूटियों का अपना ज्ञान दिखाया।
वह अपने खेतों और फसलों के बारे में बहुत कुछ जानती थी। अब खुद से एक सवाल पूछिए।

सवाल: क्या वह अशिक्षित व्यक्ति है? आप उसे जो पेशकश कर रहे हैं वह तो बस एक...

कुछ आकृतियाँ और रूप, जिन्हें हम वर्णमाला के अक्षर कहते हैं, जो वह

वह इसे समझ नहीं सकती। इस स्तर पर आप उसे बस इतना ही दे सकते हैं। हालाँकि, वह जानती है।

इन अक्षरों से बने इन शब्दों का अर्थ, शायद आपसे कहीं अधिक व्यापक है।

वह अपने जीवन के अनुभवों के माध्यम से ऐसा करती है। इसलिए, साक्षरता के प्रति आपका दृष्टिकोण

स्वयंसेवक को अपने दृष्टिकोण में सुधार और बदलाव की आवश्यकता है ताकि वह आपको स्वीकार कर ले।

उसका मार्गदर्शन करें और उसे सीखने का आनंद सिखाएं।

इससे कार्यशालाओं की दिशा बदल गई। कविताओं और कहानियों के लिए

इस वार्ता के बाद विकसित साक्षरता प्रशिक्षण और उनकी कल्पनाओं में एक

इसमें मानवीय स्पर्श और मिट्टी की महक है। रूपक और संदर्भों का भरपूर प्रयोग किया गया है।

अब जो उपयोग किया जाता है उसमें मानवता का एक निश्चित तत्व और बहुत अधिक प्रामाणिकता होती है।

अंत में, प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत नाटक यथार्थवादी और सारगर्भित थे।

इसमें गर्माहट थी और ग्रामीण दर्शकों के सामने प्रदर्शन करने पर इसे बहुत सफलता मिली।

यह रंगमंच का वह ज्ञान नहीं है जो नाटक विभागों में अर्जित किया जाता है और

केवल नाट्यशास्त्र के स्कूल ही महत्वपूर्ण नहीं हैं। विशेष रूप से रंगमंच से जुड़े लोगों को इसकी आवश्यकता है।

शैक्षिक रंगमंच और रंगमंच के बीच अंतर को समझने के लिए
यह पूरी तरह से मनोरंजन या बॉक्स ऑफिस के लिए किया जाता है।
साक्षरता आंदोलनों के साथ इतने वर्षों के अनुभव के बाद ही मुझे यह समझ आया कि
अंततः मुझे कश्मीर के बच्चों के साथ काम करने का मौका मिला। संघर्ष और बेहद कठिन परिस्थितियाँ जहाँ कुछ भी हो सकता है।

आरजीएफ कार्यशाला

आखिरकार, कई हफ्तों के बाद, मुझे रत्ना माथुर का फोन आया, जिन्होंने मुझे एक तैयारी करने के लिए कहा।
कश्मीर के अनाथ बच्चों के लिए बाल कार्यशाला का विस्तृत प्रस्ताव।
एक बार जब मैंने उसे सामान्य दृष्टिकोण और लक्ष्यों एवं उद्देश्यों के बारे में बता दिया,
कार्यशाला के दौरान, मैंने उनके साथ कई बैठकें और चर्चाएँ कीं। वह चाहती थीं कि
प्रत्येक सत्र का सटीक विवरण देना—ऐसी स्थिति में असंभव है जिसमें...
एक रचनात्मक प्रक्रिया के माध्यम से कुछ। किसी को नहीं पता था कि सत्र कैसे आगे बढ़ेंगे और हमें कहाँ ले जाएंगे। मैंने उसे समझाने की कोशिश की कि
उन्हें मेरी टीम को कार्यप्रणाली का पता लगाने के लिए पूरी स्वतंत्रता देनी पड़ी।
बिना किसी निश्चित पाठ्यक्रम के। यह कोई नियमित स्कूली गतिविधि नहीं थी। हम

पता नहीं था कि बच्चे कैसी प्रतिक्रिया देंगे और वे कैसे जवाब देंगे।
हमने उनसे जो करने को कहा था, वही करना होगा। काम करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।
कई मतभेदों और चर्चाओं के बाद, वह मेरी बात समझ गई।
एक दुविधापूर्ण स्थिति। हमने एक लचीली समय सारिणी तैयार की, जिसे आवश्यकता पड़ने पर बदला जा सकता था।
यह कार्यशाला बारह दिनों तक पचास बच्चों के साथ एक आवास में चली।
आयोजन स्थल के बारे में निर्णय लेने की बात आई तो मैंने जम्मू शहर का सुझाव दिया।
व्यावहारिक कारणों से। वर्षों से घाटी के इन बच्चों ने ऐसा अनुभव नहीं किया था।
या फिर उन्होंने पूरी तरह से सामान्य दिन का आनंद लिया। साल के अधिकांश समय स्कूलों में
बंद रहा। ये बच्चे सख्त नियमों के तहत घर के अंदर ही रहे थे। बड़ों का नियंत्रण, अक्सर अशांति और हिंसा के कारण होता है।
और उनके घरों के पास आंदोलन हो रहे थे। मैं चाहता था कि उन्हें एक स्वतंत्र और शांतिपूर्ण जीवन मिले।
ऐसा वातावरण जहां वे बिना किसी डर के सांस ले सकें, जहां अचानक किसी कानून-व्यवस्था संबंधी गड़बड़ी के कारण काम ठप्प नहीं होगा।
जब अंतिम प्रतिभागी बच्चों का सवाल उठा, तो मैंने अपना नाम उसमें शामिल कर लिया।
एक विचार। हमारे पास कश्मीर के दोनों समुदायों के बच्चे होंगे। इस कार्यशाला में घाटी के विभिन्न हिस्सों से मुस्लिम बच्चे भाग लेंगे और

जम्मू के शिविरों से आए कश्मीरी पंडित बच्चे। काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा।

और किसी ने जवाब नहीं दिया। कुछ समय बाद, हमारे सभी प्रतिष्ठित लोगों की ओर से आपत्तियां उठाई गईं।

शुभकामनाएं देने वाले आए, जिनमें ज्यादातर कश्मीरी दोस्त थे। किसी ने कहा कि यह एक

यह विचार उल्टा पड़ गया। पता नहीं था कि बच्चे कैसा व्यवहार करेंगे।

और जब वे एक-दूसरे से मिले तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई। कौन जानता था कि उनमें किस तरह का जहर था।

क्या इन युवा दिमागों में उनके घरों में दोनों तरफ से कुछ बातें डाली गई हैं? अगर कुछ

अगर जरा भी गड़बड़ी होने का आभास हुआ, तो यह एक बड़ा घोटाला बन जाएगा।

और इसकी खबर मीडिया में भी आएगी। दरअसल, मेरे एक प्रिय मुस्लिम मित्र ने

उन्होंने जोर देकर कहा, 'तुम पागल हो। ऐसा मत करो। तुम बेवजह मुसीबत में पड़ जाओगे।'

परेशानी खड़ी होगी और दोनों समुदायों द्वारा उन पर आरोप लगाए जाएंगे।

मैंने सभी आपत्तियां और तर्क सुने, लेकिन उनसे मैं सहमत नहीं हुआ।

मेरा मन बदलने के लिए काफी था। मैंने भारत में बच्चों के साथ काम किया था, और

किसी तरह मेरी छठी इंद्री ने कहा कि ये सभी भय वयस्कों पर आधारित थे।

परिस्थिति को समझना, न कि उस बच्चे के दृष्टिकोण से जो वहां रह रहा है

भय के ऐसे माहौल में जहाँ उसे अपनी बात कहने या व्यक्त करने का कोई अधिकार नहीं है।
उसका गुस्सा, दर्द या यहां तक कि खुशी भी।
यह बच्चा एक दमनकारी परिवार में रहता है जहाँ नाममात्र की ही सहायता उपलब्ध है।
उससे संपर्क करने के सचेत प्रयास। वह क्या सोच रहा है? वह क्या चाहता है?
वह क्या चाहता है? इस माहौल में उसे कैसा लगता है? दुर्भाग्य से, वहाँ थे
उस दयनीय स्थिति में उनके बड़ों को कई अन्य प्राथमिकताओं से निपटना था।
पकड़े गए।
काफी देर तक मैंने कुछ नहीं कहा। मुझे सोचने-समझने के लिए और समय चाहिए था।
अंतिम निर्णय लेने से पहले मैंने इस मामले पर विचार किया। इस बीच, मैंने तय किया कि
इस प्रकार की कार्यशाला के लिए संसाधन व्यक्ति केवल रंगमंच से जुड़े लोग ही नहीं होने चाहिए।
लेकिन अन्य लोग भी, जैसे शिक्षाविद, बाल शिक्षा विशेषज्ञ, शिल्प शिक्षक
और संगीतकार। मुझे लगा था कि कार्यशाला के शुरुआती दिनों में, हम
सभी संसाधन व्यक्तियों को संयुक्त सत्रों में एकत्रित करें ताकि उन सभी को
सभी बच्चों से परिचित। कुछ समय बाद, प्रत्येक संसाधन व्यक्ति उनका विशेष सत्र अलग से आयोजित किया जाएगा।
कार्यशाला के उद्घाटन की तारीख नजदीक आ रही थी, और यह विचार मन में आ रहा था कि...

फरवरी 2004 में जम्मू में पहली कार्यशाला का आयोजन अंततः सफल रहा।
स्वीकार कर लिया गया। यह देखकर खुशी हुई कि एक धर्मशाला ने मेजबानी करने की पेशकश की।
जम्मू विश्वविद्यालय ने बच्चों को बिना किसी शुल्क के मुफ्त में शिक्षा प्रदान की। जम्मू विश्वविद्यालय ने अपना विशाल योगदान दिया।
हमारी कार्यशाला के लिए व्यायामशाला। इस विशाल स्थान में अपार संभावनाएं थीं।
हम बच्चों के साथ क्या करना चाहते थे।
मेरे मित्र सलीम बेग ने अपनी चिंता व्यक्त की थी
इस कार्यशाला में पंडित और मुस्लिम बच्चों को एक साथ लाने से मेरी मुलाकात हुई।
उन्होंने फिर से इस तरह के संभावित परिणामों के बारे में अपनी चिंताओं को दोहराया।
प्रयोग। जैसे-जैसे तारीख नजदीक आती गई, मेरी चिंता भी बढ़ती गई। अचानक,
मुझे एक विचार आया—कुछ बच्चों की माताओं को कार्यशाला में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाए। कार्यशाला के दौरान अगर कुछ भी होता है, तो ये माताएँ जानकारी साझा करेंगी।
माताएँ हमारे और बच्चों के बीच एक नरम तकिए की तरह काम करती थीं, जैसे हमारी
बच्चों और संसाधन व्यक्तियों के बीच संपर्क सूत्र। इसके अलावा, ये
वे माताएँ स्वयं विधवाएँ थीं जिन्होंने कठिन समय देखा था। उन्हें अपने परिवेश से बाहर निकालकर हमारे साथ रहने देना शायद एक अच्छा विचार हो सकता है।
उनकी उपस्थिति से कार्यशाला एक बड़े परिवार की तरह बन जाएगी।

आरजीएफ की रत्ना ने इस विचार को सहर्ष स्वीकार कर लिया, जैसा कि मेरे अन्य सहयोगियों ने भी किया।
अंततः, जिस दिन हम जम्मू विश्वविद्यालय के व्यायामशाला में मिले,
पहली बार हमारे पास बारह से पंद्रह वर्ष की आयु के पचास बच्चे थे।
पांच संसाधन व्यक्ति, रत्ना और माताएँ। 35 बच्चे
उनमें से पंद्रह घाटी से थे और पंद्रह प्रवासी शिविरों से थे। मैंने सभी से पूछा।
हमने एक घेरा बनाया ताकि हम सब एक दूसरे को देख सकें। मुझे याद है कि मैं देख रहा था
इन बच्चों के चेहरे। वे या तो गंभीर, भावहीन, या घबराए हुए दिख रहे थे।
कुछ बच्चे तनाव में थे। कुछ डरे हुए लग रहे थे। वे अपनी माताओं से चिपके हुए थे।
मैंने माताओं से भी हमारे समूह में शामिल होने का अनुरोध किया। इसके बाद, मैं चाहती थी कि सभी लोग...
सबने बारी-बारी से अपना परिचय दिया। किसी ने भी शुरुआत करने की इच्छा नहीं जताई।
सन्नाटा छा गया। तो, मैंने पहले अपना परिचय दिया, फिर राकेश कुमार सिंह आए।
कनाया और थिएटर के सभी लोग, और हमारे बाद आशा शर्मा, बच्ची।
शिक्षाविद अनीता रामपाल और दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षा की प्रोफेसर।
फिर से काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। अंत में, एक लड़की ने परिचय देने की पहल की।
खुद। मुश्किल से सुनाई दे रही थी, उसने कश्मीरी में कुछ बुदबुदाया, जो

कोई सुन नहीं पा रहा था, लेकिन हम अगले बच्चे के पास चले गए, जो थोड़ा बोलता था।
उसने ज़ोर से कहा, उसका नाम नूर था। इसके बाद, हर बच्चा बुदबुदाते हुए उसके पीछे-पीछे चलने लगा।
कुछ अनसुना, ऐसी आवाजें निकाल रहा था जिन्हें हम समझ नहीं पा रहे थे।
एक शब्द। मुझे उनके नाम मुश्किल से याद थे, लेकिन फिर भी, हम अभ्यास पूरा किया गया, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपना-अपना काम पूरा करने दिया गया।
परिचय।
मुझे याद है मैंने उनसे कहा था, 'यह आपकी कार्यशाला है, और यहाँ आपके पास है'
आपको जो महसूस होता है या जो करना पसंद है, उसे कहने का पूरा अधिकार है। हम आपके नियंत्रण में नहीं हैं।
यहां स्कूल के शिक्षक तो होंगे, लेकिन हम और आपके दोस्त खेलेंगे, मौज-मस्ती करेंगे और अन्य गतिविधियां भी करेंगे।’ उन्होंने इस पर शायद ही कोई प्रतिक्रिया दी।
इसलिए हम चाय पीने के लिए रुक गए।
हमने कुछ अनौपचारिक गतिविधियों से शुरुआत करने की योजना बनाई थी। जल्द ही
यह देखने के लिए कि क्या होता है, कुछ मनोचिकित्सा खेलों में बदलाव किया गया। चाय
ब्रेक का समय केवल चाय पीने के लिए नहीं था—सभी संसाधन कर्मी इधर-उधर फैल गए और
बच्चों के साथ घुलमिलकर उनसे सामान्य बातचीत की।
इन तीस मिनट के ब्रेक के दौरान, हमने बच्चों को व्यस्त रखने के लिए एक गतिविधि की योजना बनाई थी।

वे हमसे परिचित थे। हम संसाधन व्यक्तियों को एक समूह से दूसरे समूह में बदलते रहते थे।
दूसरा, ताकि हम सभी को सभी बच्चों से अनौपचारिक परिचय मिल सके और
प्रत्येक के बारे में यथासंभव अधिक से अधिक जानकारी एकत्रित की। शाम को,
टीम चाय के ब्रेक के दौरान मिली जानकारी को आपस में साझा करेगी और उस पर चर्चा करेगी।
हमारे सत्रों की योजना बनाने में हमारी मदद करें।
जब राकेश कुमार के नेतृत्व में आइस ब्रेकिंग सेशन के खेल शुरू हुए
सिंह, बच्चे सभी दिशाओं में दौड़ने लगे। इन अभ्यासों में, हम हमने मुख्यतः सहज प्रतिक्रियाओं, प्रतिक्रियाओं और विश्वास निर्माण पर काम किया। हमारे पास काफी अवसर थे।
बड़े इनडोर स्टेडियम में काम करने के लिए पर्याप्त जगह थी। यह एक हॉकी मैदान के आकार का था।
और इसने बच्चों को घूमने-फिरने, दौड़ने, उछलने-कूदने और कूदने के लिए बहुत सारी जगह उपलब्ध कराई।
शरीर पर नियंत्रण, एकाग्रता, अवलोकन आदि के तत्वों को इसमें शामिल किया गया था।
इन मनोरंजक गतिविधियों में, राकेश ने बच्चों को कुछ असामान्य काम करने के लिए प्रेरित किया।
मैंने उन हरकतों का अवलोकन किया जो वे सामान्यतः नहीं करते थे, मैंने प्रत्येक की गतिविधियों को ध्यान से देखा।
बच्चे के शरीर के प्रत्येक विशिष्ट हिस्से में तनाव बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करना।
यहां मेरी कार्यशाला में, हमें इन कठोर तनाव वाले क्षेत्रों को खोलना पड़ा।

यह लक्ष्य उन्हें इंगित करने से नहीं, बल्कि राहत प्रदान करने वाले सूक्ष्म अभ्यासों से प्राप्त किया जा सकता है।
मानसिक शांति के लिए। इसके लिए, हमें व्यायाम के नए तरीके खोजने पड़े ताकि इस समस्या का समाधान किया जा सके।
संकट।
समूह के सदस्य अब भी एक-दूसरे से ज्यादा संवाद नहीं करते थे, हालांकि वे
वे विनम्र बने रहे। पंडित समूह अलग रहा, और घाटी भी अलग रही। समूह। एक विराम के बाद मैंने एक सफेद कागज का टुकड़ा दिखाया, जिस पर लिखा था
मैंने बच्चों के सामने एक पेड़ की रूपरेखा छापी। मैंने उनसे बस इतना पूछा, 'क्या?'
'क्या यह वही पेड़ है?' उन्होंने धीरे से उत्तर दिया, 'एक पेड़।' मैंने फिर पूछा, 'किस प्रकार का पेड़?' उनमें से कुछ मेरी बात सुनकर मुस्कुराए, लेकिन कुछ ने कहा, 'यह चिनार का पेड़ है।' लेकिन एक ने कहा, 'यह चिनार का पेड़ है।'
पंडित बालक ने हिचकिचाते हुए उत्तर दिया, 'नहीं, यह एक सेब का पेड़ है।' इस प्रकार एक खेल की शुरुआत हुई।
जिसमें बच्चों ने पेड़ के इस रेखाचित्र को तरह-तरह के नाम दिए। फिर मैंने प्रत्येक बच्चे को ऐक्रेलिक रंगों का एक डिब्बा दिया और उनसे उसमें रंग भरने को कहा।
पेड़ की रूपरेखा, रंगों और बारीकियों के साथ, पेड़ को चित्रित करने के लिए।
उन्हें ऐसा ही लगा। पैंतालीस मिनट के भीतर उन्होंने रंग भरना पूरा कर लिया था और
उन्होंने हमें कागज़ वापस कर दिए।
हमने व्यायामशाला के फर्श पर सारी चादरें बिछा दीं ताकि बच्चे

वे एक-दूसरे का काम देख सकते थे। घाटी के सभी बच्चों ने रंग भरे थे।
सभी पेड़ हरे थे, सिवाय एक लड़की के जिसने गहरे बैंगनी रंग का इस्तेमाल किया था।
टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं से। पंडित बच्चों ने ज्यादातर हरे पेड़ बनाए थे।
रंग-बिरंगे फल, सभी एक जैसे और उनमें जरा भी भिन्नता नहीं थी।
इससे हम सभी आश्चर्यचकित रह गए।
लेकिन यह भी एक समस्या लग रही थी।
हमारी विशेषज्ञ आशा शर्मा ने बताया कि ऐसा क्यों हो सकता है।
कुछ बातें हुई थीं। एक यह कि उन्होंने कभी पेंटिंग सेशन का अनुभव नहीं किया था।
ऐसा उनके जीवन के सभी वर्षों में रहा। दूसरा शायद यह था कि वे वास्तव में केवल इतना ही जानते थे।
हरा रंग, उस हरी घाटी का रंग जिसमें वे रहते हैं, जो शायद हो सकता है
उनके मन के भीतर। इतने वर्षों से, और जिस दिन से वे पैदा हुए हैं, उन्हें शायद ही कभी कोई सुखद अनुभव प्राप्त हुआ था। मैंने देखा।
एक और अजीब बात: पंडित बच्चों ने फलों वाले पेड़ चित्रित किए थे।
यह बात काफी हैरान करने वाली थी क्योंकि इन पंडित बच्चों ने सिर्फ फलदार पेड़ों के बारे में ही सुना था।
अपने माता-पिता या दादा-दादी से अपने बगीचों में उगने वाली चीजें। एक लड़की के पास
उसने अपने पेड़ को गहरे बैंगनी रंग से रंगा और बहुत ही भावपूर्ण स्ट्रोक का इस्तेमाल किया।

जैसा कि हम जानते हैं, छोटे बच्चे अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते या
इस प्रकार के अभ्यास से उनके अनुभवों का पता चलता है।
मन, जिसे सावधानीपूर्वक समझने और संबोधित करने की आवश्यकता है।
इसे समझने का प्रयास करना चाहिए।
उन्हें एकरस मानसिकता से बाहर निकालने के लिए, हमने एक और अभ्यास आजमाया।
एक और छवि का उपयोग करते हुए—एक घर की काली रूपरेखा। हमने इसे फिर से वितरित किया।
हमने प्रत्येक छात्र को शीट दीं। हमने उनके बारे में उनसे कोई टिप्पणी नहीं की।
पिछली रेखाचित्रों को देखने के बाद, मैंने उनसे इस घर में रंग भरने को कहा, और उन्हें पिछली रेखाचित्र की तुलना में थोड़ा जल्दी रंग भरना था। रंग भरने के बाद, हमने रेखाचित्रों को एक तरफ रख दिया।
सभी को दिखाने के लिए इसे फिर से फर्श पर रख दिया गया। वैली के बच्चों के पास
घरों को भरने के लिए अधिकतर एक ही हरे रंग का प्रयोग किया गया। पंडितों ने इन्हें भूरे या काले रंग से रंगा था।
इन रंग भरने के अभ्यासों के दौरान, एक दिलचस्प घटना घटी— बच्चे आपस में कुछ शब्द बोलने लगे। एक समय ऐसा आया जब...
एक पंडित लड़की अपनी जगह बदलकर एक मुस्लिम लड़की के बगल में बैठ गई। उन्होंने बातचीत शुरू की।
वे आपस में बातचीत कर रहे थे और अपनी-अपनी शीट पर काम कर रहे थे। जब सभी ने पेंटिंग पूरी कर ली, तो हम सब एक साथ बैठ गए, और मैंने अनौपचारिक बातचीत के लिए लोगों को आमंत्रित किया।
चर्चा के दौरान मैंने पूछा, 'तुम दूसरे रंग लेना कैसे भूल गए?'

आपके रंगीन बक्से, जिनमें से अधिकांश हरे रंग के थे, जबकि अन्य कई रंग भी थे।
रंग आपकी ओर देख रहे हैं और कह रहे हैं कि कृपया मुझे भी उठा लो? लेकिन आपने उठा लिया।
उन्हें नहीं सुना। अब, मुझे बताओ, क्या पेड़ में हरा ही एकमात्र रंग होता है? तुमने इस्तेमाल किया
सिर्फ हरा ही नहीं, लेकिन पेड़ में और भी रंग होते हैं। ज़रा सोचिए।
एक मिनट।’ बच्चे सब चुप हो गए। फिर मैंने उनसे बाहर आने को कहा। मुझे खेल के मैदान में ले जाया गया, और वहाँ हम कई पेड़ों की छाया में बैठ गए।
उनसे कहा कि वे आंखें खोलकर ध्यान से देखें और मन ही मन गिनती करें।
पेड़ों के विभिन्न रंगों को देखना और उनमें और क्या-क्या दिखाई देता है, इसका अवलोकन करना।
हमने उन्हें इसके लिए दस मिनट का समय दिया। लेकिन समय समाप्त होने से पहले ही, उन्होंने शुरू कर दिया।
उन्होंने मुझे उन रंगों की संख्या बताई जो उन्होंने देखे थे।
उन्होंने घोंसलों की सूचना दी।
पेड़, कीड़े और पक्षी। एक बच्चा दौड़ता हुआ आया और बोला कि उसे सुनाई दे रहा है।
किसी पक्षी की आवाज सुनाई दी लेकिन वह दिखाई नहीं दिया; बाद में पता चला कि वह एक झिंगुर था।
व्यायाम जल्द ही एक खेल में बदल गया, और वे इधर-उधर दौड़ने और चढ़ने लगे।
पेड़ों पर। अचानक हमने देखा कि हजारों पक्षी आकाश से नीचे उतर आए।
ये पेड़ बहुत शोर मचा रहे थे, और एक मिनट बाद वे सब उड़ गए।

आकाश में एक चक्कर लगाते हुए और पेड़ों की ओर वापस सरकते हुए। यह एक

सैकड़ों पक्षियों द्वारा खेला जाने वाला ग्लाइडिंग का खेल। हम सभी ने इसका आनंद लिया।

पक्षियों का यह खेल देखते हुए, मैंने बच्चों से अलग-अलग चीजों पर ध्यान देने को कहा।

विश्वविद्यालय के लॉन के चारों ओर रंग बिखरे हुए थे। सूर्यास्त निकट आ रहा था और

सर्दियों के आसमान के रंग बदल रहे थे। ये मासूम बच्चे बदलते रंगों के इस खेल में पूरी तरह मग्न थे। मैंने माँ से अनुरोध किया...

एक समूह को कश्मीरी गीत गाने के लिए कहा गया जिसमें हम भी शामिल हो सकें। पहले तो,

माताओं ने पहले तो संकोच किया, लेकिन फिर उन्होंने गाना गाया। बच्चों के आते ही माहौल बदल गया।

हम सब मिलकर एक बड़ा समूह बन गए। हम लगभग अंधेरा होने तक गाते रहे। कोई देख सकता था

बच्चों के चेहरों पर खुशी झलक रही थी, और अब वे एक-दूसरे से बातें करने लगे थे।

माताओं के एक समूह ने भी आपस में बातचीत शुरू कर दी, और वे आपस में बातचीत करने लगीं।

वे अपने-अपने तरीके से योगदान देते हैं।

मैं सामाजिक विज्ञान का विशेषज्ञ नहीं हूं और मैंने मनोविज्ञान का प्रशिक्षण भी नहीं लिया है।

लेकिन हमने उस क्षण की एक प्रेरणा को पकड़ा और उसे सकारात्मकता में बदल दिया।

ऊर्जा।

हमने बच्चों की पृष्ठभूमि के बारे में जानना शुरू किया। हमें बस इतना ही पता था कि

घर लौटने पर उन्होंने अपने पिता को आतंकवादियों द्वारा सबके सामने मारे जाते देखा था।

उनमें से एक बच्ची ने अपने पिता के पैर पकड़ रखे थे जब उन्हें घसीटकर बाहर निकाला जा रहा था।

घर से बाहर। जब हमलावर उसके पिता को और आगे नहीं घसीट सके, तो एक आतंकवादी ने उसे खींच लिया।

उसने उस पर बंदूक तानकर उसे गोली मार दी, और बेचारा बच्चा अभी भी उससे चिपका हुआ था।

उसके पैरों तक। उसने अपने पिता का खून अपने पूरे शरीर पर देखा था। इसके बाद

इस भयानक और दर्दनाक अनुभव के कारण, इस छोटी बच्ची में एक विकार विकसित हो गया था।

उसके चेहरे पर विकृत, कठोर भाव थे। वह कभी सीधे आँखों में नहीं देखती थी।

किसी की नजरों से बचकर वह ज्यादातर समय अकेली रहती थी। एक और लड़की आती थी।

वह दिन में कम से कम दो या तीन बार बेहोश हो जाती है और फिर अपने खोल में सिमट जाती है।

वह अपने पिता के लिए रो रही थी। उसकी तीन बहनें थीं और घर में कोई पुरुष सदस्य नहीं था।

रिश्तेदारों ने उन्हें छोड़ दिया था। एक अन्य लड़की एक प्रतिष्ठित स्कूल में पढ़ती थी।

लेकिन जब उसने अपने पिता को खो दिया तो उसे एक साधारण स्कूल में दाखिला दिलाया गया।

डॉक्टर बनने का उसका सपना चकनाचूर हो गया। वह अचानक टूट जाती थी।

और चीखना शुरू कर देते हैं।

हम सभी को लगा कि अधिकतर लड़कियों को पिता की भूमिका की आवश्यकता है।

इसके विपरीत, अधिकांश लड़के परिपक्व पुरुषों की तरह व्यवहार करते थे।

वे कभी खुलकर अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं करते, सिवाय तब जब कोई उनसे बातचीत करे।

निजी। उनमें से कुछ ने खुद को बंद कर लिया था और कभी खुलते नहीं थे।

एक दिन हमने उन्हें चिड़ियाघर में पिकनिक पर ले जाने का फैसला किया; यह एक मुफ्त यात्रा होगी।

बिना किसी नियमित सत्र के दिन बीत गया। जम्मू का चिड़ियाघर छोटा था, जिसमें एक

जानवरों की संख्या सीमित थी। आश्चर्यजनक रूप से, उनके पास पक्षियों की कई किस्में थीं।

बच्चों को रंग-बिरंगे पंखों वाले ये पक्षी बहुत पसंद आए। मैंने कुछ चीजें देखीं।

बच्चे दी गई जानकारी से जो कुछ भी देखते थे, उसे नोट कर रहे थे।

इन पक्षियों को हर पिंजरे पर रखा गया था। हमें चारों ओर घूमने में कुछ घंटे लग गए।

पूरा चिड़ियाघर। दोपहर के भोजन के दौरान, कनाया ने बच्चों से याद करने को कहा...

हमने पक्षियों के आकार और रंगों को देखा था। हमने काफी देर तक सैर की।

चिड़ियाघर, जिसके परिसर में एक जंगल था। मैंने कुछ बच्चों से पूछा,

“जहां आप रहते हैं, वहां पेड़ हरे रंग के हैं; क्या आपने ध्यान दिया कि वहां कितने प्रकार के पेड़ हैं?”

'प्रत्येक पेड़ में कितनी हरियाली होती है?' यह एक अनायास ही पूछा गया प्रश्न था।

उन्हें हरे रंग के विभिन्न शेड्स से अवगत कराएं, जिससे उनकी संवेदनशीलता विकसित हो सके।

देखने लायक। हालाँकि, दिन का सबसे अच्छा सबक यह था कि बच्चे बिना किसी झिझक या असहजता के एक दूसरे से बात करना।
अगले दिन, जिम में वापस आकर, राकेश ने एक मजेदार व्यायाम सत्र का नेतृत्व किया।
जिसे बनाने के लिए बच्चों को अपने पूरे शरीर का, सिर से लेकर पैर तक, इस्तेमाल करना पड़ता था।
छवियों में, अपने शरीर को अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में उपयोग करते हुए। पिछले दिन की
चिड़ियाघर की यात्रा ने उन्हें पक्षियों और जानवरों की कल्पना करने में मदद की।
इससे उन्हें प्रकृति की छवियों या उनके मन में उत्पन्न होने वाली किसी भी अन्य चीज़ की ओर अग्रसर किया।
राकेश ने उनके दिमाग को उत्तेजित करने के लिए विभिन्न प्रकार के संगीत का प्रयोग किया।
साथ में तस्वीरें बनाते-बनाते धीरे-धीरे सेशन व्यक्तिगत तस्वीरें बनाने में बदल गया।
यहां, प्रत्येक बच्चा अब अपने शरीर और
बिना किसी के हस्तक्षेप, निर्देश या हस्तक्षेप के मन को विभिन्न रूप बनाने की शक्ति।
उन्हें सुधारना। हम सभी के लिए जो महत्वपूर्ण था वह बच्चों का भविष्य था।
स्वयं पर ध्यान केंद्रित करना और उसमें सक्रिय भागीदारी। पूरे समय संगीत बजता रहा।
उनकी कार्य प्रक्रिया में अप्रत्यक्ष रूप से उनकी मदद करना और उन्हें प्रेरित करना। यह एक सुखद अनुभव था।
उन्हें लगातार नए रूप बनाते हुए देखते रहे। हमने उनके शरीरों को देखा।

कई वस्तुओं और आकृतियों में रूपांतरित हो जाना, जिनमें से कई अधिकांश लोगों के लिए समझ से परे हैं।

हमें, लेकिन यह महत्वपूर्ण नहीं था। ज़रूरी यह था कि उन्हें एक रचनात्मक प्रक्रिया में शामिल किया जाए जहाँ उनकी व्यक्तिगत, भावनात्मक यादें उभर सकें।

अपने मन की बात खुलकर कह दें और उन्हें अपने आप को अनुभव करने के लिए प्रेरित करें।

यह सत्र समाप्त होने के बाद, उन्हें आराम करने के लिए कहा गया। आराम? यह तो...

यह उनके लिए बिल्कुल नया था; वे ऐसा कर ही नहीं सकते थे। अंततः, हमें उन्हें निर्देश देना पड़ा।

पीठ के बल लेटते हुए अपनी सांस पर ध्यान केंद्रित करें। धीरे- धीरे, यदि किया जाए

सही ढंग से, वे पूर्ण शारीरिक विश्राम की स्थिति तक पहुँच सकते हैं, एक योगिक अवस्था।

यह व्यायाम तनाव और चिंता को पूरी तरह से दूर करने में चमत्कारिक रूप से कारगर है।

जब यह सत्र समाप्त हुआ, तो मैंने बहुत धीरे से विराम के लिए कहा, लेकिन वहाँ एक

अजीब सन्नाटा। मैंने छोटी नूर को ठंड से बेजान होकर गिरते देखा। सुल्ताना रोने लगी।

जोर-जोर से चिल्लाने लगे, और एक लड़का चुपचाप एक कोने में सिसकने लगा। जल्द ही दूसरे लड़के और

लड़कियाँ उन सबकी मदद करने के लिए दौड़ रही थीं, पानी ला रही थीं और अपनी संवेदनाएँ व्यक्त कर रही थीं।

सहानुभूति। यह बच्चों के बीच एक प्रकार का बंधन था। हमने जानबूझकर ऐसा किया।

हम उनमें हस्तक्षेप नहीं करते; हम उन्हें स्थिति को स्वयं संभालने देते हैं।

दस से बारह के समूह में बैठे, बातें कर रहे थे और एक-दूसरे की मदद कर रहे थे। लड़कों ने
इस बिंदु पर नेतृत्व करें। प्रवासी बच्चों के समूहों के बीच किसी भी तरह की दरार और
घाटी के बच्चे पूरी तरह से गायब हो गए। हमारी माताओं का समूह भी इसमें शामिल हो गया और
उन्होंने मातृत्वपूर्ण स्नेह और सलाह दी। ऐसा लगा मानो एक बड़ा परिवार साथ हो।
एकत्रित।
मेरे मन में सवाल आया, 'अब आगे क्या?' ऐसी स्थिति के हर चरण में, एक निश्चित
आगे बढ़ने के लिए सत्रों के पुन: डिज़ाइन में आवश्यक बदलाव करने होंगे।
चाय के ब्रेक के तुरंत बाद, जब हम दोबारा इकट्ठा हुए, तो कुछ लड़कों ने कहा कि उन्होंने ऐसा किया था।
अब वे कोई क्लास नहीं करना चाहते। जब मैंने उनसे पूछा कि क्या हुआ, तो उनका जवाब था:
उन्होंने कहा, 'हम इन अभ्यासों से थक गए हैं। हम कुछ अलग करना चाहते हैं।'
मैंने उनसे पूछा, ‘आप क्या करना चाहेंगे?’ उनकी मांग थी कि वे कुछ खेलें।
खेलकूद के लिए, हमने विश्वविद्यालय के खेल विभाग से कुछ फुटबॉल और क्रिकेट सेट खरीदे।
तुरंत ही, कुछ बच्चे क्रिकेट खेलने लगे और अन्य
खेल के मैदान पर फुटबॉल।
मैं एक सार्वजनिक पीसीओ बूथ से कुछ फोन कॉल करने गया था। जब मैं

लगभग पैंतालीस मिनट बाद लौटने पर मैंने देखा कि मेरे संसाधन कर्मी मुझे देख रहे थे।
बच्चे खुशी-खुशी खेल रहे थे, लेकिन जैसे ही उन्होंने मुझे देखा, वे रुक गए और मेरी तरफ दौड़ पड़े। मैंने पूछा, 'क्या हुआ?' 'आपने ऐसा क्यों किया?'
'क्या आपने खेलना बंद कर दिया?' उन्होंने जवाब दिया, 'माफ़ कीजिए, माफ़ कीजिए, माफ़ कीजिए, महोदय, हमें वापस जाने दीजिए।'
कक्षा।’ मुझे उत्सुकता हुई, इसलिए मैंने उनसे कहा, ‘नहीं, अब मैं भी खेलना चाहता हूँ।’ मैं शामिल हो गया।
मैंने क्रिकेट खेलना शुरू किया और गेंदबाजी करने लगा, लेकिन मेरे खेलने के कुछ ही मिनटों के भीतर,
वे फिर रुक गए और मुझसे क्लास शुरू करने को कहा। मैंने उनसे पूछा, 'क्या आप
पक्का? कोई समस्या नहीं है; हम खेलते रह सकते हैं। हमारे पास बहुत समय है।' लेकिन
उन्होंने कक्षा को फिर से शुरू करने पर जोर दिया।
हम व्यायामशाला में वापस गए। मैंने उन्हें बिठाया और उनसे बात की।
मुझे यह महसूस हो रहा था कि वे अपने किए पर खुश नहीं थे और
मुझे थोड़ा अपराधबोध महसूस हो रहा था। मैंने उन सभी से कहा, 'आप जानते हैं, मैं आज बहुत खुश हूं।'
आपने जो कहना था कह दिया। याद रखना मैंने तुमसे क्या कहा था? जिस पहले दिन हम मिले थे? मैंने कहा था कि आपको जो कहना है कहने का पूरा अधिकार है।
आप जो कहना चाहते हैं, और आज मुझे आप पर गर्व है कि आपने अपने मन की बात कही।
आपको अपने भीतर यही भावना विकसित करनी होगी, पूछने की भावना, न कि

इसे अपने अंदर दबाकर रखना।’ सौभाग्य से, मुझे यह लाभ प्राप्त था कि
अपनी मातृभाषा में ये सब कह पाने के कारण उन्होंने इसे अच्छी तरह से ग्रहण किया। 'तुम
'आप हमारी पेशकश को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए हमेशा स्वतंत्र हैं,' मैंने आगे कहा।
‘हमें आपकी नियमित प्रतिक्रिया की आवश्यकता है। इसी तरह हम भी सीखते हैं।’ हमें ऐसा लगा।
कार्यशाला के भीतर नई गतिशीलता देखकर हमें कार्यशाला के प्रति पूरा भरोसा हो गया।
समूह। आज उनके साहस को देखकर लगता है कि यह उन सभी आशंकाओं और चेतावनियों को गलत साबित करता है।
पंडित और के बीच उत्पन्न हो रही समस्याओं के बारे में हमारे दोस्तों ने मुझे जो जानकारी दी थी, वह इस बारे में थी।
मुस्लिम बच्चे।
एक नया सत्र शुरू हुआ, फिर से एक सफेद कागज के साथ, इस बार एक केवल एक पक्षी की रूपरेखा। रंगीन बॉक्स के साथ प्रतियां वितरित करने के बाद,
मैंने उनसे कहा कि वे रूपरेखा को उसी तरह भरें जैसे उन्होंने पहले भरा था। इस बार
हमने एक नाटकीय परिवर्तन देखा। हमारे पास मौजूद एक साधारण पक्षी की रूपरेखा का उपयोग करते हुए।
इसके बाद, बच्चों ने तरह-तरह के रंग-बिरंगे पक्षी बनाए और अपने पूरे हाथ भर दिए।
चमकीले रंगों वाली चादरें।
इसके बाद, हमने कहानी गढ़ने का खेल शुरू किया। हमेशा की तरह, हमने शुरुआत की।

एक घेरे में बैठने के बाद, कुछ खेल और एकाग्रता अभ्यास किए गए। शुरू करने से पहले, मैंने घाटी की एक लड़की, ज़ोया को घेरा पार करते हुए देखा और
सुनीता के साथ दूसरी तरफ खड़े हो जाओ, दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए। यह कोई साधारण बात नहीं थी।
वे मुस्कुरा रहे थे और सड़क पार कर रहे थे। मैंने राकेश के कान में फुसफुसाया,
‘ताले की चाबी घूम गई है और शायद अब ताला खुल गया है।’ हम दोनों हँसे। हम इस घटनाक्रम से काफी खुश थे।
कहानी बनाने या कहानी गढ़ने के खेल में सभी बच्चों को केवल एक ही चीज़ जोड़नी थी।
एक वाक्य को दूसरे वाक्य से जोड़कर एक कहानी बनाएं। प्रत्येक बच्चा एक वाक्य जोड़ता है।
वाक्य, और कहानी एक के बाद एक आगे बढ़ती रहती है।
एक बच्चे से दूसरे बच्चे तक। यह ईंट-दर-ईंट दीवार बनाने जैसा है। इस तरह कहानी आगे बढ़ती है।
यह सिलसिला तब तक जारी रहता है जब तक प्रत्येक व्यक्ति योगदान देता है और नए आयाम जोड़ता है।
प्रतिभागियों के बीच बार-बार चक्कर लगाना। इससे बहुत कुछ हो सकता है।
कहानी छोटी है, लेकिन अगर आप अपनी कल्पना का इस्तेमाल करते रहें, तो यह खेल आपको आगे ले जा सकता है।
एक लंबी दास्तान भी बुन लें।
शुरुआत में बच्चे कहानी में ज्यादा कुछ जोड़ नहीं पाए।
जो मुश्किल से एक चक्कर ही लगा पाया। हमने कई बार कोशिश की, लेकिन कुछ खास नहीं हुआ।
प्रगति हो सकती थी। अंततः, राकेश और मैं खेल में शामिल हो गए। जब एक

कहानी धराशायी हो गई, कमरा हंसी से भर गया। अंत में, राकेश और मैंने मिलकर एक रचना बनाई।

बच्चों के लिए एक तरह का डेमो, जिसमें कहानी बनाने और उसे आगे बढ़ाने के लिए प्रत्येक बच्चा एक-एक पंक्ति जोड़ता है।

जो लगभग दस मिनट तक चला। हमने इसमें हर तरह के किरदारों को शामिल किया।

— राक्षस, जादुई कालीन, राजा और जानवर। हर बार कोई न कोई महत्वपूर्ण क्षण।

जब विकास हुआ, तो बच्चे हंसने और ताली बजाने लगे। वे हमारी असलियत समझ गए थे।

उदाहरण के लिए, तात्कालिक तकनीकों की संभावनाएँ।

एक ऐसी प्रमुख कहानी जो किसी भी सामान्य श्रेणी के रूढ़िवादी कथानकों में नहीं आती।

इससे कल्पना की अन्य दुनियाओं में एक असीमित यात्रा का अवसर मिला।

इसके बाद बच्चों की बारी थी एक बड़ी कहानी बनाने की। इस बार कहानी थी...

अलग-अलग चीजें हुईं, और एक कहानी पनपी, जो रोमांच, युद्धों, पानी के नीचे रहने वाले जीवों से भरी थी।

परियां और डाकू। उन्होंने एक विचित्र धारावाहिक कहानी की रचना की।

हमने उन्हें तीन समूहों में बाँटा और उनसे नई कहानियाँ बनाने को कहा।

इस बार तीनों समूहों ने खूब मस्ती की और अपनी-अपनी प्रस्तुतियों में तरह-तरह के अतिशयोक्तिपूर्ण अभिनय किए।

उन्होंने तात्कालिक कहानियाँ बनाईं। अपनी कहानियाँ पूरी करने के बाद, हमने प्रत्येक समूह से कहा कि वे अपनी कहानियाँ बाकी सभी को सुनाएँ। उन्हें अपनी कहानियों को व्यवस्थित करने में कुछ समय लगा।

उन्होंने अपनी कहानियों के क्रम को व्यवस्थित किया और फिर उन्हें प्रस्तुत करना शुरू किया।
यह कहानी बच्चों का एक शानदार प्रयास था।
अगला कदम उनसे अपनी कहानियों का अभिनय करने के लिए कहना था, जिसका अर्थ था कि वे
उन्हें किरदारों में ढलना पड़ता था, संवादों को तात्कालिक रूप से बोलना पड़ता था, हाव-भाव बनाने पड़ते थे और
जगहें व्यवस्थित करें। इसी दौरान इनमें से कुछ बच्चे मेरे पास आए और बोले,
‘तुम बहुत चालाक हो; तुम हमसे सारा काम करवा रहे हो।’ यह एक प्यारी सी बात थी।
मुझे यह विरोध प्रदर्शन बहुत पसंद आया। राकेश भी उनकी टिप्पणी पर हँस पड़ा।
उस समय मैंने उन्हें एक मछली और एक मछली पकड़ने वाली छड़ी की कहानी सुनाई। फिर मैंने
उन्होंने उनसे पूछा, 'क्या आप एक मछली पकड़ने वाली छड़ी लेना चाहेंगे जिससे आप मछली पकड़ सकें?'
आप जब चाहें खुद मछली पकड़ सकते हैं, या आप मछली परोसी जाना पसंद करेंगे?
कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया। मैंने कहा, 'हम आपको यह बताने के लिए यहां आए हैं और
अपनी प्रतिभा को पहचानें। इस कार्यशाला में, आपको यह सीखना होगा कि
निर्णय लें और गलतियाँ करें ताकि आप अपनी गलतियों से सीख सकें। छिपी हुई क्षमता। याद रखें, कोई आपका न्याय नहीं कर रहा है। हम सब सीख रहे हैं।
एक दूसरे से वास्तविक रूप से काम करके और खोज करके सीखते हैं।
तो, अब आप जा सकते हैं।

और एक घंटे के भीतर हम सभी के सामने अपनी कहानी की एक उचित प्रस्तुति दें।
यहाँ।'
एक घंटे बाद, तीनों समूहों ने लगभग पाँच-पाँच शब्दों में अपनी प्रस्तुतियाँ दीं।
प्रत्येक व्यक्ति को मिनट लगे। उन्हें जगह का उपयोग करते और रचना करते देखना बहुत आनंददायक था।
पात्रों। इसके अलावा, एक समूह ने एक गीत गाया, जिसे लिखा और संगीतबद्ध किया गया था।
नूर!
प्रस्तुतियों के समाप्त होने के बाद, हमने नाटकों के विषयों पर चर्चा की।
उन्हें हमारी टिप्पणियाँ पसंद आईं और वे अपनी उपलब्धियों से खुश थे।
दिन के अंत में, मैंने उनसे कहा, 'क्या आपको एहसास हुआ कि आपने यह सब अपने दम पर किया है?'
'खुद को?' यह एहसास होते ही सबके चेहरे पर बड़ी मुस्कान आ गई कि उन्हें क्या मिला है।
हासिल किया।
बाल शिक्षा विशेषज्ञ आशा सिंह एक पूरे दिन का सत्र चाहती थीं। बच्चों से बातचीत करके उन्हें अपने कुछ छिपे हुए राज़ साझा करने के लिए प्रेरित करना।
यह महज़ एक बातचीत का सत्र होना था। आशा ने बच्चों से उनके जीवन के सबसे खुशी भरे दिन या घटना और सबसे दुखद घटना के बारे में बताने को कहा। उसने उन्हें समझाया कि...
उन्हें यह बताया गया कि यदि वे चाहें तो वे अपनी कहानियाँ समूह के साथ साझा कर सकते हैं या

किसी भी प्रतिभागी को चुनकर, चुपचाप किसी स्थान पर, उनके साथ अपनी गुप्त कहानियाँ साझा करने का विकल्प चुनें।
कोना।
इस अभ्यास से बच्चे कुछ समय के लिए परेशान हो गए, क्योंकि वे उन्हें अपने खोल से बाहर निकलना होगा और सबके सामने बोलने का साहस जुटाना होगा।
सभी के लिए। इस अभ्यास का उद्देश्य उन्हें बोझ से मुक्त करना, कुछ राहत देना था।
वे भावनाएँ जो शायद वर्षों से उनके भीतर दबी हुई थीं। सन्नाटा छा गया।
और सन्नाटा छा गया। बच्चों को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें, और कुछ बच्चे बड़े हो गए।
बहुत तनावपूर्ण।
हम सभी को उम्मीद थी कि यही वह समय होगा जब वे इस बारे में बात करेंगे।
उन्होंने जिस हिंसा और आतंक को देखा था, पंडित बच्चे उसके बारे में बात करते थे।
उनके पलायन और अपमान की कहानियों के बारे में। हमें उम्मीद थी कि चीजें
उस दिन धमाका हुआ, लेकिन हमें आश्चर्य हुआ कि किसी भी बच्चे ने कुछ नहीं कहा।
यह घाटी की स्थिति या उन पर हिंसा के प्रभाव को दर्शाता है। व्यक्तिगत रूप से। उनके पास घरेलू कठिनाइयों, दुर्घटनाओं या अन्य घटनाओं की अपनी-अपनी कहानियां थीं।
दादा-दादी या रिश्तेदारों की मृत्यु। हैरानी की बात है कि उनमें से किसी ने भी इस बारे में बात नहीं की।
आतंकवाद। उनकी कहानियाँ रोजमर्रा की मानवीयता के बारे में थीं,

अकेलापन, गरीबी, शिक्षा और उनके भविष्य के बारे में। सबसे महत्वपूर्ण बात क्या थी?
उनकी कहानियाँ सुनाते समय जो प्रतिक्रियाएँ आईं, वे बहुत ही मार्मिक थीं।
अन्य बच्चों के प्रति समर्थन और एकजुटता के भाव के रूप में। उदाहरण के लिए, एक लड़की का
सबसे दुखद कहानी उस दुर्घटना की थी जिसमें वह घायल हो गई थी, और उसका भाई
अस्पताल में चोटों के कारण उसकी मौत हो गई थी। कहानी के अंत में, उसने अपने दिल की बात कह दी।
वह नीचे बैठ गई और रोने लगी, 'अब मेरा कोई भाई नहीं है।' उसके पीछे बैठा एक लड़का
उसने अनायास ही अपना हाथ उठाया, उसके कंधे को छुआ और उससे कहा, नहीं, तुम मुझमें भाई पाओगे; तुम अकेले नहीं हो।
कई दुखद अंत वाली कहानियों ने दर्शकों से बेहद मार्मिक प्रतिक्रियाएं प्राप्त कीं।
बच्चों के बारे में बात करते हुए, नूर ने अपनी मां के अपनी तीन बहनों के साथ अकेले संघर्ष के बारे में बताया।
जब उसने अपनी माँ की कठिनाइयों के बारे में बताया तो पूरी कक्षा चुपचाप अपने आँसू पोंछने लगी। यहाँ तक कि विधवा माताओं के समूह ने भी उनका साथ दिया।
उनकी कहानियां, कुछ मजेदार और कुछ दुखद।
विधवाओं ने अपने जीवन से पर्दा उठाया। उन्होंने हमें बताया कि कैसे, जैसे-जैसे
जिन महिलाओं के परिवार में कमाने वाला कोई सदस्य नहीं होता, उनके लिए हर दिन एक संघर्ष बन जाता था।
किसी भी तरफ से कोई समर्थन मिले बिना। हैरानी की बात है कि उन्होंने कभी भी

उन्होंने अपनी दुर्दशा के लिए राजनीतिक स्थिति को जिम्मेदार ठहराया, या शायद वे ऐसा कर नहीं सके।
उस पहलू को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना या समझना। यह स्पष्ट हो गया कि उनके रिश्तेदार और
संयुक्त परिवार भी उनका भरण-पोषण करने की स्थिति में नहीं थे, या ऐसा भी नहीं था कि
समाज उनके लिए कुछ भी करने में असमर्थ था। पूरी कक्षा
वह रो रही थी; ऐसा लग रहा था जैसे किसी अंतिम संस्कार या शोक का दृश्य हो।
बच्चों ने अपने सबसे खुशी भरे दिनों की कहानियाँ सुनाईं और हंसी तो आई, लेकिन आंसुओं ने ही हम सबको एक दूसरे के करीब ला दिया।
भावनात्मक मुक्ति के क्षणों ने चुपचाप दबाए गए छिपे हुए दर्द की गांठों को खोल दिया।
प्रत्येक बच्चे के भीतर गहराई में। इस प्रकार के अनुभव तनाव के बिंदुओं को जन्म देते हैं।
शरीर में मौजूद समस्याएं क्योंकि उन्हें कभी संबोधित या हल नहीं किया गया है। कोई भी नहीं
किसी ने किसी से कुछ नहीं कहा; हम सब बस खामोशी में एक-दूसरे को प्यार से गले लगाते रहे।
मैं चाय पीने के लिए जिम से बाहर आया। दर्द बिना शब्दों के साझा किया गया, और
सब एक हो गए थे।
शाम को, कार्यशाला समाप्त होने से पहले, दो माताएँ मिलीं।
मुझसे अलग से अनुरोध करते हुए कि वे अपनी चिकित्सकीय जांच करवा सकें।
माँ को हर समय पूरे शरीर में दर्द रहता था, और दूसरे

उसने शिकायत की कि वह महीनों से सो नहीं पा रही थी और
वह लगभग पूरी रात जागती रही। वह कभी भी डॉक्टर के पास चेकअप के लिए नहीं गई थी।
समर्थन की कमी और घाटी में मौजूदा स्थिति के कारण।
उन्होंने अगले दिन मदद का वादा किया।
शिक्षाविद अनिता रामपाल ने एक नए सत्र की शुरुआत की
बच्चों। स्वाभाविक रूप से, उनकी चर्चाओं में शिक्षकों की भूमिका और
विद्यालयों की स्थिति। बच्चों ने अपने शिक्षकों की कड़ी आलोचना की, जिन्होंने
वे अच्छी तरह से प्रशिक्षित नहीं थे और अपना शिक्षण ठीक से नहीं दे पा रहे थे। अंततः, बच्चे अपने विद्यालय के वातावरण से खुश नहीं थे।
उनके स्कूलों में पढ़ाने का तरीका।
ज़ोया ने अपने पिता के निधन तक शहर के एक अच्छे स्कूल में पढ़ाई की थी।
आतंकवादियों ने उसकी गोली मारकर हत्या कर दी। उसके बाद उसे एक साधारण स्कूल में दाखिला लेना पड़ा।
उसने जोर देकर कहा कि वह अब भी डॉक्टर बनना चाहती है और जानना चाहती है कि ऐसा क्यों है।
साधारण स्कूल में पढ़ना संभव नहीं है। उन्होंने बताया, 'आखिरकार, हमारे
किताबें तो एक जैसी हैं। सरकार खराब स्कूलों और खराब शिक्षा व्यवस्था का समर्थन क्यों कर रही है?
'खराब शिक्षकों के माध्यम से शिक्षा?' चर्चा काफी जीवंत हो उठी। लगभग विस्फोटक।

हम सभी ने चर्चा के स्तर और पूछे गए सवालों का भरपूर आनंद लिया।

अब मुझे इन बच्चों को आगे बढ़ाने का आत्मविश्वास आ गया था। अब मुझे लगा कि मैं इन बच्चों को कुछ हद तक आगे बढ़ा सकती हूँ।

रचनात्मकता और योजना के प्रमुख क्षेत्र। इस चरण में, जब बच्चे बाहर थे।

थोड़े से अवकाश के दौरान, मैंने फर्श पर सफेद कागज के दो लंबे रोल खोल दिए।

वे अंदर आए, उन्होंने चादरों को ऐसे देखा मानो कोई दावत होने वाली हो।

परोसा गया। लोगों को इन सफेद कागज के रोल के दोनों ओर बैठना पड़ा।

मैंने उनसे कहा कि वे दो समूहों में बंट जाएं और अपना सामान उठा लें।

वॉटरकलर के डिब्बे और ब्रश पेपर रोल के किसी भी तरफ रखे जा सकते हैं।

मैंने उनसे एक आदर्श विद्यालय के विषय पर सामूहिक चित्रकला करने को कहा।

स्कूल में जो कुछ भी होना चाहिए, उनके विचार से सब कुछ था। बच्चे आश्चर्यचकित थे।

लेकिन इस तरह की परियोजना की योजना बनाने में मुझे खुशी और उत्साह महसूस हुआ। मैंने उन्हें निर्देश दिया, 'तुम

सबसे पहले अपने समूह के सदस्यों के बीच चर्चा करें, सहमति बनाएं, असहमति जताएं और उन्हें मनाएं।

एक दूसरे के साथ मिलकर एक संयुक्त चित्र बनाएं, जिसमें आप सभी

भाग लेना और योगदान देना।' मुझे उन्हें सावधानीपूर्वक समझाना पड़ा कि कैसे करना है।

वे जलरंगों का उपयोग कर सकते हैं। वे अपनी उंगलियों और यहां तक कि कागज के टुकड़ों का भी उपयोग कर सकते हैं।

पेंट करने के लिए फोम। मैंने कहा, 'बस अपने आदर्श स्कूल पेंटिंग प्रोजेक्ट का आनंद लो।'
आपको चित्रकार न होने की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है; स्कूल के बारे में आपका विचार ही सही है।
अधिक महत्वपूर्ण।'
इन बच्चों को कागज के उपयोग की योजना बनाते देखना बहुत दिलचस्प था।
वह स्थान लगभग तीस फीट लंबा और चार फीट चौड़ा था।
समूहों में जीवंत चर्चाएँ हुईं, जिनमें सहमति और असहमति दोनों व्यक्त की गईं। कुछ बच्चे अनेक विचारों के साथ समूहों के नेता बनकर उभरे, जबकि अन्य
मैंने उनकी बात सुनी। अंतिम पेंटिंग बनाने से पहले, बच्चों ने यह तय करने की गंभीर जिम्मेदारी कि कौन उस जगह के किस हिस्से को पेंट करेगा।
हम वयस्क केवल उनकी रोचक बातचीत सुनते रहे। इतने समय बाद
कुछ दिनों बाद, बच्चे अब एक सहज समूह बन गए थे, जो शांत और एकाग्रचित्त थे।
काम।
इस तरह के बड़े अभ्यास से कुछ महत्वपूर्ण सबक मिले, जैसे कि सामग्रियों का आदान-प्रदान, संयुक्त चर्चा की कला, एक दूसरे को मनाना
और एक-दूसरे के दृष्टिकोण का सम्मान करना। इसका उद्देश्य बस इतना था कि प्रत्येक व्यक्ति
टीम को एक साझा लक्ष्य के लिए लोकतांत्रिक तरीके से काम करना सीखना था। इसमें समय लगा।
उन्हें पेंटिंग पूरी करने के लिए कुछ ही घंटे दिए गए, जो लगभग पिन ड्रॉप की आवाज़ के बीच पूरी की गईं।

शांति। पूर्ण एकाग्रता के साथ एक संयुक्त समूह में काम करना एक नया अनुभव था।
यह अवधारणा इन सभी बच्चों के लिए एक समान थी और उनके लिए समूह चिकित्सा की तरह काम करती थी।
जब उन्होंने पेंटिंग पूरी कर ली, तो हम सभी ने उनकी कलाकृति देखी।
इससे पता चलता है कि ये बच्चे क्या हासिल कर सकते हैं। उनकी पेंटिंग में एक
स्थान, रंग और योजना की समझ। वहाँ स्कूल की इमारतें थीं,
खेल के मैदान, तैरने के लिए पानी की धाराएँ, नावों, मछलियों और अन्य सुविधाओं से सुसज्जित।
हंस, खेल के मैदान, एक सुंदर हरा जंगल और जंगली जानवर। दूरी पर, उन्होंने पर्वत श्रृंखलाओं और जंगलों की एक लंबी रेखा खींची। दोनों समूहों की कल्पनाशीलता अद्भुत और मौलिक थी। उन्होंने जो कुछ भी किया,
मैंने सोचा था कि एक आदर्श स्कूल को उचित स्थानों पर स्थित होना चाहिए।
प्रदर्शित वस्तुएं रंगीन थीं, और हमें दोनों चित्र बहुत पसंद आए। यह आसान नहीं था।
तीस फुट लंबी पेंटिंग बनाएं। हमने आवश्यक बातों के बारे में सवाल उठाए।
उपयोगिता की दृष्टि से, ऐसी चीजें जिनके बारे में बच्चों ने सोचा ही नहीं था।
स्कूलों के लिए बिजली का क्या होगा? यह कहाँ से आएगी? स्ट्रीटलाइटें कहाँ थीं? सारा कचरा और गंदगी कहाँ जाएगी?
क्या वह कैंटीन की जगह थी? जब उन्हें एहसास हुआ कि उनकी योजना गलत थी

अधूरा होने के कारण, इन सभी मुद्दों को उठाने पर वे हमसे निराश थे।
उन्होंने जोर देकर कहा कि वे इन सभी मुद्दों पर विचार करें और समाधान निकालें।
अगले दिन तक। उन समस्याओं को हल किए बिना, हम इस काम को एक उचित, कार्यात्मक परियोजना के रूप में नहीं सोच सकते थे। फिर भी, हमने उनके विचारों की सराहना की और
लेआउट।
इन बच्चों को, जो आपस में बात नहीं करते थे, इस तरह देखना बहुत सुखद था।
कुछ ही दिन पहले की बात है, कार्यशाला के एक सप्ताह के भीतर ही इतनी सारी उपलब्धियां हासिल कर लीं।
एक और सवाल जिसका जवाब हम उनसे उनके स्कूलों के बारे में जानना चाहते थे, इसके अलावा
तकनीकी दृष्टिकोण से, सवाल यह था कि किस प्रकार के बच्चे उनमें शामिल हो सकते हैं।
उन्होंने तय किया कि उनकी बड़ी पेंटिंग्स को उचित निष्पादन के लिए संयुक्त रूप से प्रदर्शित किया जाएगा।
जमीन पर। एक बड़ा स्थान आवंटित किया गया था, जिसमें एक अस्थायी मॉड्यूल बनाया गया था।
यह संरचना कानाया की मदद से बनाई गई थी, जो एक कुशल कारीगर थीं। शिल्पकार और थिएटर निर्देशक। सभी बच्चों की मदद से, हमने एक उनके द्वारा बनाई गई पेंटिंग से स्कूल का एक बड़ा मॉडल। तीन के भीतर
कुछ दिनों में, हमने एक कार्यात्मक मॉडल तैयार कर लिया, जिसमें नए विवरण शामिल किए गए थे।
यह वह मॉडल है जिस पर हम काम कर रहे थे।

जलरंगों में चित्रकारी के अभ्यास से लेकर उनके लंबे समय तक के सपनों को साकार करने तक
चित्रों को त्रि-आयामी मॉडल में परिवर्तित करके, बच्चों ने एक यात्रा की थी।
शिल्प, इंजीनियरिंग, स्वच्छता, प्रदूषण नियंत्रण, भूनिर्माण के माध्यम से
स्थानों का वितरण और अन्य चीजें। परियोजना के विवरण की समीक्षा करते समय और
आपातकालीन समस्याओं को हल करते हुए, यह देखना दिलचस्प था कि अंतिम चरण में क्या हुआ।
चित्रों में सूक्ष्म परिवर्तन शामिल किए गए। मॉडल के रूप में इन परिवर्तनों को विकसित करते समय परियोजना की व्यावहारिकता और
सुझावों की प्रयोज्यता। अंतिम त्रि-आयामी मॉडल था
यह काम कभी पूरा नहीं हुआ, लेकिन बच्चे इसे जारी रखने के लिए बार-बार आते रहते थे।
कार्यशाला के अंत तक इसमें कुछ बारीकियां और सजावट जोड़ते रहना।
अंत में, हमने एक और नाटक-निर्माण सत्र आयोजित किया जिसका विषय था...
शिक्षा और सीखने के बारे में, गाँव में आने वाली कठिनाइयों के बारे में पूछना।
कुछ इलाकों में दूर स्थित स्कूलों तक बच्चों को पहुंचने में कठिनाई होती थी।
पहाड़ों में। उन्होंने ग्रामीण इलाकों में एक बच्चे के जीवन के एक दिन को दर्शाने का प्रयास किया।
कश्मीर। जल्द ही बच्चों ने इस विषय पर दो अलग-अलग कथाएँ विकसित कर लीं।

विषय। उन्होंने इन कथाओं को कागज के रोल पर चित्रित किया और प्रस्तुतियाँ दीं।
उनकी तात्कालिक कहानियों के संदर्भ में। दोनों समूहों के आख्यान लगभग समान रहे, लेकिन स्थान, स्थल और अन्य संदर्भों के उपयोग के संदर्भ में प्रस्तुतिकरण में अंतर था।
रंग बहुत अलग थे। दोनों समूहों की व्याख्याएँ अलग-अलग थीं।
विषयवस्तु, जो स्वयं अपरिवर्तित रही। यही सबसे रोचक तत्व था।
उनकी रचनात्मकता का।
यहां से उन्हें अपनी कहानियों का प्रदर्शन करना था।
कार्यशाला के पहले चरण में, मैंने उन्हें समझाकर एक छोटा सा हस्तक्षेप किया।
संरचना की अवधारणा और कथानक का विकास। मैंने उन्हें बताया कि कैसे...
घटनाओं के घटित होने को रोचक तरीके से चित्रित करें। मैंने उन्हें इसके बारे में बताया।
बीज की अवधारणा के माध्यम से अंतरिक्ष और समय का विचार, जो उनके पास अवश्य होना चाहिए
उनके घरों में देखा गया। मैंने समझाया कि एक बीज में एक पौधा छिपा होता है, और उसके माध्यम से
अंकुरण होता है, फूल खिलते हैं, और अंत में फलों से और बीज निकलते हैं। लेकिन
इन चरणों से गुजरने में समय लगता है; बीज एक कैप्सूल की तरह होता है जिसमें
समय और स्थान सीमित हैं।
मैंने यह सब समझाया, और मैं चाहता था कि वे अपनी-अपनी कहानियाँ धीरे-धीरे बताएं।
एक पौधे की बीज से पौधे बनने और फिर वापस बीज बनने तक की यात्रा को ध्यान में रखें।

तैयारियों के दौरान वे मुझसे बेझिझक मदद मांग सकते थे। हमने उन्हें

उन्हें अपनी कहानियों को विकसित करने और फिर हम सभी के सामने उनका प्रदर्शन करने के लिए दो घंटे का समय दिया गया।

उन्होंने इस समय का सदुपयोग अपनी माताओं को डॉक्टरों से दिखाने की व्यवस्था करने में किया।

रत्ना ने उनके लिए डॉक्टरों से अपॉइंटमेंट तय कर दिए थे। जाँच के बाद

डॉक्टरों ने उनसे उनकी समस्याओं के बारे में बात की।

उन्हें कुछ दवाइयाँ और निर्देश दिए और माताओं से देखने को कहा

श्रीनगर लौटने से पहले उन्हें फिर से देखा गया। बाद में, डॉक्टरों में से एक ने

हमें बताया गया कि इन बेचारी महिलाओं को वास्तव में कोई शारीरिक या चिकित्सकीय सहायता प्राप्त नहीं थी।

वे मानसिक रूप से तनावग्रस्त थे और उन्हें मनोवैज्ञानिक सहायता की आवश्यकता थी।

उपचार। उनकी मानसिक स्वास्थ्य उपचार की आवश्यकता के बारे में सुनकर, हमने उन्हें उपचार दिया।

मैंने इस मामले को IGNCA की रत्ना के सामने उठाया। उन्होंने जल्द ही मामले की जांच करने का वादा किया है।

और श्रीनगर में स्थानीय स्तर पर उनकी मदद करने के लिए सक्षम डॉक्टरों की तलाश की जा सके।

बच्चे जब अपना काम कर रहे थे, तब वे लंबी चर्चाओं में मशगूल थे।

वे आपस में अभ्यास कर रहे थे, कनाया और राकेश भी उनकी मदद कर रहे थे। उन्होंने मेरे साथ-साथ अभ्यास किया।

अन्य शिक्षकों के साथ, उन्होंने उन्हें दूर से देखा। बच्चे पूरी तरह से नियंत्रण में लग रहे थे, क्रम बना रहे थे और फिर उन्हें छोड़ रहे थे।

फिर से शुरू करें। एक समय मैंने यह जानने के लिए एक समूह से संपर्क किया कि क्या हो रहा है।
चालू। मुझे आश्चर्य हुआ जब ज़ोया ने मुझे देखा और मुझे धक्का देकर दूर हटाते हुए कहा, 'नहीं, तुम...'
'हमारे खेल को देखना या उसमें दखल देना मना है, कृपया चले जाइए।' मुझे बहुत खुशी हुई।
उसके आत्मविश्वास से। बच्चे अब आत्मविश्वास से अपने खुद के उत्पाद बना सकते थे।
निर्णय।
ढाई घंटे बाद, बच्चों ने कहा कि वे चाहते हैं कि हम उन्हें देखें।
उनका प्रदर्शन। प्रदर्शन बहुत गंभीर साबित हुए।
नूर द्वारा रचित और गाए गए लोकगीतों के माध्यम से एक ग्रामीण परिवेश का निर्माण किया गया।
वो लड़की जो अक्सर बेहोश हो जाती थी। कई दृश्य उनके निजी अनुभवों से लिए गए थे।
दोनों समूहों ने पेशेवर खिलाड़ियों की तरह गंभीरता से प्रदर्शन किया। दोनों समूहों ने पेशेवर खिलाड़ियों की तरह प्रदर्शन किया।
मैं बीज-पौधे-बीज के सिद्धांत का उपयोग करके कुछ बनाने के उनके प्रयासों को देख सकता था।
संरचना और स्थान।
कार्यशाला के अंतिम दिन, हमने कुछ दोस्तों को देखने के लिए आमंत्रित किया था।
कुछ प्रदर्शनों को देखने और चित्रकला तथा विद्यालय परियोजना को देखने के लिए।
चित्रकला और मॉडल। बच्चों ने अपने नाटक प्रस्तुत किए, और मेहमानों ने भी।

वहाँ उपस्थित लोग उनकी प्रतिभा से इतने प्रभावित हुए कि कई मेहमान उनसे मिलना चाहते थे।
मुझे पता है कि इस तरह के और प्रोजेक्ट्स को कैसे सपोर्ट किया जाए। मैंने उनकी बात पर भरोसा किया।
और मैंने उनसे वादा किया कि जब मुझे उनकी मदद की जरूरत होगी तो मैं निश्चित रूप से उनसे संपर्क करूंगा।
उन्हें श्रीनगर में हमारी अगली कार्यशाला के लिए आमंत्रित किया गया था, जिसके लिए बहुत कुछ किया जा रहा था।
माँग।
अंततः, जब श्रीनगर वापस जाने वाले बच्चों के लिए बस आई
जब लोग पहुंचे, तो काफी बेचैनी थी, और कोई भी बस में नहीं चढ़ रहा था।
बच्चे एक साथ रहना चाहते थे। वे जल्दी-जल्दी एक-दूसरे के कपड़े उतार रहे थे।
दूसरों के पते और फोन नंबर, और उन्हें कब अंदर जाने के लिए कहा गया था
बस में आते ही दृश्य बदल गया। चारों ओर आंसू थे और बच्चे रो रहे थे।
और एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए थे। उनमें से कुछ पूरी तरह से टूट गए।
यह एक ऐसा दृश्य था जिसे मैं सहन नहीं कर सका। इन युवाओं को इस हालत में देखना मेरे लिए बहुत दर्दनाक था।
दोनों समुदायों के बच्चे एक साथ रहना चाहते थे। कुछ समय बाद
और बड़ी मशक्कत और मुश्किल से बच्चे बस में चढ़ पाए और ड्राइवर को आगे बढ़ने का इशारा किया गया। यहाँ तक कि ड्राइवर भी बस शुरू करने में हिचकिचा रहा था।
बस। आखिरकार, आंसुओं और सिसकियों के बीच, बस चलने लगी। बच्चे

जिन लोगों को अपने प्रवासी शिविरों में वापस जाना था, वे बस के पीछे-पीछे दौड़ पड़े।
कुछ दूर जाकर वह रुक गया और बस के गायब हो जाने तक वहीं खड़ा रहा।
नम आंखों से प्रवासी बच्चे अब हमारी ओर देख रहे थे।
कुछ देर खामोशी के बाद, उन्हें उनकी बस में बिठाया गया, और भारी मन से,
वे अपने शरणार्थी शिविरों के लिए रवाना हो गए। मेरे मन में एक सवाल उठा: कब
क्या ये प्यारे बच्चे भी अपनी घाटी में स्थित अपने घरों को लौटेंगे?
हमें जल्द ही लोगों से बहुत उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया मिली और साथ ही एक
हमारे शुभचिंतकों की ओर से एक और कार्यशाला आयोजित करने की मांग आई है। लेकिन इस बार...
घाटी का सफर काफी कठिन था। लेकिन मैंने और रत्ना माथुर ने बातचीत शुरू कर दी।
अगली कार्यशाला के बारे में। इस प्रकार के कार्य के लिए, जहाँ स्थानीय सरकारें
किसी भी प्रकार का समर्थन न मिलने के कारण, इसे स्थापित करना काफी मुश्किल हो जाता है।
किसी भी प्रकार का बुनियादी ढांचा। जम्मू में हमारे अनुभव के आधार पर हमें ऐसा लगा।
कश्मीर घाटी में एक कार्यशाला आयोजित करने का साहस रखते हुए, जहाँ हम
अब प्रवासी बच्चे पहली बार अपनी पैतृक भूमि पर लौट रहे हैं। समय। जिसके बारे में उन्होंने केवल सुना है और जहां वे वास्तव में

संबंधित। यह बहुत चुनौतीपूर्ण होने वाला है।
कश्मीर में हमेशा यही कहा जाता है, 'पता नहीं कौन सी एजेंसी है' 'कहां और कैसे काम करना है।' कश्मीर में काम करना आश्चर्यों से भरा है। एक होने के नाते
संघर्ष क्षेत्र में आपको बहुत सतर्क और सावधान रहना होगा, अन्यथा आप
देश मुसीबत में। एक रात, इस नई कार्यशाला के दौरान, जो शुरू हुई थी...
मई 2004 में श्रीनगर में, आधी रात को लगभग 2 बजे होटल में,
मुझे अपने दरवाजे पर दस्तक सुनाई दी। मैं एक और दस्तक सुनकर जागा, इस बार एक
थोड़ी आवाज़ तेज़ हो गई। मैंने लाइट जलाई, और वहाँ सेना के जवानों का एक समूह था।
वे अपनी एके-47 राइफलें मेरे दरवाजे पर ताने खड़े थे। मैं कुछ पल के लिए घबरा गया था।
मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह सच है। तभी उनका कमांडर अंदर आ गया।
कमरे में हथियारबंद जवान आए। उन्होंने मेरे कमरे की तलाशी ली।
जब वे संतुष्ट हो गए तो उनके सिख कमांडर ने कहा, 'अरे, तुम यहाँ हो।' ऐसा लगा जैसे उसने मुझे पहचान लिया हो। फिर उसने मुझे समझाया कि उन्हें कुछ मिला है।
गलत जानकारी दी और दखलंदाजी के लिए माफी मांगते हुए चला गया। कार्यशालाओं में से एक के दौरान, जो उस कार्य का हिस्सा थी जो इसके लिए किया गया था
श्रीनगर में आयोजित कार्यशाला में पिताविहीन बच्चों के साथ, मैं श्रीनगर में था।
जम्मू के शिविरों से कुछ प्रवासी अल्पसंख्यक बच्चे। मैंने एक योजना बनाई थी।

उनके लिए ऐतिहासिक स्थलों की सैर, जिसमें पिकनिक भी शामिल है। ये प्रवासी बच्चे और उनके साथ आई कुछ माताएँ
बच्चों का व्यवहार अद्भुत था। वे डरे हुए थे और बाहर निकलने की हिम्मत नहीं करते थे।
कार्यशाला परिसर। हमेशा की तरह, एक बस का इंतजाम किया गया, और यह तय किया गया।
हम पहलगाम जाते थे और रास्ते में कुछ जगहों पर रुकते थे।
महत्वपूर्ण विरासत स्थल। जब हम जाने वाले थे, तब मैंने प्रवासी से पूछा।
हमने माताओं से हमारे साथ जुड़ने का आग्रह किया। लेकिन वे बहुत उत्साहित नहीं थीं और आने से बचती रहीं।
वे हमारे साथ थे। वे खीर भवानी और अन्य मंदिरों में जाना चाहते थे।
पहलगाम एक अलग दिशा में जा रहा था, वहां दोनों काम एक साथ करना संभव नहीं था।
इसमें बहुत समय लग जाता। मैंने इन महिलाओं को आश्वासन दिया कि हम ऐसा करेंगे।
किसी और दिन उनकी पूजा के लिए मंदिर भ्रमण की व्यवस्था करें। एक महिला भी थी।
उषा नाम की एक महिला भवन कस्बे की रहने वाली थी, जो हमारे रास्ते में पड़ता था।
मैंने पहलगम से पूछा कि वह अपना घर देखने क्यों नहीं जाना चाहतीं।
वह भवन, जिसे उसने कई साल पहले छोड़ दिया था। उसने एक शब्द भी नहीं कहा, लेकिन
उसकी आंखें नम थीं और उसने मुझसे नजरें मिलाने से परहेज किया। मैंने उसे दोबारा आमंत्रित करते हुए कहा, 'अगर तुम समूह के साथ जाओगी तो तुम्हें बेहतर महसूस होगा।'

उसने जवाब दिया, 'नहीं, मुझे जाने से डर लगता है।'
मैंने पूछा, 'किस बात से डर रहे हो?'
उसने कहा, 'तुम्हें नहीं पता, कृपया मुझे यहीं छोड़ दो।' मैंने उसे दिलासा देने की कोशिश की।
कि उसे कुछ नहीं होगा।
अंततः, जब बस चलने ही वाली थी और सभी बच्चे और शिक्षक
सभी अपनी-अपनी सीटों पर बैठे थे, उषा थोड़ी दूरी से बस को देख रही थी।
बेचैन। मैंने उससे फिर कहा, 'उषा, अपने यहाँ आने का यह मौका मत चूकना।'
घर जाओ, बस में बैठ जाओ। हम सब शाम तक वापस आ जाएंगे।’ जब ड्राइवर ने पैर से एक्सीलरेटर दबाया और बस थोड़ी सी आगे बढ़ी।
उषा दौड़कर बस में चढ़ गई। उन्हें वहाँ पहुँचने में लगभग चार घंटे लगेंगे।
वे पहलगाम पहुंचे। संसाधन दल से रत्ना और अनीता उनके साथ गईं।
मैं नहीं गया क्योंकि मुझे श्रीनगर में कुछ काम निपटाना था।
इस ऐतिहासिक स्थल की यात्रा-सह-पिकनिक की योजना बनाने से पहले, मैंने एक लंबी बातचीत की थी।
प्रवासी बच्चों को हमारी विरासत के बारे में बताया गया था।
प्रवासी बच्चों को इसके बारे में कभी नहीं बताया गया था।
कुछ मंदिरों को छोड़कर उनकी विरासत का कुछ भी अंश नहीं है।
इसलिए, मैंने उनसे इस बारे में बात की कि क्या-क्या है।
वे इस दौरे में देखेंगे। मैंने उन्हें बताया कि पहलगाम पहुंचने से पहले वे
हम अवंतीपुरा में स्थित दो प्राचीन स्मारकों का दौरा करेंगे।
ये खंडहर थे...

ईस्वी सन् में राजा अवंतिवर्मन के शासनकाल के दौरान निर्मित दो पत्थर के मंदिर
700. हमें आश्चर्य हुआ कि हमारे स्थानीय बच्चों ने भी इनमें से किसी भी स्थान का दौरा नहीं किया था।
धरोहर स्थलों को देखने के लिए स्कूलों को कई महीनों तक बंद रखना पड़ा था।
उग्रवाद के कारण उन्हें कहीं भी ले जाना सुरक्षित नहीं था, सिवाय शायद किसी और जगह के।
स्कूल पिकनिक पर मुगल उद्यान। यह भी पता चला कि ये स्थानीय बच्चों ने श्रीनगर की महान प्रसिद्ध जामा मस्जिद का कभी दौरा नहीं किया था या
यहां तक कि शाह हमदान का मकबरा भी। दोनों ही मध्ययुगीन वास्तुकला के उत्कृष्ट स्थल हैं।
पवित्र स्थानों के अलावा। जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्होंने कभी ऐसा देखा है, तो
हाउस बोट के अंदर, जवाब था 'कभी नहीं'। मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। यह एक
यह तथ्य कि कश्मीरी समुदाय के लोग केवल धार्मिक स्थलों पर ही जाते थे
शुभ दिनों में, हिंसा और आतंक के आगमन के साथ, लोग
घर के अंदर सुरक्षित रहना पसंद करते हैं।
अनीता रामपाल और रत्ना माथुर, जो बच्चों के साथ जा रही थीं पहलगाम से लौटने पर मुझे यह सूचना मिली कि जब बस ने पार किया अनंतनाग से भवन कस्बे की ओर जाते समय उषा को थकान महसूस होने लगी।
वह बेचैन था और खिड़कियों से दुकानों को देख रहा था। जैसे ही बस पहलगाम जाते समय रास्ते में भवन मंदिर और गुरुद्वारा पार किया।

उषा चिल्लाई, 'वहाँ, वहाँ, वही मेरा घर है।' बस पहले ही जा चुकी थी।

बस उसके घर के पास से गुजरी, लेकिन अनीता ने ड्राइवर को बस रोकने के लिए कहा, जो कि

सब कुछ अचानक रुक गया। उषा बहुत तनाव में आ गई और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो।

कुछ करने या कहने के लिए। वह खिड़की से बाहर देख रही थी, लेकिन अजीब तरह से बचने की कोशिश कर रही थी।

बस से उतरने लगी। सभी बच्चे उसकी ओर देख रहे थे, सोच रहे थे कि वह बस से उतरेगी या नहीं। अंत में, अनीता उसके पास गई और

उषा ने उससे चिंता न करने को कहा, सब ठीक हो जाएगा। उषा ने कुछ लिया।

कुछ मिनट सोचने के बाद, आखिरकार बस से उतरकर, केवल एक ही नज़र से देखने लगा।

जैसे-जैसे वह धीरे-धीरे अपने घर की ओर चल रही थी, अनीता ने कहा कि वहाँ एक दिशा थी।

लगभग दस साल का एक छोटा स्थानीय लड़का, जो यह सब देख रहा था।
इसके बाद, वह...

उषा का मार्गदर्शन करना।

सभी उषा के पीछे-पीछे चले और एक जगह रुककर उसने अपने घर की ओर देखा।

और वह पूरी तरह से टूट गई। उसके रोने की आवाज पूरे इलाके में सुनाई दे रही थी।

कई पड़ोसी दौड़कर बाहर आए और उषा को पहचान लिया। उन्होंने उसे गले लगा लिया।

उन्होंने उसका स्वागत किया और उसके परिवार के सदस्यों के बारे में पूछना शुरू कर दिया। अजीब बात यह है कि...

उषा के परिवार ने अपने घर की चाबियां किसी मुस्लिम पड़ोसी के पास छोड़ दी थीं, जिसने

अब चाबियां लाई गईं, और उषा ने अपने घर का मुख्य दरवाजा खोला।
लगभग पंद्रह साल। उसने अपने कमरे की दीवारों की ओर देखा। कमरे में सब कुछ।
घर वैसा ही था जैसा उसने जनवरी 1990 में छोड़ा था। कुछ भी नहीं बदला था।
भावुक होकर, उषा की सिसकियाँ और आँसू उसके संक्षिप्त उत्तरों के साथ घुलमिल गए।
अनीता ने कहा कि उसकी लक्ष्यहीन नज़रें दिल दहला देने वाली थीं। मुझे याद है जब मेरी बड़ी बहन
महामारी के चरम पर पहुंचने के दौरान भाई अशोक कुमार श्रीनगर स्थित हमारे घर गए थे।
शीतल नाथ स्थित हमारे घर पर एक नजर डालने और उसकी जांच करने के लिए उग्रवाद के लोग आ रहे हैं।
उस हालत में, वह कुछ सामान से भरा एक छोटा सा पॉलीथीन पैकेट लेकर लौटा।
हमारी किशोरावस्था की तस्वीरें। मैंने अपने भाई से पूछा था, 'भाईजान, ये क्या है?'
'यह?' उसने उत्तर दिया, 'हमारे घर में यही सब बचा था, क्योंकि हमारा
विरासत। ये काले-सफेद चित्र जमीन पर बिखरे पड़े थे।
मैं फर्श पर पड़ा था, और मैंने सोचा कि कम से कम मुझे उन्हें उठाने तो दो।'
लेकिन आज, कई वर्षों बाद, उषा का उसके घर आना एक
उदासी की झलक के साथ स्वागत का अवसर। भविष्य के बारे में किसी को कुछ नहीं पता था।
उषा को उस युवा स्कूली लड़के ने चाय पीने के लिए कहा, लेकिन उसने उसने मना कर दिया और अपने मोहल्ले वालों से कहा कि बच्चों के लिए काफी देर हो रही है।

पहलगाम पहुँचकर, उसने सबको धन्यवाद दिया, अपना घर बंद किया और सामान वापस कर दिया।

उसने अपने पड़ोसी को चाबियां दीं और चुपचाप मोहल्ले से निकल गई।

अपने पुराने दोस्तों के साथ, जो उसे दिलासा दे रहे थे और उसकी सफलता की कामना कर रहे थे। सभी बस में वापस चढ़ गए। अनीता एक युवा लड़के को देख रही थी जो उसे...

सब कुछ समझ गया। अनीता ने उसे पिकनिक पर उनके साथ आने का निमंत्रण दिया;

उसने उसे धन्यवाद दिया और कहा, 'इंशाल्लाह, शायद अगली बार।' और बस चल पड़ी।

आगे बढ़ो। काफी देर से किसी ने बात नहीं की थी। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था।

बस। सभी अपनी-अपनी दुनिया में खोए हुए थे। सन्नाटा कमजोर आवाजों से टूटा।

उषा की आवाज़, जिसने लगभग फुसफुसाते हुए अनीता रामपाल से कहा, 'धन्यवाद, मैं'

बेहतर महसूस करना।'

इस कार्यशाला के दौरान एक दिन मैं रेजिडेंसी रोड पर चल रहा था, और

किसी ने बताया कि शहर के बीचोंबीच इलाके में भारी गोलीबारी हुई थी और कई

कुछ युवा लड़कों की हत्या कर दी गई थी। मैं घबरा गया था क्योंकि फिर से वही घटना घट सकती थी।

आंदोलन, बंद और न जाने क्या-क्या। हिंसा का सिलसिला रुका नहीं था।

कई वर्षों से यह सिलसिला रुका हुआ था; बीच-बीच में कुछ समय के लिए विराम आया था। आतंकवादी,

सुरक्षा बलों और अलगाववादियों के बीच एक बहुत ही जटिल और हिंसक संघर्ष चल रहा था।
एक ऐसा खेल जिसका कोई अंत नजर नहीं आ रहा। हर दिन, हत्या या पत्थरबाजी की खबरें आती हैं।
वे नियमित रूप से हमसे संपर्क करते रहते थे, और इससे पहले कि हम कोई नई गतिविधि सोच पाते, वे हमें सूचित कर देते थे।
इन घटनाओं से हमारा संकल्प कमजोर पड़ जाता था। सलीम बेग और मैं अक्सर
संस्कृति की लड़ाई में हमारी सीमाओं पर चर्चा करें परिस्थितियाँ। मैं अक्सर खुद से पूछता था कि क्या इस तरह के व्यवहार का कोई मतलब है।
हम जो काम कर रहे थे, उसके बारे में सलीम अक्सर कहता था, 'अगर हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा?'
'और कौन करेगा?' हमारी सबसे बड़ी चिंता हमारे सांस्कृतिक जीवन के रंगहीन होने को लेकर थी—
हालात कितनी तेजी से बदल गए थे और कश्मीरी लोग किस तरह से बदल गए थे
‘हम’ और ‘वे’ में विभाजित; कैसे अवसरवादी लुटेरों ने कब्जा कर लिया था
लोगों का सामाजिक जीवन; संदेह का तत्व किस प्रकार इतना बढ़ गया था
लोगों के बीच। एक-दूसरे पर भरोसा करने का सिद्धांत एक पुरानी बात बन गया था।
अतीत। मनुष्य का मूल्य इतना कम हो गया था। घंटों तक हम
बात करते-करते खोया हुआ सा महसूस होता था। एक ऐसे ही पल में मेरे मन में एक सवाल आया।
चर्चा का विषय था, 'मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ? इन सबका क्या अर्थ है?'

जब मेरा काम इतना सीमित और मामूली था, बड़े-बड़े शक्तिशाली लोगों की तुलना में।
क्या यह बंदूकों और जिंदगियों से खेला जाने वाला खेल था? हमारा काम कितना प्रासंगिक था?
कोई आसान जवाब नहीं था। लेकिन हम गोलीबारी के बीच एक-दूसरे का हाथ थामे रहे और अपनी यात्रा जारी रखी। ऐसा लग रहा था कि हमारा काम किसी और के काम जैसा था।
एक मरम्मत करने वाली, जो सुई और धागे से चुपचाप फटे हुए कपड़ों की मरम्मत करने की कोशिश कर रही थी।
हमारी घाटी का ताना-बाना।
मैंने सुबह-सुबह घर पर फोन करने के लिए पीसीओ बूथ पर गया। वहाँ कई लोग अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे, और मैं भी। जल्द ही एक सुरक्षा ट्रक आया।
सीआरपीएफ के जवान सड़क किनारे रुक गए और दो जवान उनका इंतजार करते हुए वहां आ गए।
बूथ पर मुड़ें। प्रतीक्षा करते समय, मैं उनकी बातचीत सुन सका। वे अपनी रात्रि की ड्यूटी के बाद आए थे। उनकी बातचीत का सार यह था कि
संघर्ष क्षेत्र में उनकी तैनाती कब समाप्त होगी और संघर्ष कब समाप्त होगा
तीन के बाद समाप्त हो जाएगा। वरिष्ठ पुलिस अधिकारी अपने कनिष्ठ को समझा रहा था कि तीन के बाद
कुछ महीनों में वह सेवानिवृत्त हो जाएगा और घर जाने से खुश होगा, और उम्मीद है कि कुछ भी नहीं होगा।
उससे पहले उसके साथ ऐसा होना चाहिए था। लेकिन अगर किसी के पास सेवा में अधिक समय होता तो
सावधानी बरतनी ही बेहतर है; आखिर वे भी परिवार वाले साधारण लोग थे।

बिना किसी अतिरिक्त सहायता के और जिम्मेदारियों के साथ।
जब वे बात कर रहे थे, मैं खड़ा हो गया। यहाँ तक कि ये लोग भी, जिनके पास बंदूकें थीं और
अधिकार प्राप्त अधिकारी अपने परिवारों और अपने भविष्य को लेकर चिंतित थे।
कश्मीर के इस संघर्ष क्षेत्र में उनकी तैनाती उनके लिए उचित नहीं लग रही थी।
एक खुशहाल व्यक्ति की तरह। आखिरकार, हिंसा तो हिंसा ही है।
थिएटर कार्यशालाओं की सफलता के बाद, मैं अपने बड़े भाई से मिलने जम्मू गया।
मेरे भाई, जो केंद्र सरकार की नौकरी से सेवानिवृत्त हो चुके थे।
उनके साथ रहने के बाद
मैं कुछ दिनों के लिए उसके साथ था, इसलिए मैंने दिल्ली के लिए रात भर की ट्रेन ली। जब मैं उठा...
सुबह ट्रेन आने में अभी भी कुछ घंटे बाकी थे।
मैं दिल्ली पहुँच गया। मैं सुबह की चाय पी रहा था। यात्री
मेरे बगल में यात्रा कर रहे लोग भी श्रीनगर से आए थे और अपनी यात्रा पर जा रहे थे।
वार्षिक अवकाश। हम बातचीत करने लगे और उनमें से एक ने मुझसे पूछा कि क्या मैं वहीं से हूँ।
कश्मीर। मैंने हाँ और ना दोनों कहा, क्योंकि 1990 से पहले तक मेरा वहाँ एक घर था, हमारे वहाँ बसने से पहले।
परिवार को हमेशा के लिए जाना पड़ा। इस आदमी का उपनाम त्यागी था।
उसने कहा, 'मैं जानता हूँ।'
महोदय, मैंने आप लोगों को अपनी जान बचाने के लिए घाटी छोड़ते हुए पहले भी देखा है।

आँखें। मैं केंद्रीय रिजर्व फोर्स में एक अधिकारी हूँ और कई वर्षों से घाटी में ड्यूटी पर तैनात हूँ। मुझे जनवरी 1990 आज भी याद है, जब मेरी रेजिमेंट
उसे तुरंत कार्रवाई में लगाया गया।
मुझे उनकी टिप्पणियों से काफी जिज्ञासा और उत्सुकता हुई और मैं जानना चाहता था कि
उनसे और अधिक जानकारी प्राप्त करें।
उन्होंने कहा कि उन्हें जनवरी 1990 की वह दोपहर आज भी याद है जब उनका
रेजिमेंट अभी-अभी घाटी में पहुँची थी, और उन्हें तुरंत ही काम पर लगा दिया गया।
कर्तव्य। अपने पहले ऑपरेशन पर जाने से पहले, उन्हें उनके द्वारा संबोधित किया गया था।
कमांडर ने कहा था, 'याद रखो, आज हमें बचाने के लिए बुलाया गया है।'
हमारी मातृभूमि। याद रखें, अगर आप अपने देश के लिए यह लड़ाई जीतते हैं तो कोई भी
तुम्हारे बारे में बातें होंगी—लेकिन हम विजयी होंगे। लेकिन अगर हम हार गए तो...
युद्ध में, तुम अपने नामों से जाने जाओगे, जो हारे और जो बचा नहीं सके।
अपनी मातृभूमि को शत्रु से बचाओ। याद रखना, भारत माता को बचाना है।
दुश्मनों से बचाया गया।
त्यागी ने कहा, 'गॉकदल में यह हमारी पहली लड़ाई थी। पूरी रात हम संघर्ष करते रहे।'
इलाके की जानकारी के बिना लड़ाई। लाल चौक पर लोग।

मेरे नाम से डरो। लाल चौक के किसी भी दुकानदार से त्यागी के बारे में पूछो, वह कहेगा...
मैं आपको अपने बारे में और अपने कर्मों के बारे में बताता हूँ।’ फिर, कुछ देर रुककर, उन्होंने आगे कहा, ‘मैंने
मैं सचमुच उस कुत्ते की तरह हो गया था जो खतरे को सूंघ सकता था। अब, ईश्वर की कृपा से,
हालात अलग हैं, चीजें बेहतर हुई हैं। हमें व्यावहारिक रूप से किसी भी कीमत पर कश्मीर को दुश्मन के चंगुल से वापस लेना होगा।' मैंने उससे फिर पूछा कि उसने ऐसा क्यों कहा था कि वह कुत्ते जैसा हो गया है और वह
उसे संदिग्ध लोगों की गंध आ जाती थी। वह मुस्कुराया और बोला, 'एक दिन सर्दियों में, ऐसा हुआ।'
छुट्टी का दिन था, रविवार या ऐसा ही कुछ, मुझे काफी बोरियत महसूस हो रही थी। मैंने अपने बेटों से कहा, चलो
हम गाड़ी चलाने चले गए। लड़कों ने कहा, "वर्दी में?" मैंने जवाब दिया, "क्या तुम पागल हो?"
हम बस आराम करने के लिए एक साधारण ड्राइव पर जा रहे हैं। लड़कों ने पूछा कि क्या
हमें अपने हथियार साथ रखने चाहिए। मैंने उनसे कहा, ठीक है, बस कुछ हथियार अपने पास रखो।
हम आधिकारिक ड्यूटी पर नहीं थे, इसलिए आपकी सीटों के नीचे छिपे हुए थे। जब हम गाड़ी चला रहे थे
श्रीनगर राजमार्ग पर पंपोर की ओर जाते हुए—यह एक बहुत ही खूबसूरत दिन था।
सर्दी का मौसम था—राजमार्ग पर शायद ही कोई पैदल चल रहा था, और हम
बातचीत करना और मजाक करना।

लगभग दस किलोमीटर चलने के बाद हमने एक युवक को सड़क पर चलते देखा।
जल्द ही मैंने उसे पीछे छोड़ दिया, और एक किलोमीटर गाड़ी चलाने के बाद मैंने अपने ड्राइवर से कहा, बस
उल्टा। सभी लड़के हैरान रह गए और बोले, "क्यों, महोदय?" मैंने कहा, मुझे शक था।
वह व्यक्ति जो सड़क पर चल रहा था। मैंने उसकी बॉडी लैंग्वेज पर ध्यान दिया।
संदिग्ध। और जल्द ही हमारी मुलाकात उससे हुई। जब उसने हमें देखा, तो उसकी शारीरिक भाषा
मुझे फिर से उस पर शक हुआ। मैंने उससे कुछ सवाल पूछे, और उसने तलाशी ली।
शब्दों की कमी महसूस हो रही थी। उसने अचानक कुछ उपयोगी जानकारी उगलनी शुरू कर दी। जब हमने उससे और पूछा तो उसने जवाब दिया। उसने एक ऐसे व्यक्ति का नाम लिया जिसकी हम तलाश कर रहे थे। महीनों। जब हमने उस आदमी के बारे में कुछ और बताने के लिए उस पर और दबाव डाला,
उसने कहा कि वह आदमी फलां तारीख को फलां जगह शादी करने जा रहा था।
और-ऐसा गाँव।
हमने पूछताछ शुरू की और यह पुष्टि हो गई कि वहां शादी थी।
हो रहा है। शादी के दिन, हमने देर रात घात लगाकर हमला किया।
रात को लगभग आधी रात के समय, हम हरकत में आए। हमने उसे उसके बिस्तर में ही पकड़ लिया।
अपनी नवविवाहित पत्नी के साथ, दोनों नग्न अवस्था में। जब मैंने इस युवा नग्न लड़की को देखा और
मेरे लड़के उसे घूरने लगे, मैंने मन ही मन कहा, त्यागी, शायद यही तुम्हारा अंत हो।

हमने उस व्यक्ति की जांच शुरू की। वह एक पुष्ट आतंकवादी था। उसने अपने कुछ साथी आतंकवादियों के साथ मिलकर बैंक लूटा था। वह एक बड़ा अपराधी था।
पकड़ो। हमें जितना हो सके उतना निकालना था। "मेरे पास जो कुछ भी है वह छिपा हुआ है।"
“हम यहाँ ज़मीन के नीचे हैं,” उन्होंने कहा। हमने उन्हें और उनके परिवार के कुछ पुरुषों को यहाँ लाया।
सदस्यों ने ज़मीन खोदी। हमें तीन एके-47 राइफलें और बहुत कुछ मिला।
गोला-बारूद, कुछ ग्रेनेड और 2 लाख रुपये से अधिक की नकदी। मैंने उससे पूछा कि बाकी पैसे कहाँ हैं। उसने कहा कि उन्हें बाँट दिया गया है।
समूह के सदस्यों के बीच। यहाँ भी, हालाँकि मैंने एक वांछित व्यक्ति को पकड़ लिया था,
उस खूंखार आतंकवादी के कारण, मैं एक बार फिर अपनी जान और उससे होने वाले खतरे को लेकर चिंतित हो गया था।
मेरे अपने लड़के। मेरे लड़के पहले से ही नकदी देख रहे थे और फिर देख रहे थे
मुझे। मैं उनकी आँखों में पैसे के लिए लालच देख सकता था। आख़िरकार, कोई भी ऐसा नहीं करेगा।
मुझे बड़ी रकम की वसूली के बारे में पता था। खुद को बचाने के लिए, मैंने फिर से शुरुआत की।
वे चिल्ला रहे थे और आदेश दे रहे थे कि बरामद की गई सभी वस्तुओं को पैक कर दिया जाए और हम अपने साथ अपनी जीती हुई वस्तु को लेकर जितनी जल्दी हो सके वहां से निकल जाएं।
पूछताछ।

अंतिम यात्रा, अंतिम पोस्ट

छह महीने और सर्दियों के अंतराल के बाद, श्रीनगर में मेरी अगली कार्यशाला थी।

बख्शी के पास एक स्थानीय पासपोर्ट कार्यालय की इमारत में यह कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

स्टेडियम। यह जगह शहर के केंद्र में है जहाँ कोई उचित व्यवस्था नहीं है।

सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए बुनियादी ढांचा, कुछ स्थानों को छोड़कर जो निर्माणाधीन हैं।

जम्मू-कश्मीर सांस्कृतिक अकादमी। लेकिन उन्हें भागीदार बनने के लिए राजी करना।

हमारे प्रकार के व्यायाम के लिए एक जटिल, समय लेने वाली प्रक्रिया की आवश्यकता होगी,

यह नौकरशाही संबंधी चर्चा कई कारकों पर आधारित थी, और हमारी पहुंच से बाहर थी।

इसलिए, मैं हमेशा मदद के लिए अपने दोस्तों पर निर्भर रहता हूँ। पासपोर्ट बनवाने का यह क्षेत्र

यह एक बार फिर मेरे सहयात्रियों के सहयोग से प्राप्त किया गया था।

इस बार हमने दो नए नाट्य प्रस्तुतियों को प्रस्तुत करने की योजना बनाई थी, इसके अलावा

थिएटर के विभिन्न पहलुओं, जैसे सेट डिजाइन, में सामान्य प्रशिक्षण कक्षाओं से लेकर,

पोशाक डिजाइन, अभिनेताओं की तैयारी, मेकअप आदि। इस बार हमारे पास बहुत ही

प्रतिभागियों की संख्या बहुत अधिक थी, और हम थोड़े महत्वाकांक्षी हो गए। हमने निर्णय लिया

सैमुअल बेकेट के 'वेटिंग फॉर गोडोट' और भीष्म साहनी के नाटकों का निर्माण करने के लिए।

हनुश। इन नाटकों को चुनने के पीछे का विचार बेतुकेपन को प्रस्तुत करना था।

कश्मीर की स्थिति पर आधारित नाटकों को कश्मीरी भाषा में रूपांतरित किया गया था। दोनों नाटक कश्मीरी भाषा में भी प्रस्तुत किए गए।

ये कश्मीरी लेखन के बहुत ही उत्कृष्ट नमूने थे। गोडोट एक यूरोपीय थे।

समकालीन क्लासिक नाटकों में से एक हनुश है, जो लेखक द्वारा रचित सबसे महत्वपूर्ण नाटक है।

तामस की कहानी, जिन्हें हिंदी लघुकथा का भीष्मपितामह भी कहा जाता है।

लिखना।

हमने घाटी से एक नए युवा स्थानीय निर्देशक को पेश करने के बारे में सोचा।

स्वयं, जो प्रारंभिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का हिस्सा रहा था।
यह भी

कश्मीरी रंगमंच की विरासत को युवा पीढ़ी को सौंपने का यह एक हिस्सा है।

हमने नए निर्देशक के रूप में वारशाद मुश्ताक को चुना। वे 'वेटिंग' का निर्देशन करेंगे।

गोडोट के लिए। मैंने खुद हनुश का निर्देशन करने का फैसला किया। शुरुआत में, सब कुछ

सब ठीक चल रहा है। गोडोट का रूपांतरण अभिनेताओं और निर्देशक द्वारा स्वयं लिखा गया एक सामूहिक नाटक बन गया। हनुश का रूपांतरण मंज़ूर मीर ने किया, जो हमारे पुराने साथी हैं।

कार्यशाला का छात्र। जैसा कि मैंने पहले बताया था, हमने एक प्रकार का विकास किया था।

हमारी बहुमूल्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों के छात्रों में से चुनी गई मुख्य टीम,

जो अक्सर आकर हमारे नए कार्यक्रमों में सहायता करते थे।
हमारे नए कार्यस्थल पर काम करने की जगह मुख्य सड़क के पास स्थित थी।
जहां बख्शी स्टेडियम स्थित था। मुख्य प्रवेश द्वार के बाद, एक बड़ा
वह मैदान जिसके बाईं ओर इंडोर स्टेडियम स्थित था और जिसके दाईं ओर
हमारी कार्यशाला की इमारत खड़ी थी। हम अक्सर इनडोर स्टेडियम का उपयोग करते थे।
हमारी प्रमुख व्यायाम कक्षाएं। पूरा परिसर बहुत ही प्रेरणादायक और विशाल था।
हमारे काम के लिए पर्याप्त है।
एक दिन, जब सभी प्रतिभागी सुबह हमारे कार्यक्रम के लिए आ रहे थे
काम के दौरान, हमने सीआरपीएफ जवानों की कुछ असामान्य हलचल देखी।
खुले मैदान में एक तंबू और एक बड़ा चबूतरा खड़ा करना। हम ऐसा नहीं कर सके।
समझ में आ रहा था कि क्या हो रहा है। जल्द ही, हमारी क्लास शुरू होने के लगभग तीस मिनट बाद, हम
हमने कई बार ‘भारत माता की जय’ का नारा सुना।
हमने क्लास रोक दी और यह देखने के लिए बाहर भागे कि क्या हो रहा है। हमें यह देखकर बहुत हैरानी हुई कि
यह उन चार सैनिकों के लिए पुष्पांजलि समारोह था, जिनके शवों को तिरंगे राष्ट्रीय ध्वज से ढके बक्से। कई लोग यह सब देख रहे थे। दूरी। एक वरिष्ठ अधिकारी ने प्रत्येक बॉक्स पर एक पुष्पमाला रखी। अन्य जवान

[illegible]

[illegible]

[illegible]

rahai, amar rahai [They are immortal]. An elderly-looking old man said ‘Ye

bhi kisi maa ki bete the—ya Allha reham kar [They are some mother’s

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उस समय भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में लिपटे हुए दो बक्से थे, और फिर से

यह वही समारोह था जिसे हमने पहले देखा था। यह बिल्कुल भी वैसा नहीं था।

यह सब देखना हमारे लिए असहज था, लेकिन इसमें कुछ किया नहीं जा सकता था। ऐसा हुआ करता था।

इसके दुष्प्रभाव हम सभी पर पड़े, जिन्हें समझाना बहुत मुश्किल था।

पहले काम जारी रखने की स्थिति होती थी। इसलिए हम उस दिन के लिए दुकान बंद कर देते थे।

दुर्भाग्यवश, यह पुष्पांजलि समारोह हर कुछ समय बाद होता रहता था।

और फिर... अब हमने सबसे पहले ज़मीन का जायज़ा लेना शुरू किया।

सुबह, यह देखने के लिए कि जवानों की कोई गतिविधि हुई है या नहीं। चूंकि हम

चार सप्ताह तक नियमित रूप से, सुबह से शाम तक काम करने के बाद, हमारी प्रतिक्रिया

धीरे-धीरे अमानवीयता की ओर अग्रसर हो रहा था। यह एक प्रकार का

यह हमारे लिए एक नियमित मामला था क्योंकि हम इसके आदी हो चुके थे, और इसमें कुछ हद तक विचित्रता भी थी।

हमारे मन में निराशावाद घर करने लगा, जिससे हम काफी कड़वे हो गए और

भावहीन। किसी को भी यह सब होते देखना अच्छा नहीं लगा, लेकिन प्रतिभागियों ने शुरू कर दिया।

asking, humorously, ‘Aaj kaarikram hain kai [Is there a programme
आज कहीं भी]?’ यह लगभग एक मूर्खतापूर्ण और घटिया मजाक बन गया था। और अंत में, एक

उस दिन मुझे छात्रों को फटकार लगानी पड़ी और उन्हें अक्ल सिखानी पड़ी।

जिस होटल में हम अपने साथियों के साथ ठहरे थे, वहाँ हम अपना खाना खाते थे।

हम साथ में डिनर करते थे और यही वो समय होता था जब हम चर्चा करते थे और

अगले दिन की योजना बनाई गई। रात के खाने के बाद, चर्चाएँ काफी देर तक चलती रहीं।

रात भर मैं काम करता रहता था, और फिर मैं अपनी टीम के सभी साथियों के लिए चाय बनाता था।

कमरे में। रात के खाने के बाद होने वाली ऐसी ही एक बैठक के दौरान, हम सभी ने एक जोरदार धमाका सुना।

जिससे हमारे होटल की इमारत हिल गई। फिर भीषण गोलीबारी जारी रही।

लगभग पैंतालीस मिनट। हमें अपने कमरे की बत्तियाँ बंद करनी पड़ीं। आवाज़ आ रही थी...

जैसे कि यह हमारे पड़ोस में हो रहा हो। अंततः, गोलीबारी हुई।

सब कुछ रुक गया, दमकल गाड़ियों और एम्बुलेंस के सायरन की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। हमने अपने कमरे की खिड़कियाँ खोलीं और एक विशाल आग की लपटें देखीं।

आग लगभग तीन ब्लॉक दूर ही लगी थी। कुछ समय बाद, सब कुछ पिघलकर राख हो गया।

उनके अपने-अपने कमरे।

सुबह जब हम सब अपनी कार्यशाला के लिए निकले तो हमें पूरा यकीन था कि हम

कुछ ज़ोरदार तैयारियों को देखने वाले थे। किसी ने कहा कि ग्यारह सीआरपीएफ

पिछली रात जवान शहीद हो गए थे और चार आतंकवादी भी मारे गए थे। यह एक बड़ी घटना थी।

रात में सीआरपीएफ कैंप पर फिदायीन हमला हुआ। देखते ही देखते ग्यारह

प्रत्येक बक्से पर तिरंगा बना हुआ था। समारोह पहले जैसा ही था।

फिर से शुरू हुआ। उन ग्यारह बक्सों को देखकर मैं सुन्न हो गया। दूसरा

कार्यशाला के प्रतिभागी बिल्कुल खाली थे। कुछ सीआरपीएफ जवान आए थे।

बक्से आने से पहले वे हमारी ओर आ रहे थे। वे आसपास सब कुछ जाँच रहे थे।

सुरक्षा कारणों से। उन्होंने हमसे पूछताछ भी की, जैसे, 'आप कौन हैं?', आदि।

जब मैंने अपने जवाबों से उन्हें संतुष्ट कर दिया और वे जाने ही वाले थे, तब मेरा

पुलिसकर्मियों की नजर उनकी नेमप्लेट पर लिखे नाम पर पड़ी—बिजय गांगुली।

मैंने अपनी टूटी-फूटी बंगाली में उससे बस इतना पूछा, 'अय की होलो', यह जानने के लिए कि क्या हुआ था।

ऐसा हुआ। उसने मुझे हैरानी से देखा और पूछा कि क्या मैं बंगाली हूँ।

मैंने मना कर दिया, लेकिन मुझे थोड़ी-बहुत बांग्ला समझ आती थी।
हम वहाँ गाड़ियों के आने तक खड़े रहे।

भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में लिपटे शवों को लेकर गाड़ी चलाकर चले गए।

मैं समय-समय पर अपने परिवार के साथ रहने के लिए दिल्ली जाया करता था।

इन दिनों मुझे घाटी से दूर रहना पड़ रहा है क्योंकि मैं पहले की तरह यहाँ ज्यादा समय तक नहीं रह सकता।

गर्मी के पर्यटन सीजन के दौरान काफी खर्च होता है। होटल का किराया भी काफी बढ़ जाता है।

यह हमारे बजट से कहीं अधिक बढ़ गया, इसलिए अधिक समय तक रुकने का तो कोई सवाल ही नहीं था।

हमारे कार्य शेड्यूल से परे। एक और महत्वपूर्ण कारण यह था कि रुकने के लिए

लंबे समय तक और लगातार तनाव में काम करना पहले कठिन हुआ करता था।

नसों पर ज़ोर पड़ता था। घर पर मिलने वाले ये ब्रेक हमारी नसों को आराम देते थे और हमें तरोताज़ा करते थे।

हमारे काम का मूल्यांकन करने के लिए पर्याप्त समय।

16

बंध पथेर—जनता का रंगमंच
कश्मीर है

कश्मीर के भंड पाथर समुदाय के साथ मेरा रिश्ता बहुत पुराना है। कई वर्षों से, मेरे कॉलेज के दिनों से लेकर आज तक, यह सिलसिला कायम है।
जब मैं कश्मीर में शहरी थिएटर के लोगों के साथ काम कर रहा था, चाहे बच्चे हों या युवा, मैं अक्सर भंड परिवार को अतिथि के रूप में आमंत्रित करता था।
वे प्रतिभागियों को अपनी कला का प्रदर्शन करते थे। ये प्रदर्शन पहले हुआ करते थे।
इसके बाद छात्रों के साथ प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किए जाते हैं। सामान्यतः,
भंड प्रदर्शनों पर प्रतिक्रियाएं मिली-जुली थीं।
शहरी परिवेश में पले-बढ़े होने के कारण कई युवा ऐसे दिखते थे इन ग्रामीण कलाकारों को असभ्य कहकर नीचा दिखाया गया। लेकिन यह उतना ही सच भी था।
यह सच है कि इन शहरी युवाओं को पारंपरिक परिवेश का कभी अनुभव नहीं हुआ था।

प्रदर्शन कलाएँ। दुर्भाग्य से, भारत में, उपनिवेशवाद और इसके प्रभाव के कारण
बॉलीवुड सिनेमा की संस्कृति ने समकालीन प्रदर्शनों को प्रभावित किया है।
इतना अधिक कि आप उनमें आसानी से लोकप्रिय तत्वों को देख सकते हैं। अधिकांश
भारत में युवा शहरी कलाकारों में आवश्यक समझ और कौशल की कमी है। परंपरागत प्रदर्शन कलाओं की सराहना।
लेकिन एक बार जब भंड परिवार प्रदर्शन स्थल पर कब्जा कर लेता है और प्रदर्शन करना शुरू कर देता है
उनके कौशल और प्रतिभा के साथ-साथ शहरी लोगों का उनके प्रति रवैया अक्सर
परिवर्तन। प्रश्न-उत्तर सत्र के बाद यह परिवर्तन और भी अधिक तीव्र हो जाता है।
जब ऐसा होता है, तब कहानी पूरी तरह से बदल जाती है।
इन सत्रों के दौरान, मैं जानबूझकर एक उत्प्रेरक, एक सेतु की भूमिका निभाता था।
लोक कलाकारों और शहरी कलाकारों के बीच समन्वय स्थापित करना और भांड समुदाय को संवाद स्थापित करने में मदद करना।
उनकी मान्यताओं, कला और बौद्धिक क्षमताओं को शहरी समुदाय तक पहुंचाना। मेरा काम
कश्मीर में रंगमंच और अन्य कला रूपों के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित किया गया था।
बच्चों, युवाओं, शिक्षकों आदि के उपचार और शारीरिक पुनर्वास के लिए। मैंने इस कार्य को रंगमंच की सीमाओं को आगे बढ़ाने के रूप में देखा है।
नाटक को केवल मनोरंजन के दायरे से बाहर रखकर, इसे एक ऐसे स्तर तक ले जाना जहाँ

संस्कृति परिवर्तन का एक कारक बन जाती है।
अब मेरी इच्छा भांड पथेर पर विशुद्ध नाट्यकला के रूप में काम करने की थी।
कला के विभिन्न पहलुओं की जांच करें—जैसे कि स्थान का उपयोग, अभिनय
शैलियों, संगीत तत्वों, वेशभूषा और शिल्पकलाओं का विशुद्ध रूप से अकादमिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है।
एक कलात्मक परियोजना। दुर्भाग्य से, वर्षों से भांड समुदाय की गरीबी बनी हुई है।
इसने उन्हें मात्र जीवित रहने के स्तर तक गिरा दिया है। भांडों में से कोई भी जीवित नहीं है।
अकिंगम के पास कोई जमीन नहीं थी। वे ज्यादातर अपनी मामूली आमदनी पर ही गुजारा करते थे।
वे टोकरियाँ बुनकर, कंगारी (आग के बर्तन) बनाकर या अन्य कामों से कमाई करते थे।
जमींदारों के लिए शारीरिक श्रम करना। सामाजिक रूप से वे निम्न वर्ग में हैं।
वे पदानुक्रम में भिन्नता रखते हैं और गांवों के बाहरी इलाकों में, अलग-थलग रहते हैं।
अन्य समुदाय, जैसे कि ग्राम व्यवस्था में निचली जाति के लोग।
पिछली बार जब मैं उनसे उनके गांवों में मिला था, तब उनकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी।
हालात अच्छे नहीं थे। उन्होंने कई सालों से प्रदर्शन नहीं किया था और उन्हें छिपकर प्रदर्शन करना पड़ा था।
उनके वाद्ययंत्र। ऐसा लग रहा था मानो समुदाय उनमें विलीन हो गया हो।
विस्मृति। एक दशक से अधिक समय तक उन्होंने प्रदर्शन नहीं किया था।

लगातार हिंसा और जान का खतरा। सभी ने अपना आत्मविश्वास खो दिया था।

कलाकारों के रूप में। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, ऐसा लग रहा था मानो वे इसमें थे।

किसी की मृत्यु पर शोक मना रहे थे। इतने वर्षों में उनसे मिलने कोई नहीं आया था।

उनकी दुर्दशा के बारे में पता लगाओ। उन्होंने मुझे ताकत और कमजोरियों के बारे में सिखाया था।

भंड पथेर की कमजोरियाँ। जब मैं उनके साथ यात्रा पर गया था...

मैंने कश्मीर के ग्रामीण इलाकों के भीतरी इलाकों में उनके प्रदर्शनों की लोकप्रियता देखी।

गांवों से हजारों लोग उन्हें देखने आते थे।

प्रदर्शन दिखाएँ और उन्हें नकद और वस्तु के रूप में उपहार दें।
ग्रामीण ऐसा करेंगे।

उन्हें अपने घर दावत के लिए आमंत्रित करें। उनके घर आना शुभ माना जाता है।

यह बहुत शुभ है और उनके मेहमानों के लिए एक अच्छा शगुन है।

भंड धर्म से मुसलमान हैं जो रिशुत (ईश्वरीय धर्म) की परंपरा में विश्वास रखते हैं।

कश्मीर की ऋषि परंपरा) कश्मीर का स्वदेशी सूफीवाद। यह अवश्य पढ़ना चाहिए।

सभी भंडों के लिए संतों के वार्षिक उर्स पर ऋषि मंदिरों में प्रदर्शन करना अनिवार्य है। भंडों की यह पारंपरिक मान्यता है कि ऋषि मंदिरों में प्रदर्शन करने से उन्हें आध्यात्मिक लाभ मिलता है।

मंदिरों में जाने से, उनके आसपास सौभाग्य, समृद्धि और सुख का आशीर्वाद मिलता है।

इस साल वे कश्मीर में होने वाले सभी उर्सों में मुख्य कलाकार होते हैं। दरअसल, कश्मीर में होने वाले सभी उर्सों में वे ही सबसे बेहतरीन प्रदर्शन करते हैं।

घाटी में, आम जनता उनके प्रदर्शन को देखने के लिए घंटों इंतजार करती है।

1992 में, मैं एक कश्मीरी लेखक द्वारा लिखित एक नए नाटक, भंड दुहाये का निर्देशन कर रहा था।

नाटककार मोती लाल केम्मु द्वारा राष्ट्रीय नाट्यशाला के लिए रचित नाटक।

नई दिल्ली में स्थित एक कंपनी द्वारा निर्मित इस नाटक की पृष्ठभूमि कश्मीर थी।

उग्रवाद और भांड समुदाय पर इसका प्रभाव, जिन्हें आदेश दिया गया था

स्थानीय उग्रवादियों ने प्रदर्शन न करने का आदेश दिया है, क्योंकि प्रदर्शन करना कुफ्र है।

इस्लाम। इस नाटक की संरचना जटिल है और इसके लिए भंड पाथेर की आवश्यकता थी।

अभिनय शैली और विधा के कई अन्य तत्व, जो शहरी-प्रशिक्षित

भंड पाथर का अनुभव न होने पर अभिनेता अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर सकते थे।

उन्होंने प्रदर्शन किए हों या कम से कम उस शैली का अध्ययन किया हो।

मैंने सुना था कि भांड समुदाय के लोग अपने गांवों में बहुत परेशानी में थे और

प्रदर्शन का कोई अवसर न मिलने के कारण वे लगभग भुखमरी की स्थिति में थे। वे किसी तरह जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहे थे।

लेकिन जंग खा रहे थे, उन तमाम अपमानों के कारण जो उन्हें झेलने पड़ रहे थे।

कट्टरपंथी इस्लामवादियों और उनके फरमानों का दौर। ये 1998 का वो समय था, जब

घाटी में उनसे संपर्क करना असंभव था, जहाँ वे थे।

आतंकवादियों की गोलियों और सुरक्षा बलों की गोलियों के बीच फंसा हुआ।

1998 में अपने नाटक 'भंड दुहाये' के निर्माण के लिए, मैं उन्हें यह करवाना चाहता था कि...

दिल्ली में नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में पढ़ाकर मेरे प्रोडक्शन में मदद करें।

भंड पाथेर की बारीकियों को समझना रिपर्टरी अभिनेताओं के लिए अच्छा होगा।

उनमें से कुछ को उस नरक से बाहर निकलना था जो उनके गाँव बन चुके थे।

दोस्त, मैं उन्हें फोन पर बात करने के लिए संदेश भेजना चाहता था।

कुछ पीसीओ बूथ। लेकिन मेरे उस दोस्त ने मेरा संदेश अपने दोस्त को पहुंचा दिया।

मेरा एक मित्र था जो अचबल क्षेत्र में सीमा सुरक्षा बल का कमांडेंट था।

इसके बाद कमांडेंट ने अपने जवानों के एक समूह को उस व्यक्ति का पता लगाने का आदेश दिया।

अकिंगम के भांडों से संपर्क करें और उन्हें मेरा संदेश दें कि वे मुझे मेरे तय समय पर बुलाएँ।

दिल्ली नंबर। लेकिन जब बीएसएफ के ये जवान अपनी जीपों में पहुंचे तो...

गुल मोहम्मद भगत की तलाश में बंदूकें लिए गए लोगों के कारण गांवों में दहशत फैल गई। सभी को लगा कि वे उसे गिरफ्तार करने आए हैं। उसकी बहन साजा ने बताया।

पुलिस को बताया कि उसका भाई अनंतनाग गया है और कुछ दिनों बाद वापस आ जाएगा।
कुछ घंटों बाद, एक बीएसएफ अधिकारी ने मेरा संदेश उसे दिया और गांव से चला गया।
गांववाले इस सब को समझ ही नहीं पाए। गुल मोहम्मद की बहन
मुख्य सड़क पर लगभग एक किलोमीटर पैदल चलकर मैं वहाँ कुछ देर इंतजार करता रहा।
वह अपने भाई का घंटों इंतजार करती रही। जब वह लौटा, तो उसने देखा कि उसकी बहन उसका इंतजार कर रही है।
वह सड़क पर था और जानना चाहता था कि वह वहां क्या कर रही है।
उसने उसे जाने से मना कर दिया।
घर वापस आने पर गुल को पता चला कि सेना उसे गिरफ्तार करने आई है।
सौभाग्य से, गुल
मोहम्मद को मेरा संदेश पहले ही किसी अन्य माध्यम से मिल चुका था।
उसने मुस्कुराते हुए साजा को समझाया कि चिंता न करे, पुलिस वाले साथ आए हैं।
रैना साहब का संदेश जिसमें उन्होंने भांड परिवार के कुछ सदस्यों को दिल्ली में एक नाटक के लिए आमंत्रित किया है।
अगले दिन मुझे गुल मोहम्मद का फोन आया। मैंने उन्हें समझाया कि मैं
दो स्वर्ण वादक चाहिए थे, अमा काक, रसूल चाचा और गुलाम
मोहम्मद भगत स्वयं भी जल्द ही प्रोडक्शन के काम के सिलसिले में आने वाले हैं।
शुरू हो चुका था। हम दोनों उस गड़बड़ी पर हँस पड़े जो हुई थी। सैनिकों के आगमन से।
अंततः, जब भांड परिवार रबींद्र थिएटर में अपने पहले पूर्वाभ्यास के लिए पहुंचा,

भवन स्टूडियो थिएटर में, वे ऐसे लग रहे थे मानो जेल से रिहा हुए हों।

गांव से दिल्ली तक की लंबी यात्रा के कारण सभी कमजोर और थके हुए लग रहे थे।

बस।

पहले ही दिन मैंने भंड परिवार से केवल रिहर्सल देखने के लिए कहा।

एनएसडी कलाकारों द्वारा प्रस्तुत नाटक। वे नाटक में पूरी तरह मग्न थे, तभी अचानक

गुलाम मोहम्मद भगत, सबसे बहुमुखी भांड पाथेर अभिनेताओं में से एक,

वह चीखता-चिल्लाता रिहर्सल स्टूडियो से बाहर भागा। सब उसके पीछे भागे, बस

उसे लॉबी के एक कोने में दुबका हुआ, ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए देखकर। हमने कोशिश की...

उन्हें सांत्वना देते हुए उन्होंने कहा कि वे उस मृत्यु का पूर्वाभ्यास नहीं देख सकते।

दृश्य। इतने वर्षों से हमने अपने चारों ओर केवल मृत्यु ही देखी है। मेरे एनएसडी के लिए।

अभिनेताओं के लिए, यह सब अजीब और अलग था, वास्तविक लेकिन अविश्वसनीय। इसने प्रभाव डाला।

उन्हें बिल्कुल अलग तरीके से। रिहर्सल रोकनी पड़ी, और हमने ब्रेक लिया।

चाय के लिए। हमारे रिपर्टरी कलाकारों ने भांडों का बहुत ध्यान रखा। वे भांड कलाकारों के प्रति बहुत सहानुभूति रखते थे और पहले से ही उनका स्वागत कर रहे थे।

इस घटना के माध्यम से नाटक के अंतर्निहित विषयवस्तु को आत्मसात करना।

मोहम्मद के मानसिक रूप से टूट जाने के बारे में।

बाद में, चाय के बाद, हम सब एक साथ बैठ गए। हमारे संगीतकार किशनजी
कश्मीर के एक बहुत ही प्रख्यात कश्मीरी संगीतकार लंगू ने कहा, 'आइए
हमें नाटक के गीत गाने को कहें।' ये गीत कश्मीरी लोक धुनों पर आधारित थे।
और भांड पथेर संगीत रचनाओं की तर्ज पर भी। हम सभी
वे एक के बाद एक गीत गाते रहे और भांड परिवार उन्हें सुनता रहा। ऐसा लग रहा था मानो उनकी रगों में
उन्हें कुछ IV बोतलों से जोड़ा गया था। सुनते हुए उनके चेहरे पर हल्की मुस्कान थी।
धीरे-धीरे उनके चेहरों पर भाव उभर आए और उनकी आँखें नम हो गईं। मैंने पूछा
वरिष्ठ सुरनाई वादक (नादस्वरम जैसा एक वाद्य यंत्र) गुलाम रसूल भगत (जिन्हें प्यार से रसूल चाचा कहा जाता था) ने अपने घर पर एक मुखम (राग) बजाया।
उसने अपना वाद्य यंत्र निकाला और बजाना शुरू किया, लेकिन वह बजा नहीं सका।
उससे कोई आवाज़ निकालने की कोशिश की। उसने कई बार कोशिश की, लेकिन हर बार वह असफल रहा।
कोई भी स्वर निकालो। उसने अपनी सुरनाई एक तरफ रख दी और रुंधी हुई आवाज में मुझसे कहा,
‘मेरी सांस रुक गई है, मेरी सांसें रुक गई हैं, मैं कोई आवाज नहीं निकाल सकता, मैं खत्म हो गया हूँ।’
मुझे इस बात पर बिल्कुल यकीन नहीं हो रहा था, क्योंकि मैंने उन्हें सालों से कुछ बेहतरीन रचनाएँ बजाते हुए सुना था।
जटिल मुखम और लोकगीत। एक उस्ताद के साथ ऐसा कैसे हो सकता है?

उनके जैसा संगीतकार? मुझे तो यकीन ही नहीं हो रहा था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं...
मुझे यह सोचने लगा कि क्या तनाव किसी व्यक्ति को इस स्थिति तक पहुंचा सकता है?
यह अजीब और विडंबनापूर्ण था कि जिन किरदारों को रिपर्टरी अभिनेताओं को निभाना पड़ता था
हम उनके सामने बैठकर खेल रहे थे। वे असली थे और हमारा खेल
यह उनकी वास्तविकता के बारे में था। यहाँ वास्तविक चरित्र और उसके बीच की रेखा स्पष्ट नहीं थी।
चित्रित दृश्य में अभिनेता की भूमिका धुंधली दिखाई गई है। इसलिए, अभिनय
भंड्स की वास्तविकता ही रिपर्टरी अभिनेताओं का अंतिम लक्ष्य बन गई।
इस चुनौती को समझा गया, और धीरे-धीरे भांडों के बीच संबंध
और रिपर्टरी अभिनेताओं का विकास हुआ, और उन्होंने वास्तविकता को प्राप्त किया।
पूरी रात घर पर मैं रसूल चाचा के बारे में सोचता रहा। हम कैसे करते?
क्या मैं उसे ठीक कर पाऊँ? मुझे लगा कि मुझे रसूल चाचा के लिए किसी तरह से दीवारों को तोड़ना होगा और
उसे उस भय से मुक्त करो जिसे उसने आत्मसात कर लिया था। कश्मीरी भंड धार्मिक हैं लेकिन कट्टरपंथी नहीं हैं, और उनके लिए ऋषित्व एक तरह का आध्यात्मिक अनुभव है।
वेंटिलेटर, जो उन्हें नकारात्मकता को बाहर निकालने और सकारात्मकता को अंदर लेने में मदद करता है। यह एक
एक प्रकार का ध्यान।
अगले दिन सौभाग्यवश गुरुवार था। मैंने अपनी कंपनी को बताया कि

हम सब शाम को निजामुद्दीन औलिया दरगाह जाएंगे।
घोषणा की गई कि रसूल चाचा मजार पर स्वर्णै बजाएंगे।
हज़रत निज़ामुद्दीन। एक तरह की चिकित्सा, शायद उन पर असर करे, उनकी स्थिति को देखते हुए।
सूफी साम की शक्ति में विश्वास, जहाँ वे पूरी रात गाते और नाचते हैं।
कश्मीरी शुभ, जो अधिकतर पीर और उनके मुरीदों की उपस्थिति में किया जाता है।
ऐसा माना जाता है कि यह नकारात्मक आत्माओं को दूर भगाता है। शाम को हम सब निज़ामुद्दीन परिसर में दाखिल हुए। मैं पहले से ही
परिसर के आसपास की गलियों से वहां चढ़ाने के लिए आवश्यक सामग्री खरीदी गई। सबसे पहले,
हम सभी ने महान कवि, संगीतकार हजरत अमीर खुसरो की मजार का दौरा किया।
संगीतकार और फारसी एवं हिंदवी के विद्वान। मैंने रसूल चाचा को समझाया।
अमीर खुसरो के महत्व के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने तुरंत उत्तर दिया, 'अहा, एक महान व्यक्ति।'
सूफी उस्ताद।’ उन्होंने खुसरो मजार पर हाथ उठाकर प्रार्थना की, और ऐसा ही किया।
अन्य लोग। इसके बाद, हम सभी निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह की ओर चले गए। वहाँ
वहाँ काफी भीड़ थी और एक संगीत दल पहले से ही गीत गा रहा था। दरगाह का प्रांगण।
सुबह रिहर्सल के दौरान गुल मोहम्मद आए और

उसने मेरे कान में फुसफुसाया। उसने कहा कि बूढ़ा आदमी (रशूल चाचा) सुबह उठ गया था।
सुबह के चार बजे थे, और सुबह के स्नान के बाद उसने अपने कपड़े उतार लिए थे।
स्वर्णई बजानी शुरू कर दी, जिससे वे सब जाग गए। बाकी लोगों ने पूछा
उसे पता चला कि क्या हो रहा है, और उसने जवाब दिया, 'मैं अब ठीक हूँ।' उसी समय
तभी रसूल चाचा रिहर्सल के लिए अंदर आए। वे सीधे अंदर चले गए। मेरी ओर मुड़कर उसने कहा, 'मैं ठीक हूँ, रात में कुछ हुआ था, और देखो!'
उन्होंने अपना स्वर्णई वाद्य यंत्र निकाला और बड़े नाटकीय अंदाज में शुरुआती सुर बजाए, और
बस इतना ही। उन्होंने कुछ समय तक बजाना जारी रखा और पूरा संगीत संग्रह प्रस्तुत किया।
सभी लोग बड़ी उत्सुकता से सुन रहे थे। सभी यह देखकर आश्चर्यचकित थे कि कितना बढ़िया
वह एक कलाकार थे।
दक्षिण कश्मीर के अकिंगम के भांड मेरे गोद लिए हुए परिवार की तरह हैं; या
बल्कि, उन्होंने मुझे गोद लिया है। मैं उनके घरों में रहा हूँ, उनके साथ काम किया है।
और उन्होंने घाटी के अंदरूनी हिस्सों में यात्रा करते हुए उन्हें प्रदर्शन करते देखा।
विभिन्न धार्मिक ज़ियारतों में मैंने अपना काफी समय व्यतीत किया है।
अकिंगम के भांडों के साथ। घाटी के भीतरी भाग में स्थित होने के कारण,

वे बाहरी हस्तक्षेप के बिना अपने मूल स्वरूप का अधिकांश भाग बरकरार रखने में सक्षम रहे हैं।
प्रभाव। मुझे वे बहुत कुशल लगते हैं और उनका संगीत शुद्ध है, बहुत ही
अपने प्राचीन मूल स्वरूप के काफी करीब। दिलचस्प बात यह है कि इसके आस-पास के गाँव
अकिंगम में पूरी तरह से भंड पथेर कलाकार, स्वर्णई और
इस क्षेत्र में ताल वाद्य और धमाल नर्तकों का अनूठा संगम है। अभिनेताओं, संगीतकारों और नर्तकों की प्रतिभाएं एक दूसरे पर बहुत हद तक निर्भर करती हैं।
यहां के कलाकारों के साथ-साथ, ग्रामीण कुशल शिल्पकार भी हैं।
कुम्हार, बुनकर आदि होने के कारण, ये अतिरिक्त कौशल उनके लिए सहायक साबित होते हैं।
कलाकारों को समर्थन देना, जिससे उन्हें कुछ अतिरिक्त आय प्राप्त हो सके।
चूंकि मेरा कार्यक्षेत्र केवल रंगमंच तक ही सीमित नहीं है, इसलिए मैं देख सकता हूँ कि
कलाओं की अंतर्संबंधता किसी भी संस्कृति की रीढ़ की हड्डी के रूप में कार्य करती है।
एक को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। मुझे उनके अस्तित्व को लेकर बहुत चिंता थी।
कश्मीर की प्राचीन कला प्रस्तुति, भंड पत्थर, के बारे में मुझे यह जानना था कि...
इसके लिए एक बड़ी परियोजना शुरू करने के तरीके और साधन खोजें ताकि इसका महत्व
प्रदर्शन कला को समकालीन समय के परिप्रेक्ष्य से देखा और महसूस किया जाता है।

और कश्मीर की कई अन्य अनमोल चीजों की तरह नष्ट होने के लिए न छोड़ दिया जाए।

अंततः, 2004 की गर्मियों में मैंने इसे पुनर्जीवित करने के लिए एक विस्तृत प्रस्ताव लिखा।

भंड पथेर, जिसमें कार्यशालाओं, प्रशिक्षण आदि के लिए कई अध्याय थे।

प्रलेखन, पुनरुद्धार और प्रदर्शन। यह एक खाका जैसा था।

भांड पत्थर का उसके वर्तमान स्वरूप से पुनर्निर्माण करके उसे ऊपर उठाना, ताकि वह अपना मूल स्वरूप पा सके।

समकालीन भारतीय रंगमंच में अपना स्थान बनाने के लिए। मैंने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

इंडिया फाउंडेशन फॉर द आर्ट्स, बेंगलुरु (आईएफए), और साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर

स्कूल ऑफ ड्रामा। मुझे पता था कि ये दोनों संगठन थिएटर परियोजनाओं का समर्थन करते हैं।

भारत भर से, और कौन जानता है, शायद मुझे उनमें से किसी एक से जवाब मिल जाए।

उनसे कई महीनों तक कोई जवाब नहीं मिला, लेकिन बाद में मुझे आईएफए से एक ईमेल मिला जिसमें कहा गया था कि यह एक बड़ा प्रोजेक्ट है और उनके पास इसके लिए पर्याप्त संसाधन नहीं हैं।

जिस तरह के संसाधनों की आवश्यकता होगी—जिसका मतलब था बहुत ही विनम्रतापूर्वक 'ना'।

नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली।

अप्रैल 2005 में लगभग एक महीने बाद, मुझे आईएफए से एक और ईमेल प्राप्त हुआ, और

इस बार स्थिति थोड़ी सकारात्मक थी। उन्हें सिर्फ कार्यशाला में ही दिलचस्पी थी।

मेरे द्वारा प्रस्तुत किए गए लंबे प्रस्ताव का अध्याय। कार्यशाला की अवधि
यह चार सप्ताह का समय होगा, और वे सहायता कर सकते थे। मुझे बहुत खुशी हुई और
उन्होंने तुरंत जवाब में धन्यवाद दिया और विवरण पर काम करने की पेशकश की।
उन्होंने मुझसे उन लोगों के बारे में और भी सवाल पूछे जो होंगे। इसमें शामिल लोग और इसी तरह की बातें सामने आईं, और जल्द ही भारतीय वायु सेना द्वारा एक अनुदान का उल्लेख किया गया।
कार्यशाला। उत्साह में आकर मैंने कार्यशाला की विस्तृत योजना बनाना शुरू कर दिया।
वे कश्मीर पहुंचे और अकिंगम के वरिष्ठ भंड मास्टर्स से मिले। सलाह। वे भी परियोजना को लेकर बहुत उत्साहित थे। जायजा लेने के बाद
भंड पथेर की वर्तमान स्थिति को देखते हुए, सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि आमंत्रित किया जाए।
घाटी के भांड गांव के प्रत्येक गांव से दो युवकों को चुनें और उनसे पूछें कि
एक महीने की प्रशिक्षण अवधि के लिए कार्यशाला में शामिल हों। यह कार्यशाला इस उद्देश्य से आयोजित की गई थी कि...
निवास करना। चूंकि भांड कश्मीर घाटी में हर जगह फैले हुए हैं। सुदूर इलाकों में, यह निर्णय लिया गया कि अली मोहम्मद भगत, जो सबसे वरिष्ठ हैं,
उनमें से एक उस्ताद भंड समुदायों का दौरा करते थे और व्यक्तिगत रूप से उनसे मिलते थे।
युवाओं को प्रशिक्षण का लाभ उठाने के लिए आमंत्रित करें। आयोजन की जिम्मेदारी युवाओं की है।

यह कार्यशाला कश्मीरी भगत थिएटर को दी गई थी, जो सबसे पुराना भंड थिएटर है।
पाथर संगठन में राज्य के सबसे प्रतिभाशाली कलाकार शामिल हैं, जिनमें से कुछ
जिन्हें उनके काम और उनके योगदान के लिए राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर सम्मान प्राप्त हुए थे।
भंड पथेर में योगदान।
अगली समस्या जिसका समाधान करना आवश्यक था, वह थी आयोजन स्थल का निर्धारण।
प्रशिक्षण। अब तक, जब भी हमने साथ काम किया था, वह किसी एप्पल के तहत ही हुआ था।
या उनके गांव में ही अखरोट के पेड़। लेकिन चूंकि युवाओं का एक बड़ा समूह
आने वाले थे, हमें अपने व्यायाम आदि के लिए एक बंद जगह की आवश्यकता थी।
इस मुद्दे पर विचार करते हुए, समूह के किसी सदस्य ने कहा कि एक नए गांव में एक बड़ा चिकित्सा अस्पताल बन रहा है जिसमें बड़े- बड़े हॉल होंगे, जो हमारे काम के लिए उपयुक्त होगा। चूंकि अस्पताल के खुलने में काफी समय लगेगा...
समय मिलने पर, हम आसानी से वहां अपनी कार्यशाला आयोजित कर सकते थे, बशर्ते अधिकारी अनुमति दें।
उन्होंने हमें खाली इमारत में काम करने की अनुमति दी। उनमें से कुछ लोग चले गए।
अस्पताल की इमारत को देखो। यह अभी भी अधूरी थी और इसमें कोई शटर नहीं थे।
दरवाजों और खिड़कियों पर। यह सिर्फ एक ढांचा था, और कुछ नहीं। यहां तक कि फर्श भी टाइलों से नहीं ढके थे। लेकिन, सच कहें तो, मजबूरी में क्या विकल्प होता है?

और हमने इमारत की मौजूदा स्थिति का उपयोग करने का निर्णय लिया।
लेकिन हमें मुख्य चिकित्सा अधिकारी से अनुमति प्राप्त करनी थी।
क्षेत्र। मैं व्यक्तिगत रूप से उनसे मिलने गया और उनसे उपयोग करने की अनुमति मांगी।
उन्होंने हमारी विनती को नहीं समझा और हमें इमारत से बाहर जाने के लिए कहा।
कार्यालय। मेरे और समझाने पर वह काफी नाराज हो गया और मुझसे कहा कि
मुझे उसके कार्यालय से बाहर जाना होगा, अन्यथा उसे अपने कर्मचारियों को मुझे वहां से ले जाने के लिए कहना पड़ेगा।
इस बिंदु पर मैं उससे यह कहने से खुद को रोक नहीं पाया, 'क्या आपको आदेश भेजना आवश्यक है?'
'अपने वरिष्ठ अधिकारियों से अनुमति लेने के बाद ही आप मुझे काम करने देंगे?' स्वाभाविक रूप से, उन्होंने ऐसा ही किया।
मुझसे इस तरह के बयान की उम्मीद मत करना।
हमने खुले आसमान के नीचे, कुछ पेड़ों की छाया में काम करना शुरू किया, जो पहले से ही पेड़ों से घिरे हुए थे।
यह काफी समय से हमारा नियमित कार्यस्थल रहा है। जल्द ही हमारी कार्यशाला
प्रतिभागी दूर-दराज के गांवों से आने लगे और जल्द ही
उन्हें गांव के घरों में ठहराया गया है। इस तरह की परियोजना के लिए यह आवश्यक है।
स्थानीय समुदाय को शामिल करना। वे इस प्रयास में भागीदार बन जाते हैं और
काम सुचारू रूप से चलने लगता है। हमने भंड की महिलाओं को भी शामिल करने का निर्णय लिया।

समुदाय को रसोई की जिम्मेदारी लेने के लिए कहा गया, जिस पर वे सहर्ष सहमत हो गए।
अंततः, हमने खुले में अपनी पूरे दिन की कक्षाएं शुरू कीं।
लेकिन तीन दिनों के भीतर ही
इसके कुछ दिनों बाद हमें उसी मुख्य चिकित्सा अधिकारी से एक पत्र प्राप्त हुआ।
हमें अस्पताल की इमारत का उपयोग करने की अनुमति देने के लिए। किसने किसको आदेश दिया?
इस अनुमति पर यहाँ विस्तार से चर्चा करना आवश्यक नहीं है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि...
बात यह थी कि अब हम परिसर से काम करेंगे।
एक नया अस्पताल बन रहा है जहाँ कम से कम हमारे सिर पर छत तो होगी ताकि बारिश से बचा जा सके।
इससे हमारे काम में कोई बाधा नहीं आएगी। हर दिन सुबह उठते ही सबसे पहले हम यही काम करते थे।
प्रशिक्षण शुरू करने से पहले हमें इमारत के फर्श धोने और फिर उन्हें पोंछने का काम सौंपा गया था। सभी प्रतिभागी और संकाय सदस्य हमारे साथ शामिल होते थे।
जगह की सफाई करते हुए।
अधिकांश प्रतिभागी उग्रवाद के दौर में पैदा हुए थे।
राज्य में 1990 के बाद से कभी भी सामान्य दिन नहीं बीता था।
जिस दुनिया में वे पले-बढ़े थे, वह हमारी दुनिया से बहुत अलग थी।
उदाहरण के लिए, वे कश्मीरी पंडित को न तो कभी देखते थे और न ही उनसे कभी मिले थे।
उन्हें मिश्रित संस्कृति का मतलब बिल्कुल नहीं पता था।
उन्होंने जो कुछ भी देखा था या
उग्रवादियों और सुरक्षा बलों की हिंसा का अनुभव किया गया।

इन सभी प्रतिभागियों ने कुछ न कुछ स्कूली शिक्षा प्राप्त की थी, इसलिए इसे समझाना थोड़ा आसान था।
उन्हें भांड पथेर के कुछ पहलुओं के बारे में जानकारी थी, लेकिन उनके पास अनुभव की कमी के कारण हमारे
सामान्य शिक्षण पद्धति में बदलाव लाना आवश्यक था। उनके भीतर दबी हुई ऊर्जा स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।
शरीर। हमारा हर सत्र अभ्यास-उन्मुख होना था, और यह इसके माध्यम से संभव हुआ।
नाट्य प्रस्तुतियों से संबंधित उन प्रक्रियाओं की व्याख्या करनी थी।
भंड पाथेर के अध्ययन के लिए कोई लिखित संदर्भ उपलब्ध न होने के कारण,
भांडों द्वारा संरक्षित प्रदर्शनों पर निर्भर रहना पड़ा।
इस प्रकार, व्यावहारिक कार्य के माध्यम से और मौखिक रूप से ज्ञान के हस्तांतरण द्वारा शिक्षण किया जाता है।
युवाओं को प्रशिक्षित करने का एकमात्र तरीका ज्ञान ही था। इसके साथ ही
भरत के नाट्यशास्त्र के सिद्धांतों का प्रभाव भांड पर पड़ा है। यह पथ राजनीतिक व्यापार और अन्य संस्कृतियों के साथ सांस्कृतिक संपर्कों से उत्पन्न हुआ।
मध्य एशिया और फारस के। केवल भौगोलिक स्थिति को देखकर ही
इस घाटी में घूमते हुए यह अहसास होता है कि कई संस्कृतियाँ यहाँ से गुज़री होंगी।
यह खूबसूरत घाटी, जिसने निश्चित रूप से नए सांस्कृतिक तत्वों को जन्म दिया होगा।
इससे यहां की मूल कश्मीरी संस्कृति प्रभावित हुई।

2005 की गर्मियों में - पहली भांड पथेर कार्यशाला

दिन को दो भागों में बांटा गया था। सुबह का समय शरीर की कसरत के लिए इस्तेमाल किया गया था।

प्रशिक्षण, जिसका अर्थ था शरीर पर नियंत्रण और अन्वेषण के लिए व्यायाम।

अभिनेता के शरीर की शारीरिक सीमाएँ। यहाँ हमने शुरुआत करना बेहतर समझा।

प्रतिभागियों के स्वयं के अनुभवों पर आधारित, जो उनके द्वारा अपने

अपने प्राकृतिक परिवेश में, ग्रामीण जीवन की दैनिक दिनचर्या में लगे हुए लोग। उनकी गतिविधियाँ जैसे कि खेत जोतना, मिट्टी तैयार करना, बीज बोना,

कटाई आदि की नकल की गई, क्योंकि ये सभी ग्रामीण क्षेत्रों से आए थे।

इससे हमारे प्रतिभागियों के लिए समझ विकसित करने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

अपने स्वयं के भौतिक स्वरूपों से, और उन्होंने अपने लिए कई रचनाएँ कीं।

उनकी दिनचर्या की गतिविधियों पर आधारित व्यायाम और शारीरिक गतिविधियाँ। अंत में,

प्रतिभागियों द्वारा विषयवस्तु आधारित गतिविधि रचनाएँ तैयार की गईं।

इस प्रकार, शरीर की गति और उसके अनुप्रयोग की खोज की प्रक्रिया थी।

उदाहरण के लिए, जंगल की यात्रा के अपने व्यक्तिगत अनुभव का उपयोग करके उन्होंने इस बात को और आगे बढ़ाया।

विभिन्न गतिविधियों के लिए। जंगल में जानवरों से निपटने का उनका अनुभव,

या फिर अपने गांव में मवेशियों की देखभाल करते हुए, उन्हें गतिमान अवस्था में चित्रित किया गया था।
यहां वे स्वयं जानवर बनने के अगले चरण में प्रवेश कर गए।
उनकी हरकतों की नकल करते हुए।
शरीर की गति की अवधारणा को समझने के बाद,
विषयवस्तु तैयार की जा सकती थी; अब कोई वास्तविक या काल्पनिक कहानी या घटना हो सकती है।
छोटे प्रदर्शन के लिए गति के माध्यम से व्यक्त किया गया। उनका ग्रामीण
जीवन स्वयं शरीर के प्रशिक्षण के लिए कहानियों और घटनाओं का एक सागर था।
और शरीर की गति के लिए। हमें यहाँ सैद्धांतिक पुस्तकों की आवश्यकता नहीं थी।
अभिनेता अपने शरीर और उसकी संभावनाओं के प्रति सचेत हैं।
प्रकृति का अध्ययन।
स्वयं ही अनगिनत सबक प्रदान करता था। उन्हें पहचानने के लिए बस एक दृष्टि की आवश्यकता थी।
चूंकि ये प्रतिभागी प्रकृति की गोद में रहते थे, इसलिए उनके लिए यह आसान था कि वे
प्राकृतिक जगत के विभिन्न पहलुओं से सीखकर आगे बढ़ें और फिर शरीर की गतिविधियों में उन्हें शामिल करके विभिन्न विषयों पर सुधार करना।
और विचार।
सौंदर्यपूर्ण गति और लय के लिए, हमने पारंपरिक तरीकों का ही प्रयोग किया।
धमाल नृत्य शैली। यह एक प्रकार का नृत्य है जो अनुष्ठानिक, सशक्त और

इस नृत्य में उछल-कूद और छलांग लगाने वाले कलाबाज़ी के करतब शामिल थे।
धीरे-धीरे गति बढ़ती जाती है, लय तेज होती जाती है जब तक कि यह जब यह चरम पर पहुंचता है, तो उस समय कई नर्तक समाधि की अवस्था में चले जाते हैं।
कई दरगाहों में चुनिंदा परिवारों द्वारा एक अनुष्ठान के रूप में किया जाने वाला यह अनुष्ठान, भंड पथेर की मुख्य संरचना को अपने भीतर समाहित करने की अपार संभावनाएं रखता है।
जिसमें हम पहले से ही प्रशिक्षण ले रहे थे।
भांड प्रदर्शनों में मुखौटे का उपयोग एक अभिन्न अंग है, इसलिए हमारे
अगला चरण प्रतिभागियों को मुखौटा बनाने का प्रशिक्षण देना और उन्हें सिखाना था।
मास्क के अनुरूप उपयुक्त शारीरिक हावभाव अपनाएं। इसके लिए, प्रतिभागियों को कुम्हारों की कला और विधि सिखाने के लिए गांव के कुम्हारों को बुलाया गया।
मुखौटे बनाना। प्रतिभागियों को कुम्हारों के गांव में भी भेजा गया था।
मुखौटा बनाने की तकनीकों में प्रशिक्षण प्राप्त करने और समझने दोनों के लिए
वह समुदाय जो उस गांव के काफी करीब रहता था जहां हम प्रशिक्षण ले रहे थे।
बच्चों ने मिट्टी के सांचे बनाना और पेपर-माचे का उपयोग करना सीखा।
मास्क के उत्पादन की तकनीकें। इस तरह साझेदारी
हमारे प्रोजेक्ट में समुदाय की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण हो गई और इससे प्रयास को मजबूती मिली।

कलाकारों के दोनों समुदायों के बीच साझाकरण के बारे में। जल्द ही प्रतिभागियों ने भाग लेना शुरू कर दिया।
पहले अलग-अलग किरदारों को लेकर छोटे-छोटे प्रदर्शन तैयार करना, फिर व्यक्तिगत रूप से।
और फिर एक समूह के रूप में।
दिन के पहले भाग में दिया जाने वाला यह प्रशिक्षण लगभग तीन सप्ताह तक चला।
अभिनेता के शरीर पर ही काम करने की पारंपरिक विधि का उपयोग करना।
जल्द ही, कई समकालीन खेल और अधिक व्यायामों को इसमें शामिल किया गया।
शरीर के समग्र प्रशिक्षण के लिए यह मॉडल। अब दोनों मौजूद थे।
पारंपरिक और शहरी समकालीन नाट्य अभ्यास और खेल
कार्यशाला।
दिन का दूसरा भाग भांड पथेर को समझने के लिए निर्धारित किया गया था।
स्वयं, एक चित्रकार के निर्माण की तरह, कला की संरचना को समझना, इस रूप के विभिन्न पात्र, विभिन्न अनुष्ठान और गीत... यहाँ फिर से,
हमारा दृष्टिकोण अभ्यास और अनुभव के मार्ग पर चलना था, जिसका अर्थ था
भांड पथेर को एक प्रदर्शन कला के रूप में समझने के सार को समझना, सामाजिक परिवेश इत्यादि। चूंकि प्रतिभागियों ने कई पथिक देखे थे।
अपने-अपने परिवारों द्वारा किए गए कार्यों का अध्ययन करना आवश्यक था, इसलिए उन पुराने कार्यों का अध्ययन करना आवश्यक था।

इस आकृति के विभिन्न तत्वों को सुलझाने के लिए पथ-प्रदर्शक मौजूद हैं।
हर दिन, हम एक पथ चुनते थे और उसके सभी पहलुओं पर चर्चा करते थे।
शुरुआत में प्रतिभागियों के लिए कथात्मक भाग को समझना आसान था। लेकिन हमारे वरिष्ठ उस्तादों ने उन्हें छिपे हुए अर्थों को समझाते हुए बताया।
उन्हें किसी विशेष नाटक में ऐसे संदर्भ दिए गए थे, जिन्हें डिकोड नहीं किया जा सका या
अन्यथा समझाया गया। भंड उस्तादों और मैंने इन पर काफी समय बिताया।
प्रशिक्षुओं को ऐतिहासिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि प्रदान करने वाली चर्चाएँ।
भंड पथर को विभिन्न ऐतिहासिक समय अवधियों और स्थानों में चिह्नित करें।
जहां परिवर्तन, आदान-प्रदान और प्रभाव घटित हुए होंगे, जिन्होंने आकार दिया होगा।
उस स्वरूप को, जो वर्तमान में है, उसमें परिवर्तित करना।
भंड पथेर कश्मीर का एक पारंपरिक लोक नाटक है। दरअसल, मैं इसे भंड पथेर ही कहता हूँ।
कश्मीर का पारंपरिक नाट्य विद्यालय। इसकी प्रशिक्षण पद्धति विशिष्ट थी।
और मंच का ज्ञान, संगीत का ज्ञान और प्रस्तुति का ज्ञान।
कथाएँ पिता से पुत्र को सौंपी जाती थीं। जब भंड पथर
बारीकी से देखने पर, इसमें कई ऐसे तत्व सामने आते हैं जिन्हें कला के क्षेत्र में अग्रणी माना जाता है।
आज, यही कारण है कि अनुकूलन के मामले में यह कई अन्य कला रूपों की तुलना में एक मजबूत बढ़त रखता है।

समकालीन रंगमंच के लिए।
भांड पथेर अनेक संस्कृतियों के संगम का परिणाम है, फिर भी
इसका दृष्टिकोण धर्मनिरपेक्ष है और यह मजबूत सामाजिक और राजनीतिक पहलुओं से ओतप्रोत है।
अंतर्दृष्टि। 'भंड' का अर्थ है अभिनेता या कलाकार, और 'पथेर' का अर्थ है खेलना।
भंड पथेर का प्रदर्शन खुले आसमान के नीचे, दिन के समय होता है, और
इसके अलावा विशेष अवसरों पर भी, उदाहरण के तौर पर सूफी दरगाह के उर्स के दौरान।
इसमें नृत्य, संगीत, अभिनय, मूक अभिनय और मुखौटे शामिल हैं। इसमें प्रयुक्त भाषा
यह प्रस्तुति मुख्य रूप से कश्मीरी है, लेकिन इसमें गुर्जर, पंजाबी, डोगरी और अन्य भाषाएँ भी शामिल हैं।
फारसी भाषा का भी प्रयोग किया जाता है, और कभी-कभी अंग्रेजी के कुछ शब्द या वाक्यांश भी।
बहुत।
भांड में मस्कारा या विदूषक सबसे महत्वपूर्ण पात्रों में से एक है।
पैथर। वह एक स्थिर कारक है, जो अनुक्रमों के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करता है।
इसमें हास्य के विभिन्न प्रकारों का प्रयोग किया जाता है, जैसे हज़ल (मज़ाक), मज़ाक (चुटकुलों) या
व्यंग्य (व्यंग्य)। इनका उपयोग करते हुए मस्खारा अक्सर राजाओं और उच्च वर्गों का मज़ाक उड़ाते थे, उनके भ्रष्टाचार और लालच को उजागर करते थे। मस्खारा
वह विद्रोही जो उत्पीड़क को चुनौती देता है।
भांड विशिष्ट मुखमों की धुन पर नृत्य करते हैं, और उनका संगीत

accompaniments include the swarnai, dhol, nagara and thalej. The swarnai

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कश्मीरी हिरण (हंगुल) और शेर जैसे जानवरों के मुखौटे

और घोड़े का उपयोग अक्सर पैथर के मुख्य एक्शन में किया जाता है। एक मुखौटा

कुछ नाटकों में दुष्ट आत्मा के रूप में दयान या वेश्या को दर्शाया जाता है। अभिनय शैली

यह यथार्थवादी से लेकर अत्यधिक अतिरंजित तक के उतार-चढ़ाव को दर्शाता है। कुछ भंड पाथेर में

प्रदर्शनों में, कई ऐसे अनुक्रम हैं जो कई चीजों के बहुत करीब हैं।

समकालीन नाट्य पद्धतियों के तत्व, जो इस विधा को एक विशिष्टता प्रदान करते हैं।

अन्य पारंपरिक रूपों की तुलना में, इसमें अन्वेषण के लिए पर्याप्त स्वतंत्रता और गुंजाइश है।

नाटक का स्थान भौतिक रूप से और अमूर्त रूप से भी। उदाहरण के लिए,

प्रदर्शन पूरे गांव क्षेत्र में फैल सकता है, कलाकार इसमें शामिल हो सकते हैं

छतों पर चढ़कर या आस-पास के पेड़ों पर चढ़कर पूरे गांव के नज़ारे को बदला जा सकता है।

इसे एक संपूर्ण प्रदर्शन स्थल में परिवर्तित किया जा सकता है; इस प्रकार, अभिनेता और दर्शकों के बीच की काल्पनिक दीवार को तोड़ा जा सकता है। अभिनेता एक छोटे मिट्टी के बर्तन का उपयोग अंधेरे कक्ष के रूप में कर सकते हैं।

और उसमें ऐसे बात करो जैसे किसी कुएं के अंदर छिपे भूत से बात कर रहे हो। इस तरह

उपचार कई बार भंड पाथर को एक निश्चित प्रकार का अमूर्त रूप देता है

इस प्रकार गुणवत्ता इसे विविध तत्वों का एक मोज़ेक बनाती है जो एक साथ कार्य करते हैं।

यह रूप और इसके कलाकार, एक विशिष्ट परिभाषा की श्रेणी में आते हैं।
एशियाई अभिनेता। एशियाई अभिनेता एक संपूर्ण अभिनेता होता है— वह नर्तक, कलाबाज, गायक आदि होता है।
संगीतकार, शिल्पकार, मूक अभिनय कलाकार... सब कुछ एक ही व्यक्ति में समाहित। यह वाकई अद्भुत है।
पश्चिमी प्रशिक्षण विद्यालयों में जो देखने को मिलता है, उसके विपरीत, जहाँ
अभिनेताओं की अलग-अलग श्रेणियां, जैसे गायन अभिनेता, गति अभिनेता, आदि।
नृत्य अभिनेता इत्यादि। सभी एशियाई पारंपरिक रंगमंच में, चाहे वह इंडोनेशियाई हो,
चीनी, जापानी, मलेशियन या भारतीय, प्रदर्शन शैलियों के लिए आवश्यकता होती है
बहु-कुशल और बहु-विषयक कलाकार। एक कलाकार को यह करना पड़ सकता है:
एक दृश्य में गाना और नृत्य करना, और दूसरे दृश्य में सशक्त अभिनय क्षमता का प्रदर्शन करना, और
एक और करतब दिखाएं।
भरत ने नाट्यशास्त्र में अभिनय पर अपने अध्याय में संपूर्ण कला को विभाजित किया है।
चार खंडों में: आंगिकम् (शरीर की गतिविधियाँ), वाचिकम् (ध्वनि और)।
शब्द) आहार्यम (आभूषण, जिसका अर्थ है पोशाक, सामान, सेट आदि), सात्विक सात्विकम (पहले तीन का संगम)। पारंपरिक के सभी रूप भारतीय रंगमंच ने अपने कलाकारों को इन्हीं सिद्धांतों पर प्रशिक्षित किया है। जबकि पहले

तीन खंड दृश्यमान और भौतिक रूप से ठोस हैं, अंतिम खंड, सात्विक है
कुछ अमूर्त। यदि आंगिक, वाचिक और के पहले तीन तत्व
आहार्या सही ढंग से समायोजित हैं, चौथा, जो एक सुगंध की तरह है। जो फूल दिखाई नहीं देते, वे एक सुखद अनुभूति या भावना का संचार करते हैं।
दर्शकों तक। यही भावना कुशल अभिनेताओं द्वारा दर्शकों तक पहुंचाई जाती है।
दर्शकों को आकर्षित करता है और उनमें विभिन्न भावनाएँ (रस) उत्पन्न करता है, जो हो सकती हैं
खुशी, दुख, रोमांस आदि।
इसलिए अभिनेता का शरीर तानपुरा के चार तारों के समान है, और
जब प्रत्येक तार सही ढंग से ट्यून किया जाता है और उन्हें एक साथ बजाया जाता है, तो उनका
कंपन से एक गूंज पैदा होती है जिसमें संगीतकार सभी स्वरों को सुन पाते हैं।
वे जिस संगीत रचना को गाते या बजाते हैं। स्वरों के इसी रथ पर सवार होकर संगीतकार सहजता से अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करता है।
राग उस संगीत रचना के रस को जागृत करता है।
विशेष भावना।
कार्यशाला के एक चरण में, हमने विभिन्न भंड पथेरों को आमंत्रित किया।
घाटी की कंपनियों को अकिंगम आकर अपने कार्यक्रमों में से एक का प्रदर्शन करने के लिए आमंत्रित किया जाता है।
ये सभी प्रदर्शन खुले आसमान के नीचे करने थे, जहाँ
हमारे प्रतिभागियों और शिक्षकों के साथ-साथ ग्रामीण भी बड़ी संख्या में आए।

देखो। प्रदर्शन के बाद, अतिथि दल, प्रतिभागी, उस्ताद।
और हम साथ बैठकर इस विषय पर एक बड़ी चर्चा और बहस शुरू करते थे।
जो प्रक्रिया संपन्न हुई थी, उस पर कई सवाल उठेंगे।
युवा भंड प्रशिक्षुओं को, जिनके सवालों का जवाब सबसे पहले नेता द्वारा दिया जाएगा।
पहले अतिथि समूह और फिर उनके कलाकार प्रस्तुति देंगे। बाद में, हमारे उस्ताद भी इसमें शामिल होंगे।
वे प्रदर्शन के अपने अनुभवों और अपने स्वयं के अनुभवों को साझा करते हैं।
इसकी व्याख्याएँ। वरिष्ठों द्वारा दिए गए इन व्याख्यानों ने एक बहुत ही जीवंत और उत्साहपूर्ण माहौल बनाया।
सभी के लिए सुखद अनुभव। गाँव में काम करने से अतिरिक्त लाभ मिलता है।
बिना किसी झिझक के दर्शकों की भागीदारी का लाभ उठाएं। कई बार, एक
एक बहुत बुजुर्ग दर्शक जो भांड के प्रदर्शन देखते आ रहे थे उसका बचपन उस प्रदर्शन पर उसकी प्रतिक्रिया देगा। यह वास्तव में एक
इन दर्शकों की बातें सुनना एक वरदान था। कभी-कभी वे
वे पुराने प्रदर्शनों की यादें साझा करते हैं या कुछ बहुत लोकप्रिय कार्यक्रमों के बारे में बात करते हैं।
अतीत के अभिनेताओं और उनके गुणों को याद करें। इन बहसों और चर्चाओं में भाग लें।
इससे हमारे युवाओं के लिए नए क्षितिज खुल गए, जो कुछ सवाल पूछने के लिए प्रेरित हुए।
बहुत ही प्रासंगिक प्रश्न। धीरे-धीरे, इनमें से कुछ युवा पुरुषों ने

भंड पथेर की प्रासंगिकता के बारे में खुलकर चर्चा करना और पूछताछ करना।
अवलोकन, श्रवण और अनुभव के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया एक उनके लिए सीखने की एक बहुत ही सार्थक प्रक्रिया। इस शिक्षण पद्धति की शुरुआत हुई।
अपने शरीर और दिमाग को सामान्य से कहीं अधिक तेजी से खोलना।
कल्पना की गई थी। युवकों ने बिना किसी झिझक के प्रशिक्षण में भाग लेना शुरू कर दिया।
आत्म-चेतना के कोई निशान नहीं।
प्रदर्शन-सह-सम्मेलनों से युक्त यह प्रशिक्षण जारी रहा।
कई दिनों तक चलने वाले इन प्रदर्शनों से गांव में उत्सव का माहौल बना रहता था। इन प्रदर्शनों में दूर-दूर से आने वाले भांडों का भी अतिरिक्त लाभ मिलता था।
लंबे अंतराल के बाद विभिन्न क्षेत्रों के लोगों का एक-दूसरे से मिलना और एक नए नेटवर्क का निर्माण होना।
भांडों का विकास हो रहा था। उग्रवाद के कारण ये संपर्क टूट गए थे।
उनका रिश्ता टूट गया था और वे सालों से मिल नहीं पाए थे।
एक दिन, दोपहर के करीब, हमारे यहाँ गरमागरम, मीठे हलवे का एक बड़ा बर्तन आया।
अस्पताल परिसर। और बशीर भगत, जो प्रभारी व्यक्तियों में से एक हैं।
व्यवस्थाएं पूरी की गईं, प्लेटें निकाली गईं और हलवा बांटना शुरू कर दिया गया।
सभी लोग। मैंने बशीर से पूछा कि जब हमारे पास हलवा नहीं था तो उसकी रसोई में हलवा कैसे बन सकता था।
सीमित धनराशि। वह ज़ोर से हँस पड़ा और बोला, 'सर, यह हमारे पास से नहीं है।'

मैंने पूछा, 'रसोई तो पास के ही सेना शिविर से मंगाई है। उन्होंने हमारे लिए मंगवाई है।'
‘लेकिन आज किस बात का जश्न मनाया जा रहा है?’ ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्हें इसके बारे में जानकारी नहीं थी।
पिछले अठारह महीनों से न तो किसी पर गोली चलाई गई और न ही किसी ने फायरिंग की, और वे चाहते थे कि
गांववाले और दुकानदार भी उनके उत्सव में शामिल हों।
इससे मैं हैरान रह गया। मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था कि यह शिविर कहाँ है, और सच कहूँ तो, किसी को भी इसके बारे में जानकारी नहीं थी।
हम उनसे कभी कोई संबंध रखना चाहते थे, कहीं ऐसा न हो कि हम सुरक्षा व्यवस्था का हिस्सा समझकर गलती की गई। जब से मैंने
जब मैंने घाटी में काम करना शुरू किया, तो मेरा निर्णय केवल इसी पर ध्यान केंद्रित करने का था।
मैं अपने काम को लेकर और अपने और अपने सहयोगियों के बारे में बाकी सब कुछ गुप्त रखूंगा।
जितना संभव हो उतना पारदर्शी। इस तरह, छिपा हुआ बंदूकधारी व्यक्ति दिखाई नहीं देगा।
मुझे आप पर शक है। मेरे कई दोस्त मुझे सलाह देते थे कि मैं किसी विशेषज्ञ की मदद लूँ।
सुरक्षाकर्मी। लेकिन मुझे यह विचार कभी पसंद नहीं आया। कल्पना कीजिए कि आप...
चौबीसों घंटे पुलिस द्वारा पहरा दिया जाता है। आपकी सारी स्वतंत्रता खतरे में है।
लोगों के बीच रहने का समय अब बीत चुका है, और आप आसानी से निशाना बन सकते हैं।
खुद पर ध्यान आकर्षित करना, और कौन जानता है, शायद कोई आप पर निशाना साध ले।

एक दिन तुम पर। मुझे गाँव के लोगों पर और उन लोगों पर भरोसा था जिनसे मैं मिला था।
जिनके साथ काम करना वर्षों से मेरी सबसे अच्छी सुरक्षा कवच रहा है। इसीलिए
मैं बिना किसी डर के कहीं भी घूम सकता था या किसी से भी मिल सकता था।
मुझे हमेशा से यही विश्वास था कि मैं वहां अपने लोगों के साथ काम कर रहा हूं, ठीक उसी तरह जैसे मैं
मणिपुर, केरल, ढाका या लाहौर के लोगों के साथ उनका संबंध था। मुझे घाटी के लोगों के राजनीतिक झुकाव के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।
अकिंगम के आसपास। चूंकि हम पीर पंजाल की तलहटी में स्थित थे। हमें उन लोगों के बारे में सावधान रहना होगा जिन्हें हम नहीं जानते थे या
पहचानो। आतंकवादी हमेशा पीर पंजाल की इन पर्वत श्रृंखलाओं से ही उतरे हैं।
और फिर आम जनता के साथ घुलमिल गए।
जब मैं 2006 की गर्मियों में हमारी नई कार्यशाला में आया और अपने साथियों से मिला, तब मुझे अपनी कार्यशाला के बारे में पता चला।
वरिष्ठ अधिकारियों से पूछताछ की और स्थानीय राजनीतिक स्थिति के बारे में जानकारी ली। केवल कुछ ही लोगों ने भाग लिया।
हमारी कार्यशाला से कुछ दिन पहले, गुल मोहम्मद भगत ने मुझे बताया कि एक समूह
अफगान और अरब आतंकवादी शाम को उसके घर पर आ गए थे।
उन्हें अंदर आने देने के अलावा कोई चारा नहीं था। वे भारी हथियारों से लैस थे, जिनमें बंदूकें और वायरलेस उपकरण शामिल थे।

सेट, हथगोले, सूखे मेवे और भारी मात्रा में गोला-बारूद।
गुल मोहम्मद ने उनका स्वागत किया और उन्हें सबसे ऊपरी मंजिल पर ठहरने के लिए कहा।
उसने अपने घर से पहले ही अपनी महिलाओं को चुपके से बाहर निकलने का संकेत दे दिया था।
वह अपने बड़े भाई के साथ रहने के लिए पीछे की ओर भूतल की खिड़की का उपयोग करके घर में रहता था।
भाई के घर। वह खुद डरा हुआ था, और यहाँ तक कि वह भी वहाँ रहना नहीं चाहता था।
अपने ही घर में। उन्होंने भांड समुदाय के सबसे वरिष्ठ सदस्य से अनुरोध किया,
गुलाम रसूल भगत (रसूल चाचा) अजनबियों की देखभाल करते हैं।
वे चार दिन तक वहीं रुके रहे। पूरी रात वे अपने वायरलेस सेट पर बातें करते रहे।
उनकी अपनी भाषा में किसी से बात करनी होगी। जितने दिन वे वहाँ रहे, उन्हें भोजन उपलब्ध कराना होगा।
अच्छा कश्मीरी व्यंजन. रसूल चाचा ने अपनी असली भांड चालाकी से बताया था
उन्हें अपनी गरीबी के बारे में बताया और यह भी बताया कि वह उन्हें अच्छा भोजन नहीं दे पाएगा।
खाना, खासकर मांस। उसने उनसे अच्छी खासी रकम वसूल ली।
वह उनके लिए और निश्चित रूप से अपने लिए भी भेड़ का मांस और चिकन खरीद सकता था।
रसूल चाचा ने कहा कि उन्होंने उनके साथ बहुत अच्छा समय बिताया और बढ़िया दावत का आनंद लिया।
उनके खर्चे पर, जैसे दर्ज़ा पाथर का अच्छा मस्कारा। जिसने अपने माध्यम से

इस दमनकारी राजा द्वारा सबसे पहले बुद्धि, विनोद और धूर्तता को बढ़ावा दिया जाता है।

वह उसकी हिंसा को सहन करता है, धीरे-धीरे उसका फायदा उठाकर उसका विश्वास जीतता है और अंततः

वह अपनी रखेलों के साथ भाग गया। अंततः, वे चार दिन बाद देर शाम को चले गए।

अंधेरी रात के घंटों बाद वह खेतों में गायब हो गया। मैंने गुलाम से पूछा

रसूल चाचा से उनकी मौजूदा स्थिति के बारे में पूछा गया—क्या उन्हें लगता है कि हम यहाँ बिना किसी समस्या के काम कर सकते हैं? उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'इंशाल्लाह, हालात बेहतर हैं।'

अब ज्यादातर स्थानीय लड़कों को निष्क्रिय कर दिया गया है।’ मैंने उससे पूछा कैसे? उसने

उसने मुझे अपनी शरारती मुस्कान दी और कहा, 'चूंकि मोबाइल

लोग चुपचाप पास के सैन्य शिविर को स्थान की जानकारी देते हैं।

और फिर आप आराम करें, और वे बाकी का काम कर देंगे। मोबाइल का उपयोग करके

इस तरह कोई भी किसी पर मुखबिर होने का आरोप नहीं लगा सकता या संदेह भी नहीं कर सकता।

(मुखबिर)। इससे पहले आपको यह जानना होगा कि मुखबिर कौन था,

उसे पकड़ो और उसके विश्वासघात के लिए उसे सार्वजनिक रूप से गोली मार दो। लेकिन अब इन

मोबाइल फोन के बारे में किसी को नहीं पता कि किसने उन्हें धोखा दिया और सूचना दी।

सुरक्षाकर्मी मौजूद हैं। अब यहाँ सुरक्षित है और कुछ हद तक शांति है।

ग्रामीण इलाका। तो उम्मीद है कुछ नहीं होगा, लेकिन फिर कौन जानता है?

उनकी ये कहानियां सुनकर मुझे हमारी सुरक्षा को लेकर चिंता होने लगी।
लेकिन इन दिनों ऐसा प्रतीत होता था कि कोई अप्रिय घटना नहीं हुई है।
घाटी, और हम शांतिपूर्वक काम कर सकते थे। लेकिन कुछ भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता था, और
हालात मिनटों में बदतर हो सकते थे। मैंने भारत को आमंत्रित किया था।
फाउंडेशन फॉर द आर्ट्स, जो हमारी वित्तपोषण संस्था का प्रतिनिधि है, से यह देखने के लिए कि
उन्हें पता था कि क्या काम चल रहा है। एक महिला अधिकारी आकर हमारे साथ रुकीं।
तीन दिनों तक। उन्होंने हमारे सुबह के सत्रों को देखा और साथ ही विभिन्न देशों से आमंत्रित विभिन्न दलों के प्रदर्शन
घाटी के कुछ हिस्सों में। अपने प्रस्थान के समय, उसने कहा, 'हम घाटी के कुछ हिस्सों में...'
फाउंडेशन को कभी विश्वास नहीं था कि कश्मीर में काम करना संभव है।
किसी भी कार्य को करने की संभावना को लेकर मुझे बहुत गंभीर आशंकाएं थीं।
राज्य में गंभीर गतिविधि चल रही है। वास्तव में, हमें आप पर और आप पर विश्वास नहीं था।
आपका प्रोजेक्ट। लेकिन धन्यवाद, यहाँ जो हो रहा है वह अविश्वसनीय है।
यह दूरस्थ क्षेत्र।
यह सच है जब मीडिया हिंसा और हत्याओं की कहानियों से भरा होता है,

इन अंधकारमय समय में कोई भी आपके प्रोजेक्ट संबंधी विचारों पर भरोसा नहीं करेगा।

कई बार। टिप्पणियाँ सुनकर मुझे थोड़ी खुशी हुई और राहत भी मिली।

हमारा काम जारी रहा, और हमारा अगला चरण वह था जिसे मैं कहानियां गढ़ना कहता हूं।

लेकिन इस प्रोजेक्ट में हम एक तरह से छलांग लगा रहे थे और सीधे नाटक बनाने में जुट गए थे। हमारे पास समय की कमी थी और हम महत्वाकांक्षी थे।

किसी ठोस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए—और इसीलिए छलांग लगाने की प्रक्रिया। चूंकि अधिकांश

भंड नाटकों का मंचन कार्यशाला में पहले ही हो चुका था।

विभिन्न भंड कंपनियों द्वारा, मुझे अपने छात्रों को गहराई में ले जाने की आवश्यकता थी।

प्रत्येक नाटक के विषयों के बारे में, और मैं यह भी सुनिश्चित करना चाहता था कि उनमें ये विषय शामिल हों।

प्रत्येक पथ के अंतर्निहित अर्थ को समझा। छात्रों ने शब्दों में व्यक्त किया कि

उन्होंने जो कुछ सीखा और समझा था, वह पर्याप्त नहीं था। वे उसे व्यक्त नहीं कर सके।

वे अपने पूरे अनुभव को शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाए क्योंकि वे बहुत आत्म-सचेत थे।

वे अपने द्वारा प्रस्तुत नाटकों के विषयों और अभिनय पर दर्शकों के सामने खुलकर बोलते हैं।

देख रहा था।

इसलिए, मैंने एक और तरीका आजमाया, उनसे नाटकों की कहानी को चित्रित करने के लिए कहा।

उन्होंने उन्हें देखा। उन्होंने अपने जीवन में कभी पेंटिंग नहीं की थी और न ही रंगों का इस्तेमाल किया था। लेकिन मैं

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि उन्होंने ऐसा किया था, भले ही उन्होंने कभी ब्रश उठाया भी न हो या उसका इस्तेमाल भी न किया हो।
रंगीन क्रेयॉन। हमने उन्हें पानी के रंगों का एक सेट और कागज़ की शीट दीं।
सफेद कागज पर प्रत्येक प्रतिभागी ने अपनी पसंद का नाटक चित्रित किया। शैली
उनकी पेंटिंग में उस पथ के अनुक्रमों की छाप शामिल थी। प्रत्येक छात्र ने अपनी पसंद का चयन किया। प्रत्येक छात्र ने पूरे कार्य को पूरा करने के लिए कई शीटों पर चित्रकारी की। नाटक की कहानी। यह देखना दिलचस्प था कि उन्होंने अनजाने में और सहज रूप से उन्होंने अपनी पेंटिंग में अंतरिक्ष और अंतरिक्ष की अवधारणाओं को लागू किया।
रचना। इस प्रकार, उन्होंने कागज की शीटों पर जो चित्र बनाए थे, वे प्रत्येक पात्र के निष्फल लक्षणों को व्यक्त कर रहे थे। रेखाएँ और रंग। कोई भी पेंटिंग पैमाने के अनुसार नहीं थी, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।
इस अभ्यास से हमें इस विषय पर उनकी समझ के बारे में अच्छा अंदाजा हो गया।
उन्होंने जो पथ-प्रदर्शक देखे थे, हमें लगा कि वे उन्हें समझ नहीं पा रहे थे।
नाटकों में कुछ बिंदुओं पर दृश्यों की गहराई और उपशीर्षक, और उन पर और चर्चा की आवश्यकता थी। ये वे क्षेत्र थे जहाँ कार्रवाई की आवश्यकता थी।
जिस नाटक को उन्होंने चित्रित किया था, उसकी कथा अमूर्त हो गई, और उनका विश्लेषण
हमें और अधिक स्पष्टीकरण देने की आवश्यकता थी।

जब हमने यह अभ्यास पूरा कर लिया, तो हमने तीन और लेने का फैसला किया।
तीन अलग-अलग पथों से अनुक्रम लेकर प्रतिभागियों के लिए तीन अलग-अलग प्रदर्शन मॉड्यूल तैयार करें। हमने जो अनुक्रम चुने हैं, वे इस प्रकार हैं:
ये दर्ज़ा पथेर से थे, (यह पथेर एक ऐसे राजा के बारे में है जो समाज में बाहरी है)
घाटी में, अपने दोस्तों के साथ शराब पीने और नाचने का आनंद लेते हुए।
रखैलें हैं, और वह एक स्थानीय मस्खारा से मिलता है, जो अपने विशिष्ट मस्खारा के साथ
वह अपनी रखैलियों के साथ भाग जाता है। इस कहानी में कई राजनीतिक संकेत छिपे हैं, लेकिन
(इसमें बहुत सारे नृत्य और गायन शामिल हैं), वाटल पथेर (यह पथेर निम्न जाति के हाशिए पर रहने वाले समुदाय और उनके दैनिक जीवन के विशिष्ट तरीकों के बारे में।
उनके विवाह गीत, झगड़े, रीति-रिवाज और उनके जीवन के संघर्ष, इसमें हास्यप्रद व्यंग्य का प्रयोग किया गया है। यह प्रस्तुति भरपूर है।
गीतों, संगीत और नृत्य का एक मिश्रण) और शिकारघा (यह एक प्रदर्शन है)
पशुपतिनाथ के पशु जगत में शिव को दर्शाया गया है। यहाँ आप देख सकते हैं
शिवा वनों के निवासी। हिरण, भालू, शेर, पक्षी आदि। सब हो गया। इस नाटक में जंगल के सभी पात्रों के मुखौटे का उपयोग किया गया है। यह नाटक उनके सह-अस्तित्व के बारे में है।
उस आदमी के साथ। इन जानवरों की हरकतों और नृत्यों के अलावा

इससे मनुष्यों के बारे में पर्यावरण और पारिस्थितिकी से संबंधित गंभीर प्रश्न उठते हैं।
प्रतिभागियों को तीन अलग-अलग समूहों में विभाजित किया गया था, और प्रत्येक समूह
उन्हें अपने अंतिम प्रदर्शन मॉड्यूल के रूप में एक पाथर अनुक्रम विकसित करना पड़ा।
इन युवा प्रतिभागियों को संघर्ष करते देखना बहुत दिलचस्प था। उन्होंने स्वयं ही सोचा, जैसा कि हम संकाय सदस्यों ने उनसे स्वयं सोचने के लिए कहा था।
और अपने विचारों को अमल में ला सकें। इसका उद्देश्य उनमें आत्मविश्वास पैदा करना था।
टीम के माध्यम से अंतिम प्रदर्शन के लिए अपने स्वयं के निर्णय लें।
परामर्श। उनके काम के हर पहलू पर प्रतिदिन सभी के साथ चर्चा की जाती थी।
हम सभी और प्रतिभागी टीमों के साथ। चर्चा के मुख्य बिंदु इस प्रकार होंगे:
इस पर आगे काम किया गया।
अपनी रचना के स्वयं लेखक बनने के लिए, उन्होंने काम करना शुरू कर दिया।
वे स्वयं को सुधार करने के लिए तैयार करते हैं। भांड पाथेर में स्थान का विशिष्ट उपयोग था
उनके लिए इसे अंजाम देना काफी मुश्किल था। उस्तादों को इसे सिखाना बहुत पसंद होता।
उन्हें वरिष्ठों के प्रदर्शन की नकल करने या संवाद रटने के लिए प्रेरित करना।
यह उनके लिए खुद से बनाना सीखने का एक आसान तरीका होता।

लेकिन एक बार जब उनकी चिंताएँ और भय दूर हो गए, तो उनकी अपनी व्याख्याएँ पनपने लगीं। ये मौलिक थीं, और यह एक रोमांचक अनुभव था।
उनके लिए एक क्रम को नियंत्रित करने और अपने पास मौजूद स्थान का पता लगाने की प्रक्रिया
तात्कालिक रचना के माध्यम से। अपने स्वयं के संवादों का निर्माण करके।
शब्दों, चुटकुलों और बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल करना उनके लिए मज़ेदार हो गया, वे अपने संदेश भेजते थे।
उनका आत्मविश्वास चरम पर था। वे अपनी पहचान बना रहे थे और नए-नए आयाम स्थापित कर रहे थे।
और मौलिक दृश्य। अली मोहम्मद भगत, पुराने उस्ताद कलाकार,
वह इन नए और आने वाले कार्यक्रमों के हर पल का आनंद लेते हुए हंस रहा था।
प्रदर्शन। उन्होंने मुझसे कहा, 'ये बच्चे कमाल के हैं। अब मुझे समझ आ गया है।'
आप उन्हें निर्देश क्यों नहीं दे रहे हैं, बल्कि केवल उनके अंतर्निहित अर्थ को समझा रहे हैं?
हर सीक्वेंस में। ये लड़के सब कुछ मुझसे अलग तरीके से कर रहे हैं।
वे यही कर रहे होते।
कुछ देर तक सभी लड़के दृश्यों का अभ्यास करते रहे, और
हर बार जब वे कुछ नया करते, तो दृश्य में कुछ नया जुड़ जाता। अचानक, क्षणिक आवेग में। अंततः उन्हें समझ आ ही गया।
रचनात्मक होने की शक्ति, और दिन-प्रतिदिन वे नए विचार लेकर आते रहे और
उनके प्रदर्शन में कई तत्व शामिल होते थे। हर बार रिहर्सल में ऐसा ही दिखता था।

ताजा और मौलिक।
कला के किसी पारंपरिक रूप का पुनरुद्धार करने का अर्थ उसकी नकल करना नहीं है।
अतीत। लेकिन अतीत के भीतर नए, समकालीन क्षणों का निर्माण करके।
परंपरागत स्वरूप की सीमाओं को तोड़ना भी, और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें तोड़ना भी।
रूप की सीमाओं को तोड़कर नई व्याख्याओं को जन्म दिया जाता है, नया जीवन दिया जाता है।
फॉर्म में। इस तरह फॉर्म निष्क्रिय होने से बच जाएगा।
अतीत का दलदल। परिवर्तन और निरंतरता की यह चेतना समृद्ध करती है।
विषयवस्तु और शैली में पारंपरिक रूप। आइए याद रखें कि
परंपरा में कुछ भी स्थिर नहीं रहता। लोक कला हमेशा समय के साथ बदलती रहती है।
और अंतरिक्ष से जूझता रहता है और वर्तमान से संघर्ष करता रहता है। यह एक गंभीर स्थिति है।
यह गलतफहमी है कि परंपराओं को छुआ नहीं जाना चाहिए, लेकिन
इसे यथावत रखा जाए। समकालीन रंगमंच के व्यक्ति के रूप में यह समझ हानिकारक है।
रूप के विकास के लिए। इसलिए, जब पारंपरिक रूपों के स्वामी बदलते हुए विश्व की समझ और ज्ञान को अवरुद्ध करने से, रूप अपनी शक्ति और प्रासंगिकता खोने लगता है, और कौशल में गिरावट के साथ-साथ
प्रतिभाएं भी धीरे-धीरे नष्ट हो जाती हैं।
भंड पाथेर में मेरा हस्तक्षेप इसे इसकी खोई हुई प्रतिष्ठा वापस दिलाने के लिए है, न कि इसके लिए।

इसे पहले जैसा ही पुनः बनाएं या पुनर्निर्मित करें, लेकिन इसे उस रूप में विकसित होने दें जो इसे होना चाहिए।

समकालीन समय में यही होना चाहिए। इसलिए मैंने और मेरे साथियों ने यह कार्यशाला आयोजित की।

अकिंगम में भंड गुरुओं का कार्य पुनर्जीवित करना, कायाकल्प करना था।

कला का दस्तावेजीकरण और पुनरुद्धार करना, अंततः नई कृतियों को अपनाना और साथ ही इसकी अच्छाई को भी सामने लाना।

यह रंगमंच की व्यापक दुनिया के लिए उस्तादों को तैयार करता है। यह ताकत को चुनौती देने के लिए भी है।

नए ग्रंथों और नई कथाओं के साथ काम करके इस शैली को विकसित करना, जो कि

भंड परिवार ने पहले कभी इसकी कल्पना भी नहीं की थी और न ही इसका सामना किया था। मैं भंड पथेर को देखता हूँ।

यह एक आधुनिक नाट्य शैली के रूप में विकसित हो रहा है जिसमें अनंत संभावनाएं हैं।

प्रयोग।

भंड पथेर में अतीत की परंपराओं के सभी तत्व मिश्रित रूप में मौजूद हैं।

इसमें मुझे आधुनिक कला के अवंत-गार्डे अभ्यासों की झलकियाँ दिखाई देती हैं। मैं इसमें अमूर्तता भी देखता हूँ और

इस रूप में मौजूद बेतुके तत्व। जब आप किसी भी पथ का बारीकी से निरीक्षण करते हैं,

चाहे वह धार्मिक हो, सामंती हो, सत्ता-विरोधी हो, आदि, हमेशा एक अस्तित्व होता है।

पवित्रता की उपस्थिति। इसमें निहित पवित्रता धर्मनिरपेक्षता के धागों पर बुनी हुई है।

दृष्टिकोण और मूल्य, और इसी में इसकी समकालीनता निहित है।
कार्यशाला

जिस प्रोजेक्ट पर हम काम कर रहे थे, उसके दो उद्देश्य थे। एक तो ज्ञान प्राप्ति के लिए था।
उस्तादों द्वारा प्रतिभागियों के साथ साझा करने के लिए ले जाया गया सामान, और दूसरा था
समकालीन रंगमंच से जुड़े मेरे जैसे लोगों के लिए अपना ज्ञान साझा करने के लिए
प्रतिभागियों के लिए। इसका उद्देश्य चिंतनशील रंगमंच के निर्माण के लिए बीज बोना था।
ऐसे व्यक्ति जो अपने समय के प्रति संवेदनशील हों, लेकिन साथ ही साथ उसमें प्रतिबिंबित करने में भी सक्षम हों।
भांड पत्थर की जटिलताएं और अन्य कला रूपों के साथ इसके अंतर्संबंध
घाटी।
कार्यशाला के आखिरी कुछ दिनों में हमें कुछ परेशान करने वाली बातें सुनने को मिल रही थीं।
घाटी के कई हिस्सों में पत्थरबाजी और पुलिस फायरिंग की खबरें आ रही हैं।
अनंतनाग में हमारे कार्यस्थल से बीस किलोमीटर दूर एक भीषण आग लगी थी।
जनता और सुरक्षा बलों के बीच टकराव। कई युवा लड़के
कई लोगों को गोली मारकर हत्या कर दी गई, जिससे स्थिति और बिगड़ गई, और आसपास के इलाकों में भी तनाव और अनिश्चितता का माहौल था। सौभाग्य से, अकिंगम में
कोई गड़बड़ी नहीं थी, लेकिन कुल मिलाकर माहौल अच्छा नहीं था। लोगों में एक तरह की बेचैनी महसूस हो रही है। कार्यशाला में, हमने उन्हें यह जानकारी दी कि...
प्रतिभागियों को एक दिन का अवकाश दिया गया और उन्होंने कोई वाद्य यंत्र नहीं बजाया, ताकि लोगों को परेशानी न हो।

हमें गलत न समझें। हमने अपनी कक्षाएं शांति से कीं। हमने तो पढ़ाई भी बंद कर दी थी।
खुले में काम करने के बजाय वे अस्पताल परिसर के भीतर ही रहे। घाटी के सभी हिस्सों से आ रही खबरें बुरी थीं, क्योंकि युवा लड़के
गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। लगभग अठारह वर्ष का एक लड़का, जो सुबह ट्यूशन क्लास के लिए जा रहे एक व्यक्ति की अनंतनाग में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।
इसके बाद दुकानों और परिवहन सेवाओं द्वारा हड़ताल की गई। हालाँकि, हम
हम अपने गांव के दर्ज़ियों, लोहारों और अन्य कुशल कारीगरों के साथ चुपचाप काम करते रहे।
लोग।
हम चार संकाय सदस्य थे और लगभग पाँच किलोमीटर दूर ठहरे हुए थे।
अकिंगम से दूर, अचबल नामक स्थान पर, एक छोटे से सरकारी पर्यटक आवास में।
यह गेस्ट हाउस साझा शौचालयों और बाथरूमों से सुसज्जित था। यह जगह इसके बगल में थी।
सुंदर अचबल मुगल उद्यान। इस क्षेत्र का खनिज जल, जो यहाँ बहता था।
पानी के फव्वारों में पहाड़ियों के नीचे से पानी रिस रहा था, जो कि
घने चीड़ के जंगल। हम सुबह 9 बजे काम पर जाते थे और वापस लौटते थे।
शामें अक्सर बीतती थीं, इसलिए हम इस खूबसूरत जगह का आनंद मुश्किल से ही ले पाते थे। हमारा काम ऐसा था कि

हमारा अधिकांश समय इन्हीं में व्यतीत होता है। प्रभारी व्यक्ति, जो रसोइया और प्रबंधक दोनों का काम करता है,
पर्यटन स्थल था, आदमी अच्छा था लेकिन बहुत ही लापरवाह था, अनौपचारिक रूप से रसोई चला रहा था।
स्थानीय लोगों के लिए शराब पीने का अड्डा। असल में, वह हमें वहाँ देखना पसंद नहीं करता था।
वहाँ इसलिए रुके रहे क्योंकि हमारी उपस्थिति उनके गुप्त कार्यों में बाधा डाल रही थी।
व्यवसाय। हमें सावधान रहना पड़ा, क्योंकि वहाँ जिस तरह के पात्र थे, उन्हें देखते हुए यह ज़रूरी था।
देर शाम तक किसी एक कमरे में आना-जाना लगा रहता था। लेकिन
हम कुछ नहीं कह सके क्योंकि पूरे इलाके में यही एकमात्र जगह थी।
जहां कोई ठहर सकता था। बस स्टैंड के पास एक छोटा सा बाजार था। अचाबल में कुछ चाय की दुकानें थीं। हम अक्सर वहां बैठकर चाय पीते थे।
वहाँ के स्थानीय लोगों से बातचीत की। वे यह जानने के लिए उत्सुक थे कि हम कौन हैं और इस इलाके में क्या कर रहे हैं। दो-तीन मुलाकातों के बाद उन्हें कुछ जानकारी मिली।
उन्हें हमारे काम के बारे में जानकारी मिली, और वे हमारे साथ काफी दोस्ताना हो गए।
इस चाय की दुकान के ठीक सामने कई वीरान मकानों वाला एक इलाका था।
उनमें से अधिकतर जर्जर हालत में थे। उनके दरवाजों पर फूलों की चित्रकारी के निशान थे।
कई रंगों में, मुझे घरों में शादी के दिनों की याद दिलाते हुए कश्मीरी पंडित। पूरा इलाका किसी भूतिया मोहल्ले जैसा लग रहा था।

टूटी खिड़कियों और जर्जर दीवारों के साथ, सब कुछ किसी खंडहर की तरह दिख रहा था।
कुछ प्राचीन संरचनाएँ। इन घरों के बगल में एक छोटा मंदिर था, जो देखने में बहुत ही सुंदर लग रहा था।
अपने उपासकों के बिना अकेला। एक घर सुंदर जगह पर खड़ा था।
एक बहती हुई मीठे पानी की धारा, लगभग खोखली, जिसका दृश्य अत्यंत उदास है।
यह वही घर था जहाँ मैं स्कूल के दिनों में कुछ बार गया था और मेरी चचेरी बहन वहाँ रहती थी। अब वह एक शरणार्थी शिविर में रह रही है।
जम्मू में कहीं।
हालात में कोई सुधार नहीं हुआ था, और बड़ी संख्या में लोगों की हत्याएं जारी थीं।
कुछ युवा लड़कों ने पूरी आबादी को नाराज कर दिया था।
सुरक्षा बलों के साथ पत्थरबाजी की भीषण झड़पें हुईं।
मुझे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति का फोन आया।
विश्वविद्यालय के एक सदस्य को कुछ लोगों का साक्षात्कार लेने के लिए चयन समिति का सदस्य बनाया जाएगा।
कुछ प्रोफेसरों और सहायक प्रोफेसरों की नियुक्ति के लिए संकाय।
मैंने कुलपति को समझाया कि मेरे लिए आना संभव नहीं है। उन्होंने अनुरोध किया,
बल्कि उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि मैंने ऐसा किया। उसकी समस्या यह थी कि मेरी उपस्थिति के बिना वह
मैं साक्षात्कार आयोजित नहीं कर सका क्योंकि मैं भारत के राष्ट्रपति का नामित व्यक्ति था।

मैं विश्वविद्यालय में आगंतुक था और मेरी उपस्थिति अनिवार्य थी। कुलपति ने मुझे बताया।

मेरे बिना वे नियुक्तियाँ संभव नहीं हो सकती थीं, और योग्य व्यक्ति

उम्मीदवार जल्द ही सेवानिवृत्त हो जाएंगे, जिससे उन्हें नियुक्त होने का मौका नहीं मिलेगा।

विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों से मैंने कहा कि मैं वादा तो नहीं कर सकता, लेकिन कोशिश करूंगा।

आने के लिए।

मैंने अपनी टीम के साथ बनारस यात्रा पर चर्चा की थी और सबकी सहमति यही थी कि

मैं जा सकता था। यात्रा केवल तीन दिनों की होगी। मैंने फोन किया।

मैंने श्रीनगर में मंज़ूर मीर से संपर्क किया और उनसे मेरे लिए बनारस का वापसी टिकट खरीदने को कहा। लेकिन घाटी में कर्फ्यू लग गया, और मैं सत्तर दिनों तक वहीं रुका रहा।

हवाई अड्डे से किलोमीटर दूर।

कर्फ्यू के दौरान मैं हवाई अड्डे तक कैसे पहुँचूँगा? मुझे बताया गया था कि अगर मैं

अगर मैं मुख्य राजमार्ग पर यात्रा कर रहा होता तो मुझे कोई समस्या नहीं होती।

श्रीनगर हवाई अड्डे पर पहुँच गया। लेकिन राजमार्ग पर जाने से पहले मुझे यात्रा करनी थी।

अनंतनाग शहर को पार करने में लगभग बीस किलोमीटर का रास्ता था, और वह क्षेत्र

सख्त कर्फ्यू लगा हुआ था और स्थानीय लोगों के बीच हिंसक झड़पें हुई थीं।

पत्थरबाजों और सुरक्षा बलों से बचाव के लिए। मेरे टैक्सी ड्राइवर ने सुझाव दिया कि अगर हम चले जाएं तो...

लगभग सुबह 4:30 बजे, जब कोई परेशानी नहीं होगी, हम पहुँच सकते हैं।
हवाई अड्डे तक पहुंचने में तेजी आई और कोई परेशानी नहीं हुई। अगले दिन, मैं सुबह 4:30 बजे अपने टैक्सी ड्राइवर के साथ अकेले निकली। मैंने उससे पूछा था
जब मैं शहर में किसी निश्चित स्थान पर अपने हवाई टिकट के साथ मंज़ूर से मिलूँ, तो वह मुझसे मिलने आएगा।
श्रीनगर पहुँच गया। सुबह-सुबह जब मैं निकला तो मौसम सुहाना था। मैं जल्द से जल्द हाईवे पर पहुंचना चाहता था ताकि मेरा ड्राइवर हम सुबह करीब 9 बजे घर लौट आए। सड़कों पर कोई भी नहीं था।
संकरी सड़क, लकड़ मंडी, पर पहुँचकर, जो अनंतनाग को जोड़ती है।
राजमार्ग। निकास बिंदु पर सुरक्षाकर्मियों का एक बड़ा दस्ता तैनात था।
दुर्भाग्यवश, रात का कर्फ्यू अभी भी लागू था, और हमने उसका उल्लंघन किया था, जिसके कारण
यह बिल्कुल भी ठीक नहीं था। जैसे ही उन्होंने हमारी गाड़ी को आते देखा, वे
उन्होंने हमें रुकने का इशारा किया। मैं काफी घबरा गया था। बिना कोई सवाल पूछे ही एक
पुलिसकर्मियों के एक समूह ने मुझे गाड़ी से बाहर खींच लिया और दूसरे समूह ने मेरे ड्राइवर को घसीट कर बाहर निकाल दिया।
बाहर आकर उसने हमें बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया। हम दोनों जमीन पर गिर पड़े थे।
दर्द से चीखते हुए, मैंने अचानक विरोध में अपनी आवाज उठाई। मेरी आवाज सुनकर
विरोध प्रदर्शन के दौरान, उनके वरिष्ठ अधिकारियों में से एक कहीं से प्रकट हुआ और उसने हमें इशारा किया।

वापस जाने के लिए। दर्द से लंगड़ाते हुए, हम अपनी गाड़ी में सवार हुए, और ड्राइवर ने
हमने वापस जाने के लिए अपनी टैक्सी रिवर्स की। शुक्र है कि हमें गिरफ्तार नहीं किया गया।
कानून तोड़ने के लिए; यह बहुत बुरा होता। मैंने देखा कि मेरा ड्राइवर को बहुत दर्द हो रहा था, लेकिन फिर भी उसने करीब पांच किलोमीटर तक गाड़ी चलाई।
हमने गाड़ी रोक दी और हम दोनों एक नाले की ओर नीचे चले गए। हम रुक गए।
हमने अपनी पैंट उतारी और देखा कि हमसे खून बह रहा है। अब हम क्या करें? दो बुजुर्ग ग्रामीण दूर से हमें देख रहे थे। उन्होंने ड्राइवर से पूछा।
क्या हुआ था। ड्राइवर द्वारा स्थिति समझाने के बाद, वे
पहले तो उन्होंने हमारे प्रति सहानुभूति जताई और फिर यह सुझाव दिया कि हम
छोटे-छोटे गाँव की सड़कों के जाल से होकर गुजरने वाला एक वैकल्पिक मार्ग जो वहाँ तक जाता था
राजमार्ग। वैकल्पिक मार्ग से जाने में थोड़ा समय लगेगा, लेकिन हमें पूरा भरोसा था कि हम
राजमार्ग पर पहुँचें। हममें से किसी ने भी पहले कभी यह रास्ता नहीं लिया था, जो जाता था।
संकरी ग्रामीण सड़कों और गलियों से होते हुए, उथले नदी तल को पार करते हुए।
हर गांव में लोगों से सही रास्ता पूछते रहना ताकि यह सुनिश्चित हो सके
हम रास्ता नहीं भटके थे। चूंकि सुबह के लगभग 6 बजे थे, इसलिए लोग दो अजनबियों को रास्ता ढूंढते देख वे काफी हैरान थे।

राजमार्ग। लेकिन हम जिन भी गांवों से गुज़रे, वहां के लोग गर्मजोशी से भरे और मेहमाननवाज थे।
आगे बढ़ने से पहले वह अक्सर हमसे एक कप चाय पीने के लिए कहते थे। एक गाँव में हमने सड़क पर एक बड़ी भीड़ देखी।
लगभग 500 लोग थे, जिनमें ज्यादातर बुजुर्ग पुरुष थे। वे सब हमारी तरफ देखने लगे;
वह आश्चर्यचकित और जिज्ञासु दोनों लग रहा था। ड्राइवर ने गाड़ी की गति धीमी कर दी और
उसने बाईं ओर देखा, और मैं भी उसी दिशा में मुड़ गया। वहाँ एक गाँव था।
वहाँ कब्रिस्तान था और ये बुजुर्ग व्यक्ति एक नई कब्र को घूरते हुए खोए हुए थे।
ड्राइवर ने रुंधी हुई आवाज में कहा, 'उन्होंने अभी-अभी उस लड़के को दफनाया है जो...'
'कल अनंतनाग गोलीबारी में मारे गए।' फिर भारी मन से उन्होंने कहा,
शहरवासियों द्वारा पैदा किया गया संघर्ष, और ग्रामीण लोगों को बलिदान देना पड़ता है।
उनके प्रियजन।’ ड्राइवर का यह बयान मुझे आज भी परेशान करता है। हम
वह आगे बढ़ा और डेढ़ घंटे के भीतर उसने मुझे हवाई अड्डे तक पहुंचा दिया।
सुबह के ठीक 7:30 बजे थे, और हवाई अड्डे के गेट अभी भी बंद थे। मैंने अपने
ड्राइवर को जल्दी से एक कप चाय और एक गरमा गरम ऑमलेट खिलाया और उसे तुरंत वापस आने को कहा।
मैं सुरक्षित घर पहुँच गया। मुझे सुबह 10 बजे तक हवाई अड्डे के गेट खुलने का इंतजार करना पड़ा। इससे पहले

उन्होंने ऐसा किया, मुझे मेरे ड्राइवर का फोन आया जिसमें उसने बताया कि वह घर पहुंच गया है।
सुरक्षित रूप से।
हम अब 2005 की ग्रीष्मकालीन कार्यशाला के अंतिम चरण में थे।
पूर्वाभ्यास चल रहे थे, साथ ही सभी सामान, वेशभूषा और अन्य चीजें भी तैयार की जा रही थीं।
संगीत वाद्ययंत्र। प्रतिदिन कम से कम दो बार अभ्यास होता था, और प्रत्येक अभ्यास के बाद चर्चाएँ होती थीं जहाँ और सुझाव दिए जाते थे।
प्रदर्शन में सुधार लाने और समस्याओं को सुनने के लिए समय दिया जाएगा।
कलाकारों की समस्याओं का समाधान ढूंढें। प्रदर्शन की तारीख थी जैसे-जैसे समय नजदीक आता गया, प्रतिभागियों में उत्साह बढ़ता गया।
कार्यक्रम स्थल गांव का एक पहाड़ी इलाका था। ऊँची ढलानें दर्शकों के लिए जगह थी और पहाड़ियों की तलहटी में हमारा प्रदर्शन क्षेत्र था।
इस तरह की साइट ने मुझे शुरुआती ग्रीक थिएटर प्रदर्शनों की याद दिला दी, जिनमें इस्तेमाल किया जाता था
यह आयोजन एक पहाड़ी की तलहटी में होना था। लेकिन यहाँ हमने जगह को बेहतर बनाया था।
नाटकों में पात्र अभिनय के लिए एक बड़े क्षेत्र का उपयोग करते थे।
दर्शकों के बीच प्रदर्शन करना। इसमें कई बार प्रवेश और निकास की सुविधा है।
निकट होने के कारण, इन बिंदुओं ने पूरे प्रदर्शन स्थल और अभिनेताओं को ऊर्जावान बना दिया।
दर्शकों को एक नया, गतिशील संबंध विकसित होता हुआ दिखाई देगा।

स्वयं और दर्शकों। यहीं रंगमंच का भ्रम टूट गया।
पूरी तरह से। औपचारिक और अनौपचारिक भ्रम और वास्तविकता दोनों ही मौजूद होंगे।
पूरे प्रदर्शन के दौरान परस्पर क्रिया।
पूरी पहाड़ी पर ग्रामीण बसे हुए थे। पुरुष, महिलाएं, बच्चे, सभी मौजूद थे।
बुजुर्ग... सभी उपस्थित थे। वे पांच अलग-अलग गांवों से आए थे।
इस आयोजन के लिए न तो कोई निमंत्रण भेजा गया था और न ही जनता को कोई संदेश दिया गया था।
प्रदर्शन। लोगों को इसके बारे में महज़ मौखिक प्रचार से ही पता चला था।
शो के समय के बारे में।
प्रतिभागियों ने अपने रेखाचित्रों, चित्रों आदि की एक प्रदर्शनी लगाई।
मिट्टी के काम आदि को वे अपने निजी कार्यों को पास के चिनार के पेड़ों पर टांगकर प्रदर्शित करते थे।
प्रदर्शन स्थल ताकि आम जनता उनका काम देख सके।
अंतिम दिन, प्रतिभागियों के माता-पिता भी दूर-दूर से आए थे।
घाटी में स्थित गाँव।
इस प्रदर्शनी और प्रदर्शन से प्रशिक्षण के बारे में कुछ जानकारी मिली।
कार्यशाला में आम जनता और भंड के अभिभावकों को जो ज्ञान दिया जा रहा है
विशेष रूप से प्रशिक्षण की गंभीरता को समझा, जिसे यदि स्वीकार कर लिया जाए तो
उनके भांड समूह उन्हें व्यक्तिगत रूप से समृद्ध करेंगे। वास्तविक प्रदर्शन

कार्यक्रम में उत्सव जैसा माहौल था और इसे देखने के लिए लगभग दो हजार दर्शक मौजूद थे। हमारे कुछ मेहमान श्रीनगर से भी आए थे।
कुछ पत्रकार मित्र भी इस प्रयास को देखने आए थे।
चारों ओर फैले संकट के बीच युवाओं के बारे में। ये मीडियाकर्मी मैंने सौहार्दपूर्ण विरोध दर्ज कराया और मेरे पास शिकायत भी दर्ज कराई क्योंकि मैंने ऐसा नहीं किया।
उन्हें प्रदर्शन के बारे में सूचित करना। मुझे उन्हें समझाना पड़ा कि हमारा
यहां किया गया काम किसी प्रचार के लिए नहीं था। यह एक गंभीर सांस्कृतिक परियोजना थी, जो
उस समय की परिस्थितियों को देखते हुए यह बहुत महत्वपूर्ण था। हम सभी इसमें शामिल थे।
संस्कृति के बीज बोने में। और वास्तव में, हम इनमें से कुछ भी नहीं चाहते थे।
इसका प्रचार-प्रसार करना हमारे काम के लिए प्रतिकूल होगा।
जब प्रदर्शन अपने चरम पर था, तभी मैंने आकाश में काले बादल देखे।
मुझे एहसास हुआ कि बारिश होने वाली है। ठीक उसी समय जब कार्यक्रम शुरू होने वाला था।
इसके बाद, तेज हवा चलने लगी, और जल्द ही यह तूफान में बदल गई और फिर एक भीषण तूफान में।
मूसलाधार बारिश। सभी लोग आश्रय के लिए भागे। हमारे प्रतिभागी अभी भी
आखिरी चरण को तब तक करते रहे जब तक कि आगे बढ़ना असंभव नहीं हो गया। कुछ ही मिनटों के भीतर
पूरी पहाड़ी पर कोई नहीं था। कपड़े बारिश में भीग गए थे और बारिश और तेज हवाओं के कारण प्रदर्शनी पूरी तरह से तहस-नहस हो गई।

मैंने सभी प्रतिभागियों से अपने निजी कपड़े पहनने को कहा और कश्मीर सम्मेलन के संयोजक गुलाम हसन भगत के घर पर इकट्ठा हों।
भगत थिएटर। वहीं हम अपने कार्यक्रम का समापन समारोह आयोजित करेंगे।
कार्यशाला का समापन सुखद रहा।
मैंने हारमोनियम खोला और बजाना शुरू किया, और जल्द ही सभी लोग भी बजाने लगे।
हमारे नाटकों के गाने गाते हुए। लगभग एक घंटे तक, सभी कलाकार, उस्तादों और मेहमानों ने गायन, संगीत और नृत्य में भाग लिया। यह एक शानदार आयोजन था।
अकिंगम में आयोजित पहली भांड पाथेर कार्यशाला का सर्वश्रेष्ठ तात्कालिक समापन।
हो सकता था।

17

मुज़फ़्फ़राबाद जाने वाली बस

भारत और पाकिस्तान के बीच कई युद्धों के बाद और हत्या के बाद दोनों पक्षों की ओर से हजारों लोग मौजूद थे, उनके बीच काफी सौहार्द था।

दोनों देशों में। 2004 में, सामान्यीकरण के लिए कई पहलें की जा रही थीं।
दोनों देशों के बीच संबंध। मुफ्ती मोहम्मद सईद थे।
जम्मू और कश्मीर राज्य के मुख्यमंत्री। वह, केंद्र सरकार के साथ मिलकर
सरकार ने दोनों के बीच बस सेवा शुरू करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।
कश्मीर के कुछ हिस्से—अर्थात, श्रीनगर और मुज़फ़्फ़राबाद के बीच का क्षेत्र। तारीख
बस सेवा शुरू करने की तारीख 7 अप्रैल 2005 तय की गई थी। मैंने इसके बारे में सुना था।
दिल्ली में हुए विकास के कारण अंततः जम्मू और कश्मीर के दो हिस्से अलग हो गए।
लगभग छह दशकों के बाद बस सेवा द्वारा इसे जोड़ा जाएगा।
घाटी के दोनों हिस्सों के बीच व्यापारिक गतिविधियाँ हों। यह सुनकर मुझे अच्छा लगा।
समाचार इसलिए क्योंकि शांति के माध्यम से जो हासिल किया जा सकता है, वह किसी अन्य माध्यम से हासिल नहीं किया जा सकता।
युद्ध। अगर दक्षिण एशियाई देश एक साथ मिल जाएं तो इससे भारी तबाही मच सकती है।
उनकी गरीबी से त्रस्त जनता को समृद्धि प्रदान करना।
मेरे परिवार का मुजफ्फरबाद शहर से बहुत गहरा संबंध था।
मेरे दादाजी की तैनाती राज्य के राजस्व विभाग में वहाँ हुई थी।
कई वर्षों से। मेरे एक परदादा का मुज़फ़्फ़राबाद में एक संगठन था।
यह संस्था विधवाओं के हित के लिए समर्पित थी और 1947 तक कार्यरत रही।

मेरी दादी अपने लंबे प्रवास के दौरान लगातार कहानियां सुनाया करती थीं।
मुज़फ़्फ़राबाद में अपने दादाजी के साथ। मेरे बचपन से ही, एक उस जगह की छवि मेरे मन में उन आनंददायक कहानियों से अंकित हो गई थी जो मैंने सुनी थीं।
सुना।
अंततः अप्रैल 2005 की तारीख को उस दिन के रूप में घोषित किया गया जब
बस सेवा शुरू होने वाली थी। अचानक मुझे सलीम बेग का फोन आया। उन्होंने कहा कि कश्मीर सरकार ने इस अवसर को बड़े धूमधाम से मनाने का फैसला किया है और पर्यटन महानिदेशक के रूप में उन्हें भी इसमें शामिल किया गया है।
कुछ अन्य सरकारी अधिकारियों के साथ उन्हें समारोह समिति में शामिल किया गया।
उन्हें समारोहों के सांस्कृतिक घटक का प्रभार सौंपा गया है। उन्होंने मुझसे कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बारे में सोचने को कहा जो इसका हिस्सा हो सकते हैं।
एक भव्य उत्सव। मैंने उनसे इस बारे में सोचने के लिए कुछ समय मांगा। उन्होंने
उसने पलटवार करते हुए कहा कि समय बहुत कम है और हमें अपना काम करना होगा।
दो दिन में प्रेजेंटेशन है, इसलिए मुझे अभी से सोचना शुरू करना होगा।
हंसते हुए उसने कहा, 'सलीम, अच्छे विचारों को समय चाहिए होता है।
खैर, मुझे अपना विचार रखने दीजिए।'
आइए मिलकर देखें कि इस कम समय में क्या किया जा सकता है।
मैंने सांस्कृतिक कार्यक्रम की संभावनाओं पर विचार करना शुरू किया।

सुबह मुझे सलीम का फिर से फोन आया, उसने कहा, 'मुफ्ती साहब, मुख्य मंत्री जी ने हमें इस अवसर के लिए एक स्मृति चिन्ह या बैज बनाने का निर्देश दिया है।
जिसे लोगों में बांटा जा सके।' मैं जानना चाहता था कि क्या उनके पास था
क्या आपके मन में कोई विशेष डिज़ाइन है? सलीम ने जवाब दिया, 'नहीं, आप कुछ विकसित करें।'
कृपया अपने डिज़ाइन हमें भेजें, और हम उनमें से एक डिज़ाइन आपको भेज देंगे।
मुख्यमंत्री द्वारा अनुमोदित।’ मैंने सलीम से कहा कि मुझे पूछना पड़ेगा।
डिजाइनर को एक डिजाइन बनाने के लिए कहा गया। सलीम ने अपने अंदाज में कहा, 'चलो, तुम्हारे पास है'
इतने सारे दोस्त हैं, आप उनसे मदद मांग सकते हैं।’ मैं फिर हँसा और बोला,
‘ठीक है महोदय, मैं कोशिश करूंगा।’
शाम तक मेरे दोस्त राजेंद्र अरोरा, डिजाइनर, प्रकाशक, कवि और प्रिंटर ने मुझे तीन डिज़ाइन भेजे: एक में नीले रंग की योजना थी, दूसरे में
एक डिज़ाइन में पीला और दूसरा हरा रंग का था। प्रत्येक डिज़ाइन में एक बस और एक नाव की छवियाँ थीं।
और एक वृत्ताकार रचना में एक फूल, और बाहरी वृत्त पर लिखा था चौदहवीं सदी के कश्मीरी कवि, ध्वजवाहक नुंद ऋषि की एक कविता कश्मीरियत के बारे में: 'मैंने तलवार तोड़कर उससे हंसिया बनाई।' यह था
यह कश्मीरी भाषा में लिखा गया था, और इसका अंग्रेजी अनुवाद भी उपलब्ध था।

मैंने तीनों डिज़ाइन सलीम को मंज़ूरी के लिए मेल कर दिए। कुछ समय बाद...
कुछ घंटों बाद मुझे उसका फोन आया और उसने मुझे महबूबा के घर जाने के लिए कहा।
नई दिल्ली के शाहजहाँ रोड स्थित मुफ्ती स्टोर पर जाकर तीनों डिज़ाइनों को प्रदर्शित करें।
बैज। वह फैसला करेगी।
जब मैं महबूबा मुफ्ती के घर पहुंचा, तो मैंने उनके सुरक्षा गार्ड से कहा कि...
उसे बता दो कि मैं आ गया हूँ। कुछ ही मिनटों में वह वापस आकर मुझे बताने लगा।
मुझे, ‘मैडम ने शाम को आने को कहा है।’ मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं आया। मैंने कहा
मैंने गार्ड को बताया कि मैं शाम को नहीं आ सकता क्योंकि मैं बहुत दूर रहता हूँ।
मैं डिजाइन वहीं छोड़ सकता था और वह अपनी पसंद का कोई भी डिजाइन चुन सकती थी।
सलीम बेग को उसके फैसले के बारे में बता दो। जब गार्ड वापस आया, तो उसने कहा,
‘कृपया अंदर आइए।’ जब मैं ड्राइंग रूम में दाखिल हुआ, तो वहाँ कोई नहीं था।
वहाँ। लगभग दस मिनट बाद, महबूबा मुफ्ती अंदर आईं, और मैंने उन्हें दिखाया।
तीनों डिज़ाइन। उसने उन्हें देखा, और कुछ ही मिनटों में, वह उसने एक को चुन लिया। उसने मेरी तरफ देखा और पूछा, 'तुम्हें क्या लगता है?'
मैंने कहा, ‘महबूबा जी, आप बेहतर जानती हैं, लेकिन मुझे लगता है कि आपको फैसला नहीं करना चाहिए।’ हरित डिजाइन पर।

वह आश्चर्यचकित हुई और बोली, 'अरे, इसमें क्या खराबी है?'

मैंने जवाब दिया कि दुर्भाग्य से हरा रंग पाकिस्तान से जुड़ा हुआ है।

आपके आलोचक आप पर और आपके प्रयासों पर अपना हमला और तेज करेंगे। मुझे लगता है

आप उन्हें आप पर और आपके पिता पर हमला करने का मौका नहीं देना चाहते।'

वह काफी देर तक एक शब्द भी नहीं बोली, बल्कि ध्यान केंद्रित करती रही।

डिजाइनों के बारे में बताने के बाद, उसने मेरी ओर मुड़कर पूछा, 'आपको कौन सा डिजाइन पसंद है?'

मैंने जवाब दिया, 'मुझे नीला वाला ज्यादा पसंद है।'

उसने फिर पूछा कि ऐसा क्यों है। मैंने जवाब दिया कि नीला रंग माना जाता है।

शांति का रंग, संयुक्त राष्ट्र के ध्वज का रंग: 'और आपका सरकार लगभग अठ्ठावन वर्षों के बाद शांति प्रक्रिया शुरू कर रही है।

पूरी दुनिया इसे देखने वाली है, और मुझे यकीन है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इसकी चर्चा होगी। सीमा के दोनों ओर की घटनाओं को रिकॉर्ड करने वाले मीडिया चैनल।

यह आपकी सरकार के लिए एक शानदार क्षण है। इसीलिए नीला रंग ही विजयी होगा। इस ऐतिहासिक आयोजन के लिए उपयुक्त रंग। वह लगातार डिज़ाइनों को देखती रही।

उसने मुझे हल्की सी मुस्कान दी और कहा, 'ठीक है, तो हम नीला रंग तय कर लेते हैं।'

मैं उसके घर से निकला और तुरंत सलीम बेग को फोन करके सारी बात बताई।

मैंने अपनी मुलाकात का ब्यौरा उन्हें बताया और कहा, 'मुझे उम्मीद है कि मैंने हद पार नहीं की।' वे हँसे और बोले, 'जो बातें

तुम उसे बता सकती हो, वो हममें से किसी को भी पता नहीं चल सकती थीं।'
हिम्मत दिखाने के लिए धन्यवाद।
लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। अगले दिन सुबह-सुबह मुझे एक घबराया हुआ फोन आया।
महबूबा मुफ्ती की ओर से मुझे बैज के ऑर्डर को रोकने के लिए कहा गया। 'हम
बैज पर कुरान की वह आयत छपवानी है जिसे छापना है।
नंद ऋषि के श्लोक का।
उसने श्लोक का पाठ किया:

हे ईश्वर! हमारी धरती को अपनी कृपा से आशीर्वाद दें।
ताजगी भरी हरियाली और शांति के साथ

मुझे वह श्लोक बहुत पसंद आया। यह सचमुच एक महान पवित्र प्रार्थना थी। फिर मैंने सुझाव दिया कि...
उसे बताएं कि होर्डिंग्स पर हमारे पास दोनों श्लोक हैं। यह पूरी तरह से होगा।
शांति का संदेश। वह सहमत हो गई, और अंततः, दोनों श्लोक प्रदर्शित किए गए।
सभी प्रचार सामग्री।
इसी बीच, मैंने कुछ संभावित विचार विकसित किए जिन्हें अपनाया जा सकता है।
इस अवसर को मनाने के लिए। एक प्रस्तुति उस समय होगी जब... श्रीनगर से बस का प्रस्थान, उस स्थान से जहाँ वीवीआईपी पहुँचेंगे

उन्हें भरोसा नहीं था कि अगर मैं ऐसा करता रहा तो वहां चीजें ठीक हो पाएंगी।
दिल्ली में रुकना। उनमें से एक ने कहा, 'हम तुम्हारा इंतजार करेंगे।' दोनों
मेरे लिए दोस्तों से भी बढ़कर, मैं उनकी मदद को मना नहीं कर सका। और मुझे भी यही महसूस हुआ कि मैं
उन्हें इस ऐतिहासिक आयोजन का हिस्सा होना चाहिए।
मैंने एक शर्त पर सहमति जताई—कि यह मेरा छोटा सा योगदान होगा।
मेरी घाटी जिसने मुझे इतना कुछ दिया है और मैं किसी पेशेवर सहायता की तलाश में नहीं हूँ।
पारिश्रमिक। वे मुस्कुराए और हवाई अड्डे ले जाने वाली कार में बैठ गए।
जाते समय नईम साहब ने फिर कहा, 'हम इंतजार कर रहे हैं।'
मैं 2 अप्रैल 2005 को पहुंचा। पर्यटन महानिदेशक का कार्यालय ऐतिहासिक पर्यटक स्वागत केंद्र इस आयोजन का आयोजन केंद्र था। सारा काम उसी कमरे से होता था। वही मेरा शौचालय भी था। मुझे दिया गया था।
मेरे ठहरने के लिए पर्यटक स्वागत केंद्र के परिसर में एक कमरा। अगले दिन तैयारियां पूरे जोर-शोर से चल रही थीं। स्थानीय बैंड से
जम्मू और कश्मीर पुलिस को मेरे साथ प्रदर्शन का पूर्वाभ्यास करने के लिए बुलाया गया था।
बस के प्रस्थान और आगमन के समय। बैंड ने मेरे साथ काम किया। कुछ घंटों के लिए। ये बैंड सदस्य काफी आलसी थे और उनके पास बहुत सीमित कौशल थे।

उनकी ट्रेनिंग के बावजूद, वे साधारण लोक धुनें भी नहीं सीख पाए। इसलिए, इसके बाद
मैंने रिहर्सल में उन्हें अस्वीकार कर दिया और एक बेहतर बैंड की मांग की। सच कहूँ तो, अगर मैंने ऐसा किया होता
मुझे लगता है कि मेरे पास बड़ी संख्या में पारंपरिक स्वर्णई होनी चाहिए।
बीस ढोल और बीस नगाड़े वाले खिलाड़ी। इससे एक
इस अवसर की शुभता का चुंबकीय प्रभाव, वह भी शुद्ध रूप में। कश्मीरी ध्वनियाँ। लेकिन मुझे बहुत ही दबे स्वर में बताया गया कि मुखिया
मंत्री और अन्य लोगों को भंड और उनका संगीत पसंद नहीं था। मैं चाहता था कि
इसबंद (जिसे हरमल भी कहा जाता है) को जलाकर आशीर्वाद के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ करें।
बीज), जिसका उपयोग कश्मीरी (हिंदू और मुस्लिम दोनों) शुभ अवसरों पर करते हैं। लेकिन सुरक्षा कारणों से ऐसा संभव नहीं हो सका। हो गया। मुझे समझ नहीं आता कि राजनेता पारंपरिक सांस्कृतिक तत्वों से क्यों परहेज करते हैं।
मुझे कश्मीरी पंडित संगठन द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम याद है।
1970 के दशक के उत्तरार्ध में दिल्ली, जहाँ इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थीं।
अतिथि। उद्घाटन के समय, प्रख्यात भारतीय चित्रकार किशोरी कौल उपस्थित थीं।
वह खूबसूरत कश्मीरी पोशाक पहने और एक अच्छी तरह से सुसज्जित वस्तु लिए मंच पर दिखाई दीं।
अपने हाथों में सजाई हुई कंगाड़ी (अग्नि पात्र) और इसबंद लिए हुए, उसने इंदिरा से अनुरोध किया।

गांधीजी मंच पर आएंगे, और विशिष्ट पारंपरिक कश्मीरी शैली में, उसका स्वागत उसके बैंड को जलाकर किया गया। वहां तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी।
सभागार में मुसलमान, पंडित, डोगरा और पंजाबी लोग मौजूद थे। सभागार में लगभग पांच मिनट तक खुशी भरी जयकार गूंजती रही और तालियाँ बजने लगीं। इंदिरा गांधी इतनी भावुक हो गईं कि वे पूरे कार्यक्रम में मौजूद रहीं।
हालांकि वह केवल बीस मिनट के लिए आई थी। यह एक दुर्लभ उदाहरण था।
अपनी भूमि और संस्कृति से जुड़ाव पैदा करने वाली भावनात्मक संवेदना।
अगले दिन, 6 अप्रैल 2005 को, जम्मू से एक और पुलिस दस्ता पहुंचा।
पूर्वाभ्यास के लिए। उनका नेता एक कश्मीरी था और मैंने उसे समझाया कि हम
हम मार्चिंग बैंड की कोई रचना नहीं बजाने वाले थे। हम सीखेंगे और हम केवल अपने लोक संगीत का ही अभ्यास करते हैं। मैंने कुछ पुरानी धुनें गुनगुनाईं।
जो जनता के बीच बहुत लोकप्रिय थे। बैंड का नेता
पहले वह उन्हें अपने क्लैरिनेट पर बजाता था, और फिर समूह द्वारा उन्हें चुना जाता था।
पहले बैगपाइपरों का, फिर धीरे-धीरे बिगुल बजाने वालों का, जो अंत में होंगे
ढोल बजाने वाले भी शामिल हो गए। दो घंटे के भीतर हम लगभग नब्बे मिनट तक कतार में खड़े रहे।
पूर्ण संचालन के बाद पुलिस बैंड के वाद्ययंत्रों पर लोक धुनें बजाई गईं।

पूर्वाभ्यास का अभ्यास चल रहा था। उनके नेता, जिन्हें प्यार से 'मास्टरजी' कहा जाता था, ने एक
बैंड के सभी वाद्ययंत्रों का उपयोग करते हुए उल्लेखनीय व्यवस्था। सभी गाने
बैंड के विभिन्न वाद्ययंत्रों के साथ यह बहुत ही शानदार लग रहा था।
धीरे-धीरे गायब हो रहा था। पर्यटक स्वागत केंद्र के सभी अधिकारी अपने कमरों से बाहर आ गए।
बैंड का अभ्यास देखने के लिए दफ्तरों में जाने वाले लोग मुस्कुराते हुए संगीत का आनंद लेते हैं।
चेहरे।
अंत में, मास्टरजी और मैंने धुनों का क्रम निर्धारित किया।
बस के रवाना होने तक चलने वाले समारोहों का क्रम।
हमें अगली सुबह अमर सिंह क्लब के लॉन में मिलना था।
कार्यक्रम स्थल। यह तय किया गया कि हम आधे घंटे पहले पहुंचेंगे।
कार्यक्रम से पहले, सुबह लगभग 9.30 बजे। कार्यक्रम सुबह 10 बजे शुरू होना था।
उन्होंने बैंड के सदस्यों को उनके प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया और वे चले गए।
मैं पानी लेने के लिए पर्यटन महानिदेशक के कमरे में गया।
एक युवा दिहाड़ी मजदूर अंदर था, जो मुझे पानी का गिलास देने में मदद कर रहा था। वहीं पर मुझे
मुझे गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी, ऐसा लगा जैसे वह बगल वाले घर से आई हो। उसके बाद
हर दिशा से आती हुई प्रतीत होने वाली तीव्र गोलीबारी की आवाज से।

एक गोली हमारे कमरे की फ्रेंच खिड़की पर लगी और कांच चारों ओर बिखर गया।
फर्श। पीछे की खिड़की से एक और गोली चली, जिसके बाद तेज आवाजें आईं।
विस्फोट हुए। गोलीबारी रुकी नहीं। बल्कि, यह तेज हो गई, और कुछ ही समय में
कुछ मिनटों बाद मुझे तेज धमाकों की आवाज सुनाई दी, जिससे कमरे की खिड़की हिल गई।
यह किसी युद्ध के दृश्य जैसा लग रहा था। मैं और वह युवक दोनों ही ज़मीन पर लेट गए।
एक बड़ी मेज के नीचे जमीन पर सपाट पड़ा हुआ।
मैंने कॉलेज के एनसीसी प्रशिक्षण के दौरान यह करना सीखा था।
आवाज़
AK-47 या स्टन गन से फायरिंग नहीं रुकी। और भी गोलियां चलीं।
अब बाथरूम की दिशा बदल गई, और खिड़की टूटी हुई थी। एक ने किया समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। अगर कोई कमरे से बाहर निकलने की कोशिश करता तो उसे निश्चित रूप से बाहर जाना पड़ता।
गोली लग गई। फर्श पर लेटे हुए हमारे बीस मिनट सदियों जैसे लग रहे थे।
दफ्तर की दीवार पर एक घड़ी लगी थी, और मैं समय देख रहा था। बेचारा
मेरे साथ बैठा लड़का डर से कांप रहा था। मैं उसे दिलासा देने और शांत रखने की कोशिश कर रही थी।
उसका मनोबल ऊंचा था। सौभाग्य से, मैंने अपना आपा नहीं खोया। मैं बस यही सोच रहा था कि...
हमें इस मुसीबत से निकलने का कोई अंदाजा नहीं था।
बाहर कुछ हो रहा था। हम बस इंतजार कर सकते थे, और कुछ नहीं। फिर वहाँ

अचानक सन्नाटा छा गया और शांति छा गई। बंदूक की आवाज का कोई आभास नहीं हुआ।
कोई हलचल नहीं। थोड़ी देर रुकने के बाद, मैंने हिम्मत जुटाई।
मैं रेंगते हुए वहाँ पहुँचा।
मैंने खिड़की से बाहर झाँका। वहाँ कोई नहीं था।
वहाँ एक बड़ा, बख्तरबंद वाहन खड़ा था, और उसके बंकर में मुझे एक सैनिक मशीनगन लिए खड़ा दिखाई दिया। जब उसने मुझे देखा, तो वह चिल्लाया, 'अपनी बंदूक नीचे करो।'
'हाथ ऊपर करो और नीचे आओ।' लड़के और मैंने कमरे का दरवाजा खोला। मैं
मैंने लड़के का हाथ पकड़ा और हम दौड़कर बाहर निकल गए। गलियारे में कई दफ्तर के लोग थे।
वे अपनी मेजों के नीचे छिपे हुए थे। जब उन्होंने हमें देखा तो वे भी रेंगने लगे।
हम सब बाहर निकले और लकड़ी की सीढ़ियों से नीचे उतरने लगे।
मैंने हकीम को देखा।
जावेद (मेरा थिएटर सहकर्मी) सीढ़ियों के नीचे दुबका हुआ था। वह इतना दुबका हुआ था।
वह इस बात से बहुत घबराया हुआ था कि उसे चलने के लिए सहारे की ज़रूरत पड़ रही थी। जब हम सब बाहर आए तो
इमारत पार करके आंगन से बाहर निकलते ही मैंने पीछे मुड़कर देखा। मेरी धड़कन लगभग रुक गई।
मैंने उस कमरे के फर्श से काला धुआँ निकलते देखा जहाँ लड़का था। और मैं लेटा हुआ था। जब लड़के ने धुएँ को देखा तो उसने कहा, 'एस' हम दोनों जिंदा जल जाते।
बाहर का नजारा पूरी तरह से अफरा-तफरी का था। ऑफिस के ज्यादातर लोग

वे समूहों में आपस में बातें कर रहे थे, कुछ गुस्से में चिल्ला रहे थे और कुछ
दूसरों को शांत रहने के लिए कहते हुए। भीड़ में से कोई जोर से कह रहा था,
‘Hata massage to diya tha lunch se pahaly nikal [I had told you to
remove

दोपहर के भोजन से पहले।' तब तक पर्यटक स्वागत भवन आग की लपटों में घिर चुका था और
अभी भी भीषण धमाके हो रहे थे। ये धमाके विस्फोटों के कारण हो रहे थे।
कश्मीर में गैस सिलेंडरों का उपयोग एक ऐसे उपकरण के लिए ईंधन के रूप में किया जाता है जो गर्म करता है।
ऊपर की ओर खुलने वाले कमरे। यहाँ के पूरे पर्यटक परिसर में इनमें से बड़ी संख्या में कमरे थे।
उसके दफ्तरों में हीटर लगे थे। और अब वे फट रहे थे, जिससे बड़ी- बड़ी लपटें उठ रही थीं।
ऐतिहासिक इमारत के अन्य हिस्सों में भी आग फैलने लगी थी।
मैं उस इलाके से निकलना चाहता था और मैंने अपने ड्राइवर मजीद से जीप को वहां से हटाने के लिए कहा।
वहां से चले जाओ। लेकिन हैरानी की बात यह थी कि सुरक्षाकर्मियों ने उसे गाड़ी चलाने नहीं दी।
अंततः, जब लोग परिसर से बाहर निकलने लगे
परिसर में, पीले रंग के सलवार-कमीज पहने एक महिला कर्मचारी, जो सांत्वना दे रही थी
भीड़ को 'चिंता मत करो' कहते हुए, वह अचानक गिर पड़ी। उसे एक चोट लगी थी।
जलती हुई इमारतों की दिशा से एक भटकी हुई गोली आई थी।

अफरा-तफरी मच गई और जल्द ही उसे अस्पताल ले जाया गया। अब वहां रहना खतरनाक था।

वे वहीं रुके रहे, क्योंकि सेना के और भी दल आ रहे थे, जिनका नेतृत्व कर रहे थे।

पुलिस महानिदेशक, मकदुमी। हम एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते थे, लेकिन उस समय वह इमारत में गश्त कर रहे थे। हमने बस एक-दूसरे को देखा।

जलते हुए पर्यटक स्वागत भवन से लोग तेजी से बाहर निकले। महानिदेशक का कार्यालय

सलीम बेग में पर्यटन क्षेत्र पहले ही राख में तब्दील हो चुका था। वहां हजारों लोग थे।

तैरती मोमबत्तियाँ, कश्मीर पर बनी मणि कौल की फिल्म की डिजिटल प्रतियाँ

मेरी आंखें और कई अन्य लेख जिनका उपयोग उद्घाटन के लिए किया जाना था

उस इमारत में बस सेवा के उद्घाटन समारोह में सलीम बेग उपस्थित थे।

वह किसी आधिकारिक बैठक के लिए कहीं गए थे और उनसे संपर्क करना मुश्किल था।

जब मैं जलती हुई इमारत के गेट से निकलकर मुख्य सड़क पर आया,

यह एक अद्भुत नजारा था: दुनिया भर से सैकड़ों टेलीविजन टीमें मौजूद थीं।

वे अपने कैमरों के साथ आए थे और उनके पास लंबी बूम रॉड भी थीं।

रिपोर्टरों ने पर्यटकों की जलती हुई लपटों के बीच अपनी लाइव प्रस्तुतियाँ दीं।

रिसेप्शन सेंटर उनकी पृष्ठभूमि के रूप में था। जैसे ही मैं बाहर आया, मैंने कम से कम देखा

पच्चीस या उससे भी अधिक कैमरे और बूम रॉड मेरी ओर दौड़ रहे थे।
मुझे पता था।

कुछ एंकरों से मेरी व्यक्तिगत रूप से मुलाकात हुई। वे सभी मुझे घेरे हुए थे, ठीक उसी तरह जैसे वे करते हैं।
सार्वजनिक कार्यक्रमों में मौजूद लोगों ने मुझसे सवाल पूछना शुरू कर दिया।
मुझसे एक बाइट लेने के लिए एक-दूसरे को धक्का दे रहे थे। लेकिन उस क्षण, जब आप
आप अभी-अभी मौत के मुंह से बचकर निकले हैं, आप इस समय ऐसी मानसिक स्थिति में नहीं हैं कि...
कोई भी इंटरव्यू दे दो। मैंने बस अपना चेहरा छिपा लिया और उस घेरे से बाहर निकलना चाहता था।
ये टेलीविजन क्रू थे। लेकिन मैं हिल नहीं पा रहा था, और आखिरकार मुझे ऐसा करना पड़ा।
उन पर चिल्लाओ। मैंने कुछ अपशब्दों का भी प्रयोग किया क्योंकि मैं किसी तरह अपनी बात मनवाने की कोशिश कर रहा था।
मैं उनके द्वारा बनाए गए घेरे से बाहर निकल गया। मैंने रेजिडेंसी की ओर चलना शुरू किया।
सड़क। कैमरा क्रू मुझसे निराश और नाराज़ था। अभी भी।
उनमें से कुछ मुझसे बात नहीं करते। उन्हें सिर्फ अपने बाइट्स प्राप्त करने में रुचि थी।
लेकिन मुझे बोलने से पहले कई बातों पर विचार करना पड़ा।
उदाहरण के लिए, मैं घाटी में कई तरह के लोगों के साथ काम करता हूँ—थिएटर से लेकर,
फिल्म, साहित्य आदि। सार्वजनिक मंच बनना न तो उचित होता और न ही सही।
इस घटना के मद्देनजर। यह मेरे काम के लिए प्रतिकूल साबित होता। घाटी। साथ ही, मुझे दिल्ली में अपने परिवार से संपर्क करना था, इससे पहले कि वे वहां पहुंच जाएं।

मुझे लेकर चिंतित तो थी, लेकिन मेरा मोबाइल काम नहीं कर रहा था, मानो वह एक खराब फोन हो।
जब मैं स्टेट एम्पोरियम के लॉन के पास पहुँचा, तो वहाँ भारतीय सेना के जवान मौजूद थे।
मुख्य सड़क पर तैनात सैनिकों ने अपने हथियार ताने हुए थे।
पर्यटक स्वागत केंद्र से बाहर आने वाले लोगों की दिशा।
सेना के ट्रक और बख्तरबंद वाहन जिन पर मशीनगनें लगी हुई थीं।
ऐसा लग रहा था
जैसे सैनिकों ने किसी भी बड़ी आपात स्थिति से निपटने के लिए मोर्चा संभाल लिया हो।
यह दृश्य देखकर मैं घबरा गया। मैंने सोचा कि अगर किसी भी तरफ से कोई गोली हमारी ओर आ गई तो...
हम सब जो सड़क पर चल रहे थे, मुर्गियों की तरह मारे जाएँगे। मैंने रखा
मैंने अपने हाथ हवा में उठाए और अपने साथ चल रहे सभी लोगों से पूछा कि...
उन्होंने भी अपने हाथ ऊपर उठा लिए। हममें से सैकड़ों लोगों ने अपने हाथ हवा में उठा रखे थे।
यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम इस सैन्य टुकड़ी को बिना किसी नुकसान के पार कर लें।
अपने हाथों को ऊपर उठाना हमेशा सुरक्षित होता है ताकि प्रतिद्वंद्वी को पता चल जाए कि आप ऐसा नहीं कर रहे हैं।
यदि आपके पास कोई हथियार है और आपका उन्हें कोई नुकसान पहुंचाने का इरादा नहीं है, तो कृपया हमसे संपर्क करें।
दोनों में से एक।
जब मैं अधोस होटल पहुंचा, तो मेरी मुलाकात एक पत्रकार मित्र शुजात से हुई।

भुखारी। एक-दूसरे का अभिवादन करने के बाद, उसने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ हूँ।
और जब मैंने उसे पूरी कहानी बताई तो उसने बहुत सहानुभूति दिखाई।
और कहा, 'भगवान का शुक्र है कि तुम भाग्यशाली हो।'
लेकिन कुछ साल बाद उसी रेजिडेंसी रोड पर, केवल 500 मीटर की दूरी पर
जिस जगह हम उस दिन बातें कर रहे थे, वहीं शुजात बुखारी पर आतंकवादियों ने हमला कर दिया।
और उसके घर के ठीक बाहर, उसके शरीर में कम से कम साठ गोलियां मारकर उसकी बेरहमी से हत्या कर दी गई।
राइजिंग कश्मीर कार्यालय।
सभी टेलीफोन लाइनें कटी हुई थीं। जब मैं अधूस में दाखिल हुआ तो मुझे आश्चर्य हुआ।
होटल के रिसेप्शन एरिया में, अधिकांश कर्मचारी टेलीविजन से चिपके हुए थे और
मैं विभिन्न समाचार चैनलों पर हमले की खबरें देख रहा था। मैंने पूछा...
रिसेप्शनिस्ट मुझे दिल्ली से कनेक्ट कर दे ताकि मैं अपने किसी प्रियजन को संदेश भेज सकूँ।
परिवार को भरोसा था कि मैं सुरक्षित हूँ। मैं संपर्क नहीं कर पा रहा था। लेकिन हैरानी की बात यह है कि मंज़ूर...
मीर, मेरी स्थानीय थिएटर की सहकर्मी, जो इस पूरी घटना के दौरान मेरे साथ थी,
उसने अपने मोबाइल फोन से मेरे घर का नंबर डायल किया था। सौभाग्य से, नंबर लग गया।
घाटी में मोबाइल फोन का चलन हाल ही में शुरू हुआ था और मैं अंजू से बात कर सकता था।

मैंने उसे बताया कि मैं ठीक हूँ। मैंने उसे आग और अन्य घटनाओं के बारे में कुछ नहीं बताया। अजीब बात है कि मेरा दिल्ली वाला मोबाइल नंबर काम नहीं कर रहा था।
मंज़ूर के स्थानीय मोबाइल नंबर पर कॉल आ रही थी, मुझे शक था कि शायद यह अंतरराज्यीय कॉल हो सकती है।
टेलीफोन सेवाएं ठप हो गई थीं।
इसके बाद मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करूं। मेरे पास कोई जानकारी नहीं थी।
सलीम बेग से संपर्क नहीं हो सका। मैंने अपने बारे में पूछना शुरू किया।
मेरे दोस्त विनोद रैना, जिन्होंने अधूस होटल में चेक-इन किया था, उनसे मेरी बातचीत हुई थी।
इस फिदायीन हमले से ठीक दो घंटे पहले फोन पर उनसे बात हुई थी। उस समय वह लाल चौक के आसपास था, और मैंने उसे इधर-उधर न घूमने की सलाह दी थी।
वह जगह खतरनाक थी। और अब, जब मैंने उसे उसके कमरे में पाया,
वह मुझ पर हंसता रहा। मैंने उससे पूछा, 'तुम्हें क्या हुआ है?' उसने कहा, 'मुझे एक
बाल-बाल बच गए, और यहाँ तुम मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो।’ उसने जवाब दिया, ‘तुम बाल-बाल बचे थे।’
मुझे सावधान रहने और देखने की सलाह देते हुए कि आगे क्या होता है। फिर, कुछ क्षण बाद, वह
उन्होंने कहा, 'मजाक छोड़ो, शुक्र है तुम सुरक्षित हो।' उन्होंने चाय और नाश्ता मंगवाया।
मेरे लिए, क्योंकि मैं दोपहर का भोजन नहीं कर पाया था। चाय का आनंद लेते हुए,
मुझे यह ख्याल आया कि अब मेरे कमरे में जाना मुश्किल होगा।

पर्यटक स्वागत केंद्र में आग लगी हुई थी। सौभाग्य से, इमारत को बचा लिया गया।
मेरा कमरा तो बच गया। लेकिन उस इमारत में प्रवेश करना असंभव था।
क्योंकि मुख्य प्रवेश द्वार में अभी भी आग लगी हुई थी और लकड़ी के बड़े-बड़े लट्ठे जल रहे थे।
जमीन पर गिरते हुए। अब अंधेरा हो रहा था, और कोई निजी व्यक्ति मौजूद नहीं था।
परिवहन के मामले में, शहर में कहीं भी जाना असंभव था। मैंने फैसला किया कि मैं...
विनोद रैना के कमरे में रात भर रुककर देखो कि आगे क्या होता है। अगले दिन के लिए, यदि उद्घाटन बस मुजफ्फरबाद के लिए रवाना होती है।
कुछ समय के लिए, मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे दोस्तों ने मुझे छोड़ दिया हो, जिनके पास मैं यात्रा करके गया था।
श्रीनगर। उनमें से किसी ने भी मुझे फोन नहीं किया था और न ही मेरे बारे में पूछताछ की थी।
रात करीब 8 बजे मुझे अपने मोबाइल पर एक कॉल आया। इस बार मुझे आश्चर्य हुआ।
मेरा फोन चालू हो गया। कॉल सलीम बेग का था, जो मुझसे कुछ पूछ रहा था।
मैं कहाँ हूँ? जब मैंने कहा कि मैं अधोस में हूँ, तो उसने कहा कि वह मुझे भेज देगा।
मुझे शेरी कश्मीर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन केंद्र तक पहुँचाने के लिए परिवहन की व्यवस्था करें।
(SKICC) क्योंकि पूरी टीम वहाँ मौजूद थी। मैंने विनोद से कहा कि मैं जाऊँगा।
कुछ समय बाद वापस आ जाना।
एसकेआईसीसी में, इस आयोजन से जुड़े सभी अधिकारी मौजूद थे।

उनमें से कुछ ने मुझे गले लगाया और मेरे दीर्घायु होने की प्रार्थना की। मैंने उन्हें अपना पूरा दिल दे दिया।
आग के बारे में पूरी जानकारी। मैंने सलीम बेग से कहा कि अगले सभी लेख
दिन भर के उत्सव आग की चपेट में आ गए थे। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि उनके कार्यालय का कमरा हमले के मुख्य लक्ष्यों में से एक था। एक वरिष्ठ
एक अधिकारी ने आकर खुलासा किया कि कुछ यात्री जो अपेक्षित थे अब लोग बस से मुजफ्फरबाद जाने से इतना डरते थे कि वे यात्रा करने से भी डरते थे।
मैंने हल्के लहजे में कहा, 'नहीं, उन्हें जाना ही होगा, उनके लिए तो मैं लगभग अपना सब कुछ खो बैठा था।'
और अब ये लोग कह रहे हैं कि वे नहीं जाएंगे। उन पर पिस्तौल तान दो।
मंदिर और आप देखेंगे कि वे चले जाएंगे।'
इस वरिष्ठ अधिकारी ने अपने सभी सहयोगियों को कमरों में जाने का निर्देश दिया।
यात्रियों से बातचीत करें और उन्हें इस महत्वपूर्ण यात्रा के लिए राजी करें।
किसी ने सूचना दी कि एक यात्री उकसा रहा था।
अन्य यात्रियों को यात्रा न करने के लिए कहा गया। वरिष्ठ नौकरशाह सलीम बेग
और मैं उन कुछ कमरों में गया जहाँ यात्री ठहरे हुए थे।
वे राज्य के पुंछ और राजौरी जिलों के गरीब, साधारण लोग थे।
और वे सचमुच डरे हुए थे और अपने परिवारों को लेकर चिंतित थे।
उन्हें इस वरिष्ठ नौकरशाह के मोबाइल पर अपने परिवार के सदस्यों से बात करने के लिए मजबूर किया गया।

उन्हें फोन करके समझाएं कि उनके साथ कुछ नहीं होने वाला है और नहीं
चिंता की बात है। जब हम अभी भी उनके कमरे में ही थे, तभी हमें कुछ ज़ोरदार बहसें सुनाई दीं।
कॉरिडोर में कुछ चल रहा था। हम सब बाहर भागे और देखा कि वहाँ मौजूद अधिकारियों में से एक...
पर्यटन निगम का सामना एक स्थानीय कश्मीरी यात्री से हुआ, जो भी वह निगम का कर्मचारी था। वही था जिसने चुपचाप यह काम किया था। जिससे अन्य यात्रियों को मुज़फ़्फ़राबाद की अपनी यात्रा बीच में ही छोड़ने के लिए उकसाया गया।
अगले दिन जब संबंधित अधिकारी ने उससे पूछताछ की, तो उसने पहले तो इनकार कर दिया।
सब कुछ ठीक था, लेकिन तभी इन यात्रियों की सेवा कर रहे एक भारवाहक ने
जब उनसे यात्रियों के साथ हुई उनकी बातचीत के बारे में पूछा गया, तो वे जवाब नहीं दे सके।
अपना बचाव करना। वह पूरी तरह से बेनकाब हो गया था। इस व्यक्ति को यह पता नहीं था कि
उनकी सेवा करने वाले देहवाहक मूलतः पुलिस खुफिया विभाग के लोग थे।
वह भेष बदलकर उनकी सुरक्षा का जिम्मा संभाल रहा था। उसे तुरंत अपना सामान पैक करने और घर वापस जाने के लिए कहा गया। अधिकारी ने उसे चेतावनी भी दी, 'हम देखेंगे।'
इसका मतलब है कि आपको ब्लैकलिस्ट कर दिया गया है, और आप इस बस में कभी नहीं चढ़ पाएंगे।
अब तक की सबसे बेहतरीन यात्रा।
मैं अचानक जाग गया और धीरे-धीरे सब कुछ समझने लगा।

मुझे उस सुबह भीड़ में से आई वो आवाज याद आ गई जब मैं दौड़ रहा था।
मैंने पर्यटक स्वागत केंद्र पर गोलियों और आग से खुद को बचाया। said, ‘Message diya tha lunch se pehley nikal jana [Message had come to

दोपहर के भोजन से पहले निकल जाओ।’ मैंने दोनों को जोड़ा—यह व्यक्ति जो यहाँ पकड़ा गया था
बस यात्रियों को न जाने के लिए राजी करना और भीड़ में से वह व्यक्ति जो
संदेश का जिक्र किया गया था। ऐसा प्रतीत होता था कि दोनों आपस में जुड़े हुए थे।
कुछ लोगों को शायद बस कार्यक्रम में तोड़फोड़ करने का काम सौंपा गया था।
और वे सभी गुप्तचर थे।
पर्यटकों पर हुए फिदायीन हमले की इस पूरी घटना से पहले भी यही स्थिति थी।
स्वागत केंद्र में, बस के यात्रियों की मेजबानी की जा रही थी।
जम्मू और कश्मीर सरकार। उस भयावह घटना से एक दिन पहले।
घटना घटी, यात्रियों ने अधिकारियों से उन्हें पेशकश करने की अनुमति देने का अनुरोध किया था।
मुख्य सड़क पर स्थित मस्जिद में उनकी शुक्रवार की नमाज़, जो कि ठीक बाहर है।
पर्यटक स्वागत केंद्र। पुलिस ने उन्हें अनुमति देने से इनकार कर दिया था। उनमें से एक
पुलिसकर्मियों ने कहा था, 'मैं अल्लाह की तमाम गालियाँ स्वीकार करूँगा क्योंकि मैंने इसकी अनुमति नहीं दी।'
आपको अंदाजा भी नहीं है; ये बदमाश कुछ गड़बड़ करने के लिए घात लगाए बैठे हैं।

कुछ प्रचार हासिल करो। तुम मुझे कोस सकते हो, लेकिन मैं उन्हें बाहर जाने की अनुमति नहीं दूंगा।
पर्यटक स्वागत केंद्र में शुक्रवार की नमाज के लिए।
और एक दिन के भीतर ही फिदायीन हमला हो गया, जिससे कमी आई।
पर्यटक स्वागत केंद्र राख में तब्दील हो गया। यह इमारत खूबसूरत सामग्री से बनी थी।
अखरोट की लकड़ी के पैनल। इसमें लकड़ी की खातंबंद छतें थीं जिन पर बहुत ही सुंदर भित्ति चित्र बने हुए थे।
इसे गुलाम रसूल संतोष (एक प्रख्यात भारतीय चित्रकार) ने बनाया था। यह सचमुच अद्भुत था।
एक ऐतिहासिक इमारत।
मैं उस रात सिर्फ एक बार अधोस होटल में रुका था। जब मैं उठा, विनोद रैना ने मुझसे पूछा कि क्या मैं बस फंक्शन में जाऊँगा।
मैंने जवाब दिया, 'हाँ, मैं जाऊँगा।'
मुझे नहीं पता, मैं अपने कपड़े नहीं बदल सकती, मेरे पास एंट्री पास भी नहीं है, इसलिए मुझे कुछ पता नहीं है।' हमने चाय पी। मैंने नहाया, वही कपड़े पहने जो मैंने पहने हुए थे।
मैंने रात वहीं बिताई और पर्यटक स्वागत केंद्र के लिए रवाना हो गया, यह देखने के लिए कि क्या मैं
मुझे अपने कमरे में जाकर अच्छे कपड़े बदलने की अनुमति दी जाएगी।
मैं केंद्र के मुख्य द्वार पर खड़ा था; कई अधजली हुई लकड़ियाँ अभी भी खड़ी थीं।
गिर गया। ड्यूटी पर मौजूद अग्निशमन अधिकारियों ने मुझे जाने नहीं दिया।
तो, मैं वहाँ खड़ा सोच रहा था कि यह समारोह कैसे शुरू होगा।
मेरे पास संगीत के सभी संकेत और अन्य निर्देश मौजूद थे। बैंड

जब तक मैं उन्हें इशारा न करूं, वे कुछ भी नहीं बजाएंगे।
मेरे सामने एक सफेद एम्बेसडर कार रुकी और एक पुलिस अधिकारी भी वहीं खड़ा था।
जिनसे मेरी मुलाकात कार्यक्रम के लिए आयोजित सुरक्षा बैठकों के दौरान हुई थी, उन्होंने मुझे पुकारा।
नाम, ‘श्री रैना, मेरे पास आपका प्रवेश कार्ड है।’ मैंने अमर तक पैदल जाने का फैसला किया।
सिंह क्लब के लॉन में सैकड़ों आम जनता के साथ-साथ वे लोग भी मौजूद थे जो वहां मौजूद थे।
इस अवसर के लिए ग्रामीण इलाकों से बसें मंगवाई गईं। लेकिन मैं नहीं जा सका।
मुझे जो प्रवेश कार्ड दिया गया था, उससे मैंने आयोजन स्थल के मुख्य द्वार से प्रवेश किया। मैं आया था।
पैदल चलते हुए, यह मानते हुए कि मेरा कार्ड विशेष श्रेणी के व्यक्तियों के लिए था।
मुझे वीवीआईपी गेट की ओर जाने की अनुमति मिल जानी चाहिए थी। जब मैंने अपना कार्ड दिखाया।
वहाँ मौजूद अधिकारी ने मेरी तरफ देखा तक नहीं, बल्कि मुझे बहुत ही असभ्य तरीके से आदेश दिया।
उस जगह को खाली करने के लिए। मुझे नहीं पता था कि उस कार्ड का क्या किया जाता है जिस पर
वहाँ ‘निकटवर्ती क्षेत्र’ लिखा था, जिसका संभवतः अर्थ था कि मैं वहाँ उपस्थित हो सकता हूँ।
वीवीआईपी ब्लॉक के पास। लेकिन मुझे ऐसी किसी भी चीज़ की अनुमति नहीं थी। मैंने शुरुआत की।
पुराने चर्च के पास निकास मार्ग की ओर वापस चलते हुए। सभी बाड़े वहां गांव के लोग, अधिकारी, सेना अधिकारी और पुलिसकर्मी मौजूद थे।

इन परिसरों में सुरक्षा बहुत कड़ी थी। मैं सड़क पर खड़ा रहा।
मैं किसी ऐसे चेहरे की तलाश में हूँ जो मुझे पहचान ले और मुझे मुख्य मार्ग में ले जाए।
घेरा। वीवीआईपी अभी तक नहीं पहुंचे थे, लेकिन बस तैयार खड़ी थी।
इसमें पहले से ही यात्री बैठे हुए हैं।
मैंने अपने बैंड के लोगों को ढूंढ लिया, जो अपने पहनावे में बहुत स्मार्ट लग रहे थे।
औपचारिक वर्दी। उनके मालिक ने मुझे सड़क पर बाहर खड़े देखा। जब मैंने उसे बताया कि मैं अंदर नहीं जा सकता क्योंकि सुरक्षाकर्मी मेरी बात नहीं मान रहे थे
मेरे एंट्री पास को देखकर, उसने पूछा कि बैंड को मेरे निर्देश कैसे मिलेंगे। मैंने कहा कि मैं सड़क पर ही खड़ा हो सकता हूँ, जहाँ मैं पहले से ही था, बैंड के पास।
दल। बस फर्क इतना था कि हम मोटी धातु की पैनलों से अलग थे।
तार का जाल। अंततः, मैं सड़क पर था, और बैंड तार के जाल के अंदर था।
जब कार्यक्रम शुरू हुआ, तो मैंने अपने निर्देश देना शुरू कर दिया और
बैंड ने कश्मीरी लोक धुनें बजानी शुरू कर दीं। सौभाग्य से, यह व्यवस्था
बस के रवाना होने तक बैंड और मेरे बीच सब कुछ ठीक चल रहा था।
बस के रवाना होते ही बहुत तेज बारिश शुरू हो गई और कुछ ही मिनटों में लोग
वीवीआईपी की तरह ही भाग गए। मैंने सलीम और नईम साहब (सचिव) को देखा।
संस्कृति, जम्मू-कश्मीर सरकार) मेरी ओर दौड़े। उन्होंने मुझे गले लगाया।

कार्यक्रम का प्रबंधन। उन्होंने कहा कि वे मुझे त्रुटिहीन प्रदर्शन करते हुए देख रहे थे।
नौकरी। 'दुर्भाग्यवश, हमें निर्देश दिए गए थे कि हम हिलें-डुलें नहीं या यहाँ तक कि
अपनी सीटों से उठो। हमें सचमुच आप पर दया आ रही थी।
इसी बीच, एक एम्बेसडर कार मेरे बगल में आकर रुकी। कार के अंदर बैठा आदमी
यह वही अधिकारी था जिसने मुझे वीवीआईपी गेट पर अंदर नहीं जाने दिया था। और उसने कहा,
'श्री रैना, मुझे खेद है, मैं माफी मांगता हूं, सुरक्षा अभ्यास में सुबह 4 बजे बदलाव हो गया था।'
कल जो कुछ हुआ, उसे देखते हुए कृपया समझने की कोशिश करें।
हम एसकेआईजीसी के लिए रवाना हुए, जहाँ शाम का कार्यक्रम होना था।
मुज़फ़्फ़राबाद से बस का आगमन हुआ। काफी ठंड और हवा चल रही थी। हम
सभी लोग टेलीविजन देख रहे थे। स्प्लिट स्क्रीन पर दोनों बसें दिखाई गईं।
विपरीत दिशाओं में यात्रा कर रहे हैं। टेलीविजन देखते समय, मुझे केवल एक ही बात समझ में आती है।
जो परोसा जा रहा था वह कश्मीरी कहवा था। एक समय मैंने जोर से पूछा, 'क्या मैं आपको कश्मीरी कहवा दे सकता हूँ?'
क्या यहाँ कोई मुझे कुछ खाने को दे सकता है? मैंने कल रात खाना नहीं खाया है, बिल्कुल नहीं।
सुबह का नाश्ता। आप सब मुझे सिर्फ यही चाय क्यों पिला रहे हैं? एक युवा पर्यटन अधिकारी खड़ा हुआ और बोला, 'सर, मुझे सिर्फ पंद्रह दीजिए।'

कुछ मिनटों में, मैं आपको सबसे बेहतरीन वज़वान परोसूँगा।’ मुझे उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ, लेकिन

कुछ ही मिनटों में वह सभी बेहतरीन और चुनिंदा व्यंजन लेकर वापस आ गया।

वज़वान। मैं खाने पर टूट पड़ा। मुझे बहुत भूख लगी थी। क्योंकि वहाँ बहुत कम खाना था।

अन्य अधिकारियों ने भी काफी भोजन किया। मैंने युवा पर्यटन अधिकारी से पूछा।

उसने इतना सारा स्वादिष्ट खाना कैसे जुटाया, यह सुनकर वह हँसा और बोला,

‘कांग्रेस पार्टी की ओर से।’ गुलाम नबी आजाद इमारत के दूसरी तरफ कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं के लिए दोपहर के भोजन का आयोजन कर रहे थे। हम सब हंस पड़े।

और हमने दावत का आनंद लिया।

टेलीविजन देखते हुए मैंने कहा, 'भगवान का शुक्र है कि आखिरकार यह हो ही गया।'

और इससे अच्छे परिणाम मिलने चाहिए।’ इस पर एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा।

उन्होंने जवाब दिया, 'आज तुम बहुत खुश लग रहे हो।' मैंने उत्तर दिया, 'हां।' उन्होंने पूछा,

मैंने जवाब दिया, ‘आपकी तरफ से वहां कौन है?’ ‘ठीक है, मेरी तरफ से कोई नहीं है।’

सीमा के उस तरफ, लेकिन आपके पास है।’ वह हँसा और बोला, ‘इतने समय तक इंतज़ार करो!’

बस बारामूला पार करती है, जब हमारे सभी यात्री तुसी की आवाज सुनेंगे-

मैंने पूछा, ‘आपका क्या मतलब है, कश्मीरी बोलने वाले कोई नहीं हैं?’ मैंने पूछा, ‘आपका क्या मतलब है, कश्मीरी बोलने वाले कोई नहीं हैं?’

उस तरफ लोग?’ वह मुस्कुराया और बोला, ‘रुको।’
शाम को जब मुजफ्फरबाद से बस पहुंची तो बारिश हो रही थी।
तेज, ठंडी हवाओं के साथ भारी बारिश हो रही थी। यात्रियों को एक वाहन द्वारा ले जाया गया।
जम्मू-कश्मीर सरकार के वरिष्ठ अधिकारी। कई उपहार और स्मृति चिन्ह दिए गए।
यात्रियों को सौंप दिया गया। उन सभी को डल झील के घाटों की ओर ले जाया गया।
झील। वसंत के फूलों से सजी ग्यारह नावें इंतजार कर रही थीं। दुर्भाग्यवश, मौसम बद से बदतर होता चला गया। बारिश और तेज हवाओं ने सब कुछ बिगाड़ दिया।
सभी समारोह। नावें पचास फीट से आगे नहीं बढ़ सकती थीं; मजबूत तेज हवाएं उन पर प्रहार कर रही थीं, जिससे वे आगे नहीं बढ़ पा रहे थे।
इस बात की पूरी संभावना है कि नावें पलट सकती हैं, और यह एक बड़ी आपदा होगी।
त्रासदी। डल झील के कश्मीरी तापमान ने सब कुछ होने नहीं दिया।
सब कुछ सुचारू रूप से हो गया। अंततः, किसी तरह, समारोह की कल्पना की गई थी।
प्रदर्शन किया गया। चूंकि आग में सभी तैरती मोमबत्तियां नष्ट हो गई थीं।
पिछले दिन पर्यटक स्वागत केंद्र में, इस बात का कोई सवाल ही नहीं था कि
झेलम नदी में हजारों मोमबत्तियां बहाई गईं। सारे उपहार भीग गए थे।
अंतिम संगीत कार्यक्रम के लिए अतिथियों को सभागार में ले जाया गया।

मैं चुपचाप विनोद के साथ निकल गया ताकि अपने कमरे से कोई बैग निकालने की कोशिश कर सकूं।

पर्यटक स्वागत केंद्र पर, इसलिए मुझे एक और रात वहाँ नहीं बितानी पड़ी।

विनोद के कमरे में, अधोस होटल में, मैंने भी वही कपड़े पहने हुए थे जो मैंने पहने थे।

पिछले दिन।

18

Final Bhand Experiment

नवंबर 2006 में, इंडिया फाउंडेशन फॉर द आर्ट्स ने मुझे एक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया।

उनकी वार्षिक बोर्ड बैठक, जहाँ वे अपने कुछ अनुदान प्राप्तकर्ताओं को आमंत्रित करते हैं

उन्होंने अपने सहयोगियों के समर्थन से जो काम किया है, उसका प्रस्तुतीकरण करें।

धन। उस समय, मैं एक वृत्तचित्र बना रहा था।

बिहार में साक्षरता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली महिलाएं और

झारखंड। मैं इन अद्भुत ग्रामीण महिलाओं से पहले भी मिल चुका था। उनमें से अधिकतर

वे आर्थिक रूप से गरीब थे लेकिन उनमें फौलादी दृढ़ संकल्प था। साक्षरता आंदोलन के स्वयंसेवक। वे साक्षरता कार्यकर्ता, सड़क कार्यकर्ता और कार्यकर्ता थे।
सबसे पिछड़े वर्गों के रंगमंच कलाकार, कवि, आंदोलनकारी और गृहिणियां
बिहार और झारखंड के क्षेत्रों की कहानी। यह संघर्ष और सफलता की कहानी थी।
उनकी कहानियाँ इस बारे में थीं कि उन्होंने खुद को और अपने परिवारों और उन्होंने किस प्रकार अपने जैसे लोगों को साक्षरता में शामिल होने के लिए संगठित किया, इस बारे में चर्चा की गई है। आंदोलन। इन महिलाओं के लिए, इस तरह के आंदोलन का मतलब था मुक्ति।
श्रमिक माफिया, श्रमिक ठेकेदारों और कोयला माफिया द्वारा शोषण झरिया कोयला क्षेत्र।
मैं अपनी फिल्मिंग टीम के साथ गांव-गांव घूम रहा था, और लगातार काम कर रहा था।
आज। इंडिया फाउंडेशन फॉर द आर्ट्स का यह निमंत्रण लुभावना था। लेकिन इसके लिए मुझे जो दस्तावेज़ तैयार करने थे, उनमें समय की आवश्यकता थी, जो मेरे पास नहीं था।
इस अवधि के दौरान कोई छूट नहीं दी गई। यहाँ कोई फोटोकॉपी की दुकान नहीं थी और न ही कोई
इलाके में फैक्स मशीनें थीं। हम आमतौर पर शूटिंग के लिए सुबह करीब 10 बजे निकलते थे।
सुबह 7 बजे तक आएं और शाम 7 बजे तक लौट आएं।
किसी भी अन्य काम के लिए केवल सुबह के शुरुआती घंटे ही उपलब्ध थे।

सुबह के समय। मैंने सुबह 4 बजे उठना शुरू किया और अपनी प्रस्तुति लिखना शुरू कर दिया।
हाथ से। मैंने लगभग एक सप्ताह तक यही किया। मैं फिर से अपनी लिखावट को ठीक करता।
मैंने कई बार कोशिश की, तब जाकर मेरी प्रस्तुति तैयार हुई।
प्रस्तुति के लिए मुझे धनबाद से कोलकाता तक ट्रेन से यात्रा करनी पड़ी, और फिर वापस।
वहां से चेन्नई के लिए फ्लाइट लें।
जब मैंने बहुत ही शौकिया वीडियो फुटेज के साथ अपनी प्रस्तुति दी और
अकिंगम कार्यशाला की विभिन्न तस्वीरों की मदद से, मैं अपना दर्शकों को उन परिस्थितियों को समझने में मदद मिली जिनके तहत हम काम कर रहे थे।
कश्मीर घाटी और वहां हासिल की गई उपलब्धियां। इस प्रस्तुति के बाद...
भांड समुदाय, उनकी समस्याओं और उनसे जुड़े हर तरह के मुद्दों पर कई सवाल पूछे गए।
कश्मीर की मौजूदा स्थिति कैसी है? वहां काम करना मेरे लिए कितना मुश्किल था?
जब मैंने अपना घर और वहां सब कुछ खो दिया था? तब सवाल उठते हैं सांप्रदायिकता, इत्यादि। मैंने अपनी क्षमता के अनुसार उत्तर दिया। मुझे ऐसा करना ही था।
यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि ऐसा करके मैं किसी भी तरह का हीरो बनने की कोशिश नहीं कर रहा था।
कश्मीर में इस तरह का काम। मुझे इस बात का अंदाजा था कि ऐसा करने में जान गंवाने का खतरा है।
इन कार्यशालाओं में। ऐसा नहीं था कि मुझे उन खतरों से डर नहीं लगता था जो मौजूद थे।

हमारे चारों ओर सब कुछ था, लेकिन मैं इस प्रोजेक्ट को ईमानदारी से आजमाना चाहता था, क्योंकि मैं
पारंपरिक परंपराओं के लुप्त होने को लेकर वास्तव में चिंतित और परेशान।
भारत भर में इस सांस्कृतिक प्रसार को रोकने के लिए कुछ खास प्रयास नहीं किए जा रहे थे।
हमारी विरासत का क्षरण और रंगहीनता। लेकिन मैं इसे बहुत ध्यान से देख रहा था।
तर्कसंगत रूप से, न कि किसी प्रकार की राष्ट्रवादी भावना से प्रेरित होकर।
मीटिंग खत्म हो गई थी और अब खाने का समय हो गया था। मैं जल्दी से कुछ लाने के लिए भागा।
मैंने अपने लिए पानी पिया। मैं बहुत थका हुआ और प्यासा था। मैं चुपचाप एक अलग मेज पर बैठ गया।
मैं अपनी ड्रिंक के साथ था। बाकी सभी मेहमान व्यस्त थे। लगभग दस मिनट बाद, एक
एक बुजुर्ग सज्जन हाथ में पेय पदार्थ लिए मेरी ओर बढ़े।
'श्री रैना, आप तो पागल ही होंगे जो इतनी भयानक जगह पर काम करते हैं।'
'हालात,' उसने मुझसे कहा।
‘लेकिन महोदय, इस तरह का काम किसी न किसी को तो करना ही होगा,’ मैंने अत्यंत विनम्रता से उत्तर दिया।
उन्होंने पूछा, 'अब आप इन लोगों के साथ आगे क्या करेंगे?'
मैं सभी युवाओं के लिए कम से कम एक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करना चाहता हूं।
मैंने कहा, 'दो साल।'
‘इसमें आपका कितना खर्चा आएगा?’ उसने पूछा।

मैंने जवाब दिया, 'मुझे लगता है कि इसकी कीमत अधिकतम 12 लाख रुपये के आसपास होनी चाहिए।'
उन्होंने कहा, 'मैं तुम्हें उतनी रकम दूंगा।'
मुझे उनकी बात पर यकीन नहीं हुआ, लेकिन मैंने विनम्रतापूर्वक उनके प्रस्ताव के लिए धन्यवाद दिया। बाद में,
इंडिया फाउंडेशन फॉर द आर्ट्स के लोग मेरी ओर दौड़े और...
आईएफए के निदेशक अनमोल वेलानी ने कहा, 'एमके, आपको पैसा मिल गया है।'
बधाई हो।’ मैंने कहा, ‘अरे अनमोल, कोई भी ऐसे ही अनुदान नहीं देता।’
अनमोल ने बताया कि वह सज्जन एक प्रमुख दवा उद्योगपति थे।
और उनके ट्रस्ट के अध्यक्ष। साथ ही, जिस संपत्ति में हम ठहरे थे, वह उनकी थी।
घर। फिर फाउंडेशन के एक अन्य अधिकारी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं ऐसा करना चाहूंगा।
उससे सीधे पैसे ले लो। मैंने जवाब दिया, 'बिल्कुल नहीं—तुम मेरे हो'
यहां प्रतिनिधि मौजूद है, और यह मुझे आप लोगों के माध्यम से दिया जाना चाहिए, जैसे कि
पिछला अनुदान।
मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि अब मेरे पास प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए पैसे हैं।
भंड परिवार के लिए। सुबह मुझे झारखंड कोयला क्षेत्रों में वापस जाना पड़ा।
ब्लैक डायमंड वुमन सीरीज की शूटिंग पूरी करने के लिए।
इसी बीच, मैंने अपनी टीम के सदस्यों और उस्तादों को भी सूचित कर दिया।

भंड पथर को इस नए विकास के बारे में जानकारी दें। हम युवा लड़कों को प्रशिक्षित कर सकते हैं।
भांड समुदाय से लंबे समय तक चयन किया जाएगा। जल्द ही, चयन प्रक्रिया शुरू होगी।
प्रशिक्षण के लिए छात्रों का कार्यक्रम हुआ और मैंने उस्तादों को एक डिज़ाइन बनाने के लिए समझाया।
ठोस प्रशिक्षण कार्यक्रम। अब हमारे पास चार छात्र थे जो चाहते थे
स्वर्णई सीखना चाहते थे, चार जो अभिनय और मास्करी सीखना चाहते थे, और चार जो
ढोल और नगाड़ा। कक्षाएं दोपहर में 4 बजे से 7 बजे तक चलेंगी। दोपहर
भंड पथेरों के लिए अकिंगम में प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने की कहानी
यह बहुत कठिन कार्य था। किसी चीज़ की चाह रखना आसान है। लेकिन जब आपको परिणाम देना होता है और यह सुनिश्चित करना होता है कि लक्ष्य प्राप्त हो गया है, तो यह एक अलग बात है।
पूरी कहानी। हमारी कक्षाएं शुरू करने के लिए पहली आवश्यकता यह थी कि...
छात्रों के लिए आवश्यक वाद्य यंत्र जैसे स्वर्णै, ढोल, नगाड़ा आदि प्राप्त करें।
थालेज। हमने सोचा था कि हम ये वाद्य यंत्र पास की दुकान से खरीद लेंगे।
गांवों में। कुछ लोग इन्हें स्मृति चिन्ह के रूप में अपने घरों में रखते हैं।
स्वर्णई वादकों के परिवार उन्हें याद करते हैं। हमारी खोज में कोई सकारात्मक परिणाम नहीं मिला क्योंकि लोग अपनी स्मृति चिन्हों को देना नहीं चाहते थे।

और उनसे जुड़ी यादें। वे बहुत कम कीमत पर नहीं बिकेंगे। भावनात्मक और संवेगात्मक कारणों से। वे लोग जो हमें बेचने के लिए तैयार थे
उन्होंने बहुत अधिक कीमतें मांगीं, जिन्हें चुकाना हमारे बस की बात नहीं थी।
चार स्वर्णई वाद्ययंत्रों को ढूंढना मुश्किल था, अन्य वाद्ययंत्रों के लिए हम जा सकते थे।
संगीत की दुकान पर जाकर खरीदारी करना संभव नहीं था। लेकिन महीनों तक बाजार बंद रहने के कारण ऐसा नहीं हो पाया।
हमें इंतजार करना पड़ा। स्वर्णई एक विशिष्ट कश्मीरी होने के कारण...
इन्हें घाटी के उस्ताद कारीगर से बनवाना पड़ा। तो, अगला कदम। लगभग चालीस किलोमीटर दूर कुलवामा कस्बे जाना था और चार ऑर्डर करने थे।
एक वाद्य यंत्र निर्माता से स्वर्णैसें प्राप्त की गईं। यह निर्माता एक प्रसिद्ध निर्माता था।
वह इस वाद्य यंत्र को बनाने में माहिर थे और उस समय उनकी उम्र लगभग अस्सी वर्ष थी।
समय।
मैं स्वयं दो उस्ताद वादकों, उस्ताद गुलाम रसूल भगत के साथ गया था।
और मोहम्मद अमीन भगत से मिलने के लिए। जब हम उनके घर पहुँचे। कुलवामा में, उसने तुरंत दोनों खिलाड़ियों को पहचान लिया। अब वह
घाटी के इस हिस्से में एकमात्र स्वर्णई बनाने वाला। प्रारंभिक बातचीत के बाद, हमारा
उस्तादों ने उनसे हमारे लिए चार स्वर्णई बनाने को कहा। उन्होंने जवाब दिया कि यह पहले से ही मौजूद है।

उन्होंने ऐसा किए हुए अब कई साल हो गए हैं, और उग्रवाद के आगमन के बाद से उनका
काम ठप हो गया था। अब कोई भी वाद्य यंत्र खरीदने के लिए नहीं पूछ रहा था।
उन्होंने पूछा कि हमें चार की क्या ज़रूरत है। मैंने उन्हें इसका उद्देश्य और कारण समझाया।
सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने की आवश्यकता। उन्होंने इसे समझा और कहा।
उन्हें बनाने में कम से कम तीन महीने लगेंगे। हम इंतजार करने के लिए सहमत हो गए।
उन्हें कुछ अग्रिम राशि दी गई, और पारंपरिक नमकीन चाय परोसे जाने के बाद,
हमने उनसे विदा ली।
इस यात्रा के मात्र दो महीने बाद ही मुझे उनमें से एक का फोन आया।
उस्तादों ने मुझे यह दुखद समाचार दिया कि स्वर्णई बनाने वाले का निधन हो गया है।
यह मेरे लिए एक सदमा और चिंता का कारण भी था। त्रासदी यह थी कि उनकी मृत्यु के साथ ही स्वर्णई बनाने का सारा ज्ञान लुप्त हो गया। दुर्भाग्यवश, उन्होंने ऐसा किया।
उनके पास कोई सहायक नहीं था जिसे वे अपना ज्ञान दे सकें।
मैंने स्वर्णई गुरुओं से कहा कि वे मेरे कश्मीर पहुँचने तक प्रतीक्षा करें, और हम कुछ वैकल्पिक समाधान निकालेंगे। जब मैं अकिंगम लौटा, तो हमने स्थिति का जायजा लिया।
स्थिति का जायजा लिया और कक्षाओं के लिए व्यवस्थाओं पर चर्चा शुरू की।
स्वर्णियों को प्राप्त करने के लिए हम क्या-क्या करेंगे।

हम सभी के लिए अच्छी खबर थी—एक इमारत का निर्माण शुरू होने वाला था।
चौदह हेक्टेयर भूमि पर एक गांव बसाना शुरू हो चुका था और यह तेजी से विकसित हो रहा था।
इस इमारत की कहानी बहुत दिलचस्प है। मेरे ये दोस्त, सलीम
बेग और नईम अख्तर, राज्य में वरिष्ठ नौकरशाह होने के नाते, संस्कृति और पर्यटन के क्षेत्र में काम करने वाले लोग अक्सर असहाय और दोषी महसूस करते थे जब भी वे
मुझे सेब या अखरोट के पेड़ की छाँव में भंडों के साथ काम करते हुए देखा।
पेड़। वे गाँव में मेरी और मेरे काम में मदद करना चाहते थे। ऐसा हुआ।
भारत सरकार ने उस समय सभी राज्य सरकारों से यह पूछा था
ग्राम विरासत पर्यटन केंद्रों की अवधारणा विकसित करने के लिए एक निश्चित समय सीमा निर्धारित करना।
ग्रामीण परिवेश में स्थापित इन केंद्रों में वे सभी तत्व मौजूद होंगे जो...
राज्य की ग्रामीण परंपराओं को विकसित करने के लिए, भारत सरकार ने इन केंद्रों का विकास किया है।
धनराशि उपलब्ध कराने जा रहा था।
सलीम बेग, जम्मू और कश्मीर के पर्यटन महानिदेशक के रूप में, उन्होंने ऐसी योजना की संभावनाओं को देखा और अपनी आधिकारिक क्षमता में इसे स्थापित किया था।
काम शुरू हो गया। उन्होंने चुपचाप अकिंगम में ही एक जमीन का टुकड़ा खरीद लिया।
ग्रामीण विरासत पर्यटन केंद्र। मुझे लगता है कि उन्होंने इस पर आधिकारिक काम शुरू कर दिया था।

बहुत चुपचाप। केंद्र के बारे में कुछ जानने के बाद, मैं अंदर था।
एक दिन सलीम ने अपने कार्यालय में मुझसे कारण बताने को कहा। अकिंगम में इस ग्रामीण विरासत पर्यटन केंद्र की स्थापना के औचित्य।
मैंने हथकड़ी के लिए कई कारण और तर्क गिनाए। उसने तुरंत उन्होंने कहा, 'नहीं, नहीं। ये लो कुछ कागज़, मेरे लिए एक उचित और सही पत्र लिखो।'
मुझे यह रखने के लिए तार्किक और ठोस कारण बताने वाला एक वास्तविक नोट।
अकिंगम स्थित केंद्र। उन्होंने मुझे आधिकारिक योजना की एक प्रति भी सौंपी।
मैंने उनसे पूछा कि भारत सरकार। लेकिन वे यह सब इतनी जल्दी क्यों करवाना चाहते थे?
उन्होंने कहा कि कई स्थानीय राजनेताओं को इस योजना के बारे में पता चल गया था और उन्होंने
अकिंगम में इसके स्थान को लेकर आपत्तियां उठाई गईं, जबकि अन्य गांवों में ऐसा नहीं था। कई राजनेताओं के अपने स्वार्थ थे और वे चाहते थे कि यह उनके अपने क्षेत्र में स्थित हो।
अपने ही निर्वाचन क्षेत्रों में। यह परियोजना अब राजनीतिक रंग ले चुकी थी।
मैंने भारत सरकार की योजना से संबंधित दस्तावेज़ का अध्ययन किया।
मेरी पहली प्रतिक्रिया यही थी कि अकिंघम वास्तव में इसके लिए सबसे अच्छी जगह है।
एक तरह का केंद्र। मैंने कलम उठाई और अपना नोट लिखना शुरू किया जिसमें मैंने निम्नलिखित बातें सूचीबद्ध कीं।
अकिंगम में इसे रखने के औचित्य। इसके चार महत्वपूर्ण कारण थे।

पहला यह था कि अकिंगम और उसके आसपास के सभी गाँव—मुहुरपुर, आरिहम, हेलाद, हैंग्लू, गुंड आदि ऐसे स्थान थे जहाँ की विरासत संरक्षित थी।
कला प्रदर्शन अभी भी जीवित था और उसका अभ्यास किया जा रहा था।
बिद्दर गांव
यह क्षेत्र सदियों से स्वर्णई वादकों के लिए प्रसिद्ध रहा है।
यहाँ कई स्वर्णई वादक थे।
आस-पास के कुछ गांवों में धमाल नृत्य पार्टियां होती हैं। और भांड पथेर,
कश्मीरियों का पारंपरिक रंगमंच अकिंगम में था।
पर्यटन की दृष्टि से दूसरा कारण यह था कि वहाँ
अकिंगम के पास कई विश्व प्रसिद्ध स्थल और स्थान हैं, जो
हर साल हजारों पर्यटक यहाँ आते हैं। इनमें से कुछ अचबल जनजाति के लोग थे।
Mughal Gardens, Kukarnaag, Daksun and Pahalgam.
तीसरा कारण यह था कि अकिंगम जाने वाले पूरे रास्ते में कुछ न कुछ थे।
विश्व प्रसिद्ध पवित्र स्थल, जैसे कि अकिंगम में शिव भगवती मंदिर,
Zan Shah Saheb Dargah, the medieval ziyarat of Ash Mukan, the famous
अमरनाथ गुफा और विश्व प्रसिद्ध मार्तंड मंदिर।
चौथा कारण यह था कि इस क्षेत्र में कुछ सबसे खूबसूरत और
राज्य में अच्छी तरह से संरक्षित वन, और खनिज और हिमनदी धाराएँ हैं। और यह
इसके अलावा, कश्मीर के घरेलू हस्तशिल्प बनाने वाले परिवार भी जगह-जगह फैले हुए थे।

क्षेत्र।
इसलिए अकिंघम एक ऐसा गांव है जो पवित्र, सौंदर्यपूर्ण और पर्यटन स्थलों से घिरा हुआ है।
अनुकूल परिस्थितियों के कारण, यह ग्रामीण विकास के लिए सबसे उपयुक्त स्थान था।
विरासत पर्यटन केंद्र। जब मैंने आखिरकार यह नोट लिखना समाप्त किया, सलीम
मैंने इसे देखा और कहा, 'अब हमें विकास करने से कोई नहीं रोक सकता।'
अकिंगम में केंद्र।
इसलिए, कई वर्षों तक विभिन्न स्थानों पर अपनी कार्यशाला आयोजित करने के बाद,
अब हेरिटेज टूरिस्ट सेंटर हमारे लिए एक निश्चित कार्यस्थल बनने वाला था।
डिजाइन और वास्तुकला का काम INTACH कश्मीर शाखा द्वारा किया जाना था।
इस इमारत में एक बड़ा केंद्रीय हॉल होगा, और इसके साथ दो कमरे जुड़े होंगे।
शौचालय और प्रदर्शनों के लिए एक खुला रंगमंच। पूर्वाभ्यास स्थल
यह किसी भी तरह के प्रदर्शन के लिए काफी बड़ा था। यह होने ही वाला था।
हमारे प्रशिक्षण सत्र शुरू होने से पहले। यह हमारा पहला घर होगा।
घाटी में भांड।
लेकिन वास्तविक कक्षाएं शुरू होने से पहले हमें इस समस्या का समाधान करना था:
स्वर्णई। हम कुलवामा में स्वर्णई बनाने वाले के घर वापस गए।

हम तीनों उनसे पहली बार मिले थे। रिवाज के अनुसार, हमने उन्हें अपना भेंट चढ़ाया।
पुराने स्वर्णई बनाने वाले की पत्नी को मेरी संवेदनाएँ। हम तीनों उनकी पत्नी से मिले थे।
मेरे बेटे कस्बे में फर्नीचर का व्यवसाय चलाते थे। मैंने उनसे पूछा कि क्या वे ऐसा कर सकते हैं।
बेटों; क्या उन्होंने कभी अपने पिता को यह वाद्य यंत्र बनाते देखा था? उन्होंने कहा
हाँ। फिर मैंने उन्हें उनके पिता के बारे में थोड़ा सा व्याख्यान दिया—कि कैसे उन्होंने सब कुछ संभाल कर रखा था।
इस वाद्य यंत्र के निर्माण मात्र से ही कश्मीर की विरासत जीवित है। क्या ऐसा होगा?
दोनों भाइयों के लिए यह संभव हो सकता है कि वे बनाने की चुनौती को स्वीकार करने का प्रयास करें।
क्या? इस तरह वे अपने पिता की विरासत को एक शानदार श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।
उन्होंने कोशिश करने पर सहमति जताई, लेकिन उन्होंने कहा कि इसमें समय लगेगा, क्योंकि
कश्मीर में तहल कहे जाने वाले स्वर्णई के लिए इस्तेमाल की जाने वाली लकड़ी जम्मू से आती थी।
अंततः, वे वाद्य यंत्र बनाने के लिए सहमत हो गए। इस बिंदु पर हमारे स्वर्णई उस्तादों ने
उन्हें बताया गया कि जब वे उपकरण में छेद कर दें तो उन्हें सूचित करें।
वे कहलाना चाहते थे। वे मिलकर छेद बनाते थे। तो, नया
स्वर्णई की रचना करने वाले और वादक दोनों ने मिलकर काम किया। जब हमने अपना प्रशिक्षण शुरू किया तब अकिंगम स्थित इमारत तैयार थी।

कार्यक्रम। हमारे पास बारह छात्र थे, और हमें जल्द ही अतिरिक्त छात्र मिल गए।

आईएनटीएसी कश्मीर का समर्थन प्राप्त हुआ, जिसने कई उपकरण दान किए।

लोक संगीत सीखने का अवसर मिला और साथ ही कुछ छात्रवृत्तियां भी प्राप्त हुईं।

हमारे पास भांड पाथेर के लिए नए स्वर्णई, ढोल और अन्य वाद्य यंत्र थे।

प्रशिक्षण के लिए, और लोक संगीत सीखने के लिए हमारे पास रबाबा, सारंगी और हारमोनियम थे। हमने भांड अभिनय का प्रशिक्षण देना शुरू किया, जैसे कि मस्करी।

धमाल नृत्य और विभिन्न शैलियों में दृश्य प्रस्तुति। स्वर्णई एक

यह एक बहुत ही जटिल वाद्य यंत्र है, शुरुआत में छात्रों के लिए इसे बजाना मुश्किल था।

उन्हें चक्रीय पैटर्न में सांस लेना सीखना पड़ा। इसमें उन्हें काफी समय लगा। एक बार जब वे

बुनियादी सुर बजाना सीखने के बाद, उन्होंने सरल लोक संगीत बजाना शुरू कर दिया।

बाद में इनमें विभिन्न मुखमों को शामिल किया जाएगा।

शिक्षकों को स्वयं पढ़ाना सीखना पड़ा। क्योंकि उन्होंने कभी पढ़ाया ही नहीं था।

शिक्षक होने के नाते, उनके लिए यह कठिन था। इन उस्तादों या शिक्षकों को...

शिक्षण की एक ऐसी शिक्षण पद्धति विकसित करना, जो उन्होंने पहले कभी नहीं की थी।

शुरू में वे अधीर होते थे और बहुत जल्दी अपना आपा खो देते थे।

वे प्रशिक्षण के लिए हिंसक तरीकों का भी इस्तेमाल करते थे।
मुझे कई बार हस्तक्षेप करना पड़ा।

उस्तादों को अध्यापन कला सिखाने का समय आ गया है। इसके लिए मुझे संक्षिप्त प्रशिक्षण देना होगा।
मैंने स्वयं उस्तादों के लिए कार्यशालाएँ आयोजित कीं। मुझे उन्हें समझाना पड़ा और इस बात पर बहुत ज़ोर देना पड़ा।
प्यार और देखभाल के साथ पढ़ाने का तरीका। मुझे उन्हें सिखाना था कि कैसे बनाया जाए।
अपने प्रशिक्षुओं के बीच भांड पथेर सीखने के प्रति प्रेम की भावना।
उस्तादों को अपनी रचनाएँ सुनाना सिखाने के लिए एक अलग सत्र विकसित किया गया।
रंगमंच की कला सीखने की उनकी अपनी-अपनी कहानियाँ थीं। मुझे उन्हें बताना पड़ा कि यह क्या था।
इसका मतलब होगा कि वे एक कलाकार के रूप में अपनी यात्राओं के बारे में बात करें, और
उनके संघर्ष और दुख। उस्तादों के साथ ये सत्र कारगर रहे, और जल्द ही मैंने छात्रों और उनके उस्तादों के बीच एक अच्छा संबंध देखा। अब
कम से कम उस्ताद छात्रों के प्रति अधीर और दुर्व्यवहारपूर्ण नहीं थे।
शिक्षक भी अपना ज्ञान बांटते हुए सीख रहे थे।
ये कक्षाएं एक पुराने पत्थर की तैयारी के चरण तक पहुंचीं, जिसमें शामिल थे
नए छात्र और वरिष्ठ छात्र। अब यह एक सहयोगात्मक परियोजना थी जहाँ
अनुभवी दिग्गज और युवा मिलकर काम करेंगे। हमने यह निर्णय लिया। भांडों के नाट्य संग्रह से एक पुराने नाटक, गोसाईं पाथेर पर आधारित यह नाटक,

प्रदर्शन की भारी मांगों के अलावा, इसमें बहुत अधिक कौशल की भी आवश्यकता होती थी, जैसे कि
मास्क, हेड गियर और बड़ी संख्या में अन्य सामान बनाने का काम। गोसाईं पत्थर की कहानी कुछ साधुओं के इर्द-गिर्द घूमती है जो एक अलग ही माहौल में रहते हैं।
अमरनाथ गुफा की तीर्थयात्रा के लिए वे भारत के विभिन्न हिस्सों से आते हैं। वहाँ उनकी मुलाकात एक लालची कश्मीरी ब्राह्मण पंडित परिवार से होती है, जो उनकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल करते हैं।
पहाड़ों की कठिन यात्रा के बाद साधुओं को यह ब्राह्मण मिला। इसके बदले में, इस ब्राह्मण ने उन्हें यह दिया।
परिवार को कुछ भौतिक लाभों की उम्मीद है। नाटक में नाटकीय मोड़ तब आता है जब
आशिक गोसाईं का किरदार सामने आता है और वह कुछ पाना चाहता है। एक रहस्यमयी स्त्री, गोपाली के दर्शन। बातचीत के दौरान
आशिक गोसाईं और एक लालची परिवार का ब्राह्मण, बाद वाला उनका मजाक उड़ाता है।
ब्राह्मण आशिक का मज़ाक उड़ाते हैं। लेकिन आशिक, ब्राह्मणों के जवाब में, सच्चाई उजागर कर देता है।
विश्व में मानव अस्तित्व की वास्तविकता और उद्देश्य। यह इसके विपरीत है।
तीर्थयात्रा से लौटे साधुओं की मान्यताएँ। लालची
ब्राह्मणों का परिवार भी इन सब बातों की गहराई को नहीं समझ पाता।
अंत तक विरोधाभासी बयान देते रहे। वे पहचान भी नहीं पा रहे हैं। कठिन और कठोर साधना करने में विश्वास रखने वाले साधुओं के बीच अंतर

योग, और अशोक गोसाईं, जो इससे परे व्यापक दुनिया की बात करते हैं।
भौतिक लोभ, जाति और धर्म की संकीर्ण सीमाओं में रची गई यह कृति सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक है।
भंडों के पथ, कश्मीर शैववाद के त्रिका दर्शन को प्रतिबिंबित करते हैं।
चौदहवीं शताब्दी की कवयित्री लाल डेड की कविताओं के माध्यम से, महान विद्रोही
कश्मीर की रहस्यवादी कवयित्री। यह दर्शन वेदांतिक दर्शन के काफी करीब है।
निराकार ऊर्जा का दर्शन। स्वयं को प्रकट करने के बाद, आशिक गोसाईं
चमत्कारिक रूप से गायब हो जाता है।
यह दुर्भाग्यपूर्ण था कि आंदोलन शुरू हुआ और काफी देर तक जारी रहा।
कुछ समय के लिए। नाटक के मंचन के लिए हम अपने कर्मचारियों को नहीं जुटा पाए।
वे फंस गए थे और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि आगे कैसे बढ़ें।
हमेशा की तरह कुछ दिक्कतें थीं।
कई हफ्तों तक लॉकडाउन चलता रहा। खबरें हम तक छनकर पहुंचीं।
लोगों के बीच नियमित रूप से झड़पें होती रहती थीं। लोगों और पुलिस के बीच टकराव होते रहते थे।
सुरक्षा बलों। जितनी भी अफवाहें मिलीं, वे सभी परेशान करने वाली थीं, और सबसे बुरी बात यह थी कि
हमारे कमरे में बिजली नहीं थी। दफ्तरों में कोई भी मौजूद नहीं था।
हमें बिजली विभाग के उन लोगों से मिलना था जो हमारी मदद कर सकते थे। हमें तीन महीने बिताने पड़े।

सूर्यास्त के बाद हफ्तों तक अंधेरे में, कुछ मोमबत्तियों की मदद से। ऐसा हुआ करता था
बहुत निराशाजनक। चूंकि कस्बों में दैनिक उपयोग की वस्तुओं की आपूर्ति नहीं हो रही थी, इसलिए और भी समस्याएं उत्पन्न हो गईं, जैसे कि बाजार में सब्जियों की कमी।
हमें हफ्तों तक सिर्फ चना दाल और चावल ही मिल पाते थे।
एक दिन मेरी छात्रों के साथ बैठक हुई और मैंने उन्हें समझाया कि
स्थानीय स्तर पर चीजें प्राप्त करने में कठिनाइयाँ आ रही थीं।
इस संबंध में एक योजना बनाई गई।
आवश्यक सामग्री प्राप्त करने के लिए इसमें शामिल सभी लोगों का सहयोग आवश्यक था।
साधुओं के सिर पर पहनने वाले वस्त्रों से लेकर उनके भिक्षापात्र (कपाट) की मालाओं तक, सब कुछ अलग-अलग होता है। trishuls.
गुलाम मोहम्मद के नेतृत्व में पहला कदम उठाया गया था।
भगत (मोहम्मद) एक बहुमुखी अभिनेता, एक प्रतिभाशाली शिल्पकार, एक बुनकर और एक
एक बेहतरीन गायिका। अंततः यह निर्णय लिया गया कि सब कुछ स्थानीय स्तर पर ही निर्मित किया जाएगा।
उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करके और स्थानीय साधनों का प्रयोग करके। यह एक प्रयोग भी था।
आवश्यक लेखों के उत्पादन के लिए स्वदेशी पद्धतियों का उपयोग करना।
हमने इसे ‘प्रकृति की ओर वापसी’ नाम दिया।
बहुत सारी संपत्तियां और आभूषण बनाने थे।
गोपाली के किरदार के लिए विस्तृत आभूषण आवश्यक थे। यह एक

एक रहस्यमयी महिला पात्र, जिसके दर्शन अशोक गोसाईं के लिए सर्वोपरि थे।
रात में मोमबत्ती की रोशनी में, मैंने पारंपरिक वस्तुओं को डिजाइन किया।
किरदार के गहने, जैसे हार, चोकर, चूड़ियाँ, बड़े झुमके, नाक की पट्टियाँ आदि।
अंगूठी, आदि। सुबह मैंने ये सभी चित्र गुलाम को दिखाए। मोहम्मद ने एक कुशल शिल्पकार की नज़र से उन्हें गहनता से देखा। और उसने कहा, 'तुम्हें मुझे पाँच या छह छात्र देने होंगे जो मेरे साथ चलेंगे।'
वन।'
जंगल हमारे ठीक सामने था। दोपहर में छह लड़के
कार्यशाला उसके साथ गई और पहाड़ी की खड़ी ढलानों पर चढ़ गई, जल्द ही
जंगल में गायब हो गए। तीन घंटे बाद वे नीचे उतरे और अपने साथ एक सामान लाए।
उनकी पीठ पर बड़ी मात्रा में पतली और नाजुक झाड़ियाँ थीं। यह एक अद्भुत दृश्य था।
देखो ये लड़कों का समूह अपने कंधों पर भारी बोझ ढो रहा है और पहाड़ी से नीचे उतरते हुए। गुलाम मोहम्मद के निर्देशों पर, झाड़ियाँ
उन्हें नरम और नम बनाने के लिए बहते पानी में डाल दिया गया था। सांचे में ढालने का काम शुरू हुआ। फिर टहनियों को छोटे-छोटे गुच्छों में छांटा गया। गुलाम मोहम्मद ने अपने साथ आए लड़कों से पूछा...
वे जंगल में उसके साथ उसके घर गए ताकि वे वहां पूरी रात काम कर सकें।

सुबह तक गहनों का एक बेहतरीन सेट तैयार हो चुका था। मोहम्मद के पास
मैंने अपनी ड्राइंग में सुधार किया था और उन्हें और अधिक सजावटी बनाया था।
सजावटी। वह इसे बनाने में इतना मग्न था कि उसने जल्द ही एक और बना लिया।
गहनों का एक सेट, जो और भी सुंदर, हल्का और अधिक था।
बाजार से मिलने वाली चीजों की तुलना में अधिक टिकाऊ।
अगला चरण कम से कम पच्चीस लोगों के लिए माला बनाना था।
साधुओं के लिए। मैंने कश्मीरी विलो के पेड़ों की शाखाओं का उपयोग करने के बारे में सोचा, जिसमें
नरम लकड़ी जिसे हम मोतियों में काटकर माला बना सकते थे। मुझे यह स्वीकार करना होगा।
ग्रामीण प्रतिभाओं की प्रतिभा अद्भुत थी। मेरे अभिनेताओं में से एक, सज्जाद,
जो अंशकालिक बढ़ई था, उसने यह काम अपने हाथ में लिया और सभी लड़कों को काम पर लगा दिया।
विलो के पेड़ों से शाखाएँ इकट्ठा करें और उन्हें पानी में डालकर सुखा लें।
नरम, लचीला और आसानी से काटने और आकार देने योग्य। वह लड़कों के एक और समूह को लेकर गया।
अपने घर में, उसने एक छोटी इलेक्ट्रिक खराद मशीन का उपयोग करके शाखाओं को काट डाला।
तरह-तरह के मनके लाए गए, और फिर पूरी रात लड़कों ने उन्हें सही आकार दिया।
सुबह, वे नए बने मोतियों से भरा एक बड़ा थैला लेकर पहुंचे, जिसे अभिनेताओं ने
जो मालाओं में पिरोए गए साधुओं की भूमिका निभा रहे थे।

इस प्रकार स्थानीय कारीगरों ने त्रिशूल और तबार जैसी धातु की वस्तुएँ बनाईं।
(कुल्हाड़ी) और कश्कोल। तीन दिनों के भीतर हमें अपनी अधिकांश आवश्यक वस्तुएँ मिल गईं।
नाटक के लिए तैयार लेख।
इसी तरह वेशभूषा के लिए गांव के दुकानदार ने अपनी दुकान खोली।
रात में उन्होंने हमें कपड़ा दिया, जिसे हमारे गांव के दर्ज़ियों को सिलाई के लिए दे दिया गया।
वेशभूषा से।
इस तरह, गोसाईं पाथेर—एक नए अवतार और एक नई व्याख्या में— कालक्रम और अंतरिक्ष के उपयोग का एक अलग तरीका—को पुनर्जीवित किया गया था
दशकों तक उपेक्षा झेलने के बाद। अंततः जब इसे सबके सामने प्रस्तुत किया गया।
गांव के दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए थे। नाटक व्यंग्य से भरपूर था और
यह मजेदार था, और नाटक की संरचना के भीतर तात्कालिकता का तत्व मौजूद था।
पूरी तरह से प्रदर्शित। मुझे याद है कि शो के बाद मेरी मुलाकात एक सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी से हुई थी। मुझे गले लगाने के बाद उन्होंने कहा, 'मैं इतने सालों में इतना कभी नहीं हंसा।' उग्रवाद। इस नाटक ने मुझे सारा दर्द और पीड़ा भुला दिया और मुझे हँसना।'
एक पुराने नाटक को नया जीवन देना और उसे एक निश्चित ऐतिहासिक संदर्भ में प्रस्तुत करना।
परिप्रेक्ष्य ने इसे वर्तमान समय में प्रासंगिक बना दिया है। मेरा काम

भांड्स और भांड पाथेर सिर्फ पुरानी चीजों को पुनर्जीवित करने का प्रयास नहीं है।
नए परिधानों में प्रदर्शन करना, जैसे पुरानी शराब को नई बोतलों में भरना। हम हैं
भंड पथेर के जल में गहरी डुबकी लगाते हुए। हालाँकि हम एक पुनर्जीवित कर सकते हैं
इस खेल में, हम साहित्य और इतिहास को देखकर अतीत की गहराई में उतर रहे हैं;
समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, संगीत और नृत्य जिनसे इस कला विधा का विकास हुआ है।
और इसने अपना स्वरूप धारण कर लिया। हम भूमि की भौगोलिक स्थिति का भी अध्ययन कर रहे हैं और फिर
इसके और पड़ोसी देशों के बीच अंतर्संबंधों की खोज करना,
फिर उन सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभावों पर और गौर किया गया जो हो सकते थे
भांड पथेर के विकास को समृद्ध और आकार देने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हम इस बात से भलीभांति अवगत हैं। संस्कृति में शुद्धता जैसी कोई चीज नहीं होती। यह बीजों के फैलाव के समान है;
बीज हवा में उड़ते हैं और कई देशों को पार करते हुए अंत में जमीन पर गिरते हैं।
किसी दूर देश में। और यदि वह देश अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करता है तो...
बीज अंकुरित होंगे और समय के साथ-साथ परिवार का हिस्सा बन जाएंगे।
जिस भूमि को अपनाया गया है, उसकी विरासत।
हाल ही में, मैंने ताशकंत तिमुर संग्रहालय में एक तस्वीर देखी थी, जिसमें एक

सूफियाना कलाम गाते संगीतकारों का एक समूह। उनके वाद्य यंत्र थे...
संतूर, साज़े, कश्मीर (आकार में छोटा), सेतार (भारतीय शैली का छोटा संस्करण)
मैंने इसकी एक तस्वीर ली (सितार)।
मैंने कई लोगों के चेहरे देखे, और मुझे एक संगीतकार ऐसा मिला जिसके माथे पर तिलक लगा हुआ था। मैं दंग रह गया।
मैं तस्वीर में दिख रहे इस व्यक्ति के बारे में और अधिक जानना चाहता था।
दुर्भाग्यवश, संग्रहालय में कोई भी मुझे कुछ भी समझा नहीं सका।
उन्होंने यह तस्वीर कश्मीर के सूफियाना संगीतकारों को दिखाई।
पहले तो उन्होंने
उन्हें लगा कि यह किसी प्रसिद्ध कश्मीरी संगीतकार की तस्वीर है।
उन्होंने मुझे एक पुराने संगीतकार का नाम बताया जो अब इस दुनिया में नहीं थे। लेकिन जब मुझे पता चला
वे इस बात का स्पष्टीकरण नहीं दे सके कि तस्वीर ताशकंत संग्रहालय से थी।
तो, भांडों के साथ मेरा काम एक पुरातत्वविद् के काम जैसा है जो...
पुराने पत्थरों में उपलब्ध शिक्षण सामग्री का अध्ययन और खोज करना
प्रशिक्षण मॉड्यूल के भाग के रूप में, क्योंकि इस विषय पर शायद ही कोई विश्वसनीय लिखित सामग्री उपलब्ध है।
भंड पथेर से संबंधित ऐसी सामग्री जो हमारे प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहायक हो सकती है।
जो पैथेर बचे हैं और वर्तमान में प्रदर्शित किए जा रहे हैं, वे वास्तव में मौखिक पैथेर की तरह हैं।

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

प्रदर्शन के दौरान तात्कालिक सुधार करना, साथ ही साथ उपयोग की खोज करना
उसके आसपास के स्थान का।
एक बार मैंने एक भंड अभिनेता को उपलब्ध सारी जगह का उपयोग करते हुए देखा।
गांव में, पेड़ों पर चढ़कर और पेड़ से ही पूरे दृश्य का अभिनय करना।
स्वयं या कभी-कभी गांव के घर की छत पर चढ़कर। इस प्रकार,
पूरा गांव अभिनेताओं के अभिनय के लिए एक दृश्यात्मक पृष्ठभूमि बन जाता है।
उनके हिस्से। अंतरिक्ष को निष्पादित करने का यह तरीका एक बहुत ही शक्तिशाली द्वंद्वात्मकता का निर्माण करता है।
कलाकार और दर्शक के बीच का संबंध।
भांड समुदाय की युवा पीढ़ी के प्रशिक्षण से कुछ सकारात्मक बदलाव आए हैं।
भंड पथेर की वास्तविक स्थिति के बारे में जागरूकता। कई युवाओं ने
हमारे प्रशिक्षण कार्यक्रम में गहरी रुचि दिखाने लगे। हर तीन के बाद
हर महीने प्रत्येक छात्र का मूल्यांकन किया जाता है। इसमें छात्रों के प्रयासों को देखा जा सकता है।
उस्तादों ने तब तालियां बजाईं जब प्रत्येक छात्र ने अपनी व्यक्तिगत प्रस्तुति दी।
उनमें धीरे-धीरे विकसित होती हुई सूक्ष्म व्यक्तिगत रचनात्मकता को देखा जा सकता था।
जल्द ही हमारे साथ अभिनय का प्रशिक्षण प्राप्त लगभग बीस छात्र हो गए, जो कि

अब भांड पथेर के मुख्य उस्तादों के साथ प्रस्तुति देने के लिए तैयार।
अगले वर्ष, शिल्प प्रशिक्षण के साथ सत्र शुरू हुए, और इसके लिए एक बुजुर्ग व्यक्ति को नियुक्त किया गया।
पाथर, शिकार घा, को एक मॉड्यूल के रूप में लिया गया था। इस पाथर में यह है:
शिल्प से संबंधित पात्रों की अधिकतम संख्या।
इस नाटक के अंतिम पूर्वाभ्यास समाप्त होने के बाद यह निर्णय लिया गया कि
इसे किसी ऐसे जंगल के पास करें जहाँ बहुत सारे चीड़ के पेड़ और झाड़ियाँ हों।
ताकि दर्शकों को रंगमंच का वास्तविक अनुभव मिल सके।
इस बार भी गांव के बहुत सारे दर्शक मौजूद थे और आसपास के इलाकों से भी बहुत सारे बच्चे आए थे।
स्कूलों में कार्यक्रम आयोजित किया गया था। दर्शकों की प्रतिक्रिया बहुत अच्छी रही और प्रदर्शन के बाद बच्चों ने भी इसमें भाग लिया।
मुखौटों और वेशभूषा को करीब से देखने के लिए कुछ बच्चे आए।
वे उन मास्क को पहनना चाहते थे, जो हमारे युवा अभिनेताओं ने उन्हें दिए थे, और
जल्द ही कई बच्चे इन मुखौटों और वेशभूषा को पहने हुए दिखाई देने लगे और
दूसरे बच्चों के सामने जानवरों की हरकतें करने की कोशिश कर रहा है। गुलाम
मोहम्मद भगत, हर कल्पनाशील भंड अभिनेता, जल्द ही इसमें शामिल हो गए।
बच्चों के साथ मिलकर मैंने उनके साथ तात्कालिक नाटक शुरू कर दिया। कुछ ही मिनटों में एक नया तात्कालिक नाटक तैयार हो गया।

इसका निर्माण और प्रदर्शन किया गया। हमारे लड़कों ने, कुछ वरिष्ठ भांडों के साथ, भी भाग लिया।
वे सब शामिल हो गए और खूब मज़ा आ रहा था। वह भांड पथर एक कला थी।
यहां आम लोगों को पूरी तरह से प्रदर्शित होते देखा जा सकता था।
जबकि प्रक्रिया
कहानी को विकसित करने और उसमें सुधार करने का काम चल रहा था, मैं देख रहा था।
हमारे छात्र, जो इस नाटक निर्माण में अग्रणी भूमिका निभा रहे थे और
बिना किसी के हस्तक्षेप के सहजता से तात्कालिक रचना करना। प्रयोग।
भंड के सबसे वरिष्ठ उस्ताद अली मोहम्मद ने टिप्पणी की, 'अब हमारे पास है
यह स्वीकार करना होगा कि हमारे लड़कों ने भंड अभिनय का सार समझ लिया है।'

19

[redacted]

2000 [redacted], [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted]—[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [

कश्मीर घाटी की सांस्कृतिक दुनिया।
सभी प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएं, व्याख्यान और फिल्म समारोह
कश्मीर में या कश्मीर के बारे में मैंने जो भी आयोजन किए हैं, उनके बारे में और अधिक जानकारी के लिए।
डेढ़ दशक से अधिक का समय केवल ठोस समर्थन के साथ ही संभव हो पाया।
बड़ी संख्या में चिंतित व्यक्ति, रचनात्मक लोग, मित्र और मेरे परिवार। इन सभी वर्षों का प्रयास एक नई रचनात्मकता को जन्म देना रहा है।
सांस्कृतिक ऊर्जा जो समकालीन बदलती दुनिया पर केंद्रित होगी, और
इस बदलते संसार में हम अपने अतीत को संजोकर अपना भविष्य कैसे बना सकते हैं?
सांस्कृतिक यात्राएँ। इन समकालीन परिवेश में हम अपनी पहचान कैसे परिभाषित करते हैं?
समय और उसे कैसे संरक्षित किया जाए, साथ ही हमारी स्वदेशी और प्रयोग की बोलचाल की भाषा। जब अंतिम लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना हो।
कलाकारों में लोकतांत्रिक सोच को विकसित करना, एक दृष्टिकोण के रूप में
भविष्य?
2008 की गर्मियों में, भंड के युवाओं के साथ हमारी पिछली कार्यशालाओं में से एक के दौरान,
वहाँ दर्ज़ा पाथर का प्रदर्शन होने वाला था, जो सबसे प्रसिद्ध नाटकों में से एक है।

यह एक संरक्षित और लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय नाटक है, जिसका अक्सर मंचन किया जाता है। इस प्रदर्शन के लिए मैंने अधिकांश वरिष्ठ अभिनेताओं से अनुरोध किया था।
वे अपनी जानी-पहचानी भूमिकाओं को निभाते हैं। भांड समुदाय में यह एक
किसी व्यक्ति के 'लागुन' (उनकी भाषा में 'पहनना') के बारे में बात करना एक आम प्रथा है।
किरदार। कोई भी अभिनेता किसी भी नाटक के किसी भी किरदार को निभा सकता है। यह एक
सभी अभिनेताओं के लिए यह एक स्वीकृत मानदंड है कि वे अधिकांश स्थितियों, संवादों, चालों और
उन किरदारों के गीत जिन्हें वे निभाने वाले हैं। बाकी सब दर्शकों पर छोड़ दिया गया है।
अभिनेताओं की कल्पनाशीलता और हास्य। वह अपनी भूमिका में किस प्रकार निखर कर सामने आएगा और
वह जिस किरदार को निभाने जा रहा है, उसका अन्वेषण करना उसकी प्रतिभा पर निर्भर करेगा और
कल्पना। यह एक तथ्य है कि भांड समुदाय के लोगों की याददाश्त अच्छी होती है और वे कल्पनाशील होते हैं।
जरूरत पड़ने पर किसी भी किरदार को लागुन में ढालें। किसी भी प्रस्तुति के दौरान तात्कालिक अभिनय की कला।
किसी भंड अभिनेता की उत्कृष्टता का आकलन करने का अंतिम मापदंड उसका प्रदर्शन ही होता है।
और उनके कौशल।
जब दर्ज़ा पत्थर का प्रदर्शन शुरू हुआ और राजा दर्ज़ा ने अपना मास्करास के साथ पहली बार देखने पर, मैं इससे बहुत प्रभावित हुआ।
गुलाम मोहम्मद भगत द्वारा राजा दरज़ा का चरित्र चित्रण।

उनकी उपस्थिति, उनकी प्रतिक्रियाएँ, स्थान का उनका उपयोग, उनकी गरिमा और उनकी प्रस्तुति

भाषण (जो मौके पर ही दिया गया था, पूरी तरह से चतुराई से तात्कालिक था) अद्भुत था।

उसे देखते हुए मुझे अचानक एक विचार आया—मैंने मन ही मन कहा, ‘किंग लियर’।

नाटक खत्म होने तक मैं उसे देखता रहा। मुझे उसका अभिनय बहुत पसंद आया।

उत्कृष्ट भांड अभिनेता, उन्हें अभिनय करते देखना बेहद आनंददायक है।

विभिन्न भूमिकाओं को निभाते हुए और प्रत्येक किरदार की व्याख्या करते हुए,

चित्रित करता है।

इस प्रदर्शन के बाद मैंने मोहम्मद से कहा कि वह जल्द ही...

मोहम्मद लियर नामक एक बहुत प्रसिद्ध चरित्र की भूमिका निभा सकते थे।

मैंने जो कहा था उसका कोई मतलब नहीं निकला। उसे खेलने के लिए राजी करने का विचार तब से आया है।

किंग लियर का ख्याल अचानक मेरे दिमाग में आया, मुझे थोड़ा सोचने की जरूरत थी।

इस पर अंतिम निर्णय लेना बाकी था। इसलिए, अगले दिन जब हम मिले, तो मैंने अपनी बात रखी।

शेक्सपियर के किंग लियर को पहले प्रमुख प्रयोग के रूप में अपनाने की इच्छा

भांड पथेर परंपरा को एक चुनौती के रूप में। चूंकि मेरे भांड कलाकार ऐसा नहीं कर सके।

चाहे वे पढ़ना-लिखना जानते हों या नहीं, मैंने उन्हें किंग लियर की कहानी सुनाई, उन्हें पृष्ठभूमि बताई, उन्हें नाटककार शेक्सपियर के बारे में बताया, और अन्य बातें भी बताईं।

मैंने उन्हें विस्तार से समझाया कि यह एक बहुत ही कठिन परियोजना होने वाली है और
हम अभी से तैयारियां शुरू करने जा रहे थे ताकि अगली गर्मियों में हम
लियर के निर्माण के लिए तैयार।
जब मैंने उन्हें किंग लियर की कहानी सुनाई, तो ऐसा लगा जैसे कोई
कोई लोककथा सुनाते हुए। एक राजा था जिसकी तीन बेटियाँ थीं... पूरी कहानी सुनने के बाद, भंड्स की सामान्य टिप्पणी यह थी कि यह अच्छा था, लेकिन उसमें रोमांच कहाँ था? मेरा जवाब उन्हें सीधा- सादा था।
मैंने उन्हें जो सुनाया था, वह नाटक नहीं था। हमें एक नाटक पढ़ना होगा।
नाटक का कश्मीरी अनुवाद। और मैंने बात वहीं खत्म कर दी। अगले दिन मुझे...
दिल्ली जाओ। मैंने गुल मोहम्मद भगत को प्रकाशित सामग्री प्राप्त करने का निर्देश दिया।
श्रीनगर से आई किताब। यह नई दिल्ली से प्रकाशित साहित्य अकादमी की पुस्तक थी।
कुछ दिनों बाद मुझे गुल मोहम्मद भगत का फोन आया।
भंड परिवार के सदस्य नाटक के वाचन सत्रों में उपस्थित थे, लेकिन उनमें से किसी ने भी
मुझे इसमें से कुछ भी समझ नहीं आया। यह किताब मेरे द्वारा पढ़ी गई अन्य किताबों की तुलना में बहुत उलझन भरी थी।
उन्होंने कहा कि उन्होंने ही उन्हें यह कहानी सुनाई थी। मैंने उनसे नाटक को दोबारा पढ़ने के लिए कहा, लेकिन थोड़ा सा। धीरे-धीरे। फिर वह मुझे वापस कॉल कर सकता था। कुछ दिनों बाद मुझे फिर से कॉल आया।

उस समय सभी वरिष्ठ कलाकार दूसरी तरफ थे, सभी एक साथ शिकायत कर रहे थे।
उन्होंने जो पाठ पढ़ा था, उसकी अनुपलब्धता के बारे में उन्होंने मुझसे अनुरोध किया कि मैं
मैंने अपना विचार बदल दिया और इस बात पर जोर दिया कि कोई प्रसिद्ध पारंपरिक
इसमें मौजूद पात्रों, जैसे कि मस्खारा, मागुन आदि को देखकर मुझे हंसी आने लगी और
मैंने उनसे पूछा कि ऐसा क्यों था, वे कौन से देश थे और राजा का विदूषक कौन था, इत्यादि? लेकिन
अली मोहम्मद भगत (सबसे वरिष्ठ भंड और एक अनुभवी अभिनेता) शिकायत करने लगे, 'लेकिन इसमें पैथर कहाँ है? यह हमारे साथ काम नहीं कर सकता।'
दर्शकों के लिए। कोई दूसरी स्क्रिप्ट सोचो।’ मैंने कहा ठीक है और उनसे कहा
कृपया इसे कम से कम एक बार फिर से पढ़ने का प्रयास करें। जब मैं नीचे आया, तो हम कर सकते थे।
इस पर मिलकर फैसला करें।
पटकथा को लेकर उनका विरोध जायज़ था, क्योंकि भंड पाथेर पूरी तरह से
व्यंग्य, हास्य, चुटकुलों और शब्दों के खेल के बारे में, और किंग लियर एक प्रमुख त्रासदी है।
शेक्सपियर की रचनाएँ। भंड परिवार ने इससे पहले कभी कोई त्रासदी नहीं की थी, और मैंने उनकी घबराहट को महसूस किया। इसके अलावा, उन्होंने कभी किसी लिखित पाठ से भी निपटा नहीं था।
वे इस प्रकार के प्रयोग के लिए उपयुक्त नहीं थे, जहाँ एक उन्हें एक लिखित स्क्रिप्ट का पालन करना था। यह मूल सिद्धांतों के बिल्कुल विपरीत था।

पैथर प्रदर्शन।
कुछ महीनों बाद, जब मैं आखिरकार जून महीने में काम पर पहुंचा लियर के किरदार के लिए, हमने अपने लंबे प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से अभिनेताओं को प्रशिक्षित कर लिया था।
दो साल से अधिक समय बीत चुका था। ये युवा वरिष्ठ समूह में शामिल होने के लिए बहुत उत्साहित थे।
हमने पूरी सभा से पहले ही किंग लियर के कश्मीरी अनुवाद को पढ़ना शुरू कर दिया था।
समूह। हर दस या पंद्रह मिनट के बाद वे पढ़ना बंद कर देते थे और नाटक के पाठ का मज़ाक उड़ाना शुरू हो गया। इस तरह, दिन बिना किसी सकारात्मक परिणाम के समाप्त हुआ।
भंड परिवार की ओर से नाटक पर प्रतिक्रियाएँ। उन्होंने व्यावहारिक रूप से इसे अस्वीकार कर दिया था।
लिखी हुई कहानी।
मुझे लगता है कि भंड परिवार ने दो दिनों तक पढ़ने की यातना झेली और
पाठ को दोबारा पढ़ना और उसे समझने की पूरी कोशिश करना। दोपहर को तीसरे दिन, उन्होंने सचमुच हार मान ली और आगे पढ़ना नहीं चाहते थे।
मुझे पता था कि क्या हो रहा है। फिर भी, मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने इसे क्यों रोक दिया था।
पढ़ते-पढ़ते, बशीर भगत अचानक ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे और मुझसे बोले, 'क्योंकि
भगवान के लिए, महोदय, कृपया मुझे बताइए कि इस अनुवाद की तरह कश्मीरी कौन बोलता है?
यह हमारी भाषा नहीं है।' मैंने जवाब दिया कि इसका मतलब यह लिपि है।

यह हमारे लिए काम नहीं करेगा। उन सभी ने एक स्वर में कहा, 'हाँ, यह नहीं चलेगा।' इसलिए
आइए इस अनुवाद को छोड़ दें और हम स्वयं पाठ का अनुवाद करेंगे। मैंने कहा, खेलो। उन्हें मेरी बात पर यकीन नहीं हुआ।
अगले दिन, हमारे वरिष्ठ भंड, राकेश कुमार सिंह, मेरे सहकर्मी, जो
कश्मीर परियोजनाओं के दौरान और साथ ही साथ एक सहयोगी के रूप में मेरे साथ रहे हैं।
कश्मीर के बाहर विभिन्न हिस्सों में मैं जो अन्य परियोजनाएं कर रहा था, उनमें से कुछ ये थीं...
भारत और मैंने अनुवाद का काम शुरू किया। हम सभी ने तीन सप्ताह तक काम किया।
अनुवाद पर—या यों कहें कि पाठ के अनुकूलन पर—सुबह से लेकर शाम। यह अनुवाद टीम एक अनोखा संयोजन थी। दो को छोड़कर।
भंड परिवार कश्मीरी पढ़-लिख सकता था, जबकि अन्य कोई भी पूर्व सैनिक पढ़-लिख नहीं सकता था। इसलिए, योगदान देने के अलावा, वे ही मसौदा तैयार करने वाले थे।
उन्होंने अपनी प्रतिभा का उपयोग अनुकूलन के लिए किया।
एक बार जब हमने सभी अभिनेताओं के साथ ठीक से पठन-पाठन शुरू कर दिया - दोनों
वरिष्ठ और युवा दोनों—यह तथ्य कि अधिकांश वरिष्ठ पढ़ नहीं सकते थे या
लेखन ने कई बाधाएँ उत्पन्न कीं। सभी अभिनेताओं ने स्मृति और तात्कालिक अभिनय का सहारा लिया।
यह उनके पूर्वाभ्यास का मुख्य साधन था, जिसका अर्थ था कि मुझे पारंपरिक नियमों का पालन करना था।
अनुक्रमों की संरचना को समझाने की तकनीकें और फिर अभिनेताओं को

इसी आधार पर आगे बढ़ें। शुरुआत में इसमें काफी समय लगा, लेकिन बाद में गति बढ़ गई।
उन्होंने इसे अपना लिया। इन भंड अभिनेताओं की प्रतिभा उनके माहौल को आत्मसात करने में निहित थी।
नाटक के अंतर्निहित अर्थ और घटनाक्रम को बहुत जल्दी समझ लिया। उसके बाद, किसी को...
धैर्य बनाए रखें और उन्हें विकसित होने और स्क्रिप्ट लिखने के लिए जगह और समय दें।
चरित्र का शरीर। उन्होंने अपनी स्वदेशी प्रतिभा, अपने भांड का इस्तेमाल किया।
पाथर अपने कौशल और अपने अनुभवों का उपयोग करके पूरी तरह से विकसित, त्रि-आयामी रचनाएँ बनाते हैं।
नाटक के त्रिआयामी पात्र।
कुछ समय बाद, निर्देशक के रूप में मैंने अभिनेताओं के लिए भी चाल-चलन तय किए।
नृत्य, कलाबाजी और अन्य तत्वों के लिए उनकी गतिविधियाँ, अभिनेता
उनके प्रदर्शन में और सुधार होना बंद हो गया। यह निराशाजनक था। कई दिनों तक कोई प्रगति नहीं दिखी। जल्द ही मुझे अपनी गलतियों का एहसास हुआ। उनके कार्यों
वे अकड़े हुए और अपंग लग रहे थे, और वे तनावग्रस्त और चिंतित प्रतीत हो रहे थे।
उनके अगले कदम। मुझे सच में मूर्खता महसूस हुई। अनजाने में ही वे ऐसा कर रहे थे।
जैसे किसी जुलूस थिएटर में हो। यह मेरी गलती थी कि मैंने इस ओर ध्यान नहीं दिया।
मैंने उन्हें यह समस्या पहले ही बता दी थी। मैंने रिहर्सल रोक दी और उनसे अभिनय करने को कहा।

जिस तरह से उन्हें सहज महसूस हो। मुझे उन्हें समझाना पड़ा कि हालांकि यह
एक नए नाटक के लिए, मैं चाहता था कि वे उसी तरह तैयारी करें जैसे वे किसी अन्य नाटक के लिए करते हैं।
किसी भी अन्य पथ के प्रदर्शन के मुकाबले। मैंने कई लोगों को तीन तरफ रखा।
सभागार में दर्शकों के रूप में बैठे लोगों से अभिनेताओं को पूर्वाभ्यास करने को कहा गया। अब अभिनेता
इस तथ्य से अवगत होते हुए कि दर्शक उनके प्रदर्शन को देखेंगे तीनों पक्षों के प्रदर्शन को देखते हुए, अगर उन्हें कुछ बदलाव करने की जरूरत महसूस होती है तो वे ऐसा कर सकते हैं।
वे ऐसा करने के लिए स्वतंत्र हैं।
इस बदलाव ने तुरंत ही उनमें एक नई ऊर्जा भर दी।
ऐसा लगता है मानो उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया हो। अब से हम पाथर प्रदर्शन के सभी तत्वों को एकत्रित करना शुरू कर दिया।
उदाहरण के लिए,
किसी मंडप का उद्घाटन पूर्वारंग की तरह ही बहुत विस्तृत और विधिपूर्वक किया जाता है।
कश्मीरी रीति-रिवाजों सहित संस्कृत शास्त्रीय नाटक का सबसे बेहतरीन रूप।
रूप के महत्वपूर्ण गुण बाद में रूपक बन गए, जैसे कि क्रिया में पाथर स्वयं को विकसित और निर्मित करता है। इनमें से एक गुण कोडार था,
लंबी चाबुक, जो शिकारी की आत्मा थी, जिसका उपयोग उत्पीड़न का प्रतीक था।
इस प्रकार, कोदार का उपयोग केवल शासक और सत्ता में बैठे लोगों द्वारा ही किया जाता था।

जैसे शासक के शूरवीरों का दल। इसी प्रकार, अन्य विशिष्ट तत्व भंड पथर शैली को धीरे-धीरे नाटक की संरचना में शामिल किया गया।
हम लगातार एक रिहर्सल से दूसरी रिहर्सल में जाते रहे।
हम एक ऐसी स्थिति में पहुँच गए जहाँ हम फिर से फंस गए और आगे नहीं बढ़ पा रहे थे।
भंड ने मिलकर लीयर की बेटियों के बारे में एक महत्वपूर्ण आपत्ति उठाई।
यह एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक मुद्दा था। उनका तर्क था कि कोई भी बेटी ऐसा व्यवहार नहीं करेगी।
उसके पिता के साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसा लियर की बेटियों ने किया था। उन्होंने कहा कि भले ही एक
बेटी गरीब थी और भीख मांगती थी, वह कभी अपने पिता के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती थी।
उसके खिलाफ अमानवीय तरीके से या यहां तक कि साजिश रचकर भी ऐसा संभव हो सकता था। बेटों के बीच भी ऐसा हो सकता था।
कौन अपने पिता के साथ इस तरह का व्यवहार कर सकता है? ये चर्चाएँ यह मामला काफी गहन हो गया, जिसमें लगभग सभी कलाकार, विशेष रूप से अनुभवी कलाकार शामिल थे।
घंटों की चर्चा, बहस और प्रतिवाद के बाद, हमने निर्णय लिया।
बेटियों के चरित्र को बेटों में बदलने के लिए। इस बड़े बदलाव ने भंड पाथेर की बनावट का अधिक प्रभाव पूरे नाटक पर दिखाई देता है।
यह दिलचस्प है कि भांड परिवार ने अपनी बुद्धि और कश्मीरी संस्कृति का उपयोग किया।
नाटक की व्याख्या के लिए मानवविज्ञान का उपयोग किया जाता है। जैसा कि हम जानते हैं, पैथर परफॉर्मेंस की धड़कनें निम्न से मिलकर बनी होती हैं:
कोदर, मसखरे और स्वर्णाई। भांड मसखरी के तत्व थे

धीरे-धीरे इसे मूर्ख, राजा और उसके दरबारियों के चरित्रों में पिरोया गया।
ऐसा प्रतीत होता था मानो राजा अपने मसखरों से घिरा हुआ हो, जो हमेशा अपने साथ रखते थे।
उनके साथ एक कोडर।
इस बार मैं बादशाह लीयर को एक महान पेशेवर बनाना चाहता था।
बिना किसी समझौते के उत्पादन। अदिति बिस्वास द्वारा विकसित डिज़ाइन।
और सुप्रिया शुक्ला, जिन्हें बजट को ध्यान में रखकर बनाया गया था।
बाधाओं और मौजूदा राजनीतिक स्थिति के बावजूद, वे राजसी लग रहे थे।
स्थानीय गांव के दर्जी, कुम्हार और लोहारों को प्रशिक्षण देकर इनका निर्माण किया गया।
और मोचियों को पता था कि वे कैसे बनाए जाते थे। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए,
हर दिन प्रोडक्शन के दौरान, कुछ अच्छे सीक्वेंस बनते थे, लेकिन एक निरंतर समस्या बनी रहती थी।
रिहर्सल के दौरान हम सभी को चिंता सताती रही। हमें नियमित रूप से खबरें मिलती रहती थीं।
अशांति के कारण। घाटी के लगभग सभी कस्बों में, अधिकांश दिनों में, स्थानीय
आम लोगों और सुरक्षाकर्मियों के बीच भीषण झड़पें हुईं। युवा लड़कों को चोटें आईं।
गोलियों की बौछार हुई और पत्थरबाजी में सुरक्षाकर्मी भी घायल हो गए। एक बार फिर,
अनिश्चितता का माहौल छाया हुआ था। फिर भी, हमने नियमित रूप से काम किया, यहाँ तक कि इसके बावजूद भी।

संदेह की छाया। अंतिम प्रदर्शन को लेकर कोई भी आश्वस्त नहीं था। हम
जब तक हमारे दूरदराज के गांवों पर असर नहीं पड़ता, तब तक हम काम करते रह सकते थे, लेकिन हम
यह निश्चित नहीं था कि स्थानीय ग्रामीण आबादी इस हत्या पर कैसी प्रतिक्रिया देगी।
छोटे लड़कों की। सौ लड़कों की मौत का ख्याल आते ही हम सब कांप गए।
गांव की सभी कपड़े की दुकानों में सारा सामान खत्म हो चुका था, और
हमें और कपड़े की ज़रूरत थी। अच्छे कपड़े का सबसे नज़दीकी बाज़ार कस्बे में था।
अनंतनाग से लगभग बीस किलोमीटर दूर। वहाँ जाना असंभव था।
और हमें कपड़ा और अन्य आवश्यक सामग्री खरीदनी पड़ी क्योंकि अधिकांश दुकानों में ये चीजें उपलब्ध नहीं थीं।
अशांति के दौरान यह बंद रहा। मुझे महिलाओं की चिंता थी।
डिजाइनर अनंतनाग के बाजारों का दौरा कर रहे थे। उन्हें इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि...
कश्मीर घाटी की यह उनकी पहली यात्रा थी, इसलिए यह एक अनोखा अनुभव था।
मुझे यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि इन दोनों डिजाइनरों ने अनंतनाग के दुकानदारों के साथ पहले ही एक समझौता कर लिया गया है।
कपड़े की डिलीवरी। सौभाग्य से, इस बार सेल फोन और मोबाइल सेवा उपलब्ध है।
प्रौद्योगिकी ने उनकी बहुत मदद की। व्यवस्था यह थी कि मालिक दुकानों वाले उन्हें फोन करके बता देते थे कि वे किस समय आ सकते हैं।

सामान उठाओ और चले जाओ।
एक दिन जब वे एक दुकान में कपड़ा देख रहे थे, अचानक ही
बाजार में गोलीबारी हो रही थी। सभी दुकानदारों ने तुरंत अपने दरवाजे गिरा दिए।
उनके शटर। हमारे डिज़ाइनर डरे हुए थे और उन्हें नहीं पता था कि गोलीबारी कब होगी।
इसका अंत हो जाएगा। दुकानदार उनकी चिंता को समझता था, और दुकानदार, जैसे
एक बुजुर्ग चाचा ने उन्हें दुकान के पिछले दरवाजे से अंदर जाने का निर्देश दिया।
वह घर जहाँ उनका पूरा परिवार रहता था। परिवार ने उनका स्वागत किया और उनकी मदद की।
उन्हें चाय और कश्मीरी ब्रेड देकर आराम करने को कहा। वे वहीं ठहर गए।
परिवार के साथ लगभग दो घंटे तक बातचीत करने के बाद, हम धीरे-धीरे पारिवारिक मित्र बन गए।
जैसे-जैसे वे एक-दूसरे को बेहतर जानने लगे। काफी देर हो चुकी थी, और
हम रिहर्सल के लिए उनका इंतजार कर रहे थे, चिंतित होते जा रहे थे। थोड़ी देर बाद मुझे एक कॉल आया।
मैंने उनसे कहा, ‘चिंता मत करो, हम चाचा के घर पर सुरक्षित हैं।’ मैंने उनसे पूछा
कौन से चाचा? उसी समय दुकान मालिक का मोबाइल फोन पर फोन आया और उन्होंने मुझे आश्वस्त किया। ‘वे मेरी बेटियों जैसी हैं, और वे मेरे बच्चों के साथ हैं’
और मेरी पत्नी भी। वे सुरक्षित हैं।' और जब स्थिति शांत हो गई शाम को वे आराम से और अपने साथ अधिकांश कपड़ा लेकर लौटे।

आवश्यक।

आखिरकार, हफ्तों के कठिन पूर्वाभ्यास के बाद, हम अपना प्रदर्शन देने के लिए तैयार थे।

हमने अपने पहले प्रदर्शन उसी पहाड़ी की तलहटी में किए जहाँ हमने अपने पहले प्रदर्शन किए थे।

पहले गांव के दर्शक मौजूद थे। प्रीमियर को लेकर सभी उत्साहित थे। एक दिन

प्रस्तुति से पहले, गुलाम रसूल (जूनियर) ने अपनी चिंता सभी के साथ साझा की।

उन्होंने अगले दिन के प्रदर्शन के बारे में हमसे बात की। उन्होंने अपनी आशंकाओं के बारे में बताया।

उन्हें संदेह था कि प्रदर्शन में कुछ गड़बड़ी हो सकती है। उन्होंने समझाया,

'कल शुक्रवार है, और इस दौरान इतने सारे युवा लड़कों की मौत के साथ

पिछले सप्ताह, हमें लोगों द्वारा गलत समझा जा सकता है, और एक

प्रदर्शन के खिलाफ कुछ प्रतिक्रिया की संभावना थी।' एक लंबा समय था

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा क्योंकि सभी लोग स्थिति पर विचार कर रहे थे। एक वरिष्ठ अभिनेता

उसने उससे पूछा, ‘क्या किसी ने आपसे बात करके हमें यह संदेश दिया है?’

उन्होंने उत्तर दिया, 'नहीं, लेकिन परिस्थितियों को देखते हुए, मुझे लगा कि मुझे अपना अनुभव साझा करना चाहिए।'

मुझे आप सभी की चिंता है। 'भंड परिवार और बाकी टीम के सभी सदस्य मेरी मदद चाहते थे।'

मेरी राय थी, इसलिए मैंने कहा, 'कोई बात नहीं, अगर आप कल प्रदर्शन नहीं करते हैं, तो आप शनिवार को प्रदर्शन कर सकते हैं। मैं शनिवार को जा रहा हूँ, लेकिन आप...'

'[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[' [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, '[[[[[[, [[

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[' [[[[[[[[[[[[[[, '[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[' [[[[[[[[[[[[[[

'[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[' [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[([[[[[[[), [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, '[[[[[[[[[?' [[[[[[[[[[[[[[[, '[[[[[[[[[,' [[[[[[[[[[[[[[[[[[

वह मुस्कुरा रही थी और मुझसे बचने की कोशिश कर रही थी। मैंने उससे यह जानने की जिद की कि आखिर हुआ क्या था।
लेकिन उनका जवाब था, 'यह सही नहीं है। ऐसा नहीं होना चाहिए था।' मैंने पूछा
मैंने उससे फिर पूछा, ‘क्या बात है, गुलाम रसूल? क्या किसी ने कोई संदेश भेजा है?’
धमकी? आप ही बताइए।’ उन्होंने कहा, ‘नहीं, नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है। मुझे शर्म आती है।’
मैं आपको बताता हूँ कि मस्जिद में क्या हुआ था।’ मैंने उससे फिर पूछा कि क्या हुआ था।
ऐसा हुआ, और उसने कहा, 'जब हम नमाज़ के लिए तैयार हो रहे थे, तभी एक
यह अफवाह फैल गई कि नाटक जल्द ही शुरू होने वाला है, और हमारे मौलवी
जो नमाज़ पढ़ा रहा था उसने नमाज़ जल्दी खत्म करने के लिए उसकी गति बढ़ा दी।
संभव है। लेकिन उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। यह ठीक नहीं है। अब देखिए,
सभी मस्जिदों से लोग नाटक देखने आ रहे हैं।' हालांकि वह
वह मुस्कुराया, उसे यह बिल्कुल पसंद नहीं आया कि उसके साथ क्या किया गया था, वह भी एक मौलवी द्वारा।
लगभग दो हजार लोग तीन-चार मस्जिदों से जुलूस निकालते हुए आए। कार्यक्रम स्थल की ओर बढ़ते हुए, जहाँ पहले से ही महिलाएं और बच्चे मौजूद थे। चारों ओर उत्सव का माहौल था। ग्रामीणों
सभी कलाकार शो देखने के लिए उत्साहित और उत्सुक थे। जब हमारे सभी कलाकार तैयार हो गए,
हम सब प्रदर्शन से पहले अपनी दुआ, यानी प्रार्थना के लिए मिले, और फिर वे

वे सभी अभिनय क्षेत्र की ओर बढ़े। वे सभी शाही दिख रहे थे, अपने हाथ में लिए हुए थे।
उन्होंने बड़े गर्व से अपनी वेशभूषा पहनी हुई थी। उन्होंने सुंदर ब्रोकेड पगड़ी पहनी हुई थी, विशेष रूप से
डिजाइन की हुई टोपियाँ, और भी बहुत कुछ। हमारे डिजाइनरों ने इसमें शानदार काम किया है।
गांव के दर्ज़ियों के साथ मिलकर इन जटिल मध्ययुगीन पोशाकों का निर्माण करना।
यह गांव के दर्ज़ियों के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी, उनकी प्रतिभा का स्तर काफी ऊंचा हो गया था।
कई पायदान ऊपर चढ़ गया।
कई वर्षों से, स्थानीय कारीगरों के साथ हमारी क्षमता-निर्माण प्रक्रियाएं जारी हैं।
हमारे प्रशिक्षण कार्यक्रम का हिस्सा बन गया था। अधिकांश क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता
हमारे नाटकों के निर्माण के क्षेत्र धीरे-धीरे साकार हो रहे थे, और
इसके परिणाम बादशाह पत्थर की तैयारियों में देखने को मिले। प्रदर्शन। हमारे गाँव का लोहार, जो आमतौर पर टिन के बक्से बनाता था।
अब हमारा प्रशिक्षित धातु-गुण निर्माता जीविका चला रहा था। इस नाटक के लिए, मेरे पास था
उसे तलवारें बनाने के लिए कहा गया, और उसने चार दिनों के भीतर एक मजबूत तलवार बना ली।
देखने में शानदार धातु की तलवार। जब मैंने उससे पूछा कि उसे यह कहाँ से मिली, तो उसने मुझसे पूछा कि उसे यह कहाँ से मिली।
गांव में मिली धातु की चादरों के स्रोत का खुलासा न करते हुए उन्होंने कहा कि

यह मेरा काम नहीं था। ‘लेकिन क्या आपको यह सैंपल पसंद आया?’ उसने पूछा।
मैंने कहा कि यह वाकई अच्छा था, लेकिन मुझे अभी भी धातु की चादरों के बारे में जानने की उत्सुकता थी।
उसने हंसते हुए कहा, 'यह तलवार तो बेकार पड़ी हुई चीजों से बनी है।'
कोयले के तारकोल के ड्रम, जो आपको सड़कों पर हर जगह दिखाई देते हैं। 'मुझे उस पर विश्वास नहीं हो रहा था।'
क्योंकि उसने इसे बहुत अच्छे से चमकाया था। संक्षेप में, आसपास के ग्रामीण प्रतिभाशाली थे।
और संस्कृति और शिल्प के प्रतिभाशाली पुरुष जो हमारे समर्थन का स्रोत बने।
हमारे अधिकांश उत्पादों के लिए सामग्रियों की सोर्सिंग को लेकर अनगिनत कहानियां हैं।
परियोजनाएँ। हमारे लिए पूरी तरह से आत्मनिर्भर बनना एक निरंतर मिशन रहा है।
नाटक निर्माण के अधिकांश क्षेत्रों में पर्याप्त। अभिनेता और समुदाय
वे परस्पर निर्भरता के इस प्रयास में गहराई से शामिल थे। उन्होंने इसे एक
हमें अपने प्रयासों में सफलता प्राप्त करते देखकर गर्व महसूस हो रहा है।
‘प्रकृति की ओर वापसी’ का प्रयास कारगर साबित हो रहा था। बादशाह पत्थर का अंतिम प्रदर्शन बिना किसी बाधा के संपन्न हुआ।
प्रदर्शन के हर चरण में, और अंत तक, नाटक को एक
जनता से जोरदार प्रतिक्रिया मिली। अंतिम दृश्य में, जब लीयर अपने

मृत पुत्र, महमूद सूफी गीत गाने लगता है। राजा की अंतिम पंक्तियाँ।

कश्मीरियों के संदर्भ में, उनके मरने से पहले की स्थिति भी बहुत ही विडंबनापूर्ण हो गई।

अपने बेटों को खोना। 'तुम उसकी मौत के लिए जिम्मेदार हो, तुमने मेरे बेटे को मार डाला।'

प्रदर्शन के बाद, खुशी और संतुष्टि की भावनाओं के बीच, हमने शुरुआत की

हम अपना सामान पैक कर रहे थे क्योंकि अगले दिन हमें श्रीनगर पहुंचना था।

दारा शिकोह महोत्सव में प्रस्तुति। यह शो शिक्षित लोगों के लिए था।

श्रीनगर शहर के संभ्रांत वर्ग के लोगों के लिए। इसलिए, मुझे और मेरी टीम को अग्रिम रूप से रवाना होना पड़ा।

श्रीनगर के लिए पार्टी। गेस्ट हाउस में हमने अपना सामान पैक किया।

हमें रुकने के बाद जल्दी न निकलने की चेतावनी दी गई थी। अनंतनाग शहर बहुत ही

तनाव गहरा था, और शुक्रवार होने के कारण पत्थरबाजों के बीच बड़ी झड़पें हुई थीं।

पत्थर फेंकने वालों और सुरक्षा बलों के बीच झड़प हुई। नियमित गोलीबारी हुई जिसमें कई लोग घायल हो गए।

कुछ युवक या तो घायल हो गए थे या मारे गए थे। श्रीनगर के लिए रवाना होना अब एक मुश्किल काम था।

यह एक जटिल प्रक्रिया थी। हमने अपनी प्रस्थान तिथि को घंटों तक विलंबित कर दिया। पर्यटक

अनंतनाग के रहने वाले अधिकारी को अब पहुँचने की चिंता अधिक सता रही थी।

वह खुद घर जा रही थी, इसलिए मैंने उसे अपने साथ लिफ्ट देने की पेशकश की क्योंकि हमें शहर पार करना था।
श्रीनगर राजमार्ग की ओर जाने से पहले अनंतनाग से गुजरें। सूर्यास्त के समय, पर्यटन अधिकारी ने अपने पति को फोन किया और उनसे पूछताछ की।
कस्बे की स्थिति के बारे में। उसने उसे बताया कि हालात सामान्य हो गए हैं और
हम सब अपनी यात्रा शुरू कर सकते थे। अपने बैग अपनी सूमो जीप की छत पर रखकर।
हम अनंतनाग होते हुए श्रीनगर के लिए रवाना हुए। वहां छह सप्ताह बिताने के बाद हम सभी थक चुके थे।
बदलाव की उम्मीद थी। हम दिन में पंद्रह घंटे काम करके थक गए थे। दूरस्थ क्षेत्र में अप्रिय घटनाओं का लगातार भय बना रहता है और वास्तव में इसकी आवश्यकता है।
एक विराम। हम सात लोग सूमो में सवार थे, तीन महिलाएं और चार पुरुष। जब हम
अचबल टूरिस्ट होम से निकलते समय, दोपहर का काफी समय हो चुका था और मौसम बहुत सुहावना था।
आसमान गुलाबी-लाल रंग का था और ठंडी हवा हमारे चेहरों से टकरा रही थी जब हमारी सूमो कार चल रही थी।
अनंतनाग कस्बे की दिशा में आगे बढ़े।
लगभग चालीस मिनट बाद, हमने कस्बे में प्रवेश करने के लिए बाईं ओर मुड़ गए।
अनंतनाग। हमें एक संकरी सड़क पार करनी पड़ी, जो मुख्य सड़कों के बीच की संपर्क सड़क थी।
शहर और शहर का उत्तरी भाग जहाँ से हम आ रहे थे। हमने एक
इस संकरी सड़क पर बड़ी संख्या में युवक खड़े हैं, जिससे रास्ता अवरुद्ध हो गया है।

वाहनों की आवाजाही। वे सभी हमें धमकी भरी निगाहों से घूर रहे थे। हमारा ड्राइवर
हमने गति धीमी की और रुक गए। युवकों ने हमें घेर लिया। हम फंस गए थे।
सूमो के अंदर, पत्थरों ने कांच की खिड़कियों और शीशों को तोड़ दिया।
गाड़ी। हम सदमे में थे। हम कांच के टुकड़ों से ढके हुए थे और कुछ हममें से कुछ लोगों को उनके खरोंच लग गए थे। हम सन्नाटे में बैठे रहे। हमारे रकसैक
हमने अपने सिर उनसे ढक रखे थे, इसलिए वे बच गए।
गाड़ी। हमें इससे उबरने में चार-पांच मिनट लग गए होंगे।
झटका लगा। हमारे बेचारे ड्राइवर ने कहा, 'मेरा मालिक मुझसे इन सबका भुगतान करवाएगा।'
नुकसान।’ किसी तरह हम टूटे हुए कांच के टुकड़ों को अपने ऊपर लिए आगे बढ़ गए।
राहत की एकमात्र बात यह थी कि खिड़कियों पर लगी धातु की ग्रिलें रुक गई थीं।
पत्थरों को सीधे हम पर गिरने से रोकना।
पेट्रोल पंप तक पहुंचने तक लगभग तीस मिनट तक किसी ने बात नहीं की।
जहां महिला पर्यटन अधिकारी गाड़ी से उतरकर घर चली गई। हम सब बाहर आ गए।
सुमो ने गाड़ी के अंदरूनी हिस्से को साफ किया और कांच के टुकड़े हटा दिए।
हम अपनी सीटों से उठे और अपनी जैकेटों को झाड़कर उतार फेंके।
हमने अपने कपड़े धोए।
सार्वजनिक नल पर लोगों के चेहरे बिखरे हुए थे। राहगीर हमें उत्सुकता से देख रहे थे। मैंने पेट्रोल के बारे में पूछा।

पंप के प्रभारी से बात करें जहाँ हम वाहन का शीशा बदलवा सकते हैं।

मैंने ड्राइवर को जगह के बारे में बताया। मैंने ड्राइवर को भरोसा दिलाया कि बिल मैं ही चुकाऊंगा।

कांच बदलने के लिए। हमने खुद को चोटों के लिए जांचा। हम सभी को चोट लगी थी।

हमारे हाथों और घुटनों पर छोटे-मोटे कट लगे हैं, लेकिन कोई गंभीर चोट नहीं आई है। यहाँ से, गोले-

हम स्तब्ध रह गए और चुपचाप श्रीनगर की ओर चल पड़े।

आलमंड विला में दारा शिकोह शो

दारा शिकोह सांस्कृतिक महोत्सव जोत्सना सिंह की परिकल्पना का परिणाम था।

डॉ. करण सिंह की पुत्री। उन्होंने कई कार्यशालाओं और व्याख्यानों का आयोजन किया था।

इस महोत्सव में स्थानीय और विदेशी कलाकारों और बुद्धिजीवियों द्वारा प्रस्तुतियाँ दी जाएंगी। इस महोत्सव का उद्देश्य विभिन्न प्रतिभाओं को एक साथ लाना था।

कला की विभिन्न धाराओं को बढ़ावा देना और कार्यशालाओं के माध्यम से स्थानीय प्रतिभाओं को सामने लाना।

परंपराओं से लेकर कला और सौंदर्यशास्त्र की समकालीन अवधारणाओं तक। यह महोत्सव

यह कुछ ही वर्षों तक जारी रहा और फिर चुपचाप गायब हो गया। अधिकांश

उपस्थित लोग कुलीन और धनी वर्गों से आए थे, जिनमें से अधिकांश

श्रीनगर शहर के व्यापारी। राज्य के बाहर से आए कुछ लोग।

जब भी यह त्योहार मनाया जाता है, कश्मीर यात्रा का आनंद लेते हुए, उन्होंने इसमें भाग लिया।
इसका आयोजन किया गया था। कला को बढ़ावा देने का यह एक प्यारा और सरल प्रयास था।
इसका उद्देश्य नेक था। इस महोत्सव का लक्ष्य कुछ लोगों को एक साथ लाना था।
ऐसे प्रतिभाशाली रचनात्मक दिमाग वाले लोग जो स्थानीय प्रतिभागियों के साथ विचारों का आदान-प्रदान करेंगे।
कभी-कभी, यह महोत्सव एक बहुत ही मौलिक सोच वाले व्यक्ति को आमंत्रित करता था। एक बार ऐसा हुआ था कि
महात्मा गांधी के पोते का आगमन हुआ; उन्होंने एक ज्ञानवर्धक भाषण दिया।
दारा शिकोह पर उनका ज्ञानवर्धक व्याख्यान और प्रस्तुति थी। उन्होंने बहुत पहले ही यह बात कही थी।
दारा पर एक नाटक लिखा और उसके कुछ दृश्य पढ़कर सुनाए।
नीता मोहिंद्रा जैसे यादगार संगीत प्रदर्शनों में से एक, प्रख्यात पंजाबी अभिनेत्री जिन्होंने भुहे बरियान में अपना एकल प्रदर्शन किया था
पंजाबी फिल्म, जिसका निर्देशन मैंने किया था। उनकी यह यादगार प्रस्तुति दुनिया भर में मशहूर हो चुकी है।
पिछले बारह वर्षों में दक्षिण एशिया के लिए स्थिति और भी खराब हो गई है।
लगभग तीन सौ लोगों के दर्शक आलमंड के पिछले लॉन में जमा हो गए थे।
जिस शाम हमने अपना नया नाटक 'बादशाह पत्थर' प्रस्तुत किया, उस शाम विला में हम मौजूद थे।
यह शंकरचार्य पहाड़ी की तलहटी में डल झील के सामने स्थित था, शायद यही वह स्थान था जहाँ से इसे स्थापित किया गया था।

श्रीनगर शहर का सबसे खूबसूरत स्थान। हम अपनी तैयारियों में जुटे हुए थे।
शाम के शो के दौरान युवा छात्रों के लिए कार्यशालाएँ आयोजित की गईं।
दिन।
उस शाम के प्रदर्शन से पहले, जब शहर के प्रतिष्ठित लोग इकट्ठा होने लगे...
जब वे पहुंचे, तो मैं उनके बीच सहजता से घुलमिल गया। कई लोगों ने मुझसे इसके बारे में पूछा।
प्रदर्शन। जब उन्हें पता चला कि हमारा इरादा एक कश्मीरी प्रस्तुति देने का है।
भंड पाथर द्वारा शेक्सपियर के किंग लियर के रूपांतरण के दौरान, वे रुक जाते थे।
अजीब तरह से और बिना किसी झिझक के बातचीत बंद कर दें, केवल यह पूछें
अगर मैं सच में यह मानता कि गाँव के कलाकार शेक्सपियर के 'लियर' का किरदार निभा सकते हैं, तो यह कितना महत्वाकांक्षी विचार होता। 'ये ग्रामीण कलाकार क्या कर पाएंगे?'
'लीयर के महान भाषणों का क्या?' एक महिला ने तिरस्कारपूर्ण लहजे में उससे पूछा।
ऐसे शब्द जिनमें वर्ग और जाति की दुर्गंध साफ झलकती है।
मैं उसे बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी, लेकिन मैंने विनम्रता से जवाब दिया, 'जी महोदया, हमने अपनी पूरी कोशिश की है।'
बहुत बढ़िया। देखते हैं आप लोगों को यह कैसा लगता है। उन्होंने आगे पूछा, 'श्री रैना, क्या साहित्य में आपकी कोई पृष्ठभूमि है?'
अब मुझे गुस्सा आ गया, 'नहीं महोदया, मैं विशुद्ध विज्ञान का छात्र हूं।'

उसी समय, कुछ और लोग भी बातचीत में शामिल हो गए, और बातचीत फिर से शुरू हो गई।
भंड गांव के अभिनेताओं और शेक्सपियर के महानतम कलाकारों को। अंत में, मैं
मैं उनके घमंड को सहन नहीं कर सका और मैंने कहा, 'क्या आपको नहीं पता कि शेक्सपियर
एक भांड, हमारे भांडों की तरह, न कि अंग्रेजी का प्रोफेसर? उसने तो बस लिखा था
वह अपने नाटकों को अपनी अभिनेताओं की मंडली के लिए प्रस्तुत करते हैं, न कि कक्षा में अध्ययन के लिए।
मैं तुरंत वहां से चला गया।
अब तक मेरे कलाकार शो के लिए तैयार हो रहे थे। वे लग रहे थे दर्शकों और उनके प्रदर्शन को लेकर आशंकित, जो कि बहुत ही
यह उनके सामान्य प्रदर्शन से अलग था। मैंने उनसे कहा कि वे बस वैसे ही अभिनय करें जैसे वे करते हैं।
आमतौर पर मुझे प्रदर्शन का आनंद आता था और मैं किसी भी बात की चिंता नहीं करता था।
मैं मेहमानों के बैठने की व्यवस्था देखने के लिए बाहर गया था।
मैंने कुछ कुर्सियों का इंतजाम किया। मुझे फिर से कुछ अनजान लोगों से मिलने का मौका मिला, जिनसे मैंने परिचय किया।
उनके मन में यह जानने की उत्सुकता थी कि उनके साथ काम करना कैसा था।
अनपढ़ अभिनेता, और वो भी शेक्सपियर पर। मैंने उनसे कहा, 'ठीक है, हम
वे कश्मीरी शेक्सपियर का नाटक कर रहे हैं, न कि शेक्सपियर के अंग्रेजी नाटक का।
बादशाह पत्थर सदियों पुरानी शेक्सपियरियन परंपरा में हमारा योगदान है।

परंपरा।' उनके चेहरों को देखकर मुझे एहसास हुआ कि वे मुझे समझ नहीं पाए।
इस तरह की टिप्पणियां प्रदर्शन शुरू होने तक जारी रहीं। आखिरकार, मेरी मुलाकात मेरी दोस्त इंदु किलाम् से हुई, जो अंग्रेजी पढ़ाती थी। वह मेरी ओर दौड़ी।
उसने मुझसे फुसफुसाते हुए पूछा, 'सब ठीक है?' मैंने बस इतना कहा, 'हाँ।' लेकिन उसने आगे कहा, 'तुम्हारा
चेहरा थोड़ा तनावग्रस्त है। क्या बात है?’ मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, ‘यह शहर’
इसे जगाने की जरूरत है। यह कला और शिक्षा के सभी पहलुओं में पिछड़ रहा है।’ उसने तुरंत कहा, ‘मैंने लोगों की टिप्पणियाँ सुनी हैं, लेकिन आप
चिंता मत करो, जाओ और शो के लिए तुम्हें शुभकामनाएं।
मैं मंच पर जाने से पहले अपने सभी कलाकारों से मिलने के लिए बैकस्टेज भागा।
वे मेरा इंतजार कर रहे थे। मैंने उनसे कहा, 'चलो हम सब मिलकर दुआ करें।'
हम सब एक घेरा बनाकर खड़े हो गए और मैंने उनसे बात की। मैंने जो कुछ भी कहा, उसका हर शब्द दिल से कहा था।
‘आपको पता है, भांडों की पगड़ी तो बहुत पहले ही छीन ली गई थी।’ यह बात याद रखना। जब आप प्रदर्शन कर रहे होते हैं, तो आप अपने दर्शकों के लिए प्रदर्शन कर रहे होते हैं।
पगड़ी, आपका सम्मान और आपकी गरिमा। आपने अपमान सहा है।
वर्षों बाद। आज उन्हें पता चलेगा कि आपमें किस प्रकार की प्रतिभा है और वे क्या कर सकते हैं।
'मुझे दशकों से इसकी कमी महसूस हो रही थी।' मैं भावुक हो गई क्योंकि मुझे घुटन महसूस हो रही थी और

अज्ञानी श्रोताओं द्वारा अपमानित महसूस किया। मुझे एहसास हुआ कि यही वह चीज़ थी जो
भंड परिवार ने अपने पूरे जीवन भर इस भावना को महसूस किया होगा। जैसे ही हमने कार्यक्रम समाप्त किया, सभी भंडों ने 'आमीन' कहा और उनकी आँखों में आँसू आ गए।
उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे और वे रुंधी हुई आवाज़ में बोल रहे थे। दरअसल, मेरी आँखों ने
मेरी आंखों में आंसू भी आ गए। मैंने उन सभी को गले लगाया, अली से आशीर्वाद लिया।
मोहम्मद भगत, जो उस्ताद और अपनी कला के महारथी अभिनेता थे, ने उनका अनुसरण किया।
लाइटिंग बूथ में लाइटों को नियंत्रित करने के लिए। मेरी टीम के सभी सदस्य— राकेश,
अदिति, सुप्रिया, मंज़ूर—मेरे बगल में खड़े थे। हमने एक-दूसरे को शुभकामनाएं दीं।
किस्मत अच्छी थी, और प्रदर्शन शुरू हो गया। मेरे साथी खिलाड़ी देख रहे थे...
प्रदर्शन के दौरान, मैंने दर्शकों को देखा। किसी तरह, अपने भीतर गहराई से, मुझे पता था कि क्या हो रहा है।
ऐसा ही होगा। नाटक का पहला भाग सुचारू रूप से चला, लेकिन दर्शकों को
सदस्य चुप रहे, एक-दूसरे से बात नहीं की। उन्होंने जल्दी से चाय पी ली।
विराम के दौरान, केवल ज्योति ही मेरे पास गर्मजोशी से हाथ मिलाने के लिए आई,
मुस्कान।
हम सभी कलाकारों से मिलने और उन्हें आगे बढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए मंच के पीछे गए।

रफ़्तार पहले जैसी ही थी। हमने उन्हें आश्वस्त किया कि सब कुछ ठीक चल रहा है।
अंतराल के बाद, मैं नियंत्रण कक्ष में लौट आया। राकेश ऊपर आया और
उन्होंने कहा कि अभिनेता तैयार हैं। मैंने उन्हें शुरू करने का इशारा किया, और दूसरा भाग शुरू हो गया।
शुरू हुआ। मैंने फिर से दर्शकों को देखा। लीयर की भूमिका निभाने वाले महमूद भी वहीं थे।
वह अपने किरदार में पूरी तरह डूबे हुए थे, उन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। जब तूफान और गरज का दृश्य आया, तो मैंने दर्शकों में से एक व्यक्ति को अपने आंसू पोंछते देखा। जैसे-जैसे प्रदर्शन आगे बढ़ा, महमूद और अन्य अभिनेताओं की तीव्रता बढ़ती गई।
तीसरे बेटे का मृत शरीर देखा गया, और महमूद द्वारा सूफी शैली में प्रस्तुत की गई रचना
गीत ‘चुनुनपूश’ ने दर्शकों की आंखों में आंसू ला दिए। मुझे एहसास हुआ कि
आखिरी दृश्य में महमूद अचानक संवादों को सुधार रहे थे।
आम आदमी के विलाप की भाषा और कश्मीरियों की भाषा को सामने लाया गया
अपने खोए हुए बेटों को दफनाते समय रोते हुए। उसने सचमुच उन दोनों को एक साथ मिला दिया।
वह विलाप—लोगों का दर्द और नाटक की करुणा। यह एक था
भावुक क्षण।
मैंने फिर से दर्शकों की ओर देखा। उनके चेहरों पर मुझे प्रतिबिंब दिखाई दिया।
वर्तमान संकट के समय में उनके साझा दर्द के बारे में। जब नाटकीय

अनुभव आम आदमी के वास्तविक जीवन के कष्टों को झकझोर कर रख देता है, मैं
मेरा मानना है कि रंगमंच एक उपचार स्थल के रूप में कार्य करता है। महमूद का भी यही विचार था।
जैसा कि लियर ने सभी के समर्थन से दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया।
नाटक के अन्य शानदार कलाकार।
जब नाटक समाप्त हुआ, तो न केवल जोरदार तालियाँ बजीं, बल्कि
लोग आए और अभिनेताओं को गले लगाया। जाति और वर्ग की बदबू मिट गई थी।
कुछ पल के लिए सब कुछ गायब हो गया। अभिनेताओं को कपड़े बदलने में काफी समय लगा।
उनकी पोशाकें। मुझे राहत मिली और मैंने अपनी टीम को उनकी कड़ी मेहनत के लिए धन्यवाद दिया।
काम पूरा हो गया था। रात के खाने के बाद, मैंने अपने सभी कलाकारों को विदा किया जिन्हें जल्दी जाना था।
मैं वापस अकिंगम में अपने घर लौट आया। और सुबह मैं और मेरी टीम दिल्ली के लिए रवाना हो गए।

20

कश्मीर में होना या न होना

हमने कुछ समय बाद और भी गांवों में बादशाह पत्थर का प्रदर्शन करने की योजना बनाई थी।

दो महीने का अवकाश। इसी दौरान मुझे एक प्रोफेसर से ईमेल प्राप्त हुआ।

वह अमेरिका के स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में थिएटर में पढ़ती थीं। उन्होंने मेरे काम के बारे में सुना था।

मैं कश्मीर से हूं और कुछ प्रस्तुतियां देखना चाहता था और वहां के लोगों से बात करना चाहता था।

भांड्स। यह आश्चर्य की बात थी कि इतनी दूर रहने वाला कोई व्यक्ति मुझमें दिलचस्पी ले रहा था।

काम। पता चला कि वह एक किताब लिख रही थी और मेरे बारे में बात करना चाहती थी।

कश्मीर में काम करते हुए, मुझे एहसास हुआ कि कश्मीर एक ज्वलंत मुद्दा बन गया है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर। मैंने उसके मेल का जवाब देते हुए उसे बताया कि मैं जा रहा हूँ।

श्रीनगर, और अगर वह उस दौरान आ सकती तो वह मुझसे मिल सकती थी।

नहीं तो, वह खुद ही यात्रा कर सकती थी। मैं सब कुछ व्यवस्थित कर दूंगा।
मैंने दिल्ली से उसके लिए सामान मंगवाया। उसने तुरंत मुझे अपने आने की तारीखें बता दीं।
वह दिल्ली में रहता था और मेरे साथ कश्मीर जाना चाहता था। इसलिए मैंने योजना बनाई।
इसलिए, मैं अपने बेटे अनंत को भी साथ ले आया, जो अब एक वृत्तचित्र फिल्म निर्माता है।
और मेरे साथ फोटोग्राफर भी है।
एक बार फिर, घाटी में हालात सामान्य नहीं थे। स्थिति ऐसी थी कि हालात बिगड़ते जा रहे थे, और फिर से किसी को पता नहीं था कि यह सब कैसे होगा।
सुबह, जिशा मेनन आ गईं और हम तीनों श्रीनगर के लिए रवाना हो गए। मेरे पास
मैं जिशा से पहले कभी नहीं मिली थी, लेकिन हमारी तुरंत ही बहुत अच्छी दोस्ती हो गई। सौभाग्य से, हमारी
जिस दिन हम श्रीनगर पहुँचे, वह बंद नहीं था, इसलिए हम तुरंत आगे बढ़ गए।
अकिंगम टैक्सी में। इस बार हम कुकरनाग डाक बंगलो में रुके। घाटी के सबसे खूबसूरत स्थानों में से एक, घने जंगलों से घिरा हुआ,
संरक्षित चीड़ वन और ताजे खनिज जल की धाराएँ। यह डाक बंगला
वह एक साधारण सी जगह थी, केवल कामचलाऊ व्यवस्था थी और वहां एक ही देखभालकर्ता था।
अगले दो दिनों के लिए हमने जिशा को बादशाह पत्थर फिल्म दिखाने की योजना बनाई थी।

उसे आश्वासन दिया गया था कि वह सुरक्षित रहेगी। वह बस अगले पल का इंतजार कर रही थी।
वह सुबह कश्मीर छोड़कर अपने बेटे के साथ रहने के लिए बैंगलोर रवाना होने वाली थी।
एक अजीब डर और घबराहट ने उसे जकड़ लिया था।
हमने होटल में ही रात का खाना खाया। मैंने उसे कई कहानियाँ सुनाईं, जो...
वह हंसते हुए आनंद ले रही थी। उसने अचानक मुझसे पूछा, 'एम.के., तुम कैसे संभाल सकते हो?'
इतनी पीड़ा के बावजूद भी आपका हास्यबोध इतना जीवंत है।
चारों ओर? यह हत्या, गोलीबारी, हिंसा...
मैंने जवाब देने से पहले कुछ सेकंड का विराम लिया और कहा, 'तुम्हें पता है, जिशा, किसी के पास नहीं है'
मुझसे कभी किसी ने यह सवाल नहीं पूछा। मैं कश्मीरी हूँ। हमारे अंदर एक अंतर्निहित भावना होती है।
सबसे खराब परिस्थितियों में भी हास्य बनाए रखना, और यही एकमात्र चीज है जो हमें जीवित रखती है
मुझे यहाँ जाना पसंद नहीं है। वरना, यहाँ हमेशा उदासी, तनाव और डर का माहौल रहता है।
मृत्यु या हिंसा।'
हमने सुबह की फ्लाइट पकड़ी, दिल्ली पहुंचे और उसे उसकी मंजिल तक पहुंचाया।
अपने बेटे के साथ रहने के लिए उड़ान भरी। बाद में, मुझे उनकी लिखी एक किताब मिली, 'राष्ट्रवाद का प्रदर्शन'। और दो लंबे वर्षों के बाद, अनंत ने अपनी पढ़ाई पूरी की।
वृत्तचित्र, बादशाह लीयर।

21

बादशाह पत्थर टूर्स

अगले सीज़न में, यानी अगस्त 2010 में, हमने बादशाह पत्थर को लेने की योजना बनाई थी।

अकिंगम के पास के और भी गांवों में जाने का रास्ता था, लेकिन राजनीतिक स्थिति अच्छी नहीं थी।

सभी जिलों में अलगाववादियों द्वारा आंदोलन चल रहा था, जिसके बाद...

घाटी में नागरिक कर्फ्यू और अनुच्छेद 144 लागू किया गया। लॉकडाउन जारी है।

इन कॉलों से भय और भ्रम की स्थिति पैदा हो गई कि आगे क्या कार्रवाई हो सकती है।

अलगाववादी हों या सुरक्षा बल। चाहे कुछ भी हो, इन परिस्थितियों में

प्रदर्शन करने की कोई संभावना नहीं थी। हमने इंतजार किया और किसी तरह के अवसर की उम्मीद की।

लॉकडाउन इसलिए लगाया गया ताकि हम बिना किसी बाधा के ग्रामीण इलाकों में स्वतंत्र रूप से प्रदर्शन कर सकें।

तनाव बढ़ गया। हमारे लिए यह लुका-छिपी का खेल बन गया। भविष्य की योजना बनाना

किसी काम का नहीं।
लगभग एक महीने बाद विरोध प्रदर्शनों और बंदों में विराम आया।
मैंने कार्यक्रम बनाना शुरू किया। मैं एक संपूर्ण प्रस्तुति रिकॉर्ड करना चाहता था।
कम से कम दो कैमरों के साथ नाटक की शूटिंग होनी थी। जब हमने तारीखें तय कीं, तो मेरे बेटे अनंत ने कहा।
और मैंने अंतिम प्रदर्शन से चार दिन पहले अकिंगम पहुंचने का फैसला किया।
अनंत अपने पूरे साजो-सामान के साथ आया था। हमने तय किया कि वही इसे संभालेगा।
एक कैमरा हमारे पास था, और दूसरा हमने श्रीनगर के फिल्म निर्माताओं के एक समूह के साथ मिलकर ठीक किया।
अकिंगम पहुँचने के बाद, हमने प्रदर्शन की तारीखें तय कीं।
ग्राम प्रधानों से परामर्श। गुल मोहम्मद भगत, अनंत और मैं।
यह सुनिश्चित करने के लिए प्रदर्शन स्थलों का दौरा करने का निर्णय लिया गया कि पर्याप्त धूप पहुँच रही है या नहीं।
लाइव परफॉर्मेंस की फिल्मिंग के लिए।
सबसे पहले हम कुकरनाग पहाड़ी क्षेत्र के निकट स्थित मुदगेज गए। यहाँ हमने
गाँव के ठीक बाहर, जंगल के पास एक सुंदर स्थान स्थित है। एक बड़ी पहाड़ी
ढलान नीचे की ओर एक भव्य, राजसी दिखने वाले चिनार के पेड़ से मिलती थी। हम तीनों
मुझे यह जगह बहुत पसंद आई। प्रदर्शन के लिए मंच बनाने के लिए पर्याप्त जगह थी।
इसलिए यह तय किया गया कि हम इस पेड़ के नीचे प्रस्तुति देंगे।
शो का एक और प्रदर्शन गांव में होने वाला था।

अरिहम। यहाँ गाँव के घर एक बड़े साझा आंगन के चारों ओर बने हुए थे।
जिसे हमने अपने प्रदर्शन स्थल के रूप में चुना। हमने महसूस किया कि प्रत्येक स्थान पर
हम जो चुन रहे थे, प्रदर्शन स्थल का अनुभव ऐसा होगा
यह अभिनेताओं के लिए अलग और चुनौतीपूर्ण है।
अगले दिन, सुबह करीब 10 बजे, अनंत, गुल मोहम्मद और मैं बाहर निकले।
मुडगेज के पास के गांवों के आसपास एक सूमो वाहन में घूमते हुए, लाउडस्पीकरों के माध्यम से प्रदर्शन और आयोजन स्थल के विवरण की घोषणा की जा रही थी।
एक घंटे बाद, सभी कलाकार मंज़ूर और अनंत के साथ मुदगेज के लिए रवाना हो गए।
शो की तैयारी करो। देरी से आने वाले कैमरा क्रू के बाद मैं उनके पीछे-पीछे चलूँगा।
श्रीनगर से एक व्यक्ति आ गया। मैं मुख्य राजमार्ग पर लगभग एक घंटे तक इंतजार करता रहा।
उनके लिए, हमारी मुख्य टीम का पता लगाने के दौरान, यह देखना था कि वे कार्यक्रम स्थल पर पहुँच गए हैं या नहीं।
हो या न हो। श्रीनगर की कैमरा टीम अभी रास्ते में थी, इसलिए मैं इंतजार करता रहा।
उनके लिए यह एक चुनौती थी क्योंकि उन्हें पता ही नहीं था कि हम कहाँ प्रदर्शन करने वाले हैं।
मैंने अनंत को फोन करके पूछा कि वे कार्यक्रम स्थल से कितनी दूर हैं।
अनंत ने उत्तर दिया, 'हम तेजी से आगे नहीं बढ़ सकते क्योंकि यहाँ हजारों लोग हैं।'

कार्यक्रम स्थल की ओर चल रहे हैं। पहुँचने में थोड़ा समय लगेगा, वरना सब ठीक है।
ठीक है।'
मैंने कैमरा क्रू का बीस मिनट और इंतजार किया। वे
हमारे कार्यक्रम में देरी हो रही थी। जब मैं इंतजार कर रहा था, तभी मुझे एक बहुत ही करीबी व्यक्ति का फोन आया।
घबराए हुए अनंत ने कहा, 'बाबा, जल्दी आइए, यहाँ अफरा-तफरी मची हुई है। कोई आया है।'
जैसे ही हम अपने कॉस्ट्यूम ट्रंक खोल रहे थे, तभी वह कार्यक्रम स्थल पर पहुँच गया और इस्लामी नारे लगाने लगा।
नारे लगाए गए, और नाटक देखने आए बड़ी संख्या में लोग
उन्होंने उनके नारों में शामिल हो गए। उसने हम सभी को खूनी धमकियों से ग्रसित कर दिया है।
अगर यह गैर-इस्लामी प्रदर्शन होता है तो इसके गंभीर परिणाम होंगे।
मैंने पूछा, ‘मंज़ूर कहाँ है?’ मंज़ूर ने फ़ोन पर कहा, ‘यह आदमी’ लगता है कि वह कोई प्रभावशाली व्यक्ति है। उसने सबके सामने इसकी घोषणा कर दी है।
जनता को यह चेतावनी दी जा रही है कि अगर यह प्रदर्शन नहीं रुका तो चारों ओर लाशें ही लाशें होंगी।
यहीं कहीं आसपास। तो महोदय, जल्दी आइए।
एक पल के लिए मुझे समझ नहीं आया कि क्या करूं। घटनास्थल की ओर दौड़ने की तैयारी करते हुए, मैं
मैंने कैमरा क्रू को ले जा रही एक कार देखी। मैं तुरंत उनकी कार में बैठ गया, और हम
सभी लोग आयोजन स्थल की ओर चल पड़े। जब मैं गाँव के बाहरी इलाके में पहुँचा, तो मैंने देखा

लोग अभी भी प्रदर्शन स्थल तक पहुंचने के लिए पैदल चल रहे थे। जब मैं वहां पहुंचा...

कार्यक्रम स्थल पर मुझे केवल हजारों लोग दिखाई दे रहे थे— महिलाएं, बुजुर्ग,

बच्चों और छोटे-छोटे समूहों में बड़ी संख्या में युवाओं से बात करते हुए

वे आपस में हाव-भाव से एक-दूसरे से बातचीत कर रहे थे। यह किसी गाँव की जगह जैसा लग रहा था।

मेले में लोग रंग-बिरंगे कपड़े पहने हुए थे, खासकर महिलाएं।

जैसे ही मैं प्रदर्शन स्थल के पास पहुँचा, मैंने एक आदमी को देखा जिसके पास एक

दाढ़ी और सफेद टोपी पहने एक व्यक्ति चीखता-चिल्लाता हुआ पास आता है।

उसने मुझे देखा, उसने मुझे धमकी दी, 'अगर तुम इसे नहीं रोकोगे तो चारों ओर खून ही खून बहेगा।'

'समाप्त।' मैंने उसे कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन मैं खून-खराबा या हिंसा नहीं चाहता था।

मंज़ूर मेरे पास आया और फुसफुसाते हुए बोला कि किसी को लगता है कि वह

पिस्तौल लिए हुए। मैं घबरा गया। मैंने मंज़ूर को चुपचाप सामान पैक करने को कहा। हम

हम प्रदर्शन नहीं करेंगे। हम किसी के भी मारे जाने का जोखिम नहीं उठा सकते थे।

जब हम बात कर रहे थे, तभी उस आदमी ने अपने फोन पर किसी को फोन किया। मुझे शक हुआ कि वह...

वह अपने समूह को बुला रहा था, और अगर वे आ जाते तो यह खतरनाक होता। लोग ढके हुए थे।

पूरे परिदृश्य पर चर्चा करते हुए, आपस में बातचीत करते हुए कि क्या हो रहा है, कुछ

स्पष्टीकरण देने के अंदाज़ में, कुछ लोग उत्तेजित थे। किसी को तो चिल्लाकर अपनी बात कहनी पड़ती थी।
इतने शोर और अफरा-तफरी के बीच मेरी आवाज सुनाई दी। मुझे अनंत की चिंता थी—वह
मुझे उस इलाके की जानकारी नहीं थी और न ही स्थानीय भाषा आती थी। मैं उसे सावधान रहने के लिए कहना चाहता था, लेकिन मैंने देखा कि वह पहले से ही सब कुछ फिल्मा रहा था।
हो रहा है।
उस आदमी ने फिर चिल्लाकर कहा, 'रुको, मेरे लोग आ रहे हैं।' उस समय, मैं
हमने अपने पर्कशनिस्ट गुलाम रसूल (जूनियर) से पूछा कि क्या उसके पास
हमने अपना पत्र पुलिस स्टेशन में जमा करा दिया। वह पत्र महज एक औपचारिकता थी, जिसमें लिखा था कि...
पुलिस जानती है कि हम प्रदर्शन करेंगे और उन्हें इसकी पूरी जानकारी दे देंगे।
किसी भी प्रकार की परेशानी की स्थिति में एहतियात के तौर पर, हमारी सुरक्षा के लिए यह स्थान बनाया गया था।
गुलाम रसूल ने उत्तर दिया, 'हाँ, मैंने इसे जमा कर दिया है, और मैं इसे अपने साथ ले जा रहा हूँ।'
मेरे पास रसीद की कॉपी है।’ लेकिन आस-पास एक भी पुलिसवाला नहीं था। मुझे राहत मिली, क्योंकि घाटी में जबरदस्त तनाव था, अगर कुछ हो जाता तो...
अगर कोई अप्रिय घटना घटित हुई तो यह कानूनी समस्या बन सकती है। मैंने श्रीनगर में सलीम बेग को फोन किया। मैंने उन्हें सारी बात विस्तार से बताई।
स्थिति ऐसी थी कि वह चिंतित हो गया और पूछने लगा कि हम ठीक कहाँ हैं, लेकिन मैं जवाब नहीं दे सका।

उसे सही जगह समझाओ। मैंने एक ग्रामीण से बेग को यह समझाने के लिए कहा कि वह कहाँ है।
हम थे, लेकिन उस कॉल के बाद मैं सलीम से दोबारा संपर्क नहीं कर पाया। मेरे पास कोई साधन नहीं था।
मुझे नहीं पता कि वह हमारे लिए क्या कर सकता था, लेकिन कम से कम उसे यह तो पता था कि हम कहाँ हैं।
ताकि अगर कुछ बुरा हो जाए तो उसका सामना किया जा सके।
जैसे ही हमारे कलाकारों ने कॉस्ट्यूम ट्रंक पैक करना शुरू किया, एक बड़ा
लोगों का एक समूह, जिनमें ज्यादातर युवा थे, अभिनेताओं की ओर दौड़ पड़े और चिल्लाने लगे, 'नहीं,
नहीं!’ उन्होंने हमें रोक दिया। यह समूह हमें बिना रुके जाने नहीं देना चाहता था।
प्रदर्शन कर रहे थे। यह एक अजीब स्थिति थी। हमारा ड्राइवर, हमारी गाड़ी को घुमाते हुए।
एक मिनीबस पर लोगों के एक अन्य समूह ने घात लगाकर हमला कर दिया, वे चिल्ला रहे थे, 'नहीं, नहीं,'
तुम यहाँ से नहीं जा रहे हो!’ उन्होंने बस को घेर लिया। महिलाओं का एक बड़ा समूह और
मेरे चारों ओर बड़े-बुजुर्ग खड़े थे, सभी एक साथ बोल रहे थे जिससे मैं कुछ सुन नहीं पा रहा था।
उन्हें समझना मुश्किल था। कुल मिलाकर, भ्रम का माहौल था, हर कोई वे एक-दूसरे पर चीख-चिल्ला रहे थे। कोई किसी की बात समझ नहीं पा रहा था।
लोगों का एक समूह पहाड़ के दूसरी ओर से आया था
नाटक देखने के लिए। वे मुझ पर दबाव डालने लगे, और जगह बदलने पर ज़ोर देने लगे।

और पहाड़ पार करके अपने गांव के इलाके में प्रदर्शन करने जाएंगे। 'हमें बहुत खुशी होगी अगर...'
आप सब वहाँ आएँ, और हम आप सबके लिए एक दावत का आयोजन करेंगे।’ एक गुर्जर
इस समूह में से एक व्यक्ति ने हमारा एक ट्रंक उठाया और वहां से जाने लगा। लेकिन
ग्रामीणों ने उनके इस कदम का विरोध किया, और दोनों पक्षों के बीच हाथापाई होते-होते बची।
बहुत तीखी बहस के बाद। आखिरकार, मुझे हस्तक्षेप करना पड़ा और मैंने शांति बनाए रखने का अनुरोध किया।
उनके बीच चल रही लड़ाई का अंत।
इस सारी अफरा-तफरी के बीच, लोगों ने सड़क पर गुजर रहे एक बुलडोजर को रोक दिया।
हमने गांव की सड़क पर ड्राइवर को आदेश दिया कि वह सड़क को अवरुद्ध कर दे ताकि हम वहां से निकल न सकें।
इस सारी उलझन का कोई मतलब समझ में नहीं आ रहा था। एक छोटा लड़का आया...
उसके हाथों में दरांती थी और उसने बहुत धीरे से मेरे कान में फुसफुसाया, 'तुम्हें प्रदर्शन करना होगा। यह आदमी कुछ नहीं कर पाएगा। तुम नहीं कर सकते।'
चिंता।'
मैंने कहा, ‘देखो, हम किसी और समय आएंगे, मैं तुमसे वादा करता हूँ। मैं नहीं
मैं किसी भी प्रकार की हिंसा या रक्तपात नहीं चाहता जो मेरे उद्देश्य को ही विफल कर दे।
प्रयास करना।'
गुस्से में आकर उस लड़के ने कहा, ‘क्या तुम चाहते हो कि मैं उसका पेट फाड़ दूं? मैं फाड़ दूंगा।’

इस हंसिया से तुरंत ऐसा करो।
वह उस व्यक्ति की ओर बढ़ा, लेकिन मैंने तुरंत उसे पकड़ लिया। और हमने उनसे विनती की कि वे हिंसक स्थिति उत्पन्न न करें। हम वहां इसलिए नहीं आए थे कि...
हिंसा फैलाओ। मैंने चिल्लाकर कहा, 'भगवान के लिए, शांत रहो, हम नहीं आए हैं।'
इसके लिए। मैं आपसे वादा करता हूं कि इसी सप्ताह के भीतर हम वापस आएंगे और
अभिनय करना।'
उन्होंने मेरी तरफ देखा और जोर देकर कहा, 'अगर तुम आज प्रदर्शन नहीं करोगे तो...'
हम हार गए हैं और ऐसा नहीं होना चाहिए था। ये कमीने नहीं मानेंगे।
चलो हम हंस भी लेते हैं।
जब इस युवक ने ये शब्द कहे—‘आज तो हम रहे हैं’
पराजित।’—मैंने इसका मतलब समझने की कोशिश की, लेकिन मुझे यकीन नहीं हुआ।
प्रदर्शन करने के लिए पर्याप्त।
इस समय तक हमारे युवा अभिनेताओं ने सभी ट्रंक और उपकरण पैक कर लिए थे।
मिनीबस। वे मेरे जाने के अंतिम संकेत का इंतजार कर रहे थे, लेकिन
ग्रामीण अब भी हमें जाने नहीं दे रहे थे। वे आपस में बहस कर रहे थे।
भंड पथेर की सदियों पुरानी विरासत के बारे में बताते हुए, इस बात पर जोर दिया गया कि यह

यह उनकी संस्कृति का हिस्सा था। इस समय तक मेरी आवाज बैठ चुकी थी, और मैं
मुझे प्यास लगी थी। कहीं भी पीने का पानी नहीं था। मैंने अनंत की ओर देखा और पूछा
अगर वह कोई अच्छा फुटेज शूट कर पाता तो उसे क्या होता। उसने बस इशारा किया।
पुष्टि।
अचानक मुझे अपने कंधों पर किसी का हाथ महसूस हुआ। मैंने मुड़कर देखा तो एक बुजुर्ग व्यक्ति खड़ा था।
उनकी लंबी सफेद दाढ़ी थी और हाथों में तस्बीह थी। वे मुझे कुछ दूर ले गए।
वह भीड़ से कुछ कदम दूर हट गया। उसने बहुत धीमी आवाज़ में कहा, 'देखो, मैं बहुत बूढ़ा हूँ, और
तुम मेरे बेटे जैसे हो। मेरी बात सुनो। तुम चिंता मत करो। अपना काम करो। अगर कुछ भी अप्रिय हुआ तो हम अपनी जान दे देंगे। तुम इसे हम पर छोड़ दो, फिर
इसे अल्लाह ताला पर छोड़ दो।
एक पल के लिए मुझे लगा कि ये सभी लोग मुझे कोई संदेश दे रहे हैं।
और मुझे उनकी ज़िद में कुछ सच्चाई नज़र आई। वह लड़का जाने के लिए तैयार था।
एक आदमी का पेट चीर कर, और अब यह पिता तुल्य बूढ़ा आदमी दृढ़ निश्चय कर चुका था कि...
हमें अपना प्रदर्शन करना था। मुझे लगा कि मैं इस विशाल भीड़ को निराश नहीं कर सकता। उन्होंने
हमें प्रदर्शन करते देखने के लिए वे कई मील पैदल चलकर आए। मैंने प्रदर्शन करने का मन बना लिया था।
मेरे साथ ये लोग थे।

मैंने उस लड़के को फोन किया और उससे पूछा कि क्या वह कुछ युवाओं को संगठित कर सकता है।
हमारे प्रदर्शन के दौरान व्यवस्था बनाए रखने में मदद करने के लिए स्वयंसेवक मौजूद थे। उन्होंने कहा, 'हाँ, कोई नहीं है।' समस्या।’ उसने अपने दोस्तों को चिल्लाकर बुलाया और उनसे पेड़ों पर चढ़ने और काटने को कहा।
कुछ शाखाओं को इकट्ठा करके उनसे डंडे बना लें और उनसे पहरा दें। प्रदर्शन। युवा लड़कों का समूह उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए भाग गया, मानो
उन्हें किसी युद्ध की तैयारी करनी थी। मुझे उन पर चिल्लाना पड़ा और उन्हें समझाना पड़ा।
मैंने उन्हें समझाया कि उन्हें अहिंसक और शांतिपूर्ण रहना होगा।
मैंने स्वयंसेवकों को प्रदर्शन स्थल के चारों ओर घेरा बनाने के लिए कहा, और अगर कोई भी
अगर किसी ने परेशानी खड़ी की, तो वे उस व्यक्ति को बिना किसी को परेशान किए ले जाएंगे।
प्रदर्शन। ‘और याद रखना, तुम किसी को मारोगे या चिल्लाओगे नहीं,’ मैंने उनसे अनुरोध किया। ‘बस चुपचाप उसे कार्यक्रम स्थल से बाहर ले जाओ। क्या तुम मुझसे वादा करते हो?’
'यह?' सभी युवाओं ने सहमति जताई, और मैंने अभिनेताओं को वापस आने का इशारा किया।
ताकि हम प्रदर्शन कर सकें।
जब लोगों ने देखा कि ट्रंकों को फिर से खाली कर दिया गया है, तो वे आगे की ओर दौड़ पड़े।
उत्साह, चीख-पुकार और अपनी-अपनी जगह लेने की होड़ के बीच। इस सारी अफरा-तफरी के दौरान और

अनिश्चितता के बावजूद, अधिक से अधिक लोग आ गए थे और अपनी-अपनी जगह ले रहे थे।

कुछ ही मिनटों में पूरी पहाड़ी ढलान लोगों से भर गई। लगभग कोई भी

कलाकारों के प्रदर्शन के लिए निर्धारित स्थान को छोड़कर बाकी स्थान शेष रहा।

आधे घंटे के भीतर ही पिन-ड्रॉप साइलेंस में परफॉर्मेंस शुरू हो गई।

पूरा स्थान कलाकारों की ऊर्जा से भरा हुआ प्रतीत हो रहा था। मैं वहीं बैठा था।

नाटक के दौरान मंच के पीछे के क्षेत्र में, मैं थका हुआ और बहुत प्यासा था। तभी मेरी नज़र एक लड़के पर पड़ी।

और एक लड़की अपने पिता के आगे-आगे चल रही थी, जिसके हाथ में नमकीन चाय और स्थानीय बेकरी का सामान से भरा एक बड़ा समवार था। मुझे चाय और पानी दिया गया। बच्चों के पिता

उन्होंने मुझे इस कार्यक्रम के लिए इस साइट को चुनने के लिए धन्यवाद दिया, भले ही यह काफी

अपने गाँव से बहुत दूर। ‘हम आपके लिए यहाँ बस यह चाय ही ला पाए हैं,’ उसने कहा।

उन्होंने कहा। मैंने उनकी मेहमाननवाजी के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

चाय पीने के बाद, मैं उस प्रदर्शन को देखना चाहता था जो

कार्यक्रम अच्छी तरह से चल रहा था। मैंने जो देखा वह बहुत ही हास्यास्पद था। दर्शक धीरे-धीरे

जैसे-जैसे अधिक से अधिक लोग आते गए, अभिनय के क्षेत्र पर अतिक्रमण होता गया।

प्रदर्शन देखें। अंत में, जब नाटक समाप्त हुआ, तो केवल एक ही बचा था।

बादशाह लीयर के मरने के लिए बहुत कम जगह बची है।

मुझे इस बात ने हैरान कर दिया कि घाटी के इस सुदूर हिस्से में ये सब कैसे हो रहा था।
ऐसे समूह जिन्होंने हमारे प्रदर्शन का विरोध किया, लेकिन फिर एक बड़ा बहुमत भी था।
उन लोगों में से जो चाहते थे कि हम प्रदर्शन करें। जनता का यह बहुमत
हम अच्छा प्रदर्शन करें, यह सुनिश्चित करने के लिए हम कुछ भी करते। अधिकांश राजनीतिक
वर्ग इस कथा से अनभिज्ञ है—कि लोग आंतरिक सज्जा में भी विजय प्राप्त करते हैं।
घाटी। ऐसा लग रहा था कि लोग सामान्य जीवन जीने के लिए तरस रहे थे। जब मैंने बताया
इस शो की कहानी मैंने अपने दोस्तों को बताई, कई लोगों ने मुझे प्रेस से बात करने की सलाह दी।
यह घटना, विशेष रूप से इस तथ्य के बारे में कि आम जनता मेरे साथ खड़ी रही
और इसी वजह से हम प्रदर्शन कर पाए। मुझे लगा कि यह एक मूर्खतापूर्ण सलाह थी।
मैं खुद को एक ऐसे नायक के रूप में प्रचारित करूंगा जो लोगों को खड़े होने के लिए प्रेरित कर सके।
मेरे द्वारा। इस तरह का आत्म-प्रचार सतही, खोखला और तुच्छ होगा।
निकट दृष्टि दोष।
सच्चाई यह है कि लोगों के मन में भय इतना गहरा बैठ गया था कि
उस गंदगी को साफ करने में लंबा समय लगेगा जिसने सब कुछ ढक दिया था।
सच। मैं कश्मीर में अपने कनिष्ठों से अक्सर कहता हूं कि इस भूमि ने कई प्रतिभाओं का पोषण किया है।

सदियों से प्रेम का विषय रहा है, और यह कि भूमि बंजर नहीं हो सकती।
करुणा से रहित भूमि। इस घटना ने मुझे यह दिखाया कि
संभावना और उम्मीद अभी भी बाकी थी। हमें इस उम्मीद की लौ को जलाए रखना होगा।
किसी बड़े उद्देश्य के लिए किया जाने वाला कोई भी प्रचार-प्रसार।
जल्द ही हमें सांस्कृतिक और नाट्य कला जगत से निमंत्रण मिलने लगे।
कई संगठनों ने हमसे बादशाह पत्थर प्रस्तुत करने का अनुरोध किया। समूह को पूर्वोत्तर भेजा गया, जहाँ उन्होंने विभिन्न शहरों में लगभग एक दर्जन प्रस्तुतियाँ दीं।
क्षेत्र। नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा ने हमारे प्रोडक्शन को अपने कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया।
हमने दिल्ली में वार्षिक भारत रंग महोत्सव में प्रस्तुति दी।
हमने चेन्नई में भी प्रस्तुति दी।
वार्षिक शेक्सपियर थिएटर महोत्सव में, और फिर पुणे और गोवा में उनके प्रदर्शन के लिए।
वार्षिक साहित्यिक उत्सव।
इन लंबी यात्राओं ने भांड परिवार को उन घावों को भरने में मदद की जो उन्हें लगे थे।
उग्रवादियों ने, जिन्होंने उन्हें वर्षों तक प्रदर्शन करने की अनुमति नहीं दी थी। चुपचाप
भंड पथर में काम करते हुए, प्रशिक्षण देते हुए और उसे पुनर्जीवित करते हुए, हमने एक मजबूत आधार बनाया था। सांस्कृतिक प्रतिरोध का राजनीतिक पहलू। इसे न तो किसी ने सराहा और न ही
चाहे वह राज्य सरकार हो या आतंकी संगठन।

जल्द ही नई दिल्ली में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र का निर्माण होगा।
‘भंड पथेर की पुनरावलोकन’ थीम पर आधारित एक उत्सव मनाया गया। यह पहला आयोजन था।
भंड पथेर के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है कि किसी अकादमिक इस पर चर्चा हो रही थी। बनारस, दिल्ली और अन्य प्रमुख विद्वानों ने इस विषय पर अपनी राय रखी।
कश्मीर ने प्रमुख संगोष्ठी में भाग लिया और अपने विचार प्रस्तुत किए।
इस कला शैली का अतीत और वर्तमान महत्व। यह एक आंखें खोलने वाला अनुभव था।
संस्कृत, कश्मीरी और अन्य दृष्टिकोणों से भांड पथेर को समझें।
मध्य एशियाई परंपराएँ।
जैसे ही हमने वैली में अपने प्रदर्शनों का आखिरी सीज़न पूरा किया, मेरे बेटे ने...
फिल्म निर्माता अनंत रैना अपने कैमरे से शूटिंग कर रहे थे।
विभिन्न गांवों में हुए अधिकांश प्रदर्शनों को फिल्माया और दर्शकों के साक्षात्कार लिए।
भंडों का पालन विभिन्न स्थानों पर किया जाता है, जिनमें उनके घर और पवित्र स्थल शामिल हैं।
दरगाहों के बारे में वह मुझसे लगातार बात कर रहा था।
फिल्म बादशाह पत्थर। उन्होंने अलग-अलग अंतरालों पर मेरा इंटरव्यू लेना शुरू किया।
साल भर कश्मीर में मेरे पुराने दिनों के बारे में, लेकिन उन्होंने जो साक्षात्कार लिया
जीरो ब्रिज से झेलम नदी में शिकारा पर जाते समय मेरे साथ।

और सातवीं ब्रिगेड तक का हिस्सा मेरे लिए सबसे ज्यादा परेशान करने वाला था।

उन्होंने मुझसे शहर में मेरे बचपन के दिनों के बारे में व्यक्तिगत प्रश्न पूछे।

मैं नदी के दोनों किनारों पर बनी इमारतों को देख रहा था। ये इमारतें थीं

मेरे बचपन का अभिन्न अंग। मैं इन्हीं किनारों के आसपास पला- बढ़ा। मेरे चाचा-चाची के घर आज भी वहीं खड़े हैं, लेकिन उनमें कोई और रहता है।

अब अनंत ने इस विशेष साक्षात्कार को उनके लिए और भी खास बना दिया था।

मुझे। उन्होंने अपनी पत्नी अकिला को दिल्ली से हमारे साथ शामिल होने के लिए बुलाया था, और हम दोनों

उनमें से कई लोगों ने मुझसे तरह-तरह के सवाल पूछे। उन्होंने मुझे अपने अतीत को फिर से जीने का मौका दिया।

मेरा बचपन, मेरे स्कूल के दिन, मेरा कॉलेज जीवन। जब मैं उनके जिज्ञासु सवालों के जवाब दे रहा था।

उनके सवालों से उन्हें यह एहसास नहीं हुआ कि मैं अपने भीतर की गहरी अवस्था में पहुँच चुका था।

अतीत। अब मैं उन लोगों के बारे में सोचने लगा, जो पहले...

श्रीनगर शहर में निवास करें और इसके जीवन में योगदान दें। बंद को देखते हुए

झेलम नदी के किनारे स्थित मंदिर और खाली घर देखकर मुझे एक अलग ही एहसास हुआ।

जीवन की निरर्थकता के बारे में खालीपन।

शाम को जब हम होटल में खाना खा रहे थे, अनंत ने मुझसे पूछा, 'बाबा,

क्या दिल्ली वापस जाने से पहले मैं दादाजी का घर देख सकता हूँ?’ मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ।

क्योंकि उन्होंने अपनी पिछली किसी भी मुलाकात के दौरान मुझसे यह सवाल कभी नहीं पूछा था।
उन्होंने उत्तर दिया, 'हाँ, यह यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं है। हम सुबह जा सकते हैं।'
होटल से यहाँ तक पैदल चलने में मुश्किल से बीस मिनट लगते हैं।’ अगली सुबह, अनंत
वह अपने कैमरे के साथ तैयार था, और हम मेरे घर की ओर चलने लगे। अब यह मेरा घर नहीं है। जब हम अपने मोहल्ले में दाखिल हुए, तो अनंत ने तस्वीरें खींचीं।
मैंने घरों की ओर इशारा करते हुए एक घर की ओर इशारा किया और उससे कहा, 'तुम्हें पता है, यह घर था।'
एम.के. राजदान, पीटीआई के सीईओ, के यहाँ। हम यहाँ के मैदान में क्रिकेट खेला करते थे।
'वह स्कूल जहाँ मैंने पढ़ाई की थी।' मैंने एक दूसरे घर की ओर इशारा करते हुए उससे कहा, 'यह वह घर है जहाँ मैंने पढ़ाई की थी।' वीर मुंशी का घर, जो एक प्रख्यात चित्रकार और आपके माध्यमिक विद्यालय के कला शिक्षक थे।
आपके सेंट कोलंबस स्कूल में।
जब अनंत फोटो खींच रहा था, तभी मुझे एक बहुत तेज आवाज सुनाई दी, जिसने मुझसे पूछा, 'तुम कौन हो?'
और तुम ये सारी तस्वीरें क्यों ले रहे हो?’ अनंत रुक गया। अजीब बात है, मैं
उसने ऐसा व्यवहार किया मानो मैं अब भी मोहल्ले का निवासी हूँ, और उसने हर तरह से
अपने आत्मविश्वास के बल पर मैंने उस आदमी से पूछा, 'तुम कौन हो? तुम नहीं हो'
शीतल नाथ के इस मोहल्ले से।

उन्हें यह पसंद नहीं आया। उन्होंने पलटकर पूछा, 'यह कैसा जवाब है?'
आप कौन हैं?'
मैं हंसने लगा, और सामने वाली गली से रहमान, मेरा बचपन का दोस्त, दिखाई दिया।
मेरा दोस्त अचानक बाहर आया और उसने मुझे पहचान लिया। वह दौड़ता हुआ बाहर आया, और हम
उसने मुझे गले लगाया। उसने मुझे अपने घर आने और अपने परिवार से मिलने के लिए कहा। फिर मैंने
रहमान से पूछा गया कि वह आदमी कौन है जिसके घर में वह रहता है। रहमान ने कहा कि वह
मैं दाफ्तारियों के घर में रहता था। मैंने उस आदमी की तरफ देखा जिसने मुझसे सवाल किया था।
वहाँ उपस्थित होकर मैंने उससे कहा, ‘देखो, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम यहाँ से नहीं हो?’
यह पड़ोस है; नहीं तो आप मुझसे यह नहीं पूछते कि मैं कौन हूँ। वह बेचारा काफी शर्मिंदा हो गया और धीरे-धीरे चला गया।
रहमान के परिवार के साथ कुछ समय बिताने के बाद, मैं अनंत को अपना घर दिखाने ले गया।
जब हम बगीचे की तरफ से मुख्य द्वार से अंदर दाखिल हुए, तो कई पुरानी यादें ताजा हो गईं।
मेरे दिमाग में कौंध गया। मैंने अपने बड़े चाचाओं के दो घरों को देखा। मैं
मुझे अपने बड़े परिवार द्वारा मचाए गए शोर की याद आ गई। मेरे घर का मालिक अब
वह एक युवा बैंक अधिकारी थे। उन्होंने हमारा स्वागत किया और हमें अंदर आने के लिए कहा।

[illegible]

26 [illegible] 1990 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]'

[illegible]'

[illegible]

[illegible]?

[illegible]

[illegible]

[illegible]'

[illegible]'

[illegible]

मेरा एक दोस्त था। वह एक बड़े पुराने कश्मीरी घर में रहता था। जब मैं अंदर गया तो वह अपने बगीचे में शमी कबाब बना रहा था। जब उसने अनंत और मुझे देखा, तो उसने मुझे एक
बड़ा सा आलिंगन। जब वह अनंत से मिला, तो वह आश्चर्यचकित हुआ और उससे भी ज्यादा गर्मजोशी से गले मिला।
उनका स्वागत करते हुए उन्होंने अनंत से कहा, ‘तुम सही समय पर आए हो। तुम
अब मेरे हाथ का बना खाना चखो।’ उन्होंने मेरे पिता बाबूजी के बारे में पूछा और दुखी थे।
जब मैंने उन्हें बताया कि उनकी मृत्यु उच्च रक्तचाप के कारण हुई थी, तो वे शांत हो गए।
अन्य बीमारियाँ। कुछ क्षणों के लिए वह बिल्कुल चुप रहा, एक सन्नाटा छोड़ गया।
एक अजीब सी खामोशी छा गई। आखिरकार, मैंने चुप्पी तोड़ी और उनसे पूछा, 'आप कैसे हैं?'
और परिवार?’ उनका चेहरा बेहद गंभीर और विचारशील हो गया। उन्होंने मुझे एक
मैंने देखा और बहुत धीरे से कहा, 'जानती हो, निका (मेरा बचपन का नाम), हम हैं'
मैं भी इस मोहल्ले को छोड़ने की सोच रहा हूँ।’ मैंने उससे पूछा क्यों?
उन्होंने जवाब दिया, 'आप जानते हैं, आपके जाने के बाद यह मोहल्ला पहले जैसा नहीं रहा।'
मोहल्ले में। जो लोग आपके घरों में रह रहे हैं, हम उन्हें नहीं जानते।
हमारा उनसे कोई संबंध नहीं है। वे हमारे लिए अजनबी हैं।
जब आप सभी पंडित इस मोहल्ले में रहते थे, तब हम यहाँ थे।
हम न जाने कितने समय से साथ थे। हमारे रिश्ते अलग-अलग थे।

नए लोग यह बात नहीं समझते। हम काफी खोया हुआ महसूस करते हैं और कई बार
अकेला। पुराने दिनों में अगर मैं किसी गलती पर तुम्हारा कान खींचता, तो कोई कुछ नहीं कहता था।
क्या आपके परिवार के किसी सदस्य ने मुझसे कभी कोई सवाल पूछा होगा?
याद है जब तुम पूपा (उसके सबसे छोटे बेटे) को रुलाते थे अगर वह तुम्हारी बात नहीं मानता था?
क्या तुम हॉकी खेलते हो? क्या हममें से किसी ने कभी तुम्हें कुछ कहा या डांटा?
आपके घरों में मौजूद भीड़ इन सदियों पुराने रिश्तों को नहीं समझ सकती। इसलिए, हम
मैं इस मोहल्ले को छोड़कर कहीं और रहने के बारे में गंभीरता से सोच रहा हूँ।
कहीं और। मुझे हर दिन तुम्हारे चेहरे याद आते हैं। मेरी पुरानी यादें मुझे परेशान करती हैं।
मुझे हर समय यही लगता है।
उन्होंने अनंत को अपने शमी कबाब चखाए, और जब हम जाने लगे तो उन्होंने कहा,
मुझसे मिलने आते रहना, कौन जाने कब मेरी आंखें बंद हो जाएंगी।
अल्लाह की रहमत हो।
आप दोनों हमेशा खुश रहें।
मैं भारी मन से चुपचाप वहां से चला गया। मैंने पीछे मुड़कर हाथ हिलाया।
और वह अपने मुख्य दरवाजे पर खड़ा होकर हमारी ओर देख रहा था।

***** समाप्त *****

sjeet

□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□

[illegible]

शुरुआत

चलिए बातचीत शुरू करते हैं…
Penguin को Twitter.com@penguinbooks पर फॉलो करें
हमारी सभी कहानियों से अपडेट रहने के लिए YouTube.com/penguinbooks पर जाएं।
अपने Pinterest पर ‘Penguin Books’ को पिन करें Facebook.com/penguinbooks पर ‘Penguin Books’ को लाइक करें लेखक के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करें और Penguin.co.in पर इस तरह की और भी कहानियां पढ़ें।

[illegible]

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

global.penguinrandomhouse.com [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] 1, [illegible] [illegible],

[illegible] 122002, [illegible], [illegible]

Penguin Random House India

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2024 [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] © [illegible]. [illegible] 2024

□□□□□□□□□□ □□□□□□□□
□□ □□□□□□ □□□□□□□ 2024 □□□ □□□□□□□□ □□□□
□□□□□□□□□: 9789357084826
www.penguin.co.in